PRAC... HIGH SC... LIBR... Cl.

Baroda State Press.—29-7-26—2,000

B.S.P.—6-9-44—2,000. Rs. 2-11-3 per 1,000
Secondary Teachers' Training College, Baroda

Reg. No. 1296 Class No. 4444

Date Price

ANGLO VERNACULAR SCHOOL BARODA.

Published by Order of
H. H. Maharajah Sayajirao Gaekwad.

Shri Sayaji Bhasha-Manjusha,

EDITED BY

T. K. GAJJAR.

SAMEHT... LIBRARY ... UNIVERSITY OF BARODA

9296

PSYCHOLOGY.

Registered for Copyright under the Government of India's Act No. XXV. of 1867.

[All rights reserved.]

BARODA

चेतनशास्त्र.

गुजरातीमां संग्रहनार,

मणिलाल नभुभाई द्विवेदी, बी. ए.

मुंबई :

एज्युकेशन सोसायटी स्टीम प्रेस.

१८९६

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY, BARODA.
RARE BOOK COLLECTION
UNIVERSITY LIBRARY.
7BF
138
·G8D9

SOHO

श्रीमंत महाराज सयाजीराव गायकवाड एमनी
आज्ञानुसार प्रसिद्ध थती

श्रीसयाजी ज्ञानमंजूषा.

शोधक अने प्रकाशक,

त्रिभुवनदास कल्याणदास गज्जर.

चेतनशास्त्र.

आ पुस्तकनी मालकी १८९७ ना २५ मा ॲक्टप्रमाणें नोंधेली छे.

[सर्व हक्क स्वाधीन.]

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The Maharaja Sayajirao University
of Baroda
Call No. BF
138
.G8D9 6296

PSYCHOLOGY.

ADAPTED INTO GUJARATI

BY

MANILAL NABHUBHAI DVIVEDI, B. A.

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
M. S. UNIVERSITY OF BARODA

Bombay:
PRINTED AT THE
EDUCATION SOCIETY'S STEAM PRESS.

1896.

MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA. CENTRAL LIBRARY

प्रस्तावना.

'चेतनशास्त्र' ए मनुष्यना शरीरमां चेतना, एटले जीवन नहि पण जीवनने अनुषंगे थती लागणीओ, ऊर्मिओ, इच्छाओ, विचारपरंपराओ, कल्पनाओ, ते सर्वमां ते ते व्यापारना जाणनार रूपे जे प्रसिद्ध छे तेनुं शास्त्र छे. मनुष्यशरीरमां ज्ञान एवुं नाम, घणा विशाल अर्थ, जे जे वातने आपवामां आवेछे, तत्साधक जे कांई छे, तेने चेतन कहीए छीए. माणसना शरीरनी अने तेना अवयवोनी तथा ते ते अवयवोनी बाह्यांतर रचना अने तत्साध्य शरीरमात्रोपयोगी कर्मोनी, व्यवस्था जेम शारीरशास्त्र करेछे; ए बधा व्यापारोमां जेने जीव, जीवन, इत्यादि नामो अपाय छे ते शुं छे एनी शोध जेम जीवनशास्त्र करेछे; तेम मनुष्यना ज्ञानमात्रसंबंधी तत्त्वनी शोध चेतनशास्त्र करेछे. तेमां ए जेम शास्त्रमात्र ते ते वस्तुनी उत्पत्ति छेक तेना मूल सुधीथी समजावी शकतां नथी, मात्र पोतपोतानी सामग्रीनी रचना अने तेनी प्रवृत्तिना नियमोनी व्यवस्थाज बतावी शकेछे, तेम चेतनशास्त्र पण ज्ञाननुं सादामां सादुं रूप लई तेमांथी व्यवहारमां जे तर्को, कल्पनाओ, शास्त्रो, इच्छाओ, प्रादुर्भाव पामेछे त्यां सुधीनी रचना समजावे छे. ए समजवाथी जनस्वभावनी केळवणीना काममां घणो लाभ थायछे, ने ए अर्थे चेतनशास्त्र बहु उपयोगी छे.

आपणा आर्यावर्तमां तो चेतनना अस्तित्व विषे कोई वार शंका थईज नथी. चार्वाको जे एकना एक गण्या गांठ्या, आर्यधर्ममां खरा नास्तिक ए संज्ञाने पात्र छे, ते चेतन अथवा चैतन्य एवी स्वतंत्र शक्ति मानता नथी. चैतन्य एटले ज्ञान, जीवन, आदिनो निर्वाह करनार, अदृश्य, अरूप, एवो पदार्थ आर्यावर्तमां सर्व कोई मानेछे.* ए चेतननो अर्थ जीव

* बौद्धो पण विज्ञानस्कंधरूपे जीव स्वीकारे छे.

थाय त्यारे तेने आविर्भाव पामवानी, ज्ञान थाय त्यारे व्यापार करवानी, भूमिका जोईए; ने ते भूमिका चेतनथी विलक्षण जे जड तेने सर्व कोईए कल्पी छे. एकंदर जड अने चेतनना अस्तित्व विषे कोईने शंका नथी, अने विश्वमात्रनी रचना जडचेतनना योगथी थईछे, जेमां चलनवलन नथी एवा पदार्थोमां पण कोई प्रकारनुं चेतन छे, एम मनायुंछे. वृद्ध निरुक्तकार यास्के अस्ति, जायते, वर्धते, विपरिणमते, अपक्षीयते, नश्यति (छे, थायछे, वधेछे, परिणमेछे, खपेछे, विनशेछे) ए छ विकार मान्याछे, ते जेने जेने लागु थई शके ते बधुं चैतन्यवान् छे एम मनाय छे. चैतन्य अने जडनो संबंध केवी रीते थायछे ए प्रक्रिया पण छेक आरंभथी मांडीने मनुष्यना अंतःकरण (मन)ना जे गुंकितव्यापारो ज्ञान, ग्रंथ, चारित्र, काव्य, नीति, न्याय, आदि रूप धारण करेछे त्यां सुधी प्रत्येक दर्शनवाळाए पोतपोताना सिद्धान्तानुसार समजावेली छे. बे न्याय, बे सांख्य, अने बे मीमांसा; तेमज जैन, चार्वाक अने चार बौद्ध ए बार दर्शनोए पोतपोताना सिद्धान्तानुसार जडचेतनना योगनी व्यवस्था करीछे, अने चेतनशास्त्रनी प्रक्रिया पोतपोताना ग्रंथोना एक विभाग रूपे थोडी घणी विस्तारी छे. स्वतंत्र रीते एकला चेतननोज विचार करवानो तेमने प्रसंग न हतो; तेमनी पद्धति मनुष्यजीवननो हेतु नक्की करी ते हेतु सिद्ध करवानां साधन योजवाने अर्थे बधुं पृथक्करण, विवेचन, आदि करवानी हती; एटले ए चेतननी कई स्थिति उपभोग भोगवेछे, कई स्थिति एनो परिपाक कहेवाय छे, कई स्थिति उपभोगथी परिपाक सुधी जवाने साधनरूप छे, तेनोज मुख्य विचार करेलोछे. जे बार दर्शनो कह्यां तेमां पण अवांतर भेद घणा छे. न्यायमां वृद्ध अने नवीन, पूर्वमीमांसामां भाट्ट अने प्राभाकर, उत्तरमीमांसामां अवच्छेद, आभास, अजाति आदि वादना प्रतिपादको, एम अनेक अवांतर भेद छे. आ प्रकारे आपणां शास्त्रोनो विषय टुंकामां अत्र कहेवानो आशय ए छे के आपणा देशमां तो चेतनशास्त्रना प्रकारांतरोज शास्त्रमात्र छे एम कहीए तो पण चाले; आपणा देशनां अत्र जणावेलां दर्शनो जेने इच्छा होय ते कोई प्रकारे पण जाणी लेशे; अत्र विस्तार करतां तो आ ग्रंथ जेटलो बीजो ग्रंथ थवा जाय. जाण्या पछी आ ग्रंथमां आपेली चर्चा साथे अत्रना ऋषिओना सूक्ष्म विवेकोने सरखावतां तत्त्व सारुं समजाशे.

पाश्चात्य देशमां तो आ शास्त्र छेक हवणां हवणां प्राधान्यने पाम्युं छे, एटले त्यां तेनो केवो प्रकार थयोछे ते जणाववाने प्रकृत ग्रंथनो उपक्रम छे. अंग्रेजीमां घणा ग्रंथो आ शास्त्रना समग्र विषयपरत्वे तेम तेना एक एक देशपरत्वे लखायाछे; तेमांना केटलाक जोवानो प्रसंग मळ्योछे, समर्थ समर्थ चेतनशास्त्रीओना स्वतंत्र लेख अने सिद्धांतो समजवाने आयास कर्योछे; छतां सली नामना अंगरेज पंडिते घणा लखनारनो सार भेगो करी चेतनशास्त्रनो एक लेख रच्योछे तेनेज आ ग्रंथ योजवामां मुख्य आधार रूपे मान्यो छे. वचमां वचमां आपणा शास्त्रोनी पण कोई कोई वात मुकाबला माटे आपी छे.

चेतनशास्त्रना अध्ययन अने ज्ञानथी केळवणी आपवाना काममां साहाय्य थायछे ए तो मुख्य वात छे. पण मनुष्यजीवननो एक प्रदेश एवो नथी के ज्यां आ शास्त्रना सूक्ष्म ज्ञानथी थोडो अथवा वधारे प्रकाश न पडी शके. वृत्तिओ अने ऊर्मिओ केम ऊठेछे अने प्रवर्तेछे, विचारोना प्रवाह केवे मार्गे वहेछे, इच्छाओ केवां वळण पकडेछे, बहारना संसर्गो ए सर्व उपर केवी केवी असर करेछे, ते बधुं जाणवाथी स्वसंयम, शुभवर्तन, सुविचार, अने सच्चारित्र उद्भवाववामां घणो अपूर्व लाभ थवानो संभव छे. नीति, धर्म, तत्त्व, न्याय, राज्य, आदि अनेक शास्त्रोनो आ शास्त्र उपर आधार छे. आवो लाभ छतां पण अंगरेजी पद्धतिथी लखायला चेतन-

शास्त्रमां अने आर्य पद्धतिनां दर्शनोमां विस्तारेला चेतनशास्त्रमां जे मुख्य अंतर पडेलो कोई पण विचारवान्ने जणाया विना नहि रहे तेनुं कारण ए छे के अंगरेजी चेतनशास्त्र जे फळने उद्देशीने लखायछे ते करतां आर्य दर्शनोमांना एज शास्त्रनो उद्देश भिन्न छे. आर्य लेखको ज्यारे स्पष्ट रीते साध्यार्थने दृष्टि आगळ राखीने लेख लखे छे, त्यारे पाश्चात्य लेखको सामग्रीमात्रने तपासतां तपासतां साध्य जे नीकळे ते खरुं एम ग्रंथ रचता जायछे. चेतन मनुष्यनामां तेम विश्वमात्रमां जणायछे; ए चेतन शाने अर्थे छे, मनुष्यचेतननो परिपाक क्यारे थयो कहेवाय, एनुं स्वरूप लक्षमां राखीने आर्य लेखको पोताना ग्रंथ विस्तारेछे; पाश्चात्य लेखको एटलाथीज संतोष मानेछे के ना'ना बाळकथी आरंभ करी, तेने भिन्न भिन्न संसर्गोमां मूकी जोई, तेना चेतनना विकासमां, अने ते चेतनना वृत्ति, ऊर्मि, बुद्धि, इच्छा, ए स्वरूपोना विकासमां, केवा केवा परिणाम ऊपजेछे ते नोंधी राखवा. ए नोंध लेतां एक सच्चारित्रवाळा आधेड मनुष्यना सबल चेतन पर्यंत आवतां तेओ अटकेछे, अने एज चेतननो परिपाक होय एम मानी, आखा शास्त्रनी प्रवृत्तिने एवी मान्यतानो रंग लागवा देछे. आ वात लक्षमां राखवाथी, आ ग्रंथमांज केटलेक ठेकाणे नकामां जेवां पृथक्करणो वाचतां अत्रत्य वाचकने जे निर्वेद अने निरुत्साह थवानो संभव छे ते न थतां, लेखनी प्रवृत्तिनो मर्म समजायाथी तुलना करवी ठीक पडशे. पाश्चात्य चेतनशास्त्रीओ चेतननो कोई एक प्रकार समजाववा बेसशे तो ते चेतननो पूर्वापर इतिहास तपासता पहेलां ते चेतननो जेमां आविर्भाव छे एवा शरीरने, अवयवोने, ज्ञानतंतुओने, सारी पेठे चुंथशे; ने ते जड प्रकारने परंपरित, अने स्वाभाविक, अने सहवासकृत, अने संसर्गजन्य, ए आदि जे जे संस्कारो, वलनो, जन्मथी, परंपराथी, बहारना संबंधोथी, मळ्यां हशे तेनी माथाकूट करशे; अने एम धीमे धीमे चेतननो अमुक प्रकार केम घडायो तेना निर्णय उपर आवशे.

आवुं थवानां घणां कारणो छे. इंग्लंडमां लोक नामे प्रसिद्ध तत्त्वज्ञ अराढमी सदीमां थई गयो त्यां सुधी तो माणसनां ज्ञान, इच्छा, आदिक ईश्वरप्रेरणाजन्य छे, ईश्वरदत्त छे, एवो धार्मिक विचार प्रवर्ततो हतो. लोके मनुष्यनां विचारो, व्यापारो, इच्छाओ, वृत्तिओ, ते सर्वनुं पृथक्करण कर्युं अने एम ठराव्युं के जड एवां ज्ञानतंतु अने स्नायु आदि, अमुक अमुक सहवासथी अमुक अमुक साहचर्य प्राप्त करे छे, अने अमुक प्रकारेज प्रवृत्ति करतां रहेछे. ज्ञानविचारादिक बधुं ज्ञानतंतुओमां आवा स्वाभाविक के कृत्रिम जेने संस्कार पडेछे तेनीज रचनानुं परिणाम छे. लोकनो शिष्य होब्स थयो. तेणे चारित्रमां पण तेनी तेज वात लागु करी अने मनुष्यमात्र खावापीवा अने वृद्धि पामवानी स्वार्थवृत्तिथीज चारित्र साचवेछे एवा वादनो तेणे उद्घोष कर्यो. एना पछी ह्यूम नामे तत्त्वज्ञ थयो ते तो हडहडतो नास्तिक थयो; तेणे लोकना अने होब्सना सिद्धांतोनुं मूल जे कार्यकारणभाव तेनोज उच्छेद कर्यो, कार्यकारणभावनो नियमज साबीत थई शकतो नथी, तेथी आपणे गमे तेटली वातोने एकएकनी साथे के एकएकना पछी तुरत थती जोईए तो पण तेमनी वच्चे कार्यकारणभाव छे एम कही ते उपर अनुमान बांधी वधारे रचना करवी व्यर्थ छे एवो तेणे निश्चय कर्यो. आ नास्तिकवादमां कशुं मानवुंज नहि एवो पण केटलोक पवन पेशी गयो. आ समय पछी स्कोटलेंडना घणाक धर्मगुरुओए आ त्रणेनुं खंडन करवा अने धर्म उपरनी आस्ता दृढ करावववा, नीतिनुं समर्थन करता घणाक लेख रच्या छे, पण तेमां बार्कले नामना एकनुं कार्य सर्व कोईनुं लक्ष खेंचे तेवुं छे. तेणे मनुष्यने ज्ञान एटले पदार्थनुं दर्शन जे रीते थायछे ते उपरज शंका ऊठावी, अने एम सिद्ध कर्युं के माणसो पदार्थने जोया पछी पदार्थनुं ज्ञान थयुं एम मानेछे, पण पदार्थनुं ज्ञान थवुंज अशक्य छे, माणस पोते पोतानी कल्पनाथी पदार्थ कल्पी तेनुं ज्ञान पण भेगुंज कल्पी लेछे. आवो अद्वैत वेदा-

न्तने मळतो वाद तेणे प्रवर्ताव्यो; ते ते समये बहु मान पाम्यो ने अद्यापि पण पामे छे. परंतु सर्वथी समर्थ चेतनशास्त्री तो हजी जर्मनीमां पेदा थनार हतो. लोक अने होब्सनी वखते पण फ्रान्समां डेकार्ट अने जर्मनीमां लीब्नीट्झ वगेरे धर्मसंग्राहक एवो चैतन्यवाद चलावी रह्या हता; ह्युम अने बार्कलेना समयमां याहुदी स्पिनोझानो अद्वैतवाद जर्मनीमां गर्जना करी रह्यो हतो; पण एवामां कोनिग्झबर्गनी पाठशालानो एक शिक्षक ना'नी सरखी कोटडीमां भराई रही नित्य जे विचार चलावतो तेमां ह्युमना नास्तिकवादे वमल नाख्युं. एथी जे तत्त्वविचार उद्भव्यो अने आखा युरोपना विचारमां तेनी जे असर पेठी ते अद्यापि पण टकी रही छे. ए चेतनशास्त्रनो स्थापनार केन्ट. तेणे एम बताव्युं के नास्तिकवाद असिद्ध छे. जे कार्यकारणना नियमनुं समर्थन दृश्य विश्वमांना बनावोनी आनुपूर्वीनुं अवलोकन करीने करवा इच्छो छो, ते नियम पोते तो दृश्यविश्वनी पारनो नियम छे, ए नियमने स्वीकार्या पछी तमने 'ज्ञान' के 'अवलोकन' के 'दर्शन' ए शब्द पण उच्चारवानो हक प्राप्त थाय छे. एटलुंज नथी पण जे 'दिक्' अने 'काल' तेने, तमे, दृश्य विश्वना पदार्थोनुं अवलोकन करते करते बाळकने अमुक साहचर्यो बंधाय छे तेमांथी भाव रूपे उत्पन्न थतां बतावोछो; पण तेम नथी; कार्यकारणनी पेठे ए बे पण दृश्यनी पार अने दृश्यनी वात करता पहेलां, करतानी साथेज, स्वीकारवा पडे एवा भाव छे. वळी जे ज्ञानने दृश्यमांथी उत्पन्न थतुं मानोछो (लोक वगेरे) ते ज्ञाननुं प्रथमथी अस्तित्व मान्या विना दृश्यनो व्यवहारज केम सिद्ध थाय? जे द्रष्टाने मान्या विना दृश्यनी सिद्धिज थवी अशक्य छे ते द्रष्टाने दृश्यमांथी ऊपजावबा यत्न करवो ए पोताना खभा उपर चढवा जेवी वात छे. चेतनशास्त्रना प्रदेशमां आवा सिद्धान्तोनो उद्घोष करी, चारित्र, नीति, आदि प्रदेशोने पण एज सिद्धान्तो आ समर्थ तत्त्वज्ञे लागु करी

आप्या. युरोपमां वास्तविक रीते चेतनशास्त्रनो उद्भव अराढमा सैकाना अंतकालथी एटले आज सो वर्षथी थयो छे एम कहीए तो चाले. केन्टना पछी जर्मनीमां फिक्टे, शेलिंग, हार्टमन, हेगल, शोपनहोअर आदि घणा लेखको थयाछे; इंग्लंडमां जेम्स अने जोन बे बापदीकरो मील, हेमिल्टन, बेन अने छेक हवणां हर्बट स्पेन्सर ए आदि थया छे. एमांथी एकेनो प्रयास केन्टना ऊपजावेला परिणामनो उच्छेद करी शक्यो नथी, एमां कांईने कांई सुधारा वधाराज सर्वेए कर्याछे. इंग्लंडना चेतनशास्त्रीओए कांईक नवुं करवा यत्न करेलोछे; अने हर्बर्टस्पेन्सरना मनमांथी, हजी पण, लोक वगेरेए जड ज्ञानतंतुओना परिवर्तोथी अने साहचर्यना नियमोथी, चेतन अने तेना प्रकारनो उद्भव समजावेलो ते भ्रान्ति खशी नथी एवुं जणाय छे. ज्ञानतंतुओना परिवर्त के बाह्य पदार्थोना संसर्गजन्य साहचर्यरूपी संस्कार तेनाथी जे जे वातोनो खुलासो थई शके नहि—जेमके बाळक जन्मता वेत मातानुं स्तन शोधीने चूसवा मांडे; मी. गेल्टने "जीडवा" विषे करेला शोध अनुसार त्रण चार पेढीमां न जणायली एवी गणित के गाननी शक्ति बे साथे अवतरेलां-मांनुं एक पांच वर्षनुं बाळक जणावे बीजुं नज जणावे;—एवा प्रसंगोनो खुलासो करवाने; अथवा कार्यकारणभाव, देशकालभावना, ए त्रणने केन्ट अनुभवातीत कहे छे तेमने ज्यारे साक्षात् अनुभव अने अवलोकन थते थते व्यावहारिक ठरावबां होय त्यारे; हर्बर्ट स्पेन्सर पोताना नवीन चेतनशास्त्रमां एक अति दुर्बल युक्तिनो प्रयोग करी कृतार्थता माने छे. लाप्लेस, हंबोल्ट, वोल्फ, डार्विन, वेलेस, वंट, टोमसन, हेकेल, हक्सली, टींडल, वगेरेए जे "परिणामवाद" (इवोल्युशन) सिद्ध कर्योछे तेने आगळ करीने स्पेन्सर कहेछे के मनुष्यमां जे दिक्कालादि जणायछे, के अमुक सा-मर्थ्य जणायछे, ते तेणे नहि तो तेना बापे के तेना प्रपिताए के तेनी सातमी

पेढीए (हेरिडीटी) पण अनुभवथीज प्राप्त करेलुं छे; गेल्टने कहेलो छे तेवो प्रसंग होय त्यां, ते वात वचमां बेत्रण पेढीए न जणाया छतां हवणांज जणाई (एटेविझम) छे. आम कहेवाथी वस्तुस्थितिनो पूरो खुलासो थतो नथी ए तो बाजु पर रह्युं, पण चेतनशास्त्रने तो मूळ चेतननी उत्पत्ति अने विकृतिनो क्रम विचारवो छे त्यां प्रकृत प्रसंगे जे न समजायुं तेने बेचार पेढी पाछुं धकेली मूकवाथी लाभ शो छे? उलटुं अज्ञानज प्रसिद्ध थायछे. इंग्लंडना चेतनशास्त्रीओमां आवो आग्रह चेतनने अनुभवातीत, परमार्थरूप अने स्वतंत्र न मानवाने लीधे थई आवेछे. परंतु केन्ट वगेरे सप्रमाण चेतनशास्त्रीओना निश्चयानुसार चेतन सर्वथी स्वतंत्र अने अनाद्यनंत छे एमां कांईज विवाद हवे रह्यो नथी. इंग्लंडमां पण जेना अकाल मरणथी पंडितोना मनमां बहु शोक रही गयोछे एवा स्टर्लिंग अने ग्रीन जेवा युवक तत्त्वज्ञोए एज वाद सिद्ध कर्योछे. जेनो अद्यापि लोको उपहास करेछे एवी पण केटलीक वातोए केन्टना आ निश्चयने बहु टेको आप्योछे. केन्ट पोते "प्रेतावाहन" ने मानतो हतो; केन्टना मुवा पछी सो वर्षे प्रेतावाहनना प्रत्यक्ष प्रयोगो पश्चिमनी आखी दुनियांमां थवा लाग्याछे; मेस्मर अने रीखनबेकने जे फ्रेंच एकेडेमीए हसी काढी धूतारा ठराव्या हता, तेज परिषद्ना सभ्य अने पेरिसना साल पीट्रे होस्पीटलना वडा डा० शार्कोए, आज मेस्मरनी कीर्ति छानावी लेवाने माटे, मेस्मेरिझमने हीप्नोटिझम् एवुं नाम आपी प्रमाणग्रंथ छपाव्योछे, ने ते अनुसार प्रयोगो करवा मांड्याछे. जो ए चमत्कारो साचा होय तो चेतनने स्वतंत्र मानवाने कशो संशयज रहेतो नथी; अने केन्टप्रभृति पंडितोए जे निर्णय युक्तिमात्रथी कर्यो हतो तेने आ प्रकारे अनुभवनो पण पूरावो मळेछे. आर्यदर्शनो तो चेतनने स्वतंत्र माने छेज.

मी० सली पण चेतनने स्वतंत्र मानवाना वळणवाळो लखनार छे, अने पोतानो ग्रंथ तेणे तेवा धोरणथीज लख्योछे; में तेने अनुसरवुं उचित धार्युं तेनुं मुख्य कारण पण एज छे. हर्बर्ट स्पेन्सर, लोक, वगेरेना माननी खातर तेणे वारंवार शारीरशास्त्रानुसार ज्ञानतंतु अने स्नायुओनां पृथक्करण, तेमनी गतिना नियम, साहचर्योनां स्वरूप, इत्यादिनुं विवेचन कर्युछे; में पण, चेतनने स्वतंत्र मान्या पछी, तेना आविर्भावनी भूमिकानो गमे तेवो विवेक बतावबामां आवे तेथी सिद्धान्तनी क्षति नथी एम समजी, ते बधां विवेचनो जेमनां तेम संग्रही लीधां छे.

चेतन आ प्रकारे स्वतंत्र अने अनादि निर्विकार छे त्यारे तेनो जड साथे शो संबंध छे एनो निर्णय करवोज बाकी रहेछे. मी० सलीए ते कर्यो नथी; बन्ने एकएकनी साथे रहेछे एटलुंज मान्युंछे, ने में पण तेज रहेवा दीधुं छे. परंतु आ निर्णय करवाने माटे आपणने पदार्थनुं ज्ञान शी रीते थायछे? जेने प्रकृत लेखमां 'दर्शन' एवुं नाम आपेलुं दीठामां आवशे ते शी रीते उद्भवे छे? एनो सूक्ष्म विचार करवानी आवश्यकता छे. तेने माटे आ स्थल नथी, तो पण ए निर्णय नथी थयो त्यां सुधी चेतनशास्त्र जाण्यानो एक जे मुख्य लाभ के जीवननो उद्देश समजी तदनुसार चारित्रयोजना करवी ते यथार्थ रीते सिद्ध थवानो नहि. माटे विवादक्रम न आपतां सिद्धान्तमात्रनो निर्देश करी बतावबो उचित छे, के जिज्ञासु अन्यत्रथी पण ते वधारे दृढतर रीते प्राप्त करी निःशंक थई, ग्रंथनुं वाचन सार्थक करी शके. बार्कलेए जे निर्णय कर्योछे, केन्ट पछी हेगेले घणी गुंफित वाग्जालथी जे निश्चय बताव्यो छे, शोपनहोअरे जे सिद्धान्त स्पष्ट सुरस वाणीथी विस्तार्यो छे, स्टर्लिंग ग्रीन आदिए जेनो अनुवाद कर्यो छे, प्राचीन कालथी प्लेटो आदि जेने समजावता आव्या छे, तेज निश्चय खरो लागे छे; अद्यापि तेनुं खंडन यथार्थ

रीते कोईए कर्युं नथी. आर्यावर्तमां जेटलां जेटलां दर्शन थयांछे ते सर्वनुं खंडन करीने अद्वैत दर्शने पण एज सिद्धान्त सत्य ठराव्यो छे. एनुं टुंकुं स्वरूप एटलुं छे के एक पदार्थने चक्षुथी दीठो, एक पुस्तक दीठुं अने 'आ पुस्तक' एवुं ज्ञान थयुं. आ ठेकाणे अंतःकरणमांनुं चैतन्य (साक्षी) अंतःकरणना परिणामरूप वृत्तिद्वारा नेत्रे थईने पदार्थ सुधी पहोच्युं, अने पदार्थमां रहेला (पदार्थोपहित) चैतन्य साथे मळी गयुं. त्यां वृत्तिमां रहेलुं जे चैतन्य (आभास, साक्षी) तेमांथीज पुस्तक अने पुस्तकनुं ज्ञान उभयेनी प्रतीति उत्पन्न थायछे. प्रतीति समयेज ते छे, आगळ पाछळ नथी, माटे एने अनिर्वचनीय कहेछे. एम जड एवो पदार्थज कही शकातो नथी, कोई निमित्ते करीने चैतन्यज पोते विकार न पामतां जुदे जुदे प्रकारे भासे छे (विवर्ते छे); अनें ज्यां ज्यां दर्शन थायछे त्यां त्यां नवी नवी सृष्टि तत्काल थाय छे. एने दृष्टिसृष्टिवाद कहेछे. एज वास्तविक सिद्धान्त छे; ए सिद्धान्तनुं स्वारस्य समजी चैतन्यनो सर्वत्र अपरोक्ष अनुभव पामवानो आनंद लेवो एज जीवननुं सार्थक छे; एथीज उत्तम चारित्रनी कृतार्थता छे.

चेतनशास्त्र ज्यां सुधी आवा छेवटना फळने उद्देशीने विचारवामां आवशे नहि, चेतन मान्या पछी अवश्य स्वीकारवा योग्य पुनर्जन्मादिक व्यवस्थाओ तथा कर्मना नियमोनुं सूक्ष्म विलोकन कराशे नहि, त्यां सुधी ते खरा शास्त्ररूप बळने प्राप्त करी शकनार नथी. छतां चेतनने स्वतंत्र मानवानो पक्ष पाश्चात्य देशोमां सबल थतो जायछे तेम चेतनने स्वीकार्यानां अवश्य एवा जे आ बधा परिणाम ते पण स्वीकाराता जशे एमां कांई संशय नथी. हजी एम थवाने विलंब छे, तेटलामां ज्यां सुधी पाश्चात्यो आवी शक्या छे त्यां सुधीनो संग्रह आ ग्रंथद्वारा वाचकना आगळ आववाथी परम लाभ छे एमां संशय नथी.

मने आशा छे के आटला टुंका उपोद्घातथी वाचकने आ ग्रंथ विलोकवामां घणे भागे सारो अधिकार प्राप्त थई विषयनी विचित्रतानो विलक्षण अनुभव थाय त्यां आश्चर्य न लागतां बोध मळवानोज प्रसंग थई शकशे. आ ग्रंथने अंते पारिभाषिक शब्दोनो एक कोश आप्यो छे जेमांथी ते ते शब्दनी अंगरेजी परिभाषा जडी शकशे. समग्रलेखमां जोडणीनो प्रकार मारा इतर लेखो करतां भिन्न जणाशे, पण ते कला-भवनना जोडणीना नियमानुसार थयुं छे.

नडिआद,
१४-८-९६

मणिलाल नभुभाई द्विवेदी.

अनुक्रमणिका.

	पृष्ठ.
प्रकरण १.	
उपोद्घात.	१
प्रकरण २.	
चेतनव्यापार अने तेनी सामग्री.	१९
प्रकरण ३.	
चेतनविकास.	३७
प्रकरण ४.	
अवधान.	६९
प्रकरण ५.	
प्रत्यक्ष.	१०२
प्रकरण ६.	
दर्शन....	१३७
प्रकरण ७.	
संस्कारोद्बोधरूपकल्पना (स्मृति).	२००
प्रकरण ८.	
उपचायक कल्पना (प्रतिभा).	२७१
प्रकरण ९.	
सामान्य कल्पना (विचार).	२९८
प्रकरण १०.	
निर्देश अने परामर्श.	३९३
प्रकरण ११.	
वृत्ति—सादी वृत्तिओ.	४०७
प्रकरण १२.	
गुंफित वृत्तिओ—भाव.	४६४
प्रकरण १३.	
इच्छा.	५२७
प्रकरण १४.	
संयुक्तकर्म—वर्तन.	५७६

चेतनशास्त्र.

प्रकरण १.

उपोद्घात.

१. लक्षणः—चेतनशास्त्र एटले आपणामां जे ज्ञान पामवानी शक्ति छे तेनां कार्यने पद्धतिपुरःसर समजवानी विद्या. आ लक्षणनो यथार्थ अर्थ जाणवा माटे चेतन एटले शुं ते विचारवुं जोईए.

आपणने जे जे ज्ञान थाय छे, जेटलो जेटलो अनुभव थई आवे छे, तेना मुख्य विभाग बेज पडी शके एम छे—जड अने चेतन. तेने केटलाक पराग्दर्शन अने प्रत्यग्दर्शन, दृश्य अने द्रष्टा, अनात्मा अने आत्मा, विषय अने विषयी इत्यादि नाम आपे छे. पण सामान्यतः जड अने चेतन अथवा दृश्य अने द्रष्टा एज नाम आपणे जे विचार चलाववो छे ते माटे पूर्ण छे. माणसमात्रने चेतन छे; प्राणीने पण छे. परंतु आपणे अत्र जे विचार करवानो छे ते मनुष्यचेतनसंबंधे अने तेना व्यापारनां रूपसंबंधे करवानो छे. चेतन अने तेना व्यापार ए बे वात जुदी मानीने आ शास्त्र प्रवर्ते छे. चेतन स्वतः शुं छे, शानुं बने छे, ते द्रव्य छे के भाव छे, ए प्रश्ननो विचार आ शास्त्र करतुं नथी. ए विचार तत्त्वशास्त्र जेनुं आ शास्त्र अंग छे, तेमां समाय छे. तेमज ए ज्ञानमय चेतननो आविर्भाव, जेना बुद्धि, ऊर्मि, इच्छा आदि व्यापार छे एवा मनरूपे केम अने क्यारे थाय छे ते पण अत्र अप्रस्तुत छे. शास्त्ररूपे चेतनशास्त्रनुं काम चेतननां कार्योंने विलोकीने तेमनो विचार करवो एटलुं ज छे.

चेतनना व्यापारनो यथार्थ विचार थई रहेता सुधी चेतन शुं छे ते कही शकावुं कठिन छे. ए विषये अनेकानेक मतभेद छे, अने केटलाक

ज्यारे चेतनने जडजन्य माने छे, त्यारे केटलाक जडथी तेने व्यतिरिक्त माने छे. चेतन शुं छे ए विचार यद्यपि आ प्रकारे पछीथी करवा उपर, अथवा अन्यशास्त्रना पेटामां, मूकी राखवामां आवे, तथापि आ शास्त्रने आरंभे पण एटलुं तो स्वीकारवानी आवश्यकता छे के जेने आपणे चेतनव्यापार अथवा चेतनकार्य कहीए छीए तेमनामां संबंध करावनार, अने तेमने परस्पर साथे संयोजनार, एवुं ते कांई एक रूप छे. सामान्यतः चेतनशास्त्रना विचारमात्रमां आटली वात तो मानेली होय छेज, केमके व्यवहारमां चेतन विचारे छे, चेतन जाणे छे, इत्यादि बोलवानो प्रचार छे. अत्र मन अथवा अंतःकरण शब्द न लेतां चेतन शब्द शा माटे लीधो छे तेनो पण कांई खुलासो आपवो आवश्यक छे. मानसशास्त्र अथवा अंतःकरणशास्त्र एवो अर्थ 'साइकोलोजी' ए अंग्रेजी शब्दनो कर्यो होत तो बाध न हतो, छतां चेतनशास्त्र एवुं नाम आपवामां थोडोक मर्म छे. आपणां शास्त्रो प्रमाणे अंतःकरण एटले मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार ए चार वातज समजाय छे, अने ते उपरांत आत्मा जुदो रहे छे. परंतु 'साइकोलोजी' शब्दनो वाच्य अर्थ आत्मशास्त्र एम छे, एटलुंज नहीं, पण जेने अंग्रेजीमां 'माइन्ड' कहे छे तेना रूढ अर्थमां पण अंतःकरण करतां अधिकनो समास करवानो, ते भाषामां, प्रचार छेः जेने आपणे सत्तामात्र, चेतनमात्र कहीए, तेने पण 'माइन्ड' मां गणवामां आवे छे. आम होवाथी अंतःकरणशास्त्र एवुं नाम आ शास्त्रने आप्युं नथी, पण 'माइन्ड' शब्दना मुख्य अर्थ उपर दृष्टि राखी चेतनशास्त्र एवुं नाम आपवुं योग्य धार्युं छे. एम करवाथी चेतनामात्रना जे जे व्यापार छे, तेनो आ शास्त्रमां समास थई शकशे. मानसशास्त्र ए नाम तो नथीज घटतुं; केम के ज्यारे अंतःकरणशास्त्र ए नाम न चाल्युं त्यारे अंतःकरणनो एक विभाग मानस तेटलुंज नाम आ शास्त्रने आपी न शकाय ए स्पष्ट छे. आ शास्त्रने चेतनशास्त्र एवुं नाम आप्युं छे तेथी

एम न समजवुं के जीवनव्यापार जे पण चेतनज छे, तेनो आमां समास थाय छे. ए शास्त्रने 'बायोलोजी'—जीवनशास्त्र—कहे छे, अने ते यद्यपि आ शास्त्र साथे घणो संबंध राखे छे, तथापि आनाथी सतत भिन्न छे. आमां तो चेतनना जे मुख्य व्यापार छे—वृत्ति, बुद्धि, इच्छा—तेनो विचार प्रकृत छे; जेनाथी आपणुं ज्ञान ज्ञानता पामेछे तेनो विवेक करवानो छे. "बायोलोजी"मां (जीवनशास्त्रमां) जेम आधुनिक पाश्चात्यो माने छे के जीवनव्यापार ए जडसंयोगजन्यज छे, तेम केटलाक पाश्चात्य चेतनशास्त्रकारो पण एम माने छे के चेतना, मन, पण तेवाज संयोगनुं, जडसंसर्गथी थतां प्रत्यक्षनुं फल छे.

आ मत, घणा घणा प्रख्यात चेतनशास्त्रीओने ग्राह्य नथी, तेनां कारण छेवटे जणाशे. पण ते मत उपरनी जे अरुचि ते सूचववा माटे आ शास्त्रने मानसशास्त्र नहीं पण चेतनशास्त्र एम नाम आप्युं छे. वळी हर्बर्टस्पेन्सर वगेरे केटलाके एवो प्रयत्न कर्यो छे के मनुष्यनामां जे मनोव्यापार—बुद्धि आदि—जणाय छे ते प्राणी, पशु आदिमां जे सामान्य चेतन छे तेमांथीज, जेम प्राणी, पशु आदिना शरीरमांथी मनुष्यशरीर थयां छे तेम, उत्तरोत्तर बुद्धिसमृद्धि पामते पामते अनेक युगे उद्भवे छे. आ मत अनिष्ट छतां पण संग्रह करवा योग्य छे एम जाणी चेतनशास्त्र ए नाम प्रयोजेलुं छे. आवा नामनी योजनाथी करीने चेतनने स्वतंत्र माननार केन्ट वगेरे तेम तेने जडजन्य माननार स्पेन्सर वगेरे सर्वना मतनो सार अत्र समाववामां बाध नहीं आवे. छतां पण ज्यां ज्यां मन ए शब्द आ लेखमां वपराय त्यां त्यां चेतन अर्थात् ज्ञानजनक आंतर जे कांई छे ते समजवुं; पारिभाषिक मन जे अंतःकरणनो एक विभाग छे ते न जाणवुं.

त्यारे चेतनव्यापारने बीजा व्यापारोथी शी रीते जुदा पाडी शकाय? चेतनना व्यापारोनुं पृथक्करण करी तेमना करतां वधारे सा-

दे रूपे बतावी शकाय एम नथी, केमके तेवा व्यापारो "चेतनना छे" ए उपरांत, तेमना सामान्यरूपमां विशेष कशो होतो नथी. एटला माटे कोई पर्यायथीज आ व्यापारोनुं वर्णन करवुं पडे छे, अने तेमने 'आपणा ज्ञात अनुभवनो एक विभाग' ए आदि नाम आपवां पडे छे. ज्ञातानुभव एम कहेवानुं कारण ए छे के अज्ञात पण केटलाक अनुभव छे एवुं आ शास्त्र विषे लखनार केटलाकनुं मानवुं छे. ज्ञात अनुभवनो विभाग एम कहेवामां स्पष्टता न थाय तो एम करवुं जोईए के चेतनना जे जे व्यापार होय तेमनां नाम, स्वरूप आदि नक्की करी 'ते बधां ते चेतन' एम लक्षण आपवुं; अथवा छेवट एम करी शकाय के चेतन ते 'अचेतन-जड-थी उलटुं' एम कहीने चेतनव्यापारनुं स्वरूप बतावी लेवुं. चेतन अचेतन नथी, अर्थात् अचेतन एटले जे जड तेने जे विस्तार अथवा विपुलत्व होय छे, ते चेतनने जरा पण होतुं नथी. विस्तार अथवा विपुलत्व एटले दिग्व्यापकत्व, थोडी पण जगो रोकवापणुं, ते जडने होय छे, चेतनने लेश पण होतुं नथी. अमुक विचारने आपणे हाथ लगाडी शकता नथी. जेम एक घटथी बीजो घट बाह्य छे, तेम एक विचारथी बीजो विचार बाह्य होतो नथी. चेतनव्यापारने मात्र कालव्यापकत्व छे, कालमां तेनो क्रम होय छे. आ प्रकारे बे त्रण रीते समजतां चेतन ते आंतरज्ञानसृष्टि छे, जड ते बाह्य अज्ञानसृष्टि छे एम सहजे समजाय छे.

२. **मन अने शरीरः**—जड अने चेतननो आ प्रमाणेनो स्पष्ट विरोध सर्वदा लक्षमां राखवा जेवो छे; परंतु ए बेने अत्यंत निकट संबंध छे ते वीसरवा जेवो नथी. एमनुं सर्वदा अनन्यत्व छे एम आ शास्त्रमां स्वीकारेलुं छे, ने अनुभवथी ते खरुं ठरे छे. आपणे जेने मनुष्य कहीए छीए ते शरीर (जड) अने मन (चेतन) नुं बनेलुं छे. जे अहं-

प्रत्ययवेद्य-हुं-हुं-एम अनुभव छे, जेने जीव अथवा आत्मा कहीए छीए, ते शरीरसंयुक्त चेतननो व्यापार छे. ए अनुभवने आधारे विचारतां एम पण अनुभव थाय छे के चेतनव्यापारमात्रने शरीरगत ज्ञानतंतु साथे अति निकट संबंध छे. गमे तेवो भावनामय तर्क पण मगजमांनां केटलांक स्थानने गति आप्या विना रहेतो नथी. आम होवाथी यद्यपि जड अने चेतनने सर्वदा जुदां समजवानां छे, तथापि चेतन विषे विचार करवामां जडनो विचारमात्र आपणे दूर राखीए एवुं बनी शकशे नहीं. चेतननो विचारज 'सजीव काया साथे संबद्ध कांईक' अथवा सविशेषे 'शरीरगत ज्ञानतंतुचक्र साथे संबद्ध कांईक' एवो थवानो. मन अने शरीरना संबंध विषे तत्त्वशास्त्रमां घणी चर्चा ने घणा वाद थया छे. शास्त्रमात्रथी एम सिद्ध थतुं जाय छे के चेतनव्यापारने अनुषंगे ज्ञानतंतुना व्यापार पण थयांज जाय छे. वळी ए उभय व्यापारने परस्पर उपकारकत्व पण जणाय छे. केटलाक प्रसंगोमां तंतुव्यापार, चेतनव्यापार पूर्वे थई आवे छे, ने चेतनव्यापारना स्वरूपना नियामक थई पडे छे. जेमके तेजनी लागणी थता पूर्वे आंखना प्रक्षोभनो धक्को मगजमां पण जई पहोंचे छे. एथी उलटी रीते इच्छा वगेरे चेतनव्यापार, स्नायु आदिना व्यापार पूर्वे पण थाय छे. आज काल जेने 'हिप्नोटिझम' ए नाम आपी शास्त्रपंक्तिमां स्थान अपायुं छे ते 'मेस्मेरिझम' अथवा जेने गुजरातीमां 'प्राणविनिमय' नाम आप्युं छे, तेनाथी पण चेतननी जड उपर केवी असर थाय छे, चेतन स्वतः जडने असर करवा समर्थ छे, ए आदि वात स्पष्ट समजाय छे. आवी वस्तुगति छे खरी, पण मन तथा शरीर स्वतः द्रव्यरूपे शुं छे, तेमनो योग शी रीते थाय छे, अने ते बेना व्यापारनी वच्चे कार्यकारणनो कोई संबंध छे के नथी, ए प्रसंगोनो निर्णय आ शास्त्रमां करवामां आवनार नथी.

आ शास्त्र चेतनव्यापार अने ज्ञानतंतुव्यापारनो जे आवो अनुषंग तेने स्वीकारीने प्रवर्तें छे; अने एटलाज माटे तंतुव्यापारथी विरक्त एवा चेतनव्यापार आ शास्त्रने ग्राह्य नज होवा जोईए एम न थवुं जोईए. ते साथे एम पण नज थवुं जोईए के तंतुव्यापारमात्रथीज चेतनव्यापारनो पण खुलासो करवानुं डोळ धारण करी चेतनने जडमात्रमां समावी देवाय. अर्थात् ए बे व्यापारनुं सतत भिन्नस्वरूप कदापि वीसरवुं नहीं, अने जेने आजकाल "शारीरिक चेतना" एवुं नाम आपवामां आवे छे, तेमांना शिथिल विचारोमां गुंचवाई पडवुं नहीं. "शारीरिक चेतना"-ना पक्षकारो एम माने छे के चेतनव्यापारना सहभूत तंतुव्यापार बतावबा, एटले चेतनव्यापारनो खुलासो थई गयो, पण ए वात व्यर्थ छे. तेज अथवा शब्दनी अमुक लागणीना पूर्वे अमुक तंतुव्यापार थाय छे एटलुं बतावबाथी ए लागणीना ज्ञाननो जे चेतनव्यापार तेनो पूरो खुलासो थतो नथी. चेतनने आवा तंतुव्यापारथी आवी असर थाय छे एवुं जे बतावबुं, तेथी तो, चेतनना स्वरूपनो एक एवो प्रकार स्पष्ट थई आवे छे के जेनो वधारे खुलासो थई शकवो अशक्य छे. बे संस्कार वच्चेनो भेद समजाय, दृष्टान्त तरीके बे जुदा जुदा रंगना संस्कारनो भेद समजाय, तेनो खुलासो, 'अमुक जुदा जुदा तंतुव्यापार थवाथी भेद समजाय छे' एम कहीने करवाथी कशो खुलासो थतो नथी, भेद समजाय ए वातज पोते पोतानी मेळे खास चेतनविषयक छे, एनो खुलासो ज्ञानतंतुचक्रने वच्चे लाववाथी थवो अशक्य छे.

२. अवलोकन शी रीते करवुं?—आत्मनिरीक्षण, अंतरवलोकन: चेतनव्यापार समजवाना बे जुदा जुदा मार्ग छे. प्रथम मार्ग साक्षात् चेतनने जोवुं ए छे, अर्थात् आत्मनिरीक्षण करवुं, अंतरवलोकन करवुं ए छे; चेतनव्यापार बनती वखते मनमां शुं चाले छे ते जोवुं ए आ मार्गनी

रीति छे. यद्यपि चेतनव्यापार जे समये थाय तेज समये देखाय, समझाय, ए तो अशक्य छे तथापि अव्यवहित क्षणेज तेनुं निरीक्षण बनी शकेछे. आवुं होवाथी आत्मनिरीक्षणने केटलाक पश्चान्निरीक्षण पण कहेछे. आ रीतिनुं उदाहरण. मने कोई सुंदर पदार्थ जोतां आनंदवृत्ति थई आवी —तेनुं स्वरूप शुं छे, ते शानी शानी बनेली छे, समय प्रसंग आदिनो तेने केवो रंग लाग्यो छे, ए आदि जोवा माटे हुं तरत मारा लक्षने अंदरनी पासा वाळी, चेतनव्यापारने विलोकवा मांडुं ए आत्मनिरीक्षण अथवा अंतरवलोकन कहेवाय.

३. बाह्यावलोकन:—आपणे आपणा पोताना चेतनव्यापर विलोकीए एटलुंज नहीं पण बहारथकी बीजां चेतनद्वारा पण ते व्यापार जेवा जणाता होय तेने पण विलोकीए ते रीतिने बाह्यावलोकन कहे छे. बीजांनी वृत्तिओनुं अनुमान आपणे आ रीतिए आकृति, इंगित, दृष्टि आदि उपरथी करी शकीए छीए; तेमना विचारनुं अनुमान तेमनी वाचा उपरथी करीए छीए; तेमनी इच्छानो विचार तेमनी कृति उपरथी बांधीए छीए. आपणने जाणीतां होय तेवांज के अमुक देश, काल, वय आदिथी संकळायलां मनुष्यना विचारनुंज अवलोकन करवुं एम आ रीतिनो हेतु नथी, पण इतिहासथी प्रसिद्ध एवां मनुष्यमात्रनो सर्वदाने माटे विचार करवो ए हेतु छे. आखी प्रजा के आखा मंडळना विचाररूपे जे चेतनव्यापार जणाया होय तेमनुं अवलोकन पण आ रीतिना उद्देशमां समाय छे. जुदा जुदा देशना लोकमां अने जुदी जुदी मनुष्यजातिमां पण चेतनव्यापारना जे भेद होय तेनी तुलना करवानुं काम आ रीतिमां मुख्य छे. नानां बाळकोना सादा चेतनव्यापारने, मुधरेला तेम जंगली देशोमां अवलोकी सरखाववाथी चेतनविकासनां क्रमनी सारी समजण पडे छे.

छेवटे ए पण कहेवुं जोईए के आ रीति चेतनव्यापारना सहभूत नाडीव्यापारनो पण विचार करे छे. बाह्यावलोकनथी जे चेतननो विचार करवो,

ते तो, आंतरचेतनने सहभूत एवा अमुक शारीरिक परिवर्तने आधारेज करवानो रह्यो, एटले उक्त अनुषंगनो अभ्यास आ रीतिने मुख्य उपयोगनो छे.

परंतु आ उभय रीतिनुं मिश्रण थवानी घणीज आवश्यकता छे; एम कर्या विना आ शास्त्रनो यथार्थ अभ्यास बनवोज अशक्य छे. ज्ञानमात्र त्यारेज ज्ञान कहेवाय के ज्यारे तेमां निश्चय, याथार्थ्य अने सामान्यता समायलां होय. कोई पण सामान्य निश्चय उपर आवता पूर्वे अनेक व्यक्तिनुं अवलोकन थयलुं होवुंज जोईए; केमके जे सिद्धांत छेवट व्याप्तिरूपे करवामां आवे छे ते एकएकना अवलोकन उपरथी सर्वने लागु पडे तेवो सामान्य निर्देश छे. शास्त्रीय ज्ञान आवुं होय तेज कहेवाय छे, एम सामान्यतः जाण्या पछी एटलुं तो स्पष्ट जणाय छे के अंतरवलोकन के बाह्यावलोकन कोईए एकलुंज आ शास्त्र माटेनुं पूर्वज्ञान सारी रीते पूरूं पाडी शके तेम नथी. चेतनव्यापारनुं यथार्थ ज्ञान होवा माटे आवश्यक छे के थोडुं पण अंतरवलोकन करवुं. केमके आपणा पोताना मनमां शुं चाले छे तेनो साक्षात् द्रष्टा तो आपणा पोता विना कोई बीजो होई शकतो नथी. बाह्य चिन्हमात्र उपरथी चेतनव्यापार अने तेमना नियमोनो निश्चय करवा यत्न करवो ए तो व्यर्थज छे; कारणके आवां बाह्य चिन्हो, ज्यां सुधी आपणी अंतरशक्तिमां जे कांई विचारादि होय तेनी अपेक्षाए समजवामां आव्यां नथी, त्यां सुधी, मात्र परभाषाना शब्दो जेवांज छे. आ प्रमाणे अंतरवलोकननी आवश्यकता समजाय छे. परंतु ते एकलाथीज आखुं कार्य थतुं नथी. आपणा एकलाना मननुं अवलोकन करवाथी सामान्यतः चेतननुं ज्ञान बनवुं संभवित नथी; एवा ज्ञानमां जे स्वपरता होय ते दूर करवा माटे आपणा चेतनव्यापारने पगले पगले बीजां चेतनना व्यापार

साथे तोळी जोवानी अपेक्षा छे. आ कार्य जेम वधारे विस्तारथी थाय तेम परिणाम वधारे यथार्थ अने निश्चित आवे. आम जोतां बाह्यावलोकननी पण पुनः अपेक्षा छे. अर्थात् ए उभय रीतिनुं मिश्रण आवश्यक छे एम जे कह्युं ते योग्य छे.

आ उभये मार्गमां केटलीक अडचणो पण छे. आपणा पोताना मनना व्यापार उपर संपूर्ण लक्ष आपी अवलोकन करवा माटे तो, आसपासना व्यवहारविचारादिमांथी लक्षने खेंची लेई केवळ भावनामांज निमग्न करवानुं सामर्थ्य आवेलुं होवुं जोईए. एवुं सर्वथी बनी शकतुं नथी, एम करवामां घणो प्रयास लागे छे. बहारना तादृश बनावो उपरथी मनने उठाडीने अंदरना अगम्य बनावो उपर लीन करवुं ए बहु कठिन काम छे. बीजी जे बाह्यावलोकननी रीति तेमां भय ए छे के पारका विचारोने पण आपणे आपणा विचारानुसार समजीए छीए, एवी आपणा मननी स्वाभाविक रीति छे. आ भय जे पारका मननो आपणे विचार करता होईए ते देश, काल अथवा गमे ते कारणथी जेम वधारे विदूर होय तेम, वधारे वधे छे. कोई अंग्रेजने हिंदु अथवा आफ्रिकनना विचार समजवा कठिन पडे छे. हिंदुथी पोतानाज वेदकालना ऋषिओना चेतनव्यापारनुं अनुमान निश्चयपूर्वक थई शकतुं नथी. स्त्रीओनी स्थितिनो निर्णय पुरुषोथी यथार्थ रीते बनतो नथी. बाळकोना चेतनव्यापार उपर महोटी उमरनां माणस जे विचार आपे छे ते विषे ए बाळकोज पोताना विचार दर्शावी शके तो आवा विचारोमां घणुंक अयाथार्थ्य छे एम तुरत जणाया विना रहे नहीं. थाय छे एम के बाह्यचिन्होनुं अवलोकन करते करते आपणे आपणा चेतनव्यापारने आधारे कल्पना उठावी ते कल्पनाद्वारा देशकालथी व्यवहित चेतनना व्यापारने पण विलोकीए छीए.

आपणां शास्त्रोमां योग आदि शास्त्रद्वारा जे चेतनव्यापारना नियम जणाया छे ते केवळ अंतरवलोकनने मार्गेज जणायला छे; एमां बाह्यावलोकननुं मिश्रण ओछुं छे, वलके नथी. परंतु तेटलाज कारणथी ए विचारो केवळ खोटा छे एम कहेता पूर्वे चेतन शुं छे? ए प्रश्ननो निर्णय थवा अपेक्षा छे, ने ते तो अत्रे अप्रकृत छे. जो चेतन जडथी स्वतंत्र अने देशकालथी अविकृत एकाकार होय तो ए विचारोमां खोटापणुं होवानो बहु थोडो संभव छे. परंतु सारी पेठे स्मरी राखवा जेवुं छे के एकला अंतरवलोकनने आधारे चलावेला निश्चयोमां पोते पोतानेज वखते छेतरी जाय एवुं बनवानो घणो संभव छे. एटले सामान्यतः चेतनशास्त्रनो विस्तार करवामां अंतर अने बाह्य उभये अवलोकननुं मिश्रण सर्वथा इष्ट छे.

५. मन अने ज्ञानतंतुचक्रः—शास्त्रनो अर्थ ए छे के तेमां पद्धतिपुरःसर यथार्थ ज्ञान सामान्य सिद्धांतोरूपे दर्शावेलुं होवुं जोईए. चेतनशास्त्रनो पण उद्देश चेतनना व्यापारमात्रने केटलाक सामान्य सिद्धांतोमां लावी सूकवानो होवो जोईए. एटला माटे अवलोकनथी मेळवेला व्यापारोनो संग्रह करी तेमने जुदा जुदा वर्गमां वे'ची नाखवा ए आ शास्त्रनुं प्रथम कर्तव्य छे; अर्थात् चेतनना अनंत व्यापारोना अमुक अमुक सादृश्यादिने आधारे केटलाक वर्ग पाडवा ए आ शास्त्रना आरंभमां करवानुं छे. आम करवामां चेतन चेतनना जे विशेष धर्म होय ते उपर लक्ष न आपतां, सर्वना जे सामान्य धर्म छे ते उपरज नजर राखवानी छे.

प्रत्येक शास्त्र, आ प्रमाणे पोताना शास्त्रनी व्यवस्था कर्या पछी ते ते व्यवस्थित विषय विषे कांई पण विधान करे छे, अनेक बनावोने लागु पडे तेवा केटलाक सामान्य नियमो घडे छे. ज्यारे आवा व्यवस्थित

विषयो कालसंबद्ध संभवरूप होय छे त्यारे तेमनी वच्चे पूर्व, उत्तर, समकालीन एवा संबंधनी पर्यालोचना करवानी प्राप्त थाय छे, ने ते आधारे केटलाक नियम कही शकाय छे; बीजी रीते कहीए तो एवा संभवोनो कार्यकारणरूपसंबंध बतावी शकाय छे. चेतनशास्त्र पण आवाज नियमोनो शोध करवानो उद्देश राखे छे. ए शास्त्रनो हेतुज चेतनव्यापारनो जे अंत्य सामग्री उपर आधार छे ते शोधी काढी तेनो निश्चय करवानो छे.

जरा एक तपास करतां समजी शकाशे के चेतनव्यापारो पोतानाथी अव्यवहितपूर्वगामी एवा व्यापारो साथेज संबंध राखे छे एम नथी, पण गमे तेटला व्यवहित एवा पूर्वव्यापारो साथे पण संबंध राखे छे. उदाहरण— कोई बाळक आज्ञा थतानी साथे ते आज्ञाने ऊठावे छे. आज्ञा ऊठाववानी वातनो आधार बाळकने तेवी टेव पडेली होय ते उपर छे, अने ते टेव तो कोण जाणे पांच, दश के पचीश वर्षथी थती आवती होय छे, अर्थात् घणां व्यवहित एवां कारणो उपर आधार राखती होय छे. आवी स्थिति विचारतां एम समजाय छे के चेतनने उत्तरोत्तर वृद्धि पामती शक्तिरूपे मानवुं जोईए. एटले चेतनशास्त्रना घणामां घणा अगत्यना नियमो अने सिद्धांतो चेतननी आवी उत्तरोत्तर वृद्धि विषेना नियमरूपेज होवा जोईए.

अत्रत्य वाचकने चेतननी वृद्धि थवानी वात व्याघात जेवी लागशे. चेतन—ज्ञान—ते तो सर्वदा एकाकार छे, एमां वृद्धिह्रासनो संभव नथी एम आपणां तत्त्वशास्त्रोनो निर्णय छे. आ वात अत्रे खोटी कहेवानुं तात्पर्य नथी, पण नानात्वरहित एवुं जे एकाकार एकरस चेतन तेमां बुद्धि, वृत्ति, इच्छा, ऊर्मि आदि नानात्व शा प्रकारे प्राप्त थाय छे एनो विचार तेज चेतननी वृद्धि अथवा विकास तेनो विचार छे एम समजी लेवुं.

त्यारे आवा नियमोनो निश्चय करवामां स्वाभाविक रीतेज ज्ञानतंतुना व्यापारनो पण विचार करवो प्राप्त थशे; केमके चेतनव्यापार अने तंतुचक्रने आपणे हमणांज स्पष्ट विवेचन करी बताव्युं तेवो नियत संबंध छे. मन अने शरीरने शो अने केवो संबंध छे तेनो प्रथम विचार करवो ए आ शास्त्रना अधिकारी थवामां बहु उपयोगनी वात छे. चेतनशास्त्र अने शारिरिशास्त्र उभयनी सीमानी वच्चेनो आ प्रदेश छे, एटले ते विषे प्रथमथीज विचार करवो उचित छे. आ " शारीरिक चेतना " विषे अत्र बे बोल कहेवा ठीक पडशे.

६. **चेतनानां स्थानादिपरत्वे विचारः**—आपण सर्वने सारी रीते खबर छे के चेतनानो तंतुव्यापार साथे गाढ संबंध छे, सविशेषे मगजमांनां स्थानो साथे प्रगाढ संबंध छे. मुख्य वात जोवानी ए छे के तंतुचक्रना कीया भाग, मगजनां कीयां स्थान, चेतनव्यापार साथे वधारे संबंध राखे छे ? एम धारवामां आवे छे के चेतनानुं स्थान मगज छे, पण तेनी सीमा हजु सुधी निश्चित नथी. मगजना सर्व भागना व्यापार चेतनाने व्यापृत करे छे, के कोई कोई ए पण जाणवानुं बाकी छे; तेम ए पण जाणवुं बाकी छे के मगज सिवाय अन्य स्थानो पण चेतनस्थानो कही शकाय के नहीं.*

वळी अमुक अमुक चेतनव्यापारने कीयां कीयां तंतुस्थान सहकारी छे ते पण जोवानुं छे. अने ए नक्की करवुं बहु कठिन नथी. ए तो जाणीती वात छे के अमुक जातनां प्रत्यक्ष जेमके शब्दनां, ते श्रोत्र जेवी अमुक इंद्रिय साथे संबंध राखे छे, अने अंदरनी श्रवणनाडी साथे पण योग धरावे छे. परंतु ज्यारे आपणे ए वातनो शोध करवा बेशीए छीए

* हालमां दा. बुकेनने 'सारकोनोमी'नो जे शोध कर्यो छे तेमां एम पण नियम तेणे बताव्यो छे के मगजमां जे चेतनस्थानो छे तेवांज हृदय अने शरीरना अधोभागमां पण छे. धीमे धीमे पाश्चात्य शोधनुं एकंदर वळण एवुं थतुं चाले छे के जडना अणुमात्र सचेतज छे.

के कीया प्रकारना चेतनव्यापार साथे कीयां मगजनां स्थानने संबंध छे, त्यारे आपणा हाथमां कशी चोकश वात आवी शकती नथी. मस्तिष्कविद्याने आधारे मगजमां जे जुदां जुदां चेतनस्थान धारवामां आवे छे ते उपर हजु सर्वने विश्वास आव्यो नथी; शरीरशास्त्र ए बाबत पर केटलुंक अजवाळुं नाखवानो यत्न करे छे, पण हजु सुधी जे कांई जाणवामां आव्युं छे ते संपूर्ण अने संतोषकारक नथी. चेतनव्यापार अने मगजना व्यापारना अनुषंगसंबंधे बे जुदां मत छे. एकमां एम मान्युं छे के मगजनां जुदां जुदां स्थान जुदा जुदा चेतनव्यापारनां बीज छे; बीजामां एम मनाय छे के समग्र मगज अथवा तेना कोई मुख्य विभाग चेतनव्यापारमां सहाय थाय छे.

चेतनानुं शरीरमां स्थान क्यां छे ? ए वातनो निर्णय थया पछी बीजा अनेक विचार उत्पन्न थाय छे. तंतुव्यापार अने चेतनव्यापारने जे संबंध छे तेनुं प्रमाण केटलुं छे, केटलो चेतनव्यापर केटलो तंतुव्यापार करे छे, ए विचारवानुं प्राप्त थाय छे; आ प्रमाणनो निर्णय चेतनव्यापारनां बधां स्वरूप विषे तो नहीं, पण प्रत्यक्ष विषये कांईक अंशे बनी शक्यो छे. अमुक प्रत्यक्ष माटे तंतुव्यापारनो अमुक उत्कर्ष जोईशुं ए वात समजाई छे; ए आधारे अनुमान करतां एम जणाय छे के चेतनव्यापार माटे, मगजना व्यापारना पण अमुक उत्कर्षनी आवश्यकता छे. वळी चेतनव्यापारनी साथे मुख्य तंतुव्यापार अमुक समय सुधी रहे एवुं बने छे, अने तेनुं माप पण काढी शकाय छे. एवुं पण मानवाने कारण छे के मगजमां एवा घणा व्यापार थाय छे जे अति त्वरित होवाने लीधे कशो चेतनव्यापार पेदा करी शकता नथी. आवा मगजना व्यापारने " अज्ञातज्ञान " अथवा " अज्ञातचेतनव्यापार " एवुं नाम आपवामां आवे छे. आ रीते तंतुव्यापार अने चेतनव्यापारना उत्कर्ष, संबंध

अने प्रमाणनो विचार पण आ मार्गे अवलोकन करतां करी शकाय छे. जेने आगळ आपणे फेकनरनो नियम ए नामथी समजावीशुं ते आवा शोधनुंज फळ छे.

'शारीरिकचेतना'नी पद्धतिने अनुसारे चालता शोधमां ए विचार पण करवा जेवो छे के कोई इंद्रियनी स्थितिमां नाडीचक्रनी स्थितिना वृद्धिह्रासथी, अथवा कोई स्थानिक कारणोथी जे फेरफार थाय तेथी तदनुषंगिक चेतनव्यापारमां केवा फेरफार थाय छे? आ प्रकारनो जे विचार ते व्यवहारमां घणोज उपयोगी थई पडे छे. निशाळमां भणाववानुं काम करनारने ए वात जाणवी बहुज अगत्यनी छे के मगजनी स्थितिमां फेरफार थवाथी चेतनव्यापारमां केवा केवा फेरफार थाय छे. मगजनां स्थानोने चेतनव्यापार साथे केवो ने केटलो संबंध छे ते विषे हाल आपणने निश्चित ज्ञान नथी एटले आ संबंधनो शास्त्रीय याथार्थ्यने रुचे एवो निर्णय करी शकातो नथी; पण मगजनी स्थितिना फेरफारने चेतनव्यापारनी प्रवृत्ति साथे जे संबंध छे ते विषे केटलाक मुख्य नियमोनुं स्वरूप जाणवामां आव्युं छे, जे अत्रे बतावबुं लाभकारक छे.

नित्यना अनुभवथी तेम शास्त्रीय प्रयोगना अवलोकनथी एम सिद्ध थयुं छे के अमुक समये जे चेतनव्यापार थई शके तेनो आधार ते समये उपयोगमां लई शकाय एवी जे शक्ति मगजमां होय तेना उपर रहे छे. कोई एक समये जेम मगज वधारे शक्तिमान् तेम चेतनव्यापार वधारे थई शकवानो संभव. बुद्धिनो उपयोग जेमां पडे तेवां कार्य करवा संबंधेज आ कहेवुं छे एम न जाणवुं, पण वृत्ति अने कार्यमात्रने ए कहेवुं लागु थाय छे एम समजवुं. अनामय अने शक्तिपूर्ण मगज होय तो अनेक तादृश वृत्ति पेदा थवानो संभव छे, अनेक सामर्थ्यवाळां कार्य थवानो अवकाश छे. परंतु मगजनी स्थिति अथवा एकंदरे तेनुं

कार्योन्मुखत्व तेनो आधार आखा तंतुचक्रमां उपयोगमां लई शकाय तेवो जे शक्तिसमूह होय ते उपर छे. तंतुचक्रनी शक्तिमां अनेक कारणथी वृद्धिह्रास थाय छेः जाग्रत् अने निद्राथी फेर पडे छे; शरीरप्रकृतिना फेरफारथी फेर पडे छे, घणा मानसक्षोभथी फेर पडे छे. एमज मगजनी कार्योन्मुखतानो आधार बीजा पण एक कारण उपर रहे छेः जेटले अंशे मगजने तुरतज कार्यमां वापरवामां आव्युं होय तेटले अंशे तेनी कार्योन्मुखता ओछी थाय छे. लांबो समय चलावेला, गमे तेवा, मगजने वापरवुं पडे तेवा, कार्यथी शक्ति ओछी थाय छे. ऊनाळाना दिवसमां लेवाय छे तेवो लांबो आराम लेवाथी मगज सशक्त अने कार्योन्मुख रहे छे.

मगजनां अमुक स्थाननो अमुक चेतनव्यापार साथे संबंध छे ए वातनी जेटले अंशे जेवी आपणने प्रतीति होय तेटले अंशे ते प्रकारे आना आज विचार तेने पण लागु करी शकाय. अमुक स्थान जेमके दृष्टिस्थान, तेमांथी तुरतज जेटलुं कार्य थयुं के न थयुं हशे तेटला प्रमाणमां ते स्थाननी कार्योन्मुखतामां फेर पडशे. आम छे खरुं पण मगजमां आवेलां सर्वे स्थानने जे निकट संबंध छे ते उपरथी एक स्थानने श्रम लाग्यो होय तो सर्वेने श्रम लागे ए वात लक्षमांथी जवा देवी जोईए नहीं. तेमज ए पण लक्षमां राखवुं के सर्व प्रकारना चेतनव्यापार-(पछी ते गमे ते हो)मां अवधान आपवुं ए तो मुख्य वातज छे, एटले चेतनव्यापारनो परिणाम प्रत्येक प्रसंगे अवधानना स्थानने अति श्रमित करवा रूपज थवानो.

आ बधा विचारो उपरथी एम फलित थाय छे के मगजने आराम आपवानी तेम तेना व्यापारमां कांईक नानात्व राखवानी आवश्यकता छे. काम कर्या पछी मगजने केटलोक आराम आपवोज जोईए

के फरी काम करवा माटे ते ताजुं थाय. रमत गमतथी पण आवो आराम घणे भागे प्राप्त करी शकाय छे, केमके एमां मगजनां नित्य उपयोगमां आवतां स्थानोनोज उपयोग थाय छे, एटले घसारो लागतो नथी, अने अवधान तथा बुद्धिपूर्वक विचारनां जे स्थान तेने आराम मळे छे. परंतु एक पासा घणो श्रम अने एक पासा आवो रमत गमतनो सामान्य श्रम ते बे वच्चेनो मार्ग ए छे के मगजना एक ने एक स्थानने घणो समय श्रमित करवुं नहीं; एटला माटे चेतनव्यापारना स्वरूपमां फेरफार राखवो. हाथे करवानुं काम होय ते मूकी आंखे जोवामात्रनुंज काम करवुं; लखवाथी वांचवामां बेसवुं; गावाथी बजाववामां लक्ष घालवुं; बुद्धिनो खप पडे तेवा विषयमांथी मात्र साधारण ऊर्मि आदिवेडे चाले तेवा विषयमां रोकावुं; इत्यादि.

७. चेतनशास्त्रनो अन्यशास्त्र साथे संबंधः—चेतनशास्त्रमां अमुक संभवो अने प्रसंगोनो विचार छे, एटले तेटले अंशे ए शास्त्र रसायन, उद्भिज्ज आदि शास्त्रना सरखुंज छे. एटलुंज नथी पण तंतुचक्रने चेतनव्यापार साथे जे संबंध छे तेने लीधे शारीरशास्त्र साथे चेतनशास्त्रने निकट संबंध छे. बीजी पासा जोईए तो चेतनशास्त्र शास्त्रमात्रनुं उपकारक छे, केमके चेतनानो विचार करतां तेमां ज्ञानमात्रनो विचार आवी जाय छे. ज्ञानमात्र, पछी ते रसायनशास्त्रनुं, उद्भिज्जशास्त्रनुं, खगोलशास्त्रनुं के गमे तेनुं, पण ज्ञानमात्र कोई ज्ञाता (चेतन)नुं कार्य छे, एटले चेतनशास्त्रनोज विषय छे. अर्थात् आपणे जेने ज्ञान कहीए छीए ते ज्यारे थाय छे त्यारे चेतनमां शुं थाय छे ? एनो विचारज चेतनशास्त्र चलावे छे. पण ए ज्ञान यथार्थ छे के अयथार्थ तेनो विचार चेतनशास्त्रने करवानो नथी. चेतनना ज्ञानना स्वरूपमां जेटलो भाग छे तेनोज विचार आ शास्त्रमां

थाय छे, पण ए ज्ञानना स्वरूपमां जडनो जे भाग छे, अने बाह्यवस्तुगतिमां ते जेने लीधे यथार्थ के अयथार्थ कहेवाय छे, ते तो तत्त्वशास्त्र जेमां न्यायशास्त्र पण समाय छे तेनो विषय छे.

चेतनशास्त्र व्यावहारिक शास्त्र नथी, औपपत्तिकशास्त्र छे. औपपत्तिकशास्त्रमां जेवी वस्तुस्थिति छे तेवीनो विवेक करी ते शी रीते थाय छे, थई छे, तेनो विचार करेलो होय छे; व्यावहारिक शास्त्रमां वस्तुस्थिति केवी जोईए, केवी इष्ट छे, तेनो विचार होय छे. एम आ बे प्रकारनां शास्त्रनो भेद छतां तेमनो संबंध पण घणो निकट छे. इष्टार्थ साधवा माटे जे साधनोनो उपयोग थाय तेनी स्थिति जाणवी आवश्यक छे. आम जोतां चेतनशास्त्र घणांक व्यावहारिक शास्त्रनुं निदान थई शके छे. जे जे व्यावहारिक शास्त्रनो उद्देश आपणी बुद्धि, आपणी वृत्ति, अने आपणा व्यवहार चारित्र आदिने असर करवानो छे तेनो आधार चेतनशास्त्रज छे, वाग्माधुरी, नयपद्धति, नीति, आदिशास्त्रोनो आधार चेतनव्यापारना ज्ञान उपरज रहे छे, एटलेः—

(१) चेतनशास्त्र, एकंदरे समग्ररूपे, शिक्षणशास्त्र अथवा जे व्यावहारिकशास्त्र बुद्धि, वृत्ति अने इच्छा, ए मनोविभागनी सुधारणा उपर लक्ष आपे छे तेनो मुख्य आधार छे.

(२) विशेषतः एटले जुदा जुदा विभागरूपे जोतां चेतनशास्त्र नीचे जणावेलां शास्त्रने उपकारक छेः—

(क) बुद्धिः—न्यायशास्त्र अथवा विचारक्रमना नियमोनुं शास्त्र; अने तेनी साथे संबंध राखनार वाक्पाटव अथवा चित्तने आकर्षण थवा जेवी असर करनार शास्त्र.

(ख) वृत्तिः—सौंदर्यशास्त्र.

(ग) इच्छाः—नीति एटले के शुभाशुभना आधारे वर्तनने नियमनार तथा वर्तननो उद्देश बतावनार शास्त्र; तेमज तेना अंगभूत नयशास्त्र अने राज्यपद्धतिनुं शास्त्र.

आ उपरथी, चेतनशास्त्र अने शिक्षणने जे निकट संबंध छे ते तुरत जणाई आवे छे. चेतनाना आखा प्रदेशने जेनी असर छे ते आ शिक्षणशास्त्रज छे. शिक्षणनुं काम करनार, नैयायिक, सौंदर्य समजनार, कलावान्, नीतिज्ञ अने नयज्ञ सर्वेनां काम करे छे. विचारने योग्य मार्गे वाळवो, वृत्तिओने प्रफुल्ल करता जवी, अने वर्तनने नियम उपर लावतुं, ए बधुं तेनुं कर्तव्य छे.

वळी आ वात वधारे स्पष्ट करी जोवा माटे शिक्षणनो बीजां शास्त्र उपर जे आधार छे ते पण जोईए. व्यावहारिक शास्त्ररूपे शिक्षणनी प्रवृत्ति पण अमुक उद्देशथी होवी जोईए; अर्थात् तेटले अंशे शिक्षणने नीतिशास्त्रनो आश्रय करवो पडे छे. केमके वर्तन अथवा प्रवृत्तिना उद्देशनो निर्णय करवो, शुभाशुभनो छेवट निर्णय बतावबो, ए काम ते शास्त्रनुंज छे. एमज विचारक्रमने प्रफुल्ल करवाना यत्नपरत्वे जोतां शिक्षणशास्त्रने न्यायशास्त्रनो आश्रय लेवो पडे छे. मन उपर अमुक नियमोनी अमुक असर थाय छे ए आदि विचारमां शिक्षणशास्त्रने नयशास्त्र पण विचारवुं पडे छे. एम शिक्षणशास्त्रनो पोतानो आधार पण, घणांक शास्त्रो जे पोते चेतनशास्त्र उपर आधार राखे छे, तेना उपर रहेलो छे. शिक्षक तेम शिक्षणशास्त्र उभयेनो छेवट आधार चेतनशास्त्र उपरज छे. आवो परंपरित संबंध छे एमज नथी, पण शिक्षणनो नित्य व्यवहारज मनोव्यापार साथे रहेलो छे, एटले चेतनशास्त्रनो एमां साक्षात् संबंध अने उपयोग स्पष्ट छे.

प्रकरण २.

चेतनव्यापार अने तेनी सामग्री.

१. चेतनव्यापार अने कार्यः—चेतनानां कार्यनी नियमित व्यवस्था करी बतावबी ए चेतनशास्त्रनो मुख्य विषय छे एम आपणे कही आव्या. चेतन विषे बनी शके तेटला सामान्य सिद्धांत नक्की करवा ए आ शास्त्रनो उद्देश छे. ए उद्देश सिद्ध थाय ते माटे चेतनानां कार्य केटलां ने कयां छे एनो प्रथम निश्चय करवो जोईए; पछी तेमनामां जे कांई साधर्म्य के सादृश्य होय तेने आधारे ते कार्यना वर्ग पाडवा जोईए.

चेतननां कार्यने जुदां जुदां नाम आपवामां आवे छेः चेतनानी स्थिति, मननी स्थिति, ज्ञान आदि नामथी ते बतावाय छे. आ कार्य केवळ कालपरत्वे छे, अने अमुक आनुपूर्वीवाळां होई शके छे, माटे एमने चेतनना व्यापार अथवा चेतननी क्रियारूपे पण वर्णववामां आवे छे. परंतु वारंवार चेतनव्यापार अने चेतनकार्य ए वच्चे भेद राखवानी आपणने जरूर पडशे ए वात स्मरणमां राखवा जेवी छे. दर्शन एटले दर्शननो व्यापार अने दृष्टि एटले दर्शननुं फल ते वच्चे आपणे निरंतर भेद राखीए छीएज.

कोई अमुक संधिए जोईए तो चेतनमां, बहु ओतप्रोत व्यापारथी संभवेलां मिश्र कार्य आपणा दीठामां आवे छे. उदाहरण—ग्रीष्म कालनी शीत सायंशोभा अवलोकतो कोई पुरुष खुल्ली जगोमां बेठो छे; तेना मनमां चक्षु, श्रोत्र, त्वचा, इत्यादिथी अनेक प्रत्यक्ष उपजतां चाले छे, अने तेमनी असरो अनुकूल प्रतिकूल थई मनना रंग बदलाता रहे छे. एज समये तेना मनमां कोई तादृश कल्पना पण जाग्रत् छे, भूतवृत्तांतोनुं स्मरण थाय छे, अथवा सुखकर भाविनुं

चित्र आनंद आपे छे. आ प्रकारे आ पुरुषना चेतनमां आ समये अनेक व्यापार ओतप्रोत थई गया छे, अने कोई विलक्षण मिश्र कार्य पेदा थयेलुं छे. आवा गुंचवायला कोकडाने ऊकेली तेना तारे-तार जुदा बतावबा ए आ शास्त्रानुं प्रथम कर्तव्य छे. आनुं नाम पृथक्करण अथवा विकल्प कहेवाय छे. पृथक्करणथी गमे तेवा मिश्र कार्यना विभाग करी तेनां सादां अने अंत्य (एटले जेनुं पुनः पृथक्करण बने नहीं तेवां) रूप बतावी शकाय छे.

पृथक्करणथी कोई पण मिश्रचेतनकार्यना विभाग करतां जे अवयवो नक्की थाय ते अवयवो, बीजां मिश्र कार्योना अमुक अवयवो साथे सादृश्यवाळा छे एम पण लक्षमां आव्या विना रहेशे नहीं. अमुक प्रत्यक्षने अमुक कल्पनाथी भिन्न करवामां प्रत्यक्ष अने कल्पना ए आखा वर्गनो पण विचार आव्या विना रहे नहीं. अर्थात् पृथक्करण करवाथी चेतनकार्यना वर्ग पाडवानुं काम पण आरंभाय छे.

चेतनकार्यना साधारण प्राकृत लोके तो केटलाक विभाग घणो समय थयां मानेला छेः दर्शन, बुद्धि, विचार, कल्पना आदि अनेक विभागो आपणे नित्य सांभळीए छीएः परंतु शास्त्रनुं कर्तव्यज ए छे के प्राकृत लोकनुं जे सामान्य अव्यवस्थित ज्ञान तेने निश्चयवाळुं अने व्यवस्थित बनाववुं. एटले प्राकृत लोके जे विभाग मान्या छे तेनाथी आरंभ करी शास्त्रीय रीते केटला विभाग वास्तविक छे एज जोवानुं काम अत्र बाकी रहे छे.

प्राकृत रीते जे विभाग थया छे तेउपर विचार करीशुं तो सहज समजाशे के ए बधामां मुख्य विभाग त्रण छे. तेमने परस्पर साधर्म्य कशुं नथी, अर्थात् ए त्रणने अमुक साधर्म्य मानीने कोई एक वर्गमां मूकी शकाय एम नथी. चेतनना ए त्रणे भाग छे एटलुंज तेमनामां साधर्म्य छे, बाकी बीजुं एवुं कशुं नथी के जेथी तेमनी अने चेतननी वच्चे एक

नवो वर्ग मानी शकाय. दर्शन, स्मरण, विचार ए आदि कार्यने आपणे सामान्यतः बुद्धिनां कार्य कहीए छीए; राग, द्वेष, क्रोध, भय, हर्ष, शोक इत्यादिने ऊर्मि अथवा वृत्तिनां कार्य कहीए छीए; अने निश्चय करवो, कार्य करवुं ए आदि कार्यने इच्छा एवुं नाम आपीए छीए. त्यारे ए त्रण मुख्य विभागथीज आपणे आरंभ करीशुं.

आनो आज त्रण प्रकारनो भेद स्वीकारी चेतनकार्यना आपणे त्रण विभाग मानीशुं.

(१) **वृत्ति.***—आ विभागमां मननी राग, द्वेष, अनुकूल, प्रतिकूल आदि सर्व स्थितिनो समास थाय छे. वृत्ति केवळ सामान्य ने सादी पण होय—क्षुधा, तृषा आदिना जेवी— अथवा वधारे मिश्र पण होय—प्रेम, पश्चात्ताप, क्रोध इत्यादि जेवी (जेने आपणे ऊर्मि एवुं पण नाम आपेलुं छे).

(२) **बुद्धि.**—आ विभागमां ज्ञानमात्रमां जे जे व्यापार थाय छे तेनो समास कर्यो छे. इंद्रिय साथे सन्निकर्षवाळा पदार्थ ग्रहवा, भूतनो विचार लाववो, भविष्यनी कल्पना करवी, (न्यायशास्त्रमां बतावेला परामर्शक्रमे) विचार करवा, इत्यादि ज्ञानमात्रने अनुकूल व्यापारनो समास आ विभागमां छे.

(३) **इच्छा.**—जेटला जेटला मनोव्यापार कोई पण क्रिया अथवा क्रियानो प्रयत्न करवामां थाय छे ते सर्वनो आ विभागमां समास छे. कोई पण उद्देशपूर्वक कांई कार्य करवुं ते खरे खरुं इच्छानुं कार्य छे; इच्छापूर्वक कार्य करवानो अर्थज ते छे. परंतु तेवां, तेम उद्देश वि-

* वेदान्तादि शास्त्रमां वृत्तिशब्दनो जे पारिभाषिक अर्थ छे ते अत्र इष्ट छे, पण ते करता आ अर्थमां कांईक न्यूनाधिक छे.

नानां पण कार्यमात्र, अने ते ते कार्य माटेना प्रयत्न, सर्वेने इच्छाना विभागमां गण्यां छे, केमके इच्छा विना प्रवृत्ति थती नथी.

आ प्रकारे जे त्रण विभाग पाड्या ते परस्परव्यावृत्त छे. वृत्तिमां बुद्धिनो के इच्छानो, अथवा इच्छामां बुद्धिनो के वृत्तिनो, अथवा बुद्धिमां वृत्तिनो के इच्छानो समास थतो नथी. कोई नानुं बाळक कोई ऊर्मिना आवेशमां रमतुं होय, कोई बाळक शान्तपणे विचार करतुं होय, अने कोई अमुक प्रकारे पोतानी क्रियाशक्तिनो उपयोग करतुं होय, ए त्रणेनां कार्य स्पष्ट रीते भिन्न अने जुदांज छे. एकज समये मनमां आ त्रण अथवा एमांनां बे कार्य साथे साथे स्पष्ट रीते समजाय तेम थई शकतां नथी. वळी एकना एकज मनमां आ त्रणे कार्यनी अवस्थाने विलोकवा करतां भिन्न भिन्न मननी एवी अवस्था विलोकवाथी आ भेद वधारे स्पष्ट थई शकशे. जेनां मन स्वाभाविक रीतेज ऊर्मिमय होय छे तेमनामां बुद्धि अने इच्छानुं सामर्थ्य बहु ओछुं होय छे; तेमज बहु गाढ बुद्धिमत्तावाळां अथवा इच्छाना प्राबल्यवाळां मन ऊर्मिना आवेशने बहु वश नथी होतां. आ उपरथी सहज समजाय छे के मनोव्यापारना जे आ त्रण विभाग कर्या ते एकंदरे परस्परव्यावृत्त होई मनना स्वरूपना अन्त्य विभाग छे, एटले यथार्थ छे.

आ त्रणे विभाग परस्परव्यावृत्त छे खरा, परंतु ते परस्परथी अत्यंत व्यावृत्त होय एवी आशा राखवी व्यर्थ छे. एटलाज माटे हमणां आपणे एम लख्युं के आ त्रणे व्यापार एकज समये "स्पष्ट रीते समजाय तेम" थई शकता नथी. चेतन अथवा मन ते कोई एवो जड पदार्थ नथी के जेमां विभाग पाडीने आ त्रणे विभागने परस्परथी अत्यंत भिन्न राखी शकाय. परस्पराश्रित अने ओतप्रोत एवा अनेक अवयवोथी चेतन बने छे; वृत्ति, बुद्धि, इच्छा, ए त्रणे चेतनना धर्म छे, एटले जेम कोई

वृक्षनां रूप, रंग आदि परस्परथी जुदां जुदां रही शकतां नथी, तेम परस्परथी जुदा रही शकता नथी. वृत्तिनोज कोई प्रसंग जोईए तो तेमां बुद्धि अने इच्छा नहीं होय एम नहीं जणाय. शरीरे कांईक दुःख थयुं (वृत्ति), के तुरत ते दुःखना स्थाननुं ज्ञान थाय छे (बुद्धि), अने ते थतानी साथेज ते दुःखने टाळवानो प्रयत्न सुजे छे (इच्छा). वळी बुद्धिव्यापारमात्र, अवलोकन, विचारादि, पण अमुक प्रकारनी अनुकूलप्रतिकूल वृत्ति साथेज प्रवर्ते छे, तेम अवधानरूप इच्छाकार्यपूर्वकज संभवे छे. एमज इच्छानी प्रवृत्ति जे हेतु उपर रहे छे ते हेतुनो उद्भव वृत्तिमांथी थाय छे, अने इच्छाना उद्देशनो आधार बुद्धि उपर रहे छे.

आ त्रणेने आवो निकट संबंध छे ते अनुभवमां पण प्रत्यक्ष जणाय छे. उत्तम बुद्धिवाळा मनुष्यमां अमुक वृत्तिओ, जेवी के एकनिष्ठा, सत्यपरायणता इत्यादि जणाय छे, अने दृढतायुक्त अवधानरूपे इच्छा पण तेनामां दर्शन दे छे. अतिगाढ अने तादृश वृत्तिवैभववाळां स्त्रीपुरुष अमुक प्रकारना बुद्धिवैभववाळां पण होय छे; तेमने कल्पनाद्वारा वस्तुस्थितिमां तुरत प्रवेश करवानी शक्ति होय छे. छेवट, जेमनामां इच्छा अति बळवाळी होय छे, तेमनामां बलवान् पण नियमित वृत्तिक्षोभ पण जणाय छे, तेम व्यवहारोपयोगी बुद्धिप्रभाव पण ओछो होतो नथी.

आवी वस्तुगति छतां जे त्रण विभाग कर्या ते शा आधारे कर्या छे? यद्यपि त्रणमांनुं एके कार्य एकलुं निराळुं मळी शकतुं नथी, तथापि एवा घणा प्रसंग आवे छे के जेमां ए त्रणमांनुं एकाद कार्यज मुख्य रही बीजां बेने केवळ नज होय तेवां गौण बनावी दे. कोई वार एवुं वृत्तिविलोडन थाय छे के बुद्धि अने इच्छा स्तब्ध बनी जई तेमांज

विलीन थाय. बुद्धि अने इच्छाना संबंधमां पण एनुं एज बने छे. आ वातनो आश्रय लईने आपणे आ त्रण विभाग मान्या छे; एवुं क्वचित्ज बने छे के ज्यां अमुक चेतनव्यापारने आ त्रणमांथी कया विभागमां मूकवो ते न समजी शकाय; एटले आ विभाग आ शास्त्रनो अभ्यास आरंभवा माटे घणामां घणा अनुकूल अने योग्य छे.

२. वृत्ति, बुद्धि अने इच्छाना प्रकार:—प्राकृत लोक वृत्ति, बुद्धि अने इच्छाना विविध प्रकार माने छे. अने तेमने प्रभाव, शक्ति, सामर्थ्य इत्यादि नाम आपे छे. आपणे बुद्धिप्रभाव एवो शब्द वापरीए छीए, अने कल्पना, दर्शन आदिनो तेमां समास करीए छीए. एमज प्रेम, क्रोध आदि वृत्तिओने शक्ति कहीए छीए, अने स्वसंयमन, कार्यपरायणता आदिने इच्छानुं सामर्थ्य, पण कहीए छीए. बुद्धिनो प्रभाव, वृत्तिनी शक्ति, इच्छानुं सामर्थ्य एवा प्रकारना जे भेद मान्या छे ते ठीक छे; केमके उदाहरण जोईए तो दर्शन अने स्मरण ए बे स्पष्ट रीते जुदांज छे एम चेतनशास्त्र जाणनार समजे छे. दर्शनमां साक्षात् सन्निकर्ष थवो जोईए, जेनी स्मरणमां अपेक्षा नथी, एटले दर्शन, वृत्तिशक्तिनो प्रकार छे, स्मरण बुद्धिप्रभावनुं कार्य छे. आवो प्रकारभेद मानीने अवलोकन चलाववाथी आ शास्त्रनो विचार सारी रीते थई शकवामां कशी हानि थती नथी, उलटो लाभ थवानो संभव छे.

आवो प्रकारभेद मान्या छतां अत्र पण पाछुं एम समजवानुं नथी के हवणांज जे उदाहरण आप्युं तेमांनां दर्शन अने स्मरण सर्वथा अत्यंत भिन्न छे, अर्थात् तेमना कारणपरत्वे केवळ तेटलाज कारणने नियत छे. आपणे हाल तुरत आवा भेदथी आरंभ करी अवलोकन चलाववानुं छे, अने निर्णय ए करवानो छे के आ बधा दर्शनस्मरणादिव्यापारना हजु बीजा विभाग थाय छे के नथी थता, अने जो थाय छे तो तेवा अंत्य

विभाग कीया छे के जेना मिश्रणथी सामान्यतः चालता व्यापार बनी आवे छे.

३. बुद्धिना मूलव्यापार:—विकल्प अथवा पृथक्करण करवानो निश्चय राखीने बुद्धिव्यापारनां भिन्न भिन्न कार्य, दर्शन, विचार, इत्यादि—ना मूळ स्वरूपनो निर्णय करवा आ शास्त्र प्रवर्ते छे. ज्ञानमात्रमां मूलव्यापारज ए छे के पदार्थोनो संबंध जाणवो. आ संबंध अनंत प्रकारना छे, पण तेमां मुख्य बे छेः साधर्म्य अने वैधर्म्य*. अमुक पदार्थनुं ज्ञान थयुं एटले शुं थयु? ते पदार्थने अन्यपदार्थोथी जुदो पाडी (वैधर्म्य) बीजा तत्सदृश पदार्थो भेगो मूक्यो (साधर्म्य). एक आम्रवृक्षने जोतां ते अन्यवृक्षथी भिन्न छे एम ज्ञान थाय छे, अने तेनी साथे बीजां अमुक वृक्षना जेवुं छे एवुं पण ज्ञान थाय छे. एज प्रकार ज्ञानमात्रपरत्वे समजवो. आम होवाथी साधर्म्य अने वैधर्म्यने जाणवुं ए बे बुद्धिना धर्म अथवा व्यापार छे एम मनाय छे.

दा० बेन एक त्रीजो बुद्धिधर्म माने छे. गत संस्कारने पुनः जाग्रत करी लेवानी जे शक्ति बुद्धिने छे ते स्मृति अथवा स्मरण पण बुद्धिनो व्यापार अथवा धर्म छे एम तेनुं मानवुं छे. परंतु ज्ञान पामवाना व्यापारमां साधर्म्यवैधर्म्यनो जे उपयोग छे ते करतां स्मरणनो उपयोग जुदाज प्रकारनो छे. ज्ञान पामी शकाय, ज्ञाननो संभव बने, अने ज्ञान पमातुं रहे, तेनी सामग्रीमां स्मरण ए मुख्य वात छे. पण ज्ञान पामवाना व्यापारनुं स्मृति अंग छे एम लागतुं नथी. बुद्धिना उल्लासने माटे स्मृतिनी आवश्यकता छे, बुद्धिनाज नहीं, एकंदरे आखा चेतनना पण. स्मरणने माटे अत्र जे कहेवामां आव्युं तेनुं तेज जुदां जुदां मनः-

* न्यायविषेना मारा लेखमां ए बेने सादृश्य अने सापेक्षत्व एवां नाम कोई कारणवशात् आप्यां छे.

कार्यने मिश्र करी अन्यकार्य उपजाववानी शक्तिने पण लागु थाय छे; अने आ शक्तिने स्मरण साथे संबंध छे तथा ए उभये आखा चेतनना उल्लासमां उपयुक्त छे एम आगळ बतावामां आवशे.

त्यारे आ प्रकारे बुद्धिव्यापारना बे सादा अने मूलभूत विभाग मानवाथी दर्शन, कल्पना इत्यादिने ज्ञान (ज्ञान पामवानी क्रिया)ना क्रममां एक एक पगथीआ रूपे मानी शकीशुं; मूलव्यापारना जुदा जुदा प्रकारनां मिश्रणना ए बधा प्रकार छे एम हवे बतावी शकाशे. उदाहरण—छेवटमां छेवटनुं ज्ञान जेने प्रत्यक्ष कहीए छीए तेमांज जोईए तो अन्य प्रत्यक्ष करतां अमुक प्रत्यक्षने जुदुं समजवुं ए वैधर्म्यकार्य थाय छे. पछी दर्शनव्यापार विलोकीए तो तेमां अमुक पदार्थ अथवा वस्तुनी आकृतिरूपे अमुक प्रत्यक्षोने मानी लेवानी क्रिया थाय छे, ने छेवट विचार करवामां एवा पदार्थना आखा वर्गने बीजा पदार्थवर्गथी जुदो पाडी लेवामां आवे छे. आ प्रकारे बुद्धिव्यापारने क्रमपुरःसर योजवाथी चेतनोल्लासनो विवेक बतावानो मार्ग थाय छे.

हवगांज कह्युं हतुं तेम आ शास्त्रवाळा चेतनना कार्यनुं पृथक्करण करी तेमना वर्ग पाडे छे, एवा उद्देशथी के तेमना केटलाक सामान्य सिद्धांत बनावी शकाय. आवा सिद्धांतोने चेतनना सिद्ध नियमो कहे छे. आवा नियमो घणुं करीने, परस्पर चेतनकार्यनो, तेम चेतन अने जड कार्यनो संबंध बतावे छे. आवा संबंध आनुपूर्वीरूप के आधाररूप होय छे. ए नियमो कोई एक कार्यने तेना पूर्वगामी कार्य साथे अथवा सहभूत कार्य साथे जे कार्यकारणरूप संबंध होय ते स्पष्ट करी आपे छे; एटले के अमुक कार्यना उत्पाद माटे शी सामग्रीनी अपेक्षा छे तेनो निर्णय बतावे छे.

आम करवामां पण आ शास्त्र, प्राकृत लोक सामान्यतः जे कहे छे तेने वधारे शास्त्रीय बनावी ले छे. अमुक स्थिति अने अमुक चारित्र्यगुण वच्चे माणसोए अनादि कालथी अमुक अमुक संबंध कल्पेला छे; ए संबंध विषेनी अनेक लोकोक्ति व्यवहारमां प्रचलित छे. "पहेलो घा राणानो", "अनुभव महोटो शिक्षक छे", "काणीआ नर कोईक साधु कोइक दाता मांजरा" ए आदि उक्तिओमां चेतनशास्त्रना अमुक अमुक नियमोनुं तत्त्व समायलुं छे. आवो प्राकृतव्यवहार भेगो करीआ शास्त्र जाणनारा तेमांथी सिद्ध व्यवस्थावाळा नियमो घडी काढे छे.

५. सामान्य अने विशेष सामग्री तथा नियमोः—

कोई पण मनोव्यापारनी निरीक्षा करवाथी जणाशे के तेनी जे सामग्री छे तेमांनी केटलीक सामान्य अने केटलीक मात्र ते व्यापारनेज उपयुक्त एवी विशेषसामग्री छे. उदाहरण—दर्शननी विशेषसामग्रीमां इंद्रियार्थसन्निकर्ष अने भूतसंस्कारनुं स्मरण ए बेज गणी शकाय; परंतु दर्शननो आधार अवधान उपर पण घणे भागे रहे छे ए वात लक्षमां लेतां एने पण सामग्रीमां गणवुं जोईए; छतां अवधान ए दर्शन करतां अनेक बीजा मनोव्यापारने पण उपयुक्त छे एटले ते दर्शननी विशेषसामग्रीमां नहीं पण सामान्यसामग्रीमां गणाय छे. चेतनशास्त्रनुं कर्तव्यज ए छे के चेतनकार्य अथवा चेतनव्यापारनी जे सामग्री होय तेने बनता सुधी सामान्यसामग्री रूपे बतावता यत्न करवो. अवधान जेवी बीजी मनोव्यापार अथवा चेतनकार्यनी सामग्री, मननी स्थितिनो वारंवार परिवर्त करवानी आवश्यकता, ए पण छे. केमके एनाथीज अमुक समय सुधी चाली शके एवो चेतनव्यापार संभवे छे. आवी सामान्य सामग्री बतावती एज चेतनशास्त्रना मूलभूत नियमो बतावानो यत्न जाणवो.

कोई पण चेतनकार्यनुं स्पष्टीकरण करवा माटे ते कार्यनी सर्व साम-

थी –सामान्य तेम विशेष– जेनाथी ते कार्यनो उत्पाद संभवतो होय, ते बतावबी जोईए. आम होवाथी वारंवार आपणे अव्यवहितपूर्वगामी (अथवा सहभूत) कार्योंने सामग्रीमां गणवां पडशे एटलुंज नहीं, पण बहु व्यवहित कार्योंनो पण सामग्रीने अंगे विचार करवो पडशे. अमुक वातनुं स्मरण थयुं ते समये जे वस्तु विचारादिना जोवाथी ते स्मरण उपज्युं ते तो बतावबुंज जोईए, पण तेनी साथे ए पण बतावबुं जोईए के आ रीते स्मरण करावनार वस्तु तथा जेनुं स्मरण थयुं ते वस्तु ए उभयने आपणा भूत अनुभवमां कोई वार निकट संबंध थयेलो छे.

एटली वात अत्रे कहेवी उचित छे के कोई पण चेतनकार्य जेम वधारे मिश्र कारणोनुं कार्य होय छे तेम आपणे जे छेवटनुं फळ तेनेज तत्पूर्वगामी कारणपरंपराना कार्यरूपे मानीए छीए. दर्शनव्यापार अने दर्शन, ज्ञानव्यापार अने ज्ञान, भावव्यापार अने भाव, विचारव्यापार अने विचार एनो आ प्रकारेज भेद थयलो छे. एटले अमुक कार्यनुं स्पष्टीकरण करवामां ते कार्यना अंगनुं पृथक्करण करी बतावो अथवा तेनां कारण बतावो ते बे एकनी एकज वात छे.

कोई पण चेतनव्यापारना अंगभूत अवयवो अथवा तेनी सामग्रीमां अवधान करतां वधारे मुख्यतावाळुं बीजुं कांई नथी. हमणांज कह्युं छे तेम अवधान ए चेतनव्यापारनी सामान्यसामग्री छे. बुद्धि, वृत्ति अने इच्छा ए प्रत्येक जो यथार्थ रीते तादृश होय तो प्रत्येकमां अवधाननी बहुज अपेक्षा छे. एमांना कोई पण व्यापारनां जुदां जुदां अंग सारी रीते प्रवृत्ति करी शके ते माटे मुख्य आवश्यकताज अवधाननी छे एवुं सहजे आगळ जतां स्पष्ट थशे. चेतनव्यापारने प्रवृत्तिमान् व्यापाररूपे जेटले अंशे मानीए तेटले अंशे तो तेमनो समास अवधानना पेटामां थवो जोईए. त्यारे अवधान ए चेतनव्यापारनी सामग्रीमांनी मुख्य सामग्री छे एटलुंज अत्र तो जणाववा जेवुं छे.

एज प्रकारे अमुक चेतनकार्य अमुक प्रकारनुं नीवडे तेमां मननी स्थिति ए पण ओछी उपकारक नथी. मन शांत अने स्थिर होय, अथवा कोई तीव्र ऊर्मिथी क्षुब्ध थयलुं होय ते समयनां बुद्धिकार्यमां जे अंतर पडे छे ते नित्य अनुभवमां आवे छे. अमुक अमुक चेतनव्यापार करवा माटे मन तत्पर थाय तेनो मार्ग पण सर्वदा एकनो एक होतो नथी. मनने कोई महाक्षोभ करे एवो धक्को लाग्या पछी ठेकाणे आवतां बहु वार लागे छे, ने तेटली वार बुद्धिव्यापार मंद पडी जाय छे के छेकज अटके छे. जेम अवधान तेम मननी सानुकूलप्रतिकूल स्थिति ए पण चेतनव्यापारनी एक सामान्यसामग्री जाणवी.

चेतनकार्यनी सामग्रीनो विचार करवामां केवळ मानसिक सामग्रीज लक्षमां लेवी एम नथी, पण भौतिक (जड) सामग्रीनो पण विचार करवो आवश्यक छे. चेतनकार्यमां जे जे अवयवोनो व्यापार थतो होय तेमनी स्थिति केवी होवी जोईए ए वातनो पण विचार करवो जोईए. ज्ञान पामवामां उपयुक्त एवा बुद्धिव्यापारनेज आ वात लागु थाय छे एम नथी पण वृत्ति अने कार्यशक्ति (इच्छा) तेने पण लागु थाय छे. तीव्र अने तादृश वृत्ति अनुभववामां पण मगजनी अनामय अने सशक्त दशानी आवश्यकता छे, अने ए पण आपणे जोईशुं के उद्वाहक अवयवोनी दशाना प्रमाणमां इच्छाशक्तिने पण असर थाय छे.

चेतनना बुद्धि, वृत्ति अने इच्छा ए त्रणमांना प्रत्येक विभागमां ज्ञानतंतुचक्रना आटला आटला भाग सविशेष उपकारक छे एम पण कही शकातुं नथी. तंतुचक्र तंतु अने तंतुग्रंथि एटले गंड बेनुं बनेलुं छे. तंतुओ पण बहारथी अंदरनी पासा लई जनारा, संवाहक, अने अंदरथी बहारनी पासा लई जनारा, उद्वाहक, बे प्रकारना रहे छे.

तेज प्रकारे गंड पण बे प्रकारना रहे छे. संवाहक तंतुद्वारा जेमनो क्षोभ थाय ते, अने उद्वाहक तंतुने क्षोभ पमाडे ते. आ उभय प्रकारना गंडनुं पाछुं घणुं मिश्रण छे, ने ए मिश्रणनां पण मिश्रण शरीरमां थईने संवाहकोद्वाहक गंडजाल रचायलुं छे. आ प्रकारनो जे संवाहकउद्वाहकनो भेद कह्यो तेने अनुसरी चेतनना विभाग करतां एक पासा प्रत्यक्ष अने तज्जन्य विचारो अने बीजी पासा गति अथवा क्रिया एम भाग पडे छे. परंतु ज्ञान पामवामां तो संस्कारना साधर्म्यनो ग्रह थवो आवश्यक छे, एटले केटलाक उद्वाहक गंडनो एमां व्यापार थवो जोईए. एज प्रकारे वृत्तिनो यद्यपि प्रत्यक्षजन्य संस्कारमात्र साथेज संबंध छे, ने तेथी संवाहक तंतुना व्यापारनीज तेमां अपेक्षा छे, तथापि वृत्तिनुं बाह्यदर्शन थाय तेमां उद्वाहक गंडनो व्यापार पण आवश्यकज छे. अने यद्यपि इच्छाने पण मात्र उद्वाहक तंतुचक्रसाथे संबंध होय एम जणाय छे, तथापि वृत्ति अने बुद्धिनां जे तत्त्व तेमां सर्वदा भळेलां होय छे ते द्वारा तेने संवाहक तंतुचक्र साथे पण संबंध रहे छेज. आम होवाथी कीया कीया चेतनव्यापारमां कीया कीया तंतुव्यापार थाय छे तेनुं यथास्थित वर्णन करी शकावानो संभव थोडो छे.

६. मनोबलनुं तारतम्यः—बधां माणसोना मनना व्यापार बधी बाबतमां सरखाज थता नथी. अमुक अमुक विषयमां व्यापार भिन्न भिन्न प्रतिना बनी आवे छे अने तेनुं निदान मूळनी मानासिक शक्तिने धारवामां आवे छे. चेतनशास्त्रने बने त्यां सुधी सर्वसामान्य नियमोनो विचार करवानो छे, एटले मनोमननी शक्तिना आवा तारतम्य विषे तेने कशो विचार करवानो नथी. छतां एवा तारतम्यनुं पृथक्करण करवामांथी पण घणा व्यावहारिक लाभ जणाई

आव्या छे, एटले आ शास्त्रना जाणनारा एमना उपर बहु लक्ष आपे छेः जुदी जुदी व्यक्तिमां मनोबलनुं जे तारतम्य जणाय छे तेनो निर्णय बतावानो यत्न करवामां आवे छे.

आवुं तारतम्य केवा प्रकारनुं होय छे? एक मननी अने बीजा मननी वच्चे क्वचित् एक आखा मनोव्यापारपरत्वेज अंतर होय छे. एक माणसने के एक बाळकने आपणे बीजां माणस अथवा बाळक करतां वधारे बुद्धिबलवाळुं अथवा कौतुकवाळुं कहीए छीए. एज रीते कोई मननुं सामर्थ्य वृत्तिमां होय छे, तो कोईनुं इच्छामां होय छे. आ करतां पण बीजी रीते आवा तारतम्यनी वातनो विचार आपणे करी शकीए तेम छे. एकना एकज चेतनव्यापारपरत्वे जोतां बे मन वच्चे केटलुं तारतम्य छे तेनी तपास करीए. एक माणस करतां बीजो माणस वैधर्म्यनी परीक्षा वधारे सूक्ष्म रीते करी शके छे एम आपणे जोई शकीए; अथवा अमुक शक्तिनेज लईने कही शकीए के अमुक माणस अमुकना करतां वधारे सारी रीते अवलोकन, कल्पना, के विचार करी शके छे. अथवा कोई शक्तिनो एकाद व्यापार लई ते परत्वे बे मनने सरखावी कही शकीए के आने दिक्संबद्ध वस्तुना दर्शननी सारी शक्ति छे, आने कालसंबद्ध वस्तुना दर्शननी सारी शक्ति छे. आम छतां मनोव्यापार एवी वस्तु नथी के जेनी बराबर कांटे तोळी शकाय एवी तुलना करी तारतम्यनो निर्णय करी शकाय, परंतु आ प्रकारे जे गोळ गोळ निर्णय बने ते पण व्यवहारमां बहु उपयोगी थई पडे छे.

चेतनशक्तिना एकंदर विपुलत्वने मापवा माटे तेना अंश, समय अने संख्यानो विचार करी जोवो जोईए. ए प्रकारे चेतनव्यापारनी शक्तिना तारतम्यनो कांईक निश्चयवाळो निर्णय बनी शकवानो संभव छे.

अंश.—कोई पण चेतनकार्य अथवा चेतनस्थितिना केटला अंश छे ते नक्की करवा माटे ते व्यापार अथवा ते स्थिति केटलां तीव्र छे ते जाणवुं जोईए. प्रत्यक्ष अने वृत्तिओनी तीव्रतामां घणो फेर होय छे. प्रत्यक्षना संस्कार अन्य संस्कार करतां वधारे तीव्र छे, एक वृत्ति करतां अन्य वृत्ति बहु प्रगाढ व्यापी छे एम आपणे कही शकीए छीए. कार्यमां पण जेटली शक्ति आपणे जाणी जोईने वापरीए तेना प्रमाणमां ते कार्य अमुक अंशे परस्परथी भिन्न छे एम कही शकाय छे. बुद्धिव्यापारमां पण आज प्रकारे अंशभेद होय छे, कोई विचारनी तादृशतामां, कोई कल्पनानी भव्यतामां, न्यूनाधिकत्व होवानो अनुभव सर्वने जाणीतो छे, तेमज बुद्धिव्यापारमां वधतुं ओछुं चांचल्य (अवधान माटे) राखवुं पडे छे ए पण अजाण्युं नथी.

समय.—चेतनव्यापारनो समय केटलो छे ए नक्की करवाथी चेतनशक्तिना तारतम्यनो वधारे सारी रीते निर्णय करी शकाय छे, केमके समय एटले अमुक काल सुधी अमुक व्यापार रह्यो ए वात घडीआळ जेवां बाह्य साधनथी, निश्चयपूर्वक मापी शकाय तेवी छे. अंशनो निर्णय ते प्रकारे बनतो नथी. एक व्यापार अन्य करतां सरळ छे, के बहु सरळ छे एटलुंज कही शकाय, पण अत्र तो बहारनां साधनोथी स्पष्ट रीते आटला समयवाळो के आटला समयवाळो एम कही शकाय तेम छे.

संख्या.—चेतनव्यापारनी संख्यानो निर्णय करवा माटे एक व्यापारने बीजा व्यापारथी अथवा कोई व्यापारना एक क्रमने बीजा क्रमथी जुदो समजी शकाय एटलीज वात पूर्ण छे. कोई पण व्यापारमां केटले क्रमे छेवट निर्णय पर अवाय छे ए जाणवाथी ते व्यापारनी संख्यानो निर्णय थई गयो जाणवो. उदाहरण तरीके जोईए तो कल्पनाना

कोई तरंगमां जेटला जेटला अवयव अंगभूत होय तेनो निश्चय जाणवाथी तेनी संख्यानुं माप थयुं गणाय.

चेतनशक्तिनुं माप करवानी रीति विषे हवे थोडुंक विवेचन करीए. एने माटे बे मार्ग छेः (१) कोई बे मनने जे बाह्यसामग्री लगाडवानी होय ते सरखी राखवा छतां मानसिक फळ शुं उपजे छे ते जोवुं; अथवा (२) समान मानसिक फळ पेदा करवाने सामग्रीमां शो फेरफार करवो पडे छे, ते तपासवुं.

(१) जेम बने तेम उभय मन प्रति सामग्री सरखे सरखी योजवी, अने पछी मानसिक व्यापार शा नीपजे छे ते तपासवुं. दृश्य पदार्थ जेवा के एकज रंगना बे प्रकार अथवा एकज रंगनी चमकना बे प्रकार बे माणसोने बतावबा, अने ते प्रकारमां शो फरक छे ते जोवाने कहेवुं. आवे प्रसंगे आ फेरफार बराबर परखी शकाय ते माटेनी सर्व सामग्री बन्ने माणसपरत्वे सरखे सरखीज रहे तेनी बहु संभाळ राखवी. उदाहरण. जे पदार्थ परखवा आप्यो होय तेनी स्थितिनुं प्रमाण उभये मनुष्यने सरखुंज होवुं जोईए. तेमज बाह्य अने आंतर दशा पण उभयनी सरखी होवी जोईए; इत्यादि.

आ प्रकारे उभयनां उत्कर्षसाधन समान कर्या पछी उभयना मन उपर जे असर थाय तेनुं विपुलत्व सरखावी जोवुं. ए रीते करी जोतां एक करतां बीजाना मन उपर वैधर्म्यनी छाप वधारे स्पष्ट होय अथवा ओछी स्पष्ट होय एम जणाई आवे; अथवा ए करतां वधारे सारी कसोटी जे समयनी छे तेनाथी एम जणाय के एक माणस बीजा करतां वधारे जलदीथी तफावत जोई शके छे; तो ए बधी परीक्षा उपरथी एम नक्की करी शकाय के एक करतां बीजानी शक्ति वधारे छे.

(२) बीजी रीति छे ते प्रथम रीति करतां केटलेक भागे सारी छे.

साधारण रीते जोतां, मानसिक फळना तफावत करतां सामग्रीमां जे तफावत पडे तेनी तुलना करवी वधारे सुतर छे. एक बाह्य सामग्रीने बीजी करतां द्विगुण के त्रिगुण करी शकाय, पण मानसिक फलपरत्वे एम कहेवुं बहु कठिन पडे के अमुक संस्कार अमुकना करतां द्विगुण के त्रिगुण छे. वळी केटलाक प्रसंगमां तो अमुक मानसिक फळ पेदा करवुं छे एम धारी बधी तुलना करवामां तेने आपणे मापरूपे उपयोगमां लई शकीए छीए. जोई शकाय अथवा समजी शकाय एवा नानामां नाना विपुलत्व-वाळुं आ फळ राखवुं जोईए. प्रत्यक्षजन्य संस्कारनो भेद समजवानी शक्तिनी तुलना करवानी छे; तो कोई पण बे अथवा वधारे बाह्य सामग्रीमां केवो फेरफार करवो पडशे के जेथी प्रत्यक्षजन्य बे संस्कारनो भेदमात्र, अर्थात् अतिसूक्ष्म भेद पड्यो एवुं समजाय, ते जोवुं. जेम आ भेद बहु थोडामां थोडो तेम ते भेद पारखवानी शक्ति बहु सारामां सारी छे एम जाणवुं. प्रत्यक्षनुं माप करवामां आ रीतिनो सांप्रत काळे उपयोग करवाथी बहु सारां परिणाम आवी शक्यां छे. एनो उपयोग प्रत्यक्ष विना बीजा मनोव्यापारपरत्वे पण करी शकाय तेम छे. उदाहरण. बे माणसोनी स्मरणशक्तिना तारतम्यनो निर्णय करवामां, तेमने केटली सूचना करवाथी, अथवा सूचक प्रसंगोनी संख्या प्रत्येकपरत्वे केटली राखवाथी, कोई संस्कार स्मृतिरूपे उद्बोध पामे छे, ए जोवाथी निर्णय बने तेम छे. आमां संभाळ राखवानी एटलीज छे के बाकीनी बधी सामग्री केवळ समान रहे छे, उद्बोध पमाडवाना संस्कारने पेदा करनार मूळ अनुभव उभये पुरुषने सरखो छे, इत्यादि; केमके एम न होय तो जे परीक्षा थई ते यथार्थ गणाय नहीं.

मनोबल अथवा चेतनशक्तिना तारतम्यनो निर्णय करवानी पद्धतिनो विचार हजी हमणांज आ शास्त्रमां दाखल थयो छे. मस्तिष्कविद्याने

आधारे मगजना भागना वधता ओछा खीलवा उपरथी, अमुक शक्तिना न्यूनाधिकत्वनो जे निर्णय कही शकाय छे तेने, तेम मुखमुद्रा, सामुद्रिकादिथकी चेतनशक्तिनुं अनुमान थाय छे तेने, आ शास्त्रमां हजी स्थान मळ्युं नथी.

७. आ प्रकरणना विषयनो केळवणी साथे संबंध:—आ प्रकरणमां जे चर्चा थई तेने शिक्षणशास्त्र साथे जे संबंध छे ते एटलो बधो स्पष्ट छे के ते विषे वधारे लखवानी जरूर नथी. शिक्षणथी विचार, स्मरण इत्यादि चेतनशक्तिनो उल्लास साधवानो छे एटले शिक्षके ते ते शक्तिनां स्वरूप तथा अंग आदि बराबर जाणी राखवां ए बहु आवश्यक छे. उदाहरण. बाळकोनी दर्शनशक्तिने बराबर केळववा माटे शिक्षकना जाणवामां होवुं जोईए के दर्शनना अंगमां पदार्थोमां जे परस्परथी भिन्न होवाना कारणरूप वैधर्म्य, रूप, रंग आदिनुं होय ते परखवानी शक्तिनो मुख्यरूपे समास छे.

मनोव्यापार एटले के चेतनकार्यनी सामग्रीनुं ज्ञान पण शिक्षकने घणुं उपयोगी छे. जुदा जुदा चेतनव्यापारनो उल्लास एटले विकास करता जवो एज शिक्षकनुं कार्य छे, एटले अमुक व्यापार केवी सामग्रीथी प्रवर्तमान थाय छे, अथवा शाना उपर तेनो आधार छे, ए वात जाणवी तेने संपूर्ण रीते आवश्यक छे. वळी यद्यपि शिक्षणने बुद्धि अने तेना विकास साथे निकट अने मुख्य संबंध छे, तथापि शिक्षके बीजा मनोव्यापारना नियमोथी अजाण रहेवुं योग्य नथी. पोताना शिष्योनी रसवृत्तिने, नीतिने, तथा नीतिनियमे चालवामां उपयुक्त इच्छाने, संस्कार आपवो ए पण तेनुंज काम छे एटलुंज नहीं, पण शिक्षणने केवळ बुद्धिसंबद्ध मानीए तथापि वृत्ति अने इच्छाना व्यापारना थोडा पण ज्ञाननी बहुज आवश्यकता छे, केमके अवधान अने राजीखुशीथी आग्रहपूर्वक

उद्योग, ए बे, वृत्ति अने इच्छानां कार्य छे, ने तेमनो प्रत्येक बुद्धिव्यापारमां मुख्य उपयोग छे.

छेवटे ए पण कहेवुं जोईए के बधा शिष्योनी चेतनशक्ति सरखी होती नथी, अनेक तारतम्यनी अनंत रेषाथी प्रत्येक मन एक बीजाथी भिन्न होय छे. एवा तारतम्यनी परीक्षा करी, ते ते मनने अनुकूळ प्रयोग आरंभवा माटे पण अत्र बतावेला चेतनव्यापार अने तेनी सामग्री विषेना विवेकनी शिक्षकने पूर्ण अपेक्षा छे.

प्रकरण ३.

चेतनविकास.

१. **चेतनविकास एटले शुं?**—अमुक अमुक मनोव्यापारनुं स्वरूप शुं छे? अने तेमना उद्भव माटेनी सामग्री केवी होय छे? ए वातनो पाछला प्रकरणमां आपणे विचार कर्यो, पण ते विचारमां वयनो विचार आपणे कर्यो नथी. परंतु मनोव्यापारमां वयना प्रमाणमां घणा तफावत दीठामां आवे छे. त्यारे आपणे अत्र मनोमय जीवनक्रमना विभागनो निर्णय करी तेमने उत्तरोत्तर केवो संबंध छे ते बतावबा यत्न करीशुं. एम करवाथी एक एक शक्तिना जुदा जुदा व्यापारनी स्पष्टता थशे एटलुंज नहीं, पण उत्तरोत्तर वृद्धि पामते पामते थई आवेली परिपक्व शक्ति विषे पण केटलीक स्पष्टता थई आवशे. आ चर्चाने चेतनविकास विषेनी चर्चा कहीए छीए, केमके एकथी बीजे क्रमे, बीजेथी त्रीजे, एम उत्तरोत्तर चेतननो जे विकास थाय छे तेनो विचार अत्र प्रकृत छे.

जडशरीर विषेना विचारमां तो वृद्धि अने विकास वचे कांईक भेद मानवामां आवे छे. वृद्धि एटले विपुलत्व अथवा महत्त्व शरीरमां आववुं ते; पण विकास एटले शरीरना अंतरंग बंधारणमां वधारे वधारे फेरफारो थवा ते. वृद्धि अने विकास साथेज चाले छे, तथापि उभये सरखे सरखां रहे छे एम नक्की नथी. ज्यां अनियमित वृद्धि थाय छे त्यां विकासमां विघ्न आवे छे; अने मगज जेवो कोई अवयव वृद्धि पामतो बंध पड्या पछी विकास पामवा मांडे छे. चेतनने पण आवा विभागनी योजना लगाडवी होय तो लगाडी शकाय. चेतनमां गृहाता पदार्थो विचारो आदिनी संख्यामां वधारो थाय, तेने चेतननी वृद्धि कही शकाय; अने तेवी सामग्रीने चेतनव्यापारथी अधिकाधिक रूपे योजीने

गृहवानी शक्ति आवे तेने चेतनविकास कही शकाय. चेतनवृद्धिनुं उदाहरण घणी वातनुं स्मरण होय ते कहेवाय; चेतनविकासनुं उदाहरण आवा स्मृत अनुभवने साधर्म्यवैधर्म्यानुसार ज्ञानविभागमां योजवानी शक्ति आवे ते कहेवाय. परंतु शरीर अने चेतनना वृद्धि अने विकासरूप व्यापार वच्चे आ जे समानता बतावी ते सर्वांशे टकीज शकशे एवुं न जाणवुं.

विकासनुं स्वरूप त्यारे केवुं छे ते जोईए. पूर्वावस्थाना चेतनविकासनो क्रम उत्तरावस्थाना चेतनविकासना क्रमथी केटलो जुदो पडे छे ते समजवा माटे मो'टा मनुष्यना चेतनव्यापारने बाळकना चेतनव्यापार साथे सरखावीए. एक दिवसमां बाळक करतां माणस वधारे अवलोकन, विचार आदि अनेक व्यापार करे छे. एटलुंज नहीं, पण बीजी वात एम जणाय छे के आ प्रत्येक व्यापार बाळकना तेना ते व्यापार करतां वधारे पूर्ण होय छे; उदाहरण जोईए तो मनुष्य अवलोकन वधारे स्पष्ट अने यथार्थ, अने त्वराथी करतुं जाय छे. त्रीजी वात ए छे के मो'टी वयना माणसना चेतनव्यापार वधारे मिश्र अने दीर्घ, तेम मिश्रव्यापारांतरना बनेला होय छे. जेम के बाळकना अनुभवमां कदापि न आवे तेवा भावनामात्र उपर विचार चलववाना लांबा व्यापार माणस करी शके छे. आ त्रण वात उपरथी समजाय छे के जेम जेम चेतननो विकास थतो जाय छे, तेम तेम चेतनव्यापारमां (१) नानात्व आवतुं जाय छे; (२) पूर्णता आवती जाय छे; अने (३) दीर्घता तथा मिश्रता आवती जाय छे.

जे परिवर्तने चेतनविकास एवुं नाम आपणे आपीए छीए, तेना मुख्य बे विभाग पडी शके छे. एक पासा एम जोवामां आवे छे के बाळकमां जे शक्तिओ प्रवर्तती हती तेनी तेज मूळ करतां वधारे सबल अने विपुळ थई छे; बीजी पासा एम जोवामां आवे छे के जे नवी

शक्तिओनां बीज पण बाळकना चेतनमां जणातां न हतां ते जणावा लाग्यां छे. अर्थात् प्रत्येक शक्ति जेम पोतपोतानो विकास पामी छे, तेम तेमनामां कोई एवा प्रकारनी न्यूनाधिक वृद्धि थई छे के केटलीक, बीजीओना करतां, वधारे विकास उपर आवी गई छे.

बुद्धिपरत्वेज आवुं बने छे एम नथी; वृत्ति अने इच्छाने पण एनुं एज थाय छे. व्यापारनी संख्यानो अने मिश्रतानो ए ने एज प्रकारनो वधारो आ बेना विषयमां पण जणाय छे. बाळक करतां मनुष्यनी ऊर्मि अने क्रियाशक्ति वधारे नानात्ववाळी अने सबल होय छे. एम पण जोवामां आवे छे के जेम शक्तिमां वधारो थतो जाय छे तेम तेम ऊर्मि अने क्रियाशक्ति माटेनी योग्यता पण वधती जाय छे. आ प्रकारे आपणे चेतनना त्रणे विभागना विकासनुं स्वरूप जोयुं. हवे एमां एक एक शक्तिनो विकास अने एकंदरे समग्र चेतननो विकास एवा बे भेद मान्या तेना स्वरूपनो विचार करीए.

२. **एक एक शक्तिनो विकासः**—आ विचार करवामां आरंभे तो आपणे मात्र बुद्धि अने तेनी शक्तिओ विषे विचार चलावीशुं अने तेनी एक एक शक्ति अथवा समग्र बुद्धि तेना विकासविषे विवेचन करीशुं.

कोई पण शक्तिना विकासमां त्रण वातनो समास थवो जोईएः (१) मूळथी चालता आवता व्यापार बहु सरळताथी थवा जोईए, एटले के तेमने ओछी प्रोत्साहकसामग्री जोईए, ओछुं अवधान जोईए. गायनना जुदा जुदा सुर अने रागनुं साधर्म्यवैधर्म्य सांभळतानी साथेज पारखी लेवुं ते आवी एकाद शक्तिना पूर्ण विकासनुं चिन्ह छे. आनुं नाम एक अमुक मार्गे शक्तिनो विकास थयो गणाय. (२) तेनी तेज जातना पण नवा व्यापार सरळ थवा जोईए. जेमके अव-

लोकननी शक्तिनी वृद्धि थवामांथी एम पण थायज छे के अजाण्या पदार्थ पण सत्वर लक्षमां आवे छे अने पारखी शकाय छे; स्मरण-शक्तिनी वृद्धि थवाथी नवा संस्कारने जाग्रत् करवानी शक्तिमां पण वधारो थाय छे. आनुं नाम कोई पण शक्तिनो सामान्य विकास गणाय. (३) आवो विकास परिपूर्ण थयो त्यारे कहेवाय के ज्यारे बहु मिश्र, क्लिष्ट अने कठिन व्यापार साधवा जेटलुं सामर्थ्य आवे. अवलोकनना पूर्ण विकासनो अर्थ ए छे के झीणा झीणा पदार्थोने पण तुरत आंखे पकडी शकाय, तेमनां सूक्ष्म सूक्ष्म साधर्म्य वैधर्म्य अनायासे पारखी शकाय, अने एवा अनेक सूक्ष्म पदार्थना बनेला मो'टा पदार्थना स्वरूपने पण तेवीज रीते विलोकी शकाय. एज रीते स्मरणना पूर्ण विकासनो अर्थज ए छे के संस्कार जोईने तेना जेवा बीजा तादृश न होय ते पण सहजे जाग्रत् थयां जाय, अने अनेक संस्कार जेना अंगमां छे एवा मिश्र संस्कारने पण तेटलीज सरळताथी जाग्रत् करी लेवाय.

३. समग्रविकासः—जुदी जुदी शक्तिओना विकासनो जे क्रम छे तेने अनुसरी आखा चेतनना विकासनो पण क्रम आपणे विचारीए. आने शक्तिओना विकासनो क्रम एवुं नाम पण आपवामां आवे छे. अत्र पण बुद्धि विषेज विचार करी जोईए. बुद्धिना विकासमां सारो स्पष्ट क्रम दीठामां आवेछे. (१) ज्ञाननो आरंभ सन्निकर्षथी एटले के बाह्य विश्वना सन्निकर्षथी मन उपर जे संस्कारो पडे छे तेनाथी थाय छे. जेने बुद्धि पोताना आंतरनियमानुसार यथायोग्य रीते गोठवी ले छे ते सामग्री तो इंद्रियोज पूरी पाडे छे. दृश्य विश्व विषे कांई पण जाणता पूर्वे इंद्रियसन्निकर्षद्वारा मनमां तेमनो संस्कार पहोचवो जोईए. (२) सन्निकर्षथी थता प्रत्यक्ष-जन्य संस्कार पछी दर्शन पेदा थाय छे. घणाक संस्कारने एकत्रित

करी अमुक वस्तु पदार्थ आदिरूपे गृहवामां आवे छे अने अमुक ग्रहण थयुं एम कहेवाय छे. (३) दर्शन पछी संकल्प पेदा थाय छे. दर्शनथी जेनुं ग्रहण थाय छे तेनुं मनमां एक कल्पित चित्र पडे छे तेने संकल्प कहीए छीए. संकल्प यथार्थ वस्तुचित्ररूपे पण होय, के केवल कल्पित अने नवीन पण होय. कोई मित्रना वदननो संकल्प यथार्थ छे; ऐतिहासिक महापुरुषनी आकृतिनो संकल्प कल्पित छे. (४) ते पछी भावाधिगम एटले भावनारूप विचार, जेने सामान्यतः विचारज कहे छे ते थाय छे. व्यक्ति व्यक्तिना विलोकनमांथी जे सामान्य शब्द बने छे जेवा के, मनुष्य, धातु, प्राणी इत्यादि, तेनो; तेमज निर्देश एटले के जुदा जुदा सामान्य शब्दोने कोई संबंधमां योजवानो व्यापार, जेमके ' माणस प्राणी छे ' इत्यादि तेनो, तथा परामर्श एटले के घणा निर्देशने भेगा योजवाथी कोई निश्चय उपर आववानो व्यापार, जेमके 'कोई माणस सर्वज्ञ नथी,' 'अमुक लेख योजनार माणस छे, माटे ते सर्वज्ञ नथी,' ए इत्यादि तेनो; समास थाय छे. आ चार क्रम बताव्या तेमांना छेल्ला क्रम उपर जोतां समजाशे के जेम जेम प्रथम क्रमथी उत्तरोत्तर आगळ वधीए छीए तेम तेम व्यापार वधारे वधारे मिश्र थता जाय छे. प्रत्यक्षजन्यसंस्कार अथवा संस्कार करतां, दर्शनव्यापार वधारे मिश्र छे, सामान्य शब्दनो व्यापार संकल्प करतां वधारे मिश्र छे, केमके अनेक संकल्पमांथी एक सामान्य काढवानुं होय छे, अने छेवट संकल्प करतां निर्देश वधारे मिश्र छे, ने तेनाथी पण परामर्श घणो मिश्र व्यापार छे.

मिश्रता अने शुद्धताना आ विचारमां वखते न्यायशास्त्र तरफथी वांधो उठाववामां आवे, परंतु न्याय अने चेतनशास्त्रमां शुद्धमिश्रना विभागनो विभाजकधर्म एकनो एकज नथी. चेतनशास्त्रप्रमाणे संकल्प

करतां दर्शन ओछो मिश्रव्यापार छे, केमके संकल्प बने छेज दर्शनमांथी. न्यायमां जोवा जईए तो सामान्यशब्दज्ञान व्यक्ति(संकल्प)ज्ञान करतां वधारे शुद्ध छे, केमके त्यां तो व्यक्ति व्यक्तिना वैधर्म्यने दूर राखी सामान्यमात्रनोज विचार करी लेवो मूळथीज सरळ पड़े छे. आवो जे भेद छे ते लक्षमां राखवा योग्य छे, बाकी शुद्ध मिश्रनो जे क्रम अत्र बताव्यो तेज वास्तविक छे.

त्यारे हवे एटलुं सिद्ध थयुं के क्रमे क्रमे मिश्रता वधती चाले छे; पण ए उपरथी एक बीजी वात सिद्ध ए थाय छे के जेम जेम उत्तरोत्तर आगळ वधीए छीए तेम तेम बधो व्यापार केवळ आंतर थतो जाय छे, बाह्य संबंधथी विदूर जतो जाय छे. ज्ञाननो आरंभ बाह्यसन्निकर्षथी थाय छे, ने अंत केवळ आंतरभावनामय विचारथी आवे छे, विकास प्रत्यक्षथी भावपर्यंत वधतो वधतो जाय छे एम कहेवामां विकासना आ स्वभावनो नियमज बतावावामां आवे छे.

एक त्रीजी वात पण स्पष्ट छे के जेम प्रत्यक्षथी भाव तरफ विकासनो क्रम चालतो जाय छे तेम ज्ञान वधारे वधारे सामान्यता गृहतुं चाले छे. प्रत्यक्षज्ञान व्यक्तिविषयकज होय छे, पण भावज्ञानमां तो आपणे अनेक व्यक्तिने एक वर्गरूपे लक्षमां लई तेमना विषे एकज काळे विचार करी शकीए छीए; आनुंज नाम ज्ञाननी सामान्यता. ज्ञान व्यक्तिथी सामान्य उपर जाय छे, प्रत्यक्षथी भावना उपर जाय छे.

हवे जुओ. शक्तिओ प्रत्येक प्रत्येक जुदे जुदी विकास पामती चाले छे, तेमज तेनो विकास पामवामां अमुक क्रमने अनुसरे छे, एटले कोई पण मननो विकास केटलाक समसूत्र क्रमथीज थाय छे, एमां केटलीक शक्तिना विकासक्रमनो मोडो आरंभ पण थाय ए स्वाभाविक छे. एक छोडवाने जुओ. पत्र, कळी आदिनो विकास तेज आखा छोडनो विकास छे, पण

तेमां केटलाक अवयवनो विकास आगळ वधेलो होय छे, केटलाकनो पाछळ रहे छे, अने माछळ विकास पामता अवयवनो विकास आरंभाय ते समये पण, आगळ विकास पामेला अवयवोनो विकास चालतोज रहे छे. एज रीते चेतन अथवा मननो विकास पण समकालीन, तेमज पूर्वोत्तरभावी, एवा उभय प्रकारना परिवर्तननोज बने छे.

४. समग्र बुद्धिविकासनो नियम एकनो एकज छे.—दर्शनसंकल्प आदि व्यापारने जेम बने तेम सादामां सादा व्यापाररूपे पृथक्करण करीने दर्शावबा ए चेतनशास्त्रनो मुख्य उद्देश छे, एम आगळ कहेलुंज छे. आ रीते विचार करतां एम जणाय छे के कोई पण शक्तिनो जे क्रमिक विकास थाय ते कोई एकना एकज नियमित क्रियाना उत्तरोत्तर क्रमरूप होवो जोईए. एम जोतां बुद्धिना जे उत्तमोत्तम अने मिश्रमां मिश्र व्यापार ते, सादामां सादा अने स्थूळमां स्थूळ प्रत्यक्षजन्य संस्कार गृहवाना व्यापार जे नियमे चाले छे तेज नियमनां रूपांतर—वधारे उत्कर्ष अने सूक्ष्मतावाळां रूपांतर—होवां जोईए. अर्थात् एक एक शक्तिनो विकास अने सर्व शक्तिनो समग्र विकास ए बे वच्चे जे कांई भेद राखीने आपणे चर्चा चलावी छे, ते भेद आ कह्युं तेवुं थई शके तो, व्यर्थज छे. जराक विचारथी जोईशुं तो जणाशे के बुद्धिना समग्र विकासनुं स्वरूप आ प्रमाणेज छे. सादामां सादो जे ज्ञानप्रकार—संस्कार—तेमां पण ते संस्कारनुं अन्य संस्कारथी वैधर्म्य पारखवानी शक्तिनो उपयोग रहेलो छे; तेमज जे छेवटमां छेवटनो बुद्धिव्यापार—भावना—तेमां पण तेना तेज नियमनो अति उत्कर्षवाळो उपयोग छे. वळी कोई एक पदार्थनुं दर्शन थवुं ते वर्तमान संस्कारोनो भूतसंस्कारो साथे योग करी लेवानी क्रिया छे; भावना पण अनेक पदार्थने घणीक वातमां साधर्म्य छे एम जोई ते द्वारा

एक वर्गमां मूकी विचारवानी क्रिया छे. आ रीते पृथक्करण करी जोतां ज्ञान, दर्शन, सामान्यशब्द आदि जे व्यापार कह्या ते उत्तरोत्तर वधारे गुंफित थती एकनी एकज क्रियानां रूपांतर छे एम समजाय छे.

५. **आ क्रियानुं स्वरूप.**—प्रत्येक शक्तिना विकासनो क्रम शो छे, तथा शक्तिओनो जे क्रमिक विकास छे ते एकनी एकज क्रियाना उत्तरोतर गुंफनरूपज छे, एम आपणे जोयुं. हवे जोवानुं ए छे के आ मूलक्रियानुं स्वरूप शुं छे? तेना नियम केवा छे?

एवा जे नियमो छे तेमांनो स्पष्टमां स्पष्ट अने तुरत दृष्टिए पडे तेवो ए छे के बुद्धिविकास निरंतर, शक्तिनो उपयोग थाय ते प्रमाणमां रहेछे. बीजी रीते कहीए तो शक्ति उपयोगथी वधारे सबल थती जाय छे. कोई एकज शक्तिनुं दृष्टांत प्रथम तपासीए. दर्शनशक्ति जेवी के जुदां जुदां रूप रंगनी सूक्ष्म सूक्ष्म छाया परखवानी, ते जेम जेम वधारे वधारे कसाती जाय, वपराती जाय, तेम तेम सुधरती जाय छे. एक एक उपयोगथी ते शक्तिनो उत्तरोत्तर उत्कर्ष थतो चाले छे. तुरत वार तो कोई एकज दिशा प्रति आ उत्कर्ष थतो जणाय छे; जेम के रंगनी तुलना करवामां शक्तिनो उपयोग थतो होय तो तेटली वातपरत्वे सामर्थ्य वधे छे, रूपनी तुलना करवी इत्यादि बधी वातपरत्वे तेटलुंज वधतुं नथी.

हवे समग्र बुद्धिविकास उपर लक्ष करीए. दर्शन, सामान्य इत्यादि एकनी एकज क्रियानां रूपांतर छे एटले उतरती पंक्तिना व्यापारमां ए बधी क्रियानो अभ्यास वधवाथी चढती पंक्तिना व्यापार माटेनी योग्यता आवे छे. साधारण रीते जे एम कहेवाय छे के इंद्रियोने अवलोकन करवानी केळवणी आपवामांथी उत्तम प्रकारना जे बुद्धिव्यापार छे तेनो मार्ग रचाय छे, ते आ नियमने अनुसारेज कहेवाय छे. पण आटलेथीज बधी वात पूर्ण थती नथी. दर्शनशक्तिना गमे तेटला कसावाथी पण भावनाशक्तिनो संपूर्ण प्रभाव कदी पण विकसतो नथी. बुद्धिना जुदा जुदा विभाग क्रमे क्रमे विकसता चाले ते माटे तो प्रत्येक व्यापार-(दर्शन, संकल्प, इत्यादि) ने प्रत्येक विभागपरत्वे उपयोगमां लई जवानी आवश्यकता छे.

बुद्धिनो उपयोग करवामां शुं आवे छे? बुद्धिशक्तिना समग्र उपयोगनुं स्वरूप एवुं बतावी शकाय के इंद्रियद्वारा जे सामग्री मळी आवे छे ते उपर मूलभूत बुद्धिव्यापारोने कामे लगाडवा. बुद्धिनो मूळ अने सादो विभाग प्रत्यक्ष छेः अर्थात् इंद्रियद्वाराज ते खोराक प्राप्त थाय छे के जेने बुद्धि पोताना नियमानुसार पचवी गोठवी अने यथार्थ स्थाने योजी ले छे. बुद्धिनो उत्तमोत्तम विकास—भावना अथवा भावाधिगम अने परामर्श—तेमांथी पण जणाय छे के बुद्धिना व्यापारनो आधार इंद्रियदत्त सामग्री उपरज छे. पुनः पुनः उपयोग एटले अभ्यासथी करीने बुद्धिनो विकास थाय छे ए कहेवानो अर्थ त्यारे एटलोज छे के निरंतर बुद्धिने इंद्रियद्वारा सामग्री मळती चाले, संस्कारोमां वृद्धि थाय, अने तेमांथी उत्तमोत्तम बुद्धिविकास उद्भवतो चाले.

अभ्यासथी बुद्धिविकासगत क्रिया वधारे सफल अने सबल थाय छे ए विचार करवामां एक बीजो नियम पण जणाई आव्यो. आवी रीते अभ्यासथी बुद्धिविकास थतो चाले तेमां स्मरणनो उपयोग आवश्यकज छे. स्मरण कहेवानुं तात्पर्य एम छे के बुद्धिना प्रत्येक व्यापारनो संस्कार रही जाय छे, जेने लीधे तेनो ते व्यापार फरी करवानुं वळण बुद्धिमां रह्या करेछे. "अभ्यासथी शक्ति सबल थाय छे" एम जे कह्युं तेमां आ नियम स्पष्ट रीते समायलो छे. रंग, शब्द आदिने परखवानी शक्ति वैधर्म्यविलोकनना अभ्यासथी वधारे वधारे सारी थती जाय,

तेनो अर्थ एज छे के मनना प्रत्येक व्यापारथी मननी स्थितिमां फेरफार थाय छे, अने ते प्रकारना व्यापार पुनः करवा प्रतिना वळणमां सुगमता के वधारो थतो चाले छे.

जेने आपणे टेव, शील कहीए छीए तेनुं निदान, संस्कारोनुं आ रीते चोटी रहेवुं अने पुनः पण तेना ते प्रकारनी प्रवृत्तिप्रति मनने वळवामाटे तत्पर राखवुं एज छे. बुद्धिविकासनो जे अर्थ छे तेमां अमुक शील आववुं–विचार करवानुं, तर्क चलाववानुं इत्यादि–ए मुख्य वात छे. शीलमात्रथीज आखा ए बुद्धिविकासनो विषय पूर्ण थतो नथी, केमके शीलने बुद्धिना व्यापार अमुक अमुक दिशाप्रति नियत थई जाय ते वात साथे वधारे संबंध छे. आवी रीते व्यापारोनुं अमुक दिशामां नियत थई जवुं एवो शीलनो संकुचित अर्थ करतां तो शील अने विकास बे विरोधी ठरे छे. एकना एक व्यापारने अमुक मार्गेज वारंवार लई जवाथी तेना आवा स्थापित क्रममां प्रसंगानुसार रचनान्तर करवानुं सामर्थ्य रहेतुं नथी. शीलमां आ प्रमाणे कांईक स्थिरतानो, दृढतानो, रक्षणनो स्वभाव छे; विकासमां वृद्धिनो, प्रवृत्तिनो, नवीन प्राप्तिनो स्वभाव छे. आ भेद विषे आपणे वारंवार सूचन करवुं पडशे. माटे अत्र ते उपर लक्ष खेंच्युं छे.

त्यारे जुओ स्मरण ए पण बुद्धिविकासनी क्रियानुं अंग छे. समग्र बुद्धिशक्ति वृद्धि पामे ते माटे तो कोई उत्तम प्रतिनी स्मरणशक्तिनी आवश्यकता छे. बुद्धिव्यापारना जे संस्कार पडे ते एकत्रित थवा जोईए, अने स्मरणरूपे पुनः प्रकट थवा जोईए. इंद्रियद्वारा थयेला संस्कारनुं स्मरण अमुक चित्ररूपे थई शके छे; अने आ प्रमाणे थई शकवुं ए छेवटना जे बुद्धिव्यापार छे ते सिद्ध करवामां अति उपयुक्त छे. यद्यपि आवां चित्र अथवा आवा संकल्प ए वैधर्म्यसाधर्म्यदर्शनथी, प्रत्यक्षजन्य संस्कारनी अमुक व्यवस्थानां फल छे, तथापि तेमनाथकीज आगळना बुद्धिव्यापारो माटेनी सामग्री उद्भवे छे. एम बुद्धिव्यापारना उत्तरोत्तर गुंफनथी जे अंत्य स्वरूपसुधी विकास जई पहोंचे छे तेनो आधार भूतकालमां थयेला सादा बुद्धिव्यापारना एकत्रित थई स्मरणमां आववा उपर रहे छे ए स्पष्ट छे.

एक त्रीजो नियम पण आ बुद्धिविकासनी क्रियामां समायलो छे. बुद्धिना व्यापारोनो अभ्यास थते थते बुद्धिनो विकास थतो जाय छे एम जे कह्युं तेमां एटलुं तो स्पष्टज छे के जेम विकास आगळ वधतो जाय तेम व्यापार उत्तरोत्तर वधारे गुंफित थता जाय छे. आ रीते गुंफित थवानो अर्थ एटलोज छे के आ व्यापारनां जे तत्त्व होय ते अमुक रीते ने अमुक क्रमे परस्परथी संयोजाई एकत्रित थतां चाले. आवुं जे संयोजन थईने एकत्रित थवापणुं ते अमुक नियमोने आधीन छे, अने ए नियमोने साहचर्यनियम एवुं नाम आपवामां आवे छे. एमना विषे सारी रीते आगळ विचार करवामां आवशे; पण अत्र तेमनुं सामान्य स्वरूप समजाववा एकज नियम कहीए केः बे अथवा वधारे चेतनकार्य जे सहभूत हशे ते फरीथी पण साथे ने साथेज उद्भववा जशे. आ प्रकारे संयोजन थवानो जे नियम तेनुं दृष्टांत आपणने प्रत्यक्षमांथी दर्शननो जे उद्भव थाय छे, तेमां, संकल्पश्रेणिनी उत्पत्तिमां परामर्शनी परंपरामां, सर्वत्र जणाय छे.

साहचर्यने बुद्धिविकासनो त्रीजो नियम गणवो के नहीं ए विवादविषय छे; केम के स्मरणमां तेनो सर्वथा समास थई शकवानो संभव छे. छतां स्पष्टता माटे, तथा साहचर्यस्वरूपना यथार्थ स्पष्टीकरण माटे, एने पण एक द्वितीय कारण मानवो उचित धार्यो छे. मि० स्पेन्सर आदि केटलाक लेखकोए आवाज कारणथी बुद्धिविकासना मात्र बेज नियम कह्या छेः (१) वैधर्म्य समजी विषम विभागोनुं पृथक्करण करवुं; अने (२) साधर्म्य समजी समान विभागोनुं एकीकरण करवुं.

६. पुनरवलोकनः—बुद्धिविकासना क्रमनो जे विवेक करी गया तेनुं थोडाकमां पुनरवलोकन करी लईए. इंद्रियोने जोईए तो तेमना द्वारा ज्ञाननी सामग्री प्राप्त थाय छे, अने साधर्म्यवैधर्म्यनी परीक्षा करवानी शक्ति विकसवा लागे छे. बुद्धिव्यापारना आ प्राथमिक क्रममां

बहु स्वल्प स्मरणशक्तिनो उपयोग पडे छे; भूतप्रत्यक्षोना संस्कारने वर्तमान साथे मेळवी लेवा जेटलोज उपयोग रहे छे. अमुक अमुक संस्कारोना अभ्यासथी तेमनुं एक गुंफन बने छे, ने दर्शन उद्भवे छे, जेमां स्मरणने स्पष्ट रीते कांईक विशेष काम करवुं पडे छे. छेवट संस्कार अने दर्शननी घणी सामग्री भेगी थते थते संकल्प बनवा लागे छे, अने संकल्प तथा तेमना परस्परसंबंधोनो समूह जामतां, साधर्म्यवैधर्म्य-परीक्षानी शक्ति समर्थ थाय छे, (जेमां अवधान पण सहाय छे), अने सामान्यशब्दप्रयोग अने तेवा सामान्यशब्दोना योगथी छेवट विचार संभववा लागे छे.

७. **वृत्ति अने इच्छानो विकास**:—वधारे स्पष्टताथी आ विवेचन करी शकाय अने चेतनविकास विषेनी चर्चा सारी रीते लक्षमां उतरे एवा उद्देशथी आपणे आटले सुधीमां बुद्धि एकली विषेज विचार चलाव्यो. परंतु हवे एम कहेवुं जोईए के वृत्ति अने इच्छाना विकासमां पण एनो एज क्रम अने एना एज नियम प्रवर्ते छे. जे प्राथमिक वृत्तिओ—शरीरसुख, शरीरदुःख—इत्यादि—तेमने इंद्रियो साथे बहु निकट संबंध छे; जे ते पछीनी उत्कृष्ट के उत्कृष्टतम वृत्तिओ (अर्थात् ऊर्मिओ) छे ते प्राथमिक वृत्तिओ करतां वधारे गुंफित अने भावमिश्रित होय छे. एज प्रकारे इच्छाथकी जे प्राथमिक क्रियाओ—शरीरव्यापारादि—थाय छे ते सादी अने बाह्यज होय छे, केमके ते तो इंद्रियसन्निकर्षथी थता आघातना प्रत्याघातरूपेज प्रवर्ते छे; ते पछीनी जे उत्कृष्ट प्रकारनी क्रियाओ बने छे ते वधारे गुंफित अने भावनामिश्र (केमके अमुक मार्ग लेवो, अमुक निर्णय करवो, इत्यादि तेमां भळे छे,) होय छे. आ विकासमां पूर्व पूर्वने उत्तर उत्तर साथे संबंध पण होय छे, ए वात अनुभवसिद्ध छे. आ प्रकारे उभये बुद्धिविभागना विकासमां

प्रत्येकना जुदा जुदा क्रममां क्रिया एकनी एकज छे अने भेदमात्र तारतम्यनो छे एवुं स्पष्ट जणाय छे. बुद्धिविकासना जे नियमो कह्या—अभ्यास, स्मरण, साहचर्य,—तेनां दृष्टांत आ बे चेतनविभागना व्यापारमां अने विभागमां पण अनुपदे मळे छे.

८. **बुद्धि, वृत्ति अने इच्छाना विकासनो अन्योन्यसंबंध**:—आटले सुधी जे चर्चा थई तेमां बुद्धि, वृत्ति अने इच्छा ए त्रणेना विकास जुदे जुदा, पोतपोताना विभागमांज, थता होय एम आपणे मान्युं छे; ने केटलेक अंशे ए मानवुं खोटुं पण नथी; परंतु ए वात लक्षमां राखवा जेवी छे के चेतन ए एक समष्टि छे, अने ते कारणथी, ज्ञान, वृत्ति अने इच्छा त्रणेनां कार्यमां त्रणेनो थोडो घणो पण मुख्यगौणभाव रहे छेज. आ वात आगळ समजाववामां आवेली छे. आ रीते ज्यारे आ त्रणेनां कार्यने संबंध छे त्यारे तेमना विकास पण एक बीजाने वळगेला होवानो संभव छे. बुद्धिविकासपूर्वे अमुक प्रकारनो वृत्तिविकास अने इच्छाविकास पण थयेलो मानवो पडे छे: केमके औत्सुक्य, जिज्ञासा आदि जे वृत्तिओ; एकाग्रता, उद्योग आदि जे इच्छाशक्तिओ, तेमनो विकास थयलो न होय तो ज्ञाननोज संभव थाय नहीं. एज रीते वृत्तिविकासपूर्वे पण विश्व अने मनुष्यसंबंधी थोडुं पण ज्ञान भेगुं थयुं न होय (बुद्धिविकास थयो न होय) तो वृत्तिओ शा उपर ऊठे ? तेमज व्यावहारिकज्ञान (बुद्धिविकास) अने अमुक प्रकारनी वृत्तिओ विना क्रियाशक्ति-(इच्छा)नो विकास थवानो पण संभव क्यां ? एम बने खरुं के एकाद विभागपरत्वे चेतननो विकास न्यूनाधिक थई जाय, पण एकज विभागपरत्वे विकास, अने बीजा बधा विभागमां कशुं नहीं, केवल शून्यज, ए वात तो अशक्य छे.

एक भागना विकासने अन्य विभागना विकास साथे जे आवो निकट

संबंध छे तेनुं स्पष्ट उदाहरण एक तो एज छे के अवधानशक्तिना अभ्यास अने उत्कर्ष उपरज बुद्धिविकासनो आधार छे. यद्यपि अवधान ए चेतनना इच्छाविभागनुं अंग छे तथापि बुद्धिविकासमात्रनो तेना उपरज आधार छे. एम छे एटले अमुक बुद्धिविकास होय तो अमुक अवधानविकास अथवा इच्छाविकास होवो जोईएज. आ प्रकारे प्रत्येक विभागना विकासने पोताथी अन्य एवा बीजा विभागना विकास जोडे जे निकट संबंध छे ते सर्वदा अव्यभिचरित नथी. उदाहरण जोईए तो एकला ज्ञाननाज* विकासमां इच्छा अने वृत्तिना झाझा विकासनी अपेक्षा नथी. उत्कृष्ट प्रकारनी वृत्तिओना विकास साथे घणो बुद्धिविकास होवो जोईए. परंतु तेटलोज इच्छाविकास आवश्यक नथी. तेमज इच्छाना विकासनो आधार पण ज्ञान अने वृत्तिना विकास उपरज छे. आज कारणथी विकासना विचारने आरंभे आपणे ज्ञानथी आरंभ करी, वृत्ति उपर जई ने इच्छाथी समाप्ति करी.

९. चेतनविकास अने जडविकासः— जेम अमुक समये चालता चेतनव्यापारने विलोकतां तेना आनुषंगिक नाडीव्यापार पण विलोकीए छीए, तेम अमुक अमुक चेतनविकासने अनुषंगी एवा, तंतुचक्रना अने सविशेषे मगजनां स्थानना कीया कीया विकास छे ते पण जाणवानी अपेक्षा छे.

मगज एज चेतनव्यापारनुं मुख्य स्थान छे तो तेना विकासनो विचार करीए. शरीरना बीजा भागनी पेठे मगज पण स्थूलतामां वृद्धि पामे छे; अने पोताना बंधारणमां अमुक परिवर्तनो दर्शावी विकास पामे छे. परंतु वृद्धि अने विकासनी क्रिया सरखी त्वराथी चाले छे एम कांई नथी. स्थूल आकृतिनी वृद्धि आशरे ७ मा वर्षने अंते थई रहे छे, पण ते समये

* अत्र ज्ञान शब्दनो अर्थ जाणवुं, जाणवुंमात्र, ग्रहण, एटलोज समजवो.

SHETH M. T. LIBRARY S. UNIVERSITY OF

विकास जन्मकाले होय ते करतां अधिक थयो होतो नथी. बंधारणमां परिवर्त थवा रूप विकासनो अर्थ एम समजवानो छे के जुदा जुदा विभाग परस्परथी स्पष्ट रीते जुदा थई ओळखाय तेवा बनेला छे; कोई प्रकारनुं रचनामां गुंफन आव्युं छे, अर्थात् जुदा जुदा विभागने कोई विशेष संबंधो बंधाया छे; इत्यादि.

१०. मगजना अवयवोनो विकासः—मगजना जुदा जुदा विभागना अथवा अवयवोना विकासमां एक बीजो पण क्रम जणाय छे. जे वधारे उत्कृष्ट विभाग छे, जेने मगजनो उत्तमांश कहेवामां आवे छे, ते जे अधरांश छे तेना करतां वहेलो विकास पामतो जणाय छे. आ उत्तमांशमांनां स्थानोने परस्पर प्रति, अधरांशगत स्थानोना करतां, वधारे परिगुंफन रहे छे एम दीठामां आवे छे. मगज पण आखा शरीरनो एक अवयव छे, अने शरीर साथे संबद्ध छे, एटले आखा शरीरनी वृद्धि साथे एनी पण वृद्धि, सविशेष प्रवृत्ति न छतां पण, थया विना नहीं रहे. पण एवी वृद्धि मात्र प्राथमिकज रहे छे. बीजा बधा अवयवोनी पेठे मगजनां वृद्धि अने विकास पण व्यायाम अभ्यास आदिथी बने छे. आवो जे शारीरशास्त्रनो नियम ते चेतनशास्त्रनो हवणांज आपणे जे नियम समजाव्यो के अभ्यासथी चेतनविकास थाय छे तेने अनुरूप छे.

आ रीते अभ्यासथकी मगजनी शक्तिमां जे वधारो थाय तेमां बे वात समाय छेः (१) मगजना व्यापारमात्रनो एवो स्वभाव छे के ते व्यापारमां जे स्थान के विभाग कामे लाग्यां होय तेना उपर तेनाथी कोई प्रकारनो प्रत्याघात थाय छे, जेथी ते स्थान के विभागमां कोई एवो अतर्क्य फेरफार थई आवे छे के एवाने एवा व्यापार पुनः पुनः करवा तरफ तेनुं स्वाभाविक वळण रह्यां करे. आनुं सारामां सारुं उदाहरण एवा प्रसंगमां जडे छे के ज्यां आंधळो थई गयेलो माणस दृष्टिगम्य पदार्थोनां चित्र

मनमां धारी शके छे. बाह्य प्रोत्साहन न छतां पण आ स्थळे मननो व्यापार चाले छे, केमके बाह्य प्रोत्साहननी साहाय्यथी एवाज व्यापार करवानुं वळण मगजने आवी गयेलुं छे. (२) बीजी वात ए छे के मगजना जे जुदा जुदा विभाग के जुदां जुदां स्थान एक काळे एकज व्यापारमां जोडाय छे, ते त्यार पछी पण एकत्रित थई प्रवर्तवानुं वळण पोतानामां राखे छे.

मगजना विकासना आवा उपरचोटीआ वर्णनथी चेतनविकास अने जड(शरीर)-विकासने जे आनुषंगिक समानता छे ते स्पष्ट थई शकवानो संभव छे. चेतनविकासमां जेम गुंफन अने उत्कर्ष थतां चाले छे तेमज मगजना उत्तमांशना बंधारणमां पण गुंफन अने उत्कर्षरूप विकास थतो चाले छे; जे उपरथी एम मानवाने सबल कारण छे के मगजनां जे स्थानो मोडां विकसे छे तेमने उत्कृष्ट चेतनव्यापार (बुद्धि, विचार, परामर्श इत्यादि) साथे संबंध छे. परंतु आवी आनुषंगिक समानता क्यां सुधी बराबर मळती आवे छे ए हजी शंका भरेली वात छे; उदाहरण जोईए तो जेने आपणे साहचर्य कहीए छीए तेनो आनुषंगिक शारीरव्यापार कयो छे ए नक्की जणातुं नथी. गमे ते हो पण एटली संभाळ राखवी आवश्यक छे के आ उपर उपरनी समानताने दूर सुधी खेंची जई ज्ञानतंतुगत आनुषंगिक शारीरिक व्यापारनेज चेतनव्यापारना निदानरूप ठरावी देवानी चूक न थाय. मगजना उत्तमांशना उपादानरूप जे ज्ञानतंतुगतरस तेमां थता क्रमिक परिवर्तमात्र उपर लक्ष आपवाथी कोई पण काळे बुद्धिविकासनो क्रम, संस्कारना वैधर्म्यने परखवानी शक्तिना विकासनो क्रम, इत्यादि कदापि जाणी शकावानुं नथी. अर्थात् ए जड अने चेतनना व्यापार आनुषंगिक छतां एक एकना कार्यकारणरूप कदापि छे नहीं ए चूकवुं नहीं.

चेतनव्यापार अने तंतुव्यापार एकज छे एम बतावबा माटे, ते उभये निरंतर चालता पृथक्करण अने एकीकरणरूप व्यापारनांज फळ छे एम सिद्ध करवा, स्पेन्सरनो प्रयास छे. परंतु चेतनमां जे एकीकरण संभवे छे ते तो मात्र वर्गविभागरूपज छे, एटले ते एकीकरण अने तंतुव्यापारमांना एकीकरण वच्चे कशुं सादृश्य नथी, अने एटली बाबतमां तो तंतुव्यापार अने चेतनव्यापारने एकनी एकज क्रियाना पेटामां लेई शकाय एम नथी.

११. चेतनविकासनो बाह्यसंसर्गसाथे संबंधः—आटले सुधी

चेतनविकासनो जे विचार आपणे कर्यो तेमां तेना आंतर स्वव्यापार अने तंतुव्यापार विना, बाह्य एवा कोई व्यापार के संसर्ग साथेनो संबंध आपणे लक्षमां लीधो नथी. परंतु चेतनविकास तेम तंतुविकासनी आ द्विरूप क्रियाने बाह्य संसर्गो साथे पण संबंध छे. प्रथम चेतनव्यापारनो बाह्य संसर्ग साथेनो संबंध जोईए.

एटलुं तो आपणे जोई आव्या छीए के बुद्धिनी प्रवृत्ति माटे उपयुक्त एवी जे सामग्री ते इंद्रियद्वारा पूरी पडे छे. इंद्रिय साथे पदार्थनो सन्निकर्ष थतां जे प्रत्यक्ष उपजे छे तेनो आधार स्पष्ट रीते बाह्य पदार्थो उपरज छेः शब्द करनार, तेज वर्षावनार, इत्यादि पदार्थो उपर छे. वळी आवा बाह्य पदार्थोनो दिक् अथवा काळमां जे क्रम होय ते क्रमने अनुसरेज आपणा मनमांनां दर्शननो अने तज्जन्य विचारव्यापारनो क्रम प्रवर्ते छे, ए पण आपणे जाणीए छीए. इंद्रियसन्निकर्षजन्य ज्ञानना प्रदेशमां, गर्जना पछी वीजळीनो झबकारो थतो देखवाथी ए बे बनावना जे संस्कार मनमां पडे तेमनो क्रम पण नक्की थाय छे,अने तेमना विषे जे शाब्दीय कल्पना करवी तेनो क्रम पण उद्भवे छे. कालक्रमने लईने आ प्रकारे बने छे तेम दिग्संबंधमां पण थायछे. बे गाम अथवा बे तारानी परस्पर सापेक्ष स्थितिना ज्ञानथी तेमना विषे जे संकल्प अने विचार मनमां उद्भवे तेनो प्रकार पण नक्की थाय छे. त्यारे एटली वात तो प्रथम सिद्ध थायछे के अत्र बतावबामां आव्युं तेटले सुधी तो आपणा चेतनमां जे जे व्यापार थाय छे तेनां स्वरूप आदि बाह्य संभवोना क्रमने अधीन छे.

आ उपरथी विशेषमां एम फलित थाय छे के आंतरव्यापारक्रमनुं बाह्यव्यापारक्रमने अधिकाधिक अनुकूळ थता जवुं तेनेज ज्ञाननी वृद्धि कहेवाय. जेम जेम भावविचारनुं सामर्थ्य आवतुं जाय छे तेम तेम दिक्संबद्ध अने कालसंबद्ध एवा संभव अथवा पदार्थोना अति विदूर

संबंधो, जेवा के ऋतुओनो क्रम, पृथ्वीना अति विदूर विदूर भागोनी समकालीन स्थिति, इत्यादि, ते मनमां उतरता जाय छे, अने व्यक्ति व्यक्तिना भावविचार उपरथी समष्टिना भावविचार उपर एटले के संकल्पमात्रथी भावना सुधी पहोचवुं ते पण बाह्य संभवोना महोटा विशाल वर्ग उपर बुद्धिव्यापार चलाववानुंज कार्य छे.

जे वात आ रीते एकला ज्ञानने लागु थाय छे ते वृत्ति अने इच्छाने पण तेवीज रीते लागु थाय छे. वृत्ति धीमे धीमे बाह्य संसर्गोने अनुसरती जाय छे. पोताने अनुकूळ एवां पुरुषपदार्थादि सुखवृत्तिनां स्थान थतां जाय छे; उच्च प्रकारनी अने भावरूप जे वृत्तिओ छे, जेवी के स्वदेशप्रीति, न्यायवृत्ति इत्यादि तेमां पण वधारे विशाल अने अनंत एवा बाह्य संसर्गोने अनुसरवानुंज तात्पर्य छे. ज्ञान अने वृत्ति उभय थईने (इच्छाजन्य) कर्म करावे छे; कर्म अथवा क्रिया तेमांज संसर्गने अनुसरवानो जे आ व्यापार तेनुं छेवटनुं फळ जणाई आवे छे, कर्म करवामां जे अनुकूळ होय तेने आपणे संगृहीए छीए, प्रतिकूळने परिहरीए छीए, अने ए प्रकारे आपणे आपणा संसर्गो उपर एक रीते प्रत्याघात करी आंतरसंबंधोनो बाह्य संबंधो साथे वधारे अनुकूळ योग बनी आवे तेवी स्थिति लावी आपता जईए छीए. इच्छानो जेटलो जेटलो विकास छे ते बधो व्यवहारना संसर्ग साथे अधिक अधिक अनुकूळ थता जवानोज दाखलो छे. उतावळीआ स्वभावथी ठाढो अने दूरदर्शी स्वभाव एटलामांज जुदो पडे छे के अति दूरना तेम समीपना संभवोनो, भावमय विचार करी शके छे.

हवे बाह्य संसर्ग अने तंतुचक्रना संबंधने तपासीए: तंतुव्यापारो बाह्यसंसर्गने शी रीते अनुकूळ थई रहे छे ते जोईए. एटलुं तो स्पष्टज छे के बाह्यसंसर्गनी चेतन उपर जे असर थाय छे ते तंतुचक्रद्वारेज थाय छे. बाह्य पदार्थो, जेवाके जेने तेजस् एवुं नाम आपवामां

आवे छे ते प्रकंप, शब्द, इत्यादि, प्रथमे पोत पोताना उचित तंतुस्थान उपर आघात करे छे, ने ते आघातमांथी जे प्रत्याघात थाय छे तेने अनुषंगे चेतनव्यापार पण दीठामां आवे छे. तंतुचक्र अने संसर्ग ए उभयना अनेकानेक परस्पर थता प्रतिव्यापारोथी तंतुचक्र धीमे धीमे बाह्य संसर्गने जोईए तेवुं अनुकूळ थई रहे छे. ए रीतेज, बाह्यसंसर्गोने जोईए तेवा तंतुमार्ग मगजनां स्थान सुधीना रचाई जाय छे. बाह्यस्थितिने अनुसारे तंतुचक्र आ प्रकारे स्थिति गृहतुं चाले छे.

बाह्य संसर्गनी मर्यादाने अनुसारे आ प्रकारे चेतनस्थिति अने तंतुस्थिति रहे छे ए वात यद्यपि खरी छे तथापि आ वात जड पदार्थो परस्पर उपर आघातप्रत्याघातथी जे असर करे तेवी केवळ नथी एम सारी पेठे लक्षमां राखवुं जोईए. तंतुस्थानोनो विकास, यद्यपि बाह्य संसर्गोने अधीन छे, तथापि पोताना खास नियमोने पण अधीनज छे. चेतनविकासपरत्वे तो आ वात आ करतां पण वधारे लक्षपूर्वक जाणवा जेवी छे. एक रीते तंतुविकासने अनुषंगे अने तेथी बाह्य संसर्गने अधीन छतां पण चेतनविकास तंतु अने बाह्य संसर्ग बेना व्यापारना गुंफननुंज फळ छे एम कदापि कही शकाय नहीं. जड पदार्थोना विकास करतां चेतनविकास ए कोई निराळोज विषय छे; अने तेने समजवा माटे तेना पोताना जे खास नियमो छे तेज जाणवानी जरूर छे. एक स्मरणशक्तिज जुओ. सर्व व्यापारमां ते तो अनुगतज होय छे, छतां शरीरवृत्तिना व्यापारो साथे तेने अति विदूर सादृश्य होई शके छे. गतसंस्कारनुं पुनरुज्जीवन करवानी वातने ते व्यापारसंबद्ध कोई तंतुस्थान साथे यत्किंचित् संबंध भले हो, परंतु ए स्मरणव्यापार आ तंतुव्यापारथी अत्यंत भिन्न छे; किंबहुना एकला आ तंतुव्यापारने विचारवाथी कदापि पण समजाय नहीं तेवो छे.

१२. विकासनां आंतर अने बाह्य अंग:—चेतनविकासनो संबंध आ प्रकारे बाह्यसंसर्ग साथे छे. अने बाह्यसंसर्गथी चेतनविकासनी मर्यादा बंधाय छे, ए वात लक्षमां लेतां कोई पण चेतननो विकास बे कारणोना परस्पर व्यापारथी बनी आवे छे एम कही शकाय. आ बेने एक विकासनां अंग गणतां प्रथम अंग आंतर कारणोनुं छे. आमां चेतन अने तेनी पोतानी जुदी जुदी, पण अतःपर पृथक्करण करी न शकाय तेवी,

शुद्ध शक्तिओनो समास छे. आना भेगो तंतुचक्रनो पण समास राखवो जोईए, केम के कोईने कोई प्रकारे प्रत्येक चेतनव्यापारने तंतुव्यापार साथे संबंध होय छे. बीजुं अंग बाह्य कारणोनुं छे. आमां तंतुस्थानद्वारा बाह्य संसर्गोनो चेतन उपर जे प्रभाव वर्ते छे तेनो समास छे.

आंतर अंगनो हवे विचार चलावीए. प्रथमे एमां चेतननी शुद्ध अने मूलभूत शक्तिओनो समास छे. जेनुं अतःपर पृथक्करण न थई शके एवी पदार्थग्रहणशक्ति—प्रत्यक्ष—ते एना पेटामां आवे छे ; ने तेथी आगळ जतां मूलभूत जे बुद्धिव्यापार, साधर्म्यवैधर्म्यपरीक्षण, तेनो पण तेमांज समावेश थाय छे; एटलुं ज नहीं, पण मूलभूत अने शुद्ध एवा वृत्तिव्यापार तेम इच्छाव्यापार पण आ विभागमांज आवी जाय छे. आ सर्व भेगी स्मरणशक्तिने पण गणवी जोईए, केमके चेतनविकासना सर्व व्यापारमां ते तो, आगळ बताव्युं छे; तेम, सर्वथा अनुगतज छे. आ जे जुदी जुदी शक्तिओ कही ते तो मन अथवा चेतनमां प्रथमथीज वर्तमान छे एम मानी लेवुं जोईए, केमके ते शक्तिओ मननी मूलभूत शक्तिओ छे, शुद्ध छे, जेमनुं अतःपर पृथक्करण थई शकतुं नथी तेवी छे.

आटली जे मूलभूत चेतनशक्तिओ बतावी ते उपरांत आंतर अंगमां एक सविशेष तत्त्वनो पण अवकाश होय एम समजाय छे. अमुक अमुक मार्गे, बुद्धि, वृत्ति अथवा इच्छा जेनाथकी प्रवर्तवा लागे छे तेवी कोई परंपरित शक्ति पण मानवामां आवे छे. आवी परंपरित शक्तिनुं एक उदाहरण एवुं मानवामां आवे छे के वस्तुसंभवादि परस्परने कार्यकारणरूपे संबद्ध छे ए रीतेज तेमनुं जे ज्ञान थवुं ते आ परंपरित संस्कारनुं फळ छे. परंपरित चेतनशक्तिनो अर्थ स्पष्ट रीते समजवो आवश्यक छे. प्रथम एम समजवानुं छे के कोई शक्तिने परंपरित कही एटले ते शक्ति आ अमुक जीवितमां के अनुभवमां प्राप्त करेली नथी एटलुं स्पष्ट थयुं.

कार्यकारणभावथीज पदार्थमात्रनुं ज्ञान संभवे एवा मानसिक वलणने आपणे परंपरित शक्तिनुं उदाहरण मानीए छीए त्यां स्पष्ट आशय एटलोज छे के बाळकने जे अनुभव होवानो संभव छे ते अनुभव विना पण तेना मनने एज रीते व्यापार करवानुं वळण छे. आवो परंपरितनो जे अर्थ तेज अमुक शक्ति नैसर्गिक छे एम कहेवाथी थई रहे छे. आटलुंज नथी, परंपरितमां आवो निषेधरूप—अनुभवजन्यत्वना निषेधरूप—अर्थ छे एटलुंज नथी; कांई विधिरूप अर्थ पण छे, अमुक विधान थयेलुं छे एवो अर्थ छे. परंपरितमां परंपराथी आवेलुं, पूर्वपूर्वथी चालतुं आवेलुं, पोताना पूर्वजोए जेम तंतुचक्रादि अर्पेलुं तेम कांईक अर्पेलुं, एवो अर्थ पण छे. जे साधारण चेतनव्यापारो छे, अमुक पदार्थादिनां वैधर्म्यने ओळखी तेमने जुदां गणवानी शक्ति, इत्यादि, ते आ प्रकारे मावापथी बाळकने परंपरागत छे एम कही शकाय; परंतु परंपरित चेतनशक्तिमां केवळ मावापथी उतरी आवेली शक्तिनोज अर्थ नथी; एथी कांईक विशेष पण छे. जे परंपरित शक्ति छे ते मावापनाज नहीं पण बधा पूर्वज अने आखा ए वर्गना भूत अनुभवनुं फळ छे एम आपणा कहेवानो आशय छे. वस्तुसंभवादिनुं ज्ञान कार्यकारणसंबंधरूपेज थाय ए जे परंपरित वळण ते घणाक काळना अनुभवथी उतरी आवेलुं फळ छेः अर्थात् ज्यांथी मनुष्योए विश्वविलोकन करवा मांड्युं हशे त्यांथीज ते विचार थतो आवेलो छे.

एटलुं कहेवुं जोईए के आवी परंपरित शक्तिओ जन्मतानी साथेज जणावा मांडे एवो कांई नियम नथी; तेवा संस्कारने उद्बुद्ध करवा माटे केटलाक अनुभवनी जरूर पण पडे. एम पण मानवामां आव्युं छे के एक एक व्यक्तिना विकासनो क्रम समग्र वर्गना विकासना भूतक्रमने अनुसरतो चाले छे, अने जे समये कोई एक व्यक्तिमां अमुक परंपरित शक्ति द-

र्शन दे ते समय समग्र वर्गे ते शक्ति जे काळे प्राप्त करेली तेने एकंदरे मळतो आवे छे. समग्रवर्गे जे शक्तिओ आरंभमांज प्राप्त करी हशे ते जन्म थताना समयमां जणाई आवे छे; ने पछी प्राप्त करेली पछीना समयमां क्रम वार जणाई आवे छे.

परंपरित प्रकृति अथवा वळण अथवा शक्तिनी मर्यादा केटली छे ए विवादविषय छे. बुद्धिना प्रदेशमां जोईए तो स्पर्श अने दृष्टिना अनुभवोनुं गुंफन करी दृश्यपदार्थोनुं दृष्टिथी ग्रहण करवानुं जे वळण, कार्यकारणसंबंधथीज पदार्थग्रहणनुं वळण, ए इत्यादि परंपरितशक्तिनां उदाहरण मानवा जेवां छे. वृत्तिना प्रदेशमां तो परंपरित शक्तिनो प्रभाव आथी पण अधिक जणाय छे. मातानुं वदन जोतां बाळकने जे हर्ष थाय छे, क्रोध अथवा उपालंभनी आकृति जोतां जे दुःख थाय छे, अजाण्यां माणस अथवा अमुक जनावरो इत्यादि जोवाथी जे भय थाय छे, ए बधां परंपरित ऊर्मिओनां दृष्टांत छे. समग्र वर्गने अनुकूळ प्रतिकूळ ऊर्मिना जे अनंत अनुभव भूत काळमां थयेला तेनीज आ वर्तमान ऊर्मिओ प्रतिकृति छे. क्रियाशक्ति एटले इच्छाना प्रदेशमां पण पूर्वजोनी क्रियाशक्तिने अनुसरवानी प्रकृति व्यक्तिमात्रमां दीठामां आवे छे. बाळक अवतरतानी साथेज नियमित रीते निमिषोन्मेष करतुं आवे छे, कशा पण अनुभवनी तेमां तेने अपेक्षा रहेती नथी, वस्तुओ लेवा हाथ लांबा करे छे, वस्तु हाथमां आव्येथी मोंमां मूके छे; इत्यादि.

व्यक्तिव्यक्तिना शरीर अने मनना विकासक्रम उपर परंपराना नियमनी असर परिणामवादवाळा* जेवी अने जेटली बतावे छे तेनो विचार अत्र प्रस्तुत नथी. बे वातो अत्र लक्षमां राखी लेवा जेवी छे.

(१) परंपरित संक्रमना नियमने लीधे एम थाय छे के व्यक्तिना चेतनविकासनी मर्यादानो आधार समष्टि(समग्र वर्ग)ना चेतनविकास उपर रहे छे अने तेनेज अनुसरे छे. बीजी रीते कहीए तो जे तंतुस्थानो समष्टिना विकासक्रममां जे क्रमे विकसतां गयां हशे ते तंतुस्थानो व्यष्टि(व्यक्ति)मां पण तेज क्रमे विकसतां जशे. समष्टिमां तेम व्यष्टिमां चेतनविकासनो क्रम तो प्रत्यक्ष दृश्य पदार्थोना ज्ञानथी मांडी ने भावनापर्यंत गयलो छे.

* सांख्योक्त परिणामवाद करतां कांइक अधिक अर्थ छे.

(२) परिणामवादना सिद्धांतोमांथीज एम फळे छे के निरंतर वृद्धि पामती कोई प्रजानां जे भावि मनुष्य थाय छे तेमनामां मूळ समष्टि करतां कांईक अधिक विकास दीठामां आवे छे. कोई शक्तिनो जे उत्कर्ष एक काळमां सधाय छे ते अधिक सामर्थ्यरूपे आवता समयमां संक्रान्त थाय छे.

हवे विकासना बाह्य अंगनो विचार करीए. आंतर अंगनो विचार थई रह्यो, एटले प्रत्येक चेतनना विकासमां आ कारण उपरांत जे कोई बाह्य संसर्गो कारणरूप छे तेनो विचार प्राप्त थाय छे. बाह्यसंसर्गमां प्रथमे प्राकृतिक बाह्यपदार्थो समजवाना छे, एटले के आपणा रहेवाना देशमां, आपणा वसवाना स्थानमां, जे प्राकृतिक पदार्थो विश्वरचनानुसार आवेला, गोठवेला, होय तेनो विचार बाह्यसंसर्गना पेटामां प्रथम छे. ए बधा उपरथी आपणी मानसिक स्थितिनो निर्णय थई शके छे.

परंतु आवा प्राकृतिक पदार्थोना संसर्ग उपरांत मनुष्ये पोते योजेली मंडलव्यवस्थाना संसर्गनो पण विचार मुख्य रीते करवानो छे. जे मंडळमां कोई व्यक्ति वसे छे, जेनी साथे तेने अमुक अमुक संबंध छे, ने जेनाथी तेने कोई पण तादृश असर नीपजे छे, तेवी मंडलव्यवस्थानो आ विभागमां विचार करवानो छे. प्राकृतिक संसर्गनी पेठे मांडलिक संसर्ग पण इंद्रियसन्निकर्षद्वाराज मनने असर करे छे, छतां मांडलिक संसर्गनी असरमां प्राकृतिक संसर्गनी असर करतां एटलो फेर

रहे छे के मांडलिक संसर्गनी असरो नीतिमत्ता उपर थाय छे; एनो प्रभाव माणस माणसने जे संबंधो छे ते द्वारे, अनुकरण, अनुकंपा, आज्ञाकारित्व, अधिकार इत्यादिद्वारे, विस्तरे छे.

चेतनना स्वाभाविक अने पूर्ण विकास माटे मांडलिक संसर्गोनी पूर्ण अपेक्षा छे. कोई बाळकने शरीरे सुखी राख्या छतां मंडळना संसर्ग-मात्रथी विदूर राखी शकाय तो जणाई आवशे के तेनो चेतनविकास छेक सादा प्रकारनोज रहे छे. बाळकने प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, संयमन, आदि असरो पोता करतां बीजां तरफथी थाय छे ने तेनीज तेना चेतनना स्वाभाविक विकास माटे अपेक्षा छे. बाळकना बुद्धि-विकासनो आधार, आखा मनुष्यवर्गे जे बुद्धिविकास प्राप्त कर्यो छे, ने जेनुं दर्शन वातचीत, संभाषण, व्याख्यान, पुस्तक आदि द्वारे थाय छे तेनी साथेना तेना संसर्ग उपर रहे छे. मंडळमां प्रवर्तती ऊर्मिओ साथेना संबंधमांथीज बाळकनो ऊर्मिप्रवाह वृद्धि पामे छे; तेम पोतानी चारे पास जे होय तेमनां कर्म जोतांज पोतानी इच्छा पण जाग्रत् थई कर्मपरायण बनी शके छे.

जेम जेम उंमर वधती जाय छे तेम तेम मांडलिक संसर्गोनी मर्यादा पण वधती जाय छे, कुटुंबना खुणामांथी आरंभाई, आखा देशने के आखी दुनियांने पोताना संसर्गमां लावी शके ए प्रकारे आ संसर्गोनी मर्यादा वृद्धि पामे छे, ने ते प्रमाणे असर पेदा करे छे.

मांडलिक संसर्गनी असरोमांनी केटलीक सहेतुक होय छे ने केटलीक निर्हेतुक होय छे. मनोमननो संसर्ग, दृष्टांत, कोई कुटुंब के मंडळना चारित्रनुं स्वरूप, ए बधानी असर प्राकृतिक संसर्गोनीं जेवीज छे. परंतु आवी निर्हेतुक असर उपरांत केटलीक सहेतुक पण होय छे. सहेतुक असरना अंगमांज शिक्षणव्यापारनो आडंबर, वाक्-

पाटवना प्रयोग, नीति धर्म आदिना आदेश, अधिकार नय (कायदा) आदिनां संयमन, इत्यादिनो समावेश छे.

चेतनविकासना जे त्रण विभाग छे ते प्रत्येकमां उभये प्रकारना मांडलिक संसर्गो—सहेतुक अने निर्हेतुक—प्रवर्ते छे. कोई बाळकनी बुद्धिनो विकास एक पासा भाषाद्वारा प्रतीत थती सामान्य मंडलसमस्तनी बुद्धिमत्ता साथेना संसर्गथी, अने बीजी पासा शिक्षणव्यापार साथेना संसर्गोथी, थतो चाले छे. एज प्रकारे वृत्तिविकास पण अन्य मननी साथेना संसर्गथी तेम बीजां ए साक्षात् संभळावेला उद्गारथी थतो चाले छे. इच्छानो विकास पण दृष्टांत अने अनुकरणना संसर्गथी तेम उपदेश, उपालंभ, प्रोत्साहन, आदिना प्रयोगथी थतो चाले छे.

त्यारे हवे चेतनविकासनां बाह्य अने आंतर अंगना स्वरूप विषे आपणे विचार करी चूक्या. ए बधानो सार एकत्रित करीने दर्शावीए:—

चेतनविकास.

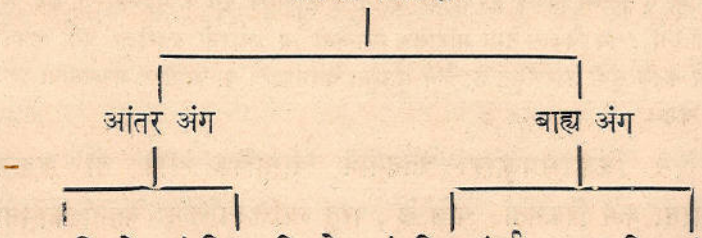

आ प्रकारे चेतनविकासमां समग्र कारणोनो व्यापार एकी वखते थाय छे एटले ए कारणोनुं छेवटनुं फळ जे चेतनविकास तेनुं पृथक्करण करी आटलो भाग आटला कारणथी थयो छे एम बतावी शकावुं अशक्य छे. एम छतां पण जे फळ थाय तेमांना तारतम्यने अंगे कारणोमां पण तारतम्य हशे एवुं अनुमान करी कीयां कारणनुं केटलुं प्रबल छे एनो कांईक

विचार आवी शके खरो. आवा तारतम्य उपरथी निर्णय करवानी आवश्यकता मांडलिक संसर्ग ए कारणपरत्वे वधारे रहे छे. चेतनशास्त्र रचनाराओए एकंदरे आ कारण उपर वधारे लक्ष आपेलुं नथी, छतां वर्तमान समये एटली वात सिद्ध थई छे के चेतनविकासनुं ए एक मुख्य कारण छे. परंतु ए कारणनी असर केटली छे ए मर्यादापरत्वे हजु पण घणा विवाद छे.

मनुष्यसमष्टिना विकास साथे आ विचारने घणो संबंध छे. जे मंडळ उत्तरोत्तर समृद्ध थतुं चाले छे तेनामां एक पछी एक कालक्रमे अधिकाधिक उन्नति दीठामां आवे छे. बुद्धि, वृत्ति अने इच्छा त्रणेने प्रोत्साहन करे तेवां कारणोमां वृद्धि थती जाय छे. पुस्तक तथा उपदेशादि द्वारे उत्तरोत्तर वृद्धे पामता सूक्ष्म सूक्ष्म ज्ञाननो प्रभावथी, सुंदर अने शुभ आचारने अंगे उद्भवता अतिसंस्कारमय मृदु जीवननो व्यवहारथी, कृतिमां नीतिनो उच्च भाव नियामक ठरवाथी, मानुषप्रयत्ननां साधन अने फळ उभयनी उन्नति थवाथी, उपयोगी अने साहित्यमय एवी कळाओना विकासथी, एकथी एक एम उत्तरोत्तर, मंडळ, अधिकाधिक उच्च मांडलिक संसर्गना संबंधमां आवतुं जायछे. आवा प्रसंगोमां ए वातनो निर्णय करवो बहु कठिन छे के अमुक वर्ग के मंडळनो जे वृद्धि अने नीतिनो उत्तम विकास तेमां मांडलिक संसर्गोनो आ प्रकारनो उत्तरोत्तर थतो आवतो उत्कर्ष केटले सुधी कारणभूत छे, अने मूलभूत चेतनशक्ति वा परंपरित संस्कारमांनी उत्तमता केटले अंशे कारणभूत छे.

१३. विकासप्रकार:—चेतनमात्र स्वाभाविक रीते तो एकज प्रकारना क्रमे विकसतां चाले छे; परंतु व्यक्तिव्यक्तिना चेतनविकासना इतिहासमां अनेक प्रकारनी सूक्ष्म सूक्ष्म भिन्नता आव्या विना रहेती नथी. एवां बे पण दृष्टांत न बतावी शकाय के जेमां चेतनविकासनो इतिहास बराबर एकज होय. मन अने मन वच्चे भेद होय छे एम जे आगळ कही आव्या तेवोज आ विकासनो भेद पण जाणवो. आवा भेदनां कारण बे होई शके छे. (१) मूळ शक्तिमांज भेद; अथवा (२) प्राकृतिक अने मांडलिक ए उभये प्रकारना बाह्यसंसर्गमां भेद. परिपक्व विकासमां जे कांई भेद जणाय तेनुं निदान ए बे कारणोमांथी नीकळवुं जोईए.

मूळ शक्तिमां जे तारतम्य होय तेने, पछीथी विकास पामवानी योग्यता पण अनुसरे छे; कोई एक शक्तिने जे व्यायाम के प्रोत्साहन आपवामां आवे तेनी असर बे माणसो उपर जुदी जुदी थाय छे ने तेनुं कारण मूळ शक्तिनो भेद एज होय छे. 'प्रभवति शुचिर्बिंबोद्ग्राहे मणिर्न मृदांचयः' एम जे भवभूतिए कह्युं छे ते यथार्थ छे. शिक्षणव्यापारमां पडेला मनुष्यमात्रने आ वातनी प्रतीति हशेज. एकज वर्गमांनां दश पंदर बाळकोने सरखुं शिक्षण आप्या छतां सरखी असर थती नथी. चेतनविकासमां आवी जे अयोग्यता जुदे जुदे रूपे जणाई आवेछे तेनुं निदान मूळ शक्ति अथवा परंपरितशक्तिना कोई तारतम्यमांज होवुं जोईए.

मूळ शक्तिमां केटलुं तारतम्य छे तेनो विचार, परिपक्व शक्तिना तारतम्यनो विचार जे प्रकारे थाय तेज प्रकारे बने छे. ए विचार करवामां मुख्य अडचण एवी आवे छे के मूळ वात केटली छे अने पूर्व संसर्ग के बीजा कोई बाह्य संसर्ग तेनी असर केटली छे ए परखी शकातुं नथी. यद्यपि पूर्व संसर्गनी असर छेक विदूर करीने विचार करी शकावो अशक्य छे, तथापि बाळकने जेम बने तेम जन्मसमयनी पासेनीज उंमरमां जोवा मांडवाथी मूळ शक्तिनो कांईक विचार आवी शके. अथवा एम नहीं तो आगळ जतां पण कोई नवाज प्रकारनो चेतनविकास दीठामां आवे ते उपर लक्ष करवाथी पण ए विचार थई शके.

तारतम्यपरीक्षानी आवी पद्धतिथी बाळकोने तपासतां एम समजी शकाशे के मावाप अने शिक्षको वारंवार जे कहे छे के अमुक बाळकने अमुक प्रकारनी शक्ति छे, अमुक प्रकारनी नथी, ते वात खरी छे. प्रत्येक बाळकने पोतानी कोई खास शक्तिओ होय छे; एने आपणे तेनी प्रकृति,

तेनो स्वभाव एम कहीए छीए, अने ए रीते पछवाडेथी बीजा संसर्गोद्वारे तेने जे प्राप्त थाय तेथकी तेने जुदी पाडीए छीए. आवी जे प्रकृति तेने ए बाळकना आखा शरीरना बांधा साथे तेम एना ज्ञानतंतुचक्रनी रचना साथे बहुज संबंध होयछे; अने इंद्रियोनी, मगजनी, स्नायुतंत्रनी, अधोभागमां रहेला जीवनव्यापार करनार अवयवोनी, स्थिति उपरथी एकंदर तेना मननी तेमज शरीरनी प्रकृतिनो निर्णय थई शके छे.

एवुं वारंवार कहेवामां आवे छे के अमुक चेतनमां जे अमुक प्रकार जणाय छे ते परंपरानुं फळ छे. उदाहरणमां एम जणाय छे के फ्रेंच अथवा अंग्रेज अथवा हिंदु अथवा गुजराती अने दक्षिणी एम प्रत्येक प्रत्येकनी मानसिक प्रकृतिमां कांईने कांई सविशेष स्वतस्त्व होय छे, ने ते आखी समष्टिमां परंपरित होय छे. एकना एक कुटुंबनां माणसमां पण ते वात बहु भागे समजाय छे एटलुंज नहीं पण कोई एकना एक कुटुंबमां अमुक शक्तिनो संक्रम वंशपरंपरा चाल्यो जतो जोवामां आवे छे. मी. गाल्टने पोताना "परंपरित प्रतिभा" ए नामना लेखमां युरोपना कोई एक "बेक" अवटंकवाळा गायकोना कुटुंबनो बहु उत्तम दाखलो आपी आ वात सिद्ध करी आपी छे.

परंतु परंपरितशक्ति उपरांत प्रकृति बंधावामां एक बीजुं पण कारण होय छे, जेने स्वतस्त्व ए नाम आपवुं पडे. स्वतस्त्व एटले व्यक्ति व्यक्तिने पोताना कोई खास गुण इत्यादि जे होय ते. ए व्यक्ति व्यक्तिए जुदुं होय छे. एकना एक कुटुंबमां पण स्वतस्त्वने लीधे केवळ विरोधवाळी प्रकृतिओ दीठामां आवे छे. परंतु आवा विरोधनो तो एक बीजो पण खुलासो करवामां आवे छे के कुटुंबनी गतपरंपरामां कोई तेवी प्रकृतिवाळुं थई गयुं होय तेनी प्रकृति आटले वखते पुनः प्रादुर्भाव पामी छे. आवा पुनःप्रादुर्भावने वचमां आणी एकज कुटुंबमांनी विरोधमय प्रकृतिओने

पाछी परंपराना नियममां लाववामां आवे छे. परंतु व्यक्तिव्यक्तिना समग्र चेतन अने चारित्रनो खुलासो करवामां, हाल आपणने जे ज्ञान छे ते आधारे जोतां तो, परंपरानो नियम झाझो सहाय थई शकतो नथी.

लोके अने तेना अनुयायीओए प्राचीन समयमां जे चेतनशास्त्र योजेलुं छे तेमां प्रकृतिना तत्त्वनी उपेक्षा थयेली जणाय छे. वर्तमान योजको उपकारकशिक्षण, वर्धापनादि, ना तत्त्वनी उपेक्षा करी बेसे एम लागे छे. माटे परंपरित अथवा स्वतस्त्वथी प्राप्त थयेली मूलप्रकृतिनी असर जेटले अंशे अवलोकनथी सिद्ध थाय तेटले अंशे मान्य राखी बाह्य संसर्गो—प्राकृतिक के मांडलिक—थी जे असर थायछे तेनी लेश पण उपेक्षा करवी नहीं. अत्र स्मरणमां राखवानी आवश्यक वात ए छे के कोई पण बे मनुष्य एकनी एक असरने तावे होता नथी. जोडवे अवतरेलां बाळक पण एकना एकज मांडलिक संसर्गमां रहे एम बनतुं नथी. तेमनी माता पोते पण उभयेने एकज सरखी रीते हलावे ह्लावे, उछेरे रमाडे, शिखवे फेरवे, एम बनवुं अशक्य छे. जेम जेम उंमर थती चाले छे तेम तेम मानसप्रकृतिमां भेद पाडनार बाह्य संसर्गोनी वृद्धि थती चाले छे. शाळा, नित्योद्योगस्थान, मित्रमंडल, इत्यादि संसर्गथी चेतन चेतनना स्वतस्त्वनुं रूप बंधातुं चाले छे. आवा निर्जीववत् संसर्गमांथी पण असर थाय ए वात चेतनना नियमोथीज सिद्ध छे. जेजे वात चेतनमां भळती चाले तेना उपरज चेतननी वृद्धिनो आधार छे. केटलेक अंशे चेतननी वृद्धिनो मार्ग मूळ शक्तिओ अने मूळ वळण थकीज नियत थायछे; परंतु ए बधांथी चेतनविकासनी एकंदर मर्यादानुं निर्माण बनी आवे छे, तेनी प्रकृति नियमाती नथी. भिन्न प्रकारना भाव अने ते भावनां गुंफन, बुद्धिनी अमुक प्रकारनी पद्धतिओ; वृत्तिना विविध रंग, अने क्रियामां अमुक अमुक मार्गनी रुचि; ए

आदिना प्रकारनो निर्णय तो बाह्य संसर्गोना स्वरूपमांथीज थई आवे छे.

१४. शक्तिओनी केळवणीः— शिक्षण अथवा केळवणीना विषयने मांडलिक संसर्ग साथे घणो निकट संबंध छे. शिक्षणमात्र मंडळीना व्यक्तिव्यक्तिप्रति थता पद्धतिपुरःसर विकासप्रयासनोज प्रकार छे. कोई शक्तिनी केळवणीनो अर्थ पण एज छे के ते शक्तिना विकासने आवश्यक होय तेवी सामग्री पूरी करी आपीने तेनो विकास करी लेवो. आवी सामग्रीमां सर्वथी प्रथमे योग्य पदार्थो बतावनानी वात आवे छे. दर्शन स्मरण आदि शक्तिओनो विकास, जोवाना पदार्थ, स्मरणमां राखवाना शब्द इत्यादि सामग्रीने आधीन छे. आ उपरांत मांडलिक संसर्गनुं बळ पण होवुं जोईए; बुद्धिविकास थवा न थवाथी अमुक लाभहानि थशे ए आदि विचार पण मुख्य जोईए.

आवी जे केळवणी ते चेतनविकासना नियमोना सारा ज्ञान विना बराबर योजी शकाय नहीं. प्रथम नियम एज लक्षमां राखवा जेवो छे के योग्य अभ्यासथी शक्ति केळवाय छे. अर्थात् उपयोगनी सामग्री पूरी पाडी, जे मांडलिक कारण—लाभहानि—उत्तेजक रूप होय ते पण उमेरी आपी, अमुक काळ वय आदिने योग्य एवी अनुकूळता करी आपवी ए आ अभ्यासना अंगमां समाय छे. आ प्रकारे शक्तिने जे प्रोत्साहन मळे ते अतिशय अथवा अनियमित न होवुं जोईए; जे प्रकारे विकास संपूर्णताए पहोचे तेवुं क्रमिक अने यथाशक्ति होवुं जोईए. अयोग्य प्रोत्साहन तेने जाणवुं के जेनाथी कोई शक्तिनो व्यापार तेनी वृद्धिने हानिकारक थई पडे तेटले सुधी वधी जाय.

केळवणीनी आखी पद्धति योजवामां चेतनशक्तिओना विकासनो स्वाभाविक क्रम अवश्य लक्षमां राखवो जोईए. जे शक्तिओनो विकास प्रथम थायछे तेमने प्रथम केळववी जोईए. उदाहरण—दर्शन अने संकल्पनी शक्ति थोडे अंशे पण विकसित होय ते पूर्वे भावनाशक्तिने विकसाववा यत्न करवो व्यर्थ छे. वर्तमान काळमां प्रचलित शिक्षणपद्धतिनो आ एक अति आवश्यक अने सुप्रसिद्ध नियम छे, जोके आपणी शाळाओमां तेनी विरुद्ध शिक्षण कोई कोई वार नथी थतुं एम नथी.

शिक्षण विषे लखनाराओए अमुक अमुक शक्तिना तारतम्यानुसार शिक्षणयोग्य जीवितना अमुक विभाग योज्या छे. (१) आशरे त्रण वर्ष पूर्ण थता सुधी इंद्रिय अने सहजबुद्धिनो समय छे; अने बाळक दृश्य पदार्थोनुंज ग्रहण करेछे; (२) सातमा वर्षना अंत सुधीमां बाळकनी चेतनशक्ति पण उद्बुद्ध थती जाय छे अने एकंदरे दृश्य पदार्थो साथेनो व्यवहार अने चेतनव्यापार उभये सरखे सरखां थई रहे छे; (३) चौद वर्ष थता सुधीमां दृश्य पदार्थथी आंतर दृष्टिनुं सामर्थ्य व्यतिरिक्त थई जाय छे; अने छेवट (४) शालायोग्य जीवनना अंत सुधीनो समय जेमां उत्तम प्रकारना चेतनव्यापार थता जाय छे; आवा विभाग मानवामां आवे छे. पण एटली वात स्पष्ट जणाय छे के आवा विभाग उपर उपरना अने साधारण प्रकारना गणाय— विकासनी जे क्रिया छे ते सर्वे चेतनविभागपरत्वे एवी समकालीन अने एवी गुंफित रहे छे के परस्परथी सर्वथा व्यावृत्त एवा क्रमवार विभाग थवा अशक्य छे.

शास्त्रीय नियमानुसार प्रवर्तती शिक्षणपद्धतिमां योग्य शक्तिने योग्य समये केळववा मांडवी ए वात उपर लक्ष आपवुं एटलुंज पूर्ण नथी, ते शक्तिने तेज समये जेटले उत्कर्षे पहोचाडी शकाती होय तेटले उत्कर्षे पहोचाडवी—एथी आगळ न जवुं. उदाहरण—स्मरण अथवा संकल्पनी शक्तिने केळववामां, ज्ञानप्राप्ति अने समग्र बुद्धिविकासपरत्वे तेनी केटली आवश्यकता छे ए विचारवुं अने तेना प्रमाणमां तेने केळववा उपर लक्ष आपवुं.

छेवट एटलुं पण कहेवुं जोईए के शिक्षण सर्व प्रकारे यथायोग्य थई शके तेटला माटे सर्वदेशी होवुं जोईए. एटले के जुदां जुदां मननां सर्वे बाळकने अनुकूळ थई शके तेवुं होवुं जोईए. अमुक मर्यादा सुधीमां तो सामान्यतः विकासमात्र उपरज दृष्टि राखवानी छे. उदाहरण जोईए तो एकाद बाळक संकल्पशक्तिविहीन होय माटे तेनी ते शक्ति न केळववी एम न थवुं जोईए. आ रीते सर्वदेशी केळवणी आपता जवी, पण तेनां अंग अंगमां एकदेशीपणानो अंश पाछो राखता जवो; एटले समग्र विकास थतानी साथेज जेनी जेवी योग्यता होय तेने तेवो विशेष विकास पण मळतो चाले.

प्रकरण ४ थुं.

अवधान.

आपणे आगळ बतावी गया छीए तेम अवधान ए यद्यपि इच्छाविकासनो विषय छे अने तेमांज अधिक उपयुक्त छे, तथापि चेतनव्यापारमात्रनी मुख्य सामग्रीमां पण एनो समास छे. एटला माटे प्रथमथीज अवधान विषे आपणे सारी रीते विचार करी राखवो जोईए.

१. **अवधानः**—पोताना संबंधमां जे कांई आव्युं होय ते उपर स्वव्यापारे करीने चेतननुं वळण ते अवधान एम कही शकाय. एने "आंतरप्रतीति अथवा ज्ञप्ति" अर्थात् कोई पण पदार्थ आदि पोताना संबंधमां होय तेनुं अंदरनी पासा भान, एम कहीए तो पण चाले. परंतु आंतरप्रतीतिनो प्रदेश अवधानना प्रदेश करतां विशाल छे ए लक्षमां राखवुं. आंतरप्रतीति अथवा ज्ञप्तिना अनंतानंत सूक्ष्म सूक्ष्म प्रकार होई शके छे. कोई स्पर्शजन्य प्रत्यक्षनी प्रतीति घणीज अज्ञातवत् होय, कोई संस्कारनो भास बहु अस्पष्ट रीते प्रतीत होय; एम अनेक प्रकार बनी शके. अवधान आपवानो अर्थज ए छे के अमुक परिमित प्रदेश उपर ज्ञप्ति केंद्रित करी गाढ बनावबी, अर्थात् जे कांई तत्काल संबंधमां आव्युं छे तेने बने तेटलुं स्पष्ट करवा सारु चेतन अथवा आंतरप्रतीतिने कोई विशेष वळण आपवुं.

२. **अप्रतीत अथवा अज्ञात अवधानः**—चेतनव्यापारना जे प्रदेश उपर आपणुं ज्ञानुं के जरा पण अवधान रहेतुं नथी ते संबंधमां घणो वाद विवाद उपजी आवेलो छे. ए प्रदेशने चेतनव्यापारनो अप्रतीत, अज्ञात, के अनिभृत प्रदेश कहेलो छे. प्रश्न ए छे के आपणी ज्ञप्तिने अज्ञात एवो अप्रतीत चेतनव्यापारनो प्रदेश छे ? होई

शके छे ? जे संस्कार आपणने अनेक वर्ष उपर थया होय अने जेमने आपणे आज स्मरणमां लावी शकीए अर्थात् जाग्रत् करीए ते आवा अप्रतीत चेतनव्यापारना प्रदेशमां संगृहाई रहेछे ? चेतनकार्योनो खुलासो चेतनव्यापारमात्रथीज करवा बेशीए त्यां तो 'अप्रतीत चेतनव्यापार' नो प्रदेश आपणे स्वीकारवो पडे छे; परंतु चेतनव्यापारनो खुलासो ज्ञानतंतुव्यापारथी करीए तो तो आवो स्वीकार करवानी आवश्यकता नथी. परंतु आ स्वीकार करवामां पण घणीक अडचणो छे. प्रथम तो एज छे के अप्रतीत चेतनव्यापार अर्थात् चेतनव्यक्तिरिक्त चेतन ए तो वदतोव्याघात छे.

प्रतीतिमां प्रकार होय छे एम मानवाथी आ दोषनुं बळ ओछुं थायछे; स्पष्ट प्रतीतिना प्रदेशनी पार अर्धप्रतीतिनो तेम अस्पष्ट प्रतीतिनो प्रदेश रहे छे. जे जे चेतनव्यापारो प्रतीतिमां उदय पाम्या विनाज तत्काल थता चेतनकार्यने असर करे छे तेमनुं स्थान आ प्रदेशमां छे. आ प्रदेशनी मर्यादापरत्वे बे प्रश्न ऊठे छे, (१) शरीर अने तेना व्यापारना संबंधमां आ प्रदेशनी मर्यादा क्यां सुधी छे? बधा शरीरव्यापारथी एमां कांईने कांई विकार थायछे ? (२) भूतकालना चेतनव्यापारथी एमां शो विकार बनी आवे छे ? दीर्घ काळथी विस्मृत पण यथाकथंचित् स्मरणमां आणी शकाय तेवी वातो वचला समयमां समग्र चेतनने कांई असर करे छे ? आ महागूढ प्रश्नोना तर्कजालमां उतरवानो प्रयास कर्या विनाज आपणे एटलुं कहेवुं जोईए के कोई पण समये चेतनकार्यनुं एक विचित्र गुंफनज होयछे; प्रत्यक्ष, संस्कार, विचार इत्यादिनुं गुंफन होयछे, जेमां घणाक अस्पष्ट, क्षणिक, अज्ञात होय छे. अप्रतीत चेतनना विशाल प्रदेशने संबद्धज प्रतीतीनो प्रदेश छे; कोई पण संस्कार अथवा विचार अवधाननी बळथी प्रतीतिगोचर थाय ते पूर्वे अवश्य अप्रतीत प्रदेशमां होवो जोईए. आखो चेतनप्रदेश, दृष्टिए आवता, वधती ओछी स्पष्टतावाळा, विस्तीर्ण विश्वलीलाना प्रदेश जेवो छे, अने प्रतीतिनो प्रदेश पेला लीलाप्रदेश उपरना जे भागमां दृष्टि बराबर लागी होय तेना जेवो छे.

चेतनना स्वव्यापाररूप अवधानने मान्युं तो तेथी उलटी अव्यापाररूप स्थिति ते अनवधानतानी छे, एमां कोई वात उपर अवधानने एकत्र करवानो आयासज होतो नथी. एने विकीर्णचेतन अथवा विकीर्णप्रतीति ए नाम आपी शकाय.

३. अवधाननो विषय:—बुद्धि, वृत्ति, अने इच्छा ए त्रणे अवधानना विषय थई शकेछे. इंद्रियग्राह्य पदार्थो, अर्थात् बाह्य पदार्थमात्र अवधाननो मुख्य विषय छे. शिक्षक पोताना शिष्योने "ध्यान आपो" एम कहेछे त्यारे तेना कहेवानुं तात्पर्य "जाग्रत् थई सांभळो, जुओ" एटलुंज होयछे. बाह्य पदार्थ उपरांत आंतर विचार, संकल्प, संस्कार आदि पण अवधानना विषय छे. अनुकूळता प्रतिकूळतानी वृत्ति यद्यपि स्वतः अवधानविषय नहीं थती होय तथापि जे बाह्य के आंतर कारण तेने प्रयोजे छे ते उपर अवधान जई ते द्वारा अवधानविषय थायछे. इच्छाना प्रदेशमां पण एम जणायछे के जे क्रिया थती होय ते उपर अने विशेषे करीने क्रियाना उद्देश उपर अवधान रहेज छे.

पोताना विषयने अवधानथी वधारे स्पष्टता अने उत्तेजन मळे छे. शब्दनो कोई संस्कार अवधानना प्रमाणमां वधारे स्पष्ट अने अमुक प्रकारनो छे एम समजी शकाय छे. ज्यारे सुख अथवा दुःखनी वृत्ति उपर अथवा तेनां कारण के सामग्री उपर अवधान आपीए छीए त्यारे ते वृत्ति वधारे प्रकट अने उत्कट समजाय छे. गमे तेवुं शरीरने दुःख थयुं होय तो-

पण कोई कारणथी आपणुं अवधान अन्यत्र होय तो दुःख जणातुं नथी. लडाईमां लडतां वागेला झखमनी पीडा ते समये समजाती नथी; पण जो अवधान आपीए तो नजीवामां नजीवा वसाराथी पण पीडा थायछे. आपणी क्रियामात्र पण अवधाननां प्रमाणमांज सबल अने चोकस थई शकेछे ए प्रसिद्ध छे.

४. अवधान अने बुद्धिव्यापार:— चेतनव्यापारमात्रमां अवधान अनुगत होय छे एटलुंज नहीं पण बुद्धिव्यापारमां तो सविशेषे तेनुं अस्तित्व समजायछे. इंद्रिय आगळ आवता पदार्थोनुं परस्परथी वैधर्म्य समजी ओळखाण करी लई तेमने अमुक अमुक वर्गमां योजवा एटलुंज अवधानथी बनेछे. एज रीते वर्तमान संस्कारो पण तेमने पेदाकरनारनुं स्मरण करावावामां त्यारेज प्रबल थायछे के ज्यारे तेमने अवधानपूर्वक मनमां राखवामां आवे. एमज विचारक्रम मात्र चेतनना एवा व्यापारनुं रूप छे के जेमां ज्ञानपूर्वक अवधानने एकत्रित करवानी अपेक्षा छे. आ बधा प्रकार विचारतां सहज समजाशे के अवधान यद्यपि एक प्रकारनी क्रिया एटले के इच्छानो विषय छे तथापि तेने बुद्धिव्यापारो साथे अतिनिकट संबंध छे. ज्ञानसंबंधे अर्थात् बुद्धिने मार्ग बतावावामां, नियमवामां, ने सहाय थवामां, व्यापृत एवा एक इच्छाव्यापारने अवधान ए नाम आपी शकाय. आम होवाथी आवश्यक छे के बुद्धिनो विचार करता पूर्वे अवधाननां स्वरूपनो विवेक थई जवो जोईए.

५. अवधाननी आनुषंगिक क्रियाओ:— अवधान ए चेतनव्यापार छे, अने चेतनव्यापारने अनुषंगे अमुक जडव्यापार ज्ञानतंतुव्यापार— पण बनेछे, आवश्यक छे, एम आपणे जोई आव्या छीए; तो अत्र पण विचार ए प्राप्त थायछे के अवधानने अनुषंगे शरीरमां केवी क्रिया बने छे? अवधान ए इच्छाव्यापार छे, तो कार्यकर्तृत्वमां जेमनो निरंतर उपयोग थायछे एवां जे उद्गाहक तंतुस्थान छे तेमने आ शक्तिना व्यापार जोडे कांई संबंध होवानो संभव छे. आ वातनुं समर्थन एटला उपरथी थायछे

के अवधानव्यापारनी साथेज स्नायुओनां आकुंचन दीठामां आवेछे. आवां आकुंचन बुद्धिव्यापारनी साथे घणां जणाय छे. अमुक पदार्थ उपर दृष्टिने ठरावबी; अमुक शब्दनी दिशा भणी श्रवणने तीक्ष्ण करी राखवा, इत्यादि. आटलुंज नथी पण केटलाक एवा व्यापार थायछे जेने सविशेषे अवधाननाज आकृतिक व्यापार मानी शकाय. अवधानमां सामान्य रीते, दृष्टि स्थिर करवी पडेछे, माथुं अने आखुं शरीर अमुक स्थितिमां राखवुं पडेछे, अने ए बधी स्थिरता कोई प्रकारना इच्छाव्यापारथीज संभवे छे. बहु अवधानथी कोई वातनुं स्मरण करवा जेवा व्यापारमां बीजा शरीरव्यापार थाय छे, होठने पीसीने दाबी राखवा, आंखो स्थिर अने विकसित थई जवी, इत्यादि; एकंदरे आखा शरीरमां कोई प्रकारनु आकर्षण व्याप्युं होय तेम समजाय छे, जे पाछुं स्नायुप्रताननुं चिन्ह छे. आ बधी वात लक्षमां लई तर्क करतां एम समजाय छे के ज्यारे अवधानव्यापार चाले छे त्यारे मगजमांनां केटलांक उत्तम उद्गाहक स्थानोमांथी कोई प्रकारनो वेग नाडीओमां प्रसरे छे खरो. आ वातने, अवधाननी वृद्धि थवाथी अवहित पदार्थ वधारे सारो लक्षमां आवे छे ए वात साथे बंध बेसती करवा माटे, एम मानवुं पडेछे के आ वेगना बे प्रवाह थई जाय छे— एक बाह्य स्नायु प्रति वहेछे, ने बीजो जेनाथी तत्काल पदार्थज्ञान थायछे* तेवा आंतर (संवाहक) स्थानो प्रति वहेछे. अर्थात् अवधानक्रियाने अनुषंगे पण अमुक तंतुव्यापार होवानो संभव छे. जे बे प्रवाह कह्या तेमांनो प्रथम प्रवाह अवधाननी आनुषंगिक शारीर अथवा तंतु क्रियाओ साधेछे, ने बीजो तत्काल गृहाता पदार्थना ज्ञानने गृहवामां उपकारक थाय छे.

६. अवधाननी मर्यादा:—अमुक बिंदु उपर चेतनने एकत्रित करवुं, विकीर्ण प्रतीतिनी स्थितिने संकीर्ण स्थितिमां लाववी, ते अवधान एम आपणे बतावी चूक्या छीए. अवधानमात्रमां एकत्रित ध्यान एटलुंज तात्पर्य छे. परंतु अवधानना बे व्यापार सहभूत जेवा छतां पोताना विषय संबंधे जुदा पण होई शके. एक चित्र जोवामां घडीक वार आपणुं अवधान एकाद रेषा उपर ठरे, घडीक वार समग्र चित्रना आलेखन उपर चोटे; तेमज गान श्रवण करवामां वखते एकाद सुर उपरज लक्ष रहे, वखते तमाम स्वरनी मीलावटथी थता राग उपर लक्ष रहे.

एटलो तो निर्णय थई चूकेलो छे के वास्तविक रीते जोतां एक वखते एक करतां वधारे वात उपर अवधान रही शकतुं नथी; अने

* थायछे एटले जे ज्ञानक्रियाना सहकारी छे एटलुंज तात्पर्य जाणवुं.

ज्यां अनेकावधानना प्रयोग जणाय छे त्यां पण अति अलक्षित त्वराथी मन एकथी बीजा पदार्थ उपर गयां करे छे. ज्यारे एक काळे अवधानमां आवतां जणाता बे पदार्थ परस्परथी अतिभिन्न होय त्यारे आ वात सारी स्पष्ट रीते समजाय छे. एक वार्ता सांभळवी अने तेज काळे एक पत्र लखवुं आ बे वात साथे बनती नथी, बने तो पण अवधान एकथी बीजा उपर अने बीजा उपरथी पहेला उपर एम त्वराथी जा आव करे छे. परंतु ज्यारे एकज समग्र पदार्थना जुदा जुदा अवयवरूप अनेक पदार्थोनो संस्कार साथे लागोज आपणा अवधानमां आवी जायछे त्यारे जाणे एकज व्यापारथी बधानुं ग्रहण थतुं होय एम लागे छे.

जे विषय उपर अवधान आपीए ते विषयना विस्तारने अने अवधाननी गाढताने घणो निकट संबंध छे. ए संबंधनो नियम आ प्रमाणे कही शकाय. ज्यां प्रयत्न समान होय त्यां अवधाननी गाढता अवहित विषयना प्रदेशथी उलटा प्रमाणमां रहे छे. अर्थात् जेम जेम अवहितप्रदेश विस्तृत अने विशाल थतो जाय तेम तेम अवधान ओछुं गाढ थाय छे. एटले घणामां घणुं गाढ अने उंडुं अवधान होवा माटे कोई एक बिंदु उपर घणामां घणुं ध्यान होवुं आवश्यक छे.

कोई काळे जे अवधान उपजी शके तेनो आधार बे वात उपर छेः (१) ते समये उपयोगयोग्य वेग शरीरमां केटलो छे? (२) जेनाथी अवधान प्रकटे छे तेनुं बळ केटलुं छे? जो वेग घणो होय तो साधारण कारणथी पण सारुं अवधान थई आवशे. अनामय अने चंचळतावाळा बाळकनामां दिवसारंभे बहु वेग होय छे एटले नजीवी अने निरुपयोगी वातो उपर पण तेनुं अवधान सारी रीते रह्यां करे छे. पण अस्वस्थ प्रकृतिवाळा अने शिथिळ थयेला बाळकने वधारे प्रोत्साहननी अपेक्षा रहे छे.

अवधानव्यापारने प्रोत्साहन करनार कारण बाह्य होय के आंतर होय, अर्थात् अवहित पदार्थगत कांईक होय अथवा अवधान आपनार चेतनगत कांईक होय. पदार्थ अथवा तेना संसर्गोमां रस पेदा करे अथवा चमत्कारथी कौतुक उपजावे एवुं कांई होय, अथवा मनमांज अवधान आपवाना फलरूप कांईक प्रोत्साहन होय. गवैयाना दीकराने सुरस राग उपर लक्ष आपवामां रागनी मधुरता, अने पोताने तेथी थतो आनंद तथा ते शीखवाथी भविष्यमां लाभनी आशा एवां बाह्य अने आंतर कारण मानी शकाय.

अवधान पाछुं इच्छासहित अने इच्छारहित पण होई शके छे. ज्यारे बाह्य पदार्थना प्रोत्साहनमात्रथीज अवधान उपजे त्यारे ते इच्छारहित जाणवुं. आ अवधानप्रकारने परावर्तित अवधान पण कही शकाय, केमके परावर्तित क्रिया साथे तेनुं बहु सादृश्य छे. परावर्तित क्रिया तेनुं नाम के जेमां संवाहक तंतुओनो आघात थतांज, इच्छापूर्वक संकल्पथी उद्वाहक तंतुने प्रोत्साहन मळ्या विना पण, उद्वाहक नाडी स्वयमेव क्रियारूप प्रत्याघात करे. आवा व्यापार परावर्तित व्यापार कहेवाय, तेम आ प्रकारनुं अवधान पण परावर्तित अवधान कहेवाय केमके पदार्थनो आघात थतानी साथे स्वयमेव——इच्छा विनाज——प्रत्याघातरूपे अवधानक्रिया थाय छे. आथी उलटी रीते ज्यारे इच्छापूर्वक एटले के कौतुकथी जिज्ञासा साथे के एवा कोई कारणथी आपणे जे अवधान आपीए ते इच्छासहित कहेवाय. अवधानना आ बे प्रकार ध्यानमां राखवा योग्य छे केमके एमनो परस्पर विरोध छे, तेमज विकासक्रममां पूर्व उत्तर रूपे पण ए बे प्रकारनां अवधान प्रसिद्ध छे. पूर्व वयमां इच्छारहित अवधान सविशेषे दीठामां आवे छे, उत्तर वयमां इच्छासहित अवधान प्रबल वर्ते छे. परंतु उभये एकज चेतनना व्यापार छे,

एटले वारंवार परस्पर साथे संमिश्र थई जाय छे, ने वळी जुदा जणाय छे, एवुं चेतनव्यवहारमां अनुपद जणाय छे.

७. परावर्तित अवधानना नियमः—हवणांज आपणे कही गया के कोई समये अवधाननुं जे बळ संभवे तेनो आधार केटलेक भागे शरीर अने मननी शक्ति उपर अने केटलेक भागे बाह्य प्रोत्साहनना बळ उपर रहे छे. अनामय प्रकृतिवाळां बाळकनामां शरीर अने मननी घणीक तरलता होय छे. आगळ जतां आपणा समजवामां आवशे के बाळको घणीक वातो स्वतःज सहजे करे छे, अर्थात् बहु जुज बाह्य प्रोत्साहनथी पण प्रवृत्त थाय छे. एनी एज वात अवधानपरत्वे पण जणाय छे. सहज रीतेज बाळको अवलोन करतां चाले छे अने पोताना वेगनो आवो उपयोग करवामां आनंद माने छे. आम छे एटले एटली वात स्पष्ट समजाय छे के अमुक वखते जे प्रोत्साहन होय तेना स्वरूपानुसार ते वखतना अवधाननी दिशानो निर्णय बनी आवे छे. त्यारे प्रोत्साहनना केवा स्वरूपथी अवधाननी दिशा नियमाय छे तेनो विचार करवो आवश्यक छे. आ नियमो जाणवाथी अवधानना एटले के परावर्तित अवधानना एकंदर नियमो पण लक्षमां आवी शकशे; अने इच्छासहित अवधान पण परावर्तित अथवा इच्छारहित अवधानने आधीन छे एटले परावर्तित अवधानना नियमोने अवधानमात्रना नियम एम कहीए तो पण चाले.

प्रथमे त्यारे एटलुं स्पष्ट जणायछे के कोई पण प्रोत्साहननुं अवधानने आकर्षवानुं बळ तेना प्रचयना प्रमाणमां रहे छे. भभकदार रंग, झांखा रंग करतां वधारे सबल प्रोत्साहन छे. तादृश संस्कार क्षीण संस्कार करतां वधारे सबल प्रोत्साहन छे; बाह्य प्रोत्साहनना संस्कारो उपर आंतर संकल्पो करतां वधारे सरलताथी अवधान आपी शकाय छे तेनुं कारण पण एज छे के आंतर संकल्प करतां बाह्य संसर्ग वधारे तादृश होय छे.

प्रोत्साहनना प्रचयमां प्रोत्साहननो प्रकर्ष विचारवो एटलुंज नहीं पण तेनो समय पण जोवो अने ते प्रोत्साहन करनार वस्तुना विस्तारनो पण विचार करवो. अति निर्बल प्रोत्साहन जेवुं के बारणा उपर कोई आंगळीथी टकोरा मारतुं होय तेवुं पण वधारे समय सुधी चाले तो अवधानने आकर्षे छे. मानसिक संकल्पो उपर लक्ष रहेतुं नथी तेनुं एक कारण ए पण छे के ते बहु क्षणिक रहे छे. एज प्रकारे कोई समग्र देखावमांनो एकाद विपुल पदार्थ—जेमके कोई वादळानो गतिमान प्रतिच्छेद ते नाना अने दृष्टि न आकर्षे तेवा पदार्थ करतां अवधानने वधारे आकर्षे छे.

हवे प्रोत्साहनना गुणनो विचार करीए. कोई पण प्रोत्साहनमां अवधानने आकर्षवानुं केटलुं बळ छे तेनो निर्णय प्रचयमात्रना विचारथी थई रहेतो नथी, प्रोत्साहनना गुणनो अर्थात् तेना अनुकूळ, प्रतिकूळ के उदासीन स्वभावनो पण विचार करवाथी थई शके छे. अनुकूळ पदार्थो अर्थात् जे पदार्थो मनने तुरतज आनंद आपी शके ते तेमना तेवा स्वभावथीज अवधानने आकर्षे छे. अति प्रबल प्रोत्साहन जेवा के तारस्वर, प्रदीप्त तेज, (जो श्रमावह न होय तो) नियमित रीते आनंदज प्रेरे छे. परंतु कोई पण प्रोत्साहनथी पेदा थता आनंदने प्रोत्साहनना बलमात्र साथेज संबंध छे एम न धारवुं; कोई कोमळ स्वर जो बहु मधुर होय तो, घणा प्रबल आकर्षकरूप थई पडे छे. जे आनंद थाय ते आनंद करावनार पदार्थ उपर पाछो परावर्तन पण पामे छे; बाळकोनुं अवधान आगंतुक आनंदनां चिह्न देखीने पण बहु सजड चोटी रहे छे, जे पदार्थोथी आगंतुक आनंदनुं अनुमान थाय ते उपर तेमनुं अवधान बहुज वळगी रहे छे. छतां केवळ अनुकूळ अने आनंदजनक पदार्थोज अवधानने आकर्षे एवो नियम न जाणवो. जे पदार्थोथी भय, त्रास,

शोक, दया आदि पेदा थाय छे ते पण बाळक तेम मनुष्य सर्वना अवधानने आकर्षी शकेछे. आवा नियमने अनुसरीनेज करुणा, बीभत्स, रौद्र आदिने पण रस—अर्थात् आनंद प्रेरनार प्रोत्साहनमां गणेला छे. आथी उलटी रीते जे उदासीन पदार्थो छे, जे अनुकूळ के प्रतिकूळ कशी ऊर्मि पेदा करी शकता नथी तेमना उपर अवधान पण वळतुं नथी.

स्पष्ट रीते दुःख पेदा करे तेवुं दर्शन—शरीरे घा थवाथी लोहीए टपकता कोई योद्धानुं दर्शन—पण अवधानने यंत्रित करी शके छे; ए उपरथी एम समजाय छे के जेटला जेटला संस्कार अने विचार कोई पण अंशे ऊर्मिथी मिश्र होय, पछी ते ऊर्मि अनुकूळ होय के प्रतिकूळ होय, ते पण अवधानना प्रबल प्रोत्साहनरूप थई शके छे. एम समजायछे के ऊर्मिना आवा सहचारथी प्रोत्साहनने वधारे बळ प्राप्त थाय छे. कोई समये कहींक जवानो वायदो होय ने ते वीसरीने आपणे बेठा होईए तेवामां तेनुं स्मरण थतां जे अकळामण आवेछे तेनो तो सर्वने अनुभव हशेज. परंतु परावर्तित अवधानना नियमथी इच्छासहित अवधानना नियमोने आपणे स्पष्ट रीते जुदा राखवा, केमके इच्छासहित अवधानमां तो पोताने अनुकूळ होय तेवुं सर्व, मन पोतानी इच्छाथी पोतानी आगळ राखवा यत्न करे छे, ने प्रतिकूळ होय तेने परहरवा मथे छे.

रस ए शब्दनो पारिभाषिक अर्थ तजीने एवो अर्थ मानीए के जे जे संस्कारथी एकंदरे अवधानने उत्तेजन मळे ते बधाए रस कहेवाय. आवो अर्थ करीए त्यारे एवी जे उक्ति छे के "जेमां रस लागे तेमां अवधान चोटे" ते पुनरुक्ति जेवीज छे. वृत्तिद्वारा कोई पण पदार्थ अवधानने जाग्रत् करे तेवी ते पदार्थनी असरने रस ए नाम कोई कोई वार आपवामां आवेछे. "मने आमां रस पडतो नथी" ए ठेकाणे रस शब्दनो एज अर्थ छे; केमके अमुक वातमां रस पडवा माटे तेनी अनुकूळ के प्रतिकूळ असर थवी जोईए. एकंदरे जोतां जे वस्तुओ, आपणी विशेष लागणीओ, आपणी प्रकृति अने आपणा विचार तेमां समायछे, अथवा ते साथे संबंध राखेछे, तेमां आपणने रस पडे छे; उदाहरण—कोई अभिमानी पुरुषने पोतानी स्तुतिनी अथवा तेवा संबंधवाळी वातमां बहु रस

पडेछे; सौंदर्यपरायण मनुष्यने सौंदर्यना विचारमां रस लागे छे. आम होवाथी जे पदार्थ विचारादिमां जे माणसने रस लागतो होय ते उपरथी तेनी प्रकृति, वृत्ति आदिनो विचार करी शकाय छे. त्यारे एटलुं सिद्ध थाय छे के अनुकूळ अथवा प्रतिकूळ गमे ते प्रकारे पण वृत्तिद्वारा जे आपणा संबंधमां आवे ते रसवाळुं कहेवाय; छतां अनुकूळ संस्कारमां अवधानने आकर्षवानुं जे बळ छे तेनेज साधारण रीते रस ए नाम आपवामां आवे छे.

आर्य देशना तत्त्वविवेचकोए रसनो अर्थ बहु जुदी रीते कर्यो छे. तेमनी मान्यता एवी छे के चेतन सर्वत्र छे अने आनंद ए चेतननोज स्वभाव छे. ज्यां ज्यां दर्शन बने छे त्यां त्यां द्रष्टानुं चेतन दृश्यना चेतन साथे एकत्र थाय छे तेथीज ज्ञान (दर्शन) संभवे छे. आवा ज्ञान अथवा दर्शनमां वृत्तिद्वारा चेतननो प्रचय थतां आनंद लागे छे ते रस कहेवायछे, ने एवो रस निरंतर न लागवा देनार जे आवरण छे ते खसवाथी चेतने चेतन एक थतां चेतनगत स्वाभाविक आनंद, चेतननुं आवरण भग्न थतां, प्रतीत थायछे. एज रस, प्रोत्साहन, तो शुं पण अवधानने तन्मय करी रसमात्रनुंज भान राखे छे. अने एज अवधानने प्रोत्साहन करेछे.

उभयथा पण रस शब्दनो अनुकूळ वृत्ति साथे जे संबंध छे ते उपरथी इच्छासहित अवधाननी केटली बधी उत्तमता छे ए सहज समजायछे, तेमज एटलुं पण जाणवामां आवेछे के परावर्तित अवधान सहजेज इच्छासहित अवधानमां विलय पामी जायछे. जेनाथी बहु रस पेदा थायछे ते वस्तु आदिथी अनुकुळने लंबाववा के प्रतिकूळने परहरवा सारुं इच्छाने एकाग्र ध्यान करवानुं उत्तेजन मळेछे. अने इच्छापूर्वक जे क्रिया थाय तेनो उद्देश आनंद के सुख तेज होयछे एटले रस ए शब्द, जे पदार्थादि आनंदनां अव्यवहित कारण होय अथवा गमे ते प्रकारे तत्संबद्ध होय तेनुं भान करावेछे. आपणने जेमां नित्य रस लागेछे—आपणुं घर, आपणा देश, आपणो प्रिय विचार, ते बधां सुखनां कारण छे ए सर्वने सुविदित छे.

आ प्रकारे बाह्य प्रोत्साहन करनार वस्तुना प्रचय अने गुणनो जे विचार कर्यो तेथी वस्तुना समग्र संस्कारप्रेरकत्वनो निर्णय बनी शकेछे; परंतु ते ते वस्तुनी पूर्वे थई गयली वस्तुओ साथेना तेना संबंधने लीधे, तेमज अवधाननी पूर्वदशाने लीधे, जे संस्कारप्रेरकत्व तेनामां आव्युं होय तेनो विचार पण लक्षमां राखवो जोईए.

कोई पण प्रोत्साहन अवधान उपर वधतुं ओछुं आकर्षण करे तेनो आधार तत्कालनी चेतनस्थितिमां जे वधतो ओछो परिवर्त ते ते प्रोत्साहनथी थई शके तेना उपर रहेछे. मननी स्थितिनो परिवर्त, एक स्थितिथी बीजी स्थितिमां मननुं तुरत तुरत जवुं, ते अवधानने जाग्रत् करवामां प्रबल साधन थायछे. शान्त अने गूढ एवा कोई वनप्रदेशमां एक तीणी बूम संभळातां तुरत अवधान जाग्रत् थई जायछे. परस्पर विरोधी एवा अनेक शब्दनी परंपराथी पण अवधान आकर्षाय छे. जेम परिवर्त घणो आकस्मिक तेम अवधाननुं आकर्षण थवानो घणो संभव.

आ नियमनुं उलटुं स्वरूप एम जोवाथी समजायछे के एकने एक प्रकारनुं प्रोत्साहन दीर्घ काळ सुधी चाले तो तेनुं बळ क्षीण थई जायछे, ने अवधान उपर तेनी कशी असर थई शकती नथी. नवुं वस्त्र के नवुं चित्र आण्युं ते वखते ते जे अवधान आकर्षतुं हतुं तेवुं अवधान पाछळथी परिचित पदार्थोना वर्गमां दाखल थतां आकर्षी शकतुं नथी. कसारा, लुहार, इत्यादि कर्मकारोने ते ते शब्द उपर लक्ष पण होतुं नथी, घडीआळना टकटकाने आपणे जाणता पण नथी, ए सर्व उदाहरण सुप्रसिद्ध छे.

होब्स वगैरे लेखकोए एम लख्युं छे के परिवर्त ए चेतनना जीवातुभूत छे. कोई संस्कारनुं ज्ञान त्यारेज थयुं कहेवाय के ज्यारे तद्विसदृश संस्कारान्तरथी ते संस्कार उपर आपणे आवीए. एकने एक प्रकारनो नानात्वविहीन शब्द कशी असर करी शकतो नथी, आपणा ज्ञानमां पण उदय पामतो नथी. आवुं जे बनेछे ते केटलेक अंशे आपणा ज्ञानतंतुचक्रना नियमोनुं फळ छे. दीर्घ काळ सुधी जाग्रत् रह्या पछी तंतुचक्र श्रमथी स्तब्ध थवा मांडेछे, अने मनोव्यापार मंद पडता चाले छे ए तेनुं चिन्ह छे. परंतु आवुं जे बनेछे के दीर्घ काळ सुधी चालता शब्दादिथी

असर थती नथी तेने, तंतुचक्र करतां ए अवधानना नियम साथे वधारे संबंध होवानो संभव छे. मन जाग्रत् रहे ते माटे एकथी बीजा पदार्थ उपर मन जाय तेवा परिवर्तनी जरूर छे; अनामय बाळकना अवधानना विषय क्षणे क्षणे बदलाता रहे छे, तेनुं लक्ष गमे त्यां होय त्यांथी पण कोई नवो पदार्थ दृष्टिमर्यादामां आवतां तुरत ते पदार्थ उपर ने त्यांथी बीजा उपर एम भमतुंज रहे छे.

कोई पण प्रोत्साहनथी जे परिवर्त बनी आवे तेनुं प्रमाण तत्पूर्वगामी प्रोत्साहन साथे तेनी तुलना करवाथीज नहीं पण भूतकालमां थई गयेला अनेक संस्कार साथे तुलना करवाथी पण थई शके. आ उपरथी ते प्रोत्साहनमां केटली नूतनता छे तेनो निर्णय बनी आवे छे. जे वारंवार पुनरुक्तभूत होय अने तेथी अति परिचित होय तेनाथी अवधान उपर कशी असर थती नथी. घडीआळनो टकटकारो जरा पण लक्ष आकर्षतो नथी, पण अपरिचित एवो कोई शब्द तेथी पण वधारे धीमो होय तो ए अवधान आकर्षी शके छे.

नूतनताथी अवधान आकर्षाय छे ए वात खरी छे तथापि एम न समजवुं के नूतनताने लीधे उपजेला अवधानमां मन स्थिर रहेशेज. केवळ नूतन होय ते अवधानने पोता उपर स्थिर टकावी शकतुं नथी. एम थई शकवा माटे तो कोई पण पदार्थ नूतन होय तेनी साथेज रसावह पण होवो जोईए. आपणे कही आव्या छीए के कोई पण पदार्थ रसावह थाय छे ते आपणी वृत्तिद्वाराज थाय छे, पण वृत्तिद्वारा रसावह थवुं ते आपणा पुनः पुनः उपजता संकल्प अने विचारनी साथे संबद्ध थया विना कोई पण पदार्थनाथी बनी शके नहीं. पदार्थोमां आपणने जे रस लागे छे तेनो महोटो भाग ते पदार्थनुं आपणने ज्ञान होय तेमांथी उपजे छे. जेने यंत्रशास्त्रनी खबर नथी तेने एकाद यंत्रना ओतप्रोत-

विभाग जोतां निर्वेद पेदा थवानो. पूर्वना अनुभव अथवा ज्ञानथी जे जोवानी आपणने उत्सुकता थई रही होय ते जोवामांज रस अने आनंद आवी शके छे. एम छे माटे परिचयमांथी पण क्वचित् रस उपजवानो संभव छे. उदाहरण—कोई माणस आपणने अपरिचित एवी भाषा बोलतो होय तेमां एकाद शब्द गुजरातीनो आवी जाय तो तुरत आपणुं लक्ष आकर्षाय छे.

८. **केटलोक विशेष विचार**:—अवधान उपर परिवर्तनी जे असर विषे हवणांज कहेवामां आव्युं तेमां जराक विवेक करवानी अपेक्षा छे. जो प्रोत्साहक संस्कार बहु त्वराथी परिवर्त पामता चाले तो आखी परंपराना प्रत्येक अवयव उपर अवधान रही शके नहीं. एवुं वारंवार बने छे खरुं के एकनो एक संस्कार जो आवी त्वरित परंपरामां पण थोडे थोडे अंतरे पुनः पुनः आवतो होय तो अवधान उत्तेजित थाय छे वळी ज्यारे कोई आकस्मिक अने सबल संस्कारनो धक्को लागे छे त्यारे पण जे विलक्ष थई जवाय छे ते सर्वना अनुभवमां हशेज. अवधानशक्तिज स्तब्ध थई जाय छे ने थोडोक समय थया पछी सचेत थई शके छे. आवी बधी वात उपरथी एम समजाय छे के अवधान पोताना विषयोनो अनुग्रह करे तेनी पण कोई प्राक्रिया छे ने ते प्रक्रिया यथार्थ रीते थाय छे त्यारेज कोई संस्कार प्रतीतिमां उदय थई शके छे.

त्यारे आवा अनुग्रहनी प्रक्रिया सरळ अने सहज रीते थाय एवुं शाथी बने? बधाए प्रसंगमां आवा अनुग्रहमां जे समय जाय छे ते सरखो होतो नथी. घणे अंशे तेनो आधार पदार्थना स्वरूप उपर अथवा बळ उपर रहे छे, अति प्रबल संस्कारोनो अनुग्रह थवामां प्रयत्न घणो जोईए छीए, अने अति निर्बळ संस्कारो माटे पण यद्यपि प्रयत्न घणो जोईए छीए, तथापि ते अवधाननो अनुग्रह थवा माटे नथी, मात्र तेवा संस्कारने प्रतीतिमां स्पष्ट रीते लावबा माटे छे. आवा कारणने लीधेज अतिप्रबल के अतिनिर्बळ संस्कार करतां मध्यम प्रकारना संस्कारोनुं ग्रहण बहु त्वराथी थाय छे.

अनुग्रहमां जे समय जाय तेनो आधार, प्रथमथी आवधानव्यापारनी दिशा अने स्थिति जे प्रकारनी होय ते उपर पण रहे छे. केवळ मंदता अथवा अनवधानतानी स्थितिमांथी अवधानने आकर्षवा माटे प्रोत्साहन बहु प्रबल जोईए छीए. निद्रानी स्थिति आ वातनुं प्रसिद्ध दृष्टांत छे. एज प्रकारे अवधान एक स्थाने लागेलुं होय तो

पण नवा प्रोत्साहनथी आकर्षातुं नथी. कोई दिशामां अवधान लागेलुं होय ते वखते बीजी दिशा प्रति तेने आकर्षवा माटे अति प्रबल प्रोत्साहन जोईए.

बीजी पासा एम पण संभवे छे के कोई संस्कार अथवा विचार उपर अवधाननो अनुग्रह थाय तेमां अवधानव्यापारना पूर्वरूपथी लाभ पण थई आवे. मननी जागृती एकंदरे आवधानामात्रने उपकारक छे; अनेक दर्शन श्रवण थया पछी नवा संस्कारो ग्रहण करवाने मन तत्पर होय छे. आटलुंज नहीं पण कोई क्षणे थनारी अवधाननी जे दिशा होय ते पण तत्पश्चाद्भाविक्षणे थनारी अवधाननी दिशाने उपकारक थाय छे. कोई **अ** नामना पदार्थ उपर अवधान लागेलुं होय तेटलाथीज, अमुक योग थतां, **ब** नामना बीजा पदार्थ उपर अवधाननुं लागवुं सरळ थई जाय छे. परंतु आवुं बनी शकवा माटे एटलुं आवश्यक छे के **अ** अने **ब** ने कांईक संबंध होवो जोईए. 'अमुक योग थतां' एम कह्युं ते योग बे प्रकारनो: **अ** अने **ब** नुं सादृश्य, अने **अ** अने **ब** वच्चे संबंध. संबंध ते एवो के आगळ पण **अ** नी पछवाडेज **ब** आवेलो एवुं बनेलुं छे. आ बेमांथी एके प्रकारे संबंध होय तो मन एकथी बीजा उपर बहु सरलताथी जई शके छे. आ प्रत्येक प्रकारनी शी असर छे ते विषे जुदो जुदो विचार करी जोईए.

सादृश्य. गमे ते कोई अनुभवप्रदेश अथवा संस्कार प्रति अवधान लगाड्या पछी तेनी ते दिशामांज अवधान चाल्युं जाय एवी तेनी प्रकृति छे. दृष्टिथकी जोवामां अवधान लाग्युं, एकाद वनप्रदेश उपर मन वळ्युं, तो ते ने ते दिशामां कोई नवुं दर्शन—एकाद पक्षीनुं उडवुं इत्यादि—थतां अवधान तेना प्रति आकर्षावानुं, वळी ते पछी कोई शब्द संभळायो तो तेना प्रति आकर्षावानुं, ने उत्तरोत्तर एनी एज दिशामां जवानुं. एज प्रकारे आंतर चेतनमां पण कोई अमुक विचारश्रेणि उपर अवधान आप्या पछी मन तेमनुं तेमज वळ्यां करवानुं. ते समये कोई नवो विचार उद्भवे तो तेना उपर, कोई नवीन बाह्य संस्कार ते समये थाय तो तेना उपर आकर्षाय ते करतां, अवधान वधारे आकर्षावानुं.

ज्यारे सादृश्य वधारे उत्कट होय छे त्यारे अवधाननो अनुग्रह बहु सरलताथी थाय छे. जो बे संस्कार अथवा बे विचार, जेमके **अ** अने **ब**, थोडा पण परस्परसदृश होय तो **अ** उपरना अनुग्रहथीज **ब** उपरना अनुग्रहनो मार्ग थई रहेवानो. जे त्वराथी आपणे एक शब्द, के एक स्वर, के एक वदन उपर अवधान लगाड्या पछी अन्य शब्द, स्वर के वदन उपर अवधान लगाडी शकीए छीए, ते आ बातनुंज दृष्टांत छे.

बे संस्कार स्वभावथी सदृश न होय पण तेमना प्रत्यागमनना काळ एक होवा रूप सादृश्यवाळा होय तो पण एकथकी बीजाने अवधाननो अनुग्रह सहजे थायछे.

शब्द, गति, छंदोनां पद, नृत्य, आदिना नियमित क्रमनी जे असर पेदा थायछे तेनुं कारण पण अत्र बताव्युं तेज छे.

हवे एकथी बीजा उपर अवधाननो अनुग्रह थई शकवामां जे बीजी वात, बे पदार्थ, संस्कार, विचार आदिनो संबंध ते उपर विचार करीए. बे संस्कार वच्चे आनुपूर्वीनो संबंध होय तो अवधानने एकथी बीजा पर जवुं बहुज सहज छे. कोई रागना एक स्वर उपरथी ते पछी आवनारा स्वर उपर, अथवा नृत्यनी गतमांना एक पादन्यासथी ते पछी आवनार पादन्यास उपर, आपणे सहजे अवधान आपीए छीए. आगळ कोई वार **अ** पछी **ब**नुं दर्शन थयलुं छे एटलाथीज पुनः पण **अ** नुं दर्शन थतां **ब** नो विचार आवे छे. अवधानने **अ**–**ब** ए मार्गज, आ प्रसंगने संबंधे, परिचित थई गयो छे.

प्रथमथीज अवधान क्वचित् थई आवेछे, अवधानने आकर्षनार संस्कार पूर्वे पण अवधाननो अनुग्रह संपूर्ण थई रहे छे. आवा अवधानने पूर्वसिद्ध अवधान कहेवुं जोईए. आनुं दृष्टांत जेने आपणे आशा अथवा भाविविचार कहीए छीए तेज छे. ज्यारे ज्यारे मन भाविनो विचार करी अमुक संस्कार अमुक रीते थवानो छे एम तर्क करी शके छे, त्यारे त्यारे अवधान प्रथमथीज तत्पर थई जाय छे. आम थवामां ग्रहण अने परिचय ए बे क्रियाओ करवी नथी पडती ए लाभ छे. आवी जे आशा ते जुदा जुदा प्रकारनी अर्थात् तेनी गाडताना अंशपरत्वे जुदा जुदा प्रकारनी होय छे. क्वचित् आपणे भाविसंस्कारनो समयज जाणता होईए, तेनुं स्वरूप जाणता न होईए. कोई नवा काव्यनुं श्रवण करतां, अथवा नवा गाननुं श्रवण करतां हवे पछी केवा स्वर आवशे तेनुं अनुमान सहजे थई शके छे. आवा जे नवा नवा संस्कारनी आशा बंधाती जाय ते उपर अवधाननो अनुग्रह आगळथीज थतो चाले छे; ने एम करवामां कोई प्रकारनो आनंद समजाय छे.

साधारण रीते आशानो अर्थ जे थाय छे तेमां भाविसंस्कारनी प्रकृति अथवा तेना गुणनो पण समास थायछे; संस्कार कीये क्षणे थशे ते एकलानोज समास नथी. अमुक प्रसंगे कोई माणस शुं बोलशे तेनुं एकंदर भान मने होई शके, ने तेवा अस्पष्ट भानने लीधे ते संस्कारना ग्रहणनो मार्ग सरळ थाय–परंतु घणीक वार तो भाविमां शुं बनशे ते यथार्थ रीते पण मनमां जाणी शकायछे. धूम्र जोया उपरथी तुरतज मोटो तोपनो भडाको थशे एम हुं स्पष्ट रीते कही शकुं, अने तेनी आशा पण राखुं. ज्यारे भावी संस्कारना समय साथे तेनी प्रकृतिनो पण विचार आशाना प्रदेशमां प्रथमथी उदय पामे छे त्यारे अवधाननो प्रथमथीज अनुग्रह संपूर्ण रीते थई रहे छे.

एटलुं उमेरवुं जोईए के प्रथमथीज अवधान तत्पर थई रहे तेनां कारण पण साधारण अवधाननी पेठे प्रोत्साहक एवी बाह्य वस्तुना स्वरूपमांथी, तेम आंतर जे मन तेना कोई उद्देशमांथी शोधी लेवां. एक हवाई फूटती वखते ते उंची ऊडशे, अथवा कोई हार्मोनिअममांथी हवणां सुस्वरमय गान छूटशे, एम आशाथी आपणां मन जे प्रतान पामी रहे छे, तेमां ते ते मानसिक चित्रनो उत्तेजक स्वभाव एज कारण छे. वर्गमां लेसन लेवाती वखते कोई शिष्य पोता उपर टपको न आवे ते माटे लक्षपूर्वक शिक्षकना सामुं जोई तैयार थई रहे छे, तेमां तेना मननो इच्छापूर्वक उद्देशज कारण छे.

हवे आपणे परावर्तित अवधाननी क्रियानुं स्वरूप विलोकी शकीशुं. साधारण प्रसंगोमां एम बने छे के अवधान अनेक पासा आकर्षाय छे. मननी यथायोग्य कार्यपरायणता होय तो अमुक समये अवधान कीये पासे वळशे तेनो आधार जे चर्चा हवणांज समाप्त थई ते उपर रहे छे. एम कहीए तो चाले के अनेक प्रोत्साहको एक एक साथे अहमहमिका चलावेछे अने तेमांथी जे सर्व करतां प्रबल नीकळे ते अवधानने आकर्षी शके छे. परंतु आवुं कोई प्रोत्साहकनुं प्रबल थइ शकवुं ते पण क्षणिकज जाणवुं, केमके परावर्तित अवधाननो स्वभावज नवा नवा प्रोत्साहकथी आकर्षाता जवुं एवो छे.

९. **इच्छासहित अवधानः**––अत्र जे सादी क्रिया परावर्तित अवधान आपवामां बतावी तेमां इच्छा वच्चे आववाथी बहु विकृति थाय छे. परावर्तित अवधानमां जे बळ प्रयोजाय छे तेमां इच्छा अन्य बळनी वृद्धि करी आखी क्रियाना स्वरूपने बहु गुंफित करी नाखे छे. इच्छा एवा आंतर हेतु उपजावे छे के जेथी बाह्य प्रोत्साहकनुं बळ व्यर्थ पण पडी जाय. इच्छानी साहाय्यथी मन अवधानने गमे ते मार्गे योजी शके छे, अने बाह्य प्रोत्साहकोमांनुं जे प्रबलतम होय तेनेज आधीन रहेतुं नथी.

अवधानमां इच्छानुं कार्य शुं अने केटलुं छे ते जोवुं जोईए. जेने

इच्छासहित अवधान एवुं नाम आपवामां आव्युं ते अवधानक्रियानो कोई केवळ नवीन व्यापार नथी. इच्छाव्यापार उद्भव्या पछी पण इच्छा-रहित अवधानना स्वाभाविक व्यापार अवधानने वळण आपनार रूपे चालताज रहे छे, अने इच्छाव्यापारनी मर्यादा पण तेमनाथी बंधायछे. भावनामां अवधानने स्थिर करवाना अभ्यासवाळो पण पोतानी समीप कोई मधुर रागनो आलाप सांभळतां ते पासा आकर्षाया विना रहेशे नहीं.

बळी आपणे आपणा अवधानने अमुक दिशाए इच्छानुसार वाळी शकीए ए वात यद्यपि खरी छे, तथापि ज्यां आपणी इच्छा होय त्यां अवधानने स्थिर करी मूकवानुं सामर्थ्य आपणने नथी. मन अने पदार्थ उभयनो परस्पर योग थई आवुं बनी आवे ते माटे कांईक विशेषनी जरूर छे. ते जे विशेष ते रस. इच्छाव्यापारथकी हुं मारुं अवधान गमे त्यां—एक मधुर काव्य उपर—लगाडुं, परंतु आ प्रकारनी इच्छाथी अवधाननो काव्य उपर अनुग्रह थया पछी तुरत ते काव्यमांज रस पडे एवुं कांई न जडी आवे तो गमे तेटली इच्छाथी पण ए काव्य उपर अवधाननी एका-ग्रता थवानी नहीं. इच्छा छे ते अवधान अने पदार्थ बेनुं ओळखाण करावी आपी शके पण ते बे वच्चे स्नेह थाय के न थाय ए इच्छाने हाथ नथी. शिक्षक गमे तेटलुं दबाण करे तेथी कोई वार पण अरसिक अने शुष्क वात उपर भणनारनुं अवधान इच्छापूर्वक अने खुशीथी एकाग्र थयुं जाण्युं नथी. आ बधी वार्ताथी एम समजाय छे के इच्छासहित अवधान पण रसना नियमथी मुक्त नथी. इच्छा एटलुंज करे छे के अवधानने अमुक दिशामां स्थापवाने समये केवा प्रकारनो रस मानवो ते बतावे छे; ने ए वात घणुं करीने प्रथमेज जे वळण, आ के पेली दिशा-प्रति, अवधानने आपवामां आवे छे तेटलाथीज सधाय छे. ए प्रकारे अवधान लाग्या पछी तो जेमां रस पड्यो होय तेवा स्थानमां अवधाननी एकाग्रता साधवी एटलुंज इच्छाने करवानुं रहे छे.

आ प्रकारे जे रस लागवाथी अवधान दीर्घ कालपर्यंत एकाग्र थई रहेछे ते इच्छानुं कार्य थई रह्या पछी पण देखाई आवे. कोई विद्यार्थी प्रथमे अरसिक जणाता एवा विषय उपर इच्छापूर्वक अवधान लगाडे तो वखते पाछळथी ते विषय तेने रासिक पण जणाई आवे. घणी वार एवुं बनेछे के इच्छाने प्रेरनार जे हेतु होय तेमांथीज रसनो पण उद्भव थई आवे छे. ज्यारे कोई पदार्थ अति उत्सुकताथी प्राप्त करवा धारे-ला एवा हेतु साथे संबंधवाळो होय छे, त्यारे जे हेतुथी तेना उपर अवधान अपाय छे तेज हेतुमांथी ते अवधान एकाग्रता पकडे एवो रस पण उद्भवे छे. पोतानां मावाप अथवा पोताना शिक्षकनी स्तुति के प्रीति पामवाना हेतुथी स्वतः अरसिक एवा पोताना इंगितना नियमनमां बाळको रसपूर्वक लक्ष आपे छे. परंतु आ प्रकारे रस पेदा थाय ते माटे एटलुं आवश्यक छे के हेतु अने साध्यनो जे संबंध ते साहजिक होवो जोईए, कृत्रिम नहीं. अमुक पाठ थई जशे तो रमवानी रजा मळशे एम कहीने हेतुसाध्यनो कृत्रिम संबंध योजी आप्या छतां पण तेवो पाठ करवामां जोईए तेवो रस लागतो नथी ए वात शिक्ष-कोना अनुभव बहार नथी.

इच्छासहित अवधानना नियमो शा छे ते हवे आपणे विचारी शकीशुं. एटलुं तो आगळ आपणे कही आव्या छीए के अमुक समये जे अवधान बनी आवे तेनो आधार ते समयना प्रोत्साहकना बळ उपर, तेम ते समयना मन अने शरीरना वेग उपर रहे छे. इच्छासहित अवधानमां आ उप-रांत कोई इच्छापूर्वक हेतु अवधाननो प्रथम उद्बोध करे छे. अर्थात् एमज कही शकाय के जेम हेतु प्रबलतम तेम अवधाननो प्रकर्ष पण उत्तमोत्तम थाय एवो इच्छासहित अवधाननो नियम छे. बाळकने पाठ गोखवानुं सबल हेतुरूप कारण होय त्यारे ते ते कार्य उपर वधारे एकाग्रताथी वळगे छे.

एटली वात कहेवा योग्य छे के इच्छासहित अवधानमां, अवधान-व्यापारनां कार्य, अवधानथी अवहित पदार्थनी जे अधिक स्पष्टता थाय ते विचारतां, अवधानव्यापारमां प्रयोजायला वेगने अनुरूप होतां नथी. इच्छासहित अवधानमां एकंदरे, तेवा अवधाननी प्रकृति बंधाता पूर्वना आरंभमां तो केटलोक प्रयास करवो पडे छे. इच्छारहित अथवा परावर्तित अवधान ए तो साहजिक क्रिया छे ने तेथी बहु सरळ छे; तेनी साथे सरखावतां इच्छासहित अवधान कृत्रिम अने प्रयत्नसाध्य छे. आ तारतम्यनुं कारण पदार्थनी अस्पष्टता अथवा अन्य दिशा प्रति अवधानने आकर्षण करनारनुं अस्तित्व ए आदि पण होय; अने तेवा अंतरायनो पराजय करवामां प्रयास पडे, जे श्रम अथवा वेगनी न्यूनताना समयमां अधिक लागे. ज्यारे अंतराय दूर थाय त्यारे जेटलुं अवधान होय ते आखा अवधानव्यापारनुं फळ अथवा कार्य कहेवाय. ज्यां ज्यां प्रयासनी अपेक्षा रहे छे त्यां त्यां कोई प्रकारनी प्रतिकूलता होवीज जोईए. एटले तेवी प्रतिकूलतानी सामा थवानी इच्छा थवामां कोई प्रबलतम हेतु पण होवो जोईए. त्यारे निश्चय थयो के अवधानक्रिया ज्यां श्रमसाध्य के कष्टसाध्य लागती होय त्यां यथायोग्य फळ प्राप्त करवा सारु प्रबलतर हेतु योजवो जोईए.

१०. अवधाननो विकास:—आपणे आगळ कही आव्या तेम अवधान प्रथमे तो परावर्तितज होय छे. बाह्य प्रोत्साहकने आधीन वर्ती अवधानक्रिया पुनः पुनः प्रवर्ते तेथी अवधानशक्तिमां, इच्छानी साहाय्य विना पण कार्य करी शके तेवुं केटलुंक बळ आवतुं जाय छे. एवो अभ्यास वधते वधते निर्बळ प्रोत्साहकोथी पण अवधानव्यापार सिद्ध थई शके छे. उदाहरण—तेजस्वी पदार्थो प्रति वारंवार जोयां करवाथी, दीवा वगेरे उपर वारंवार लक्ष आपवाथी—बाळकने पोतानी माताना

हाथ, वदन आदि जे दृष्टिगोचर थाय ते उपर पण लक्ष आपवानी शक्ति आवे छे. ए बधो व्यापार परावर्तित अवधाननोज समजवो. जेम जेम उंमर वधती जाय छे तेम तेम केवळ उदासीन वस्तुओ पण रसिक जणाती जाय छे. जे रसिक होय तेना संसर्गोमात्र पण अरसिक छतां रसिक जणाता जाय छे. अबीज रीते एक बाळक पोतानां स्नान भोजनादिनी तैयारीओ उपर लक्ष आपतुं जाय छे; महोटुं थतां पोताने रमवानी वस्तुओनी बनावट जोवामां लक्ष घाले छे; इत्यादि. आटलुंज नथी पण नवी नवी वृत्तिओनो उद्बोध थतो जाय तेम तेम पण अवधानने आकर्षे तेवी रसिकतानो प्रदेश विस्तार पामतो चाले छे. मान, प्रीति, हास्य आदि वृत्तिओ उदय थतां ते ते वृत्ति पेदा करनार पदार्थमां रस लागे छे ने अवधानने ते असर करी शके छे.

आ प्रकारे अवधाननी शक्ति विकसती चाले छे. परावर्तित अवधाननी शक्ति आ प्रकारे विकसती चाले छे, ते समयमां बाळकनी इच्छाशक्तिनो पण धीमे धीमे विकास थवा लागे छे. अवधानना सादा व्यापारो उत्तम प्रकारना गुंफित व्यापारनुं रूप धारण करवा मांडे छे एम जाणवानुं चिन्हज ए छे के बाळक अवहित पदार्थो प्रति एकाग्रताथी लक्ष आपतुं चाले छे. कोई पदार्थ उपर अवधान आप्या पछी तेमां रस पडे एटले हजी वधारे रस पडशे एवी आशाथी तेना ते पदार्थ उपर बाळक एकाग्रताथी अवधान लगाडी राखे ए तेनामां इच्छासहित अवधानव्यापारनो आरंभ थवा मांड्यानां चिन्ह छे. एम करतां आशापूर्वक अवधाननी जे टेव वृद्धि पामे ते उपरथी इच्छानो विकास पण हवे अवधानमां भळ्यो एम समजी शकाय. घणीज नानी वयथी बाळक इच्छापूर्वक नवा नवा विषयोनी शोध करतुं रहे छे ए तेनी इच्छाशक्तिनोज कोई पण प्रकारनो आवो व्यापार छे. आवा अभ्यासमांथी अवधान

धीमे धीमे इच्छानो अधिकार मान्य करतुं थाय छे. आ विषयने समग्र रीते समजता पूर्वे इच्छाविकासना समग्र स्वरूपनुं ज्ञान होवानी अपेक्षा छे. तथापि आवा प्रकारना अवधानविकासना मुख्य व्यापार अने नियमो कांईक अंशे बतावी शकाशे खरा.

पदार्थो उपर अवधान आपवामां जे श्रम के प्रयास पडतो होय तेमां न्यूनता थती चाले ए इच्छासहित अवधाननो अधिक विकास सूचवे छे. अभ्यासथी शक्तिनी वृद्धि थाय छे ए नियम अवधानने पण लागे छे. जे वात आरंभमां प्रयास अने श्रमथी साध्य होय छे ते पुनः पुनः अभ्यास वधतां सहजसाध्य थाय छे. एटलुंज नहीं पण वधारे वधारे कठिनतावाळां कार्य साधवानुं सामर्थ्य पण आवतुं जाय छे. अंतरायथी पराहत न थवानी शक्तिनां जे भिन्न भिन्न रूप उत्तरोत्तर क्रमथी जणायछे तेनो विवेक समजावाथी अवधानशक्तिना विकासनुं पण विवेचन थई रहेशे.

इच्छापूर्वक अवधाननुं तात्पर्यज ए छे के सबल अने रसिक प्रोत्साहकोनी मर्यादा पार एटले के बहु बळवाळां नहीं एवां अने मात्र परोक्ष रीतेज रस प्रेरी शके तेवां प्रोत्साहक उपर पण अवधान आपी शकाय. अवधाननो आ उद्देश लक्षमां राखवाथी अवधानना विकासनुं माप लेई शकाशे. पोतानी चोपासा जे पदार्थो होय छे तेमांना ओछा आकर्षक, ओछा आगळ पडता, अने ओछा कुतूहळवाळा पदार्थो उपर पण पोतानी दृष्टि टकाववानुं बाळक धीमे धीमे शीखतुं चालेछे. जेम जेम आवो अभ्यास वधतो जायछे तेम तेम अवधानमार्ग ओछो श्रमसाध्य थतो जायछे; अने अवधानशक्तिनो एम वधारो थतां मनमां नवा नवा हेतुनो पण उमेरो थायछे, जेथी अवधानमार्ग अधिक सरळ थतो चाले छे. प्रसंगानुसार आ अथवा पेली दिशाए अवधानने इच्छाथकी वाळवानुं सामर्थ्य आपण सर्वेने आ प्रकारेज प्राप्त थतुं आवे छे. परंतु एटलुं लक्षमां राखवुं के

अवधानप्रदेशनो आ प्रकारे जे विस्तार थाय छे ते आपणा रसविषयना विस्तारनी समानज चाले छे.

अवधानप्रदेशना विस्तारने साक्षात् उपकारक जे जे रसविषयो छे तेमां मुख्य तथा घणामां घणी असर करवाने समर्थ तो जिज्ञासानो वेग छे तेज छे; पदार्थादिने तपासी समजवानी जे इच्छा छे तेज छे. आ वेगने आधीन थई शास्त्रीय अभ्यास करनाराओ निर्जीवमां निर्जीव अने क्षणिकमां क्षणिक एवा संभवो उपर पण अवधान लगाडतां शीखे छे. ज्यारे आ जिज्ञासा अथवा कुतूहलनो वेग सर्वदेशी, सर्व वातो प्रति समान रीते, प्रवर्ततो होय अने जेटली जेटली जाणवा जोग वातो छे तेने पोताना हाथमां लेतो होय, त्यारे जेने आपणे तीव्र बुद्धि, सारी बुद्धि, कुशलता इत्यादि नाम आपीए छीए, जेने बहुश्रुतपणुं कहीए छीए, ते सिद्ध थई आवे छे. नवी अने अजाणी वातो उपर पण ते बुद्धि तुरत लागु थई शकेछे.

अवधान उपर इच्छानो अधिकार सिद्ध थयो छे एम जाणवानुं बीजुं साधन ए छे के गमे तेवा प्रबल प्रोत्साहकना आकर्षणथी पण अवधानने न आकर्षावा देवानी शक्ति आवी छे. इच्छापूर्वक कोई पासा अवधानने लगाडवुं एनो अर्थज ए छे के अप्रासंगिक अने व्यग्रता करनार वस्तु उपर तेने न लगाडवुं. आवी जे प्रतिरोधशक्ति तेनी पण अमुक सीमा होय छे. अकस्मात्ज अणचिंतव्यो एक महोटो प्रक्षोभ थई आवे तो तेनी असर कोईने पण न थाय एम धारी शकातुं नथी. एम छतां पण प्रतिरोधशक्तिनुं तारतम्य होई शके छे, अने एनी अभ्यासथी वृद्धि थायछे. वर्गमां पाठ चालतो होय त्यारे बारीएथी डोकीयुं न करवुं, के बारी बहार दृष्टि न करवी, ए रीते बाह्य आकर्षणनो प्रतिरोध करवो बाळकने प्रथमे तो कठिन लागे छे; पण जेम जेम अभ्यास पडेछे तेम तेम पासे कोई प्रकारनां नानां महोटां आकर्षण होय ते उपर पण लक्ष न आपवुं एवी शक्ति

तेना ते बाळकमां उपजी आवे छे. आ शक्तिनो उत्तममां उत्तम विकास जे पुरुषो पोताना कार्यमां, अभ्यासमां के विचारमां केवळ ग्रस्त थई जई बाह्यना कोई पण आकर्षणथी क्षोभ पामता नथी तेमनामां दीठामां आवे छे. अत्र पण अवधानशक्तिनुं माप लेवुं होय तो अन्य दिशाए अवधानने दोरी शके तेवां जे प्रोत्साहकना आकर्षणनो प्रतिरोध थई शकतो होय ते उपरथी लई शकाय.

आवा प्रकारनी अवधानशक्ति थई आववा माटेज योग आदि साधनोनी अपेक्षा छे. शरीर अथवा ज्ञानतंतुयंत्रने चेतन अथवा मन साथे निकट संबंध छे, अने तेमनी असर परस्परने थाय छे, तो जेम योग्य आहारविहारथी तंतुयंत्रने, तेम बाह्य आकर्षणोमां ओछो रस लगाडवारूपी विरागथी मनने, संयमन करवामां आवे तेम अवधानशक्तिनी वृद्धि थाय ए स्वाभाविक छे. योगनो हेतु पण ए विना अन्य नथी, एटले आपणा देशना योगशास्त्रमां जे नियमो बताव्या छे ते अवधानना स्वरूपने समजीनेज बतावेला छे एम कह्या विना चालतुं नथी. अवधानने एकाग्र करवाथी जे स्थिति थायछे तेने वृत्तिनिरोध कहेछे. एवो वृत्तिनिरोध जे स्थान उपर थाय ते स्थान—बाह्य के आंतर—नुं कोई अधिक ज्ञान, साधारण रीते देखाय छे तेथी अधिक ज्ञान, एवा वृत्तिनिरोधद्वारा बने के नहीं ए वात विचारवा जेवी छे, जो के चेतनशास्त्रना नियमोथी एटलुं तो आपणे मानी चूक्या छीएज के अवधान सारी रीते अपायुं होय तो अवहित पदार्थनी विशेष स्पष्टता थवीज जोईए. वर्तमान समयमां साईकोमेट्री—आत्मपरीक्षा—; क्लेरवायन्स—विश्वदृष्टि; ए आदि प्रयोग सिद्ध थता चाले छे, ते उपरथी तो एम लागे छे के वृत्तिनिरोधथी–इच्छासहित अवधाननी गाढ एकाग्रताथी–पदार्थगत धर्ममात्र, तेनी भूत अने भावि दशा, इत्यादि पण स्पष्ट करी शकाय छे. ए वातने आधारेज आपणे समाधि–अवधानने एकत्र करी वृत्तिनिरोध साधवानी वातने पण समजी शकीए. ज्यारे अवधान एकाग्र थाय त्यारे ते इच्छापूर्वकज होवुं जोइए अने इच्छाना प्रबलथी संकल्पशक्ति पण बलवती थई होवी जोईए, एटले इच्छासहित अवधाननो विषय यथार्थरीते उंडा उतरी तपासीए तो आपणां योगादि शास्त्रनी वात छेक अमान्य जेवी होवानो संभव जणातो नथी. संकल्पमात्रथी वस्तु सिद्ध थाय के नहीं ए विषय पण आ अवधानप्रकारना पेटामां विचारवा जेवो छे परंतु तेमां जडतत्त्वना स्वरूप विषे केटलाक विचार करवा पडे एवुं होवाथी अतिप्रसंग आवी जाय माटे ते विषे चर्चा अत्र आणी नथी.

अवधानने अरसिक पदार्थो उपर पण लगाडी शकाय, अथवा प्रबल आकर्षणनो प्रतिरोध करी शकाय, ए बे वात उपरथी अवधानशक्तिना बळनुं माप करी शकाय छे, तेम एक त्रीजी वातथी पण बळनुं माप करी शकाय तेम छे. पदार्थविचारादिने मन आगळ जेटलो समय राखी शकाय ते समयना प्रमाण उपरथी पण अवधानशक्तिना बळनो निर्णय करी शकाय. परावर्तित अवधाननो स्वभावज पदार्थथी पदार्थ उपर प्रचलित रहेवानो छे, तथापि तेमां पण कोई एवुं बळ प्रत्यक्ष जणाय छे के जे आवी प्रचलित प्रकृतिने अटकाववा मथे छे. पण ते बलमात्रथीज परावर्तित अवधाननी दशामां इष्टार्थ सिद्ध थतो नथी. जेम जेम अवधान परावर्तित दशा तजी इच्छाने आधीन थतुं चाले छे तेम तेम आ बळ वधारे असर करी शके छे. इच्छासहित कोई वस्तु उपर अवधान आपवुं एनो अर्थज ए छे के मनने ते वस्तु उपर थोडो समय पण टकाववुं. अत्र पण अमुक सीमा होई शके छे. कोई पण माणस एकनी एक वस्तु उपर अनंत काळ सुधी अवधान स्थापी शके नहीं—एकनी एक वात के एकना एक पदार्थ उपर अवधान आपी शकायानां दृष्टांतमां पण ते विचार के पदार्थनां नाना प्रकारनां रूपरूपांतरना अनंत परिवर्त उपर अवधान रम्यां करे छे, ने अधिकाधिक रस अनुभवतां त्यांथी खसतुं नथी एम बने छे; बाकी जो एवो परिवर्त न होय तो अवधान एकाकार एक वस्तु उपर टकी शके नहीं. अर्थात् ते प्रसंगोमां एमज बने छे के अवहित विचारपदार्थादि अवधाननुं केन्द्र रहे छे, ने अवधान तेमने वळगीने तेमनी पासे भम्यां करे छे. अवहित वस्तुमांनो रस क्षीण थतां नवीन रस आव्या विना अवधान टकतुं नथी, ने टके तो अधिकाधिक श्रमनी अपेक्षा राखे छे. श्रम वधतो जाय तेम मन निर्वेद पामेछे, अने श्रम छतां पण अवधान शिथिल पडी जाय छे. परंतु जेम

जेम इच्छानुं बळ वृद्धि पामे छे अने अवधाननो व्यापार सरळ थतो चाले छे तेम तेम थाक लागी जाय तेवा श्रमनी मर्यादा विदूर जती जाय छे ए वात खरी छे. विक्षेप अथवा व्यग्रता अने आकर्षणोनो प्रतिरोध करवाना सामर्थ्यनी वृद्धि साथेज एकाग्र अवधान अथवा ध्याननुं सामर्थ्य आवतुं जाय छे. उभये शक्ति आ प्रकारे बहु निकट संबंधवाळी छे, अने उभयनो समास ध्यानमां थाय छे. ध्यान करवानो अर्थज ए छे के मनने दृढताथी कोई वस्तु अथवा वस्तुओ उपर, बधी अप्रासंगिक वातोने विदूर राखी, एकाग्र करी देवुं.

ध्यानमां अप्रासंगिक वातो जोईए एम कह्युं, पण ते विक्षेप एटली एकज बतावी ते यथार्थ नथी. आपणा योगग्रंथोमां स्पष्ट कह्युं छे के ध्याता एटले ध्यान करनार अने ध्येय एटले वस्तु ते बे विना बीजुं बधुं अर्थात् विक्षेप, ध्यानसाधन, इत्यादि सर्व, ध्यानमां अप्रासंगिक छे. ज्यां ध्यान आपनार, ध्येय वस्तु अने साधन त्रणेनुं भान होय तेने तो आपणा लेखको धारणा कहे छे, अर्थात् धारणामां ध्याता, ध्येय ने विक्षेपसाधनादि त्रणेनुं भान होय, पण ध्यानमां तो ध्याता ने ध्येय बेनुंज होय, अने छेवटनी जे एकाग्रतारूप समाधि तेमां तो मात्र ध्येयनुंज भान होय.* त्यारे जुओ आ प्रकारे ध्याता अने ध्येयना भानरूप जे ध्यान तेनो अभ्यास आपणने मूळथीज थतो चाले छे. बाळकने कांई करवुं होय, इंटोनो ढगलो करी देहेरुं करवुं होय, त्यारथीज तेवी तेवी क्रियानी प्रबल इच्छाने लीधे ध्यान आपवानी टेव पडती जाय छे. जे पंडित एकाद क-

*कोई एम शंका करे के ध्येयमात्रनुं भान कोने होय? तो ते व्यर्थ छे केमके आगळ समजावी गया प्रमाणे दर्शनपद्धतिज आपणा चेतनशास्त्रमां एवी छे के पदार्थगत चेतननी द्रष्टागत चेतनसाथे एकता थवाथी दर्शन थाय छे. तो समाधिमां ध्येयगत चेतन अने ध्यातागत चेतन एक थई चेतनमात्रज—एकज वस्तु—ध्येयमात्रज स्फुरे छे एम कहेवुं जरा पण दुःसह नथी.

ठिन श्लोक उपर, के जे शोधक एकाद सूक्ष्म प्राणीना चलनवलन उपर नितान्तग्रस्त छे ते उत्तमोत्तम ध्यानप्रकारनो प्रभाव प्रत्यक्ष दर्शावे छे. व्यवहारमां कोई पण कार्य उत्तम ध्यान विना सारी रीते सिद्ध थतुं नथी. कोई पण मनुष्यनी अवधानशक्तिनुं माप तेनी ध्यानशक्तिमांथी लेई शकाय.

एवुं वारंवार कहेवामां आवे छे के उत्तमोत्तम प्रतिभानो आधार ध्याननी शक्ति उपर छे. न्यूटननामां जे आवी विशाल प्रतिभा हती तेनुं निदान ध्याननी शक्ति विना अन्य न हतुं. घणा समर्थ विद्वानोए एमज कहेलुं छे के सतत अवधान आपवानी शक्तिनेज प्रतिभा कही शकाय. बुद्धिना व्यापारमात्रमां अवधाननी अपेक्षा छे, अने कोई पण कार्यमां उत्तमता प्राप्त करवी, ते परिपूर्ण ध्यान विना नज बने ए स्पष्ट छे. जेमणे मो'टा मो'टा शोध कर्या छे ते पुरुषो ध्यानमां एवा निमग्न रहेता जणाया छे के एकना एक विचारने तेमणे अनेक दिवस, मास के वर्ष सुधी मनमां घोळ्यां कर्या छे, तेनां नानाविध परिणामो उपर अनेक प्रकारे ध्यान आप्युं छे, अने छेवट इष्ट निश्चय प्राप्त करी विराम पाम्या छे. अर्थात् ए वात खरी छे के प्रतिभानो आधार ध्यानशक्ति उपर छे; तथापि समग्र सत्यमांनो आ एक विभाग छे. गमे तेटला ध्यानमात्रथीज जाज्वल्यमान प्रतिभा सिद्ध थाय नहीं; पण ते उपरांत बुद्धिशक्तिनी पण कोई अपूर्व सामग्रीनी अपेक्षा छे. सारी बुद्धिसामग्री होय तो थोडा अवधानथी पण प्रतिभानी समीप पहोंची शकाय छे एम आपणे जोईए छीए.

११. अवधाननुं सामर्थ्य:—ए वात तो आगळ कहेली छे के एककालावच्छिन्न अनेक पदार्थ उपर अवधान आपवानी शक्ति घणीज मर्यादित छे. एकी वखते अनेक वात उपर अवधान लगाडवा यत्न करीए तो ते बधी वातो स्पष्ट रीते ग्रहण थती नथी. परंतु अनेक वात उपर पण

अवधानने एवी त्वराथी दोडावी जवाय के बधी एकी वखते लक्षमां आवी जवा जेवुं थाय. एज प्रकारे दृष्टि कोई मकानना जुदा जुदा विभाग अने तेमना संबंधो ध्यानमां राखी ले छे; कर्ण जुदा जुदा स्वरनां मिश्रणने पकडीने पारखी शके छे. जेम जेम इच्छापूर्वक अवधाननी शक्तिनी वृद्धि थती जाय छे तेम तेम आ सामर्थ्यमां वधारो थतो जाय छे. केटलीक कळाओ हाथ करवामां आ प्रकारना सामर्थ्यनी घणी उत्तम प्रकारनी पूर्णतानी अपेक्षा रहे छे. शिक्षक पोताना विद्यार्थीओमात्र उपर बराबर दृष्टि राखी शके; कोई हार्मोनीअम वगाडनार बधा सूर बराबर एकी वखते लक्षमां लेई शके; तेमां आवा सामर्थ्यनोज प्रभाव प्रत्यक्ष छे. जेम जेम आ सामर्थ्य वृद्धि पामे छे तेम तेम दर्शनशक्ति वधारे वधारे गुंफित विषयोनुं दर्शन पामवा समर्थ थती चाले छे; पदार्थे पदार्थ, के विचारे विचारनी परस्पर तुलना करवानी शक्ति अधिक तीव्र थती चाले छे.

परस्पर संबंधवाळी एवी अनेक वातो उपर अवधानने लगाडवानी शक्ति साथे निकट जेवो संबंध राखनारी ए अवधानशक्ति छे के जेथी परस्पर संबंध विनानी एवी एक वात उपरथी ऊठावीने तुरत बीजी वात उपर अवधान आपी शकाय. जेम जेम इच्छासहित अवधाननी शक्ति वृद्धि पामे छे तेम तेम एक विषय उपरथी बीजा विषय उपर, एक कामथी बीजा काम उपर, अवधान आपवानी शक्ति पण वृद्धि पामे छे. जेने आपणे बहुश्रुत कहीए छीए तेवा मनवाळां माणस जे त्वराथी आम तेम अवधान आपी शके छे तेमां आ शक्तिनो पारिपूर्ण विकास दीठामां आवे छे. जेने शतावधान आदि प्रयोग कहे छे ते पण आ शक्तिना उत्तमोत्तम विकासनुंज दृष्टांत छे.

आ शक्तिमां बे वात आवती होय एम समजाय छे: अवहित वार्ताने मनमांथी दूर करवी अने नवी वार्ताने अवधानविषय करवी. परंतु आ बे वात एकज क्रियानां रूपांतर होय एम समजाय छे. एम कही शकाय के कोई अन्य वार्ता

उपर अवधानने लगाडवुं ते मूळ वार्ता उपरथी तेने ऊठावी लेवानी बराबर छे. अर्थात् ए बे कार्य बे नथी पण एकथीज बे सिद्ध थाय छे.

जेम इच्छापूर्वक क्रियाकारित्व अभ्यासथी प्राप्त करेला स्वभावरूपे परिपूर्णता पामे छे, तेम इच्छासहित अवधान पण स्वभाव, टेव, प्रकृति, शील ए रूपे परिपूर्णता गृहे छे. स्वभाव एटले अमुक वात करवाप्रति दृढ वळग, अने ते सिद्ध करवामां सरलता एटलुं समजवुं; ए उभये अभ्यासथी प्राप्त थाय छे. अवधानविकासना क्रमने स्वभाव बंधावानो क्रम कहीए तो पण चाले. आरंभदशामां इच्छासहित अवधानने एकाग्र करवामां प्रोत्साहन अने प्रयासनी अपेक्षा रहे छे. प्रबळ प्रोत्साहननुं अदर्शन थतांज बाळकोनुं मन प्रमाद अने चांचल्यमां विहरवा मांडे छे. अवधाननो स्वभाव बंधावामां प्रथमे एवुं थाय छे के वारंवार थई आवता अमुक प्रसंगोए अवधानपरायण थवानी टेव पडे छे. जेमके बाळको वर्गमां पेसती वखते, अथवा कोई कांई कहे त्यारे अवधानपरायण थवुं एवी टेव प्राप्त करे छे. धीमे धीमे ए टेवमांथी वधारे स्थिर अवधाननो स्वभाव थई आवे छे. बाल्यमांथी यौवनमां जवानुं एक लक्षण ए पण छे के अवधानने वधारे वधारे जाग्रत् राखतां शीखवुं, अने जे कांई जोवा सांभळवामां आवे ते उपर विचार करवानुं शील प्राप्त करवुं. आवा शीलनुं उत्तम दृष्टांत विश्वव्यापारनुं अवलोकन करनाराओना मननी जे चंचलता अने अवधानपराणता रहे छे तेमां जोवा जेवुं छे.

आ बधा लेखमांथी एम भावार्थ समजायो हशेज के अवधाननी शक्ति सर्व पासाथी सरखी रीते विकसती नथी. सहज प्रकृतिना भेदने लईने, तेम अभ्यासना तारतम्यने लईने अवधानशक्तिमां अनेक स्पष्ट भेद दीठामां आवे छे. अमुक चेतननी प्रकृति केवी छे, तेनुं वळण केवुं छे, एनो निर्णय करवामां आ वात बहु काम आवे छे. जे महेनतु बाळक दीर्घ काळ सुधी

एक वात उपर अवधाननी एकाग्रता करी शके छे, अने एकथी बीजी वात-उपर त्वराथकी अवधानने लगाडी शकवामां मंद छे ते, अने जे चंचळ पण अतलस्पर्शी बाळक जुदा जुदा पदार्थ उपर त्वराथी अवधान लगाडी शके छे, पण एकज उपर लांबा समय सुधी एकाग्रता करी शकतुं नथी ते. ए बे वच्चेनो तफावत सहजे नजरे आवे तेवो छे. अनुकूलता होय तो बहु गाढ एकाग्रताथी नितांतग्रस्त थई जता सुधीनुं अवधान आपी शके, पण प्रातिकूळ विक्षेपादि सते लेश पण अवधान न आपी शके एवां पण घणां होय छे. एथी उलटी रीते बहुश्रुत मनवाळां माणस कोई एक वात उपर थोडा समयमां घणुं अवधान एकत्रित करी शके छे, अने घणी त्वराथी पाछां एज वात उपरथी बीजी वात उपर अवधानने लगाडी शके छे; जो के एवां मन दीर्घ समय सुधी एकस्थाने अवधानने स्थिर करी शकवामां कांईक न्यून शक्तिवाळां होय छे. एम पण जणायछे के अवधानना शीलनो प्रकार रसिकताना प्रकारना प्रमाणमां बदलातो रहे छे. विश्वलीला-दर्शननो अतुल प्रेम होय तेने बाह्यावधाननुंज शील बंधाय छे; आत्म-वृत्ति अथवा कल्पना अने विचार उपर मनन करवाना प्रेमवाळाने अंतर-वधाननुं शील थई जायछे.

१२. अवधानी केळवणी:—बाकळोनी बुद्धिने केळववामां मुख्य वातज तेमना अवधानने रोकी राखवानी छे. माता "आ जो" कहीने पोतानी आंगळीथी कोई पण पदार्थ बतावथाथी बाळकनुं अवधान ते पदार्थ प्रति लई जई शके त्यारथीज केळवणीनो आरंभ थयो एम समजवुं. थोडे के घणे अंशे पण बाळकनुं चेतनमय जीवित आ समयथी माताना हाथमां रहे छे, अने पोते बाळकने नवुं ज्ञान के नवो आनंद उपजे तेवो मार्ग बतावी शके छे. जेने आपणे शाळाना शिक्षणरूप पद्धतिपुरःसर केळवणी कहीए छीए, ते गमे तो इंद्रियद्वारा पदार्थावलोकन

करावी केळवणी आपवारूप होय के मुखपाठथी केळवणी आपवारूप होय, तो पण तेमां मुख्य उपयोग अवधाननोज छे, ने तेना फळनो आधार अवधाननी स्थिति बंधावा उपर रहे छे. अवधाननो अभ्यास शी रीते पाडवो, अवधाननो पूर्ण व्यापार शी रीते उद्भववावो, ए बराबर जाणवुं तेज केळवणीनुं प्रथम पगलुं छे.

बीजी बधी शक्तिनी वातमां तेम आ वातमां पण चेतनशास्त्र तो जे सामग्री साधवी जोईए अने जे क्रमे काम लेवुं जोईए ते साधारण-रीते बतावी शके. एटलुं तो स्पष्टज छे के अवधानना जे नियमो कह्या ते बराबर पाळवा जोईए, बाळकने अनेक असंबद्ध विषयो साधवा माटे एकी वखते आपनार, अथवा एकना एक विषय पर दीर्घ समय सुधी अवधान स्थिर राखवानुं कहेनार, शिक्षक मूर्ख होवो जोईए. आ वात यद्यपि स्पष्ट छे तथापि एवीज बीजी घणी वातो उपर शिक्षको दुर्लक्ष करे छे. एक पासा विषयनी नवीनताथी अथवा विषय चर्चवानी पद्धतिमां नवीनता लाववाथी तेम बीजी पासा अत्यंत अपरिचित विषय ऊभो करवाथी अवधान उपर शी असर थाय तेनुं यथार्थ ज्ञान प्राप्त करवाथी शिक्षको अनेक दोषमां पडता अटके एवो संभव छे. आपणामांना घणाने निशाळमां एकना एकज वारंवार कहेवाता उदाहरणथी जे कंटाळो आवतो, अने कोई नवा विषयमां एकाएक प्रवेश करावथाथी जे गभराट थतो तेनुं स्मरण सारी रीते हशेज.

बीजी वात लक्षमां राखवानी एवी छे के बाळकनी इच्छासहित अवधाननी शक्ति केवळ बीज रूपज होय छे, एटले सर्व अंतराय दूर करीने तथा साधवानुं कार्य बने तेटलुं रसिक करीने ए शक्तिनो बहु संभाळथी उपयोग करता जवो. शरीर श्रमथी शिथिल थयुं होय अथवा कोई ऊर्मिना विक्षोभथी मन के शरीर क्षुब्ध थयेलुं होय त्यारे बाळकनी पासे स्थिर अवधान अपावथा यत्न करवो ए व्यर्थ वात छे. ज्यां बहु लोक-

संघर्ष चालतो होय एवा रस्ता उपर पडती बारी आगळ तेने बेसारी मुखपाठ थकी तेने भणाववा यत्न करवो ते पण एटलोज व्यर्थ छे. बाह्यविश्वप्रति बाळकोनुं अवधान सहजेज वळतुं रहे छे, अने संकल्प तथा विचारना आंतरविश्वप्रति, शिक्षकना शब्दो तेने वाळी शकता नथी. एटला माटे शिक्षणमां जेम बने तेम बाह्य आकर्षणोनुं बळ ओछुं थाय तेवो योग साधता रहेवुं. शिक्षके ए वात सारी रीते लक्षमां राखवी के प्रख्यात केन्ट जेवा महोटा विचारशक्तिवाळाने पण कोईक वस्तु उपर दृष्टि स्थिर राखवाथी एकाग्रतापूर्वक विचार करवो ठीक पडतो हतो. योगशास्त्रमां त्राटकादि मुद्रा बतावी छे तेनो पण हेतु तेवोज छे. बाह्याकर्षण ओछुं थाय तेम करवुं एटलुंज नहीं पण विषय तेम ते विषय स्फुट करवानी पद्धति उभये रसिक अने आकर्षक थाय ते उपर दृष्टि राखवी. ज्यां शुष्क विषयोथी अवधान स्थिर थतुं न होय त्यां नवीन, रसिक अथवा कोई रसवाळा हेतु साथे संबंध राखनार, विषयथी अवधान स्थिर थई शकशे. बाळकने अमुक वात माटे तत्पर करवाथी, तेनी कुतूहलवृत्ति जाग्रत् कर्याथी, तेना मनने आशानी स्थितिमां लाववाथी, आ मार्गे घणुं साधी शकाय एम छे.

जेम जेम अभ्यासी मो'टो थतो जाय तेम तेम अवधाननी शक्ति पण वधारे खीलती जवी जोईए, ने तेथी तेनी पासेथी ते शक्तिनो सारो उपयोग थवानी आशा पण रखावी जोईए. छतां एटली वात वीसरवी नहीं के आखी उंमरमां पण जे वात अत्यंत अरसिक हशे ते श्रमरूप थई पडशे एटलुंज नहीं पण तेनाथी कशो लाभ थशे नहीं. एटलाज माटे बाळकनी वृद्धि पामती बुद्धिशक्तिने अनुकूळ थाय ते रीते तेना अभ्यासनो क्रम योजी आपवानो नियम बतावामां आव्यो छे. शिक्षके जेम बने तेम बाळकने पोताना विषयमां रस पडे तेम योजना करवी अने धीमे धीमे रसिकतानो प्रदेश विस्तारवाळो करी आपता जवो. जे कठिन अभ्यास छे, जेमके एकंदर रीते अरसिक एवा मूळाक्षर ओळखवा, के सारीगमना सूर जाणवा, ते इच्छाशक्ति कांईक विकास पामे त्यां सुधी शीखववामां आणवो नहीं. एकज दिशा उपर, तेम इच्छासहित अवधान आपवाना सामर्थ्यानुसार, मनने वाळवानी क्रियानो कोई उत्तरोत्तर क्रम करी आपवो जोईए; खरी शिक्षणपद्धतिमां आ क्रम सारी रीते योजेलो हशेज. आरंभमां विषयांतर अने निवृत्ति विशेष विशेष आवशे, अने एकाग्रतानी शक्ति जेम जेम वधती जाय तेम तेम तेओ ओछां थतां जशे.

प्रकरण ५.

प्रत्यक्ष.

ज्ञानमात्रनो उद्भव इंद्रियद्वारा छे. बुद्धिव्यापार जेवा के संकल्प, परामर्श इत्यादि ते पण इंद्रियद्वारे तत् तत् कार्य माटेनी सामग्री प्राप्त थया विना बनता नथी. आवी जे सामग्री तेनुं पृथक्करण करी जोईए तो तेनुं मूळ रूप इंद्रियसन्निकर्ष अथवा इंद्रियसन्निकर्षजन्य प्रत्यक्ष (संस्कार) ए बेमांथीज मळी आवशे. तेज अने रंगनुं प्रत्यक्ष चक्षुद्वारे थाय छे; शब्दनुं प्रत्यक्ष श्रोत्रद्वारे थाय छे, इत्यादि सुप्रसिद्ध छे. आपणा छेक भावनामय विचार—चेतन, जड, इत्यादि—ते पण पृथक्करण करतां आवां इंद्रियजन्य प्रत्यक्षना बनेला जणाशे. आपणा विचार आपणा इंद्रियजन्य ज्ञाननी पार झाझा जई शकता नथी. जन्मथीज अंध होय एवानामां एकाद इंद्रियना अभावथी आखी एकाद प्रकारनी विचारपरंपरानोज अभाव रहे छे. जे प्रसिद्ध इंद्रियो छे ते उपरांत एकाद इंद्रिय आपणामां विकसी ऊठे, तो कोई नवाज प्रकारना ज्ञाननो भंडार आपणा आगळ ऊघडे. योगादि अभ्यास करनारा एम माने छे के एक छट्ठी इंद्रिय माणसनी भ्रूकुटी आगळ मस्तकमां छे ने तेनो विकास थवाथी अतींद्रिय पदार्थोनुं ज्ञान संभवे छे, पण ते वात हजी शास्त्रीय लेखमां दाखल करी शकाय एटले अंशे प्रसिद्ध रीते सिद्ध थई नथी.

१. **प्रत्यक्षनुं लक्षण:**—प्रत्यक्ष ए सादो चेतनव्यापार छे, एटले ते करतां वधारे सादा शब्दोथी तेनुं लक्षण करवुं कठिन छे. जे तंतुव्यापार उपर तेनो आधार छे तेने उद्देशीने एनुं लक्षण बतावी शकाय. त्यारे प्रत्यक्ष तेने कहीए के जे चेतनपरिवर्त संवाहकतंतुना बाह्य अंतना संघर्षथी थाय छे ते. ए प्रकारे जोतां तेजथी चक्षुनो संघर्ष थतां, के स्पर्शथी त्वचानो संघर्ष थतां प्रत्यक्ष संभवे छे.

आपणां शास्त्रोमां इंद्रियार्थसन्निकर्षजन्य ज्ञान प्रत्यक्ष एम कहेलुं छे. इंद्रियमात्र ज्ञानतंतुना छेडानां के घणा छेडाना गुंफननां स्थान छे; मन तेवुं नथी, जेने आर्ष नैयायिकोए इंद्रियमां गण्युंछे, पण पाश्चात्य चेतनशास्त्रीओए गण्युं नथी, एटले कोई पदार्थ अने इंद्रियनो सन्निकर्ष थाय ते "संवाहक तंतुना बाह्य अंतना संघर्ष" नी बराबरज छे; अने इंद्रियार्थसन्निकर्षजन्यज्ञान ते प्रत्यक्ष ए लक्षण यथार्थ छे. 'संवाहकतंतु, ए अर्थ 'इंद्रिय' शब्दमां न आव्यो एम कोईने लागे पण न्यायशास्त्रमां सामान्यतः जेने आपणे ज्ञान कहीए छीए तेनी प्राक्रिया जोतां समजाशे के ए अर्थ पण ए शब्दमां संगृहीत छे. आत्मा (चेतन) मन साथे योजाय छे, मन इंद्रिय साथे, ने इंद्रिय पदार्थ साथे, त्यारे ज्ञान थाय छे. एटले इंद्रिय अने पदार्थनो सन्निकर्ष थतां मन * तेनो संस्कार पामे छे. ने मननो चेतन साथे योग होवाथी ज्ञान संभवे छे. आ वात हवणां वधारे स्पष्ट थशे.

त्यारे संवाहकतंतुना बाह्य अंतना संघर्षथी जे चेतनपरिवर्त थाय ते प्रत्यक्ष ए लक्षण सिद्ध थयुं; पण एटलुं कहेवानी आवश्यकता छे के तंतुना बाह्य अंतनो जे संघर्ष तेनुं अव्यवहित फळ प्रत्यक्ष नथी. त्वचाने स्पर्श थतांज के कर्णने शब्दनो योग थतांज, तेनी साथेज ते ते वातनुं प्रत्यक्ष थतुं नथी. ए संघर्षनी खबर "प्रतीतिस्थान" सुधी, मगजमांना चेतनस्थान सुधी, पहोचाडवी जोईए; तेम थया पछीज प्रत्यक्ष संभवे छे. आ स्थान अने कोई तंतुना बाह्य अंत वच्चेनो संबंध, कापवा वगेरेथी अटकाववामां आव्यो होय तो प्रत्यक्ष थतुं नथी एम प्रयोग वडे सिद्ध थयेलुं छे; तेम ए पण प्रयोगथी सिद्ध थयुं छे के संघर्ष जेने सन्निकर्ष पण कहीशुं तेनी खबर प्रतीतिस्थाने पहोंचतां कांईक समय लागे छे.

प्रत्यक्षनुं लक्षण करवामां बहु कठिनता छे. जेने सामान्यतः प्रत्यक्ष कहेवानो प्रचार छे ते बधा ज्ञान माटे बाह्य संघर्ष के सन्निकर्ष अथवा प्रोत्साहकनी अपेक्षा छे एवो कोई नियम नथी. तेज आदिनुं केवळ आंतर प्रत्यक्ष (संकल्पमात्र) थाय तेनो आरंभ बाह्य सन्निकर्षथी नहीं पण चक्षुरिंद्रियना केटलाक भागमां कांई परिवर्तथी थाय छे. केटलांक आंतर प्रत्यक्षनो आरंभ कोई मध्यस्थानथीज थाय छे. मनने इंद्रिय न मानवाथी आ हरकत आवी. जो मन पण इंद्रिय होत तो इंद्रियार्थसन्निकर्षजन्य

*आ स्थले मन अने चेतन शब्द आ आखा लेखमां वापर्या छे तेम ऐकार्थक नथी.

ज्ञान ते प्रत्यक्ष ए लक्षणमां आंतरप्रत्यक्षनो पण समास थात, केमके मन ए इंद्रिय साथे संस्कारनो सन्निकर्ष थतां प्रत्यक्ष थाय छे, अने संस्कार बाह्यसन्निकर्षजन्यज छे. पाश्चात्य चेतनशास्त्रमां आत्मा (चेतन) ने ज्ञानकारण मानवाने बदले मनने ज्ञानकारण मानवाथी आवी अडचण ऊभी थायछे. परंतु साधारण रीते एम कहेवुं अबाध छे के जे प्रत्यक्ष सामान्य स्थितिमां चक्षुश्रोत्रादिद्वारे थाय छे तेने तो बाह्य सन्निकर्षनी अपेक्षा छज. बीजी पण कठिनता छे. चक्षुःश्रोत्रादिइंद्रियद्वारे थतां प्रत्यक्ष, अने जीवनव्यापारनां प्रत्यक्ष जेवां के पाचक अवयवोना व्यापारनां प्रत्यक्ष इत्यादि, ते वच्चे घणो अंतर छे. आवां जे क्षुधा तृषा आदिप्रत्यक्ष तेमां बाह्यसन्निकर्ष के संघर्ष होतां नथी. तेमज स्नायुबलनां प्रत्यक्ष जे विषे हवणांज कहेवाशे ते पण प्रत्यक्षलक्षणमां अंतराय रूप छे.

आपणे प्रत्यक्षलक्षण बांध्युं तेमां जे चेतनपरिवर्त एटले चेतननी सादामां सादी बदलाती स्थिति मानी ते केवळ भावनागम्य के कल्पितज छे. आपणा चेतनमय जीवितमां कदापि पण अत्यंत शुद्ध एवा प्रत्यक्षनो आपणने अनुभव थतो जणातो नथी, तंतुना बाह्य अंतना संघर्षमात्रनुं फळ होय एवुं प्रत्यक्ष कदापि अनुभवातुं नथी. आवता प्रकरणमां जोवाशे तेम पाकी वय थतां प्रत्यक्षमात्रमां दर्शननुं विश्रण होय छे, ने ते बेने भिन्न भिन्न करीने समजवां ए अशक्य थई पडे छे. परंतु क्वचित् अंतरवलोकनना बळे दर्शनना तत्त्वने जुदुं करी शकाय तथापि तत्सदृशभूत प्रत्यक्षना संस्कारो वर्तमान प्रत्यक्षमां एटला बधा मळी जायछे के प्रत्यक्ष स्वतः शुद्ध छे एम मानी शकातुं नथी. आवा अनेक अंतराय छतां जे लक्षण आपणे आप्युं छे ते एक व्यावहारिक अने कामपुरतुं लक्षण छे एम समजवुं.

संवाहकतंतुने प्रबोधनार साधनथी असर थवा जेवी चेतननी स्थितिने प्रत्यक्षयोग्यता कहे छे. प्रत्यक्ष गृहवानी मननी शक्तिने प्रत्यक्षयोग्यता कहेवाय. वास्तविक रीते जोतां आ शक्ति मन अथवा चेतनमांज छे, शरीरमां नथी, छतां वारंवार भाषाव्यवहारनी शिथिलताथी आपणे ते शक्ति शरीरमांज होय एम बोलीए छीए. केमके जे द्वारे मनने बाह्यपदार्थकृत संघर्षनी खबर पडे छे ते द्वार शरीर छे. आपणे वारंवार त्वचा आळी छे, आंख बहु झीणी छे, एम कही ते ते इंद्रियनी प्रत्यक्षयोग्यता बतावतां ते शक्ति शरीरमां होय एवो व्यवहार करीए छीए.

आखा शरीरना जे जे भागमां संवाहक तंतुओ छे, ने तेथी जे भाग

प्रत्यक्ष पेदा करे एवा छे, ते बधा प्रत्यक्षयोग्यतावाळा छे एम कहेवाय छे. परंतु आ शक्ति बे जुदे जुदे प्रकारे दीठामां आवेछे. प्रथम प्रकार तो आखा शरीरना प्रत्यक्षयोग्य भागमां सरखोज छे, अने ते भागना छेडा उपर कोई जातनी सविशेष रचनानी अपेक्षा राखतो नथी. पण जे द्वितीय प्रकार छे तेमां तो शरीरना अमुक अमुक भाग उपर सविशेष रचनानी अपेक्षा छे, ने ते सविशेष रचनाने इंद्रिय अथवा अवयव कहे छे. प्रथम प्रकारनी प्रत्यक्षयोग्यताने सामान्य अने द्वितीय प्रकारनीने विशेषप्रत्यक्षयोग्यता कहेवामां आवे छे. विशेषप्रत्यक्षयोग्यताने लौकिकप्रत्यक्ष एटले इंद्रियद्वारे थयेलुं प्रत्यक्ष एम पण कहे छे, अने सामान्यप्रत्यक्षने साक्षात् इंद्रियद्वारे नहीं पण अन्यथा थयेलुं अलौकिक प्रत्यक्ष पण कहेछे.

२. सामान्यप्रत्यक्षयोग्यता:—आ प्रकारनां जे प्रत्यक्ष तेमने कोई विशेष रूप होतुं नथी. ते अस्पष्ट अने अनिश्चित होय छे. तेमनुं स्वरूप एटलुंज होय छे के तेमनुं रूप स्पष्ट रीते कोई प्रकारनी अनुकूलता के प्रतिकूलतावाळुं होयछे. पाचनक्रिया साथे संबंध राखनार सुख के असुख, अथवा स्नायुने थयेलां दुःखथी थती वेदनानुं असुख, ए इत्यादि एवां प्रत्यक्षनां दृष्टांत छे. आ प्रत्यक्षने बाह्यप्रोत्साहक साथे कशो साक्षात् संबंध नथी, परंतु जे शरीरविभागमां ते उद्भवे छे तेनी अमुक स्थितिने ते अधीन छे. एमनाथी दृश्यविश्वनुं कांई ज्ञान मळतुं नथी, घणामां घणुं ज्ञान शरीरनी स्थिति विषेनुं तेमनाथी मळे छे, अने ते पण ज्यारे आपणे तेमने तेमना उद्भवस्थाने स्थापीने अनुभवी शकीए त्यारेज. अने आटलुं पण जे संभवे छे ते शरीरना बाह्यवत् विभागोमां जे क्रिया चाले छे, ते परत्वेज बनी शके छे एम आपणे हवणां जोईशुं.

३. विशेषप्रत्यक्षयोग्यता:—श्रोत्रचक्षुरादिनी साथेना सन्निकर्षथी

जे विशेषप्रत्यक्ष अथवा लौकिकप्रत्यक्ष थाय छे ते परस्परथकी सहजे भिन्न पडी शके एवा स्वतस्त्ववाळां होय छे. आवो विशेष उद्भववानुं कारण ए छे के प्रत्येक इंद्रियने पोतपोताने योग्य एवी तंतुरचना होय छे, ने तेथी ते रचना उपर अमुक अमुक प्रकारनां प्रोत्साहनज असर करी शके छे, बीजां नहीं. आवुं होवाथी अलौकिक करतां लौकिक प्रत्यक्ष बहु सारी रीते ओळखीने जाणी शकाय छे. वळी एम पण छे के लौकिक प्रत्यक्ष केवळ शरीरबाह्य एवा सन्निकर्षोथीज उद्भवे छे, ने तेथी तेने संस्कार एवुं पण नाम आपी शकायछे. आवुं ए प्रत्यक्षनुं स्वरूप होवाथी ए प्रत्यक्षद्वारे आपणने आपणा संसर्गोनुं ज्ञान थई शके छे. ज्ञान अथवा बुद्धिना विकासनो क्रम जोवामां आपणे सविशेष लक्ष आपवा योग्य तो लौकिक प्रत्यक्ष करावनार इंद्रियो छे तेज छे.

इंद्रियनुं लक्षण बांधवानी पण जरूर छे. एकज प्रकारना चेतनपरिवर्तनो समूह ए तत् तत् इंद्रियना स्वरूपमां गणी शकाय. आवो जे समग्र समूह तेने अमुक शरीररचना साथे संबंध होयछे, ने ते इंद्रियस्थान कहेवाय छे. आम छे एटले आ शरीररचनाने उद्देशीने इंद्रियनुं लक्षण करवुं ठीक पडशे. कोई इंद्रियस्थानना संघर्षथकी उत्पन्न थता अमुक प्रकारना चेतनपरिवर्तनो समूह ते इंद्रिय, एम हवे कही शकाय. आपणा शास्त्रमां पण इंद्रियनुं लक्षण साधारण रीते 'शरीरसंयुक्तं ज्ञानसाधनमतीन्द्रियं' एवुं आपेलुं छे, ने ते यथार्थ छे. अत्र जे लक्षण आप्युं ते ते करतां वधारे सुश्लिष्ट रीते योजायलुं छे. शरीरसंयुक्त एटले जे इंद्रियस्थान कह्युं ते साथे संबंध राखनार, अतींद्रिय एटले शरीरस्थाननेज नहीं पण ते पार जेने चेतनपरिवर्तनो समूह एम कह्युं ते, अने ज्ञानसाधन एटले प्रत्यक्षज्ञान पेदा करनार; आवो विवेक करी जोतां आ लक्षण सर्वथा योग्य छे. आ प्रकारे जे लक्षण कर्युं तेमां एक बीजो भेद रहे छे. आ लेखमां जे लक्षण कह्युं तेमां " एक प्रकारना चेतनपरिवर्तना समूह " ने इंद्रिय नाम कह्युं अने आपणा शास्त्रमांना लक्षणना सामान्यतः " ज्ञानसाधन " ने एटले कोई पण चेतनपरिवर्त उपजावनारने इंद्रिय नाम कह्युं. आ रीते जे तारतम्य रह्युं तेमां भूल नथी. केमके आ लेखमां जे लक्षण छे ते लक्षण बांधनारे पण स्पष्ट लख्युं छे के आ लक्षणमां तो अमुक इंद्रिय अमुक प्रोत्साहनथीज व्यापार करी शके, चक्षु तेजथी, श्रोत्र शब्दथी, एम तात्पर्य आव्युं; पण अर्वाचीन शोधथी एम जणातुं जायछे के ए वात खरी नथी. गमे ते इंद्रिय गमे ते इंद्रियनुं काम करी शके छे एवुं समजातुं जायछे, अने प्राणीनिमयना प्रयोगोमां श्रवण ने दृष्टि, पेट, पग, हाथनी आंगळी अथवा कपालमां जतां रहेतां पण दीठामां आवे छे, परंतु आ वात हजी सिद्धशास्त्रनिश्चयोमां स्थान पामी नथी. एने अत्र कहेवानुं तात्पर्य एटलुं छे के जे आपणा शास्त्रनुं लक्षण छे ते आ दृष्टिथी जोतां सर्वथा योग्य अने यथार्थ छे.

४. पंचेन्द्रियः—जे लौकिक प्रत्यक्ष पामनार इंद्रियो छे ते प्रसिद्ध जे पांच छे तेज छे. चक्षु, श्रवण, स्पर्श, गंध, रस. आ प्रत्येकने पोतपोतानी खास विशेषप्रत्यक्षयोग्यता छे; अने पोतपोताने योग्य एवी शरीर अथवा तंतुनी रचना छे, ने ते रचना अमुक प्रकारनां प्रोत्साहकथीज जाग्रत् थवा योग्य होय छे. आ नियमनो अपवाद स्पर्शपरत्वे थायछे, जरा पण दबाण थतां स्पर्शनुं प्रत्यक्ष जे थायछे ते सामान्य प्रत्यक्षयोग्यताजन्यप्रत्यक्ष सरखुंज छे. केटलाक शोधकोए एटले सुधी पण निर्णय कर्योछे के स्पर्श एज प्राथमिक अने मूळ इंद्रिय छे ने तेमांथी बीजी बधी इंद्रियो रूपांतर पामी विकसेली छे. परंतु जेने आपणे सविशेषे स्पर्शेन्द्रिय कहीए छीए ते तो त्वचाना अमुक भागमात्रनेज जे अति तीव्र प्रत्यक्षयोग्यता होयछे तेज छे. ओष्ठ, आंगळीनां टेरवां, इत्यादि स्थानो आ प्रकारनां छे, ने त्यां तंतुनी कोई सविशेष रचना होवानो संभव छे. आम होवाथी स्पर्शेन्द्रिय एवी विशेष प्रत्यक्ष पेदा करनार इंद्रिय गणवामां कशो बाध नथी.

५. प्रत्यक्षस्वरूपः— लौकिकेंद्रियना मुख्यत्वनो आधार तेमनामां स्पष्ट स्वतस्त्व छे ते उपर तथा ते स्वतस्त्वने लीधे बाह्य पदार्थोना विविध धर्मने ते गृही शके छे ते शक्ति उपर रहेलो छे, ए आपणे हवणांज जोयुं. आपणा समग्र ज्ञाननी सीमा पंचेन्द्रियथी जे प्रकारनां जुदां जुदां प्रत्यक्ष आपणने थई शके छे तेटलीज छे. प्रथमे आपणे प्रत्यक्षना

सामान्य स्वरूप विषे विचार करीशुं, ने पछीथी इंद्रिय इंद्रिय परत्वे तेना-विशेष प्रकार विषे चर्चा चलावीशुं.

विविध प्रत्यक्षोमां एक एकने अन्य अन्यथी ओळखवामां प्रत्यक्षनी विपुलता ए एक कारण छे. उग्र अने अस्पष्ट प्रकाश वच्चेनो भेद, तीव्र अने कोमळ स्वरनो भेद, इंद्रियजन्य संस्कारमांज भेद छे एम सूचवे छे. सर्व प्रकारनां प्रत्यक्षमां विपुलतानुं तारतम्य घणुं रहे छे; अने बीजां सामान्य प्रत्यक्ष करतां लौकिक प्रत्यक्षोमां ए तारतम्य बहु स्पष्ट दीठामां आवे छे. आवुं जे तारतम्य ते बुद्धिने बहु उपयोगनुं थई पडे छे, केमके तेनी साहाय्यथी ते प्रत्यक्षनां कारण जे पदार्थ ते केवां छे, तेमनामांथी केटलुं सामर्थ्य प्रयोजायुं छे, ते केटलां दूर छे, इत्यादि विचार बनी शके छे. तेजनो भव्य प्रकाश दृष्टिगोचर थतां तज्जनक पदार्थनी तेजोमयता विषे के तेना समीपत्व विषे विचार आवे छे.

आटलो विचार कर्या पछी प्रत्यक्षनी विपुलताने अने प्रोत्साहकगतशक्तिने शो संबंध छे ते जोवुं जोईए. प्रोत्साहननी शक्तिना प्रमाणमां प्रत्यक्षनी विपुलतामां न्यूनाधिकता थायछे. भव्य तेजनुं प्रत्यक्ष, ते तेजवाळा पदार्थनी (प्रोत्साहकनी) महातेजःशक्तिनुं अनुमान करावे छे; झांखुं तेजःप्रत्यक्ष क्षीण शक्तिनुं अनुमान प्रेरे छे.

पदार्थविज्ञानवेत्ताओ जुदां जुदां प्रोत्साहनना सामर्थ्यनुं तोलन सारी रीते करी शके छे, एटले कोई एक इंद्रियने* उत्तरोउत्तर वधतां ओछां प्रोत्साहन लगाडीने प्रत्यक्षनी विपुलतामां केवी न्यूनाधिकता आवे छे ते बराबर तपासी शकायुं छे. एम करवामांथी जे निश्चयो जणाया छे तेमांना मुख्य मुख्य आ प्रकारना छे:—

प्रत्येक प्रोत्साहन अमुक अंशनी विपुलतावाळुं होय तोज समजी शकाय तेवुं प्रत्यक्ष उपजावी शके छे. आने आरंभकवैपुल्य एवुं नाम आपवामां आवे छे.

* इंद्रिय ए शब्द अत्र बाह्यशरीररचनाना जे तत्तत्इंद्रियसंबद्ध होय छे तेने माटे वापरेलो छे, ए शब्दना उभये अर्थमां प्रयोग थई शके छे, अने बुद्धिमान वाचक क्यां केवो प्रयोग छे ते सहजे समजी शके तेम छे एटले तेम करवामां बाध नथी.

आरंभकवैपुल्य क्यांथी थाय छे ए उपरथी कोई पण इंद्रिय अथवा तेना विभागनी प्रत्यक्षयोग्यतानुं अनुमान बनी आवे छे. त्वचाना कोई बे प्रदेश **अ** अने **ब** सरखा आरंभकवैपुल्यवाळा प्रोत्साहननो सन्निकर्ष छतां स्पर्शप्रत्यक्षनी बाबतमां तफावत दर्शावे. अने स्पर्श लागे ने बने न लागे, तो **अ** अने **बनी** प्रत्यक्षयोग्यतामां फेर छे, एम तुरत कही शकाय.

आरंभकवैपुल्यनी पार जई प्रोत्साहनना सामर्थ्यमां वृद्धि करवाथी सर्वदा प्रत्यक्षनी विपुलतामां वृद्धिज थायछे एम नथी. वृद्धि बहु न्यून होय तो प्रत्यक्षपरत्वे ते अकिंचित्कर रहे छे. एम जणायुं छे के प्रत्यक्षनी विपुलतामां स्पष्ट वृद्धि के हानि थवी जोईए. क्षीण शक्तिवाळा प्रोत्साहनमां सहज वृद्धि थवाथी जे प्रत्यक्षविपुलतानी वृद्धि वर्तीय ते विपुल शक्तिवाळा प्रोत्साहनमां तेटलीज वृद्धिथी वर्तावानी नहीं. एम धारो के **प** अने '**प** ए जुदी जुदी विपुलतावाळां बे प्रोत्साहन छे हवे एमां **च** वृद्धि करो. तो **प** + **च** थी प्रत्यक्षमां जे वृद्धि थशे, ते '**प** + **च** थी थवानी नथी, एटले के **प** अने **प** + **च** ए बे प्रत्यक्षनु तारतम्य सहज समजाशे, पण '**प** अने '**प** + **च** एमनुं तारतम्य नहीं समजाय. आ रीतिनो जे नियम छे ते गणितना नियममां आणीने समजावेलो छे, अने एम बताव्युं छे के प्रत्यक्षनी विपुलतामां वधारो करवा माटे प्रोत्साहननी विपुलतामां धारेला वधारा करतां अधिकगुण वधारो करवो जोईए. जो प्रत्यक्षनी विपुलतानी वृद्धि गणितश्रेणिना नियमे करवी होय तो प्रोत्साहननी विपुलतानी वृद्धि भूमितिश्रेणिना नियमे करवी जोईए. आने वेबरनो अथवा फेकनरनो नियम कहे छे, पण ए सर्वथा सिद्ध छे एवुं केटलाक नथी पण मानता.

प्रत्यक्षनी विपुलतामां वृद्धि करवा माटे प्रोत्साहननी विपुलतामां जे वृद्धि करवी पडे छे ते वृद्धिना अंक उपरथी सूक्ष्मप्रत्यक्षयोग्यतानुं अनुमान थायछे. ए अंक जेम नानो तेम सूक्ष्मप्रत्यक्षयोग्यता विशेष.

वळी एवुं पण जाणवामां आव्युं छे के प्रोत्साहनने अमुक अंश सुधी वधारी गया पछी गमे तेटलुं वधारवाथी प्रत्यक्षविपुलतामां कशो फेर पडतो नथी. घणो विप्लावक ध्वनि गमे तेटलो प्रगुणित थाय तेथी तेना प्रत्यक्षमां कांई भेद समजातो नथी. सूर्यबिंबना मध्य प्रदेश अने उपान्त प्रदेश वच्चे तेजोवैपुल्यनो जे उग्र भेद छे ते आपणा जोवामां नथी आवतो. आने वेंट नामना लेखके अंत्यवैपुल्य ए नाम आपेलुं छे.

आरंभकवैपुल्य अने अंत्यवैपुल्य उभयेनी तुलना करतां अमुक इंद्रियादिनी प्रत्यक्षयोग्यतानी मर्यादा केटली छे ते सहजे जणायछे. आरंभकवैपुल्य जेम न्यून अने अंत्यवैपुल्य जेम अधिक तेम प्रत्यक्षयोग्यता बहु उत्तम. अर्थात् प्रत्यक्षयोग्यतानी

मर्यादानुं माप एवा एक अपूर्णांकना आंकडाथी नीकळी शके के जेनो अंश अंत्यवैपुल्य थाय अने छेद आरंभकवैपुल्य थाय.

प्रासंगिक विचार आ रीते समाप्त करी प्रत्यक्षस्वरूपनो जे विचार प्रकृत छे तेने अनुसरीए. विपुलताने प्रथम स्वरूपनिर्णयना अंगमां आपणे बतावी चूक्या. विपुलताना तारतम्य उपरांत प्रत्यक्षमां धर्मगत तारतम्य पण होय छे. कोई एक इंद्रियजन्य प्रत्यक्षोमां परस्परने जुदां पाडे तेवुं धर्मवैचित्र्य दीठामां आवे छे. एवुं सामान्य धर्मवैचित्र्य होय ते उपरांत अति सूक्ष्म सूक्ष्म विशेषवैचित्र्य पण होय छे. उदाहरण—दृष्टिथकी रंग जोई शकाय छे ते जोवामां पण सूक्ष्म सूक्ष्म तारतम्य होयछे; अने रंगना जेटला झीणा झीणा भेद छे तेटला तेना पण छे. आवुं जे तारतम्य ते केटलांक प्रत्यक्षमां वधारे होयछे, केटलांकमां थोडुं होयछे. आ तारतम्य पण, विपुलताना भेदनी पेठे, प्रत्यक्षजनक बाह्य पदार्थोना स्वरूपनो विचार करवामां सहाय थायछे. सोना अने लोढा वच्चे जे भेद छे ते, थोडे अंशे पण, रंगमात्रथीज छे. मनुष्यस्वर, अने जुदां जुदां वादित्रना स्वर, ते सर्वने परस्परथी ओळखवामां पण तेमनी कोमळता तीव्रता आदिनां प्रत्यक्षज सहाय थायछे.

एम घणी वखत बने छे के प्रत्यक्षमां मात्र विपुलतानुं तारतम्य होय ते उपरथी आपणे ते प्रत्यक्षजनक बाह्य पदार्थमां धर्मनुं तारतम्य अनुमानी लईए छीए. एकना एक रंगना बे भागने आपणे घणी वार बे जुदा रंग मानीए छीए; छतां आ स्थळे जे बे प्रत्यक्ष थायछे तेमनी वच्चे धर्मथकी तारतम्य नथी, मात्र विपुलतानुं तारतम्य छे; केमके एक भाग ओछो भभकवाळो देखातो होय तो बीजो वधारे भभकवाळो देखातो होय तेथी बे प्रत्यक्षनी विपुलतामांज फेर पडे, तेना धर्ममां नहीं. भारे अने हलका पदार्थो वच्चेनो भेद पण प्रत्यक्षगत विपुलतानोज भेद छे, धर्मनो नथी.

प्रत्यक्षगत धर्मभेदनुं अंत्य स्वरूप शुं हशे अने केवुं तथा केटलुं मानवुं ए विषय विचारवा योग्य छे. आपणां प्रत्यक्षमां धर्मकृत केटला अंत्य भेद मानवा एनो निर्णय हजी थयो नथी. वर्तमान समयमां चालता अवलोकनथी एम सिद्ध थयुं छे के आपणने धर्मथकी भिन्न जणातां एवां बे प्रत्यक्षने पण कोई साधारण धर्म होय; एटले जे प्रत्यक्ष उपर विचार करतां तेनुं आगळ पृथक्करण थई शकतुं होय तेने मिश्र प्रत्यक्ष अने बीजाने शुद्ध प्रत्यक्ष कहेवां. रंगनां जे शुद्ध जेवां जणातां प्रत्यक्ष छे ते मिश्र प्रत्यक्ष छे, एम हवणां सिद्ध थयुं छे, ए आदि उदाहरणथी आ वातनुं समर्थन थायछे. परंतु मि० ह्वर्ट स्पेन्सर वगेरे तो प्रत्यक्षना पृथक्करणने छेक आगळ खेंची जायछे, अने प्रत्यक्षनो धर्मकृत जे भेद तेने चेतनतत्त्वना मूळ भेदथकी समजाववा यत्न करे छे. तेमना विचार प्रमाणे चेतनतत्त्व तो "प्रत्यक्ष पामवा योग्य शक्तिवाळां परमाणु" अथवा "तंतुव्यापार" एज छे; ने प्रत्यक्षमात्रनां मूलतत्त्व ए परमाणु के ए व्यापारना अमुक गुंफन विना अन्य नथी. आ प्रकारे विचार करतां एम समजाय छे के केवळ अंतरवलोकनथी प्रत्यक्षनुं मूलस्वरूप समजाय तेम नथी, बाह्यावलोकननी पण तेमां अपेक्षा रहे छे. परंतु आ लेखमां तो आपणे प्रत्यक्षनुं वधारे पृथक्करण करवानो यत्न न करतां, स्पष्ट स्पष्ट धर्मथकी परस्पर भिन्न प्रत्यक्ष, जेवांके राता, भूरा, इत्यादि रंगनां, तेमने शुद्ध प्रत्यक्षरूपेज गणीशुं.

प्रत्यक्षने परस्परथी ओळखवामा विपुलता अने धर्म बे स्वरूप बताव्यां; हवे तेमां त्रीजुं उमेरीए, परंतु ते त्रीजुं स्वरूप आ बेना जेटलुं, प्रत्यक्षमात्रमां होवुंज जोईए एम नियम नथी. जेम बधी चेतनस्थितिने तेम प्रत्यक्षने पण अमुक समय सुधी रहेवुं न रहेवुं एवुं होयज छे. आवुं समयनुं तारतम्य एक क्षणथी, ते घणामां घणा जे समय सुधी अवधान राखी शकाय त्यां सुधीना दीर्घ समय सुधीनुं, प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष वच्चे दीठामां आवे छे. छतां बधां प्रत्यक्षमां आ स्वरूप स्पष्ट रीते दीठामां आवतुं नथी. केटलांक रस अने गंध जेवां प्रत्यक्ष तेमनो आरंभ अने अंत क्यारे थयो ते परत्वे यथार्थ गृही शकातां नथी; बीजां शब्दादि प्रत्यक्षनी पेठे आवां प्रत्यक्षनो समय अटकळी शकातो नथी. आवुं प्रत्यक्ष प्रत्यक्षमां जे आ एक स्वरूपपरत्वे तारतम्य छे तेनो हेतु आगळ समजाशे.

प्रत्यक्षना समयने, सामान्यतः तंतुना संघर्षना समय साथे संबंध होयछे. जे प्रत्यक्ष क्षणिक छे तेने उपजावनारो तंतुसंघर्ष पण क्षणिकज होवो जोईए. परंतु आवुं अनुविधायकत्व सर्वांशे पूर्ण नथी. संघर्ष अथवा प्रोत्साहनना अभावे, एटले ते थईने बंध पडी जाय ते पछी पण, प्रत्यक्ष थोडी वार रहे छे. ए प्रत्यक्षने अनुगत प्रत्यक्ष कहे छे. रस अने गंधनां प्रत्यक्षमां आ गुण स्पष्ट रीते दीठामां आवे छे; अने ए प्रत्यक्षोना आरंभ अने अंत स्पष्ट समजाता नथी तेनुं कारण पण आज होय एम मानवामां छे.

प्रत्यक्षना समय उपरांत प्रत्यक्षने पोतपोताना स्थानपरत्वे पण अमुक स्वरूप होय छे. स्थान एटले जे स्थान अर्थात् इंद्रियद्वारा ते प्रत्यक्ष थयुं होय ते; बे प्रत्यक्ष धर्म तथा विपुलता परत्वे समान छतां स्थानभेदने लीधे परस्परथी जुदां पडे छे. त्वचा उपर कोई बे बिंदुए सुडीना बे छेडाथी थाय तेवो सरखो स्पर्श करवामां आवे तो परस्परने समान पण स्पष्ट रीते परस्परथी भिन्न एवां बे प्रत्यक्ष थायछे. स्थानने लीधे प्रत्यक्षना स्वरूपमां जे कांई भेद पडे छे तेने स्थानस्वरूप कहेवाय.

स्थानस्वरूपनो पूर्ण अर्थ स्पष्ट करवानी आवश्यकता छे. प्रत्यक्ष थतांज ते प्रत्यक्ष कीये स्थाने सन्निकर्ष थवाथी पेदा थयुंछे ए ज्ञान जेम जेम वधती जती उंमर साथे अनुभव वधे छे तेम तेम साहजिक थई जायछे. त्वचानी साथे बे बिंदुथी स्पर्श थतां जे प्रत्यक्ष थायछे तेने अमुक स्थानथी ते थयुं एम आपणे तुरत समजीए छीए. ए स्थाननिर्णयथकी आ स्थानस्वरूप केवळ भिन्न छे; केमके एवो जे स्थाननिर्णय ते तो दर्शनव्यापार छे, अने प्रत्येक व्यक्तिने ते तो थोडे घणे अंशे पण शीखवो पडे छे. ए दर्शनव्यापार शी रीते शीखायछे ते समजाववा माटे आपणे एम मानवानी जरूर पडे छे के जुदां जुदां तंतुस्थानना प्रोत्साहनथी उत्पन्न थतां जुदां जुदां प्रत्यक्षमां स्थानकृत भेद छे. आ भेद विपुलतानो नथी, पण धर्मनोज छे. वस्तु तेनी ते छतां जराक जुदा जुदा रंगवाळी करवाथी जेवुं तारतम्य पडे छे तेवो कोई अगम्य प्रकारनो आ भेद छे. आ भेद-

नेज स्थानस्वरूप एम कहेवाथी समजाववानो उद्देश छे, जे स्थाननिर्णय दर्शनकार्य छे ते ए नथी.

जुदा जुदा तंतुस्थानना प्रोत्साहनने लीधे थता आ प्रत्यक्षभेदने अनेक प्रकारे जोई शकाय. आगळ जे बे बिंदुए त्वचाने स्पर्शवानुं उदाहरण आप्युं तेमांज बे जुदां जुदां स्थान साथे स्पर्श थवाथी बे जुदां जुदां प्रत्यक्ष थायछे एम स्पष्ट जणायछे. आवां बे बिंदु जो परस्परथी जरा छेटे छेटे होय तो ते परस्परथी भिन्न छे एवोज अनुभव थायछे; परंतु जो ते बे बहु निकट होय तो एवो अनुभव थतो नथी. बे जुदां बिंदुए स्पर्श करवाने बदले परस्परथी अभिन्न एवा अनेक बिंदुवाळा पदार्थथी त्वचाने स्पर्श कर्यो होय तो तेनुं प्रत्यक्ष अभंग पदार्थरूपेज थायछे. एक रूपीओ हाथेळी उपर दबाववामां आवे अने पछी तेनी पासेज एक पावली दबाववामां आवे, तो जे बीजुं प्रत्यक्ष थशे ते प्रथम करतां जुदुंज लागशे; ने ते बे वच्चेनो तफावत, पेले बीजे स्थाने बीजी त्रण पावलीओ पहेली उपर मूकीने दबाण वधारवाथी जे प्रत्यक्ष थाय तेनी बराबर नहीं थाय.

स्थानस्वरूपने लीधे प्रत्यक्षमां थतो तफावत बधां प्रत्यक्षमां सरखो होतो नथी. ए तफावत माटे अमुक शरीररचनानी अपेक्षा छे, ने ते तो श्रवण अने दृष्टि बेमांज छे. आ उपरथीज वारंवार, दिक्‌ना प्रत्यक्षनो केटलोक खुलासो आ बे इंद्रियद्वारे थायछे, एम कहेवायछे.

प्रत्यक्षथी बाह्य पदार्थनुं ज्ञान थाय ते माटे आवश्यक छे के प्रत्यक्षनी एकता रहेवी जोईए. एटले के तेना ते प्रोत्सोहनथी निपजे तेनुं तेज प्रत्यक्ष पेदा थवुं जोईए. आवो नियम होवोज जोईए अने ते छे तेथीज आपणने बाह्य विश्वनुं ज्ञान यथार्थ रीते थायछे. परंतु आ नियम सर्वदा अस्खलित रीते चालतो होय एम कही शकातुं नथी. इंद्रियोमां पूर्व प्रत्यक्षना संस्कार रही जवाथी आगंतुक प्रोत्साहनथी उद्‌भवतां प्रत्यक्षनां स्वरूपमां फेरफार पडी शके छे. रसेंद्रियमां पूर्वे अनुभवेला कोई रसनो संस्कार होय

अने अन्यरसनो सन्निकर्ष थाय तो आ अन्य रसनुं शुद्ध प्रत्यक्ष जेवुं पूर्वे थयेलुं तेवुं ने तेवुं आ क्षणे नहीं थाय. वळी कोई इंद्रिय पूर्वप्रत्यक्षनो अनुभव करतां श्रमित थई होय अने तेथी आगंतुक प्रत्यक्ष माटे जोईए तेवी योग्य न होय तो पण आवुं बनी आवे छे. तीव्र क्षारनो स्वाद चाख्यानी साथे तुरत साधारण क्षार चाखवामां आवे तो क्षारनो कशो अनुभव थतो नथी. उष्णतानां प्रत्यक्षमां आवुं वारंवार बनेछे. कोई उपाधिने लीधे पण इंद्रिय मंद थई जाय ने ते मंदता कांईक समय सुधी के हमेशांज रहे तो पण आवुं बनी आवे छे. सळेखम थवाथी घ्राण अने रसन उभयने आवी मंदता आवे छे. यद्यपि प्रत्यक्षनी एकता होवी जोईए ए नियम छे तथापि रस, गंध अने उष्णतानां प्रत्यक्षमां ते नियम सचवातो होय एम लागतुं नथी.

आ प्रकारे प्रत्यक्षस्वरूपनो निर्णय कर्या पछी हवे आपणे एक एक प्रकारनां प्रत्यक्ष उपजावनार जुदी जुदी इंद्रिय विषे विचार करीए. जेटली इंद्रियो छे तेमांनी प्रत्येकने बधांए प्रत्यक्षस्वरूप लागे छे एम नथी. रसन अने घ्राण इंद्रियने आपणे सामान्य अथवा संस्कारहीन इंद्रिय गणीए छीए, श्रवण अने चक्षुने विशिष्ट अथवा संस्कारवाळी इंद्रिय गणीए छीए. आ प्रकारना संस्कारना तारतम्य उपर दृष्टि राखी इंद्रियोनो क्रम आ प्रकारे रची शकाय छेः—रसन, घ्राण, त्वक्, श्रवण, चक्षु. अत्र आ प्रत्येकना स्वरूपनुं साधारण वर्णन करी बतावीए.

६. रसन अने घ्राणः—आ बे इंद्रिय स्पष्ट रीते न्यून संस्कारवाळी छे. आ बे इंद्रियथी जे प्रत्यक्ष थाय छे ते तेमनी स्पष्टतापरत्वे तो जेने सामान्यतः जीवनव्यापारनां प्रत्यक्ष आपणे कही आव्या छीए तेना जेवां छे; तेमना जेवांज ते अस्पष्ट होय छे, अने वृत्तिनुं तेमनामां प्राधान्य होय छे. आवी सविशेषता आ बे इंद्रियमां रहे छे तेनुं कारण एम पण कही शकाय के आ बे इंद्रियने एकंदरे आखा शरीरने अनुकूळ प्रतिकूळ शुं छे तेनो निर्णय करवानुंज काम छे. ए बे इंद्रिय अन्नमार्ग अने श्वासमार्गने मोखरे स्थापेली छे. ए उपरथीज जणाय छे के ते ते मार्गमां अनुकूळ प्रतिकूळनो निर्णय तेमने हाथेज थवो जोईए. आ बे इंद्रियनां प्रत्यक्ष

रस अने गंध ते पण परस्पर साथे एटलां बधां मिश्र थई जाय छे के एकथी बीजाने जुदुं पाडवुं घणी वार अशक्य थई पडे छे, ने उभयनां विपुलता तथा धर्म स्पष्ट बतावी शकातां नथी. जेम परस्परथी स्थानपरत्वे भिन्न एवां एक काळे थतां स्पर्शीप्रत्यक्षने आपणे अन्योन्यथी भिन्नरूपे ओळखी शकीए छीए, तेम रस अने गंधनां प्रत्यक्षपरत्वे बनी शकतुं नथी. वळी रसगंधादिना जे संस्कार ते ते इंद्रियमां रही जाय छे तेने लीधे अमुक संस्कारनी पछी तुरत थई आवतां रसगंधादि प्रत्यक्ष स्पष्ट स्वरूपे ओळखातां पण नथी. आटलुंज नथी पण उभये इंद्रियनी प्रत्यक्षयोग्यतामां वारंवार घणो तफावत थई जाय छे, अने ते उपरथी ज्ञान आपनार इंद्रियरूपे तेमने झाझी उपयोगनी गणवामां आवती नथी. केटलीक सविशेष स्थितिमां रसायनशास्त्रीओने, जुदा जुदा दारुनी परीक्षा करनाराओने, आ इंद्रियो तेमना तेमना विषयमां ते ते पदार्थनुं ज्ञान आपवामां उपयोगी थई शके छे.

७. त्वक्ः—त्वगिन्द्रियथी स्पर्शप्रत्यक्ष थाय छे, एटले के तेनी साथे बाह्य पदार्थोनो सान्निकर्ष थतां स्पर्शनुं प्रत्यक्ष थायछे. शीतोष्ण, अथवा सामान्य दबाणनां प्रत्यक्ष आ इंद्रियद्वारे बने छे. यद्यपि सामान्यतः दबाण थवुं ए घणी साधारणमां साधारण अने सविशेषता विनानी प्रत्यक्षयोग्यातानुं कार्य छे, तथापि, त्वगिन्द्रियथी रसन अने घ्राण करतां अधिक ज्ञान मळी शके छे ए तो निर्विवाद छे. हाथ अने विशेषे अंगुलीअग्रद्वारे आ इंद्रिय पदार्थोना धर्मने समजवामां बहु साहाय्यकारक थाय छे; केम के रस अने गंध करतां स्पर्शनां प्रत्यक्ष वधारे स्पष्ट अने सुरेख होय छे. एवां प्रत्यक्ष पोतानी पाछळ कशो संस्कार मूकी जतां नथी एटले त्वरित त्वरित क्रमथी एक पछी एक एवां गमे तेटलां स्पर्शप्रत्यक्ष थाय तो पण आपणे तेनुं स्पष्टताथकी भिन्न भिन्न रूपे ग्रहण

करी शकीए छीए. वळी एकज काळे अनेक स्थाने थता सन्निकर्षनुं ग्रहण पण स्थानपरत्वे जुदे जुदुं आ इंद्रिय पामी शके छे.

दबाणना वधता ओछा अंशनुं पण बराबर प्रत्यक्ष थई शके छे, ए वात प्रयोगथी सिद्ध करी जोवामां आवेली छे. हाथ उपर अमुक वजन मूकवामां आवे छे, ने पछी प्रयोग ए करवामां आवे छे के एमां केटलुं न्यून अथवा अधिक करवाथी ते न्यूनाधिकतानुं प्रत्यक्ष थई शके छे.*

त्वगिन्द्रियना एकना एकज भाग उपर प्रयोग करवामां त्यारे घणो थोडो तफावत पण समज्यामां आवे छे, जुदा जुदा भाग उपर एकी वखते करवामां आवे त्यारे एटलो थोडो तफावत समज्यामां आवतो नथी. एकना एकज हाथ उपर वजनमां न्यूनाधिकता करवाथी समजी शकाय एवी न्यूनाधिकतानुं प्रमाण बे हाथ उपर प्रयोग करवामां जे समजी शकाय तेवी न्यूनाधिकता लेवी पडे छे ते करतां $\frac{1}{10}$ होय छे. एम पण सिद्ध थयुं छे के एकना एकज अवयवनी प्रत्यक्षयोग्यतामां पण तेना ते अवयवना प्रदेशभेदने लईने तारतम्य जोवामां आवे छे. उदाहरण—आंगळीना हथेळी भणीना भाग उपर जे तफावत समजी शकाय छे ते आंगळीना पाछळना भाग उपर समजी शकाय छे तेनो अर्थ छे एम एक प्रयोगमां नक्की थयुं हतुं.

बे जुदा जुदा हाथ उपरना प्रयोगमां जे थोडामां थोडो तफावत प्रत्यक्ष थई शके छे ते $\frac{1}{2}$ छे; तेना ते हाथ उपरना प्रयोगमां $\frac{1}{20}$ थी $\frac{1}{10}$ सुधी छे; एम समजवामां आव्युं छे. आंगळीना हथेळी भणीना भाग उपर प्रत्यक्ष थई शके तेवो तफावत $\frac{1}{2}$ छे, पाछला भाग उपर $\frac{1}{3}$ छे एम पण जणायुं छे.

त्यारे विपुलताना तारतम्यनुं, सूक्ष्ममां सूक्ष्म तारतम्यनुं, पण प्रत्यक्ष

* आ प्रकारे हस्त उपरज प्रयोग करवो होय तो हाथने टेबल उपर के एवी रीते आधार आपवो जोईए, केम के निराधार हस्तथी वजन झीलाय तेमां तो स्नायुबलनुं ने स्नायुनी प्रत्यक्षयोग्यतानुं माप थाय, हाथमांनी त्वगिन्द्रियनी प्रत्यक्षयोग्यतानुं नहीं.

त्वगिन्द्रियथी थई शके छे ए तो जणायुं. पण ए उपरांत धर्मने लीधे थता तारतम्यनुं प्रत्यक्ष पण बने छे ए हवे कहेवानुं छे. ऋक्षता अने मृदुता पण त्वगिंद्रियथी ओळखी शकाय छे; तेमज उष्ण शीत आदि भेद पण जाणी शकाय छे.

छेवटे, आपणां स्पर्शप्रत्यक्षनुं जेने लीधे आवुं अगत्यनुं स्वरूप बने छे ते स्थानभेद पण कहेवा जेवो छे. बेबरे एक कंपासना बे छेडानो त्वक् साथे जुदां जुदां बे बिंदुए सरखो सन्निकर्ष करीने ए वात सिद्ध करी जोई छे के एक काळे थता बे सन्निकर्षनुं स्थानभेदसमेत प्रत्यक्ष आ इंद्रियद्वारे थाय छे. कोई पण शरीरविभागनी आवा प्रकारना स्थानभेदवाळा प्रत्यक्ष माटेनी योग्यता केटली छे तेनो निर्णय सन्निकर्षना बिंदु वच्चे थोडामां थोडुं केटलुं छेटुं राखवाथी स्थानभेदवाळुं प्रत्यक्ष बने छे ए उपरथी थाय छे. शरीरना जे अवयवो चलनवलन पामवावाळा छे तेमां हाथ, पग, ओठ वगेरेमां आ शक्ति अथवा योग्यता जे स्थिर अवयवो छे ते करतां घणी सारी अने सूक्ष्म प्रकारनी रहे छे. जीभने टरवे तो ए योग्यता घणी सूक्ष्ममां सूक्ष्म प्रकारनी जणाय छे. हथेळीनी आ योग्यता हाथना पाछला भाग करतां वधारे छे अने आंगळीना टेरवाथी जेम जेम पोंचा तरफ ने त्यांथी कहोणी तरफ आपणे जता जईए छीए, तेम तेम आ योग्यता बहु ओछी थती जणाय छे.

८. **श्रवण**:—बुद्धि साथे संबंध राखनार अथवा ज्ञान आपनार इंद्रियरूपे आ इंद्रिय प्रथम पंक्ति भोगवे छे. एनाथी जे प्रत्यक्ष थाय छे तेमां जे सुरेखता आवे छे तेने लीधे आ इंद्रियनी आवी उत्तमता गणाय छे. विपुलता अने धर्म उभये परत्वे अति सूक्ष्म सूक्ष्म तारतम्य पण आ इंद्रियथी गृहाय छे.

केटली विपुलता क्यां सुधी ने केवा तारतम्यथी गृही शकाय छे ते जोवा माटे घणा

घणा प्रयोग करी जोवामां आव्या छे. थोडामां थोडो विपुलतानो तफावत आ इंद्रियथी प्रत्यक्ष थई शके छे ए विषयमां एम जणायुं छे के बाह्य प्रोत्साहनना जे न्यूनमां न्यून वैपुल्यथी आ इंद्रियने प्रत्यक्ष उद्भवे छे तेनुं प्रमाण ३:४ जेटलुं छे.

श्रवणथी जे प्रत्यक्ष थाय छे तेने बुद्धि साथे संबंध छे ए वात ए प्रत्यक्षमां धर्मतारतम्य समजाय छे तेटलाथीज स्पष्ट रीते जणायछे. प्रथमे आपणने संगीतना शब्दो अने अमथा ध्वनि अथवा घोंवाट वच्चेनुं तारतम्य समजवामां आवे छे, संगीतशब्दनो आधार हवामां नियमित तरंगपरंपरा थाय तेनुं फळ छे, ध्वनि अथवा घोंवाट अनियमितनुं. संगीतशब्दोना संबंधमां तो चढता ऊतरता प्रकारवाळां शब्दप्रत्यक्षनी परंपरा बनी आवे छे. एक सप्तकना साथी बीजा सप्तकना सामुद्रीना अवरोहमां उत्तरोत्तर अधिक अधिक शब्दनुं प्रत्यक्ष थतुं चाले छे, अने आखी परंपराना शब्दो एकेकथी मात्र उच्चतारूप धर्मने लीधेज भिन्न छे एम समजाय छे. आवा जे उत्तरोत्तर उच्चतामात्रथीज भिन्न शब्दोनी परंपरा थाय छे तेनुं कारण हवामां जे तरंगपरंपराथी शब्द उद्भवे छे तेनी तरलतानी ह्रासवृद्धि विना बीजुं नथी. जेम सुर बहु उंचो तेम तरंगपरंपरानी तरलता घणामां घणी थाय छे.

परमार्थतत्त्वज्ञो एम धारे छे के स्वरनी उच्चतानुं जे आ प्रत्यक्ष थाय छे तेमां तंतुचक्रनो पण कांईक संबंध छे. एम धारवामां आवे छे के श्रवणनी अंदर हार्मोनीअमनी तरती जेवुं कांई गोठवेलुं छे, अने तेनी साथे हवानी तरंगपरंपरानो आघात थतां प्रत्याघात ऊठे छे ने प्रत्यक्ष नीपजे छे. परंतु हेमहोल्ट्झे आ विचार दर्शाव्यो ते पछीना शोधथकी आ वात शंकास्पद थई गई छे.

उच्चता गृहवामां जे प्रकार जोयो ते स्वरनी विपुलता गृहवाना प्रकारने मळतो आवे छे. छेक नीचामां नीचा सूरथी आपणे आरंभ करीए तो मालुम पडशे के अमुक मर्यादानी पार जतां हवाना तरंगनी परंपरानो वेग जे मंदतावाळो थाय छे ते श्रवणग्राह्य रहेती नथी. ए ठेकाणे तो ए तरंगपरंपरा भिन्न भिन्न ध्वनिरूपे समजाय छे, पण प्रवाहरूप सूर के शब्दने

आकारे नथी समजाती. एमज उच्चता तरफ पण अमुक सीमा पार जवाथी श्रवणने सूरनुं भान नथी रहेतुं पण कोई प्रकारनो मो'टो ध्वनि संभळायां करे छे. आ बे सीमानी वचमां उंचा नीचा शब्दोनुं जे प्रत्यक्ष थाय छे ते तेटलाज प्रोत्साहननी अपेक्षा करे छे.

बीजी बधी इंद्रियो करतां उच्चता समजवामां श्रवण प्रथम पंक्ति भोगवे छे. संगीतना सप्तकमां जे बे सूर वच्चेनो सूक्ष्ममां सूक्ष्म तफावत समजवामां आवे छे तेज थोडामां थोडा जे शब्दनुं प्रत्यक्ष थई शके तेनी मर्यादा नथी. श्रुति एटले कोई बे सूर वच्चेना अर्धसूर के जे परस्परथकी एक सेंकडे ओछी वत्ती अमुक तरंगपरंपराथी उपजता होवाने लीधे जुदा पडता होय छे, तेमने तो हर कोई समजी शके एम छे; अने सारी उस्तादीवाळो श्रवण तो तरंगपरंपरामांना कोई अपूर्णांकनुं पण प्रत्यक्ष पामी शके छे.

आवां उच्चतानां तारतम्य उपरांत स्वरना स्वरूपनुं पण तारतम्य होय छ, जेनुं पण प्रत्यक्ष श्रवणद्वारे बने छे. जेमांथी स्वर उपजे तेना स्वरूपने आधारे हार्मोनीअममांथी, सारंगीमांथी, माणसना गळामांथी जे स्वर नीकळे छे तेमने परस्पर स्वरूपथकीज भेद होय छे. आ भेद स्वरनां मूलतत्त्वोमांना फेरफारने लीधे थाय छे एम कहेवामां आवे छे. वाद्यित्रमांना जे स्वर छे ते क्वचित्‌ज सादां प्रत्यक्षरूप होय छे; तेमां अनेक तत्त्वनुं मिश्रण आवे छे. एक मूळ सूर तेमां राखवामां आवे छे अने तेने आधारे ते उपर बीजा सूर उपजावेला होय छे. आ बीजा सूरनां संख्या अने बळ उपर एक एक स्वरनी उच्चतानो आधार रहे छे.

राग संबंधी स्वर अथवा शब्दोनां प्रत्यक्ष आ प्रकारे श्रवणद्वारे थाय छे एटलुंज नहीं, पण व्यावहारिक शब्दो अथवा ध्वनि, जेवा के समुद्रनी गर्जना, पांदडानो खडखडाट, चाबुकनो चमकाट इत्यादि, तेमने पण श्रवणेंद्रिय सारी रीते समजे छे अने ओळखे छे. ध्वनिना, गडगडाट,

समसमाट, करकराट, अनुकूळ, प्रतिकूळ, इत्यादि प्रकारे जुदा जुदा स्वभाव आपणे ओळखीए छीए. आवा जे भेद आपणे पाडीए छीए ते, जुदा जुदा ध्वनि जे तरंगोथी बने छे ते तरंगपरंपरानां बळ अने तरलता उपर आधार राखे छे. छतां केटलाक ध्वनिमां शब्द अथवा सूरनुं पण मिश्रण होय छे, अने तेवा ध्वनिनुं जे स्वरूप मानवामां आवे छे तेमां आ मिश्रण पण एक कारण होय छे. आ वात सविशेष मानुषशब्द अथवा नियमित ध्वनि तेने लागु पडे छे, अने राग साथे संबंध न धरावनारा ध्वनिमां एज मुख्य छे.

श्रवणेंद्रिय जे उत्तमोत्तम संस्कारवाळी छे ते बतावबा माटे अत्र जे कहेवामां आव्युं ते पूर्ण छे. शब्दगत धर्मनुं अति सूक्ष्म अने संस्कारपूर्वक प्रत्यक्ष, तथा शब्दना समय आदिनुं यथार्थ प्रत्यक्ष, श्रवण पामी शके छे. तेथी ते इंद्रिय अनेक प्रकारनुं यथार्थ ज्ञान प्राप्त करी शके छे, अने विविध प्रकारना उत्तम आनंद भोगवी शके छे. आ आनंदनो मुख्य भाग तो संगीतविलासमांज समाय छे, अने ए इंद्रियद्वारे प्राप्त थता यथार्थज्ञानमां भाषाद्वारे प्राप्त थतुं ज्ञानमात्र गणी शकाय छे.

आवी उत्तमोत्तम योग्यता छतां श्रवणेंद्रियमां एक खामी छे. स्थानस्वरूपरूप जे स्वभाव प्रत्यक्षनो बतावेलो छे ते आ इंद्रियनां प्रत्यक्षमां होतो नथी. बे अथवा वधारे शब्द के ध्वनि साथे संभळाता होय तो तेमने तेमना बाह्यस्थानपरत्वे जुदा पाडी शकाय ए रीते श्रवणेंद्रिय तेमने गृही शकती नथी. आम होवाथी पदार्थोना स्थानपरत्वे तेम तेमना रूप अने परिमाणपरत्वे पण, श्रवणेंद्रिय झाझुं ज्ञान आपी शकती नथी.

साधारण रीते एम कहेवामां आवेछे के मो'टा, समुद्रनी गर्जना जेवा ध्वनि, अथवा अनेक मनुष्यनुं यूथ जे ध्वनि करी मूके छे तेवा ध्वनि, अने एवी विपुलता विनाना सूक्ष्म ध्वनि जेवा के कोई नाना झरणना प्रवाहना, ए सर्वने एकेकथी जुदे जुदा आपणे ओळखी शकीए छीए. परंतु आवा आवा ध्वनिना श्रवणथी जे प्रत्यक्ष थाय तेनां तत्त्वने तेमनां स्थान-

स्वरूप प्रमाणे आपणे केटले अंशे ओळखी शकीए छीए ए बात शंकास्पद छे. बीजी रीते कहीए तो ए ध्वनि पेदा करनार पदार्थोना स्थान विषे श्रवणेंद्रिय कांई जाणी शकती नथी एम समजाय छे. आपणने बे कान छे अने पदार्थनी आम के आम स्थिति जे कानने शब्द अथडाय ते उपरथी कांईक धारी शकाय ए वात खरी छे; परंतु ए पण खरी स्थानस्वरूपप्रत्यक्षनी योग्यता गणाय नहीं. श्रवणनी खरी शक्ति तो जुदी जुदी उच्चतावाळा अनेक शब्दना मिश्रणनुं पृथक्करण करी जुदे जुदे रूपे प्रत्यक्ष पामता जवुं एटलामांज रहेली छे.

९. चक्षुः—सारामां सारो संस्कार पामेली इंद्रियोमां चक्षुने प्रथम पंक्ति आपवामां आवे छे. ए इंद्रियनी अतिसूक्ष्म अने गुंचवणवाळी रचनाथी, तेम तेनाथी प्रत्यक्ष उपजाववा जे प्रोत्साहन (आकाशतरंग *) जोईए छीए तेना स्वरूपथी, ए इंद्रियनां प्रत्यक्षो सविशेष स्पष्टतावाळां थई आवे छे.

विपुलता चाक्षुषप्रत्यक्षमां केटले सुधी गृहाय छे तेनी, एक रीते, मर्यादा नथी एम कहीए तो पण चाले. तेजस्वीमां तेजस्वी एवा जे स्वयंप्रकाश पदार्थो सामुं जोई शकाय छे तेमनाथी मांडीने ते जे पदार्थोथकी तेजनुं थोडामां थोडुं परावर्तन उद्भवे छे अर्थात् जे तमःपदार्थ कहेवाय छे त्यां सुधीमां प्रकाशनी विपुलतानां अनेकानेक तारतम्यनुं प्रत्यक्ष आ इंद्रियने थाय छे. कोई एक विश्वदर्शनमां एकज दृष्टिपातथी अनेक पदार्थोना रूपने गृहवुं, अथवा कोई एकाद पदार्थना रूपने गृहवुं, ए शक्ति चक्षुमां दीठामां आवे छे, तेनो आधार, थोडे अंशे पण प्रकाशनां आवां तारतम्य गृहवानी जे शक्ति चक्षुने छे तेना उपर रहे छे.†

* अत्र आकाश शब्द अंग्रेजीमां जेने इथर (Ether) कहे छे तेने माटे वापर्यो छे; जो के रहस्यविद्या जाणनारा आकाशने इथर करतां पण वधारे सूक्ष्म मानेछे.

† पदार्थमां जे प्रकाश होय तेनी विपुलता उपर तेजःप्रत्यक्षनो आधार छे एम नथी. चक्षुनी स्थिति उपर पण छे. चक्षुनी योग्यता चोवीश कलाकमां जुदी जुदी थाय छे. कोई पण पदार्थ प्रातःकाले जेटला प्रकाशवाळो जणातो होय ते करतां सायंकाले अधो प्रकाशवाळो जणाय छे.

प्रकाशनी विपुलताना प्रत्यक्षनी मर्यादा नक्की करवा माटे अनेक प्रयोग करी जोवामां आवेला छे. एम समजवामां आव्युं छे के कोई बे प्रोत्साहनने १२० अने १२१ नुं प्रमाण होय त्यां सुधी तेमनुं जुदे जुदुं प्रत्यक्ष चक्षुने थाय छे. केटलाक शोधको आ प्रमाण करतां जुदुं ने बहु थोडा तारतम्यवाळुं प्रमाण ($\frac{१}{२८८}$) बतावे छे. आंखनी कीकीनुं जे मध्यबिंदु छे तेमांज आवा सूक्ष्म प्रत्यक्षनुं सामर्थ्य छे. कीकीनी आसपास एटलुं बधुं नथी. ज्यारे स्वच्छ श्वेत प्रकाशने बदले कोई रंगवाळा प्रकाशथी प्रयोग करवामां आवे छे त्यारे विपुलताना तारतम्यनुं प्रत्यक्ष सारी रीते बनतुं नथी.

विपुलता उपरांत, चक्षुद्वारा, धर्मना तारतम्यनां पण अनंत प्रत्यक्ष संभवे छे. आमां सर्वथी मुख्य तो रंगनां तारतम्यज छे. सुरनी उच्चताना भेदनी पेठे रंगतारतम्य पण क्रमिक भेदथी उत्तरोत्तर चाल्युं आवे छे. स्पेक्ट्रमना* एक छेडाथी बीजा छेडा सुधी जतां चक्षुने उत्तरोत्तर तारतम्यनी परंपरा दीठामां आवे छे. ए परंपरामां गुलाबी, गळीअल, भुरो, लीलो, पीळो, नारंगी, रातो एम रंग दीठामां आवे छे, अने अवांतरे अवांतरे लीलो–भुरो, काळो–भुरो, एवी छायाओ पण प्रत्यक्ष थाय छे. रंगना प्रत्यक्ष माटे जे प्रोत्साहन छे तेमां जे तरंग थाय छे तेनी त्वराना फेरफार प्रमाणे जुदा जुदा रंग वर्तीय छे. गुलाबी किरण दर सेकंडे ६६७ बीलीअन, रातां किरण ४५६ बीलीअन तरंगथी नीपजे छे.

आ उपरांत रंगना प्रत्यक्षने पोतपोतामां पण तारतम्य रहे छे. कोई एक रंग रातो अथवा पीळो होय अने वधारे घेरो अथवा थोडो घेरो एटले के आछो होय ते प्रमाणे आ तारतम्यनो भेद पडे छे. आ प्रकारे जोतां प्रत्येक रंगना पोतानाज रूपमां अनेक अंश होवानो संभव छे, अने आछा के घेरा रूपना प्रमाणमां तेना तेज रंगनां अनेक प्रकारनां प्रत्यक्ष

* तेजना कोई पण किरणनुं पृथक्करण करतां जे सात रंगनो समुदाय जणाय छे ते बतावनार छायाने "स्पेक्ट्रम" कहे छे. आ छायामां एक रंगथी एक रंग उपजतो होय तेम बहु सारी रीते रंगनी रचना थयेली दीठामां आवे छे.

बने छे. घणीक वार आ प्रकारनी न्यूनाधिकताने एक एक जुदा रंगरूपे पण गणवामां आवे छे जेम के आपणे जेने गुलाबी कहीए छीए ते रातानुं आछुं रूप छे, इत्यादि.

रंगने उत्पन्न करनारा जे जे किरणो छे ते सर्वेनुं एकत्र थवापणुं बने त्यारे तेनाथी केवळ श्वेतनीज उत्पत्ति थाय छे; एटले के बधां किरणो एकत्र थाय त्यारे जे प्रत्यक्ष बने छे ते श्वेत रंगनुं बने छे. जेम सर्व किरणोना मेलनथी आवुं परिणाम आवे छे, तेम आवांतरे बबे किरणो पण परस्पर साथे मळी अमुक अमुक रंग पेदा करे छे, अने उभय करतां कोई त्रीजा प्रकारना रंगनुं प्रत्यक्ष उपजावे छे. भुरो अने पीळो रंग आ प्रकारे परस्परोपकारक छे अने परस्पर साथे ते बहु सारी रीते मळता आवे छे; एटले के तेमने साथे साथे राखवामां आवेला होय तो तेमना दर्शनथी जे असर थाय ते मनने अनुकूळ अथवा कांईक आनंदवाळी कहीए तो पण चाले, तेवी थाय छे

रंगप्रत्यक्षना अनंत अने गुंचवणवाळा स्वरूपने लीधे, तथा केटलाकनी इंद्रियो रंगनुं प्रत्यक्ष पामवानेज केवळ अशक्त होय छे ते वार्तानने लीधे, तेमज रंगना मिश्रणमां अने परस्परोपकारकत्वमां जे दर्शन थई आवे छे तेने लीधे, आंखनी अंदरनी कीकीनी रचना अने तेना व्यापारपरत्वे अनेक तर्क उद्भवेला छे. आमां सर्वथी मुख्य जे छे ते यंग अने हेह्मोल्टझे स्थापेलो जे तर्क छे ते छे. एमना विचारप्रमाणे कीकीनी रचनामां जे तंतुओ आवे छे तेना रेषा त्रण प्रकारना रहे छे; अने ते त्रणेने अनुक्रमे राता, लीला अने भुरा रंगथी असर थाय छे. एटले आ त्रण रंगनेज मूल रंग गणाय, तेमनुंज प्रत्यक्ष चक्षुने सारी रीते थाय; अने बीजा रंगोनां प्रत्यक्ष मिश्र गणाय. आ तर्कविरुद्ध हेरिंगे बीजो तर्क योजेलो छे. तेना विचार प्रमाणे तंतुनां तत्त्व बे प्रकारनां छे, अने ते प्रत्येकने बे बे व्यापार रहे छे. ए प्रत्येक व्यापारने एक एक रंगप्रत्यक्ष साथे संबंध छे. आ प्रकारे जोतां मूलरंगप्रत्यक्ष बे अथवा त्रण नहीं पण चार संभवे छे. एक युग्मथी भुरा अने पीळा रंगनां प्रत्यक्ष बने छे, बीजा युग्मथी राता अने लीला रंगनां प्रत्यक्ष थाय छे. आ युग्मव्यापार उपरांत एक त्रीजो व्यापार पण हेरिंग माने छे. ने तेने अनुकूळ एक त्रीजा प्रकारनुं तंतुतत्त्व पण स्वीकारे छे; तेनाथकी श्वेत, श्याम, ए रंगनुं

प्रत्यक्ष थाय छे. प्रथमना तर्क करतां आ तर्क वधारे सुस्थित छे अने साधारण अनुभवने अनुकूळ छे, परंतु एमां पण शंका अने बाध नथी आवतां एम नथी.

आ प्रकारे चक्षुथकी विपुलता अने धर्मनां सूक्ष्म सूक्ष्म तारतम्योनुं पण प्रत्यक्ष बने छे एटलुंज नहीं, पण चाक्षुषप्रत्यक्षमां स्थानस्वरूपनुं तारतम्य पण सारी रीते गृहाय छे. आ अने एक वात जे हवणांज कहेवाशे ते बेने लीधे ज्ञान उपजावनार इंद्रियरूपे चक्षु श्रवण करतां वधारे उत्तम गणाय छे. कीकी एक एवी विस्तृत भूमि छे के तेना कोई पण बिंदु उपर एक चाक्षुषप्रत्यक्ष पण थई शके छे. मूलथीज, कीकीनां जुदां जुदां बिंदुथी जे प्रत्यक्ष थाय तेमने जुदुं जुदुं स्थानस्वरूप होय छे. आ स्थानस्वरूप बराबर जाणी शकावुं ते तो कीकीनो मध्यप्रदेश जेने पूर्णदृष्टिनो प्रदेश कहे छे तेनाथीज बने छे. आ प्रदेश स्थानस्वरूपनुं ग्रहण केवी सूक्ष्मताथी करी शके छे तेनुं माप लेवा माटे चक्षुथी अमुक छेटे झाली राखेली बे पातळी दोरीओने धीमे धीमे अकेकानी पासे लावता जवी ए प्रकारथी प्रयोग करी जोवामां आवेला छे. ए प्रयोगथी एम जणायुं छे के सारी अनुभवी आंखने, ज्यां सुधी, दर्शनकोण ६० थी ९० सेकंड सुधीनो होय छे त्यां सुधी, बे जुदे जुदां बिंदु स्पष्ट रीते देखाय छे; एटले के ज्यां सुधी कीकीना प्रदेश उपर जे बे बिंदु पडे ते बे बिंदु .००४ थी .००६ मीलीमीटर जेटले अंतरथी दूर होय त्यां सुधी बे जुदां बिंदुनुं प्रत्यक्ष थाय छे. परंतु आ प्रकारे जे थोडामां थोडो अंतर होवाथी बे बिंदुनुं जुदे जुदुं प्रत्यक्ष थई शके ते अंतरनो नियम कीकीना मध्यप्रदेशनेज लागे छे, आगळ पाछळ तो ते अंतरमां वधारो थतो जाय छे.

१०. स्नायुइंद्रिय:—जे पांच इंद्रिय गणावी ते उपरांत एक घणीज अगत्यनी इंद्रिय छे, जेने स्नायुइंद्रिय ए नाम आपवामां बाध नथी.

स्नायुओना व्यापारसाथेज जे सादां प्रत्यक्ष अथवा सादा चेतनपरिवर्त थाय छे ते बधांने स्नायु (इंद्रिय–)जन्य प्रत्यक्ष कहेवामां आवे छे. आवां प्रत्यक्षने पण तेमनुं पोतानुं सुरेख स्वरूप छे. शब्दयंत्रना व्यापारथी, हाथ के पगना व्यापारथी, कोई भारे पदार्थने हडसेलवाना प्रयासथी, जे प्रत्यक्षनो अनुभव थाय छे तेमां अमुक असाधारणस्वरूपता दीठामां आवे छे, अने ते उपरथी ते प्रत्यक्ष पंचेन्द्रियजन्य प्रत्यक्ष करतां निराळां पडे छे.

स्नायुइंद्रियनुं स्थान पण जुदीज जातनुं छे एटले पांच इंद्रियोना वर्गमां तेने गणी शकाय एम पण नथी. स्नायुजन्य जे प्रत्यक्ष छे ते, प्रथमे तो, बीजी इंद्रियनां जे प्रत्यक्ष छे तेनी पेठे बाह्यार्थसन्निकर्षजन्य नथी, पण आपणा पोताना आंतरव्यापारथीज उद्भवे छे. आ कारणथी स्नायुप्रत्यक्ष बधांए कांईक कार्यकर्तृत्वरूप छे, फळ अथवा कार्यरूप नथी. पंचेन्द्रियजन्य प्रत्यक्षमात्र फलरूप एटले के बाह्यसन्निकर्षना फलरूप छे, स्नायुप्रत्यक्ष तो आंतरव्यापार (कार्य) थाय ने तेथी स्नायुने गति मळे तेनांज प्रत्यक्ष छे. आ उपरथीज स्नायुप्रत्यक्ष बीजा प्रत्यक्षथी जुदां पडे छे अने तेमने आपणे घणी वार श्रम, वेग, प्रयत्न आदि वृत्तिरूपे वर्णवीए छीए. वळी जेम पांचे इंद्रिय अन्योन्यथी स्पष्ट रीते भिन्न छे तेम स्नायुइंद्रिय भिन्न नथी, पण सर्वे इंद्रिय साथे ने विशेषे त्वक् अने चक्षु साथे मळेली रहे छे.

स्नायुजन्य प्रत्यक्षमांनां जे शरीरव्यापारमां सहकारी होय ते विषे अने ते प्रत्यक्षना पोताना स्वरूप विषे घणा घणा मतभेद छे. प्रो. बेन कहे छे के आ प्रत्यक्ष, उद्वाहकतंतुस्थानथी उद्वाहक तंतुद्वारे जे वेग प्रवर्ते छे तेनी साथे उद्भवे छे, अने शरीरमांना वेगनो ज्यां ज्यां उपयोग थाय छे त्यां त्यां जणाय छे. बीजा लेखको एथी उलटी वात कहे छे अने संवाहकतंतुना वेग साथे आ प्रत्यक्षोने संबंध छे एम बतावे छे. आ बे पक्षमांथी कीयो पक्ष खरो छे ए जाणता पूर्वे चेतनना यथार्थ पृथक्करणनुं, शारीरविद्याना निश्चयोनुं, अने रोगस्वरूप आदिना विचारनुं, संपूर्ण ज्ञान होवुं जोईए.

बधी पासाथी विचार करतां एम जणाय छे के उद्वाहकतंतुनो वहार जतो वेग अने संवाहकतंतुनुं प्रोत्साहन ए उभये स्नायुव्यापारजन्य प्रत्यक्ष साथे संबंध राखे छे. उद्वाहकतंतुना वेगथी प्रत्यक्षनी विपुलतानुं स्वरूप बंधाय छे. एवां पण स्नायुप्रत्यक्ष बनेछे के जे स्नायुना संकोचरूपव्यापारजन्यज होय छे, ने ते साथे तो स्पष्ट रीते संवाहकतंतुनेज संबंध छे.

११. स्नायुप्रत्यक्षना भेदः——स्नायुव्यापारजन्यप्रत्यक्षना बे मुख्य विभाग करी शकाय. प्रथम विभागमां कोई पण जातना चलन अथवा गतिनां प्रत्यक्ष एटले के अप्रतिहतवेगजन्य प्रत्यक्ष छे; बीजा विभागमां प्रतिरोध अथवा प्रतिहतवेगजन्य प्रत्यक्षनो समास छे. हवामां हाथ वींझवाथी के हलाववाथी, चक्षूने आम तेम फेरववाथी, ए व्यापार साथे जे प्रत्यक्ष रहे छे ते प्रथम प्रकारनां छे; कोई भारे पदार्थ सामे हडसेलो मारवामां के हाथमां भारे वजन उपाडी राखवामां जे चेतनपरिवर्त अथवा प्रत्यक्ष थाय छे ते बीजा प्रकारनां छे.

गतिना प्रत्यक्षमां कार्यकर्तृत्व ए स्वरूप प्रधान होतुं नथी. प्रतिहतवेगजन्य प्रत्यक्षमां संवाहकतंतुना वेगनां प्रत्यक्ष प्रधान होय छे. प्रतिहतवेगनो अनुभव थवामां त्वक्ने जे दबाणनुं प्रत्यक्ष थाय छे ते पण आ उपरांत लक्षमां राखवा जेवुं छे. जे बे विभाग स्नायुप्रत्यक्षना अत्र पाड्या ते वारंवार परस्पर साथे मिश्र थयेला दीठामां आवे छे. एकाद वजन उपडवामां के कोई भारे पदार्थने हडसेलवामां प्रतिरोध अने गति उभयेनो अनुभव थाय छे. आपणा अवयवोने गतिमात्र आपवानी होय छे त्यां पण ते ते अवयवना वजननो प्रतिरोध तो प्रत्यक्ष ज छे. आ कारणथीज आ आखा प्रत्यक्षनो अनुभव एकंदर कोई प्रतिरोधने दूर करवानी वृत्तिरूपेज थाय छे.

१२. गतिप्रत्यक्षः——अप्रतिहत स्नायुव्यापारने अनुषंगे जे प्रत्यक्ष थाय छे ते आपणी आसपासना विश्व विषे ज्ञान आपवामां बहुज उपयोगनां छे. आपणे धीमे धीमे जोईशुं तेम एकाद अवयव के हाथ के आखुं शरीर गति पामे, हाले, चाले तेने अनुषंगे जे प्रत्यक्ष थाय छे ते द्वारेज आपणने दिगवच्छिन्न* पदार्थोनुं ज्ञान थाय छे.

* एटले के सर्वव्यापी एवी दिक् तेमां पदार्थ कोये स्थाने छे ने केवा संबंधे छे त ज्ञान. एने दिगवच्छिन्नपदार्थज्ञान कहेवाय. एज प्रमाणे कालपरत्वे ज्यारे पदार्थोनुं ज्ञान करवुं होय त्यारे ते कालावच्छिन्न पदार्थज्ञान कहेवाय.

गतिप्रत्यक्षथी आपणने आ प्रकारे जे ज्ञान मळी शके छे तेनुं कारण ते प्रत्यक्षनो अमुक प्रकारनो स्वभाव छे एज छे. जे दिशा तरफ गति, तेने अनुसारे प्रत्यक्षना स्वरूपमां फेरफार जणाय छे, ए प्रथम वात छे. एक स्नायुथी जे गति अथवा व्यापार सिद्ध थाय छे ते अन्यस्नायुथी सिद्ध थता व्यापार करतां भिन्न छे एम निरंतर समजाय छे. जमणा हाथने वांको वाळवो अथवा सीधो करवो, के तेने डाबी बाजुए ने जमणी बाजुए आम तेम हलाववो, ए बधा व्यापारने अनुषंगे जे जे प्रत्यक्ष थाय छे ते धर्मथकीज अन्योन्यभिन्न समजाय छे. आ प्रकारे प्रत्यक्षोमां जे धर्मभेद समजाय छे तेज अमुक गतिनी दिशा बतावामां कारणभूत छे, ने ते द्वारेज अमुक पदार्थ दिक्मां कोये स्थाने छे ते पण जाणवामां आवे छे.

बीजी वात एवी छे के गतिनां जे प्रत्यक्ष ते केटलो समय चाले छे एना तारतम्यनुं पण ते सारी रीते ग्रहण करी ले छे. श्रवणद्वारे जे आ प्रकारनां प्रत्यक्ष थाय छे तेने आ प्रत्यक्ष आ बाबतमां मळतां आवे छे. आ कारणने लीधे गतिमात्रना संवेगनुं अने तेना विस्तारनुं आपणने ज्ञान थई शके छे, अने ते द्वारे दिगवच्छिन्न बे पदार्थ वच्चे केटलुं अंतर छे ते समजवामां आवतां दूरत्व निकटत्वरूप अंतरनुं पण ज्ञान थाय छे.

१३. प्रतिहतवेगजन्य प्रत्यक्षः——ज्यारे स्नायुना वेगनो प्रतिरोध थाय त्यारे जे प्रत्यक्ष उद्भवे छे तेमने तेमनुं पोतानुं जुदे जुदुं स्वरूप छे. खभा अथवा हाथथी भारे पदार्थने हडसेलो मारवामां, भारे पदार्थ ताणवामां, उपाडवामां, इत्यादि क्रियामां आ प्रत्यक्षनो अनुभव थाय छे. आवां प्रत्यक्षने प्रतिरोधप्रत्यक्ष ए नाम आपीए तो चाले. गतिप्रत्यक्षनी पेठे आ प्रत्यक्षमां पण विपुलताना तारतम्यनुं सूक्ष्म प्रकारे ज्ञान थाय छे. एक शेर अने पा शेर उपाडवामां जे तफावत रहे छे ते प्रत्यक्ष

थई शके छे, तेमज एक शेर भारने बे हाथ छेटे ने चार हाथ छेटे फेंकवामां जे प्रतिरोध नडे छे तेनो तफावत प्रत्यक्षथी जाणी शकाय छे.

आ प्रकारनां स्नायुप्रत्यक्षथी आपणने पदार्थोनी कठिनता, मृदुता, बरडपणुं वगेरेनुं ज्ञान थाय छे, त्वक्जन्यस्पर्शमात्रथी कोई पण पदार्थ कठिन छे के नरम छे के बरड छे ए वात समजाती नथी; ते समजवा माटे जरा पण प्रयत्न स्नायुथकी करवो पडे छे, दबावी जोवुं पडे छे, ऊचकी जोवुं पडे छे, वाळी जोवुं पडेछे. बाळकोने, लाकडी वळी शके एवी छे, पेटी खसे नहीं तेवी छे, भीतनी पार जवाय नहीं एम छे, ए आदि ज्ञान जे थाय छे ते स्नायुवेगना प्रतिरोधमांथीज थाय छे.

स्नायुइंद्रियना आ स्वरूपथी केटला तफावत सूक्ष्म रीते गृही शकाय छे ते वातनो निश्चय फेंकनरे वजनना प्रयोगोथी करी जोयो छे. तेणे प्रयोग एवो कर्यो हतो के चडतां उतरतां अनेक वजन क्रम वार एक हाथे तेमज बे हाथे उपाडी जोवां. ज्यारे नानुं वजन लेवामां आवतुं त्यारे बे वजन वच्चेनो तफावत $\frac{1}{10}$ सुधी होय त्यां सुधी ते प्रत्यक्षग्राह्य रहेतो. ज्यारे मारे वजनथी प्रयोग करवामां आवतो त्यारे प्रत्यक्षग्राह्य थई शके तेवो तफावत ए करतां पण ओछो रहेतो. एक हाथे प्रयोग करतां जे तफावत समजातो ते बे हाथे प्रयोग करवा करतां वधारे सूक्ष्म रहेतो. आ बधा प्रयोगमां स्पर्शप्रत्यक्षथी जे तारतम्य गृहाय ते वात काढी नाखीने हीसाब करवामां आवेलो नथी ए लक्षमां राखवुं. परंतु स्पर्शप्रत्यक्षनी आवा तारतम्यने ग्रहवानी शक्ति विषे आपणे कही चूक्या छीए, एटले त्यां जे सूक्ष्मता प्रत्यक्षयोग्य थई शके तेवी बतावेल छे तेनी साथे आ प्रयोगनां परिणामने सरखावी जोतां एम समजी शकाय छे के अत्र जे तारतम्य स्नायुप्रत्यक्षथी गृहाय छे तेमां त्वगिन्द्रियनो भाग नथी, केवळ स्नायुनोज व्यापार छे.

१४. स्नायुप्रत्यक्षनो त्वक् अने चक्षू साथे संबंध:— स्नायुप्रत्यक्षनुं जे वर्णन अपायुं ते उपरथी एटली वात स्पष्ट थाय छे के ए प्रत्यक्षने चक्षू अने त्वक् साथे घणो निकट संबंध छे. चक्षू अने त्वक्नां स्थान जे आंख अने हाथ तेमनी रचना पण एवी छे के ते बहुधा गमे ते पासा गति पामी शके छे; अने तदनुकूल स्नायुयंत्र

पण तेमनामां गोठवायलुं छे. आ बे अवयवो आवी गतिशक्तिने लीधे अनंत संस्कार पामी शके छे. जेम कोई जीवडानी मूछो हालती चालती होवाथी तेने, ते हालती चालती नहीं पण स्थिर होय ने संस्कार प्राप्त थाय ते करतां, अधिक संस्कार प्राप्त थाय छे, तेमज हाथ अने आंगळीओनी गतिशक्तिथी अनेकानेक अधिक संस्कार प्राप्त थाय छे. आवी गतिशक्तिने लीधे शरीरनो जे घणामां घणो प्रत्यक्षयोग्य भाग—आंगळीनां टेरवां—तेनाथी माणसो—बाळको—घणाक पदार्थ साथे सन्निकर्ष करी शके छे. तेज प्रमाणे चक्षूनी कीकीनी गतिने लीधे पण थई शके छे.

आ इंद्रियोनी आवी शक्तिने लीधे थई आवतो बीजो लाभ ए छे के क्रमथकी पण बहु त्वरा साथे अनेकानेक सन्निकर्ष थई जाय तो ते बधा पण गृहाय छे. एम होवाथी आ बे इंद्रियोने सूक्ष्म तारतम्य समजवानी घणी उत्तम शक्ति छे. एक पदार्थनी सपाटी उपरथी बीजानी उपर हाथ फेरववाथीज (ऋक्षथी मृदु उपर, उष्णथी शीत उपर, इत्यादि) ते ते सपाटीना स्वरूप अथवा धर्मनुं ज्ञान थाय छे; तेमज एक रंगथी बीजा उपर त्वराथकी दृष्टि फेरवी जतांज जुदे जुदा रंगनुं ज्ञान थाय छे.

केवळ संनिकर्षफलरूप जे आवां प्रत्यक्ष आ बे इंद्रियद्वारे परिपूर्ण रीते थाय छे ते, ए बे इंद्रियने जे उत्तम गतिशक्ति छे तेनाथी थता लाभनो दशांश पण नथी. जेम जेम ए शक्तिनो उपयोग थाय छे तेम तेम स्नायुना व्यापारनो अधिकाधिक व्यायाम थाय छे, ने ते व्यायामजन्य अनुभवद्वारा पदार्थोनुं दिगवच्छिन्नत्व समजवामां सरलता थाय छे. ए वात आगळ चर्चवामां आवशे.

छेवटे एटलुं कहेवुं जोईए के प्रतिरोधप्रत्यक्षने निकटमां निकट संबंध तो त्वक् साथेज छे. पदार्थोनो स्पर्श करतां स्वाभाविक रीतेज आ-

पणे कांईक पण स्नायुवेग वापरीए छीए, एटले एम सिद्ध थाय छे के त्वगिन्द्रिय जे सन्निकर्षफलरूप प्रत्यक्ष पामे छे, तेमां स्नायु पण सहकारी छे. स्पर्शमात्र केवळ त्वगिंद्रियग्राह्य नथी पण त्वगिन्द्रिय अने स्नायुबल उभयग्राह्य छे एम आ कहेवानुं तात्पर्य छे.

चक्षु अने त्वक् जे जे प्रत्यक्ष पामे छे तेमां स्नायुव्यापार पण सहकारी छे एटला माटेज आ बे इंद्रियने, मात्र सन्निकर्षफलरूप प्रत्यक्ष पामनारी छतां पण, कार्यरूप प्रत्यक्ष पामनारी गणवामां आवे छे. कार्यरूप प्रत्यक्ष पामनार इंद्रियनो अर्थ ए छे के ते इंद्रियना व्यापारमां स्नायुना व्यापारनुं पण मिश्रण रहे छे.

१५. इंद्रियप्रत्यक्ष अने अवधानः—विपुलता, धर्म के स्थानस्वरूप गमे ते परत्वे पण स्पष्ट अने सुरेख प्रत्यक्ष थाय ते माटे एटलुंज नथी के इंद्रिय अने अर्थनो सन्निकर्ष थाय एटले पत्युं. मगजमांना स्थानथी प्रत्याघात पण थवो जोईए; एटले के चेतनशास्त्रनी परिभाषानुसार अवधान पण अपायलुं होवुं जोईए. एम थाय तोज सुरेख प्रत्यक्ष उद्भवे, नहीं तो नहीं.

प्रत्यक्षना सविकल्प अने निर्विकल्प एवा भेद आपणा शास्त्रमां एज आधारे मानेला छे. "आ कांईक छे" एवुं जे अनवधानपूर्वक प्रत्यक्ष ते निर्विकल्प छे. अने "आ मनुष्य छे," "आ सुवर्ण छे," "आ अमुक छे," एवुं जे स्पष्ट अवधानसहकृतप्रत्यक्ष तेने सविकल्प कहे छे. एम मानवामां आवेलुं छे के सविकल्प प्रत्यक्षनुं कारण निर्विकल्प प्रत्यक्ष छे, केम के प्रथमे सन्निकर्ष थतां "कांईक छे" एवुं ज्ञान थया पछी "अमुक रूप रंग आकारवाळुं आ अमुक छे" एवुं सविकल्प प्रत्यक्ष थाय छे. आ मतनो मूळ आधार जातिव्यक्तिना विचार उपर छे. प्रथमे जातिज्ञान थाय छे, के व्यक्तिज्ञान थाय छे, ए प्रश्ननो निर्णय साथे आ निर्णयने संबंध छे. अनेक पदार्थगत जे ते पदार्थनो धर्म ते जाति कहेवाय, ने ते ते पदार्थ ते व्यक्ति कहेवाय. माणस ए व्यक्ति छे; माणसपणुं, मनुष्यत्व, ए जाति छे. आमां आपणा शास्त्रोनो बहु बहु मतभेद छे, न्यायवाळा जातिविशिष्ट व्यक्तिनुं प्रत्यक्ष माने छे, वेदांतवाळा केवळ जाति-

नुंज प्रत्यक्ष माने छे, मीमांसावाळा जातिनुं प्रत्यक्ष मानतें सतें एम कहे छे के जातिनी साथेज व्यक्तिनो आक्षेप थाय छे, केम के व्यक्ति विना निराश्रित जाति समजाय नहीं. ए तकरारमां उतरवानो आ प्रसंग नथी केम के एम करतां तो ज्ञाननी उत्पत्तिनो विचारज करवा बेसवुं पडे; अने आ लेखमां तो ज्ञानमात्र इंद्रियप्रत्यक्षजन्य छे एम आपणे स्वीकारीने चाल्या छीए. अर्थात् न्यायनुं जे मत के प्रथमे निर्विकल्प एटले 'आ कांईक' एवुं प्रत्यक्ष थईने "आ अमुक" एवुं सविकल्प प्रत्यक्ष थाय छे ते ठीकज छे, अर्थात् आ लेखना सिद्धांतने बाधकारक नथी.

१६. प्रत्यक्षनुं विशेषग्रहणः—कोई पण संस्कार बीजा संस्कारोथी जुदो करीने गृही शकाय नहीं त्यां सुधी ते संस्कारनुं स्पष्ट ज्ञान थयुं कहेवाय नहीं. आपणुं अवधान नथी होतुं ते समये चक्षु अने त्वक् द्वारे बीजां अनेक प्रत्यक्ष थाय छे जे अस्पष्ट अने अगृहीतज रहे छे. एमांना कोई उपर पण अवधान आपवाथी बीजां बधां प्रत्यक्षमांथी ते तुरत जुदुं पडी शके छे ने पोतेज स्पष्ट अने सुरेख स्वरूपे प्रतीत थायछे. आ प्रकारे कोई प्रत्यक्षनुं ग्रहण थाय तेने तेनुं विशेषग्रहण कहीए तो पण चाले, केम के विशेषग्रहणनो अर्थज ए छे के तेना पहेलां, साथे के पछी थनारां बीजां प्रत्यक्षोथकी आ प्रत्यक्षमां जे विशेष (तफावत) होय तेनी प्रतीति थवी. ए तो आपणे कही आव्या छीए के जे उत्तम इंद्रियो छे ते बीजी इंद्रियोना करतां वधारे सूक्ष्म तारतम्यनुं ग्रहण करी शके छे. श्रवण बे ज्यारे शब्द तुरत एक एकनी पछी आवे छे त्यारे पण तेमना सूक्ष्म तारतम्यने पकडे छे. त्वक् तथा चक्षुनो पण एवीज रीते तारतम्य पकडी लेवानो स्वभाव छे.

१७. प्रत्यक्षना वर्गः—जे प्रत्यक्षनुं विशेषग्रहण थाय ते प्रत्यक्ष आगळ पाछळना प्रत्यक्षथी भिन्नरूपे ओळखाय एटलुंज नहीं, पण थई गयेलां प्रत्यक्षमांनां कीयांनी साथे तेने सादृश्य छे ते पण ए ग्रहण भेगुंज गृहावुं जोईए. कडवा स्वादनुं के भूरा रंगनुं प्रत्यक्ष थाय ते माटे

तेनी तेज जातनां थई गयेलां प्रत्यक्ष साथे आ प्रत्यक्षनुं सादृश्य समजावुं जोईए. आ उपरथी एम पण समजाय छे के जेनुं विशेष ग्रहण थाय एवां सुरेख प्रत्यक्षमां स्मृतियोग्य संस्कार उपजाववानी पण शक्ति रहेली छे. कोई पण वर्तमानप्रत्यक्ष सुरेख रीते समजाय छे तेमां तत्सदृश गतप्रत्यक्षना संस्कारनो उद्‌बोध ए पण एक कारण छे. वर्तमानप्रत्यक्षनाथी गतप्रत्यक्षना संस्कार जाग्रत् थतां वर्तमानप्रत्यक्ष वधारे स्पष्टताथी गृहाय छे, अने ए वात जेने आपणे निर्बल संस्कार कहीए छीए ते परत्वे सारी रीते सिद्ध थाय छे. कोई नहीं जेवी वास के नहीं जेवो स्वाद ते पण स्पष्ट रीते गृहाय छे एनुं कारण गतप्रत्यक्षना संस्कारनो उद्‌बोध आ प्रत्यक्ष भेगो मळेछे तेज छे, एम विचार करतां सहज समजाय छे.

आ प्रकारे प्रत्यक्षने अमुक वर्गमां मूकवानुं पण ते प्रत्यक्षना विशेष ग्रहणनी साथेज बने छे. परंतु एम बनवामां एक बीजी वात पण सिद्ध थाय छे, गतप्रत्यक्षोमां पण जे जे प्रत्यक्ष वर्तमानप्रत्यक्षथी विसदृश होय तेमनाथी पण तेने जुदुं पाडवुं पडे छे. अमुक गळपणनो स्वाद एवो छे. एम जाणवामां मारे ते स्वादने पाछला तेवा स्वादमात्रथी जुदो करवो पडेज; कदापि आ स्वाद कोईक गळ्या स्वाद जेवो छे एम लागे तो तो विशेषग्रहणमांज कांईक खामी छे एम समजवुं. एवी खामी होय त्यां तो वर्तमानप्रत्यक्षने अमुक वर्गमां मूकवानुं पण जेवुं तेवुंज बनी शकवानुं. त्यारे एटलुंज सिद्ध थाय छे के कोई पण प्रत्यक्षनुं सुरेख ग्रहण थाय तेनो आधार ते प्रत्यक्षनुं भूत तेम वर्तमान उभये प्रत्यक्षथी जे विशेषग्रहण थाय तेना उपर रहे छे.

यद्यपि सादृश्य अथवा साधर्म्य अने वैसादृश्य ग्रहण करवुं ए जुदा जुदा चेतनव्यापार छे, अने जुदाजुदां मननी शक्तिना प्रमाणमां न्यूनाधिकपणे रहेला दीठामां आवेछे, तथापि हवणांज बतावेलामां आव्युं तेम ए उभये व्यापार परस्परना भेगाज चाले छे. माणसमां चेतनविकासने आरंभे आवुं अवश्य बने छे. कोई पण प्रत्यक्षने अमुक वर्गमां

मूकवामां थोडुं घणुं पण तनुं वैधर्म्य समजवानी जरूर पडे छे, परंतु वैधर्म्यनी परीक्षा करवामां साधर्म्य समजवानी जरूर पडे छे के नहीं? जेटली साधर्म्य समजवामां वैधर्म्य समजवानी पडे छे तेटली ने तेवी तो नहींज. प्रत्यक्षोमां कांईक अन्योन्यथी वैधर्म्य पाडे तेवुं छे ए वातनुं ज्ञान, वैधर्म्यथी जुदा पडता प्रत्यक्षने कीया वर्गमां मूकवुं ते ज्ञाननी पूर्वे पण थवा मांडे छे. पीरसेला थाळमां आपणने कोई नवोज स्वाद समजवामां आवे, अथवा कोई रागमां नवोज सुर सांभळवामां आवे, पण तेटलाथी एम कही शकातुं नथी के ते स्वाद के सुर कीया वर्गनो छे. एटला उपरथी एम पण कही शकाय के साधर्म्य वैधर्म्यना जे बे चेतनव्यापार छे, तेमां वैधर्म्यग्रहण ए सर्वथी पहेलुं आरंभाय छे.

१८. इंद्रियनो विकासः—आ बधी चर्चा उपरथी एटलुं नक्की थाय छे के जेम वय वधतुं जाय छे तेम इंद्रियनो पण विकास थतो जाय छे. मोटी वयना माणसने होय छे तेनी तेज इंद्रियरचना, तेनी तेज प्रत्यक्षयोग्यता, बाळकनामां पण होय छे. परंतु बाळकनां प्रत्यक्ष मनुष्यनां प्रत्यक्ष करतां वधारे मूलभूत, अस्पष्ट, अने अनाकारित होय छे. अवधानसमेत इंद्रियव्यापारनो पुनः पुनः अभ्यास वधतां, इंद्रियजन्य संस्कारना वैधर्म्यनुं स्पष्ट रीते ग्रहण थाय छे; अने ए संस्कारो आकारवाळा थवा लागे छे. आ प्रकारे इंद्रियशक्तिनो जे विकास थवो तेमां बे बातोनो समास छेः (१) इंद्रियथकी थता संस्कारोनुं वैधर्म्य समजवानी शक्तिनी वृद्धि, अने (२) गतसंस्कारना उद्‌बोधथी वर्तमानसंस्कारनुं गतसंस्कार साथेनुं साधर्म्य जाणवानी शक्तिनी वृद्धि. बीजी रीते कहीए तो इंद्रियो संस्कारनुं वैधर्म्य पारखवामां वधारे तीव्र थती चाले छे; अने ते संस्कारोनुं साधर्म्य पारखवामां चपलता गृहती चाले छे.

वैधर्म्यपरीक्षणनी शक्ति केटली छे एनुं माप बे प्रत्यक्ष वच्चे तेमने जुदेजुदां समजवा सारुं केटलो तफावत राखवो पडे छे ए उपरथी थई शके छे. साधर्म्यपरीक्षणनी शक्तिनुं माप घणामां घणी केवी दुर्बळतावाळो संस्कार अमुकनी सदृश छे एम जाणी शकाय छे, ते उपरथी थाय छे.

ए तो कहेवामां आवेलुं छे के वैधर्म्यपरीक्षा तेज इंद्रियव्यापारमां प्र-

थमे आरंभाय छे. बाळकोनां प्रत्यक्ष प्रथमे तो परस्परमां मळी जाय छे ने जुदां जुदां रहेतां नथी. अनुकूळ प्रतिकूळने अंगे जे वैधर्म्य गृहण थाय ते बाद करतां प्रथम पहेलुं वैधर्म्य, विपुलताथकी गृहातुं चाले छे. तेज अने तिमिर, चळकती अने न चळकती सपाटी, तेना तफावतो सहजे नजरमां आवे छे, ने रंगना तफावत ते पछी समजाय छे. जेम जेम इंद्रियोनो अभ्यास वधतो चाले छे, अने प्रत्यक्षोना संस्कारनो जथो मनमां वृद्धि पामे छे, तेम तेम वैधर्म्यपरीक्षानी शक्ति सुधरती जाय छे. आ शक्तिनो सुधारो, विपुलता गृहवापरत्वे तेम धर्म अथवा गुण गृहवापरत्वे धीमे धीमे थतो चाले छेः मो'टां मो'टां वैधर्म्यना गृहणथी आरंभ थई सूक्ष्म सूक्ष्म वैधर्म्यना गृहण सुधी पहोंचे छे. बूम अने धीमो स्वर, भारे अने हलकुं, एनो तफावत प्रथमथीज समजाय छे, अने एकज बूममां पण केवां वैधर्म्य रहे छे, एकज जातनी भारे वस्तु वस्तुमां पण केवां वैधर्म्य बने छे, ते सूक्ष्म विवेक पाछळथी आवे छे. एज रीते रातो ने भुरो जुदा छे ए ज्ञान तो, रातामा पोतानाज केटला प्रकारना राता बने छे ते ज्ञाननी पूर्वे थाय छे. एम अभ्यासथी इंद्रियो सुधरे छे.

१८. इंद्रियशक्तिः— जुदां जुदां माणसने जुदी जुदी इन्द्रियशक्ति होय छे एम पण दीठामां आवेछे. एमां चढता उतरता घणा क्रम जोवामां आवे छे. क करतां ग एकंदरे इंद्रियनी तीव्रतामां, एटले के प्रोत्साहन अथवा सन्निकर्ष थतांज प्रत्यक्ष गृहवामां, वधारे उत्तम प्रकारनो होय. कोई इंद्रियनी शक्ति सारी छे अथवा इंद्रिय तीव्र छे एम कहेवानो पूरेपूरो अर्थ ए छे के अतिनिर्बल प्रोत्साहनथी पण ते इंद्रिय स्वव्यापार करे छे, अने थई आवतां प्रत्यक्षनी तुरतज साधर्म्यपरीक्षा करी ले छे. कोईनी आंखे एकाद बहु थोडा प्रकाशवाळो झांखो तारो जणाय ए वात, आ नियमनुं उदाहरण जाणवी. एमज क अने गनी प्रत्यक्षमर्यादामां

तारतम्य होई शके छे, एटले के केटला प्रोत्साहनथी प्रत्यक्ष थाय छे एमां तारतम्य रहेतुं होय छे. जेने एकंदरे बहु तेज मीजाजनो एटले तीव्र इंद्रियवाळो माणस कहेवामां आवे छे ते एवी प्रकृतिनो माणस होय छे के जेनी इंद्रियो प्रोत्साहननो वधारो थतां वधारे वधारे व्यापार करवा उत्तेजित थती नथी, पण थाकीने टाढी पडी जाय छे.

शक्तिमां आवुं तारतम्य जे रहे छे तेनाथकी वैधर्म्य परखवानी शक्तिनुं तारतम्य जुदुं जाणवुं. ए जे वैधर्म्य परखवानी शक्ति ते तो इंद्रियो ने बुद्धिने संबंधे जे शक्ति रहे छे तेनो प्रकार छे. केळवायला अने बुद्धिमत्तावाळा लोकमां ते दीठामां आवे छे. जे इंद्रियशक्तिनुं तारतम्य अत्र कहेवाय छे तेने ने आने संबंध नथी. क, ग करतां प्रोत्साहन थता बराबर प्रत्यक्ष पामे एवी शक्तिवाळो होय, छतां वैधर्म्य परखवानी शक्ति तेनामां गना जेटली न पण होय.

वैधर्म्यपरीक्षानी शक्तिनुं जे तारतम्य ते सामान्य होय, के विशेष होय. अ, ब ना करतां एकंदरे सामान्यतः आ शक्तिपरत्वे उत्तम होय. एम होय त्यां अ, ब वच्चेनुं तारतम्य बुद्धिवैभवने लीधे छे एम आपणे साधारण रीते मानीए छीए; परंतु अ, ब ना करतां कोई अमुक वैधर्म्यनी परीक्षामां—जेवी के रंगना तारतम्यनी परीक्षामां—अधिक होय तो ते विशेष शक्ति कहेवाय. आ उभये प्रकारनी वैधर्म्यपरीक्षानी शक्तिनां अनेक उदाहरण जडे छे. रंगनुं दर्शनज थई शकतुं नथी के सूरनुं प्रत्यक्ष जेमने सांभाळवामां आवतुं नथी, एवा रंगपरत्वे अंध के सूरपरत्वे बधिरथी मांडीने ते नाना प्रकारना सूक्ष्म रंग अने सूक्ष्म सूरने ओळखनार चीताराने गवैया सुधीमां आ शक्तिओनां अनेकानेक तारतम्यवाळां दृष्टांत मळी आवे छे. आवो जे विशेष तारतम्यनो प्रकार ते तो कोई अमुक इंद्रियना विकासनी खामीरूपज गणाय छे, सामान्यतः बुद्धिवैभवनी खामीरूप गणातो नथी.

आ प्रकारनुं जे न्यूनाधिकपणुं ते केटलेक अंशे साहजिक होय छे; तेम केटलेक अंशे ते ते इंद्रियगत न्यूनाधिकताने लीधे पण होय छे. सामान्य वैधर्म्यपरीक्षा माटे प्रथमथीज आखा मगजनुं बंधारण बहु उत्तम प्रकारनुं अने सूक्ष्म होवुं जोईए; उत्तम प्रकारनी विशेष वैधर्म्यपरीक्षाने तो ते व्यापारमां जे इंद्रिय उपयुक्त होय तेनी उत्तम रचनानी अपेक्षा छे. एम पण बने छे के माणस माणसमां वैधर्म्यपरीक्षानी शक्तिनुं जे तारतम्य जणाय छे तेनुं कारण अभ्यास ए पण होय छे. जे लोकोने कोई एकाद इंद्रियनो बहु उपयोग पडे छे ते लोकोने ते इंद्रियनी जे शक्ति आवे छे ते उपरथीज आ वात स्पष्ट समजाय छे. आंधळांने त्वगिंद्रियशक्ति बहु तीव्र होय छे, विलायत वगेरे देशोमां आ, अने दारु चाखनारानी रसनेन्द्रियशक्ति, बहु तीव्र होय छे, इत्यादि. परंतु एटलुं पण स्मरणमां राखवुं के अभ्यासथकी सर्वत्र सर्वदा सारी तीव्रताज उद्भवे एवो नियम नथी; तेम एवो पण नियम नथी के गमे तेटलुं वय होय तो पण अभ्यासथे इंद्रियनो विकास थयांज जाय.

प्रकरण ६.

दर्शन.

१. प्रत्यक्ष अने दर्शनः—प्रत्यक्षोनी वैधर्म्यपरीक्षा करी साधर्म्यानुसार वर्गणी करवाथी पण दर्शन एटले ज्ञान उपजतुं नथी, ज्ञान अथवा दर्शन माटेनी सामग्रीमात्रज मळे छे. ज्यारे चेतन, प्रत्यक्षोने दिगवच्छिन्न स्थानो साथे संयोजी दृश्य विश्वमां स्थळ आपे छे त्यारे ते ज्ञानरूपता गृहे छे. बहारना विश्वमां आ प्रकारे प्रत्यक्षोने स्थापवानो अर्थ ए छे के अमुक प्रत्यक्ष अमुक दिगवच्छिन्न पदार्थनो धर्म छे एम मानवुं, अने ते पदार्थने पण द्रष्टारूप चेतनथी भिन्न अने बाह्य मानवो. शब्दनुं प्रत्यक्ष थतां आपणे तेने अमुक दिशाथी आव्यो एम समजी ते दिशामां स्थापीए छीए, ने पछी ते दिशामां रहेला एवा कोई पदार्थ—एक घंट, वादित्र इत्यादि— साथे तेनो संबंध करावीए छीए, अर्थात् ए पदार्थने शब्दधर्मवाळुं ठरावीए छीए.

आ प्रकारे प्रत्यक्षोने दिगवच्छिन्न पदार्थोमां स्थान आपवुं तेने दर्शन कहे छे. ज्यारे ज्यारे अमुक पदार्थनुं आपणने दर्शन अथवा ज्ञान थाय छे त्यारे त्यारे अमुक प्रत्यक्षोने अमुक दिगवच्छिन्न पदार्थमां स्थान आपी आपणे ते पदार्थनुं दर्शन पामीए छीए एटलुंज बने छे. एक केरीनुं दर्शन थयुं एनो अर्थ एटलोज छे के अमुक आकार, रंग, गंध, इत्यादिना प्रत्यक्षोनुं एक बाह्य अधिकरण 'केरी' ए नामनुं मान्युं, ने तेने दीठुं. आ दर्शनक्रियाथी जे फलरूप दर्शन एटले के ज्ञान थाय तेने ज्ञान अथवा दृष्टि कहीशुं.

आटला विवेचन उपरथी स्पष्ट समजाशे के दर्शनव्यापार छे ते प्रत्यक्षकार्य करतां स्पष्ट रीते चेतनकार्यज छे. प्रत्यक्षमां तो चेतन स्थिर

अधिष्ठानरूपे रहे छे, पण दर्शनमां तो चेतन व्यापारवाळुं थई प्रत्यक्षो उपर अवधान आपे छे, अने साधर्म्यवैधर्म्यनो निर्णय करे छे, एटलुंज नहीं, पण आंतरप्रत्यक्षथकी, ते प्रत्यक्षने उपजावनार बाह्य पदार्थ उपर पण जाय छे.

जुदा जुदा लेखकोए प्रत्यक्षना जेम जुदा जुदा अर्थ मान्या छे तेम दर्शनना पण मानेला छे. साधारण व्यवहारमां तो कोई पण प्रकारना ज्ञानने आपणे दर्शन कही शकीए छीए, अने केटलाक प्राचीन विचारकोए एज अर्थमां ए शब्द वापरेलो छे. अर्वाचीन लेखकोए ए शब्दनो अर्थ "इंद्रियद्वारे बाह्य पदार्थने गृहतो चेतनव्यापार" एटलोज राखेलो छे. आवा पदार्थदर्शनने केटलीक वार बाह्यदर्शन एवुं नाम आपी चेतन पोते पोतानी स्थितिओनुं दर्शन पामे छे तेने आंतर दर्शनथी जुदुं पाडवामां आवे छे.

प्रत्यक्ष अने दर्शनने केटलो संबंध छे तेनो स्पष्ट निर्णय बतावबो कठिन छे. केटलाक लेखको प्रत्यक्षमाना आखा ए बुद्धिव्यापारने दर्शनना पेटामां गणे छे, जे रीते तो कोई इंद्रियजन्य संस्कारनुं वैधर्म्य परखवुं ते पण दर्शनव्यापारनो विभाग गणाय छतां प्रत्यक्ष अने दर्शन बचे भेद मानी, प्रत्यक्षने बाह्यपदार्थ साथे योजवाना व्यापारनेज दर्शन कहेवुं ए वधारे सुगममार्ग छे.

शुद्ध दर्शनव्यापारना स्वरूपनुं वर्णन अनेकानेक रीते करवामां आवे छे. केटलाक एम कहे छे के प्रत्यक्षने दृश्य विश्वमां स्थापवा रूपज ए व्यापार छे, अने अमुक दृश्य पदार्थना अस्तित्वनुं ते एक लिंगमात्रज छे. साधारण रीते तो एम कहेवामां आवे छे के दर्शनव्यापारमां आपणे कार्य (प्रत्यक्ष) नुं कारण (दृश्य पदार्थ) शोधी लेईए छीए. परंतु आ विचार योग्य लागतो नथी उदाहरण–अमुक रंगनुं प्रत्यक्ष थयुं अने तेने कोई दृश्य पदार्थ–एक नारंगी–साथे योज्युं, तो ते स्थाने जे रंगरूपधर्म नारंगीने अर्पायो ते, मने थयेला रंगप्रत्यक्षनुं कारण नथी; खरुं कारण तो तेज के जे ए पदार्थथकी परावर्तन पामे छे ते छे, परंतु पदार्थदर्शनमां आ वात आपणे लेखता नथी, अने क्वचित् क्वचित् जाणता पण नथी.

२. शरीरमां अने शरीर बहार प्रत्यक्षनी स्थापनाः—प्रत्यक्षमात्र कोईने कोई रीते पण बाह्य विश्वमां स्थापवामां आवे छे; बीजी रीते कहीए तो बाह्यत्व पामे छे. छेलामां छेला प्रकारनां

जे शरीरव्यापारनां प्रत्यक्ष ते पण शरीरना अमुक अवयवमां स्थपाय छे; जेम के कोई प्रसंगनी पीडाने अमुक अवयवगतज मानवामां आवे छे. आ प्रकारे प्रत्यक्षनी जे स्थापना तेने प्रत्यक्षनी शरीरमां स्थापना करवी कहेवाय, जेनो एक शब्द शारीरस्थापन एम मानीए; एने प्रत्यक्षना आश्रयनो विर्णय एम पण कहेवाय. जे विशिष्ट इंद्रिय छे ते तो आ उपरांत शरीर बहार पण प्रत्यक्षनो आश्रय बतावे छे, जेम के साकरनो स्वाद, गुलाबनो गंध, इत्यादि लेतां बाह्य पदार्थने ते ते प्रत्यक्षना आश्रयरूप गणवामां आवे छे. आवां दर्शनोमां चेतन एकला प्रत्यक्षनेज वळगी रही तेनो आश्रयनिर्णय करवा जतुं नथी, पण प्रत्यक्ष उपरथीज ते प्रत्यक्ष जे पदार्थनो धर्म होय तेना उपर जाय छे. जेने सामान्यतः दर्शन कहीए छीए, ते जुदां जुदां प्रत्यक्षनी तेमना तेमना बाह्य आश्रयमां स्थापना करवी एनुंज नाम छे.

३. दर्शन अने प्रत्यक्षनुं नियत साहचर्यः—समजणी वय थया पछी एवुं एक पण प्रत्यक्ष नथी थतुं के जे, बराबर रीते वैधर्म्यपरीक्षायकी गृहायुं होय तो अव्यवहित क्षणेज कोई बाह्य आश्रयमां स्थापवामां न आवे. आ स्थापना थोडी के घणी पण परिपूर्ण होय छे. एक शब्दनुं प्रत्यक्ष थतां ते कोई घंट के घडीआळरूप आश्रयमां अथवा गमे ते कोई अनिश्चित आश्रयमां स्थापवामां तो आवे छेज. थोडे के घणे अंशे पण आवी स्थापना थया विना रहेती नथी. आ स्थापनानो व्यापार एवी त्वराथी, एवी यंत्रवत् नियमित रीतिथी, थई जाय छे के प्रत्यक्ष अने दर्शननो प्रत्येक ज्ञानमां विभाग करवो प्रथमाभ्यासीने अशक्यवत् लागे छे.

आ बधी वात वैधर्म्यपरीक्षाथी निश्चित एवां प्रत्यक्षने लागु थाय छे. प्रत्यक्ष अने दर्शन वच्चेनो तफावत वैधर्म्यपरीक्षा विनाज अस्पष्ट रीते गृहायला प्रत्यक्षमां सारो समजाय छे. घणी वार आपणने स्पर्शनां प्रत्यक्ष थायछे, पण तेमना उपर आपणे अ-

बधान आपतां नथी, एटले तेवां प्रत्यक्षनी साथे आश्रयनिर्णय एटले के दर्शननो व्यापार उद्भवतो नथी.

एम मानवाने कारण छे के प्रत्यक्षोने तेमना तेमना आश्रयरूप बाह्य पदार्थोमां स्थापवानी जे क्रिया ते अनुभवद्वारे अभ्यासथी शीखायला क्रमनुं फल छे. तुरतना अवतरेला बाळकने पोताने जे जे प्रत्यक्ष थाय तेमना आश्रयपरत्वे कशुं ज्ञान होतुं नथी. शब्दादिनां प्रत्यक्ष थतां पण ते शब्दनी दिशा प्रति माथुं फेरवी करीने पण बाळक एम जणावी शकतुं नथी के ते शब्दनो आश्रय छे, अथवा क्यां छे ? प्रथमथीज दर्शनव्यापार तो कोई प्रकारनी परंपरित प्रकृतिथी उद्भवे छे, अने अनुभव थतां वधारे विकसतो चाले छे.

४. **दर्शनव्यापारनुं पृथक्करण**:—ज्यारे एकाद शब्द संभळातां आपणे एम कहीए के "अमुक दिशामां घंट वागे छे" त्यारे आपणे शब्दप्रत्यक्षनी वैधर्म्यपरीक्षा करी तेनी साधर्म्यपरीक्षा पण करी लईए छीए. दर्शनव्यापारना क्रमनो आ प्रथमक्रम छे. पूर्वे जो आपणने आ शब्दना जेवो अनुभव थई तेनो संस्कार न रह्यो होय तो वर्तमान शब्दने पण आपणे बाह्य आश्रयमां स्थापी शकीए नहीं.

द्वितीय क्रम जेने वास्तविक रीते दर्शनज कही शकाय तेमां तो घंटना शब्द उपरांत बीजां प्रत्यक्षना संस्कार पण स्मरवा पडे छे. "घंट संभळाय छे" एम आपणे कहीए छीए तेनुं कारण ए छे के आपणा गत अनुभवमां आ जे शब्दप्रत्यक्ष ते बीजां प्रत्यक्षो साथे संकळाई गयुं छे, साहचर्य पामेलुं छे:— सविशेषे चक्षु अने त्वक्द्वारे थतां प्रत्यक्ष साथे जोडाई गयलुं छे. जो पूर्वे घंट आपणे कदापि जोयो न होत तो वर्तमानमां जे शब्दप्रत्यक्ष थयुं ते एवा नामवाळा पदार्थमां आपणे कदापि स्थापत नहीं. आम विचार करतां जेने आपणे दृष्टि एटले दर्शनव्यापारनुं फळ कही आव्या ते एक प्रकारना वर्गीकरणनुंज फळ छे एम जणाय छे. ए आखो व्यापार घणो गुंफित छे अने तेनां अंग प्रत्यक्षनां बनेलां छे.

एटलुं लक्षमां लेवा जेवुं छे के प्रत्यक्षरूप अंगोनुं आ जे वर्गीकरण कह्युं तेमां कांई पण भावनानो अंश भळे छे. ज्यारे अमुक शब्दप्रत्यक्ष उपरथी आपणे ते शब्द घंटनो छे एम घंटने ओळखीए छीए त्यारे घंटनो स्पर्श के तेनुं रूप प्रत्यक्ष होतां नथी. ते तो आपणे मनमां कल्पी लईए छीए, भावनामात्रथकी जाणीए छीए. ए शब्दनो आश्रय घंटने ठरावावामां घंटनां रूप अने स्पर्श आपणे मनमां धारी लईए छीए. "अमुक दिशाथी घंट संभळाय छे" एम कहेवामां जे तात्पर्य रह्युं छे तेनो एक भाग ए पण छे के आपणने एवी खबर छे जे अमुक दिशाए जवाथी घंटने जोई तथा स्पर्श करी शकीशुं अर्थात् तेनां रूप अने स्पर्शनुं प्रत्यक्ष फरी पामी शकीशुं. आ कारणने लीधेज दर्शनने "प्रत्यक्षभावनाक्रम" एवुं नाम पण आपवामां आवे छे. दर्शन पामती वखतेज जे प्रत्यक्ष होय ते अने ते उपरांत रूप स्पर्श आदिनां भावनामय प्रत्यक्ष ए उभये दर्शनव्यापारमां होय छेज.

केटलाक लेखको भावनाने दर्शनना अंगभूत व्यापारमां गणता नथी. संपूर्ण प्रत्यक्ष (एटले के दर्शन अथवा दृष्टि) अने साधारण प्रत्यक्ष (इंद्रियार्थसन्निकर्षजन्य) तेनी वच्चे गुंफनमात्रनोज भेद छे, एक वधारे गुंफित छे, बीजुं सादे सादुं छे, पण उभये वस्तुत: एकज छे एम प्रो. घंटनुं मानवुं छे. छतां एटलुं तो कही शकाय के शब्दादिने बाह्य मानवामां, एटले के अमुक दिशाथकी आवे छे एम गृहवामां, आपणने थयला स्पर्शप्रत्यक्षनो कांई पण भावनारूप भास छे एम तो मानवुंज पडे.

दर्शनव्यापारमां चेतन अमुक प्रत्यक्ष उपरथी भावनाद्वारे अन्यप्रत्यक्ष उपर जाय छे; एटले ए एक प्रकारनी अनुमिति जेवुं देखाय छे. एम पण कही शकाय के "घंट सांभळ्यो" एम कहेवामां अमुक प्रकारनां रूप स्पर्शनां प्रत्यक्ष थशे एनी अनुमिति आपणे करी. आवा कारणने लीधे घणाक लेखकोए दर्शनने एक प्रकारनी "अज्ञात अनुमिति" एवुं नाम पण आपेलुं छे.

परंतु आ प्रकारे दर्शनने उत्तमोत्तम बुद्धिव्यापार साथे सरखाववामां उभय वच्चे जे भेद छे ते वीसरी जवो नहीं. दर्शनव्यापारथी उद्भवतुं ज्ञान एक अपरोक्ष अथवा

सहजउपलब्धि जेवुं छे, अनुमितिथी थतुं ज्ञान परोक्ष उपलब्धिरूप छे. दृष्टि प्राप्त थतानी साथेज अव्यवहित रीते पदार्थनुं ज्ञान थाय छे; अनुमितिमां तेम थतुं नथी. दृष्टिना आ स्वरूपने अवलंबी केटलाक लेखको दृष्टिमात्रने पदार्थप्रत्यक्ष एवुं नाम पण आपे छे; अने ए रीते जे भावनामय मनोव्यापार तेथकी तेने जुदी पाडे छे.

५. दर्शननुं लक्षणः—आ प्रकारे जे पृथक्करण करी बताव्युं ते उपरथी हवे आपणे दर्शननुं लक्षण एवुं करी शकीशुं के "प्रत्यक्ष अने भावनानां तत्त्व जेमां मिश्र छे एवो चेतनव्यापार." एटले के दर्शन ए एवो चेतनव्यापार छे के जेमां प्रथमे प्रत्यक्षना साधर्म्यवैधर्म्यनी परीक्षा थाय छे, ने पछी तेमां भावनाथी अन्य प्रत्यक्षोनो उमेरो करवामां आवे छे, अने छेवटे ए बधां वर्तमानप्रत्यक्षो तेम भावनालब्धप्रत्यक्ष दिगवच्छिन्न एवा कोई आश्रयमां स्थापवामां आवे छे. हाल तुरत आपणे आ लक्षण स्वीकारीए; दर्शनव्यापारनुं हजी वधारे पृथक्करण थवानुं छे ते थया पछी ए लक्षणनी परीक्षा करी शकाशे.

आ चर्चामांथी पण समजायुं हशेज के दर्शनव्यापार ते वर्गीकरणनोज व्यापार छे. शुद्ध चेतनतत्त्वोनुं गुंफन करीने एक आखो भाव बतावबो तेज ए व्यापारनो उद्देश छे. रूप स्पर्श आदि प्रत्यक्षोनुं गुंफन थवानो आधार ए बधा अनुभवने सूतकालपरत्वे जे संबंध होय ते उपर रहे छे माटे दर्शनव्यापारने अप्रतिरुद्ध साहचर्यना नियमना दृष्टांतरूपे बतावबामां आवे छे. आ नियमविषे आवता प्रकरणमां विचार थशे. छतां एटलुं लक्षमां राखवा जेवुं छे के साहचर्यक्रिया अत्र कोई विलक्षणरूपेज प्रवर्ते छे. साहचर्यमां जेम एक पछी एक चेतनव्यापार अनुकर्षाता आवे छे तेम अत्र थतुं नथी, पण कदापि जुदा न करी शकाय ए रीते ओतप्रोत अनेक चेतनव्यापार साथे साथेज थई आवे छे.

दर्शनव्यापारने संबंधे तेना आनुषंगिक शरीरव्यापार पण विचारवा जोईए. जेम प्रत्यक्ष करतां दर्शन वधारे गुंफित व्यापार छे, तेम प्रत्यक्षना आनुषंगिक तंतुव्यापार पण वधारे गुंफित छे. दर्शन छे ते चेतननो प्रत्यक्षथी थतो प्रत्याघात छे एटले अवधानस्थानो साथे ए व्यापारने कोई रीते पण संबंध होवोज जोईए. वळी रूप, स्पर्श आदि प्रत्यक्षोना वर्गीकरणनी पण दर्शनव्यापारमां जरूर रहे छे एटले ऐने अनुषंगे चक्षु, त्वक्, आदि जुदां जुदां तंतुस्थानोनो व्यापार पण चालतो होवो जोईए. आ वर्गीकरणमां संवाहकतंतुनोज व्यापार थाय एम नहीं, पण उद्वाहक तंतुओनो पण थाय. आगळ आपणने जणाशे तेम दर्शनमां कांई क्रियाकारित्व (उद्वाहक व्यापार) रहे छे. वर्गीकरणनुं कार्य अत्र बताव्या ते करतां वधारे गुंफनवाळां अने उत्कृष्ट तंतुस्थानोथी बने छे.

६. दर्शननां विशिष्ट द्वारः—एम कहेवामां आवेलुं छे के प्रत्यक्षमात्रनी साथेज दर्शन पण थाय छे; बीजी रीते कहीए तो प्रत्यक्ष थतां तेने अने बीजां भूतप्रत्यक्षने मिश्र करी जेने आपणे दृष्टि कहीए छीए ते, चेतन उद्भवावे छे. गंधप्रत्यक्षोने, रूपप्रत्यक्षोने, इत्यादि सर्वने आपणे तेते पदार्थरूप आश्रयमां स्थापीए छीए; "हुं गुलाब सुंघुंछुं," "हूं सूर्यनुं रूप जोउंछुं" इत्यादि व्यवहारथी ते वात दर्शावीए छीए. आ वात यथार्थ छतां ज्यारे ज्यारे दर्शन विषे आपणे बोलीए छीए त्यारे एकाद उत्तम इंद्रियजन्य अने विशेषे करी चक्षुरिंद्रियजन्य ज्ञानविषेज बोलता होईए छीए. अमुक पदार्थनुं दर्शन थयुं एम कहेवानो सामान्य अर्थ तो ते पदार्थ चक्षुथी जोयो एटलोज थाय छे. ज्यां चक्षुनी गति न थाय तेम होय त्यां चक्षुनुं काम त्वक् करे छे. आम होवाथी चक्षु अने त्वक् ए बे दर्शननां विशिष्ट द्वार कहेवाय छे.

चक्षु अने त्वक् आ प्रकारे उत्तम अथवा विशिष्ट इंद्रिय शाथकी गणाय छे तेनी सूचना आगला प्रकरणमां करेली छे. ए बे इंद्रियने प्रत्यक्षनां स्थानस्वरूप परखवानुं सामर्थ्य छे तेथी, तथा तेमना व्यापार साथे केटलाक स्नायुव्यापार निरंतर थाय छे तेथी, एमने उत्तम इंद्रियो गणेली छे. आ बे कारणने लीधे आ बे इंद्रियो बीजी बधीना करतां आपणने वधारे विविध अने विस्तीर्ण ज्ञान आपी शकेछे. एक पुष्पनो गंध लेतां आपणने ते पदार्थना एक धर्मनुंज प्रत्यक्ष थाय छे, तेने चक्षुथी जोतां तेनां रूप, आकार, परिमाण आदि अनेक वात जाणवामां आवे छे.

स्थानस्वरूपनुं तारतम्य समजवानी शक्ति अने स्नायुव्यापार एटले ग-

तिनो अनुषंग ए उभयथकी आ इंद्रियद्वारे जे विशेष ज्ञान मळे छे ते बहु जरूरनुं छे. जेने आपणे साधारण रीते दर्शन कहीए ते आपणां आंतर प्रत्यक्षने बाह्यत्व आपवारूप अथवा बाह्य आश्रयमां स्थापवा रूपज छे. बाह्य आश्रय जे दिक्मां रहे छे ते दिक्नुं ज्ञान आपणने चक्षु अने त्वक्थकीज थाय छे, एटले के पदार्थोनी परस्पर स्थितिनुं तेम आपणी दृष्टिथी तेमना अंतरनुं जे ज्ञान थाय छे ते ए बे इंद्रियथीज थाय छे. श्रवणद्वारे प्रत्यक्ष थया पछी जे दर्शन थाय छे ने शब्द अमुक दिशाथी आवे छे एम जणाय छे ते तो घणी व्यवहित क्रियाथी बने छे एम आपणे बतावीशुं.

वळी त्वक् अने चक्षुथकीज पदार्थोमां जे दिक्संबंधने लीधे धर्म आवे छे—आकृति, परिमाण इत्यादि, तेनुं ज्ञान थई शके छे. आ ज्ञान ए इंद्रियो स्थानस्वरूप परखवानी शक्तिथी तेम गतिनी शक्तिथी पामी शके छे. दिक्संबंधथी थता धर्मोने "भूमितिधर्म" कहेवाय छे; तेम जे केवळ गुरुत्वाकर्षणजन्य धर्मो, जेवा के कठिनता, भार इत्यादि ते "यांत्रिकधर्मो" कहेवाय छे. यांत्रिकधर्मोनुं ज्ञान पण त्वगिंद्रियथी थाय छे.

बीजी इंद्रियोथी पदार्थोना जे जे धर्मो जणाय छे ते करतां आ इंद्रियोथी जे धर्म जणाय छे तेज घणा उपयोगना छे. कोई पण पदार्थनुं घणामां घणुं ज्ञान तेना आकार, परिमाण, भार आदि जाणवाथीज थई शके छे.

आकार, परिमाण ने भार त्रण धर्मनुं ज्ञान बहु उपयोगी छे तेनां कारणो घणां छे. पदार्थमात्रने कोई पण प्रकारनो आकार होय छे जेने रूप पण कहीए छीए, रूप अने रंग बे जुदी वात छे. अमुक वस्तु एम कहेतां आपणे अमुक रूप, परिमाण अने भार अथवा कठिनतानुं सूचन करीए छीए. आ नियम वस्तुमात्रने लागु छे. पण गंध के स्वाद वगरनी तो अनेक होई शके छे. एकना एक पदार्थना प्रथम कह्या ते

त्रण धर्म नियत रहे छे, एटले के कोई काळे बदलाई जतो नथी. एक पथराना आकार, परिमाण ने भार तेना तेज रहेशे. आथी उलटी रीते स्वाद, गंध, मधुरता आदि तो वारंवार न्यूनाधिक थाय छे. छेवट एम पण छे के पदार्थोना स्वाद गंधादि करतां तेमना आकारादि विषे लोको वधारे एकमत होय छे, केमके आकारादि प्रत्यक्षोमां इंद्रियनी स्थिति प्रमाणे फेरफार थतो नथी. आ कारणने लक्षमां राखीने आकार, परिमाण अने भार ए त्रणने पदार्थोना "मूलधर्म" गणेला छे, अने बीजा बधाने "उपहितधर्म" गण्या छे.

७. स्पर्शजन्य दर्शन:—यद्यपि दर्शन एटले चाक्षुषदर्शन एम सामान्य रीते मनाय छे तथापि, त्वक्ने पण सर्वदा अने विशेष बालवयमां थतां दर्शननुं उपयोगी द्वार गणवी जोईए. ए तो आपणे जोई चूक्या छीए के आ इंद्रियद्वारे, बाह्यपदार्थो विषेनुं जे घणामां घणुं अगत्यनुं ज्ञान मळे छे ते प्राप्त थाय छे. कोई पण पदार्थनां परिमाण, आकार, भार, ए बधां स्पर्शथी समजाय छे. भार अने कठिनता ते तो एकली आ इंद्रियथीज गृहाय छे, अने जेने आपणे जड पदार्थो अथवा दृश्य पदार्थो कहीए छीए तेनो मुख्य धर्म तो ए जे गुणो कह्या तेज छे. आटला माटे त्वक्द्वारेज आपणने दृश्य पदार्थो साथे घणो निकटमां निकट संबंध थाय छे, एवुं समजाय छे. कोई पदार्थ विद्यमान छे के नथी ते जाणवानी इच्छा थाय छे त्यारे आपण सर्वे आ इंद्रियोज उपयोग करीए छीए. जे पदार्थना अस्तित्वनी आपणने खातरी होय छे तेने आपणे "स्पृश्य" पदार्थ, शरीरे अडकी तपासी शकाय तेवो पदार्थ कहीए छीए. एकली त्वगिंद्रियथी केटलुं ज्ञान थाय छे एनो यथार्थ निश्चय करवा सारुं चक्षुरिन्द्रियने बाजू पर राखवी जोईए, आंधळा माणसना स्पर्शजन्य अनुभवोनो विचार करी जोवो जोईए.

आपणे घणी वखत कहेता आव्या छीए के त्वगिन्द्रियथकीज दिक्नुं ज्ञान बनी आवे छे. आपणा पोताना शरीरमां तेम शरीर बहार जे जे वस्त्वादि छे ते परस्परथी तेम आपणाथी केटलां दूर पासे छे ए, तथा ते

ते वस्त्वादिना आकार अने परिमाण ते, ए उभयनुं ज्ञान थई शके छे. हवे जोवानुं एटलुं छे के आवी जे दिक्ज्ञानरूप दृष्टि तेनुं दर्शन शी रीते थाय छे? कोई एक जन्मनुं अंध बाळक जे प्रकारे पोतानी आसपासना पदार्थोने गृहवा यत्न करे छे तेनो क्रम तपासीए.

पदार्थो त्वक्इन्द्रिय साथे सन्निकर्ष पामे अने तेथी स्पर्शप्रत्यक्ष थाय ए रीते तो दिक्नुं ज्ञान त्वगिन्द्रियथी थाय नहीं, ए वात आगळथी कहेली छे. स्थानस्वरूपपरत्वे अमुक सन्निकर्षोने ओळखवाथी दिगवच्छिन्न एवां कोई बे स्थाननुं ज्ञान संभवे नहीं. ए प्रकारे बे जुदां स्थाननुं ज्ञान थाय ते माटे तो गतिव्यापारनी पण अपेक्षा रहे छे. अंध बाळक पोताना गतिमान करना स्पर्शथकी दिक्परत्वे पदार्थोनी स्थिति केवी छे ते पारखी ले छे.

गतिव्यापारथी आ दर्शनमां जे व्यापार थाय छे ते बराबर समजावा माटे आपणे एम धारीए के ए बाळकने मात्र एकज आंगळी छे, बधी आंगळीवाळो हाथ नथी, अने तेथी एक वखते एक करतां वधारे स्पर्शनुं प्रत्यक्ष ते पामी शके एम नथी. आवी एकज आंगळीने पण, कोई जीवडुं जेम पोतानी मूछो एकथी बीजा पदार्थ उपर लई जाय ने लावे तेम बाळक पदार्थथी पदार्थ उपर फेरवी शके.

एकथी बीजा पदार्थ सुधी आ रीते जे गति थाय ते साथे अवश्य करीने स्पष्ट रीते अमुक गतिनां प्रत्यक्ष थवांज जोईए, अने प्रत्यक्षज आवी गति थवाने समये प्रतीत होवां जोईए. बाह्यगतिने जेवी जेवी दिशा आपवामां आवे तेवुं तेवुं आंतरप्रत्यक्षनुं रूप पण बदलातुं जाय छे. उदाहरण— पोतानी छातीएथी पोतानी आगळ पडेला कोई पदार्थ सुधी, सामे पडेला टेबलनी धार सुधी, आंगळीने लई जवामां एक अमुक जातनो प्रत्यक्षक्रम थशे, अने आ क्रम पेली आंगळी जे क्रमथी

जरा जरा अटकी अटकीने आगळ चाली हशे ते क्रमने अनुसारे बंधाशे. बे फुट सुधी गति करवानी होय तेनाथी जे प्रत्यक्षक्रम उदय थाय ते करतां, तेनी ते दिशामां पण एथी अधी गति करवानी होय तेनो प्रत्यक्षक्रम जुदो पडशे. ज्यारे आंगळी अटके त्यारे जे प्रत्यक्ष थाय ते, अने गतिनां प्रत्यक्षनो क्रम ए, ए उभये मळीने अमुक दिशामां जे अमुक छेटा सुधी गति थई तेना दर्शननी सामग्री मेळवी आपे छे.

जेने अत्र प्रत्यक्षक्रम कहेवामां आव्यो ते अमुक प्रत्यक्षोनो बनेलो होय छे. उद्वाहकतंतुना व्यापारनां तेम अमुक प्रकारना संकोचननां प्रत्यक्ष मळीने ए प्रत्यक्षक्रम थाय छे.

आ प्रकारे जे प्रत्यक्षक्रम थाय छे ते धीमे धीमे स्थूलता गूहे छे, स्थिर थाय छे, अने एनी ए गतिना अभ्यासथी ए प्रत्यक्षक्रमनुं दर्शन वधारे पूर्णता गृहतुं चाले छे. बाळक जे जे वखते तेनी ते जातनी गति करे छे ते ते वखते तेने तेनो ते प्रत्यक्षक्रम अनुभववामां आवे छे. अनुभवमां जुदा जुदा प्रकार आववाथी एटले के एकनी एक पारिचित गति करतां जुदी जुदी गतिओ करवाथी, अर्थात् जुदी जुदी दिशाए जुदा जुदा छेटा सुधी गतिओ करवाथी, मूळनो जे प्रत्यक्षक्रम ते वधारे स्पष्ट थतो जाय छे.

आ बधा समयमां दिक्नुं जे दर्शन थाय छे ते घणुंज अस्पष्ट होय छे, एकज समये अनुभवेलां एवां जुदां जुदां स्थान अथवा बिंदुनुं भान तेमां वधारे होय छे. ए दर्शन बराबर दिक्स्वरूपे स्पष्ट थाय छे तेना अनेक प्रकार छे. वेगमां फेरफार करवो ए पण उपयोगनो थई पडे छे. गति करतां जे अंतर कापवो पडतो होय ते ओछो करवाथी बाळकने एम समजाय छे के ओळखी शकाय एवां जे प्रत्यक्ष थतां हतां तेमां, तथा आखा प्रत्यक्षक्रमना समयमां फेर पडेलो छे. आरंभनां एटले के अवयवे गति आरंभी त्यारनां प्रत्यक्ष अने अंतनां एटले अवयव

स्थिर थयो त्यारनां प्रत्यक्ष, ए बे वच्चे जे अंतर, ते, स्नायुने जेटला वेगथी चलाववा पडे तेना प्रमाणमां वधारे ओछुं लागे छे. आम करते करते ए प्रत्यक्षक्रम कालावच्छिन्न एकश्रेणिरूपे अनुभवाशे.

एकज समये अनुभवातां जुदां जुदां स्थान अथवा बिंदुनो जे प्राथमिक अनुभव थाय छे तेमां, जे प्रकारनी गति थई होय ते करतां उलटी गति करी जोवाथी, नवी स्पष्टता उमेराय छे. ज्यांथी आरंभ करी पदार्थ सुधी बाळक आंगळी लेई गयुं होय तेने बदले पदार्थथी आरंभ सुधी आंगळी लाववामां तेने कोई जुदाज प्रकारना प्रत्यक्षनो अनुभव थशे, नवाज स्नायुओनो व्यापार करवो पडशे, अने प्रथमे जे स्नायुए व्यापार कर्यो हशे ते नरम पडेला लागशे. अनुभव साथे प्रत्यक्षक्रम तो तेनो तेज लागशे, मात्र उलटा क्रमथी जणाशे एटलुंज विशेष.

आ प्रकारे उभये प्रकारनी गति करी जोवाना अभ्यासथी, तेम दिक्‌ना बीजा विभागो प्रति पण एवीने एवी द्विप्रकार गति करी जोवाना अभ्यासथी, बाळकने पोतानी आसपासना प्रदेशनो एक नकशो समजवामां आवशे, अने अमुक समये पोतानुं शरीर तथा बीजा पदार्थो केटले छेटे ने कीये स्थाने छे ते पण जाणवानी शक्ति आवशे.

आ प्रकारे दिक्‌नुं दर्शन पामवानी जे मर्यादा तेनो, उभय करथकी थती गतिओ वडे तेम चरणसाध्य गतिओ वडे घणो विस्तार थई शकशे. जे अंध बाळक आपणे कल्प्यो छे ते ओरडामां फरते फरते ने हाथ लांबा करीने आ अने पेला पदार्थने अडकी अनुभवते अनुभवते घणाक दिग्विभागनुं, पोताना शरीरनी अमुक काळे स्थितिने संबंधे, ज्ञान मेळवी लेशे.

पदार्थो वच्चे अमुक दूरत्व निकटत्वनोज संबंध रहे छे एम मानवामां एम स्वीकारी लेवुं पडे छे के पदार्थो तेने तेज स्थाने स्थिर रह्यां करे छे. बाळक ज्यां सुधी खसतुं नथी त्यां सुधी तो एना पोताना शरीरथकी बीजा पदार्थोनुं माप काढी शके छे; पण

फरवा मांडे त्यारे तो आ माप टके नहीं, अने ते समये कोई बीजा स्थिर पदार्थनी अपेक्षाए अन्य पदार्थोना दूरत्व निकटत्वनो विचार थवो जोईए. पदार्थ पदार्थना स्थानमां फेरफार थाय, तो पण तेमना परस्पर दूरत्व निकटत्वनो निर्णय पण एज प्रकारे बनी शके.

८. **गतिद्वारे आकृति अने परिमाणनुं दर्शनः**— जे रीते बाळक कोई ओरडामां पदार्थोना आपेक्षिक दूरत्व निकटत्वनो निर्णय करी ले छे तेवीने तेवीज कोई रीते पदार्थोनां आकृति अने परिमाणनो पण निर्णय करी लई शके छे. माणसना वदन उपर जुदी जुदी दिशा तरफ हाथ फेरवी जोतां एने जुदां जुदां प्रत्यक्षनो अनुभव थशे. गतिना वेगमां फेरफार करवाथी, उलटे क्रमे गति करी जोवाथी, अने जुदी जुदी दिशाए अनेक गतिओ करी जोवाथी, ते बाळकने अमुक सपाटी उपर अमुक संबंधे अमुक अमुक स्थानो गोठवायलां छे एम समजवामां आवशे. आ रीते स्पर्शसहकृत गतिने चोतरफ फेलावतां तेने आ सपाटीना आकार अने परिमाणनुं ज्ञान थशे. अने छेवटे ए सपाटीनी छेवट सीमानी आसपास आंगळी फेरवी जोवाथी आ ज्ञान वधारे स्पष्ट थई जशे.

आ प्रकारे एकला गतिव्यापारथीज दिक्‌संबंधनुं केटलुंक ज्ञान थई शके छे. ए ज्ञान केटलुं ने केवुं थाय ए कही शकावुं अशक्य छे. सर्वने दिक्‌नुं स्पर्शजन्य ज्ञान थाय छे ते शरीरना कोई पण विस्तारवाळा अवयवद्वारे—हाथद्वारे—ज थाय छे. हवे जोवानुं ए छे के जे अवयवथी स्पर्शद्वारे दिक्‌नुं ज्ञान थाय छे ते अवयव विस्तारवाळो छे एम ते अवयवमां विस्तारधर्म मानवाथी दिक्‌ज्ञान प्राप्त करवामां शुं तारतम्य आवे छे. आंधळुं बाळक ज्यारे पोतानो पहोळो करेलो हाथ कोई पण सपाटी उपर फेरवे छे त्यारे ते सपाटीथी थतां प्रत्यक्षना स्थानोनुं ज्ञान थतुं नथी. प्रथमथकीज आ स्थान ने आ स्थान एम प्रत्यक्षमां पण भेद तो होय छेज, पण ए भेद दिक्‌कृत छे एम समजवामां होतुं नथी.

बाळकने एवी खबर नथी होती के अंगुठाथी अमुक स्थाने आंगळी पडेली छे. एवुं ज्ञान तो गतिद्वारेज प्राप्त थाय छे.

आ वात वधारे स्पष्ट रीते जोवा सारुं हवे आपणे एम धारीए के आंधळुं बाळक एकलुं पोतानी आंगळीनुं टेरवुंज फेरवे छे एम नहीं पण पहोळो करेलो आखो हाथ फेरवे छे. कोई स्थिरबिंदु उपर—जेवुं के कोई लाकडी अथवा पेनसीलनुं माथुं ते उपर—हाथ फेरवे छे एम धारीए. आ वखते तेने गतिप्रत्यक्षनी एक श्रेणि समजाय छे अने गतिनुं दर्शन थाय छे; तेनी साथेज स्पर्शप्रत्यक्षोनी पण एक श्रेणि जे जुदां जुदां तंतुस्थानथी प्राप्त थयेलां प्रत्यक्षोनी होवाने लीधे स्थानस्वरूपपरत्वे जुदां जुदां तत्त्वनी बनेली होय छे ते अनुभवाय छे. ए प्रकारे जोतां अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका, सर्वेद्वारे जुदां जुदां स्पर्शप्रत्यक्ष तेने थाय छे. ए प्रत्यक्षोनां स्थानस्वरूपने आपणे १,२,३,४,५, एवी संज्ञा आपीए. एकनी एक दिशाए जेटली वार पोतानो हाथ ते बाळक फेरवे छे तेटली वार तेनो तेज क्रम १,२,३,४,५, तेने समजाय छे, मात्र एटलुंज बने छे के ए हाथ फेरववानी गतिमां जेटलो वेग मूकवामां आवे ते प्रमाणमां ए प्रत्यक्षोना क्रममां त्वरा के मंदता समजाय छे. ए करतां उलटी रीते हाथ फेरववामां आवे तो प्रत्यक्ष तेने तेज रहे छे, पण उलटे क्रमे थाय छे; ५,४,३,२,१. आवी गतिओनो वारंवार अभ्यास थतां बाळकने एम समजाय छे के ए आखी श्रेणिमांनुं हर कोई एक प्रत्यक्ष, धारो के ५ ए अंकवाळुं प्रत्यक्ष, तेने आखी श्रेणिमां अमुक नियत स्थान छे, अने १ पछी ५ आवे ते माटे अमुक गति निश्चित रीते करवीज पडे छे. आवुं ज्यारे बराबर समजाय छे त्यारे, १ इत्यादि अंकवाळा प्रत्यक्षनी अपेक्षाए ५ अंकवाळा प्रत्यक्षनुं स्थान क्यां छे तेनुं स्वरूप समजवामां आवे छे.

INDIRA S. MEHTA LIBRARY U. UNIVERSITY OF

एने एज रीते हाथ फेरववानी गति नाना प्रकोर करी जोवाथी, एटले के हाथने बीजी दिशाओ तरफ पण फेरववाथी ५ अंकवाळा स्थानस्वरूपना प्रत्यक्षनो, हाथना बीजा भागोनी अपेक्षाए पण स्थाननिर्णय बनी जशे. एम करते करते आखा ए हाथना कोई पण भागथी जे कोई प्रत्यक्ष थाय ते सर्वनां परस्परनी अपेक्षाए स्थानो कीयां कीयां छे तेनो निर्णय बनशे.

आटले सुधी आव्या पछी दिक्नुं स्पर्शजन्यज्ञान संपूर्ण रीते थई शके छे, केम के समकालीन एवां स्पर्शप्रत्यक्षोने हवे अवकाश मळे छे. पोतानो पहोळो करेलो हाथ बाळक कोई पण सपाटी उपर, कोई अजाण्या माणसना मो उपर मूके तो एकज समये तेने घणांक स्पर्शप्रत्यक्ष थशे, ने ते प्रत्यक्षो स्थानपरत्वे भिन्न भिन्न लागशे. उदाहरण तरीके जोईए तो होठनुंज प्रत्यक्ष नाक आंखो आदिना प्रत्यक्षनी अपेक्षाए पोताना स्थानपरत्वे बराबर समजवामां आवशे. आ प्रकारनां एक काळे थतां समकालीन स्पर्शप्रत्यक्षोथकी सामानाधिकरण्यवाळा विभागना समुदायरूप दिक्नुं ज्ञान सहजे थतुं चालशे. एम पण कही शकाय के एकज समये घणे स्थानेथी थतां स्पर्शनां प्रत्यक्षोना अनुभवनी मददथी बाळक नवाज प्रकारनुं दिग्दर्शन पामे छे. आ अनुभवने समयेज बाळक दिक्कृत साहचर्यने कालकृत आनुपूर्वीथकी ओळखतां शीखशे. बीजी रीते कहीए तो स्पर्शजन्य एवुं जे दिक्ज्ञान (दर्शन) ते बे कारणथी थाय छे: गति अने स्नायुप्रत्यक्ष, तथा स्पर्शना प्रत्यक्षनुं अनेकत्व, जे के प्रथमथीज स्थानभेदे करीने गृहायलुं अने तेथी जुदी जुदी गति साथे संबंध राखनार बिंदुओनुं बनेलुं जाणवामां होय छे.

बे ए हाथ पहोळा करीने फेरवी जोवाथी समकालीन दिग्ज्ञान एक हाथे थाय ते करतां वधारे थशे. तेमज कोई मो'टी सपाटी उपर एक अथवा बने हाथ फेरववाथी आवां समकालीन दिग्ज्ञाननी श्रेणिनुं दर्शन थशे. आवी श्रेणिना जुदा जुदा अनुभव

करी जोवाथी, सपाटीना विभागोनुं प्रत्येक प्रत्येक रूपे ज्ञान थशे, अने ते सर्वने भेगा करी जोतां दिक्संबंधी भावनामय ज्ञान पण उदय पामी शकशे.

हाथने दिगवाच्छिन्न रूपे स्पर्शथी अनुभववो ते तेना ते हाथनी गतिथीज बने छे एम नहीं. पण ते हाथ उपर बीजो हाथ फेरवी जोवाथी पण बने छे. अंगुठो ने आंगळीओ, टेरवां ने मूळ के मध्य, ए सर्वना अन्योन्यसापेक्ष स्थाननुं ज्ञान एक हाथ उपर बीजो हाथ फेरवाथीज बाळक प्राप्त करे छे. एटले के बाळक पोताना शरीरनी सपाटीनुं ज्ञान बीजी कोई सपाटीना ज्ञाननी पेठेज प्राप्त करे छे. दिग्दर्शन शी रीते उद्भवे छे तेनो क्रम बतावनाना अत्यार सुधी जे जे यत्न थया छे तेमां गतिने स्पर्श उपरांत वधारे उपयोगनी मानवामां आवेली छे, ने एज वात आ बधा प्रयोगोथी स्पष्ट रीते सिद्ध थाय छे.

एटलुं पण कहेवुं जोईए के दिक्नुं दर्शन स्पर्शथी थाय छे तेमां तृतीयपरिमाण घनत्व (उंडाई) अथवा दूरत्व तेनुं पण दर्शन विस्तार (लंबाई) अने पृथुता (पहोळाई) तेना भेगुंज थाय छे. शरीर आगळथी दूर ने दूरथी शरीर उपर एम हाथने गति आपवामांथी बाळकने शरीरनी अपेक्षाथकी पदार्थोनी स्थितिनुं ज्ञान थाय छे. एक विशाल सपाटी—जेवुं के टेबलनुं पाटीउं—तेना उपर हाथ फेरववाथी बाळकने तेना जुदा जुदा विभागनुं दूर, पासे, ए रूपे ज्ञान थाय छे.

९. **घनत्वनुं दर्शनः**— छेवटे पदार्थोना घनत्वनुं ज्ञान पण समकालीन स्पर्शदर्शनथी थाय छे. पदार्थ घणो नानो आंकणी जेवो होय तो बाळक तेने हाथमां उठावी शके छे, मो'टा गोळा जेवो भारे होय तो बे हाथ वच्चे राखी शके छे, ने एथी पण महोटो तकीआ जेवो होय तो बाथमां लई शके छे.* एम करतांज तेने अनेक स्पर्शप्रत्यक्ष थाय छे, जे बधां अन्योन्यसापेक्ष कीयां कीयां स्थाननां छे ते पण साथेज समजाय

* पदार्थ एवो मो'टो होय के टेबल वगेरेनी पेठे आमांनी एके रीते गृहाय नहीं तो एना जुदा जुदा भाग कोई घन पदार्थना भाग छे एवुं ज्ञान थई शकशे नहीं. ए प्रसंगमां एवा पदार्थनुं घनत्व गतिथकी, अने स्पर्शदर्शननी परंपराथकी, समजाशे.

छे. एज समये वळी संकोचनां पण घणांक प्रत्यक्ष बाळक अनुभवे छे, जे उपरथी पोताना वळेला हाथ अने करनी स्थितिनुं पण तेने ज्ञान थाय छे. एम थतांज तेने एवा पदार्थनुं घन पदार्थरूपे एटले त्रण परिमाण-विस्तार, पृथुता अने घनत्व—वाळा पदार्थरूपे, एटले अमुक आकृति परिमाणवाळा पदार्थ रूपे ज्ञान थाय छे.

१०. **एक एक पदार्थ अने संख्यानुं दर्शनः**—प्रथमे तो एक पदार्थ अने अनेक पदार्थ वच्चे झाझो भेद समजातो नथी, तेमज समस्त वैपुल्य अथवा परिमाण, अने व्यस्त वैपुल्य अथवा संख्या तेनुं ज्ञान पण सहजे थतुं नथी. एक प्रकारनुं दर्शन बीजा प्रकारना दर्शनथी अमुक चिन्हना दर्शनद्वारे जुदुं पडतुं चाले छे. जो सपाटी एकनी एक होय तो स्पर्शसहकृत गति अस्खलित रहे, अने स्पर्शप्रत्यक्षनी श्रेणिमां पण तूट पडे नहीं. सपाटीओ अनेक होय एटले के पदार्थ एकथी वधारे होय तो स्पर्शसहकृत गतिना प्रत्यक्षनी परंपरामां भंगाण पडे, अने स्पर्शप्रत्यक्षनी श्रेणिमां पण तूट समजवामां आवे. आ प्रकारना ज्ञानमां, शरीर उपरनां जुदां जुदां स्थाननी आपेक्षिक स्थितिनुं ज्ञान अनुभवथकी ऊमेराय छे. तेमज ए आपेक्षिक स्थितिमां अवयवोनी गतिने लीधे जे फेरफार पडे छे तेनुं ज्ञान पण अनुभवथी आवे छे. बे हाथने एक एकनी पासे लावववाथी स्पर्शनुं जे बेवडुं प्रत्यक्ष थाय छे तेनुं ज्ञान पण आज रीते बाळकने थई आवे छे. एथी उलटी रीते जो हथेळी अने हाथनो पाछलो भाग उभय स्थळे एकी वखते स्पर्शप्रत्यक्ष अनुभवाय तो तेवा ज्ञानने तो ते बाळक बे पदार्थथी थयेलुं माने छे. तर्जनी उपर मध्यमाने चढावी हथेळीमां राखेली एकाद लखोटी के काकरा उपर आपणे ते बे आंगळीनां टेरवां फेरवीए तो बे पदार्थनो स्पर्श थतो होय एम लागे छे ए अनुभवमांथीज आवुं आपणा मननुं वळण जणाई आवे छे.

११. गतिमान् पदार्थोनुं दर्शनः—दिक्‌ना दर्शन भेगुंज, तेम एक अने अनेक पदार्थना दर्शन भेगुंज, बाळकने, गतिमान् एटले दिक्‌मां गति पामता अर्थात् दिक्‌स्थान बदलता पदार्थोनुं पण ज्ञान थाय छे. गतिमान् पदार्थने हाथथी स्पर्श करवाथकी ए ज्ञान उद्‌भवे छे. आंतर गति नहीं पण बाह्य गति (एटले के हाथनी गति नहीं, पण पदार्थनी गति)नुं जे दर्शन थवुं तेनो आधार, एकज स्पर्शप्रत्यक्षनो संस्कार पडे छे, (सपाटी उपर हाथ फेरववानी पेठे प्रत्यक्षश्रेणि जणाती नथी) ते उपर छे; तेमज एम समजवा उपर पण छे के ए गतिनी दिशा अने तेनो वेग पदार्थना तरफथीज अमुक प्रकारनां छे, पोते नियमेलां नथी. स्पर्शजन्य दिग्‌दर्शन बराबर विकस्या पछीथीज गतिनुं बराबर परिपूर्ण ज्ञान संभवे छे. केम के ते समये गतिने दिक्‌मां थता व्यापाररूपे, दिगवच्छिन्न एवा एक बिंदुथी बीजा बिंदु सुधी जवारूपे, समजी शकाय छे.

१२. उष्णतानुं दर्शनः—स्पर्शथकी पदार्थना दिगवच्छिन्न स्थाननुं, तेनां आकृति परिमाणादिनुं, ज्ञान थाय छे एटलुंज नहीं, पण बीजा धर्मोनुं पण ज्ञान थाय छे. ए बीजा धर्मोमां सादामां सादो धर्म उष्णता छे. पथरो, लुगडुं, माणसनो हाथ, इत्यादिनो स्पर्श करतां बाळकने उष्णतानां तारतम्य समजवामां आवे छे अने उष्णता(अथवा शीतता)नुं जे प्रमाण समजाय ते अमुक पदार्थमां छे एम माने छे. आ प्रकारे पदार्थगत उष्णतानुं जे ज्ञान मळे छे ते घणुं अनिश्चित रहे छे. आगला प्रकरणमां बताव्या प्रमाणे उष्णताना प्रत्यक्षमां स्पर्श करनार भागनी उष्णताना प्रमाणमां फेरफार थयां करे छे, वास्तविक रीते कहीए तो स्पर्श करनार भाग अने स्पर्श्यवस्तु ते बेनी उष्णता परस्परना प्रमाणमां केटली छे ते अनुसारे ए फेरफार जणाय छे. एटलाज मोट उष्णता शीततानां प्रत्यक्षने बीजां माणसने थतां तेवां प्रत्यक्षो साथे सरखाववां पडे छे, एनुं बराबर माप लेवा भौतिक यंत्रो योजवां पडे छे.

१३. कठिनता मृदुतानुं दर्शनः—हवणां जेनुं वर्णन कर्युं ते अनिश्चित उपहित धर्म करतां कठिनता मृदुता, स्थितिस्थापकत्व अस्थितिस्थापकत्व, गुरुत्व, रूक्षता, ऋजुता, ए धर्मो विषे विचार करवो वधारे अगत्यनो छे. आ बधा धर्मना ज्ञानमां उष्णताना ज्ञान करतां अनेक प्रकारनां प्रत्यक्ष सहाय थाय छे. ए बधानुं दर्शन सावधान स्पर्शद्वारेज थाय छे. एतो स्पष्टज छे के बाळकने कठिनतानां विविध तारतम्यनुं ज्ञान स्नायुबलनो प्रयोग करी पदार्थोने दाबवाथी, धकेलवाथी, खसेडवाथी थई शके छे. परंतु एम करवामां स्पर्शप्रत्यक्ष साक्षात् अनुभवाय छे. आवा जे अनुभव थाय तेमनामां जे संबंध होय ते उपर कठिनता अथवा अस्थितिस्थापकत्वना ज्ञाननो आधार छे. पदार्थ माटी जेवो मृदु होय तो स्नायुबलना प्रयोगनी साथे जे दबाणनुं प्रत्यक्ष थाय तेमां नहीं जेवोज वधारो थायछे; बळथकी ए पदार्थ मार्ग आपे छे ने कांईक गति उपजी आवे छे. एथी उलटी रीते पदार्थ लाकडाना कटका जेवो कठिन होय तो बळना प्रयोगमां वधारो थतानी साथे दबाणना प्रत्यक्षमां पण वधारो थाय छे, अने कशी गति उपजती नथी.

१४. गुरुत्वनुं दर्शनः—एज रीते गुरुत्वना दर्शनमां पण सावधान स्पर्शनोज अनुभव छे. साधारण रीते कोई पण पदार्थना भारनो निर्णय आपणे तेने हाथमां उपाडी जोईने करीए छीए. जेम पदार्थ वधारे भारवाळो तेम तेने उपाडी राखवामां वपरातुं तंतुबल पण वधारे, अने दबाणना प्रत्यक्षनुं वैपुल्य पण वधारे.

१५. रूक्षता ऋजुतानुं दर्शनः—आ उपरांत आपणने रूक्षता ऋजुतानां पण अनेक तारतम्यनुं दर्शन थाय छे. कोई पण सपाटी, जेवी के एक वगर घडेला पथरानी, तेनी रूक्षतानुं ज्ञान, केटलेक अंशे तो, फकत हाथ पहोळो करीने तेना उपर मूकवाथीज थाय छे. हाथना जुदा

जुदा भागथी जे दबाणनां प्रत्यक्ष थायछे तेना वैपुल्यमां तारतम्य समजाय छे तेथी, ने वैपुल्यतारतम्य अमुक स्थानकृत छे एम पण साथेज अनुभवाय छे तेथी, रूक्षतानुं, एटले के सपाटी उपरनी असमानतानुं ज्ञान थई आवे छे. ए वात तो ठीक छे, पण ज्यारे हाथने एवी सपाटी उपर फेरववामां आवे छे त्यारे आ ज्ञान बहु स्पष्ट थाय छे. एम करती वखते नानी मोटी सर्व विषमता [= असमानता] गतिनी आडे आववा थकी समजाती चाले छे. रूक्ष सपाटी उपर हाथनी गतिने आवुं विघ्न नडे छे, ऋजु सपाटी उपर हाथ तुरत चाल्यो जाय छे.

कठिनता अने गुरुत्वनां दर्शन साथे, स्थिर अथवा गतिमान गमे तेवा पदार्थथी प्रतिरोध थतां जे प्रतिरोधनुं दर्शन उद्भवे छे ते पण जोडायलुं छे. कोई छोकरो कोई भारे पदार्थ, जाणे के एक टेबलने खसेडवानुं करतो होय तेनुं प्रतिरोधबल केटलुं छे एनी अजमायश, पोते जे स्नायुबल वापरे तेथी, तथा तेनाथी शी असर थाय छे एटले के अल्पत वैपुल्यवाळां दबाणनां प्रत्यक्षसहकृत गति नीपजे छे के नहीं ते जोवाथी, अथवा गति थती होय तो एथी ओछा वैपुल्यवाळां दबाणनां प्रत्यक्षसहकृत गतिने जोवाथी, करी लेछे. एज रीते गतिमान् पदार्थने अटकाववापरत्वे पण समजी लेवुं.

एटलुं अत्र कहेवुं जोईए के आ प्रकारे जे दर्शनो स्पष्ट साक्षात् दर्शन जेवां जणाय छे तेमां पण दर्शननो " प्रत्यक्षभावना "—रूप जे स्वभाव ते सारी रीते जणाया विना रहेतो नथी. सावधान स्पर्शथकी गुरुत्वनुं दर्शन पाम्या पछी, आपणा प्रयास विना पण पदार्थनो स्पर्श थतां आगळना सावधान स्पर्शमां जे स्नायुबल वापरवानो अनुभव थयेलो तेनुं भान थाय छे. एज प्रकारे गतिनी साहाय्यथी रूक्षता के ऋजुतानुं पूर्ण दर्शन पाम्या केडे सहजासहज कोई सपाटीनो स्पर्शमात्र थतांज आ सावधान अनुभवनुं स्मरण थाय छे. एनी एज रीति सर्वत्र— कठिनता, मृदुता, गुरुत्व, इत्यादिमां समजवी; तेमज " भूमिति "—धर्म (आकृति-परिमाण) ते परत्वे पण समजवी.

१६. पदार्थोनी स्पर्शजन्य सहजोपलब्धिः—आ रीते जे बताव्या ते बधां स्पर्शजन्य दर्शनोथी आंधळा बाळकने पदार्थोनी सहजोपलब्धि थाय छे. लोढाना एक कटकाने हाथमां लीधाथी जे प्रत्यक्ष थाय छे, ते करतां लाकडाना कटकाने हाथमां लीधाथी जुदां प्रत्यक्ष थाय छे. प्रथमे वस्तु वस्तुनां जे प्रत्यक्षो थाय तेना समूहमांनां प्रत्यक्षोने एक एकथी जुदे जुदां ओळखवां जोईए. अने ते ते प्रत्यक्षानुसार ते ते धर्मनुं दर्शन मनमां उदय थवुं जोईए. एम थया पछी एक प्रत्यक्षसमूह बीजा प्रत्यक्षसमूहथी जुदो ओळखी शकाय छे. प्रत्येक पदार्थनां उष्णता, परिमाण, आकृति, गुरुत्व आदि नक्की करते करते आपणे धारेला आंधळा बाळकने, पदार्थोना साधारण धर्मोनुं सारी रीते ज्ञान थई शकशे.

पदार्थने दिगवच्छिन्न पदार्थरूपे सर्वदा अनुभववा रूप अबाधित प्रतीति थवी ते वारंवार स्पर्शजन्य दर्शन पामवानुं परिणाम छे. जेटली जेटली वार पेलो आंधळो बाळक अमुक पदार्थ, जेवो के पोताने रमवानो लाकडानो घोडो, के बनावटनी बिलाडी, हाथमां ले छे तेटली तेटली वार तेने तेनां तेज प्रत्यक्ष थाय छे; अथवा तेना तेज धर्मनुं दर्शन थाय छे. आ प्रकारे तेना ते धर्मसमूहनुं अनेक वार, गमे त्यारे पण, तेने ते रूपेज दर्शन थयां जवाथी, बाळकने एम समजाय छे के ए धर्मनो आश्रय (पदार्थ) बाह्य दिक्मां त्रणे काळमां एकने एक रूपे एटले अबाधित रीते छे. स्पर्शजन्य आवा अनुभवना समूह साथे ओछुं सादृश्य समजातां एम मानवानुं तेने कारण मळे छे के मूळना अनुभवथी थोडुं विसदृश पण घणे भागे सादृश्यवाळुं एवुं आ जे कांईक छे ते अमुक वर्गमांनुं एक छे; जेमके केरी, चोपडी इत्यादि.

आ रीते स्पर्शजन्य धर्मदर्शनने तेना तेज रूपे वारंवार पामवाथी बाळक आखा ए पदार्थने, तत्काल प्रत्यक्ष नहीं एवा अन्य धर्मसमेत

ओळखतां शीखशे. केरीनो स्पर्श थतां आवां मिश्र स्पर्शप्रत्यक्षोनो अनुभव थई, आ केरी छे, एटले के अमुक स्वादवाळो पदार्थ छे एम ते ओळखशे; एकाद घंटनो स्पर्श करतां आखा ए घंटने, तेना शब्दधर्मथकी तेम अन्यधर्मथकी पण ओळखशे. आंधळां माणसोनुं अवलोकन करवामांथी एम जणाय छे के पदार्थोनी आ प्रकारनी सहजोपलब्धिने सारी रीते विकास पण पमाडी शकाय छे, अने पदार्थ पदार्थनां वैधर्म्य त्वरित त्वरित ओळखी शकाय तेवुं सामर्थ्य तेमां आणी शकाय छे. अत्र जे कह्युं ते सर्व उपरथी एम समजवानुं नथी के धर्मनुं ज्ञान थया पछी पदार्थनुं ज्ञान थाय छे. धर्मनुं ज्ञान थवानी साथेज तेना आश्रयनुं ज्ञान होवुंज जोईए, केम के आश्रय विना धर्म शामां रही शके ? एटले अत्र जे कह्युं ते बधानुं तात्पर्य एम छे के पेला बाळकने कोई पण आश्रय (= पदार्थ) नुं ते आश्रयरूपे जे ज्ञान थाय छे ते इंद्रियजन्य प्रत्यक्ष थतानी साथे सहजोपलब्धिथी थाय छे.

१७. स्पर्शजन्य अने चक्षुर्जन्य दर्शनः—उपर जे स्पर्शजन्य दर्शननो सार कही बताव्यो तेथी ते दर्शननो सविशेष स्वभाव केवो छे ते समजायुं हशेज. पदार्थज्ञान थवानो सीधामां सीधो एटले साक्षात् अथवा अपरोक्ष मार्ग एज छे. एमां भावना करतां प्रत्यक्षनो भाग वधारे छे. पण ए दर्शन अमुक वखते केटले सुधी ग्रहण करी शकाशे ए मर्यादा बहु टुंकी छे. जे आंधळा बाळकनुं दृष्टांत आपणे लीधुं छे ते बाळक कोई एक वखते पोताना हाथथी साक्षात् ग्रहण करवामां तो दृश्य विश्वनो घणो थोडामां थोडो भाग गृही शकशे, एटले के पोतानी पहोचमां होय अने एकी वखते सरखी रीते स्पर्शी शकाय तेवा पदार्थनेज गृही शकशे.

आ प्रकारनुं साक्षात् पण टुंकी मर्यादावाळुं जे दर्शन ते करतां चक्षुर्जन्य दर्शन उलटीज जातनुं छे. स्वाभाविक रीते तो चक्षुथी जोवुं

ए दर्शननो मुख्य अने सर्वोपरि प्रकार छे. दृश्य पदार्थोने ग्रहण करवानी मर्यादापरत्वे आ दर्शन स्पर्शदर्शन करतां अनंतगुण अधिक छे. आपणी पासेना पदार्थोनुं ग्रहण थाय छे एटलुंज नहीं, पण आपणाथी अतिदूर एवा तारा अने ग्रहादि तेनुं पण दर्शन चक्षुद्वारे थाय छे. तेमज आपणाथी जुदे जुदे अंतरे अने जुदी जुदी दिशामां आवेला अनेक पदार्थोनुं पण एककालावच्छिन्न ग्रहण चक्षुथी थाय छे, अर्थात् चक्षुथी दृश्यविश्वना एक आखा प्रदेशनुं ग्रहण—दर्शन—बने छे.

चक्षुर्जन्य दर्शन सर्वोपरि छे ए वात अनेक रीते सिद्ध करवामां आवे छे. जेने आपणे जोई न शकता होईए तेवा कोई ए पदार्थनो गंध, स्वाद, के स्पर्श अनुभवतां ते ते धर्मना आश्रयनो जे चक्षुग्राह्य आकार तेनुं तुरत स्मरण थाय छे. एज प्रकारे एक शब्दमात्र बोलतां पण, अनिवार्य रीतेज, आपणा मनमां ते शब्दवाच्य पदार्थनुं भान थाय छे. "घंट"—शब्द घंटना शब्दनुं भान करावता पूर्वे घंटनी दृश्य आकृतिनुं स्मरण करावे छे; "केरी"—शब्द केरीना स्वादनुं स्मरण करावता पूर्वे केरीना रूप रंगनुं स्मरण करावे छे.

दृष्टि एटले के चक्षुथी जोवाना व्यापारनुं परिपूर्ण तात्पर्य वर्तमान समयमां स्थपायला दृष्टिवादथी, ते वादना स्थापनार बीशप बर्कलीए सारुं स्पष्ट करी आप्युं छे. ए वाद प्रमाणे चक्षुने जे साक्षात् ग्रहण थाय छे एम मनाय छे तेमांनो घणो भाग स्पर्शजन्य होय छे. एटले के दिक्नुं जे चाक्षुषदर्शन ते पण, ए दर्शन करतां वधारे साक्षात् एवुं जे दिक्नुं स्पर्शजन्य दर्शन, तेनी एकत्र भावनाने एकत्र करी संज्ञा आपवा रूप छे. चक्षुव्यापारनी आ प्रकृतिने घणी वार खामी रूपे गणवामां आवे छे, पण ते खूबी मानवा जेवी छे. आ प्रकारे, साक्षात् स्पर्शजन्य ज्ञाननां फळने एकत्र करी संज्ञा आपी शकवाना सामर्थ्यने लीधेज चक्षुने दर्शनव्यापारमां सर्वोपरि मानेलुं छे.

१८. चक्षुथी दिक्नुं दर्शनः—जेम स्पर्शमां बने छे तेम चक्षुमां पण कीकीनी वैधर्म्य परखवानी शक्ति एकलीथीज दिक्नुं ज्ञान संभ-

वी शकतुं नथी. एमां पण गतिनी साहाय्य जोईए. चक्षुथी थता दिक्-दर्शनने समजवा माटे जे गतिनो अनुभव थायछे तेनुं बराबर पृथक्करण करी जोवुं जोईए. आ चर्चा सीधी ने सादी रीते थई शके माटे प्रथमे आपणे एम धारीशुं के कोई एक बाळकने मात्र एकज आंख छे; ने ए आंखमां प्रत्यक्षयोग्य स्थान, कीकीनी अंदरनो पीळाशवाळो पूर्ण रीते जोवानुं सामर्थ्य धरावनार भाग छे तेज छे, एम पण मानीशुं.

नाना नाना छ स्नायुना एक व्यूहथी आंख पोताना मध्य बिंदुनी आसपास घुमी शके छे. ए घुमवाथी, जे पीळाशवाळो भाग कह्यो ते जोवाना प्रदेशनां जुदां जुदां बिंदुनी सन्मुख लावी शकाय छे, कोई पण गति करवामां बाळकने एक बिंदुथी बीजा बिंदु सुधी हाथ लेई जतां लावतां थती हती तेवी प्रत्यक्षश्रेणि समजाय छे. एक बिंदु आगळथी बीजा बिंदु आगळ कीकीने लाववामां अमुक स्वरूपवाळां गतिप्रत्यक्षोनी श्रेणि अनुभववामां आवशे. अत्र पण जे छेवटनुं प्रत्यक्ष, एटले के चक्षु स्थिर थाय ते समयनुं प्रत्यक्ष, अने आखी श्रेणिमांनां बीजां प्रत्यक्षोनी भावना, ए उभयथी अमुक दिशा अने मर्यादावाळी गतिना सामान्य दर्शननी सामग्री बनी आवे छे.

आ श्रेणिनो वारंवार अभ्यास थवाथी, एनी त्वरामां फेरफार राखी जोवाथी, एने उलटाववाथी, अने छेवटे जुदी जुदी दिशाए एवी प्रत्यक्ष-श्रेणि अनुभववाथी, जेम हाथनी गतिथी थतुं हतुं तेम, दिगवच्छिन्न अमुक प्रदेशमां थती गतिनुं दर्शन अधिकाधिक स्पष्टता गृहतुं चालशे.

आ रीते बाळक चक्षुनी मर्यादा सुधीना आखा प्रदेशनुं ग्रहण करी शके, एटले के एकाद सपाटी उपर अथवा बे परिमाणवाळा दिक्प्रदेश उपर भिन्न भिन्न बिंदुओनी परस्परसापेक्ष स्थितिनो नकशो करी शके. एनी एज रीते, कोई पदार्थनी बाह्य सपाटी उपर बाळक पोतानी आंख

जुदी जुदी दिशाए फेरवी शके, अने तेम करवामां थतां अनेक गति-प्रत्यक्ष तथा तेनी साथेज अनुभवातां चाक्षुषप्रत्यक्ष ते बे वडे, ए पदार्थनी सपाटीनां विस्तार, आकृति अने परिमाणनुं दर्शन पामी शके. कोई एक गोळ पदार्थ, जेवुं के एक चक्र तेना मध्यबिंदुथी व्यास सुधीनां अनेक बिंदु उपर दृष्टि फेरवे; अने ते गतिमां जे न्यून होय ते पाछुं आखा परिघ उपर दृष्टि फेरवीने पूर्ण करे. आ प्रकारना अनेक गति-व्यापारथकी, चक्षुसंबद्ध आकृतिनुं कोई पण प्रकारनुं एवुं ज्ञान अवश्य मळी शके के जेनाथी अन्य आकृतिओ करतां अमुक आकृतिने जुदी ओळखवामां पछीथी चूक न आवे.

हवे एम धारो के ए बाळकने जे एकज दृष्टिबिंदु हतुं तेने बदले आखी ए कीकी एटले के दर्शन पामवा योग्य आखो प्रदेश, अने तत्संबद्ध तंतुव्यूह छे. आ रचनाने लीधे, आंख स्थिर होय तो पण, एकी वखते, ए बाळकने घणांक स्पष्ट, अने प्रथमथीज नियतस्थान तथा रूप-रंगवाळां दर्शन थई शकशे. परंतु आवां जे जुदां जुदां दर्शन तेनुं यथार्थ स्वरूप तो कीकीने गति आपवाथीज समजाशे. कीकी आखी ए होवाने लीधे, गतिव्यापार करतां एक बिंदुथी बीजा बिंदु उपर आंख वाळवाथी प्रथमना बिंदुनुं दर्शन छेकज नहीं थाय एम नहीं बने. प्रथमे साक्षात् दर्शनथी गृहेला एवा बिंदुनुं पण परोक्ष दर्शन तो थशेज. उदाहरण– चक्रना मध्यबिंदुथी परिघ उपरना कोई बिंदु पर्यंत जवामां प्रथमना बिंदुनुं चक्षुर्गत चित्र अनेक बिंदुथी थतां तेवां चित्र करतां पाछळने पाछळ पडतुं जशे; एटले के प्रथमना बिंदुनुं दर्शन तो थयांज करशे, पण तेनी स्पष्टतामां उत्तरोत्तर न्यूनता थती जशे. एज प्रकारे परिघ उपरना जे बिंदु उपर चक्षु जतुं हशे ते बिंदुनुं दर्शन पण आवीज परोक्ष रीते प्रथमथी थवा मांडशे, अने साक्षात् रीते ते बिंदुनुं दर्शन ते पछी थशे.

आ प्रकारनी चक्षुनी गतिनी साथेज चक्षुर्गत चित्रनो जे फेरफार तेना अनुभवथी, चाक्षुषप्रत्यक्षोनो दिक्संबद्ध क्रम, जेम हाथनी गतिथी नक्की थतो हतो, तेम नक्की थई जशे. एम धारो के कोई बिंदु **प** कीकीनी उपर, अने कीकीना मध्यबिंदु **क** थी जमणी बाजुए आवेलुं छे, अने तेने अमुक स्थान स्वरूप **स** छे. ज्यारे ज्यारे **प** ने प्रोत्साहन थशे त्यारे त्यारे बाळकना अनुभववामां एम आवशे के **क**द्वारे ए प्रोत्साहनना कारण(पदार्थ इत्यादि)ने गृही शकवा माटे अमुक प्रकारनी गति करवी आवश्यक छे. बीजी रीते कहीए तो परोक्ष रीते जे बिंदुने **प** ग्रहण करे छे ते बिंदुने साक्षात् रीते **क** थी ग्रहण करवा माटे अमुक गतिव्यापारनी अपेक्षा छे.

आ प्रकारना अनेकानेक अनुभव थया पछी बाळक पोतानी मेळेज, यंत्रवत् व्यापारथीज, **क** नी अपेक्षाए अमुक सन्निकर्षनुं स्थान नकी करी शके छे. एक सन्निकर्ष थया पछी आंखमां ते सन्निकर्षनी दिशाप्रति गति थवानुं वळण आवे छे. उदाहरण– ओरडामां डाबी बाजूएथी प्रकाश के दीवो दाखल थतो जोई तुरतज आंख अथवा आखुं मस्तक ते दिशा तरफ फरे छे. आ उपरथी एम समजाय छे के आ तंतुतत्त्व साथे संबंधवाळा आ प्रकारना स्थानस्वरूपवाळा सन्निकर्षनी साथे, हवे साक्षात् दर्शन परिपूर्ण रीते थाय तेटला सारुं आवश्यक जे गतिव्यापार ते पण भावनागम्य थयो छे. बीजी रीते कहीए तो एक प्रकारना स्थानस्वरूपवाळां प्रत्यक्षमात्रने **क** नी अपेक्षाए अमुक स्थाने स्थापवामां आवे छे.

आवा गतिव्यापार जुदी जुदी दिशाए नाना प्रकारथी अनेकानेक रीते करी जोवाथी स्थानस्वरूपनां विविध तारतम्यसमेत जे चाक्षुषप्रत्यक्षो तेनां स्थान परस्परनी अपेक्षाए तेम दृष्टिना मध्यबिंदुनी अपेक्षाए नक्की कराशे. आटलुं थया पछी बाळक, आंखने हलाव्या विना पण, घणाक पदार्थोवाळा विशाल प्रदेशने एकी वखते गृही शकशेः एटले के ते प्रदेशना पदार्थोना स्थाननो तुरत तुरत निर्णय करी लेशे, एक बीजानी उपर छे, के पोताथी जमणे के डाबे छे, पोताथी अमुक छेटे छे, इत्यादि तुरत जाणी शकशे.

आटली स्थितिए आव्या पछी बाळक, कोई पण पदार्थनी आकृतिनुं, एकज दृष्टिपात थतां, दृष्टि जराक स्थिर करवाथी, ग्रहण करी शके छे. ए प्रकारे आगळ जे चक्रनुं दृष्टांत आपणे आपी गया ते चक्रनुं, गोळ पदार्थरूपे दर्शन, स्थिर आंखने पण थई शकशे. आ रीते गोळपणानुं जे दर्शन अव्यवहित क्षणेज थाय छे, ते एटलाज उपरथी के गोळ आकृतिनां विविध बिंदुने गृहतां जे संस्कार कीकीमां पडेला होय छे ते स्वतःज तेमनां बाह्य स्थाने, एटले के जोवाना प्रदेश उपरना योग्य बिंदुए, स्थपायला होय छे. एज रीते पदार्थनुं परिमाण पण तुरतज गृहवामां आवे छे. कीकी उपरना संस्कारनुं कद अथवा विपुलता तेयकीज, आंखने दृश्यमान पदार्थना आखा परिमाणनुं दर्शन पामवा केटलो गतिव्यापार करवो पडशे तेनुं भान तुरत थई आवे छे.

१९. चक्षुर्द्वारे परिमाण अने आकृतिनुं दर्शनः– कीकीने दर्शनमां आवता संस्कारोने स्थानपरत्वे ओळखवानी जे सूक्ष्मता आवे छे, अने तेनी साथे गतिव्यापार परखवानुं जे सामर्थ्य सर्वदा मळेलुं रहे छे, ते उभयथकी, साधारण रीते स्पर्शमात्र वडे पदार्थनां परिमाण अने आकृति समजाय, ते करतां चक्षुवडे सारां समजी शकावानो संभव छे. रेखापरिमाणनी परीक्षा चक्षु सारामां सारी रीते करी शके छे, अने बे रेखानी लंबाईमां केटलो तफावत छे ते वात बहु सूक्ष्मताथी समजी ले छे, आ रीतिनी रेखापरिमाण समजवानी शक्तिने

लीधे, सपाटीना परिमाणनुं ग्रहण करवानी शक्ति पण वधारे सूक्ष्म अने याथार्थ्यवाळी थती जाय छे.

एम नक्की करवामां आव्युं छे के रेखापरिमाणनुं सूक्ष्ममां सूक्ष्म तारतम्य गतिव्यापार विना ग्रहातुं नथी. एम पण नक्की करवामां आव्युं छे के बे रेखाने सरखाववु ज्यारे ते समांतर होय त्यारे वधारे ठीक पडे छे. हेमहोल्ट्झ कहे छे के समांतर सीधी लीटीओने सरखाववुं एटलाथकीज सहेलुं पडे छे के कीकीमां थता एकना एक फेरफारनी श्रेणिमांज बधीए लीटीओ वारा फरती परखाई जाय छे.

परिमाणनुं चाक्षुषदर्शन थवुं जेम सूक्ष्म कार्य छे, तेम सपाटीनी आकृतिनुं ग्रहण थवुं पण तेवुंज छे. कोई पण आकृति ते पोताना जुदा जुदा विभागनां जे परस्पर सापेक्ष स्थान होय तेनी बने छे, अने विशेषे करीने तो जे मर्यादाथी तेनुं छेवट रूप नक्की थई बंधायलुं होयछे तें रेखाओनी रचनानी बने छे. आवी आकृतिनुं दर्शन पामवामां, रेखाओनी दिशानी परीक्षा करवी ए प्रथम वात छे. चोखुण के त्रिकोण जेवी सीधी लीटीथी बनेली आकृतिओनुं समग्र रूप समजवा प्रत्येक लीटीनी दिशा समजवी जोईए, तेम खुणा आगळ ते दिशामां केटलो फेरफार थाय ते जाणवो जोईए. अथवा आकृति बांकी लीटीओनी बनेली होय तो तेना रूपनुं दर्शन, लीटीओनी दिशामां जे सतत परिवर्त थयां जाय छे ते, तथा तेवो परिवर्त केटली त्वराथी थाय छे ते, ए बे वात लक्षमां राखवाथी बनेछे.

आकृति ग्रहण करवामां जे बीजी वात रहेली छे ते ए छे के परिमाण परिमाणनुं आपेक्षिक प्रमाण शुं छे. अमुक पदार्थनुं शुं परिमाण छे ते वात, निश्चयपूर्वक, आपणे साधारण चक्षुव्यापारमां जोता नथी. परंतु कोई सीधी लीटीनी आकृतिनी बे बाजुनुं, कोई अंडाकृतिना लांबा टुंका प्रमाणनुं, इत्यादि पदार्थोनुं आपेक्षिक परिमाण बहु संभाळथी लक्षमां लईए छीए. मनुष्यआकृतिना चित्रमां, अकेक अवयवने अकेक साथे जे प्रमाण होवुं जोईए तेमां सहज फेरफार थतां पण ते फेरफार, अवलोकन करनारनी आंखे तुरत समजाय छे, ए वातथी पण अत्र जे कह्युं ते सिद्ध थवा जाय छे.

साधारण रीते जे दर्शन थाय छे तेमां पदार्थोना परिमाण उपर झाझुं लक्ष रहेतुं नथी तेनुं कारण एम जणाय छे के आकृतिनुं दर्शन जे घणुं वधारे उपयोगनुं छे ते उपर वधारे लक्ष रहे छे. ए पण एक कारण छे के पदार्थ अने दृष्टि वच्चेना अंतरना प्रमाणमां पदार्थनुं परिमाण न्यूनाधिक समजाय छे.

२०. उभय चक्षुथी दिक्नुं दर्शनः—साधारण रीते आपणे बे आंखथी जोईए छीए; एटले बन्ने आंख मळीने एक चक्षुरिंद्रिय थाय छे, एम समजवुं जोईए. अनेक बातो उपरथी एम सिद्ध थाय छे के दिक्नुं दर्शन थवानी क्रियानो विकास उभये चक्षु साथे रही व्यापार करे छे तेमांथीज थतो चाले छे.

जोवामां बन्ने आंखो एक एकने सहाय थाय छे ते सहाय थवानुं, स्पर्श करवामां बन्ने हाथ एक एकने सहाय थाय छे ते सहाय थवा करतां जुदा प्रकारनुं छे. कोई एक वखते गृहवामां आवतो प्रदेश बे हाथथी तो द्विगुण थतो लागे छे, परंतु ज्यारे कोई पदार्थ सामे आपणे बन्ने आंखथी जोईए छीए त्यारे जोवाना प्रदेशनो महोटो भाग तो उभये चक्षुने साधारणज होय छे. उभये चक्षु एकना एकज मध्यबिंदु उपर स्थिर होय छे अने जोवाना प्रदेशनो आखो ए मध्यभाग उभये चक्षुथी देखाय छे. ए प्रदेशनी डाबी जमणी मर्यादा, डाबी जमणी आंखनी शक्तिने लीधे थोडीक वधे छे खरी; एटलुं वधुं छतां उभये चक्षुने साधारण एवो जे प्रदेश छे ते, तेम प्रत्येक चक्षुनो जे असाधारण प्रदेश छे ते, एमांनुं कोई एक चक्षुथी गृहाय तें करतां द्विगुण छे एम नथी; अर्थात् एकज देखाव, एकज एकाकार दर्शन, आपणे पामीए छीए.

आ स्थाने जे सामान्य नियम बताव्यो तेने जराक स्पष्ट करवानी अपेक्षा छे. जोवाना प्रदेश उपरना केटलाक पदार्थो, चक्षुनी स्थितिना बिंदुनी अपेक्षाथी असुक स्थाने होय तो, द्विगुण देखाय छे. उदाहरण: ज्यारे कोई दूर पडेला पदार्थने आपणे जोता होईए त्यारे बीजो पदार्थ, जेम के एक पेनसील, आपणा नाक आगळ धरवामां आवे तो ते द्विगुण देखाय छे. छतां आवा द्विगुण दर्शननो आपणे उपेक्षाज करीए छीए.

पदार्थमात्रथी द्विगुण सन्निकर्ष थया छतां, पदार्थने एक पदार्थरूपेज आपणे केम देखीए छीए? ए प्रश्ननो विचार करवामां बहु बहु तर्कजाल विस्तरेली छे. "एक दर्शननो तर्क" एवुं एने नाम आपवामां आवे छे. केटलाकनुं धारवुं एवुं छे के बन्ने कीकीओमां केटलांक, परस्परने सर्व रीते मळतां एवां स्थान छे, जे द्वारे थता संस्कार अत्यंत सदृश होवाथी एकत्र भेगा थई एकरूपेज भासे छे. आम बतावी एम पण बतावावामां आवे छे के आ रीते जे एकत्र थवापणुं ते, तदनुषंगी तंतुव्यापारना एकत्रपणाने लीधे थई आवे छे. आ उपरथी शारीरशास्त्रना केटलाक विचारोने आधारे एम बतावानो यत्न करवामां आव्यो हतो के तंतुव्यापारनुं आ प्रकारनुं एकत्र थवापणुं खरे खरी रीते थायज छे. वर्तमान समयना शोधथी आ तर्कमां फेरफार मालुम पडेलो छे. परस्परने सर्व रीते मळतां एवां बे कीकीनी अंदरनां स्थानो यद्यपि एकत्र थई व्यापार करे छे तथापि तेज ए रीते एकत्र थाय छे एम नथी; तेमज ए स्थानो सर्वदा एज रीते एकत्र थईने व्यापार करे छे एवो नियम पण नथी. कोई कोई विलक्षण प्रसंगोथकी आ एकत्र थवामां भंगाण पडे छे. सपाटी उपर तरी आवेली आकृतिओ अने घनतानुं दर्शन, तथा बे जुदा रंग उपर एक एक आंख जोती होय ते बखते ते बे रंगने जुदे जुदा ओळखी शकाय छे ते वात, ए आदि प्रसंगोथी एम समजाय छे के परस्परने मळतां एवां बे कीकी उपरनां स्थानोथी थतां दर्शनमां जे तारतम्य होय ते समजवामां आवे छे खरुं. उभये चक्षु एकत्र थई व्यापार करे ते, तथा तेनी मर्यादा, एनो खुलासो, चक्षुद्वारे थता दर्शनविकासने त्वक्द्वारे थता दर्शनविकासनी साथे साथे चालतो मानवाथी थई शके छे.

२१. उंडाईनुं चाक्षुषदर्शन:—आटले सुधी जे विचार करवामां आव्यो ते तो बाळकने बे परिमाणवाळुं दिग्दर्शन जे रीते थाय छे तेना विकासना क्रमनो विचार छे; एटले के एकाद सपाटी उपरना बिंदुनी स्थितिपरत्वे दिग्दर्शन केवे प्रकारे थाय छे तेनो विचार छे. कीकी तेने

स्वाभाविक रीते दर्शन पामवानी जे शक्ति छे तेमां चक्षुनी गतिनो व्यापार सहाय थतां आवी रीतनुं दर्शन संभवे छे ए आपणे जोई आव्या. परंतु दिग्विस्तार उपर नजर करी जोतां बिंदु बिंदुनी परस्परसापेक्ष स्थिति आपणी नजरे आवे छे एटलुंज नहीं, पण आपणी स्थितिनी अपेक्षाए तेमनी स्थिति केवी छे ते पण जोवामां आवे छे. एक बिंदु आपणी डाबी बाजुए घणे दूर होय छे तो बीजू आपणी जमणी बाजूए होय छे. आखा देखावनो एक भाग, आपणाथकी बीजा भाग करतां वधारे पासे के दूर होय छे. एटले आ बधा अनुभवनुं तात्पर्य एम छे के आपणे त्रण परिमाणवाळी दिक्परत्वे पदार्थोनुं दर्शन पामीए छीए:— त्रण परिमाणवाळी एटले उंडाई अथवा दूरत्व तेम सपाटी उपरनुं परिमाण पण जेने होय तेवी.

सपाटीमात्रवाळोज देखाव चाक्षुषदर्शनथी विकसतो चाले छे एम जे अत्र धारवामां आव्युं ते तो एक कल्पनामात्रज छे. केवळ चाक्षुष अनुभवथी बाह्य विश्वनुं केवु दर्शन थाय ते तो कोईथी पण कही शकाय एवुं नथी, केम के कोईए पण तेवो अनुभव कर्यो नथी. एवो संभव लागे छे के एक मोटा पडदा उपर सपाट छायाओ पडेली होय तेवे रूपे पदार्थो ए प्रसंगे जणाय, केम के तेमने दूरत्व निकटत्वनो कशो संबंध ते समये होय नहीं. एम पण संभवे के आपणे आवी सपाट छायाओने छेक आपणने पोताने स्पर्श करती पण मानत; जन्मथीज आंधळां होई पछीथी दृष्टि प्राप्त करनारां पदार्थो विषे तेमज माने छे. वळी जेम जेम एक एक पदार्थ दूर के निकट जाय आवे तेम तेम आखा देखावनी छाया पण जुदे जुदी समजाय एवुं पण बनवानो संभव छे. आपणाथी दूर जतो पदार्थ ना'नो ना'नो जणातो जाय, पण एम थाय छे तेनो शो अर्थ छे ते आपणे समजी शकीए नहीं. एकंदरे जोतां ते समये खरा परिमाणनो मात्र आभासरूप परिमाणथी शो अंतर छे ते पण समजात नहीं.

स्पर्शथी दिक्नुं दर्शन जे रीते बने छे तेनो क्रम बतावतां आपणे एटलुं जोयुं छे के पोताना संबंधे कोई पदार्थनी स्थिति क्यां छे ते वात बाळक चरणव्यापारसहकृत के असहकृत एवा हस्तव्यापारथी जाणी शके छे. परंतु चक्षुनी गतिना व्यापारथी तो उंडाईनुं आवुं साक्षात्

ग्रहण थई शकवुं शक्य नथी. आंखने कांई कादीने बाहार दिक्मां लेई जवाती नथी, मात्र तेना पोताना गोखलामां आम तेम फेरवी शकाय छे. एक सपाटी उपरना एकथी बीजा बिंदु उपर जतां, अने दूर आवेला बिंदुथी निकटना बिंदु उपर आवतां, आपणे आंखने जे गति आपीए छीए ते जुदी जुदी जातनी होय छे. दूरथी पासेना बिंदु उपर आवता बंने आंखो एक बिंदु उपर एकत्रित थती जाय छे. परंतु आवा गतिना एकला भेदने लीधे एक पदार्थ बीजा करतां निकट छे ए वातनुं दर्शन थई शके नहीं. एम मानवाने परिपूर्ण कारण छे के पोताना संबंधे पदार्थोनी स्थिति गृहवामां बाळक, पोताने जे स्पर्शानुभवजन्य ज्ञान होय छे तेनो पण उपयोग करे छे. बीजी रीते कहीए तो उंडाईनुं चाक्षुषदर्शन, स्पर्शजन्यदर्शन भेगुंज अने तेनी साहाय्यथीज विकसतुं चाले छे.

२२. दिशानुं दर्शन:— कीकीने जे ग्रहणशक्ति छे तेमां चक्षुनी गतिथी जे पूर्ति थाय छे तेने योगे बाळक देखावमां आवेलां बिंदुओनी दिशानुं पण दर्शन पामी शके छे. परंतु कोई पण पदार्थनी निरपेक्ष दिशा तेना जाणवामां आवती नथी; एटले के ते पोतानी स्थितिपरत्वे ते पदार्थनी डाबी जमणी के पोताना माथानी सपाटीनी उपर हेठळनी स्थिति जाणवामां आवती नथी; केम के आवा प्रकारनुं जे दर्शन ते तो शरीरथी अमुक छेटे सुधी हाथनो व्यापार करवामां आवे तेने योगे बने छे. हाथ लांबो करवाथीज बाळकने कोई पण पदार्थनी निरपेक्ष दिशा जाणवामां आवे छे.

आ जे निरपेक्ष दिशा कही तेनुं बाळकने केटलांक चाक्षुषचिन्होथी सूचन थाय छे. ए चिन्हमांनां मुख्य तो जोवा समये चक्षुनी जे स्थिति होय ते छे; अने आकुंचननां जे प्रत्यक्ष चक्षुःसंबद्ध स्नायुनी अमुक स्थितिने अंगे उद्भवे छे ते उपरथी चक्षुनी स्थितिनुं अनुमान बनी आवे छे.

आपणी जमणी बाजूए आवेला कोई पदार्थ उपर नजर करवामां स्नायुओनुं जे आकुंचन अने तदानुषंगिक प्रत्यक्ष थाय ते आपणी डाबी बाजूना कोई पदार्थ उपर नजर करतां जे आकुंचन प्रत्यक्षादि थाय ते करतां जुदा प्रकारनुं होय छे. दृष्टिनी दिशामां जेटला जेटला फेरफार थाय तेटला तेटला स्नायुप्रत्यक्षना पण प्रकार रहे छे. चक्षुःसंबद्ध स्नायुना व्यापारनां जे प्रत्यक्ष थाय ते भेगां गळाने आमतेम के उंचुं नीचुं करवाथी तद्गत स्नायुना व्यापारनां जे प्रत्यक्ष थाय छे ते पण गणवां जोईए.

आ बधां चाक्षुष चिन्होने हस्तव्यापार साथे योजवां, एकत्र करवां, ए अनुभवनुं कार्य छे. प्रथमे तो बाळक पोते जे जुवे ते पदार्थने हाथे पकडी शकतुं नथी, तेनो हाथ ते पदार्थ उपरथी चाल्यो जाय छे. धीमे धीमे चाक्षुष चिन्हो साथे हस्तव्यापार वारंवार थाय छे. ते अभ्यासमांथी ए बेनो योग करतां बाळक शीखे छे. पछीथी ज्यारे ज्यारे बाळक कोई पदार्थने देखे छे त्यारे त्यारे तुरतज, ते पदार्थ सुधी बराबर पहोचाय तेवो केवा प्रकारनो हस्तव्यापार जोईशुं ते समजी शके छे.

मो'टी उमरे पहोच्या पछी आपणने चक्षुःसंबद्ध स्नायुप्रत्यक्षनुं स्पष्ट भान थतुं नथी तेनुं कारण ए छे के ते प्रत्यक्षो एमनी साथे जे भावनानुं तत्त्व रहे छे तेनी जोडे मिश्र थई गयलां होय छे. ए प्रत्यक्षो पोते कशा कामनां नथी, मात्र चिन्हो तरीके उपयोगनां छे अने अवधाननो नियम छे के जे रसहीन अने निरुपयोगी होय तेने मूकीने रसवाळा अने उपयोगी उपर अवधान लागे छे, ते अनुसारे, आपणे आ प्रत्यक्षोने मूकी तुरतज तेमनाथी थई आवती भावना उपर लक्ष आपीए छीए.

प्राचीन मतानुसार तो दिशानुं ज्ञान सहजोपलब्धिथीज थतुं हतुं. डोळामां जे दिशाएथी तेजनां किरण प्रवेश करतां होय तेज दिशा तरफ आपणे सहज रीते कीकीमां थतां प्रत्यक्षोना आश्रयने शोधवा जईए छीए.

२३. दूरत्वनुं दर्शन:—वणा खरा चेतनशास्त्रविदोनुं लक्ष जे बाबत उपर बहु आकर्षायुं छे ते आ दूरत्वना दर्शननी बाबत छे. पोताना दृष्टिवादमां बर्कलीनुं कहेवुं एम हतुं के कोई पण पदार्थना दूरत्वने देखवा-

मां आपणे मात्र चाक्षुष चिन्होनो अमुक अर्थ करी लईए छीए. चाक्षुष-चिन्हो शब्दध्वनि जेवां निरर्थ छे, अने साहचर्यबले तथा अनुभवना संसर्गथी तेमनामां कांई पण अर्थवत्त्व आवे छे. चाक्षुषचिन्होने अर्थवत् करनार अनुभव त्वग्जन्यानुभव (गति अने स्पर्श) छे ते छे.

आंख दिग्मां बहार जईने गति करी शकती नथी, एटले एनाथी दूरत्वनुं साक्षात्ज्ञान कदापि उद्भवतुं नथी. कोई पण पदार्थना दूरत्वनो जे अर्थ थाय छे ते हस्तव्यापार उपरथी, के दूरत्व वधारे होय तो चरण-व्यापार सहकृत हस्तव्यापार उपरथी, थई शके छे. ज्यारे सामे आवेली एकाद दुकान के कोई पदार्थ उपर आपणे नजर करीए छीए, अने तेना दूरत्वनो विचार सहजोपलब्धिथीज करी लईए छीए, त्यारे ते पदार्थनी पासे अथवा तेना संबंधमां आपणने लाववामां केटलो स्नायुवेग जोईशुं तेनी भावना मनमां आणी जोईए छीए. दूरत्वना दर्शनने निरंतर, दूरत्व-वाळा पदार्थप्रति गति करवा साथेज संबंध रहे छे, अने विशेषे करी ते गतिनो मर्यादा साथे संबंध रहे छे.

त्यारे एवो प्रश्न सहजे उपजे छे के चक्षुथी दूरत्व लेश पण केम गृहाय? दिशा गृहवामां जे वात कही छे तेनी तेज अत्र पण उत्तरमां कहेवानी छे. दूर अथवा पासेना पदार्थ उपर जोतां डोळामां आकुंचन ओछुं वत्तुं थाय छे ते उपरथी ते आकुंचनने अनुषंगे थता प्रत्यक्षनुं स्वरूप समजाय छे, ने ते प्रत्यक्ष दूरत्व समजवानुं लिंग अथवा चिन्ह थई शके छे. एकज आंख होय अने आ प्रकारे बने ते करतां उभये आंख ज्यारे एक एक पदार्थ उपर एकत्रित थाय छे त्यारे दूरत्वनुं ज्ञान आपनारां घणां लिंग होय छे.

उभय चक्षु एकत्र थवाना व्यापारनां जे प्रत्यक्ष तेथी यद्यपि दूरत्वना ग्रहण माटेनां अनेक लिंग प्राप्त थाय छे तथापि ज्यारे पदार्थ घणो

दूर होय त्यारे ए प्रत्यक्षो कशा काममां आवतां नथी. ए प्रसंगे तो दूरत्वनुं दर्शन बीजां कारणोथी उद्भवे छे, अने एकंदरे तेनुं रूप एक प्रकारना परामर्श जेवुं थई जाय छे. आ रीते दूरत्वनुं दर्शन थवामां जे चिन्ह अथवा लिंग उपयुक्त थाय छे तेमां सर्वथी बहु अगत्यनुं लिंग पदार्थनुं आभासतुं परिमाण छे. कीकीमां जे प्रतिमा पडे छे तेना स्वरूप उपरथी आनो निर्णय बने छे. जेम जेम पदार्थ दूर जतां जाय छे तेम तेम तेमनी छाप कीकीमां ना'नी ना'नी थती जाय छे, अने जेम जेम पदार्थ पासे आवे छे तेम तेम छाप मो'टी थती चाले छे. ज्यारे पदार्थ परिचित होय— कोई वृक्ष, गृह, पशु आदि— त्यारे तेना आभासता परिमाणनुं आवुं तारतम्य कोई पदार्थना दूरत्वनुं ग्रहण करावववामां साहाय्यकारक लिंग थई शके छे. एकाद खीणनी पार नजर नाखतां सामेनी बाजू आटली दूर छे एम, आपणे ते बाजू उपर उभेला प्राणी, वृक्ष, आदिना परिमाणमांथी जाणी शकीए छीए.

२४. खरा परिमाणनुं दर्शनः—कोई पण पदार्थनुं खरुं परिमाण त्वक्द्वारे के हस्तव्यापारथी, के पदार्थ मो'टो एकाद भीत जेवो होय तो हस्तव्यापार साथे चरणव्यापारथी साक्षात् जणाय छे. चक्षुथकी जे साक्षात् समजवामां आवे छे ते तो अनिश्चित एवुं आभासतुं परिमाणज छे. आभासतुं परिमाण दूरत्वना प्रमाण करतां उलटी रीते वधे छे घटे छे, एटले ते आभासता परिमाणना खरा परिमाणनुं दर्शन दूरत्वना दर्शननी साथेज बने छे. पदार्थ परिचित होय तो तो तुरतज आपणने तेना खरा परिमाणनुं भान थाय छे. पछी तेना दूरत्वनुं दर्शन हो के न हो. आ प्रसंगमां ते पदार्थना आभासता परिमाणथी दूरत्वनो निर्णय करवानुं साधन मळी आवे छे ए तो हवणांज कहेलुं छे. पदार्थ अपरिचित के अज्ञात होय त्यां तो तेना दूरत्वना दर्शननी साहाय्यथीज तेना खरा परि-

माणनुं दर्शन संभवे छे. कोई एक देखावमां अमुक पर्वतना शिखरनी उंचाई केटली छे तेनो निर्णय प्रथमे तेना दूरत्वनो अडसट्टो कर्या पछी बनी शके छे.

आ प्रकारे खरा परिमाणना दर्शनमां स्पर्शनुं तत्त्व समाय छे, तेम कोई चाक्षुषतत्त्व पण तेमां मळेलुं होवानो संभव छे. दूर आवेला कोई पदार्थ तरफ जोतां आपणने प्रथमे एम भान थतुं लागे छे के ते पदार्थ पासे होय तो तेनुं दग्ग्राह्य परिणाम केटलुं थाय. बीजी रीते कहीए तो आपणे कल्पनाद्वारे ते पदार्थने कोई पासेना बिंदु उपर धारीए छीए, एटले के ज्यांथी तेनुं स्पष्ट अने संपूर्ण दर्शन थई शके तेटले पासे धारीए छीए.

परिमाणना दर्शनने, दृश्यमान पदार्थनी जोनारना संबंधे क्यां स्थिति छे ते उपरथी पण असर थाय छे. एक देवळना शिखरनी उंचाईनो निर्णय करवामां ते पदार्थ अने आंख वच्चे सपाटीनो जे अंतर छे ने तेथी ते शिखरनी उंचाईमां जे न्यूनता भासे छे ते आपणे लक्षमां लईए छीए.

२५. आपेक्षिक दूरत्वनुं दर्शनः— आटले सुधी दूरत्वना दर्शन विषे जे चर्चा आपणे करी तेमां पदार्थना निरपेक्ष दूरत्व विषेनी वार्ता आपणे करी छे. अन्य पदार्थनी अपेक्षाए कोई पदार्थनुं दूरत्व केटलुं छे, ए विषे विचार कर्यो नथी. बे पदार्थना दूरत्वमां जे अंतर होय तेनुं माप आपणे एकथी बीजा उपर आंखने लावववाथी, अने उभय वखते दृष्टि एक बिंदु उपर स्थापतां जे प्रत्यक्ष अनुभवाय ते ओळखी राखवाथी पामी शकीए छीए.

परंतु आमज थवुं जोईए ए कांई आवश्यक नथी. कोई पण पदार्थ उपर नजर लगावती वखते बीजा दूर तेम पासेना पदार्थो, थोडी स्पष्ट रीते पण देखाय तो छेज. प नामना कोई पदार्थ उपर नजर ठरावतां पे एवो पदार्थ जे पासेज छे तेनी छाया पण कीकीना बाह्यप्रदेशमां पडे छे अने पे जे तेथी दूर छे तेनी पण छाया कीकीना अंदरना भागमां पडे छे. कीकी उपर थता संस्कारना स्थानमां जेवो जेवो फेर

पडे तेवो तेवो तदनुषंगिक प्रत्यक्षोमां पण पडेज, एटले जे बे छाप कीकी उपर पडेली तेमनामांज जे अंतर होय ते आखा ए दर्शनमां पण समजावानोज. आ अंतर उपरथीज दूर अने निकटनो विचार करवानुं लिंग बंधाय छे.

जे पदार्थो वधारे दूर होय तेमना तरफ जोवामां बीजी केटलीक बाबतो पण आपेक्षिक दूरत्वनो निर्णय करावववामां सहाय थाय छे. ए बाबतोमां मुख्य बाबत रेखादर्शनना नियमो प्रमाणे पदार्थोनां जेवां स्वरूप देखाय छे ते छे. उदाहरण—कोई पर्वत जेवो एकाद पदार्थ बीजा करतां निकट छे एम आपणने त्यारे समजाय छे के ज्यारे प्रथम पदार्थनी आकृतिथकी बीजा पदार्थनी आकृतिमां कोई भंगाण पडतुं होय के ते घणे भागे ते ढंकाई जती होय.

२६. घन पदार्थो अथवा सपाटी उपर उपसी आवेला आकारोनुं दर्शनः—घन पदार्थ अथवा सपाटी उपर उपसी आवेला पदार्थनुं दर्शन थवुं ए तो दूरत्वना दर्शननोज एक प्रकार छे. घन पदार्थ एवो होय छे के तेना जुदा जुदा भाग आपणाथी असमान रीते दूर होय छे, केटलाक आगळ आवेला होय छे, केटलाक पाछळ गयेला होय छे. चक्षुद्वारे सहज रीतेज घनत्वनुं ज्ञान थतुं नथी. आगळ कहेवामां आवेलुं छे तेम ए ज्ञान तो साक्षात् स्पर्शद्वारे समजाय छे.

पासेना पदार्थोना घनत्वनुं ज्ञान, उभयचक्षुद्वारे जे संस्कार थाय तेने बराबर ओळखवामांथी उद्भवे छे. बन्ने आंखनी कीकीना तेना तेज भाग उ[illegible], कोई सपाट चित्र सरखीज छाया उपजावे छे. एथी उलटी रीते कोई घन पदार्थथी, जो ते बहु दूर न होय तो, जे बे छाया ऊपजे छे ते जरा जरा जुदे जुदी उपजे छे. उदाहरण—एकाद पेटी मों आगळ पासेज पडी होय तेना उपर नजर करतां डाबी आंख डाबी बाजू तरफ

जराक वधारे जोई शके छे, जमणी आंख जमणी बाजू तरफ जराक वधारे जोई शके छे. आ प्रकारे पेटीनी छायामां जे तारतम्य आवे छे ते प्रमाणे जे बे प्रत्यक्ष थाय छे तेमां पण तारतम्य रहे छे.

बन्ने कीकी उपर घन पदार्थनी जे छाया पडे छे तेमां अंतर रहे छे अने तेथी ते बे छायानी साथेज थतां प्रत्यक्षमां अंतर रहे छे, एटलाथीज घनत्व जाणवुं एम नथी. बन्ने आंखे ते पदार्थनो जे भाग देखाय छे ते संबंध पण बन्ने कीकी उपर, पदार्थना जुदा जुदा भागना ओछा वधता छेटाने लीधे कोई विलक्षण रीते संस्कारोनी रचना थाय छे. उदाहरण—कोई घन पदार्थनी पासेनी बाजू उपरना कोई बिंदुने जोतां, तेनी सामेनी बाजू उपरनुं आ बिंदुने समांतर जे बिंदु, ते बने कीकीनां जुदां जुदां स्थान उपर छाया ऊपजावे छे. एज कारणथी ए बिंदु दूर छे एम धराय छे, अने पदार्थ ए ठेकाणेथी आपणा करतां दूर जतो लागे छे.

घनत्वनुं दर्शन, चक्षुने एकथी बीजा बिंदु उपर एकत्र करवामां जे प्रत्यक्ष थाय छे ते उपरथी पण बनी शके छे.

ज्यारे पदार्थ वधारे दूर होय त्यारे घनत्व अथवा उपसेली आकृति बीजां लिंगथी गृहाय छे. आमां मुख्य तो पदार्थनी सपाटी उपर प्रभा अने छाया जे रीते विस्तरे छे, जेने कारीगरो "मोडेलिंग" कहे छे, ते छे. घणे दूर आवेला पर्वतनुं बहार तरी आववापणुं प्रभा अने छायाना योग्य विस्तारथी समजी शकाय छे. आना करतां पण वधारे उपयोगी तो ते पदार्थोनो प्रतिच्छंद पडे छे, ते छे. कोई एक विश्वदर्शनमांना पदार्थना प्रातर् अने सायान्ह समयना प्रकाशमां वधारे सारी रीते प्रतिच्छंद पडे छे, ने तेथी तेनी आकृति सारी देखाय छे. मध्यान्ह समये तेम थई शकतुं नथी. चीताराओ आवां उपलिंगोनी साहाय्यथीज उपसी आवेली आकृतिओनां रूप बतावे छे.

२७. संख्यानी चक्षुद्वारे सहजोपलब्धिः—आकृति अने परिमाणवाळा एवा दिगवच्छिन्न पदार्थोना दर्शनना विकास साथेज, चक्षुद्वारे पदार्थोना समूहनी सहजोपलब्धि पण विकसती चाले छे. जेम

हाथ, थई आवता संसर्गोनी भिन्नता उपरथी पदार्थोना अनेकत्वनो निर्णय करी ले छे तेम आंख पण पदार्थोना अनेकत्वनुं ज्ञान तेज कारणथी प्राप्त करी ले छे. गमे तो आंखने एकी वारे बधा समूह उपर नाखी तेनुं दर्शन करी लेवामां आवे, के धीमे धीमे आंख आखा समूह उपर फेरवी जवामां आवे, तो पण आ ज्ञान आज रीते संभवे छे. जोवामां तो साधारण रीते एम बनेज छे के एक दृष्टिपातथी अनेक वस्तुओनुं दर्शन थई जाय छे.

आंखथी वस्तुओना समूहनुं आ रीते जे ग्रहण थाय छे तेमां साक्षात् स्पर्शनो पण कांईक संबंध होय एम लागे छे एक चक्षुथी दर्शन पामवुं, अने बे चक्षुथी पामवुं ए बनावमां आनुं उदाहरण स्पष्ट जोवामां आवे छे. बे आंखोथी थता संस्कार जे प्रसंगोमां एकत्र एकाकार थाय छे ते प्रसंगनी तपास करतां एम जणाय छे के ते, स्पर्शथी ज्यां एकज पदार्थ समजाय छे त्यां थयेला होय छे. एज रीते ज्यारे बे पदार्थ एक बीजाने ढांकी दे अने एकज होय तेवा जणाय एवी रीते आवेला होय छे त्यारे उभयनां दूरत्वमां जे अंतर समजाय छे ते उपरथी आपणे दृश्यमान पदार्थना अनेकत्वनो निर्णय करी लईए छीए.

साधारण रीते कोई एक पदार्थने आपणे बीजा पदार्थना भेगोज जोईए छीए, अने अस्पष्ट रीते ओळखायला एवा मो'टा समूहमांथी बहार तरी आवतो देखीए छीए. परंतु सामान्य रीते आपणे पदार्थोने, सरलताथी एकत्र रूपे जोई शकाय तेटला पासे होय ते विना, के अन्योन्यना सरखा अथवा एकज वर्गना होय ते विना, समूहरूपे जोता नथी.

पदार्थोने समूहरूपे चक्षुथी जोवाय ते वातने पदार्थोनी अमुक संख्या जोवानी वातथी निराळी मानवी जोईए. बाळक आरंभे तो संख्याना तफावतने पण परिमाणना तफावत रूपे, मो'टा ना'ना रूपे देखे छे. एटले के आरंभदशामां वैपुल्यमात्रथकी व्यक्ति व्यक्तिना वैपुल्यनो विचार जुदो परखी शकवानी शक्ति होती नथी. व्यक्ति व्यक्तिनुं वैपुल्य अने तत्कृत समूह अर्थात् पदार्थनी संख्यानुं ज्ञान घणांक दर्शननी श्रे-

णिथी अने तुलना तथा भावनाशक्तिना बळथी प्राप्त थाय छे. पदार्थना कोई समूहनुं पृथक्करण करीने गणना करवानी अने एवा पृथक् पृथक् पदार्थोनुं पाछुं एकीकरण करी समूह बनाववानी शक्ति, ए ज्ञानपूर्वे होवी जोईए. आ अनुभव उपरांत जुदी जुदी आकृतिनो भेद पण पदार्थोना समूहमां दाखल करी संख्याने आकृतिथकी भिन्न करतां शीखवानो, अने संख्यामात्रथकी सदृश एवा समूहोनी तुलना करी जोवानो, अनुभव पण आववो जोईए. आटलो अनुभव थया पछी बाळक पदार्थना समूहने अमुक संख्यारूपे अने एक एक पदार्थने एक संख्यारूपे जोतां शीखे छे; एटलुंज नहीं पण ना'नी ना'नी संख्या—२—३—४ एवी परत्वे तो सहज रीतेज ते संख्या पारखी ले छे. मो'टी संख्यामां पण आंख फेरवी जतांज संख्यानुं ज्ञान थाय छे ए वात बहु अगत्यनी छे. केम के संख्यानुं ज्ञान पामवानी आंखने पण खास शक्ति छे एवुं ए उपरथी सिद्ध थाय छे.

२८. दृश्य पदार्थनी गतिनुं दर्शनः— आपणे जोयुं के चक्षुनी गतिद्वारेज चक्षुने दिक्मां एकी वखते बे बिंदुनी स्थिति छे एवुं ज्ञान थाय छे. आवी दृग्गतिना प्रत्यक्ष अथवा दर्शनथी, एटले के आपणा शरीरना अवयवो (आंख, माथा)नी गतिना दर्शनथी दृश्यपदार्थोनी गतिने जुदी पाडी लेवी जोईए.

ए गतिनुं दर्शन बेमांथी एक रीते थाय छे. प्रथमे एम बने के कोई गतिमान् पदार्थनी पाछळ आपणे आंखने दोरवीए अने साक्षात् दृष्टिथीज तेनी गति जोई शकीए. आ वखते दृश्यपदार्थनी गतिनुं जे दर्शन थाय छे ते ए गति साथे थतां चक्षुःसंबद्ध स्नायुव्यापारनां प्रत्यक्ष, अने कीकीमां थई आवती सतत छाया, ए बेथकी थाय छे. बीजी रीते एम पण बने के कोई पदार्थने आपणे परोक्ष रीते दृष्टिमर्यादामांथी जतां जोईए, ने आंख बधो वखत स्थिरज होय. ए वखते गतिनुं जे दर्शन थाय छे ते कीकी उपर स्थानपरत्वे भिन्न एवी जे अनेक छायाओ पडती चाले छे तेथीज थाय छे, स्नायुव्यापारनां प्रत्यक्ष एमां होतां नथी.

ज्यारे गतिनुं दर्शन यथार्थ विकास पामे छे त्यारे तेनी साथे दिक्नुं पण दर्शन होवुं जोईए एम समजाय छे, ए दर्शननो अर्थज ए छे के दिक्ना एक बिंदुथी बीजा बिंदु सुधी जवानुं, अथवा सतत स्थानांतर करवानुं, दर्शन थवुं. आम होवाथी दिशाना दर्शनने ने आ दर्शनने बहु निकट संबंध जणाय छे; अने एम पण मानी शकाय के तेनी पेठे आ दर्शन पण साक्षात् स्पर्शना संबंधेज उद्भवेलुं छे. अने आवी मान्यता अवलोकनथी खरी ठरवा जाय छे. जुओ, एक आंख बंध राखीने उघाडी आंखना डोळाने खुणामांथी आंगळी वडे दाबीने खसेडीए तो पदार्थमात्र गतिमान् होय एवा लागे छे; परंतु तुरतज आवी गतिने पदार्थोनी पोतानी गतिथकी आपणे भिन्न समजी छीए.

पदार्थोनी गतिनुं आंखथी दर्शन थवुं ए, बाह्य सृष्टिमां फेरफार ओळखवानुं मुख्य साधन छे. आ जगत्ना घणामां घणा अगत्यना बनावो पण पृथक्करण करतां गतिमात्रनाज बनेला जणाय छे—पछी ते गति एक एक पदार्थनी होय, पदार्थसमूहनी होय के पदार्थना विभागनी होय.

२९. पुनरवलोकनरूप उपसंहारः— चाक्षुषदर्शनना स्वरूपना आ संक्षिप्त वर्णन उपरथी एम जणाय छे के, मो'टी वये एक साहजिक व्यापाररूप लागती आ क्रिया, बाळपणाना अनेकानेक अनुभवथी प्राप्त थयेली शक्तिनुं फळ छे. एम होवानो संभव छे के परंपरित जे तंतुचक्र तेनी साथेज, कीकीने संस्कार थतां चक्षुने गति आपवी अने एकंदरे चाक्षुष प्रत्यक्षोने साक्षात् स्पर्शप्रत्यक्ष साथे जोडवां ए पण परंपरागत साहजिक धर्मज हशे. परंतु आवी साहजिक शक्तिना उद्बोध अने विकास माटे व्यक्ति व्यक्तिने पोतानी जाते अनुभव मेळववानी अपेक्षा छे.

एक क्षणभर विचार करतां समजी शकाशे के बालवयना अनुभवथी चक्षु अने त्वक्नो अति निकट संबंध बंधाई जाय छे, अने एक यंत्रनी पेठेज " चाक्षुषभाषा " नो जे अर्थ करी लेवानुं सामर्थ्य आवे छे ते

उद्भवे छे. बाळक पोतानी जाग्रत् अवस्थामां पदार्थोने उथामवामां, तेमनी पासे जवामां, तेमनाथी दूर जवामां, अने तेमनी उपर नजर लगावी, आ बधा व्यापार थती वखते चक्षुमां थता संस्कारोमां केवो अंतर आवे छे ते जोवामां गुजारे छे. एटले एवुं तो अनेक प्रसंगे तेना दीठामां आवे छे के पदार्थोनुं आभासतुं परिमाण तेमनी पासे जतां मो'टुं जणाय छे, अथवा कोई घन पदार्थथी बे कीकी उपर पडती छाया जुदी जुदी होय छे, इत्यादि. आ प्रकारे लिंग अने लिंगीना ज्ञान वच्चेनो संबंध एटली बधी ना'नी वये दृढ बंधाय छे के ते आपणने आटली उमरे याद पण आवी शकतो नथी.

ज्यारे चाक्षुषदर्शन आ प्रकारे यंत्रवत् थई रहे त्यारे सर्वप्रसंगे स्पर्शथकी चाक्षुषदर्शननो अर्थ उपजाववानी अपेक्षा रहेती नथी. आटली स्थितिए पहोच्या पछी तो स्पर्शना तत्त्वने चाक्षुषतत्त्व गळी गयुं होय छे, ने चक्षु एकलुंज दर्शन पामी तेनो अर्थ करी लेवा समर्थ होय छे. घणे खरे प्रसंगे दूरत्व, खरुं परिमाण, घनत्व, ए बधानुं दर्शन, गतिव्यापार अने स्पर्शनी साहाय्य विना पण थाय छे. चक्षु-व्यापार एज, आटले सुधी आवतामां, दर्शननुं मुख्य ने एकलुं साधन थई पड्युं होय छे. ज्यारे संशय पडे त्यारेज आपणे चाक्षुषदर्शननो चोकस अर्थ स्पर्शद्वारे करी जोईए छे.

परंतु चाक्षुषदर्शननो आ रीते यद्यपि त्वक्दर्शन साथे संबंध छे तथापि सूक्ष्मता गृहवामां तथा मर्यादाना विस्तारमां चाक्षुषदर्शन त्वक्-दर्शन करतां अधिक छे. त्वक्जन्य स्पर्शनी भाषानो चक्षुजन्य दर्शननी भाषामां तरजुमो करवो, अथवा तेने टुंकामां दर्शाववी एटलोज चाक्षुष-दर्शननो अर्थ नथी, स्पर्शथी थता ज्ञानमां चाक्षुषदर्शन, तेमां आवतां प्रत्यक्षोना तत्त्वोने लीधे, घणो उमेरो करी शके छे.

चक्षुथकी दिक् ग्राह्य छे एवो जे अर्वाचीन वाद अत्र सुधी चर्च्यो तेमां तेनो जे प्रतिवाद के चक्षुने त्वक्निरपेक्ष स्वतः सहजरीत्याज त्रण परिमाणवाळी दिक्नुं ज्ञान संभवे छे तेनुं नाम पण देवामां आव्युं नथी. आ चर्चामां जे एम मानवामां आव्युं छे के चक्षुथकी दिक्नुं ग्रहण थवामां जे जे तत्त्वो (आगळ बताव्या प्रमाणे चक्षु तथा त्वक्नां) मळे छे ते बधांने जुदे जुदां यथायोग्य स्थाने आरोपवानी शक्ति बाळक-नामां परं परागत होय छे ए मान्यताथकी आ बे विरुद्ध वादनुं समाधान थवानो मार्ग मळी शकशे.

३०. **पदार्थोनी सहजोपलब्धिः**— कोई पदार्थ सामुं जोवामां, तेनो स्पर्श करवामां थाय छे तेम, आपणने एकी वखते तेना धर्मोनुं ग्रहण थाय छे. ए धर्म ते ते पदार्थना एकंदर चाकचक्यनुं प्रमाण, तेनो रंग, प्रभा ने छायानो तेना विभागो उपर विस्तार, तेनी सपाटीनां आ-कृति ने परिमाण, अने तेनी घन आकृति, ए आदि जाणवां. आ धर्मो-नुं जे देखीतुं सहज ग्रहण तेमां चक्षुने त्वक् उभयनां कार्य रहेलां छे एम आपणे जोई आव्या. कोई पदार्थनी सहजोपलब्धिनुं आ मुख्य तत्त्व छे एम जाणवुं. कोई नवा पदार्थ उपर नजर करतां, एक डाबली-मांना मोतीने जोतां, आवा धर्मसमूहने आपणे तुरतज गृहीए छीए. अने तेटलाथीज ए पदार्थ विषे आपणने एकंदर घणुंक ज्ञान मळे छे. जेटले अंशे आ धर्मो व्यष्टिरूपे ने समष्टिरूपे,—अर्थात् एक रंग बीजा रंगथी जुदा रंग रूपे, इत्यादि; तेमज बधा धर्मनो समूह बीजा धर्मसमूहथी जुदा रूपे—स्पष्ट समजाया हशे तेटले अंशे ए पदार्थना पूर्णापूर्ण दर्शननो संभव छे.

कोई एक पदार्थने अमुक वर्गमांना एक रूपे, अथवा अमुक रम-कडुं के अमुक कूतरुं ए रूपे ओळखवा माटे तो आ धर्मसमूहनो पूर्वे पुनःपुनः अभ्यास थयलो होवो जोईए. आ ज्ञान थती वखते तो ए धर्मसमूहने अन्यथी जुदो कराय छे एटलुंज नहीं पण ओळखाय पण छे. एकाद

नारंगी जोतांज बाळक दृश्यमान धर्मसमूहने तुरतज पूर्वे जोयला एवा तेना तेज धर्मसमूहमां योजी देछे.

एटलुंज नथी, पण आ रीते अमुक धर्मसमूहने तेना वर्गमां मूकवानी साथेज ते धर्मसहभूत अन्यधर्मोनुं पण बाळकने ग्रहण थाय छे. उदाहरण—कोई पदार्थने नारंगीरूपे गृहतानी साथेज बाळक तेने अमुक भार, उष्णता, स्वाद, गंध इत्यादि युक्त धारे छे. आ प्रकारे चाक्षुष दर्शनथी (त्वक्दर्शननां तत्त्वसमेत चाक्षुषदर्शनथी) पोताना सर्व धर्मसंपन्न एवा हर कोई पदार्थनुं परिपूर्ण ग्रहण थई शके छे.

दर्शनमां धर्मनो असमान भावना:—आ लखवानुं तात्पर्य एम नथी के पदार्थना बधाए धर्म सरखीज स्पष्टताथी गृहाशे. एकाद नारंगी उपर नजर करतां तेना गंध करतां तेनो स्वाद आपणने वधारे स्फुरे छे, अने तेनो स्पर्श ए उभयना करतां वधारे स्पष्ट थाय छे. आवी असमानतानुं कारण आवता प्रकरणमां समजाशे. अत्र एटलुं कहेवुं पूर्ण छे के वधारे सूक्ष्मतावाळी जे इंद्रियो छे तेद्वारे थतां प्रत्यक्षो बीजी इंद्रियद्वारे थतां प्रत्यक्षो करतां वधारे सारी रीते स्मरी शकाय छे; तेमज ए पण एक कारण छे के अमुक प्रत्यक्षने स्मरवानो आधार तेना अनुभवनी अधिकता न्यूनता उपर रहे छे.

एकज पदार्थमां धर्मने एकत्र करवा:—पदार्थनी सहजोपलब्धिनो अर्थ ए छे के एक अधिकरणमां साथे रहेनारा अनेक धर्मनुं ग्रहण थवुं. एक प्रकारना इंद्रियजन्य अनुभवथी अन्य प्रकारना तेवा अनुभवो उपर जवानो परिचय थवाथी सामानाधिकरण्यनी आ वात समजी शकाय छे. कोई पदार्थ सामे जोवाथी आपणे तेने स्पर्शवा मंडीए, के चाखवा मंडीए, इत्यादि करीए; आ प्रकारे एक पछी एक दर्शन, स्पर्शन, अनुभवता कोई वार वळी एक कालावच्छिन्न दर्शनस्पर्शन अनुभवीए. आ प्रकारे जेम कोई सपाटीनुं ज्ञान घणां बिंदुनी बनेली एक वस्तुरूपे थाय छे तेम पदार्थनुं ज्ञान पण घणा धर्मना एकाधिकरण रूपे थई आवे छे.

घणाक इंद्रियजन्यानुभवने बाळक एकना एकज अर्थने आरोप्यां करे तेमां तो तेवा अनुभवो एककालावच्छिन्न थाय छे अथवा परस्परमां विनिमय पामी शके तेवा छे एटलीज वात पूर्ण नथी. घणांक ज्ञान भेगां थवाथी आवुं ज्ञान स्पष्ट थाय छे. प्रथमे तो चाक्षुष अने त्वाच दिक्दर्शननी एकता छे एज ज्ञान बाळकने होवुं जोईए. त्वक्थी तेम

चक्षुथी गृहवाना नकशामां जे पदार्थ एकनी एक जगोए होय ते पदार्थ त्वक्थी ने चक्षुथी एकनो एक गृहाय छे. हाथमां पकडेला कोई पदार्थने जोतां तेना स्थाननुं बाळकने द्विधा दर्शन थाय छे-त्वक्थी ने चक्षुथी; समय जतां आ उभय दर्शन समान छे एम निश्चय थई आवे छे. आ उपरांत वळी रूपनां दर्शनमां त्वग्जन्य दर्शनने चक्षुजन्य दर्शन समान होय छे ए वात पण छे; ने छेवट बीजा इंद्रियजन्य अनुभव—शब्द, गंध,—तेने पण नजरे देखाता ने त्वचाए स्पर्शाता पदार्थनेज आरोपवा, एनो आधार ते ते इंद्रियना स्थानना ज्ञान उपर, तेम पदार्थने पासे के दूर लावतां ते ते इंद्रियनां प्रत्यक्षमां जे अंतर थाय छे तेना ज्ञान उपर रहे छे. उदाहरण—बाळकने खबर पडी आवे छे के मारा हाथमां जे घडीआळ छे तेज टीकटीक करी रह्युं छे, केमके ए घडीआळने कानती पासे लई जतां ए टीकटीकारो वधारे स्पष्ट समजाय छे. वळी एकी वखते, जुदा जुदा इंद्रियअनुभवने एकज अधिकरणमां आरोपवा, ए व्यापार बीजा तेवा एककालावच्छिन्न थनारा कार्यना ज्ञानथी वधारे उत्तेजित बने छे. गति अने शब्द ए वचेनो जे आवो संबंध छे ते आ ज्ञाननां मुख्य छे.

धर्मनो पदार्थने आरोप:—आपणे मोटी वये कोई पण पदार्थना कोई पण धर्मने ते पदार्थमांज आरोपीए छीए; ते पदार्थनी साथे तेनो समवायसंबंध मानीए छीए-"पदार्थ," "वस्तु," "द्रव्य" एटले शुं तेनो आटलाथीज घणोक खुलासो थई रहे छे. एटली वात नक्की छे के कोई पण पदार्थ विषे, आपणी इंद्रियने जणाता तेना धर्मना सरवाळा करतां अधिक आपणे कशुं जाणी शकवाना नथी. त्यारे प्रश्न ए ऊठे छे के मोटी वये "द्रव्य" अथवा "पदार्थ" ने ते धर्म अथवा गुणथी भिन्न मानवानो विचार क्यांथी उद्भवे छे? एम धारी शकाय के पदार्थना मूल धर्म अने उपहित धर्मनो जे भेद बतावेलो छे ते उपरथी आवुं थई आवे छे. मूलधर्मोने बाळक पदार्थना पदार्थत्वरूपे मानी लेछे, अने उपहितधर्मोने ते उपरांत उमेरायला धर्म गणे छे.

३१. पदार्थप्रत्यभिज्ञा:— कोई पण पदार्थने पूर्वे जोयलुं ते आ एम ओळखवामां घणो मिश्र चेतनव्यापार थाय छे. अमुक संस्कारसमूहने तेनो तेज एम ओळखवो, ए उपरांत वधारे उत्तम बुद्धिव्यापार, अनुक्रमे थता संस्कारोनी तुलना अने सादृश्यनुं ग्रहण,— पण थाय छे. बाळक पोताना कोई पदार्थने—रमकडाने, टोपीने— 'तेनो ते' एम, जुदां जुदां स्थानथी, जुदा जुदा प्रकाशमां, ओळखतां शीखे छे. पदार्थना

देखावमां आवा जे अंतर थाय छे तेमांनो मुख्य जोनारनी अपेक्षाए पदार्थनी अमुक स्थितिने लीधे जे थाय छे ते छे. एकाद कळशाने उभो, आडो, बाजुएथी, वांकी बाजुएथी, जोवामां जे जे देखाव थाय तेमां अंतर घणो पडे छे. आवा जुदा जुदा देखाव छतां पदार्थने तेनो ते एम ओळखता पूर्वे बाळकने घणा अभ्यासनी जरूर रहे छे. छेवट पदार्थमां पोतामां पण अकस्मात्ने लीधे, अथवा अवयवोना फेरफारने लीधे थता वृद्धिह्रास, तेम वृद्धिने लीधे थता परिमाणना फेरफार, ए पण लक्षमां लेवा जेवा छे. आम होवाथी एमां कशुं आश्चर्य नथी के कोई पण पदार्थनी प्रत्यभिज्ञा थवी ए कार्य बाळकने जराक उंमरे पहोच्या पछी शक्य थाय.

छेवटे कहेवुं जोईए के पदार्थप्रत्यभिज्ञाना कार्यने मांडलिक संसर्गथी अने भाषाना व्यवहारथी बहु साहाय्य मळे छे. बाळक पदार्थने जोतां अने ओळखतां शीखे छे ते बीजांनी सोबते शीखे छे. प्रथमथीज तेनां माबाप के ऊछेरनार तेने पदार्थो बताव्यां करे छे, तेमनां नाम कहे छे, तेमनुं वर्णन करे छे. आवा व्यवहारमांथी तेने खबर पडे छे के बीजां पण हुं जोउंछुं तेनुं तेज जुए छे, बाह्य वस्तुओ सर्वसाधारण दर्शन आपवावाळी छे. एम थतां थतां पदार्थोने तेना ते नामथी कहेवाता बोलाता सांभळी बाळकने प्रत्यभिज्ञा थवा मांडे छे.

पदार्थनी प्रत्यभिज्ञा थवामां वचले वखते–अर्थात् आ तेनो ते पदार्थ एम फरीथी तेने जोयो अने पूर्वे जोयलो ते वचमांना वखतमां–पण पदार्थ अस्तित्वमां हतो एम मानवुंज पडे. आ ज्ञान, बाळकने ज्यारे घणा अनुभवथी, पोतानां दर्शनो कोई नियत क्रमथी थाय छे एम समजाय छे, अने दर्शननो आधार इच्छासहित व्यापार उपर रहेलो छे एम समजाय छे, त्यारे थाय छे. बाळकने समजाय छे के मारे ज्यारे इच्छा होय त्यारे हुं ओरडामां जई मारो लाकडानो घोडो लावी ते पर बेसी शकुं एम छे. वळी पोते पदार्थने न देखतो होय तेवा वखतमां पण बीजा लोकोए ते पदार्थ दीठो छे एवी वार्ताना श्रवणथी पण तेने पदार्थोना नित्यत्वनुं ज्ञान थवामां उत्तेजन मळतुं चाले छे.

३२. आपणा शरीरनुं दर्शनः—बाह्य पदार्थोना दर्शननी साथेज बाळकने पोताना शरीरना जुदा जुदा विभागनुं पण दर्शन थाय छे. आगळ कहेवामां आव्युं छे तेम ज्यारे प्रत्यक्षोने कोई बाह्य अधिकरण के आश्रय उपर आरोपवामां आवतां नथी त्यारे मो'टी वयनां माणस तेमनुं स्थान पोताना शरीरमांज शोधी ले छे. आम जोतां शरीरव्यापारनां प्रत्यक्षमात्र, जेवां के त्वचाने कांईक कमकमाट, चुंट, गलीपची, आदि थवानां प्रत्यक्ष तुरतज हाथ, पग आदि स्थाने नियत करी देवामां आवे छे. बाह्य पदार्थोनुं दर्शन पामवामां पण जे इंद्रियद्वारे दर्शन थतुं होय ते इंद्रियनुं थोडुं घणुं पण भान रहे छेज. शब्द सांभळतां के पदार्थ जोतां काने सांभळ्यानुं के आंखे जोयानुं भान रहे छेज. पदार्थोने स्पर्शवामां इंद्रियनुं आवुं भान बहु स्पष्ट रहे छे. हाथमां एकाद पदार्थ पकडतांज हाथना कीया भागे केटलां प्रत्यक्ष अनुभवाय छे तेनुं बाळकने स्पष्ट ज्ञान रहे छे.

"प्रत्यक्षस्थान" नुं अने आखा शरीरनी आकृतिनुं जे दर्शन ते पण बाह्य पदार्थोना दर्शननी पेठे अनुभवथी प्राप्त थाय छे. जुदी जुदी तंतु अने शिरानी स्पष्टता अने प्रत्येकने अनुषंगे थतां प्रत्यक्षोनो भेद, ए बधुं तो मानी लेवुंज जोईए. मारा अंगुठामांज अमुक प्रत्यक्षनी उत्पत्ति छे एम बाळक जाणे ते, अमुक तंतुद्वारे थतां प्रत्यक्ष प्रथमथीज स्पष्ट न होय, तो कदापि [illegible] नहीं. परंतु शरीरमां थता कोई प्रत्यक्षने शरीरना अमुक स्थाने स्थापवामां आथी अधिक वात रहेली छे; साक्षात् स्पर्श अने चक्षुव्यापारना शरीरविषयक अनुभवनी अपेक्षा रहेली छे. बाळक पोताना शरीरने पण कोई दृश्य पदार्थनी पेठे जोई तेम स्पर्शी शके छे. आखा ए शरीरने स्पर्शी शकाय छे, ने घणो खरो भाग जोई पण शकाय छे.

एम धारो के बाळकने पोताना जमणा पगना **ब** बिंदुए कांईक लाग्युं; आ प्रत्यक्षने **प** नामनुं " स्थानस्वरूप " छे एम पण धारो. पोतानो हाथ अमुक प्रकारे लांबो करीने बाळक त्यां सुधी लई जई शके छे ने थता प्रत्यक्षमां कांईक फेरफार करे छे. ए प्रकारे वारंवार करतां मूलना **प** प्रत्यक्षमां कांई फेरफार करे छे अथवा **ब** बिंदु साथे हाथनो संसर्ग थवाथी नवां नवां प्रत्यक्ष उपजावे छे. आवी गतिनो बहु परिचय थतां **प** स्वरूपवाळां प्रत्यक्ष मात्र हाथनी आ अमुक प्रकारनी गति साथे साहचर्यसंबंधवाळूं थई जाय छे. **प** करतां अन्यस्वरूपवाळां $\mathbf{प}^1$ $\mathbf{प}^2$ इत्यादि प्रत्यक्षो माटे पण तेनुं तेज समजवुं. शरीर उपर हाथ फेरवतां, शरीरने पंपाळवा के थाबडवामां हाथ फेरववो पडे छे ते रीते फेरवतां, बाळकने जुदा जुदा भागनी परस्परसापेक्ष स्थितिनुं अने शरीरनी उपली सपाटीनी आकृतिनुं, वधारे स्पष्ट ज्ञान मळी शके छे. आम करतां करतां स्पर्शद्वारे गृहायलो एवो शरीरनो एक आखो नकशो तैयार थाय छे, ने ते हमेशां बाळकना लक्षमां रह्यां करे छे. आवो स्पर्शथी थयेलो जे नकशो ते पाछो चक्षुद्वारे साक्षात्, के दर्पणादिद्वारे परोक्ष, दर्शनथी खरो थाय छे. आटले सुधी अवाया पछी गमे तेवां प्रत्यक्षोने शरीर उपर यथायोग्य स्थाने तुरतज आरोपी शकवानी शक्ति आवे छे.

जेम आगळ आपणे एम मान्युं हतुं के जुदां जुदां स्पर्शनप्रत्यक्षने आपणे, एकली गतिमात्रथकीज बाह्याधिकरणमां स्थापतां शीखीए छीए, तेम अत्र पण एम मान्युं छे के शरीर उपर कोई पण स्पर्श थतां तेने तेना योग्य स्थाने जे स्थापी शकाय छे ते स्पर्शायला भागना व्यापारनिरपेक्षज बनी आवे छे. पण खरी रीते जोतां शरीरनी सपाटी उपर प्रत्यक्षना अधिकरणने स्थापवुं, अथवा शरीर बहार शोधी लेवुं, ए उभये एकनी एकज शक्तिनां रूपांतर छे, अने सरखी रीते विकसतां चाले छे. जेम स्पर्शायलो भाग वधारे चलन वलन पामी शके तेवो होय तेम ते साथेना सन्निकर्ष (स्पर्श) थी थता प्रत्यक्षने ते स्थाने वधारे सरलताथी स्थापी शकाय. हाथ के जीभद्वारे जे प्रत्यक्ष थाय छे तेनुं अधिकरण, शरीरना कोई अचल भागद्वारे थता प्रत्यक्षना अधिकरण करतां, वधारे सरलताथी ने स्पष्टताथी समजी शकाय छे.

हवणां जे कह्युं के कोई प्रत्यक्षने शरीर उपर तेना अधिकरणमां स्थापवानुं कार्य, शरीरनी ते सपाटीने स्पर्श तथा चक्षुथी जोई शकाय ते उपर आधार राखे छे. एनुं चमत्कृतिवाळुं उदाहरण—जेनो एकाद अवयव कापी नाखवामां आव्यो होय तेवा माणसने जे भ्रमणा थाय छे ते छे. ज्यारे कापेला तंतुनो संघर्ष करवामां आवे छे, अने तेने अनुषंगे प्रत्यक्ष थाय छे त्यारे माणस स्वाभाविक रीतेज ते प्रत्यक्षनुं अधिकरण, असलनी पेठे, कापी नाखेला अवयवने छेडेज माने छे जे माणसनो पग कापी काढवामां आव्यो होय ते पोताना अंगुठामां अमुक प्रत्यक्षो थाय छे एम माने छे. तंतुना गमे ते भागनो संघर्ष थया छतां प्रत्यक्षनुं अधिकरण शरीरनी छेक बहारनी सपाटीमांज शोधवुं ने मानवुं एवी जे प्रत्योक्षोने बाह्यस्थान तरफ ताणी जवानी प्रकृति तेने " बाह्यकरणनो नियम " अथवा मध्यबिंदुथी दूर ताणी जवापणानो नियम कहेवाय छे. अने आ नियम खरो छे एनी साबीती ए छे के स्वाभाविक स्थितिमां आपणने प्रत्यक्ष त्यारेज थाय छे के ज्यारे तंतुनो सपाटी उपरनो जे छेडो होय तेनो संघर्ष थाय. वळी ए पण जोवा जेवुं छे के स्पर्श अने चक्षुने गोचर नहीं एवां पाचनव्यापारादिनां प्रत्यक्षो तेमना अधिकरणपरत्वे अस्पष्टज रहे छे.

३३. शरीर अने आत्मा (अहं : पोतापणुं):— बीजा बधा पदार्थोथकी बाळक पोताना शरीरने एटलाथी भिन्न करी ले छे के कोई विशेष रीते, शरीरनेज ते पोताना सचेत जीवन साथे संबंध धरावतुं, पोताना अनुकूळ प्रतिकूळ साथे संबंधवाळुं समजे छे. पोताना पगने पोताना हाथथी स्पर्श करवो अने अन्य पदार्थनो स्पर्श करवो, ए बे अनुभव वच्चे अंतर रहे छे, केमके प्रथमनी बाबतमां तो हाथमां तेम पगमां पण स्पर्शनो अनुभव थाय छे. मृदु अथवा सारा लागे तेवा, के कठिन अथवा नठारा लागे तेवा, पदार्थनो त्वचा साथे संघर्ष थाय ते अनुकूळ के प्रतिकूळ प्रत्यक्ष थवानुं पूर्वरूप छे. बाळकने जे सुखदुःख (अनुकूळ प्रतिकूळ) वर्ताय छे ते घणे भागे शरीरद्वारे थयलां प्रत्यक्षरूपज होय छे. अने ते गमे तो बाह्य कारणोथी के आंतर विकारोथी थयलां होय, तो पण नियमित रीते शरीरना कोई विभाग साथे संबंध राखतां मालुम पडे छे. आम अनुभवो थवाथी बाळक पोताना शरीरने

पोतानो, आत्मरूपनो, एक भाग गणे छे, अने बहु नानी वयमां तो आत्मा (हुं) नो अर्थज शरीर एटलो तेना लक्षमां होय छे. शरीर विसदृश अन्यपदार्थोथी तेम शरीरसदृश अन्यशरीरोथी पोताना शरीरने बाळक भिन्न समजे छे.

बाळकने भावनाव्यापार माटे सामर्थ्य होतुं नथी, अथवा बहु न्यून होय छे, एटले ते पोताना मनने पोताना आंतरव्यापार एटले विचार अने ऊर्मि आदि उपर लगाडी शकतुं नथी. जेने आंतरदर्शन अथवा विचार, एटले के चेतननुं पोते पोताना व्यापार उपर दृष्टि करवुं, कही शकाय, ए शक्ति तो सरासरी जोतां कांईक मोडी विकसे छे. बाळकोने पोतानी ऊर्मिओनुं कांई ज्ञान होय छे खरुं, पण ते बहु अस्पष्ट होय छे. एनुं कारण एम छे के, ऊर्मिने ऊपजावनार पदार्थथी भिन्न करीने, तथा जे शरीरावयव जोडे तेमने संबंध होय तेथी भिन्न करीने, पोताना मनोव्यापार उपर बाळको नजर करी शकतां नथी. बीजानी ऊर्मिओ विषे पण बाळकोने जे ज्ञान होय छे ते आवुं ने आवुंज होय छे. आम होवाथी आत्मा अने अनात्मानो एटले के सर्वने गृहनार द्रष्टा चेतन अने तद्भिन्न बाह्य अथवा दृश्यपदार्थ तेनो भेद, विरोध, बाळपणमां स्पष्ट समजातो नथी. दृश्य अथवा बाह्य ए रूपे पदार्थनुं जे ज्ञान बाळकने जेटले सुधी थई शके छे तेनो अर्थ एटलोज छे के पोताना शरीरथकी पदार्थ बाह्य छे. द्रष्टा चेतनथकी दृश्य भिन्न छे ए रूपे बाह्यत्वनुं ज्ञान तो घणी मो'टी वय थया पछी, पदार्थोना नित्यत्वना ज्ञान भेगुं थई आवे छे. छतां ए तो आपणे कहीज चूक्या छीए के बाळकने कोई अस्पष्ट रीते पण आवुं ज्ञान प्रथमथीज नथी होतुं एम नथी.

३४. श्रोत्रद्वारे दर्शन : दिग्दर्शनः— आगळ कहेवामां आवेलुंज छे के श्रोत्रद्वारे दिक्संबंधोनुं ज्ञान बहु अपूर्ण रीते थाय छे. एटलाज माटे

हाथ अने चक्षु जेवी आ इंद्रिय दर्शनेन्द्रिय कहेवाती नथी. आ इंद्रियमां आवी न्यूनता छे, तेनुं कारण एम समजाय छे के श्रवणने प्रत्यक्षनां अधिकरण ओळखवानी शक्ति अने गतिव्यापारनी शक्ति नथी. सांभळवाथकी प्रत्यक्ष रीते जे कांई दिक्संबंधी ज्ञान थई शके छे ते; बे काने जे प्रत्यक्षो थाय तेमां कांईक अंतर रहे छे ने ते उपरथी अधिकरणनिर्णयनुं कांईक बीज हाथ आवे छे, अने माथुं पोतानी गतिथी काननी स्थिरतानो बदलो कांईक रीते पूरो पाडी शके छे, तेथी छे. जेम चक्षुथी दिक्दर्शन थाय छे, ते द्विचक्षुजन्य छे, तेम श्रोत्रथी थाय ते पण द्विकर्णजन्य छे. बन्ने प्रत्यक्षोनो अंतर लक्षमां लाधीथीज शब्दनी दिशानुं ज्ञान संभवे छे. आपणी एकज बाजूए शब्द थतो होय तो तो ठीकज छे; एकाद जंतु जमणा कान आगळ गणगणाट करतुं होय तो ते पासेज छे एम तुरत समजाय छे. पण आपणी आगळ के पाछळ कोई स्थान उपरथी शब्द आवतो होय तो श्रवणगोचर प्रत्यक्षोना अंतरने समजवा माटे मस्तकने गति आपवानी अपेक्षा रहे छे. एमां पण शब्दनुं अधिकरण जो अतिदूर होय तो तो अंतरनुं ज्ञान बहु अस्पष्ट थाय छे. श्रवणथी दूरत्वनुं निश्चयपूर्वक ज्ञान त्यांज बने छे के ज्यां आपणे शब्दने ओळखता होईए छीए, अने ते शब्दने, ज्यारे तेनुं अधिकरण पासे हतुं त्यारे जेवो थतो हतो तेनी साथे सरखावी शकीए छीए.

३५. कालदर्शनः— श्रवणथी यद्यपि दिक्संबंधे आवुं अपूर्ण ज्ञान मळे छे तथापि कालसंबंधोनुं तो यथार्थ ज्ञान मळी शके छे. "कालसंबंध"—नुं ज्ञान थाय एनो अर्थ एटलो के घणां प्रत्यक्ष एक श्रेणिरूपे एक एक पछी थाय, तेमनो क्रम, तथा ते प्रत्येकनो तेम आखी श्रेणिनो समय (= केटलो वखत ते रहे छे ए) समजवामां आवे. आवी आनुपूर्वी अथवा कालकृत परंपरानुं दर्शन थवुं ते अमुक दर्शनोना

क्रम करतां कांई जुदीज वात छे. एमां विचारनो व्यापार थाय छे; श्रेणिना एक एक अवयवनुं दर्शन थतानी साथे विचार थवा मांडे छे ने ते विचारथी आखी श्रेणि एकरूपे गृहाय छे.

चक्षुथी पण कालसंबंधनुं ज्ञान थई शके छे, जेमके घडीआळना लोलकना जवा आववाना क्रमनुं, अथवा नृत्यना पादन्यासनुं, इत्यादि. परंतु श्रोत्र एज कालदर्शननुं मुख्य द्वार छे. एटले सुधी कही शकाय के जेम चक्षु दिक्संबंधोने गृहे छे तेम श्रोत्र कालसंबंधोने गृहे छे. आम होवानुं कारण आगळ कहेलुं छे तेज छे के श्रोत्र पोताना प्रत्यक्षना समयने बराबर गृही शके छे, अति त्वरित क्रमथी चालती श्रेणिमांना प्रत्येकनो समय पण गृही शके छे. उदाहरण—एक एक स्वरना उच्चारने आपणे बराबर गृही शकीए छीए, तेम एक शब्दमां आवता अक्षरमात्रना उच्चारक्रमने बराबर गृही शकीए छीए, ने शब्द शब्दना क्रमिक उच्चारनी श्रेणिने गृही शकीए छीए. कोई पण शब्दश्रेणिना प्रत्येकना समयनुं यथार्थ ग्रहण करवानी जे आवी शक्ति छे, अने ते उपरांत बधाने मेगा श्रेणिरूपे समयना क्रमानुसार गृहवानी जे शक्ति छे, तेने लीधेज आपणे भाषाने आटली सरलताथी समजी शकीए छीए; अर्थात् शब्दथी जेनो बोध थाय छे ते विचारो उपर जई शकीए छीए.

श्रोत्रद्वारे काळनुं दर्शन, छंदोबद्ध शब्दो के गानना शब्दोनुं दर्शन पामवामां घणुं गुंफितरूप धारण करे छे. आमां तो समय अथवा लय एज मुख्य वात छे. जेने गानमां ताल कहे छे ते जुदा जुदा समय अथवा लयनी तुलनारूपज छे, एक एक शब्दना तेम आखी शब्दश्रेणिना लयनी तुलनारूप छे. वळी कोई एक गान अमुक रागमां छे ए समजवानो आधार पण अमुक शब्द—स्वर—ना न्यूनाधिक्य, अने आखी शब्दश्रेणिना अमुक वळण- दाब- उपर रहे छे. एज रीते अमुक छंदनुं अमुक नाम छे ए जाणवानो आधार पण अमुक गुरुलघु शब्दोच्चारना श्रवण उपरज रहे छे.

३६. दर्शन अने अवलोकन:—दर्शनमात्रमां, जे प्रत्यक्ष होय ते उपर कोई पण प्रकारे अवधान आपवानी अपेक्षा छे. परंतु वारंवार आपणे कोई एक पदार्थने, क्षण वार जोवाथी तेनां मुख्य मुख्य लिंग लक्षमां लई, ओळखी तथा परखी शकीए छीए. एज रीते कोई पदार्थनी गतिने पण क्षणभर जोतां आपणे ओळखी लईए छीए. आवुं अपूर्ण अने क्षणिक दर्शन ते नित्यव्यवहार माटे पूर्ण छे. पण घणी वार जे प्रत्यक्ष होय ते उपर वधारे मनोबल वापरी तेना सर्व स्वरूपनुं दर्शन पामवानी आवश्यकता आवी पडे छे. नवा अने अपरिचित पदार्थो माटे आवुं वारंवार करवुं पडे छे. आवी रीते लक्षपूर्वक कोई पण पदार्थनुं जे दर्शन तेने अवलोकन कहे छे. अवलोकवुं एटले कोई पण पदार्थ उपर सूक्ष्म दृष्टिथी जोवुं, तेना समग्र स्वरूपने नजरमां उतारी लेवुं. अमुक पदार्थ प्रदेश आदि अवलोकवा माटे प्रथमथी नियत करवां, अमुक उद्देश तेम करवामां राखवो, अने नियमित रीते अवधानने ते कार्य माटे तत्पर करवुं अने धारेला पदार्थ के प्रदेश उपर पद्धतिपुरःसर दर्शनव्यापार चलाववो, ए पण अवलोकननां जुदां जुदां अंगनुं कांईक स्वरूप बतावी लेवा माटे कहेवा जेवुं छे. आम होवाथी नियमित दर्शन ते अवलोकन एम आपणे कहीए तो बाध नथी.

३७. अवलोकननी स्पष्टता अने यथार्थता:—आपणा आगळ जे होय तेना उपर लक्षपूर्वक अने सूक्ष्मताथी नजर करवी एने सारुं अवलोकन कहे छे. कोई एक पदार्थ एक पुष्प के हीरो के गमे तेने स्पष्ट अने यथार्थ रीते विलोकवा माटे तेना जे जे विशेषधर्म होय ते लक्षमां लेवा जोईए, जे थोडा बहार पडता होय तेम वधारे बहार पडता

होय ते सर्व लक्षमां लेवा जोईए. एज रीते पाणीनुं सहज रीते वराळ थई उडी जवुं ते अवलोकवुं होय, के कोई मनुष्यना मुखनी छायाना रंग जोवा होय, तो ते आखा व्यापारना बधा क्रम आपणे ध्यानपूर्वक लक्षमां ऊतारवा जोईए. आवो दृढ प्रयास करवाथी आपणां अवलोकन स्पष्ट थाय छे, अने जेने आपणे अवलोकता होईए ते पदार्थ के व्यापार यथार्थ रीते बीजा पदार्थो के व्यापारोथी जुदो पडी शके छे. अवलोकन यथार्थ थाय ते माटे प्रथमथी मनमां कशो विचार ते अवलोकन विषे न होवो जोईए. जे जोवानी आपणे प्रबल आशा धारी होय तेज आपणे घणी वार जोई लईए छीए, अने ए रीते ज्यां कांई न होय त्यां पण आपणी कल्पनाने जोई छेतराईए छीए. यथार्थ अवलोकन करवानो अर्थज ए छे के प्रथमथी कशो तर्क बांधी राखवो नहीं, कल्पनाने कबजामां राखवी, अने मनने एटली एकज वात उपर दृढ रीते लागु करी इंद्रियगोचर जे विलोकवानी वात होय ते उपरज चोटाडवुं.

३८. दर्शनशक्तिनो विकासः— दर्शनव्यापारना पृथक्करणमांथी एटलुं जणायुं छे के आपणने जे जे दृष्टि थाय छे ते शी रीते बंधाय छे, ने पूर्णता गृहे छे. जन्म थया पछी थोडां अठवाडियां सुधी तो दृश्य पदार्थोनुं झाझुं ग्रहण थतुं नथी, किंवा लेश पण थतुं नथी. बाळकना मन उपर अमुक अमुक संस्कारो थाय छे खरा, पण ते बधा अति अस्पष्ट रीते बाह्यविश्वमां स्थापवामां आवे छे. सादा इंद्रियजन्यानुभवना संयोगनो वारंवार परिचय थवाथीज बाळकने कोई पण प्रत्यक्षने बाह्य अधिकरणमां स्थापवानुं सामर्थ्य आवे छे. आवा संयोगमांनो मुख्य संयोग चक्षु अने त्वक्नो छे. हाथमां आवता पदार्थो उपर निरंतर नजर करवाथी, दिशानुं चाक्षुष दर्शन पूर्ण थाय छे, अने कांईक मर्यादापूर्वक दूरत्वनुं पण दर्शन थई शके छे. कोई पण पदार्थनी यथार्थ दिशा तरफ बाळक

पोतानो हाथ लई जतां शिखे छे, अने लई जवो जोईए तेटलो दूर पण लई जई शके छे. चलननुं सामर्थ्य आवता सुधी दूरनी वस्तुओना दूरत्वनुं दर्शन घणुं अपक्व रहे छे. बाळकने ओरडामां लईने फेरववामां आवे तेथकी बदलाता देखावोने लीधे तेने असर थाय खरी, पण ए बदलावापणानो खरो अर्थ ज्यारे तेने चालवानी शक्ति आवे छे, अने जुदा जुदा पदार्थो सुधी जवामां केटलो व्यायाम थाय छे तेनुं तारतम्य समजवानी शक्ति आवेछे, त्यारे समजाय छे. छतां पण घणे दूर होय तेवा पदार्थोना दूरत्वनो विचार तो घणां वर्ष पछीज मनमां उतरी शके छे.

प्रत्यक्षना घणाक संयोग थया पछी बाळकने पदार्थोनुं स्वरूप, अने तेमना स्पष्ट दृश्य धर्मो, तेनी समजण पडवा मांडे छे. एटले के पदार्थोने एक एकथी भिन्न करी लेवानी शक्ति तेने आंखे जोवामात्रथीज आवे छे, अने आंखे पदार्थो जेवा देखाय तेवा ओळखतां पण तेने आवडे छे. आटले सुधी अवाय छे ते वेळा चक्षुरिंद्रिय स्वतः स्वतंत्र रीते परिपूर्ण थई रहे छे. जेने एकंदर रीते स्पर्शज्ञानकाल कहीए तेने स्थाने हवे चाक्षुषज्ञानकाल आवेलो होय छे. ए पछी दर्शननो जे जे सुधारो वधारो थाय ते बधो चक्षुरिंद्रियना व्यापारना सामर्थ्यनो सुधारो वधारो छे एम समजवुं.

प्रथमे तो चक्षुथी पदार्थोनी आकृति ओळखवानी शक्ति बहु थोडी होय छे. पदार्थना एक बे आगळ पडता धर्म बाळकना लक्षमां आवे छे ने बीजा उपर तेनुं लक्ष रहेतुं नथी. खरां जीवतां प्राणी जोतां, अथवा पोताने रमवानां रमकडां के चित्र जोतां, चोपगांने पक्षीथकी ते ओळखी शके छे, पण चोपगे चोपगांमां तफावत ओळखवो तेने फावतो नथी. घणा मोटा कूतराने नाना कुरकुरीआथकी ते जुदुं पाडी शके छे, पण सरखा कदना बे कूतराने जुदे जुदा ओळखी शकतुं नथी.

चाक्षुषव्यापारमां जेम जेम वधारे सूक्ष्म निरीक्षणनुं सामर्थ्य आवतुं

जाय छे तेम तेम दर्शनशक्तिनो पण विकास थतो जाय छे. आमां प्रथमथीज अवधानशक्तिनी वृद्धि थयेली होवी जोईए, ए वात मानी लीधेली छे. जेम अनुभव वधतो चाले छे तेम बाळकने पदार्थोना विशेष धर्म समजवानुं ने पदार्थोने ओळखवानुं सुतर पडे छे, अने पदार्थोनां साधर्म्य वैधर्म्य परखवामां तेने वधारे आनंद लागे छे. आम थतां थतां तेनी अवलोकनशक्ति वधारे सूक्ष्म थती जाय छे. एटलुंज नहीं, पण अवधाननी वधती जती शक्तिने लीधे एक दृष्टिपातथी अनेक झीणी झीणी वातो लक्षमां उतारतां पण तेने आवडे छे. आ प्रकारे प्रथमे मात्र रेखाचित्र जेवी जे एनी दृष्टि हती ते भराईने पूर्ण थती चाले छे. कोई पुष्प के प्राणी आदि हवे तेना रूप रंगथी यथार्थ रीते ओळखाय छे. तेमज मो'टा अने वधारे गुंचवणवाळा पदार्थोनुं पण दर्शन पामवानी शक्ति बाळकने आवती जाय छे.

वेट्झ एम कहे छे के बाळकने पदार्थनुं जे दर्शन थाय छे तेनो आरंभ पदार्थना बाह्याकार उपरथी नहीं पण पदार्थना कोई एक आकर्षक धर्म के स्वरूप उपरथी थाय छे. धीमे धीमे ए आकृतिना बीजा समीपना भागोने पण ओळखतां ते शीखे छे; अने छेवटे पदार्थना बाह्याकार उपर नजर करतां करतां आखी आकृतिने पण ओळखी ले छे.

स्वाभाविक विशेषशक्तिने अनुसारे के विशेषप्रसंगने अनुसारे अवलोकननी शक्ति जुदी जुदी दिशा प्रति विकसती चाले छे. सुहजरी-तेज रंग परखवानी सारी शक्ति होय, अने तेम करवामां रस लागतो होय, तो पदार्थोना रंगसंबंधी अवलोकन करवामां ते माणस बहु प्रवीण थाय. एज प्रकारे चित्रकारो पदार्थोना सूक्ष्म सूक्ष्म रंग जे बीजाने जाणता पण नथी ते परखी ले छे. साधारण चक्षुने न समजाय तेवी आकृतिनी झीणी झीणी वातो पदार्थविज्ञानशास्त्रनो शोख राखनारने सहजे जणाती चाले छे. प्रत्येक मनुष्यने अवलोकनशक्तिनुं जे दिशा

प्रति सामर्थ्य होय ते प्रमाणे सर्व पदार्थो जुदे जुदां रूप जुदां जुदां माणस आगळ धारण करे छे एम कही शकाय. दृश्यमान स्वरूपपरत्वेज आवो नियम छे एम नहीं, पण पदार्थनां बीजां स्वरूपपरत्वे पण एमनुं एमज समजवुं. जे माणसने ऊननां कपडां जोवा तपासवानो अभ्यास छे तेने तेवां कपडां नजरे आवतांज, तेवा अनुभव विनाना कोईने समजाय ते करतां कांईक वधारे समजण पडशे. सुतारने कोई घाट जोतां जे भान थाय छे तेमां स्पर्श अने स्नायुव्यापारथी घणो वधारो थाय छे.

३९. **चेतनशास्त्र अने दृष्टिवादः—** दर्शनशक्तिना विकासनुं जे आटले सुधी वर्णन कर्युं तेमां आपणे ते व्यापारनुं आंतररूप तपास्युं छे, एटले के जे मनोव्यापारथकी दृष्टि उपजे छे तेनो विचार कर्यो छे. आपणे कोई एवा प्रश्ननुं उत्तर करता आव्या छीए के:—"शा क्रमथकी, समजी शकाय तेवा कीया मनोव्यापारक्रमथी, बाळकने दिक्कालावच्छिन्न पदार्थोनुं ज्ञान थाय छे ?"

आ प्रकारना प्रश्ननुं उत्तर थई गया पछी केटलाक अगत्यना प्रश्नोनो विचार करवो प्राप्त थाय छे. दर्शनव्यापारनुं बाह्यरूप शुं छे ? आपणने बाह्य पदार्थोनुं ज्ञान थाय छे ते केवुं छे ? सत्य छे के नहीं ? द्रष्टा जे चेतन तेनाथी बाह्य एवा दृश्य पदार्थोनुं दर्शन थाय छे तेनो शो अर्थ छे ? दृश्य पदार्थ एटले शुं ? दिक् एटले शुं ? काळ एटले शुं ? आ बधा शब्दो इंद्रियानुभवनां अमुक प्रकारनां गुंफनोनां नाम मात्रज छे ? के एथी अधिक छे ? उदाहरण जोईए तो एक पथरो अमुक स्पर्शादिनां प्रत्यक्ष करतां कांई अधिक नथीज ? के दिक्कालावच्छिन्न एवा ते पदार्थनुं दर्शन एवां प्रत्यक्षोना अनुभव उपरांत कांई विशेष वार्ता पण बतावे छे ? जो विशेष बतावतुं होय तो अमुक विशेष छे एनो शो पुरावो के एनी शी खातरी छे ? आपणे एम मानी शकीए के पदार्थो द्रष्टाथी भिन्न रही शके छे अने प्रसंगे प्रसंगे द्रष्टाने गोचर थाय छे ? के एमज मानीए के पदार्थोनी जे सत्ता समजाय छे ते तो चेतननो पोतानोज स्वानुभव पामवानो धर्म छे ? आ बधा प्रश्नोनो निश्चय करवानुं काम चेतनशास्त्रमां दर्शननो जे अर्थ करवामां आवे छे ते अर्थ जोतां आ शास्त्रनुं नथी; पण पदार्थशास्त्रनुं छे. बाह्यार्थ छे, बाह्यार्थ केवल चेतन व्यापारनुंज मानवापणुं—अध्यास—छे, ए आदि जे बाह्यार्थविज्ञानवाद, विज्ञानवाद, अजातिवाद, अने केवलबाह्यार्थवाद, ते ए शास्त्रना अंगमां समाय छे. अत्र तो द्रष्टा, चेतन अने दृश्य पदार्थ मानीने आ शास्त्रनी रचना थई छे.

४०. इंद्रियोनी केळवणी:——जो आपणने जे जे ज्ञान थाय छे तेनी सामग्री इंद्रियद्वारेज मळी आवती होय तो इंद्रियोनो योग्य उपयोग करवाथी मनोव्यापारमां नकामो घसारो थवानो संभव रहे नहीं. आपणे जे जगत्मां वसीए छीए, तेना विषे विशाल अने सूक्ष्म ज्ञान आववा माटे इंद्रियोने एवी केळववी के जेथी स्पष्ट अने पूर्ण प्रत्यक्षोनी समृद्धि प्राप्त थाय ए घणुं आवश्यक छे. आकृतिनुं सूक्ष्म ग्रहण करवा जेटली आंखने केळवणी न होय तो तेथी आगळ कशुं ज्ञान मळी न शके; कल्पनाशक्ति अस्पष्ट रहे, विचार शिथिल अने अयथार्थ थाय. दर्शनव्यापारनुं प्रथम पगथीयुंज ज्यां नबळुं होय त्यां आवां फळ उपजे छे. वर्तमान समयमां शिक्षणनी जे जे उत्तमोत्तम पद्धतिओ योजाई छे तेमां आ वात बराबर लक्षमां लेवामां आवेली छे, छतां शिक्षको ए पद्धतिओमांना विचारने आचारमां आणता नथी, अने बाळकोना मनमां दर्शनव्यापारजन्य विचारोनी समृद्धि, इंद्रियजन्य ज्ञाननो पायो पाको कर्या विनाज, भरवानो यत्न करे छे.

इंद्रियोनी केळवणीनो अर्थ ए छे के तत्काल जे कांई विद्यमान होय तेना उपर बाळके इच्छासहित अवधान आपवुं. इंद्रियजन्य जे ज्ञान ते, बाळकने पोतानी जाते पदार्थोनो साक्षात् संबंध थवाथी थई शके छे, बीजा कोईना मनोव्यापारद्वारे परोक्ष रीते बनी शकतुं नथी. एटला माटे शिक्षकने केळवणीना प्रथमारंभमां झाझुं करवानुं नथी. नानी वयमां इंद्रियोनी केळवणीनो मोटो भाग पोतानी मेळेज, मातानी के कोईनी सहाय्य विनाज सिद्ध थतो चाले छे. बाळकनुं शरीर निरोगी होय तो ते पोतानी मेळेज आसपासना पदार्थने ओळखवा माटे पोतानी आंख, पोताना हाथ, कान, आदिनो उपयोग करे छे.

छतां परोक्ष रीते आ कार्यने उत्तेजित करवानुं बनी शके तेम छे. माता बाळकना संसर्गो पोते इच्छे तेवा राखी शके तेम छे, एटले ते

उपर बराबर लक्ष राखीने के न राखीने, बाळकनी इंद्रियोनी केळवणीने सारे मार्गे चढावी शके के एमने एम बगडी जवा दे. बाळकोने प्रथमथकीज, इंद्रियोने विशेषे करी चक्षु तथा त्वक् इंद्रियोने केळवे तेवा पदार्थ आपवा ए घणुं आवश्यक छे, अने इंद्रियोनी केळवणीनो प्रथमारंभमां अर्थ पण एटलोज छे. ए पछी माता अथवा जे ऊछेरनार होय ते, के शिक्षक, आ काममां भाग लई शके तेवो समय आवे छे. पदार्थोनां जे जे स्वरूप, स्वभाव, आदि उपर बाळकनुं लक्ष न जतुं होय ते ते उपर लई जवुं, अने औत्सुक्यने जाग्रत् करी पदार्थावलोकनमां रस ऊपजाववो ए तेमनुं काम छे. आवी रीते जे साहाय्य करवामां आवे तेमां कांई पण पद्धतिपुरःसर योजना न करवामां आवी होय तो पण घणो लाभ थाय छे. योग्य अवलोकनना कांई नियम होई शकता नथी. सारा अवलोकन करनारनी पासे रहेवाथी, बाळकने बहु लाभ थाय छे, पछी ते शिक्षक, सोबती, गमे ते होय; पण एक कलारूपे अवलोकननुं काम शीखवी शकावुं तो अशक्य छे.

इंद्रियोने केळववानो आरंभ बहु वहेलो, छेक नानी वयथीज थवो जोईए, बाळक निशाळनी पद्धतिपुरःसर केळवणीमां पडे ते पूर्वे तो ते केळवणीनो घणो भाग सिद्ध थई जवो जोईए. ऊछेरवाना क्रममांज बाळकनी परीक्षाशक्ति जुदी जुदी इंद्रियने केळवे तेवा पदार्थद्वारे सारी केळवायली होवी जोईए. घणाक रंगीन पदार्थो तेनी आगळ मूकी तेने जुदा जुदा रंगनी छायाओ ओळखतां शीखववुं जोईए. प्रथमे रंगना तफावत जुदे जुदा ने स्पष्ट जणाय तेवा राखवा, ने जेम शक्ति वधती जाय तेम तफावतमां सूक्ष्मता आणता जवी. वखतो वखत घणा रंगो साथे राखी एकथी एक उपर एम नजर जई शके ने बराबर परख थई शके तेवो योग करवो पण लाभकारी छे. आ रीते बधीए इंद्रियोने ते-

मना चढता उतरता उपयोगना प्रमाणमां केळववी जोईए. आम कहेवानो अर्थ एज छे के पदार्थोने उथामवामां बाळकने सर्वथा स्वातंत्र्य आपवुं जोईए. पदार्थोना बाह्याकार तपासवा, तेमनी अंदरनी बांधणी जोवी, इत्यादि अवलोकन करवानी, तेम स्नायुव्यापार करवा पडे, अने तेमां थतो आयास समजवो पडे ते माटे चलन वलन करवानी पण तेने पूरे पूरी छूट आपवी जोईए. आपणे जोयुं छे के जड पदार्थोना ज्ञाननो मो'टो भाग स्नायुव्यापारद्वारेज प्राप्त थाय छे. बाळकने पोताना स्नायुनो प्रयोग करवामां आनंद लागे छे, अने पोताना साक्षात् व्यापारथी पदार्थनां स्वरूप धर्मादि शोधी काढवामां तेने कोई विलक्षण प्रसन्नता रहे छे. आटलुंज नथी पण बाळकोनी रमतोमांथी पण, सारो योजक, इंद्रियोने केळववाना रस्ता काढी शके छे. नाना कटकानी पेटीओ आवे छे ने ते कटकाने अनेकानेक आकृतिरूपे गोठवी शकाय छे. एवां रमकडांथी बाळक कोईवार कंटाळतां नथी, अने पदार्थोनां आकृति, रंग, इत्यादिनुं सारी रीते ज्ञान पामतां चाले छे.

आ प्रकारे बाळकना साक्षात् व्यवहार माटे तेम तेनी इंद्रियो माटे सामग्री पूरी पाडवाथी, गतिव्यापार साथे एक पासाथी स्पर्शप्रत्यक्ष, अने बीजी पासाथी चाक्षुषप्रत्यक्षने जोडी लेवानुं आपणे तेने शिखवी शकीए छीए. कहेवामां आवेलुंज छे के अवलोकनना काममां मुख्य व्यापार चक्षुनोज छे; एटले एक वार, स्थिति, घनत्व, अने परिमाण, सपाटीनी आकृति, ए बधानुं ज्ञान थई गयुं तो पछीथी अवलोकननी शक्तिनी केळवणीनो मुख्य के आखो भाग दृष्टिने केळववामांज रहे छे. बाळकनी आंख आगळ जोईए तेटला नाना प्रकारना पदार्थो लाववा जोईए, के नवीनता अने फेरफारथी जे प्रोत्साहन मळे छे ते मळतुं चाले अने देखता बराबर कोई वस्तुने पारखी लेवानी शक्ति दृढ थती जाय. बीजी पासा

ए पण आवश्यक छे के बाळकना संसर्गमां थोडी नित्यता पण जोईए; केम के एम होय त्यारेज जे उंडी अने सूक्ष्म तपास करवानी टेव छे ते पडी शके, अने तुरत तुरत पदार्थोने ओळखवानुं सामर्थ्य दृढ थाय. नवां नवां रमकडां रूपे के नवी चित्रपोथिओ रूपे बाळकने घणीक सारी वस्तुओ आपी शकाय एम छे; तेमज तेने सारी पेठे बहार लई जवानुं तेम नवा नवा तमाशा ने देखाव बतावावानुं पण बनी शके तेवुं छे. परंतु सूक्ष्म अवलोकन करवानी टेव आवे ते पहेलां तो अवलोकवानां पदार्थनो परिचय अवश्य होवो जोईए, ने अमुक अंशे रस पण होवो जोईए. ने ते तो नित्य साहचर्य होय तोज आवे छे.

अनेक रीते एकली शाळाने पण सारा अभ्यासनुं स्थान करी शकाय. "किंडरगारटन" जेवी नियमित रमतोमां इंद्रियोनीज यथायोग्य केळवणी थई आवे छे. ज्ञान अने शरीरचांचल्यने निकट संबंध छे, आवा चांचल्यथीज बाळकनी इंद्रियो व्यापार पामे छे, दर्शन पामवामां एकला चक्षुनो नहीं पण हाथनो पण उपयोग थाय छे, अने हाथे करीने करवानी रमतोथीज आकृतिनुं सारुं दर्शन करतां आवडे छे, एम फ्रीबलनुं जे मानवुं छे ते चेतनशास्त्रना नियमानुसार छे, एमां संशय नथी. जेमां हाथे कांई रचना करवी पडे एवां रमकडांथी बाळकोने एवी सारी रीते ध्यान आपवानी जरूर पडे छे के जेवी रीते अमथुं जोवामां ते कदापि आपी शके नहीं. एटलुंज नहीं पण एवी रमतोमां जे हस्तक्रिया करवी पडे छे तेथी आकृतिनां दर्शनमां आंख ने स्पर्शना अनुभवनो जे अनुषंग छे ते स्पष्ट रीते समजवामां आवे छे. चित्र काढतां शिखवानी वातने पण आनी आज वात लागु थाय छे.

आकृतिना सूक्ष्म दर्शननी एटली बधी आवश्यकता ने अपेक्षा छे के ए शक्ति प्राप्त करवा माटे बाळकोने खास केळवणी आपवानी जरूर

छे. ए केळवणीनो आरंभ बाळकने उछेरवाना स्थानमांथी थवो जोईए. जनावर, झाड, आदिनां जुदां जुदां रमकडां तेना आगळ मूकवामां आववां जोईए. चोखी रीते समजी शकाय तेवा तफावतो, वड अने आंबा वच्चेनो तफावत, घोडा ने गाय वच्चेनो तफावत, पण तेमां दाखल करवा जोईए. थोडा वखत पछी रंग वगरनां चित्रज वापरवां जोईए. एम करतां करतां आकृति ओळखवानुं कांईक सामर्थ्य आवे, अने अवधाननी शक्ति वधारे सबल थाय, त्यारे आकृतिनो भावनाद्वारे विचार करवानी वातने उत्तेजन आपवा मांडवुं. लीटीओ, वांक, ए आदि ते वखते समजी शकाशे. आवी रीते आकृतिनुं अध्ययन करावववानी साथेज आखी आकृतिओनां पृथक्करण पण शीखवता रहेवां. बाळक जे पदार्थो जुए तेमां सीधी लीटी, वांक, वर्तुल, आदि खोळी काढे तेवी तेने कसरत करावववी. आम करवाथी आकृतिनुं दर्शन स्पष्ट रीते थई शकशे.

बाळक पोते अवलोकन करी ज्ञान प्राप्त करे एवो मार्ग आजकाल केळवणीना सर्व विभागमां दाखल थतो चाले छे ते बहु सारी वात छे. पदार्थविज्ञाननो आरंभ पदार्थदर्शनथी करावववामां आवे छे. पदार्थदर्शनपद्धतिथी केळवणी आपवामां गमे तेवा अंतराय हो, परंतु सादी चाक, कोयला, रु, छोड तथा परिचित प्राणीनी आकृतिओ ए आदिनुं सारी रीतनुं ज्ञान घणांक छोकरांने एकी वखते आ रीतिथी सारुं आपी शकाय छे ए वातनो कोईने संशय रहेतो नथी. आ प्रकारे साक्षात् दर्शनथी पदार्थो संबंधे जे ज्ञान मळे छे ते परोक्ष रीते वर्णन करवाथी जे ज्ञान मळे तेना करतां अधिकाधिक उपयोगनुं छे. एटलाज उपरथी, भूगोलविद्या शीखववामां नकशा अने आकृति पापरवानी जरूर रहे छे, इतिहास शीखववामां बनावोनां चित्र वापरवाथी वधारे तादृशता आवे छे,

अने संख्या शीखववामां सोननशीनना यंत्र जेवुं यंत्र वापरवाथी लाभ थाय छे. आ प्रकारे इंद्रियोने प्रत्येक जातना उपदेशमांथी साक्षात् रीते केळववानो मार्ग करी शकाय छे तथापि केटलाक विषयोमां तेमनो उपयोग वधारे पडे छे, केटलाकमां थोडो पडे छे. ए वात आज काल सर्वमान्य थई छे के पदार्थविज्ञानना एक अथवा वधारे विभागनुं संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करवाथी इंद्रियोनी केळवणी पूर्ण रीते प्राप्त थाय छे.

प्रकरण ७ मुं.

संस्कारोद्बोधरूप कल्पना (स्मृति).

१. दर्शननां फळः—दर्शन एज ज्ञाननुं मुख्य निदान छे. परंतु दर्शनव्यापार पोते तो क्षणिक छे, एटले इंद्रियद्वारे जे दर्शन थाय तेटलुंज गृहवानी आपणने शक्ति होत तो आपणी ज्ञानसमृद्धि बहु टुंकी थई जात. आपणी ज्ञानसमृद्धि आवी परिपूर्ण अने अनंत छे तेनुं कारण ए छे के दर्शन पाम्या पछी, अने दृश्य पदार्थने दूर कर्या पछी, पण आपणा मनमां कोईक संस्कार रहे छे. बीजी रीते कहीए तो दर्शनव्यापारनुं फळ जे दृष्टि* ते टकी रहेछे. पदार्थना अभावे पण जे रूपे आ दृष्टि पाछी दर्शन दे छे तेने भावना, कल्पना अथवा मानसचित्र कहे छे.

२. दृष्टिनुं क्षणिकत्वः—दृष्टिथी पण कोईक क्षणिक फळ नीपजे छे. कोई प्रभावाळा पदार्थनुं दर्शन थया पछी थोडी क्षणपर्यंत ते पदार्थनुं चित्र नजर आगळ रहे छे. ए चित्रने "दृष्टिपरिणाम" एवुं नाम आपीए तो पण चाले. जे तंतुस्थानो आ व्यापारमां उपयोगमां आव्यां होय तेमनो संघर्ष हजी चाल्यांज करे छे एटलो आवा दृष्टिपरिणाम थाय तेनो अर्थ छे. उदाहरण—आथमता सूर्यना बिंब उपर जोया पछी आपणे घणी वखत, उघाडी के बंध आंखे, फीका पीळा रंगनां एक के वधारे चित्र देख्यां करीए छीए.

आ जे दृष्टिपरिणाम तेने प्रत्यक्ष दृष्टिपरिणाम कहीए, केमके बीजा परोक्ष पण थायछे—जेवाके कीकीना श्रमित थवाथी थई आवे छे ते. कोई पण प्रभावाळा पदार्थनो दृष्टिपरिणाम प्रत्यक्ष होयछे ते श्याम होयछे, अने परोक्ष होयछे ते रंगदार, जुदा जुदा रंगना किरणोरूप होय छे.

* दर्शनना पछीना फलरूप अर्थ बतावतामां तो दृष्टि अने संस्कार उभयनो एकज अर्थ छे.

मानसिक संस्कारोनो उद्बोध थाय छे ते संबंधे दृष्टिपरिणामना चमत्कारो घणा उपयोगना छे. जेने स्मृति अथवा कल्पना कहीए छीए ते अने दृष्टि ते बेनी वच्चे आ दृष्टिपरिणामोद्वारेज संबंध थाय छे.

३. क्षणिक संस्कारः—आवा दृष्टिपरिणाम उपरांत प्रत्येक अनुभव एटले के दर्शनथी अमुक अमुक संस्कारो उद्भवे छे जे दृष्टिपरिणामरूप चित्र करतां वधारे टके छे. उदाहरण-कोई मित्रने दीठा पछी तेना वदननुं चित्र थोडो वखत चित्तमां रहेछे, अने अवधानने रोकनारा बीजा पदार्थो दूर थतां पोतानी मेळेज पुनः पुनः देखायछे. आ क्षणिक चित्र अथवा संस्कार ते पण धीमे धीमे झांखो पडते पडते अस्पष्ट थई जाय छे. ए प्रकारे दृष्टिमात्र धीमे धीमे अस्तित्व बहार नीकळी जती चाले छे.

तत्काल रहीने जता रहेनारा मानसिक चित्रथकी दृष्टिपरिणामने तुरत जुदो पाडी शकाय तेम छे. मानसिक चित्र एटलुं बधुं स्पष्ट अने सुरेख होतुं नथी, अने ज्यारे तेनुं कांईक स्पष्टताथी ग्रहण थाय छे त्यारे पण दिगवच्छिन्नाकारे तेनुं ग्रहण थायछे.

दृष्टि अथवा चित्रनुं जे आवुं क्षणिक पण कांईक स्थायीपणुं छे ते घणी अगत्यनी वात छे, केमके घणाक संस्कारनी एक श्रेणिनुं के काळनुं ग्रहण करवामां तेनोज मुख्य उपयोग छे. अ, ब, क, ड, एमना संस्कार एक पछी एक थता होय, तो आखी ए श्रेणिनुं एकरूपे जे ग्रहण थायछे तेनो अर्थ एटलोज छे के ए श्रेणिना जे प्रथम प्रथम अवयव छे ते अंत्य अंत्य अवयवना उच्चारणसमये पण विद्यमान छे. एम मानवामां आवे छे के एक पछी एक थता संस्कारने गृहवानी शक्तिनी मर्यादा, तेवा संस्कारोना स्थायीपणा उपर आधार राखे छे. वंटना शोध प्रमाणे एम जणायुं छे के आवा १२ संस्कार घणामां घणा एक वखते एक श्रेणिमा गृही शकायछे.

जेने साधारण रीते नानां नानां स्मरण कहे छे तेमां कोई दृष्टिनुं थोडा वखतनुं स्थायित्व एज कारण होयछे. कोई बाळकना मनमां एक संदेशो लई जतां संदेशाना शब्दोना संस्कार थोडी क्षण रहेछे. एने लीधेज स्मरण राखी ने पुनः कही बतावतानुं काम सरळ थाय छे.

४. संस्कारोनां स्थायित्व अने उद्बोधः—परंतु उक्त प्रकारना जे क्षणिक दृष्टिपरिणाम अथवा संस्कार ते ज्ञानार्थे झाझा उपयोगना

नथी. ज्यारे आपणे कोई पदार्थनी भावना करवानी के मानसिक चित्र-रूपे धारणा करवानी वात करीए छीए त्यारे, अत्र जे क्षणिक दृष्टि अने संस्कारोनी आपणे वात कही गया तेथकी भिन्न एवा स्थायी संस्कारो पामवानी मनने शक्ति छे एम मानीनेज आपणे बोलीए छीए. एटले के अमुक समय गया पछी आपणे कोई संस्कारनो उद्‌बोध करी शकीए एवी आपणामां शक्ति छे एम मानीए छीए. दृष्टिनुं आ प्रकारे जे पुनः स्थापन अथवा दृष्टिनो जे आवो उद्‌बोध तेने चेतनशास्त्रमां भावना के कल्पना कहेवाय छे. ज्यारे ज्यारे कोई पुरुषनुं वदन, कोई गृहादिनो आकार, कोई वचन, कोई स्वाद, ए आदिनुं स्मरण करीए छीए, त्यारे अमुक कल्पना के भावनाज आपणे करीए छीए. चक्षुथकी थतां दर्शन एज आपणा इंद्रियजन्य ज्ञाननो उपयोगी अने मुख्य भाग छे, तेम चाक्षुष संस्कार ते आवी भावनानो मुख्य भाग छे. एटलाज माटे सर्व प्रकारनी भावनाने आ शास्त्रमां "चित्र" एम कहेवामां आवे छे.

आ प्रकारना प्रत्यक्ष अनुभव अथवा तज्जन्य जे संस्कार तेना पुनः उद्‌बोधनी शारीरिक सामग्रीमां, तंतुस्थानोमां कांईक विकृति अने कोई प्रकारनी अमुक तत्परता एज छे. प्रथमे तो तंतुस्थानोनो उद्‌बोध यद्यपि कोई बाह्यसंघर्षने लईने थाय छे, तथापि आ कारणने लीधे ते बाह्य संघर्ष विना पण थई आवे छे. अंध छतां मिल्टन दृश्य विश्वना देखावो मनमां कल्पी शकतो, ने बिथोवन बधिर थया छतां रागदारी कल्पी काढतो ए आवा बाह्यसंघर्षनिरपेक्ष आंतर व्यापारनां दृष्टांत छे.

आ रीते क्षणिक अने स्थायी संस्कारोनो आपणे अंतर करीए छीए, पण ए उभयने जे संबंध छे ते लक्षमां राखवानी जरूर छे. साधारण रीते जोतां एम कही शकाय के कोई पण संस्कारनो उद्‌बोध संस्कार ताजे ताजो होय त्यां सुधी बहु सारो थाय छे, अने जेम जेम समय जतो जाय छे तेम तेम जरा झांखो पडतो चाले छे. थोडाकज दिवस उपर जे वदन आपणे जोयुं होय, जे राग सांभळ्यो होय, तेनुं स्मरण बहु सरलताथी अने स्पष्ट रीते थई शके छे; अने एकाद के पांच छ मास वीत्या पछी तेनो संस्कार क्षीण थतां मननो ते उपर कबजो रही शकतो नथी. एम कही शकाय के संस्कारजन्य ज्ञान ते ते संस्कार जेम विदूर तेम वधारे अस्पष्ट थाय छे.

५ कल्पना:— सादामां सादी कल्पना ते कहेवाय के जेमां कल्पनानो क्रम मूळना दर्शनना क्रमने अनुसरतो होय. एने संस्कारोद्‌बोधरूप कल्पना कहे छे. जेने साधारण रीते स्मृति एवुं नाम आपवामां आवे छे, एटले के अमुक अमुक संस्कारोने दर्शनना कोई कोई भागने फरीथकी संभारवानी जे क्रिया ते पण आ कल्पनामांज समाय छे. कल्पनानो जे सामान्य प्रकार सर्वप्रसिद्ध छे ते विषे आगला प्रकरणमां चर्चा थशे.

दर्शन थया पछी संस्कार बंधाय ते अने ते संस्कार उद्‌बोध पामे ए बे वच्चे कांईक तफावत मानवानो प्रचार छे. पुनरुद्‌बोध करनार शक्ति तेमनो उपयोग करी शके ते पूर्वे संस्कारो मनना भंडारमां संग्रहेला होवा जोईए. संस्कारने आ रीते स्थापी संग्रही राखवानी जे वात तेनो उद्‌बोध थाय तेथी केवळ निराळी छे. तेना तात्पर्यनो निर्णय विवादग्रस्त छे. ते विवादनी चर्चामां पड्या विना आपणे एटलुं कही शकीशुं के संस्कारसंग्रह अने संस्कारोद्‌बोधमां एटलो भेद छे के जे संस्कारसंग्रह छे ते संस्कारोद्‌बोधनी शक्तिरूप छे. कोई बाळकने अमुक संस्कार एक अठवाडीआ सुधी मनमां रह्यो होय तो एम कही शकाय के ते संस्कारनो उद्‌बोध करवानी शक्ति तेना मनमां तेटलो समय हती.

आ वात छेक यथार्थ नथी, केम के घणी वार कोई विशेष प्रसंगने लईने अनेक सं-

स्कारोनो उद्‌बोध थई आवे छे. उदाहरण– पूर्वे न स्मरी शकायला एवा संस्कारो पण नशाना तोरमां के कोई बीजा कारणथी उश्केरायली स्थितिमां ताजा थई आवे छे. छतां आ बातमां पण एटलुं कही शकाय एम तो छेज के ज्यारे संस्कारनो आ रीते उद्‌बोध थई शक्यो त्यारे ते संस्कारने ए रीते स्मरवानी शक्ति बधा समयमां हतीज हती.

संस्कारसंग्रहनुं स्वरूप, मन अथवा चेतननां सामान्य स्वरूपना विचारने अनुसारे अने चेतन तथा शरीरना संबंधनुं जे स्वरूप मानवामां आवे तेने अनुसारे घडाय छे. प्रत्यक् चेतननी पार, अप्रतीत एवो एक विशाल प्रदेश छे एम जे माने छे ते एम कहे छे के प्रत्यक्षमात्र प्रत्यक्‌चेतननी पारना ए प्रदेशमां विरमे छे ने त्यां रहे छे, ने ज्यारे अपेक्षा थाय तथा सामग्री मळी आवे त्यारे ए अप्रतीत प्रदेशथी बहार आवी प्रत्यक् चेतनमां प्रतीत थाय छे. जे लोको "शारीरिक चेतना" ना सिद्धांतने अवलंबी रह्याछे ते एम बतावे छे के प्रत्यक् चेतनमांथी कोई पण प्रत्यक्षनो अस्त थया पछी तेनो जे अवशेष रहे छे ते, ए प्रत्यक्ष पामवामां जे तंतुयंत्रनो व्यापार थयो होय ते यंत्रमां अमुक विकृतिओ रूपेज रहे छे. आ लेखकोना मत प्रमाणे संस्कारसंग्रहमां मुख्य बात शरीरगत व्यापार एज छे.

६. कल्पना अने दृष्टिनुं अंतरः—दर्शनव्यापार अने कल्पना ए उभयनुं अंतर समजवामां सामान्य रीते कशी हरकत आवती नथी. कोई पदार्थ जेवो के खडीओ, घर, घोडो, कोई पण जोईने दर्शन पामवामां अने ते विद्यमान न होय तो पण तेनी कल्पना करवामां स्पष्ट अंतर छे एम आपणे सारी रीते समजीए छीए. साधारण रीते आपणे एमज कहीए छीए के प्रत्यक्ष अनुभवजन्य जे संस्कार तेथी कल्पना उद्‌भवे छे अने ते कल्पना मूळना दर्शननी नकल छे.

आवो जे अंतर नक्की करवामां आव्यो छे तेज पूरेपूरो अंतर छे एम न जाणवुं, केमके ए रीतनोज जो अंतर होय तो अस्पष्ट दृष्टि अने कल्पना तेनी वच्चे कांई अंतर रहे नहीं. दृष्टि अने कल्पनानां विशेष स्वरूप आ रीते छे. दृष्टिनो आधार आपणी इच्छाशक्ति उपर नथी, पण कल्पनानो घणे भागे छे. कोई पदार्थ विद्यमान होय, अने आपणी नजर तेना भणी होय तो तेनुं दर्शन थया विना रहेज नहीं; पण एकाद कल्पनाने तो अवधान तेना उपरथी खसेडी नाखी आपणे दूर करी शकीए. वळी दृष्टिनो आधार शरीर अने इंद्रियोना व्यापार उपर रहे छे, कल्पनानो नथी रहेतो.

आंखने गमे तेम फेरवीए तो पण कल्पना तो स्थिरज रहे छे. दृष्टि उद्‌भवे छे एकाएक अने जाय छे पण एकाएक, कल्पना धीमे धीमे उपजे छे अने धीमे धीमे शमे छे. सामान्य रीते आ उभयनां आटलां लक्षण ध्यानमां रहे तो आ उभयनुं अंतर समजवामां बाध आवे एम नथी. परंतु निद्रा जेवा असाधारण प्रसंगोमां ज्यां कल्पनाने याथार्थ्य अर्पनार दृष्टि विद्यमान होती नथी, ने कल्पनाशक्ति असाधारण रीते तादृश्य गृहे छे, त्यां दृष्टि अने कल्पनाने आपणे सेळभेळ करी नाखीए छीए.

जे मध्यतंतुव्यापार दृष्टिमां ने कल्पनामां थाय छे ते एकना एकज छे एम मानवामां आवे छे, जे दृष्टिनुं स्थान तेज कल्पनानुं स्थान गणाय छे. फेर एटलो जणाय छ के कल्पनाने समये संघर्ष ओछो रहे छे, ने तेनी मर्यादा पण टुंकी रहे छे, केमके बाह्य तंतुपर्यंत ते संघर्ष पहोची शकतो नथी, मध्येज रहे छे.

७. दृष्टिमां कल्पनानो भागः—पाकी उंमरे आपणे एक पण प्रत्यक्ष थोडी पण भावना अथवा कल्पनाना मिश्रण विनानुं पामी शकता नथी, तेमज दृष्टि पण थोडी घणी कल्पनाना मिश्रण विना उपजती नथी. पदार्थने ओळखवुं एनुंज तात्पर्य ए छे के पूर्वे जोयला कोई पदार्थ साथे तेनुं सादृश्य समजी प्रत्यभिज्ञान पामवुं एटले एवुं ओळखाण अथवा प्रत्यभिज्ञान, कोई समये पण, मूळना दर्शनव्यापारजन्य संस्कारथी अनुप्राणित कल्पना विना होयज नहीं. एटले के कोई एक दृष्टि थवामां आगली दृष्टिओना संस्कार पण सहाय थाय छे.

परंतु प्रथमनी दृष्टिनी जे आवी अस्पष्ट कल्पना तेने स्पष्ट अने सुरेख कल्पनाथकी निराळी मानवी जोईए. कोई पदार्थ, एकाद मनुष्यनुं मुख, नजरे आवतां, आपणे "एक वार जोयलुं तेज आ" एवुं प्रत्यभिज्ञान पामी शकीए छीए, पण ते विद्यमान न होय त्यां सुधी तेना संस्कारने कदापि स्मरी शकतां नथी. आवो अनुभव पण सर्वजनीन छे. कूतरो पोताना मालीकने अनेक वर्षनी जुदाई पछी पण ओळखी शकशे पण ते पोताना मालीकनी गेरहाजरीमां पण कल्पना करी शकशे के नहीं ए शंका भरेलुं छे. पदार्थोनुं प्रत्यभिज्ञान पामवानी शक्ति, पदा-

थोनी कल्पनाशक्तिथी भिन्न छे, अने ज्यां कल्पनाशक्ति क्षीण होय त्यां घणी वार परिपूर्ण रूपे दीठामां आवे छे.

कल्पना अने दृष्टि परस्परानुविधायी छे तेनां सारां उदाहरण मळी शके छे. दृष्टिमात्रमां अनुद्भूत एवुं कल्पनाबीज रहे छे ए वात " सापेक्ष अवधान " ना जे प्रयोग आगळ कहेवाई गया छे तेमां स्पष्ट बतावेली छे. कोई एक संस्कारानुसार प्रथमथी अवधानने योजी राखवानो जे व्यापार थाय छे तेनो अर्थज ए छे के मनमां प्रथमथी अमुक कल्पनाबीज (संस्कार) छेज. दर्शनव्यापार आ ठेकाणे त्वराथी थाय छे तेथी एम समजाय छे के प्रत्यक्ष अने कल्पनानो एमां घणो भाग रहे छे, अने सापेक्षत्वनी स्थितिथकीज कल्पनानुं तत्त्व तो मूळथी परिपूर्ण जामेलुं होय छे. आ प्रकारे कल्पना दृष्टि उपजाववामां सहाय थाय छे. दृष्टिने कल्पनाथी साहाय्य मळे छे ए जोवानो सारामां सारो प्रसंग ए छे के ज्यां दृष्टि कांईक आगळथी थई जाय छे, एटले के ज्यां दृष्टि थता पूर्वे जराक आगळथीज दृष्टि थई एम, तेमां मळनार कल्पना विद्यमान होवाने लीधे थई जाय छे.

त्यारे एम कही शकाय के दृष्टि अने कल्पना परस्परानुविधायी छे. एक पासा कल्पनानो आधार दृष्टि उपर छे केमके तज्जन्य संस्कारनुं ए फळ छे. मूळ कारणरूपे दृष्टि होय छे एटलुंज नहीं, पण तुरत प्रोत्साहक कारणरूपे पण घणी वार दृष्टिज होय छे. बाह्य दर्शनना क्रमथी आंतर कल्पना के भावनानो क्रम नियमाय छे. बीजी पासा, साधारण तेम असाधारण सर्व स्थितिमां, कल्पनानो प्रत्याघात दृष्टि उपर थाय छे, अने बाह्य दर्शनना क्रमने आंतर कल्पना के भावनानो क्रम नियमी शके छे.

८. **कल्पनानी स्पष्टता**:—भावनामय कल्पना सारामां सारी ते कहेवाय के जे सुरेख अने स्पष्ट होय. आम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के भावनामय चित्र अपूर्ण अने झांखुं न होवुं जोईए. आखा चित्रना अवयवे अवयव तेमना परस्पर संबंधानुसार यथायोग्य तादृश रहेवा जोईए. कोई मनुष्यना वदननी स्पष्ट कल्पना त्यारे थई कहेवाय के ज्यारे ते वदननी आकृतिए आकृति, रेखे रेख—मोनी आकृति, आंखनो रंग, आखा वदननी आकृति, ए बधुं—कल्पनामां उदय पामे. आथी उलटी रीते ज्यारे कोई चित्रनी रेखे रेख न जणाय, अथवा आखुं चित्र जणाया छतां बहु झांखुं जणाय, त्यारे कल्पना अस्पष्ट छे एम कहेवाय छे.

कल्पना पोते स्पष्ट जोईए एम कह्युं ते भेगुं एम पण जाणवुं के कल्पना बीजी कल्पनाओथी स्पष्ट ओळखी शकाय तेवी पण स्पष्ट होवी जोईए. " स्पष्ट कल्पना " एनो अर्थ घणी वार एटलोज होय छे के बीजी कल्पनाओथी ओळखी शकाय तेवी स्पष्ट. अमुक वदन आपणे स्पष्ट रीते कल्पी शकीए छीए एम कहेवानुं तात्पर्यज ए छे के बीजां वदनो साथे तेने भेळवी भुलावो खाता नथी.

मानसिक कल्पनानी स्पष्टताना सर्व प्रकारना अंश थई शके छे. केटलीक कल्पना अस्पष्ट, झांखी, शिथिल, होय छे ने तेथी बीजी कल्पनाओ साथे सेळभेळ थई जाय छे. मी. **गाल्टने** वर्तमान समयमां चाक्षुषदर्शनद्वारे थती भावना विषे जे शोध कर्यो छे ते उपरथी एम जणाय छे के माणसोमां आ शक्ति घणा तारतम्यथी दीठामां आवे छे; घणां माणसोने पदार्थनी आकृति, रंग आदिनी कल्पना करवानी शक्तिज होती नथी.

कल्पनानी स्पष्टताथकी तेनी सुरेखताने आपणे जुदी जाणवी जोईए. सुरेखतानो अर्थ ए छे के अनुकरणरूपे कल्पना यथार्थ अनुकरण छे के नहीं, मूळनी दृष्टि साथे बराबर मळती आवे छे के नहीं. बराबर होय तो ते सुरेख कहेवाय. अस्पष्टताने लीधे घणी वार सुरेखतानो भंग थाय छे. परंतु घणी वार तो सुरेखता न होय तेनुं कारण अन्य पण होय छे. चित्रबाह्य एवां कोई तत्त्व पण आपणे ए कल्पनामां मेळवी लईए छीए. कोई वदननी कल्पना सुरेखता विनानीज कहेवाय, जो ते उपरनी आंखोनो रंग होय तेनाथी जुदो कल्पायो होय. समय जाय तेम तेम न्यूनाधिक थतां थतां कल्पनानां चित्रमात्र सुरेखताहीन थतां जाय छे.

९. **स्मृति अथवा उद्बोधनी सामग्री**:— कोई पदार्थ अथवा वृत्तांतने थोडा समय पछी भावनाद्वारे प्रत्यक्ष करवानी शक्तिनो आधार

बे वात उपर रहे छे. प्रथम तो संस्कार मन उपर सबल रीते पडेलो होवो जोईए. आने संस्कारनुं घनत्व एम आपणे कहीए. बीजी वात ए छे के मनने जेथी ते संस्कार उपर जवानुं बनी आवे तेवुं कांईक प्रोत्साहन जोईए. आ बीजी वातने साहचर्य एवुं नाम आपीए.

(१) **संस्कारनुं घनत्वः अवधान अने संग्रहः**— त्यारे प्रथमे (एम मानीए के एकज संस्कार थयेलो छे तो) एम कही शकाय के स्पष्ट कल्पना थई शके ते पूर्वे संस्कारमां अमुक प्रकारनी स्पष्टता अने सुरेखता जोईए. मो'टो अवाज नाना अवाज करतां वधारे सारी रीते पुनः संभारी शकाय छे; प्रभावाळो कोई पदार्थ स्पष्ट रीते जोयो होय ते, कोई झांखो पदार्थ अस्पष्ट रीते जोवामां आव्यो होय तेना करतां वधारे सुतर रीते सांभरी शके छे. आज कारणने लीधे जे साक्षात् संस्कारो छे ते, कल्पनाना संस्कार करतां वधारे सारी रीते याद आवी शके छे. आपणे जाते जोयुं होय ते, कोई स्थाननुं वर्णनमात्रज आपणे सांभळ्युं होय तेना करतां वधारे स्पष्ट अने सुरेख रीते सांभरी शके छे. स्मरी राखवाना शब्दोने सांभळी शकाय ते रीते मो'टेथी बोलीने गोखवानी जे रीति छे तेमां पण आज हेतु समायलो छे.

कोई संस्कार घन छे के नहीं तेनो आधार ते संस्कारनी आकृतिमात्र उपरज छे एम नथी, पण तेना प्रति मननी जेवी स्थिति होय ते उपर पण छे. आपणुं मन प्रथमथीज कोई अन्य स्थाने लागेलुं होय तो गमे तेवी प्रभावाळी वस्तु पण वधारे समय चाले तेवो संस्कार करी न शके. आम होवाथी एटलुं पण उमेरवुं जोईए के कोई पण संस्कारनुं चिरस्थायित्व, अनुभूत पदार्थ संभवादिमां जे रस पडे अने ते रसने लीधे जे अवधान अपाय तेना उपर आधार राखे छे. बाळकने जे वातमां पूरो रस पडे छे तेनी तेने बराबर

स्मृति थाय छे. आवां रस अने अवधानथकी पदार्थना प्रत्येक अवयव तेम आखा पदार्थ विषे स्पष्ट ज्ञान थाय छे. अने आवा ज्ञाननी जे स्पष्टता तेना उपरज संस्कार संगृहीत थई चिरस्थायी थाय न थाय तेनो आधार रहे छे.

अवधानना बळनो जेना उपर आधार रहे छे ते रस, आपणे कही आव्या छीए तेम, पदार्थना कोई धर्म—कुतूहळ, नवीनता, सौंदर्य, आदि– उपरथी पेदा थई आवे छे. दर्शनव्यापार साथेज वृत्ति आनंदनी चाले तो सारामां सारुं अवधान आपी शकाशे अने पदार्थज्ञान सारुं थशे एम अवश्य जाणवुं, बाळपणना जे संस्कार दृढ रीते स्मरणमां रहे छे तेमनामां आनुषंगिक एवी कोई पण सबल वृत्ति होय छे. (कुतूहळ, आनंदोद्रेक, भय, मान इत्यादि.) ज्यां स्वभावथकीज आ रीते रस उपजतो न होय त्यां इच्छासहित अवधान आपवाना सबल प्रयासथकी पण चिरस्थायी एवो संस्कार उद्भवे छे. परंतु प्रथम रीत्या जे संस्कार थाय तेना जेटलो आ संस्कार बलवान् रहेतो नथी. संस्कार गमे तेटले थोडे वधते अंशे पण आ रस पेदा न करतो होय, तो गमे तेटला अवधानप्रयासथी पण, तेनो संग्रह करवो अति कठिन पडे छे.

छेवट एटलुंज कहेवानुं छे के आ प्रकारे संस्कारोनी छाप मनमां पडी शके तेवी स्थितिमां सर्वदा मन एक सरखी रीते होयज छे एम कांई नथी. अमुक संस्कार थती वखते जेवुं मनोबळ होय अने मगजमां जेवी शक्ति होय तेना उपर घणो आधार छे. मगज ताजे ताजुं होय ते वखते संस्कारोनो संग्रह बहु सारो थई शके छे.

आटले सुधी जे विचार आपणे चलाव्यो तेमां तो एम मानी लीधेलुं छे के जे कोई वस्तु संभवादिनो संस्कार थयो छे तेनो अनुभव मात्र

एकज वार थयलो छे. परंतु ए तो सुप्रसिद्ध वात छे के सारी भावना (भावना पण संस्कारज छे एम जाणी राखवुं) उपजी आवे तेने माटे एकज अनुभव पूर्ण नथी. भावनामात्र कांईक समय पछी क्षीण थवा मांडे छे. एम थतां जे रहे छे ते अस्पष्ट अने झांखुं थतुं चाले छे; जो नवा संस्कारोथी तेने सतेज करवामां आवे तोज कायम रहे छे. आपणा जीवननी घणी घणी वातो वीसारे पडी जाय छे, केमके तेने ते रूपे तेमनो पुनः अनुभव थतो नथी. मनमां जे कल्पनाओ भरेली छे तेनो मो'टो भाग, जे पदार्थो आपणे वारंवार जोईए छीए, जे विषयोनो वारंवार अनुभव करीए छीए, तेमांथी उपजी आवेलो छे. त्यारे संस्कारना घनत्वनुं आ एक बीजुं तत्त्व नीकळ्युं के कोई पण अनुभव जेम पुनः पुनः वधारे वार थाय छे तेम तेनो संस्कार वधारे घन थाय छे. तेनी ते वात के तेना ते संभवनो अनुभव पुनः न थाय तेवुं होय त्यां थयला संस्कारनुं पुनः स्मरण, कांईक ओछा बळथी, पण अनुभव पोतेज पुनः थयो होय तेटलुं काम करी शके छे. बाळपणना केटलाक बनावो, तेमनुं वारंवार स्मरण करवाथी ने ए रीते तेमना संस्कारोने ताजा करवाथी, आपणा लक्षमां रह्यां करे छे.

आ रीते संस्कारना पुनः पुनरभ्यासनी वात चाले छे तेमां कहेवुं जोईए के कोई पण अनुभवनुं तेने तेज रूपे पुनः थई शकवुं ए घणुंज अशक्य नहि तो विरळ छे. परिचित एवा दृश्यमान पदार्थो, आपणा मित्रादिनां वदनादि, ते पण घणी विकृति पामी जाय छे. शब्दना संस्कार जेमने आपणे सर्वदा तेना तेज कहीए छीए, ते पण बोलनारना अवाजनी शक्ति अने तेनी बोलवानी रीतिने अनुसारे, वधारे ओछी विपुलतावाळा ने वधती ओछी उंचाईवाळा जणाय छे. जेने आपणे सादी भावना रूपे धारीए छीए तेज कोई गुंफित मनोव्यापार होय छे एम आगळ बतावीशुं.

एम कहेवानी पण आवश्यकता छे के कोई संस्कार पुनः पुनः अनुभवाय तेटलुंज, अर्थात् आवो अभ्यास अमुक वार थाय एटलुंज पूर्ण नथी.

ए अभ्यास वारंवार थवो जोईए. अमुक समय पछी भावनामात्र क्षीण थवा लागे छे ए तो कहेलुंज छे. त्यारे तेनी ते भावना बीजी वार पेदा थई प्रथम वारे थयली भावनाना बळमां उमेरो करे ते माटे एम अवश्य बनवुं जोईए के प्रथम भावनाने क्षीण थवानो समय पूरो थता पूर्वे तेनो द्वितीयाभ्यास थवो जोईए. एम थवाथीज एकत्र समूह थई सारो संस्कार जामी शके. नवी भाषा शीखती वखते थोडी वार आवतो एवो कोई विरळ शब्द अने वारंवार आवतो एवो परिचित शब्द, ए बेएने सरखे सरखी वार कोशमां आपणे जोईए तो परिचित शब्द मनमां स्थिर थशे ने विरळ शब्द नहीं थाय. आवी संस्कारसंग्रहनी जे क्रिया तेने कोई वहेती नदीना प्रवाहने पथरा पूरी अटकाववानी क्रिया साथे सरखावी शकाय. जोईए तेटली त्वराथी जो पथरा नंखायां जाय तो तो प्रवाहनी वचमां भींत ऊभी थई जाय, पण एक पथरो आज नंखाय ने बीजो काले नंखाय तो तो बीजो पथरो आववाथी पहेला पथराने जोर मळे ते पूर्वे प्रवाहनुं बळ पहेला पथराने क्यांनो क्यां खेंची जाय.

त्यारे चिरस्थायी एवो संस्कारसंग्रह थाय ते माटे अमुक अवधान, अने अमुक अभ्यास, ए उभयनी अपेक्षा छे. हवणांज बतावावामां आव्युं तेम अवधानने सहाय थवा सारु अभ्यासनी अपेक्षा छे; अवधान विनानो अभ्यास व्यर्थज छे. मित्रना वदन जेवी सारी रीते परिचित वस्तुनी पण, जो ते वदननी आकृतिने अवधानपूर्वक न विलोकी होय तो, आपणे यथार्थ कल्पना करी शकता नथी.

एम पण कोई कहे के आ बे वात कही ने एकरूपे पण बतावी शकाय तेवी छे. कोई संस्कारनो अभ्यास एक वार थयो होय के बे वार के दश वार, पण तेनो चिरस्थायी संग्रह थवो एनो आधार तो ते समयना अवधानना बळ उपरज रहे छे. फेर एटलोज छे के आमां अवधान एकी वारेज आपवुं होय तेटलुं अपाय छे, पेलामां जुदे जुदे वखते थोडुं थोडुं अपाय छे. परंतु आम कहेवाथी एम नीकळतुं नथी के आपवुं होय ते-

टलुं अवधान एकी वखते आपवाथी, अने तेनुं तेज अवधान थोडे थोडे जुदे जुदे वखते आपवाथी, फळ एकनुं एकज थाय छे.

(२) **संस्कारसाहचर्यः**—कोई एक संस्कार मन उपर सारी रीते बेठेलो होय, त्यारे कल्पनारूपे ते पुनः प्रत्यक्ष थाय एवुं मनने वळण रह्यां करे छे. आ वळण जे प्रकारनुं होय ते उपरज कोई वातनुं स्मरण थवानी सरलतानो आधार छे. छतां थोडोक समय थया पछी, साधारण प्रसंगोमां आवा वलनमात्रथीज अनुभव पुनः स्मराय एवुं बनतुं नथी. कांईक पण एवुं प्रत्यक्ष होवुं जोईए के जेनाथी मनने तेवी कल्पनानुं सूचन थाय. एकाद स्थानना दर्शनथी ते स्थाने बनेलो वृत्तांत स्मरणमां आवे छे, कोईनुं नाम सांभळतां ते नामवाळा पुरुषनुं स्मरण थाय छे, इत्यादि अनुभव सार्वजनीन छे. आवी रीते जे सूचन करनार तेने प्रोत्साहक कारण कहीए; अने वलनरूपे जेने बताव्युं ते योग्यता रूप कारणथी तेने भिन्न गणीए. आपणा जीवनना आटला बधा संस्कार, घणा रसिक एवा स्वप्नानुभवना संस्कार समेत सर्व संस्कार, छेक निर्मूल थई गयेला लागे छे, तेनुं कारण एटलुंज छे के तेमनुं कांई प्रोत्साहक होतुं नथी.

एक संस्कारनुं ते संस्कार साथे कोई प्रकारनो साहचर्यसंबंध राखता अन्य संस्कारथकी पण स्मरण थाय छे. कोई वृत्तांतनुं तेनुं स्मरण करावनार स्थल साथे साहचर्य छे; कोई नामनुं ते नामना पुरुषनुं स्मरण करावनार पुरुष साथे साहचर्य छे. एटलाज माटे आपणे साहचर्यने स्मृति अथवा संस्कारोद्बोधनुं बीजुं मो'टुं साधन गणीए छीए.

साहचर्यना पण घणा प्रकार छे. एक वातनुं बीजी वात साथे साहचर्य अनेक प्रकारे बंधाय छे. **अ** ए प्रोत्साहक कारण छे एम धारो, **ब** थई आवती भावना के कल्पना धारो. अहींयां **अ** अने **ब** ने स्थान-

विशेषना साहचर्यवाळी— जेमके पासे पासे आवेलां बे मकान— अथवा आनुपूर्वीथी बनती—जेवी के सूर्यास्त ने तिमिरोदय—वातो साथे संबंध छे एम कही शकाय. अथवा एम नहीं तो **अ** अने **ब** कोइ साधर्म्यवाळा बे पदार्थ बतावे, जेमके एक प्रतिकृति अने मूलकृति. आवा जे अनेक प्रकारना साहचर्यसंबंध तेने शास्त्रीय दृष्टिथी अवलोकी थोडाक सादा साहचर्यनियमोरूपे बतावी शकाय छे.

१०. सामीप्यनिबंधन साहचर्यः— बधां साहचर्यमां सुविज्ञात एवुं मुख्य साहचर्य सामीप्यनिबंधनसाहचर्य एटले सामीप्यना कारणथी थयेलुं साहचर्य छे. एनो अर्थ ए छे के एक अथवा वधारे संस्कारो पोत पोताना कालकृत संबंधने लीधे परस्पर साहचर्यवाळा छे. एनो नियम आवो कही शकायः जे प्रत्यक्ष अथवा संस्कार साथेज उद्भवतां होय, अथवा अव्यवहित आनुपूर्वीथकी उद्भवता होय, ते पछी थकी, परस्परनुं भान, स्मरण, सूचन, कल्पना, करावी शके छे.

सामीप्यनिबंधनसाहचर्यनो नियममात्र अत्र बताव्यो तेटलाथी स्पष्टज छे के ए साहचर्यमां कोई पण बे वार्ता होवी जोईए ने तेनी वच्चे कांई संबंध जोईए. प्रथमे आपणे बाह्यविश्वगतक्रमथी जे साहचर्यसंबंध थाय ते जोईए. बे पदार्थ एकज वखते अथवा अव्यवहित क्षणे पूर्वोत्तर क्रमथी साथे आवे छे. आने संस्कारसंयोग एम कहीए. बीजी वात आंतरक्रमनी छे. आ ठेकाणे जे बताव्यो तेवो संयोगवाळो अनुभव थया पछी ते अनुभवना संस्कारोने जे साहचर्य मनमां जणाय छे ते आ स्थाने जोवानुं छे. साहचर्य ए शब्द वास्तविक रीते जोतां संस्कारसंयोगने लागु करवामां आवतो नथी, पण तेवा संयुक्त संस्कारजन्य जे कल्पनाओ ने आंतर संबंध रहे छे तेने लागु करवामां आवे छे.

एटलुं समजी शकाय छे के आ प्रकारना साहचर्यमां सहभूत तेम

आनुपूर्वीथी थता बनावोनो समास थाय छे एटलुंज नहि पण कार्यकारण, तेम सामानाधिकरण्य, आदिनो पण समास थाय छे. कारणके कार्यकारणसंबंध छे ते कालकृत छे, अने पदार्थोने शो संबंध छे ते आपणे मनमां चालती दृष्टिपरंपरानी आनुपूर्वी उपरथीज नक्की करी शकीए छीए.

सामीप्यनिबंधनसाहचर्यनो नियम वधारे स्पष्टताथी समजवा माटे आपणे **अ** अने **ब** एवी बे सहभूत दृष्टि धारीए, अने **अ** अने **ब** एवी तज्जन्य भावना धारीए. जे नियम कह्यो छे ते नियमनो आवा प्रसंगोमां अर्थ ए छे के ज्यां **अ** (अथवा **अ**) प्रकट थायछे त्यां **ब** नुं पण भान तेनाथकी थाय छे अने ज्यां **ब** (अथवा **ब**) नुं भान थायछे त्यां **अ** नुं पण भान थाय छे. कोई माणसने साक्षात् जोतां अथवा तेनी मानसिक कल्पना करतां आपणने, तेने जे स्थाने छेवट जोयो होय ते स्थाननुं पण स्मरण थाय छे. एटलुं पण ऊमेरवुं जोईए के **अ**नुं साक्षात् दर्शन, **अ**नी भावना करतां वधारे सारी रीते **ब**नुं भान करावी शके छे. कोई साधनने साक्षात् जोयाथी ते स्थाने बनेलो बनाव, ते स्थाननी कल्पनामात्रथी थाय ते करतां वधारे सारी रीते स्मरावी शके छे.

एककालावच्छिन्न बे दृष्टिने बदले पूर्वोत्तरक्षणभावी दृष्टि बे लईए तो पण एनी एज वात बने छे. मात्र फेर एटलोज रहे छे के पूर्वावयवथी उत्तरावयवनुं भान, उत्तरावयवथी पूर्वावयवनुं भान थाय ते करतां वधारे सबल अने सतेज रीते थाय छे. मूलाक्षरोने उलटा क्रमथी बोलवामां जे हरकत पडे छे तेथी आ वातनुं सारुं उदाहरण मळी आवे छे.

जे वात अत्र कोई बे दृष्टिने माटे बतावी ते अनेकने पण लागु छे एम जाणवुं. एक काळे बनेला अनंत बनावोमांनो कोई एक बनाव तेमांना गमे ते बनावनुं स्मरण करावी शके छे. अनेक संभवोनी श्रेणिमां पण प्रत्येक अवयव पोतानी आसपासना अवयवोनुं भान करावी शके छे; पूर्वावयव करतां उत्तरावयवनुं भान सारी रीते करावी शके छे.

शारीरदृष्टिथी आ साहचर्यनियमनुं तात्पर्य एवुं छे के जे बे तंतुस्थान वारंवार साथेज व्यापार पामे छे ते एवा साहचर्यथी व्यापार करवानी अमुक योग्यता प्राप्त करी ले छे. आवा साहचर्यवाळा व्यापारने लीधे ए बे तंतुस्थानो वच्चे एवो संबंध थई रहे छे के एक स्थानने प्रोत्साहन मळतां बीजा स्थानथी पण तंतुरस प्रस्रववा मांडे छे. बीजी रीते कहीए तो ए बे स्थानो वच्चे मार्ग थई तेमनो संयोग थई रहे छे. आवी कल्पना करवामां आवे छे ते वास्तविक हशे पण साहचर्यव्यापारना आनुषंगिक तंतुव्यापार शारीरशास्त्र बतावी शके के नहीं ते शंका भरेलुं छे.

११. साहचर्यबलनुं प्रमाणः—सामीप्यनिबंधनसाहचर्यना नियममां सूचन थवानी योग्यता विषे आपणे कहेलुं छे. आनुं तात्पर्य एज छे के संस्कारने उद्बोध पमाडे तेवुं सूचन नित्य थयां करतुं नथी. अवलोकनथी पण एज वात खरी लागे छे. वारंवार पुरुष अने स्थानोनां नाम सांभळ्या छतां आपणे ते ते पुरुषस्थानादि स्मरी शकतां नथी. केटलीक वार स्मृति घणी त्वराथी ने निश्चयपूर्वक थाय छे, जेमके पोत पोतानी स्वभाषाना "पितृ" – "गृह" – आदि वाचक शब्दोथी ते ते पदार्थनुं स्मरण थाय छे. कोई कोई वार तो स्मृति एटली त्वराथी थाय छे के पूर्वावयवथी उत्तरावयव उपर जवानुं भान सरखुं पण रहेतुं नथी. मुखाकृति उपरथी कोई क्रोधादि वृत्तिनुं भान आज रीते थायछे.

साहचर्यबलनो आधार शा उपर छे ते पण जोवा जेवुं छे. जुदा जुदा संस्कारनो संग्रह थवानां जे बे कारणो आपणे नक्की कर्यां तेनां तेज साहचर्यबलनां पण कारण छे. कोई बे संयुक्त संस्कार उपर अवधान आप्युं होय तेनुं बळ, अने ते बे संयुक्त संस्कारनो तेज रूपे पुनः पुनः अभ्यास, ए बे कारण अत्र पण विद्यमान छे. एक एक संस्कार उपर आ बे कारणथी केवी असर थाय छे ते वात कहेवाई गयली छे एटले अनेक संस्कार संबंधे तेमनुं सामर्थ्य थोडाकमां बतावबुं सुलभ छे.

(१) संयोग करावनार अवधानः-- बे अथवा वधारे संस्कारो अवधानना संयुक्त यत्नथी परस्पर साथे संयोजाय छे. बाळक कोई अजाण्या माणसने देखे छे, अने तेनुं नाम पण सांभळे छे. ए उभये वात उपर एकज समये अवधान आपवाथी तेनुं मन ए बन्ने वातने एक जेवी करी ले छे, एटले गमे त्यारे एकनो प्रादुर्भाव थतां बीजांनुं पण स्मरण थया विना रहेतुं नथी. एकाद स्थान त्यां बनेला सारा के नठारा वृत्तांतनुं भान करावे छे, तेनुं कारण एज छे के ते समये मन बहु उश्केराई, पोतानां दर्शनोने सबल अवधानपूर्वक अवलोके छे, अने ते स्थाननी आसपासनी विगतने एकज सपाटे लक्षमां लई ले छे. परस्पर संबंधवाळा पदार्थसंभवादि उपर इच्छापूर्वक मनने एकत्र करवाथी पण, केटलेक अंशे एवीने एवीज असर थायछे. बे पदार्थ उपर लगाडेला अवधाननुं बळ जेम अधिक, अने एकज अवधानप्रयत्नमां उभयेने जेम वधारे संयुक्त रीते मन जोडी ले, तेम ते बे वच्चेनुं साहचर्य वधारे दृढतम नीवडवानुं.

आ उपरथी एम फलित थाय छे के आपणी भावनाओना क्रमनो आधार बाह्य अनुभवना क्रम उपर रहेतो नथी. आपणे आपणा अवधानने जे वळण आपीए ते प्रमाणे ए क्रमनो केटलेक भागे आपणे पोतेज निर्णय करी लईए छीए. जे मानसिक साहचर्यो घडाय ते स्थिर स्थपावामां, आपणने अनुभूत पदार्थोमां जे रस लागतो होय ते मुख्य कारण छे. आ वातनी प्रतीति एकज प्रकारनो बाह्यानुभवक्रम जुदां जुदां मन आगळ आणी तेनाथी केवी मानसिक भावना थाय छे तेनी तपास करवाथी थई शके छे. एक साक्षर ने बीजो निरक्षर एवा बे माणस पोते जोएला कोई बनावनुं के सांभळेला कोई भाषणनुं जुदुं जुदुं व्यान आपशे. निरक्षर माणसनुं अवधान ए बनाव जोती वखते के ए

भाषण सांभळती वखते किये मार्गे चालतुं हतुं ते वात एना ध्यानमां जे असामंजस्य होय छे ते उपरथी छती थाय छे. साक्षरना ध्यानमां एथी उलटी वात समजाय छे.

(२) अभ्यास अने साहचर्यः —परंतु एवुं बनवुं तो अति विरळ छे के कोई बे अनुभव एकज वार संयुक्त रीते दर्शन दे तेथी तेमनुं चिरसाहचर्य बनी आवे. आवा संयोगनो पुनः पुनः अभ्यास थवानी बहु वार अपेक्षा रहे छे; आपणी चारे पासा जे संसर्गो छे तेमना विषे चिरस्थायी एवुं जे ज्ञान आपणने छे तेनुं कारण संयुक्त संस्कारोनो पुनः पुनः अभ्यास ए विना बीजुं नथी. बे दृष्टि अथवा बे संस्कारनो संयोग जेम वधारे वार थाय तेम तेमनी वच्चेनुं साहचर्य वधारे दृढ थाय छे. जे छेक अभेद जेवां साहचर्य छे-- तालवादि स्थाननो प्रयत्न अने तज्जन्य शब्द, शब्द अने तेथी सूचवातो अर्थ, मुखादिना विकार अने तेथी समजाता वृत्तिपरिणाम, एवां जे अनेकानेक साहचर्य छे—ते बधां आखा जीवनमां वारंवार अनुभवाता अनंत संयोगोमांथी उपजी आवेलां छे.

एम पण कहेवुं जोईए के आपणा अनुभवनो क्रम सर्वदा तेनो ते रहेतो नथी. तेनी तेज आकृति अनेकानेक रंग बेरंगथी मळी आवे छे, तेनां ते माणस जुदे जुदे स्थाने भेगां थई आवे छे, अने तेनां ते शब्द वाक्यादि जुदा जुदा संदर्भमां जणाय छे. आवुंज ज्यां सुधी बन्यां करे त्यां सुधी तो साहचर्य बंधावानो संभव नथी. आसपासना संसर्गनी विषमता एकएकने प्रतिकूल थाय छे अने जे पदार्थादि ते संसर्गोमां होय छे तेने कशा साथे साहचर्य बंधातुं नथी. बीजी पासा जोईए तो विश्वनो नियतव्यापार, मनुष्यजीवननी एकरूपता, ए बधां नानात्वमां एकत्व होय छे, वणाक फेरफार साथे पण अमुक पौनः-

पुन्य होय छे. विश्वव्यापार अने ते माटेनी सामग्री, मनुष्यव्यापार अने हेतुरूप सामग्री, शब्द अने तेमनी व्याकरणानुरूप आकांक्षा, ए आदिने जे नियतसंबंध होय छे ते उपरथीज आ वात स्पष्ट समजाय छे. अनेक वार अभ्यास थते थते थई आवती समग्र असरना बळथकी मन, धीमे धीमे, वस्तुओना आवा नियतसाहचर्यने, सामग्री आदिथकी जुदुं पाडी पकडी शके छे.

अभ्यास अने अवधानने जे संबंध छे ते विषे विचार करीए तो आटले सुधी थयली चर्चाथी एम नीकळे के साहचर्यबलनो आधार जे संयुक्त अवधान जुदे जुदे वखते आपवामां आव्युं होय तेना सरवाळ्य उपर रहे छे. बीजी रीते कहीए तो जेटली वार अभ्यास थाय ते, अने सरासरी अवधाननो अंश, ए उभयनो गुणाकार करतां साहचर्यबलनो आंक आवी रहे छे.

छतां एटलुं कहेवुं जोईए के कोई एक प्रसंगे जे अवधान आपी शकाय छे तेनो केटलोक आधार अभ्यास केटले केटले अंतरे थाय छे ए उपर पण रहे छे; वारंवार जे संयोगो थई आवता होय ते उपर लक्ष जतुं नथी. अतिपरिचयथी रस ओछो थाय छे, अने अवधान शिथिल पडे छे. जे संयोगो प्रथमे आपणने नवाई जेवा लागे छे, तेज थोडो समय जतां कशुं लक्ष आकर्षता नथी. छतां केटलीक वार अभ्यासथकीज अमुक संयोग उपर अवधान आपी शकाय छे. एवा प्रसंगमां अभ्यासने लीधेज अवधान जाग्रत् थाय छे, विश्वव्यापारनी जे वार्ता उपर कहेवामां आवी तेने विषे आवोज नियम छे. अनेक वार तेमनो पुनः पुनः अभ्यास थाय ते पछीज आपणे तेमनुं अवलोकन करीए छीए.

सामीप्यनिबंधनसाहचर्यनी सामग्री विषे आटली चर्चा करवामांथी एटलुं समजाय छे के जुदा जुदा प्रसंगे साहचर्य जुदी जुदी रीते थाय छे. एटले के संस्कारोना स्वरूप प्रमाणे, के जे रीते अनुभव थाय ते प्रमाणे साहचर्य बंधाय छे.

उदाहरण. यद्यपि कालकृत साहचर्य अने दिक्कृतसाहचर्य उभये सामीप्यनिबंधनसाहचर्यनां दृष्टान्त छे तथापि ते दृष्टांत एकज जातनां नथी. कोई पण बे क्षणिक अनुभव, जेवा के घोडानी खरीनो भणकारो अने घोडानुं दर्शन, ते उपर अवधान क्षणमात्रज रहे छे. अने, साधारण रीते बने छे तेम, एक अनुभव बीजाना पछी तुरतज आवतो होय तो अवधाननो व्यापार एकज मार्गमां नियत थई जाय छे—

पूर्वावयवथी उत्तरावयव उपर जाय छे, उलटी रीते जई शकतो नथी. आम होवाथीज आगळ बताव्युं छे तेम, मूलाक्षरोने के कोई काव्यने उलटी रीते बोलवामां बहु मुश्केली पडे छे. आथी उलटी रीते ज्यारे कोई बे वस्तु दिक्कृतसंबंधथी जोडायली होय छे, काशी अने गंगानी पेठे जोडायली होय छे, त्यारे अवधान चिरस्थायी थई शके छे, एकथी बीजा उपर, के उलटी रीते बीजाथी पहेला उपर, जई शके छे; अने छेवटे उभये पदार्थने एकरूपे पकडी ले छे. आम होवाथी आवा संबंधवाळा पदार्थनी भावनामां एकथी बीजानुं अनुकर्षण सरलताथी थाय छे, ने उभये भावना एकरूप जेवीज लागे छे.

वळी भावनाए भावना वचेना संबंधमां पण भावनासदृश के विसदृश होय ते प्रमाणे न्यूनाधिकता थाय छे. आगळ कहेवामां आवेलुं छे तेम सदृश भावना उपर अवधान बहु सरलताथी जाय छे, विसदृश उपर तेटली सरलताथी जतुं नथी. पूर्वोत्तरभावी एवा बे ध्वनिने आपणे सहजे संयोजी शकीए छीए, पूर्वभाविध्वनि अने उत्तरभावि दर्शन तेने संयोजी शकीए ते करतां वधारे सरलताथी संयोजी शकीए छीए. आ प्रकारे सदृशसाहचर्यने विसदृशसाहचर्यथी जुदुं पाडी लेवुं.

संज्ञासंज्ञीनुं साहचर्य छे ते अवधानना कोई विशेष व्यापार उपरथी थई आवतुं विशेषसाहचर्य छे. संज्ञा छे ते एवो कोई अनुभव अथवा संस्कार छे के जेना उपर आपणने वशो रस लागतो नथी, मात्र जेमां रस छे तेवा अमुकने बतावववा के स्मरावववाना नाम रूपे आपणे तेने गणीए छीए. पोतानी नोटबुकने गोखवामां बाळक दृष्टिगोचर एवी संज्ञाओमां कशो रस पामतुं नथी, मात्र ते संज्ञानां जे संज्ञी छे तेमांज रस मानी गोखवानुं काम करे छे. आ युग्मना एकज अंगमां आवो रस रहे छे तेथी थाय छे एम के संज्ञी पोते संज्ञानी भावनानुं भान करावे ते करतां संज्ञा संज्ञीनुं भान वधारे सबल रीते करावे छे. कोई माणसने जोतां तेना नामनी भावना क्वचित्ज थाय छे; पण तेनुं नाम सांभळतां तेनी भावना अवश्य थाय छे. शब्दरूप संज्ञाओनो विचार करती वखते आ वात उपयोगमां आवशे.

जुदां जुदां साहचर्यनुं बळ केटलुं होय छे ते विषे केटलीक जाणवा जोग आलोचना इंग्लंडमां मी. एफ. गॉल्टने अने जर्मनीमां प्रो० डब्ल्यु. वंटे, करेली छे. मी. गॉल्टन कहे छे के जे साहचर्यो छेक बाळपण सुधीनां होय छे ते वारंवार प्रादुर्भाव पामे छे. वंटनी आलोचना ए बतावववा उपर चालेली छे के जुदां जुदां स्मरणोना वेगनो शो नियम छे. तेणे एम नक्की कर्युं छे के परिचित शब्द, अथवा कोई वस्तु

कल्पना आदि साथे निकट संबंध राखनार शब्द, अपरोचित अथवा ओछा संबंधवाळा शब्द करतां, वस्त्वादिनुं सूचन वधारे त्वराथी करी शके छे.

१२. भावनाश्रेणिः— भावनायुग्म विषे जे जे वात कहेवामां आवी ते आखी भावनाश्रेणि होय तेने पण लागु जाणवी. आपणा ज्ञाननो मो'टो भाग, अनुभवश्रेणिने अनुरूप भावनाश्रेणिमयज छे. उदाहरणः कोई एक फळीयानुं, ने आखा गामनुं, जे ज्ञान आपणने होय छे ते चक्षुए दीठेला अनुभवोनी श्रेणिरूपे बतावी शकाय तेवुंज होय छे. एज रीते चक्षुए जोयला व्यापार अथवा अभिनयने आपणे संभारी शकीए छीए, कोई राग आदिना सुरनुं मनमां स्मरण करी शकीए छीए. प्रत्येक जातना आपणा ज्ञानने भाषा साथे निकट संबंध छे, अने शब्दश्रेणिद्वारेज मनमां पण ते घणे भागे रहे छे. आपणुं व्यावहारिक ज्ञान, अमुक काम शी रीते करवुं एवुं व्यवहारज्ञान, तेपण अनेक भावनाश्रेणिनुंज बनेलुं होय छे.

आवी श्रेणिमात्र, अवधान अने अभ्यासना फलरूप छे. कोई नाटकना अभिनय अने वस्तुविस्तार उपर जेम आपणे वधारे लक्ष आप्युं हशे तेम आखी श्रेणिना बधा अवयवो सारी रीते जोडी शकाशे. कोई नाटक आपणे जेम वधारे वार जोयुं हशे, कोई गान जेम आपणे वधारे वार सांभळ्युं हशे, कोई वाक्य जेम आपणे वधारे वार लख्युं हशे, तेम, पछीथकी, आखी श्रेणि मनमां लाववी बहु सुतर पडशे. एटलुं सहजे समजाय एम छे के आवी पुनः पुनः प्रादुर्भाव पामती श्रेणिओमां अभ्यासनुं फळ ए छे के एक अवयवथी बीजा अवयव उपर जवानुं सबल वळण बंधाई जाय छे. नियमित रीते परिचित एवे मार्गे वहेतो अवधानप्रवाह कोई अवयव उपर अटकतो नथी पण उत्तरोत्तर चाल्योज जाय छे. आवा अभ्यासनुं संपूर्ण फळ ए छे के अवधाननी जे अपेक्षा आ कार्यमां रहे छे ते थोडामां थोडी थई जाय छे. परिचित राग गावो, समजवो, के परिचित शब्दश्रेणि बोलावी, समजावी, ते अर्धी अनवहित स्थितिमां पण यंत्रवत् सहजेज बनी आवे छे.

आरंभे तो भावनाश्रेणि पोते पोताना बळथीज रही शके तेवी नथी होती. साक्षात् अनुभव साथे तेने संबंध रहे छे. बाळक एकाद राग शीखती वखते जेम जेम ते राग गवातो जाय तेम तेम तेना सुरने याद करी शकतुं चाले छे. आनो अर्थ एज छे के पुनरुद्बोधनो आधार हजु साक्षात् दर्शनने अधीन छे. धीमे धीमे भावना स्वतंत्र थई रहे छे. बाळक प्रथम सुर सांभळतांज आगला सुर सुधी मनमांज चाली जाय छे, एटलुंज नहीं पण आखी श्रेणि बराबर बंधाया पछी, आखी ए श्रेणिने, कशी पण बाह्य सामग्री विना, स्मरी शके छे.

वळी भावनाश्रेणिना विचारमां ए वात पण लक्षमां लेवा जेवी छे के एटली एकज श्रेणि आपणा मनमां होती नथी, पण ओतप्रोत एवी, अथवा समांतर साथे चालती, अनेक श्रेणिओ पण होय छे. कोई एक नाटकनी भावनामां एक तो चाक्षुषभावनानी श्रेणि होय छे,— जुदा जुदा पडदा, जुदां जुदां पात्र, इत्यादिनी बनेली; बीजी श्रोत्रभावनानी श्रेणि होय छे,—जुदां जुदां संभाषण, गान, आदिनी बनेली. आवा प्रसंगोमां अभ्यासनुं फळ एटलुं छे के प्रत्येक श्रेणिना अवयवोने अन्य श्रेणिना तत्सहभूत अवयवो साथे एकरूपे करी लेवा, अने आवी एक एक श्रेणिने अन्य श्रेणिओ साथे योजी एकरूप करी लेवी. प्रत्येक चाक्षुषभावना तत्सहभूत श्रोत्रभावना साथे संकळाय छे, अने आवी एक श्रेणि तत्पूर्व ने तदुत्तर जे जे श्रेणिओ होय ते साथे संकळाय छे. वारंवार अभ्यासथी पूर्वोत्तर अवयवो एकाकार एकरूपता पकडता जाय छे, अने आवी अनेक श्रेणिओ एकश्रेणि जेवी बनी रहे छे. आवुं थवा छतां

श्रेणिश्रेणिनुं स्वातंत्र्य छेक लोपाई जतुं नथी, केमके जरूर पडे ते प्रमाणे अवधान जुदे जुदी श्रेणि उपर लागी शके छे. कोई एक सारी रीते जोयला नाटकनी वात स्मरतां एक वार चाक्षुषश्रेणि मुख्यता गृहे छे, तो एक वार श्रावणश्रेणि मुख्यता गृहे छे, ए वात सुविज्ञात छे.

आवी अनेक श्रेणिनो एक प्रकार संज्ञाश्रेणि छे. आ स्थाने पोते कशो रस ऊपजावी न शके तेवा अनेक अनुभवनी एक श्रेणि अन्य अर्थना बोधार्थे योजेली होय छे. संगीतमां जे सारीगमपधनी—सासारीरीग, रीरीगगम, आदि श्रेणिओ थाय छे ते आवीज छे. अत्र साहचर्य सिद्ध करवामां प्रथम वात तो एज छे के संज्ञाओनो संज्ञी साथे दृढ संबंध करी राखवो. ए संबंध सारो सुदृढ थाय तेनो आधार प्रत्येक संज्ञा अने तेना संज्ञीने बीजां संज्ञासंज्ञीना युग्म थकी बराबर ओळखी राखवा उपर, अने आवां युग्मोनो संबंध अभ्यासथकी पकडी राखवा उपर रहे छे. आ वात सिद्ध थाय त्यारे मन प्रत्येक संज्ञाने तुरत थोडाज अवधानथी ओळखी शके छे, अने संज्ञाने सूकी संज्ञीनी भावना तुरत करी शके छे. बराबर रीते आवुं थयुं होय तो संज्ञाने जोतांज संज्ञीनुं भान थाय छे. आ व्यापार एटली त्वराथी थाय छे के मन संज्ञा उपर लक्षज नथी आपतुं एवुं लागी आवे छे, ने ए क्रिया एवी साहजिक बनी रहे छे.

ज्यारे संज्ञा अने संज्ञीनो दृढ संबंध थवानी क्रिया पूर्ण थाय छे त्यारे आवां युग्मोने एकश्रेणिरूपे करी लेवाना व्यापारनो आरंभ थाय छे. छापेला मूलाक्षरो शीखवानी क्रियाने आ वातना दृष्टांतरूपे गणी शकाय. आवी श्रेणिने वारंवार गोखवाथी तेनो प्रत्येक अवयव तेनाथी आगळ आवता अवयवनुं स्मरण करावे छे ने मनने तेना उपर दोरी जाय छे. आवो वारंवार अभ्यास थते थते शीखनारने प्रत्यक्ष दर्शननी अपेक्षा मटी

जाय छे, अने एवी टेव पडे छे के आखी श्रेणिनो आद्यवयव जोतांज बधी श्रेणिनुं भान थई आवे छे.

अमुक अमुक रागनी सारीगमपरत्वे पण आनी आज वात जाणवी. अमुक अमुक रागनी सारीगमने क्रमवार गोखतां एक एक अवयवथी उत्तरोत्तर अवयवनो संबंध मनमां दृढ थतो चाले छे अने स्मृतिने बहु सारी साहाय्य मळे छे. आवी एकाद सारीगमनो अभ्यास थतां थतां वधारे ने वधारे त्वराथी सारी रीते वाचतां के गातां आवडतुं चाले छे, ने छेवट एटले सुधी थई रहे छे के प्रत्यक्ष अक्षर के चिन्ह जोया विनाज एक अक्षरनुं स्मरण करावतां आखी सारीगम सारी रीते गाई शकाय छे. ए सारीगम विनाना जे राग तेनी सारीगमो गावामां पण, परिचित एवी परंपराओ आवती होवाथी, बहु सरलता थई आवे छे. धीमे धीमे अति अभ्यासना बळे, गमे तेवी सारीगमोने पण यंत्रवत् देखतानी साथेज गाई शकवानुं सामर्थ्य उद्भवे छे.

अनेक अथवा गुंफित श्रेणिनी भावनाना आ विचार भेगो, आपणां नित्य परिचित कार्योनी भावनानी श्रेणिनो विचार पण करवा जेवो छे. इच्छासहित करेला व्यापारमात्रनी पूर्वे ते व्यापारनी भावना थाय छे. कोई वस्तु पकडवा के लेवा माटे हाथने लांबो करता पूर्वे तेवा व्यापारनी भावना अतित्वराथी आपणा मनमां थई जाय छे. एम छे एटले अमुक कार्यपरंपरा संपादन करवामां तेवी परंपरानी भावनाथी साहाय्य मळे छे. आवी स्नायुव्यापारनी भावना भेगी ते ते व्यापारजन्य प्रत्यक्षनी भावनानी श्रेणि पण रहे छेज. उदाहरणः चलनव्यापारमां, स्नायुना अमुक व्यापारथी थयली भावनानी श्रेणिज होय छे एम नथी, पण पगने वारा फरती जमीन उपर मूकवाथी थतां प्रत्यक्षनी श्रेणि, तेम घणीक वार बदलाती देखावोनां चाक्षुषप्रत्यक्षनी श्रेणि

पण, विद्यमान होय छे. एज प्रमाणे गावामां अथवा बोलवामां पण बोलवाना व्यापारनी भावनाश्रेणि साथे श्रोत्रद्वारे थतां प्रत्यक्षनी श्रेणि पण विद्यमान होयज छे.

साधारण रीते जोतां स्नायुव्यापरनी भावनाओ प्रत्यक्षश्रेणि करतां निर्बल होय छे, एटले स्नायुभावनाश्रेणिनो आधार प्रत्यक्षश्रेणिनी विद्यमानता उपर रहे छे. एम होवाथी प्रत्यक्षश्रेणि संज्ञा जेवी छे, ने ते थई आवता उत्तरोत्तर व्यापारना चिन्ह के लिंगरूप छे. लखवाना व्यापारमां हाथना व्यापारना क्रमनुं नियमन चाक्षुषप्रत्यक्षद्वारे बने छे. आ वात केटले दरज्जे खरी छे ते जोवुं होय तो अंधारामां लखवानो प्रयोग करी जोवो.

आवी एकाद गुंफित अथवा मिश्र श्रेणि उपर प्रथमे जे अवधान आपवुं पडे छे ते वारंवार अभ्यास थया पछी एटली बधी सूक्ष्मताथी आपवुं पडतुं नथी. आ वात एटला उपरथी सिद्ध थाय छे के प्रत्यक्षो उपर प्रथमे ध्यान आपवामां जे अपेक्षा रहेती हती ते धीमे धीमे ओछी थती जाय छे. सूरनुं प्रथम ज्ञान पामवा अभ्यास करती वखते आंगळीयो उपर नजर राखवी पडे छे, आगळ जतां सहज नजर होय न होय तो पण खरो सूर आंगळी तुरत पकडी ले छे. आ रीते अभ्यासथी करीने कोई पण व्यापारश्रेणि, तत्सहभूत संवाहक तंतुव्यापार (प्रत्यक्ष)थी निरपेक्ष थई रहे छे. आवी व्यापारश्रेणि पोते एकज श्रेणि होय तेवी थई रहे छे; एमां एक क्रम संपादन करवा साथे थतुं प्रत्यक्ष भाविक्रमनी भावना पेदा करे छे, पण ते एवी क्षणिक रहे छे के तुरतज थई आवता प्रत्यक्षथी तेने भिन्न समजी शकाती नथी. आवा अभ्यासनुं छेवट फळ ए थाय छे के जेमां चेतनाव्यापारनां तत्त्वमात्र, प्रत्यक्ष अने भावना सर्वे, सरखी रीते अस्पष्ट थई मळी रहे छे तेवो व्यापार साधवानी साहजिक प्रकृति थई जाय छे.

१३. **शब्दसाहचर्यः**—आपणां साहचर्यमां सहुथी घणां उपयोगी साहचर्य शब्दनां छे. सामान्य रीते आपणे अनुभव अने संस्कारोनुं स्मरण भाषाद्वारेज करीए छीए. आम थवानुं कारण ए छे के आपणे सहवासथी रहेनार प्राणी होई, परस्पर साथे वाग्व्यवहार थाय तेने अधीन छीए. एक एक शब्द एक पासा संस्कार के अनुभव रूप छे, बीजी पासा बोलवाना व्यापाररूप छे. आ उपरथीज भाषानुं द्वैरूप्य बंधायलुं छेः ज्ञान आपवानुं तेम ज्ञान लेवानुं ते साधन गणाय छे. मांडलिक व्यवहारनी जे सामग्री छे तेमांथी शब्द अने तेथी जणाववाना अर्थनो अव्यवहित संबंध सिद्ध थई रह्यो छे. एटलाज उपरथी गतानुभव स्मरवामां शब्दोनी मुख्य साधनता छे. आ उपरांत एटलुं पण लक्षमां राखवामां आवे के बुद्धिना उत्कृष्ट प्रतिना व्यापारमात्र भाषाद्वारेज संगृहाय छे ने स्मराय छे, तो भाषानी उपयुक्ततानुं खरुं तात्पर्य सहजे लक्षमां आवे.

आपणे ध्वन्यात्मक संज्ञाओथी स्मरणनां जे साधन योजेलां छे तेनी खरी उपयुक्ततानो आधार स्मरवाना अनुभवना स्वरूप उपर रहे छे. आपणे आगळ जोयलुं छे के शब्द अथवा ध्वनिनां धर्मपरत्वे अनेकानेक सूक्ष्म तारतम्य होई शके छे. ध्वनि ए पण सूक्ष्म सूक्ष्म रीते ओळखी राखेलां अनेक तत्त्वनी श्रेणिरूप छे. आ श्रेणिना अवयवमात्र परस्परथी जुदे जुदा ओळखी शकाय छे, अने तेम छतां समग्ररूपे पण योजी शकाय छे. श्रवणेन्द्रियनी आवी उत्तम संस्कृतता साथे स्वरयंत्रमांना स्नायुनी प्रत्यक्षयोग्यता पण उत्तम प्रकारनी होवी जोईए ए तो स्पष्टज छे.

शब्दस्वरूपना आटला थोडा विवेचनमांथी पण एटलुं तो सहजे समजाशे के शब्दसाहचर्यमां संज्ञाश्रेणि अने स्नायुव्यापारश्रेणि जे बेनुं हमणांज वर्णन थई गयुं, तेनां तत्त्व मळेलां छे. शब्दसाहचर्य बंधावानो आरंभ प्रत्येक शब्दमां आवता ध्वनिमात्रनो संबंध गृहवाथी थाय छे. प्रथम पगलुंज ए छे के गळामां थता व्यापारने ते व्यापारज-

न्य ध्वनि साथे योजवो. साक्षर माणसो परत्वे तो आ उपरांत, आ युग्मने चक्षुर्ग्राह्य एवा शब्दचिन्ह साथे योजवानुं पण बने छे. आटलुंज नथी पण शब्दो पोते अमुक अर्थनी संज्ञारूप छे माटे शब्दोनुं पूर्ण स्वरूप पण त्यारेज थयुं गणाय छे के ज्यारे शब्द अने तद्वाच्य अर्थ ते बेनुं साहचर्य दृढ थाय. आ साहचर्य, साहचर्यना सामान्य नियमानुसार बनी रहे छे. स्वरयंत्रना व्यापार, ध्वनि, चाक्षुष संज्ञाओ, अने अर्थ, ए बधां तत्त्वने पोतपोताना वर्गना अन्य पदार्थोथी जेम वधारे सारी रीते ओळखी रखाय, अने परस्परसंबद्ध एवा प्रत्येक तत्त्व उपर जेम वधारे अने वारंवार अवधान अपाय, तेम ए सर्वनुं साहचर्य वधारे दृढ थाय.

आ साहचर्यक्रिया ज्यारे पूर्ण थाय छे त्यारे शब्दनी आटली बधी सामग्रीमांनुं कोई पण तत्त्व बाकीनां बधांनुं भान करावी शके छे. छतां पण बधांए तत्त्वनुं सरखुंज भान थाय छे एम नथी. शब्दो तो एक संज्ञामात्रज छे, अने अमुक अर्थ बोधनार छे माटेज आपणने तेमनामां कांई पण रस पडे छे, एटले अर्थ शब्दनुं भान करावे ते करतां, शब्द अर्थनुं भान वधारे सबल रीते करावी शके छे. एकाद शब्दनो ध्वनि सांभळतां के ते शब्द जोतां तुरतज मनमां कोई पदार्थ के विचारनुं भान थाय छे; परंतु पदार्थ, स्थळ, मनुष्य, आदिनी भावनाओ थवा छतां पण ते ते शब्दनुं भान स्पष्ट रीते थतुं नथी.

आटलुंज नथी पण शब्दसामग्रीनां सर्वे तत्त्वो सरखी स्पष्टताथी तरी आवतां नथी. कोईक बोलतुं होय तेना शब्दो सांभळतां, मन, शब्दोने मूकी अर्थ उपर वळगे छे, अने स्वरयंत्रना व्यापारनुं तो झाझुं भान पण रहेतुं नथी. आथी उलटी रीते एम पण बने छे के बोलती वखते अथवा कोई पुस्तक मो'ठेथी वाचती वखते, स्वरयंत्रना व्यापार वधारे स्पष्ट रीते समजाय छे.

एम पण फलित थाय छे के भावनाना जे अत्यंत आंतरव्यापार चाले छे तेमां जुदे जुदे समये, जुदां जुदां शब्दसामग्रीनां तत्त्वोनुं भान थाय छे. साधारण रीते तो एम बने छे के आ सामग्रीमांथी ध्वनिनी भावना, कोई पण आंतरभावनाने अनुषंगे थई आवे छे अने स्वरयंत्रना व्यापारनी भावना बहु अस्पष्ट रहे छे. परंतु घणो आधार तो भूत अनुभवमां जे तारतम्य होय ते उपर रहे छे. जे भावनाओ वाचनमात्रथी आपणे प्राप्त करेली हशे तेने अनुषंगे शब्दसामग्रीनां चाक्षुष तत्त्वोनी भावना थशे. एमज वळी भावनाशक्तिना तारतम्य उपर पण घणो आधार रहे छे.

शब्दसामग्री एवुं जेने आपणे नाम आप्युं छे ते अमुक श्रेणिरूपे पण साहचर्य पामी शके छे. आवी श्रेणिओनी साहाय्यथीज पदार्थोनुं दिकालावच्छिन्नरूपे जे आपणुं ज्ञान ते बंधातुं आवे छे. आवी मिश्र श्रेणिओना संभवादिना नियम आगळ कही गया छीए तेवा ने तेवाज छे. जुदां जुदां पण अनुक्रमे आवतां तत्त्व उपर जेम वधारे सूक्ष्मताथी अवधान अपायुं होय, अने जेम ए आखी श्रेणिने एक छेडेथी बीजे छेडे गयानो अभ्यास वधारे थयो होय, तेम तेना अवयवोना साहचर्यनी वधारे दृढता थाय छे.

हवणांज जे कहेवामां आव्युं ते उपरथी एम फलित थाय छे के कोई पण शब्दश्रेणिने तत्संबद्ध अर्थश्रेणिसमेत शीखवामां, शब्दसामग्रीनां बधां तत्त्वनो अनुभव थतो नथी. कोई बाळक एकाद काव्य गोखतुं होय छे, अने तेना शब्दे शब्द ताणीने बोलतुं होय छे त्यां साहचर्यसाधक सामग्री पूरे पूरी कामे लागेली होय छे. एथी उलटी रीते ज्यां आपणने कहेवामां आवेली कांई वात आपणे मनमां राखवा यत्न करता होईए त्यां तेनो संग्रह थवानो आधार उत्तरोत्तर थता ध्वनिने सांकळी शकावा उपरज रहे छे; अने कोई लेखकनो एकाद फकरो याद करवामां तेनो संग्रह थवानो आधार चाक्षुष संज्ञाओने सारी रीते सांकळवा उपर रहे छे.

१४. स्मृति अने अपेक्षाः—आपणां मानसिक चित्र (भावनाओ) अने तेवां चित्रनी श्रेणिओ ए बधांने अनुषंगे, थोडे के वधते अंशे, ते ते अनुभव अने ते अनुभवनो समय ए बेनुं भान थया विना रहेतुं नथी. बीजी रीते कहीए तो भावनानी साथे ते भावनानुरूप जे अनुभव ते अवश्य थयलो एम श्रद्धा रहे छे. केटलीक वार आ आनुषंगिक श्रद्धा बहु अस्पष्ट पण होय छे. उन्मत्त जेवी स्थितिमां, ज्यां अवधाननुं ठेकाणुं होतुं नथी त्यां आनुषंगिक अनुभवना भान विनाज भावनानी परंपरा उभराती चाले छे– जुदा जुदा पदार्थादिनुं भान थयां जाय छे– तेमने क्यां, क्यारे, जोया, जोईशुं, ए आदिनुं भानज थतुं नथी. बीजा बधा प्रसंगोमां तो भावनामात्रने अमुक समये अमुक स्थाने बनेली बीना साथे आपणे जोडीए छीए. आवी जे योजना ते बेमांथी एक रूपे जणाय छेः (१) भूत अनुभवनुं स्मरण, अथवा वृत्तान्तस्मरण अने (२) भावि अपेक्षा.

स्मृति अने अपेक्षा उभयमां अनेक भावनानी कालानुसार गोठवायली श्रेणि होय छे, अने उभये साहचर्यना नियमने अधीन रहे छे. उदाहरण. अमुक दिवसना वृत्तान्तोनी स्मृति करतां एकाद अनुभवश्रेणिना क्रमने अंतथी ते आदिपर्यंत मन विलोकी जाय छे; केमके भावनाओ अनुभवना क्रमानुसारज बने छे अने तेज क्रमे स्थपाती चाले छे. एज रीते, एक वार करेली एवी यात्रा फरी करवामां थवाना वृत्तान्तोनी अपेक्षा करवामां पण मन, जे वृत्तान्तोनुं भाविवृत्तान्तो अनुकरण छे ते वृत्तान्तोना क्रमानुसार भाविवृत्तान्तोनी भावनाने विलोके छे.

वळी स्मृति अने अपेक्षा उभये श्रद्धाना प्रकार छे, जोके उभये परस्परथी अत्यंत भिन्न एवा प्रकार छे. स्मृति थई गयला जे इतिवृत्त साथे संबंध राखे छे ते इतिवृत्तनुं हवे कांई छे नहि, ते संबंध मन स्थिर वृत्तिथी

धारी रहे छे. स्मृतिजन्यभावनापरंपरार्थी अस्पष्ट एवा हर्षशोक, रागद्वेषना भाव थाय खरा, पण ए बधा क्षणिक रहे छे, केमके मन–" ए वात तो हवे थई गई छे " एवी वृत्तिनेज अधीन रहे छे. ज्यारे आपणने भूत विमर्श करतां राग के शोक थाय छे त्यारे भूतकालने आपणे क्षण वार वर्तमानवत् मानी लईए छीए. भूत उपर विशेष विमर्श करी आपणे तेने वर्तमानवत् बनावी लईए छीए, अने कोई लाभहानिना विचारथी तेवी प्रत्यक्षवत् भावनानो उपयोग करीए छीए.

आथी उलटी रीते अपेक्षामां मननी स्थिति बहु चंचळ रहे छे; भाविवृत्तान्तनी भावना करीने पोते एटलुं आगळ धसे छे; आगळथीज अवधान तैयार थई रहे छे. कोई वस्तुनी अपेक्षा करवी एटले ते वस्तुनी आशा राखवी, ज्यारे ते थई आवे त्यारे तेने गृहवा तत्पर रहेवुं, अथवा अवधानने प्रथमथीज ते माटे तैयार करी राखवुं. आटलुंज नहि पण ते बनावने अनुकूळ होय ते रीते आपणे वर्तवानी तैयारी राखवी एम पण अपेक्षानो अर्थ छे. आ रीते स्मृतिमां मननी स्थिति स्थिर रहे छे, पण अपेक्षामां तो अति चंचळ रहे छे.

जेने अपेक्षा कहीए छीए ते स्थितिमां, धारेली भावनाओनी संख्या अने तेमना स्वरूपने अनुसारे फेरफार पडे छे. ज्यां धारणा स्पष्ट होय छे, एटले के तत्कालनो अनुभव एकज प्रकारनी भावनाश्रेणि सूचवे छे, त्यां मनने बहु चंचलता अने प्रवृत्ति रहे छे. कोई माणस एकाद परिचित काव्य गानार होय ते समये ते आरंभ करे ए क्षणनी अपेक्षा आपणे बहु आतुरताथी करीए छीए. एथी उलटी रीते जो अपेक्षा अस्पष्ट होय तो, थोडी वधती स्पष्टतावाळी जुदी जुदी भावनाश्रेणि उपस्थित थाय छे. जेमके कोई माणस एकाद काव्य गानार होय, पण शुं अने कयुं काव्य गानार छे ते आपणे न जाणता होईए त्यारे बने छे. आ बीजा प्रसंगमां तो मन प्रथम करतां पण वधारे चंचलतामां पडे छे केमके धारेली एवी अनेक भावनाश्रेणिमांनी कई श्रेणि खरी पडे छे एवुं कुतूहल पण तेमां होय छे.

आटलुंज नथी पण आवी भावना अनुकूळ के प्रतिकूळ होय ते प्रमाणे मननी स्थि-

तिमां पण फेरफार पडे छे. सर्व प्रसंगे अवधान तो स्थिर रहे छेज, तेनो प्रकार जुदो जुदो होय छे. प्रथम प्रकार जे कह्यो तेमां अवधाननुं लागवुं इच्छासहित होय छे, अने तेमां भावि अनुकूलतानो उपभोग करवानी इच्छा पण भळेली होय छे. बीजो जे प्रकार प्रतिकूलतानो तेमां अवधान बंधायलुं अने मर्यादित रहे छे, अने तेमां भावि-प्रतिकूलता जेम विदूर रहे तेम सारुं एवी इच्छा भळेली होय छे. ज्यां प्रतिकूलता महा-भयंकर विप्लवरूप होय त्यां तो अवधानमात्र स्तब्धज थई जाय छे, अने एवा वि-प्लवनो प्रतीकार करवानुं भान पण रहेतुं नथी. इच्छा, अवधानने ए विप्लव उपरथी छूटुं पाडी तेना प्रतीकारनां साधन उपर लगाडी शकतीज नथी.

आ प्रकारे आपणने स्पष्ट समजाय छे के स्मृति अने अपेक्षा उभयमां भावनाश्रेणि अने श्रद्धा उभयनी आवश्यकता छे. एम पण कहेवुं जोईए के घणी वार (स्पष्ट) स्मृ-ति के अपेक्षा विनाज श्रद्धा एकली पण देखाय छे. उदाहरण. वारंवार आवता सहभूत अनुभवो, जेमके सूर्यास्त अने तारकोदयनी आनुपूर्वी, ते अमुक समये थयला एवुं आपणने कांई स्मरण आवतुं नथी. एज रीते स्थायी वस्तुओना दिक्कृत संबंध विषे पण जाणवुं. जेमके कलाभवन अने लक्ष्मीविलासनुं सामीप्य. आ बधा प्रसंगो विषे श्रद्धा छे पण कोई स्पष्ट स्मृति नथी. छतां ए बधा अनुभवोमां भूतकालनुं कोई पण अस्पष्ट प्रकारे सूचन तो छेज; ते अनुभवनो पुनः पुनः अभ्यास होवाथी अमुक काळनुं स्मरण नथी. केटलाक तो एम पण माने छे के आवी श्रद्धामां कोईक अस्पष्ट अपेक्षानो अंश रहे छे. एटलुंज नहि पण केटलाक चेतनशास्त्रज्ञोए तो एमज मान्युं छे के भावनाना उद्-बोधमात्रमां श्रद्धा सहभूत होय छे. श्रद्धाना स्वरूप विषे आगळ चर्चा थशे.

१५. काळनी भावनाः—जेने स्मृति अने अपेक्षा एवुं नाम आपवामां आव्युं छे तेवी मननी स्थितिमां काळनी भावना पण भळेली रहे छे. कोई वातनुं स्मरण करवुं एनुं तात्पर्यज ए छे के भूतकालनो विचार करवो, कोई वातनी अपेक्षा करवी एनुं तात्पर्य ए छे के भाविनो विचार करवो. काळनी आ प्रकारनी भावनानी वृद्धि भेगीज स्मृति अने अपेक्षानी पण वृद्धि थाय छे.

एकदम आपणे एम मानी शकता नथी के बाळकने विसदृश एवा अनुभवनी परंपरा थतां तेमने ते भूतभविष्य एवा कालपरत्वे समजी न ले, परंतु एम मानवाने पूर्ण कारण छे के काळनुं ज्ञान कांईक वखत

पछीज प्राप्त थाय छे. संभवोनी कालक्रमानुसार स्पष्ट भावना तो पदा-र्थोनी दिक्संबंधानुसार भावना करतां बहु मोडी थाय छे. कालक्रमानु-सार भावनानी उत्पत्तिनो आधार पुनरुद्बोधरूप संकल्पनी शक्तिना विकास उपर रहे छे, दिक्संबंधानुसार भावना तो इंद्रियकृत दर्शनथी उद्भवे छे. दिगवच्छिन्नरूपे पदार्थोनुं ज्ञान बाळकोने स्पष्ट रीते होय छे, दूर, निकट, बहार, अंदर आदिनुं ज्ञान तेमने सारुं होय छे; पण संभवोनी आनुपूर्वी तथा तेमना वर्तमानत्वनुं ज्ञान आ दिक्संबद्ध पदार्थ-ज्ञाननी पछी थाय छे. जेने पोते फरवा जतां जोयलां स्थानोनुं परस्पर संबंधानुसार ठीक ज्ञान हतुं एवुं एक साडा त्रण वर्षनुं बाळक "आ अठवाडीयुं" "गयुं अठवाडीयुं" ए बाबतनी कांई स्पष्ट भावना बतावी शकतुं नहि, अने "परमदिवस"—ने सामान्यतः गत—भूतकालमांज गणतुं.

आपणे आगळ कही आव्या छीए तेम प्रत्यक्षोनी आनुपूर्वीनुं कांई पण परीक्षण, तेम तेमना वर्तमानत्वनुं परीक्षण, दिक्दर्शन पूर्वे थयलुं होवुं जोईए. आटले अंशे काळनी भावना दिक्भावनानी पूर्वे संभवे छे. परंतु आवी जे काळनी प्राथमिक भावना ते तो अति अस्पष्ट अने टुंकीज होय छे. स्थानस्वरूपथी स्पष्ट ओळखायलां एवां घणांक प्रत्यक्षोनी साहाय्यथी, एक क्षणे, दिक् अथवा तेना विभाग जोई शकाय छे. परंतु काळनुं ज्ञान तो भावनाने भावनारूपे जाणवाथीज संभवी शके छे.

१६. आनुपूर्वीनी भावनाः—आनुपूर्वीथी थता बे अनुभवने पूर्वोत्तररूपे अनुभव्याथकीज काळनी भावना संभववा मांडे छे. आ प्रकारनुं जे ज्ञान ते आनुपूर्वीनी भावनामात्र करतां कांईक अधिक छे. उत्तरभावि अनुभव उपर विचार करी, आखीए श्रेणिने आनुपूर्वीरूप भावनामां उतारवी ए आ ज्ञाननुं तात्पर्य छे. आम थवामां पण आपणे आगळ कहेलुं छे तेम, अनुभवना संस्कार अमुक समय सुधी रहेवानी आवश्यकता छे.

आवी जे आनुपूर्वीनी भावना तेनो आरंभ तत्काल थता अनुभवनो,

अव्यवहित क्षणे भूत एवा के भावि एवा, कोई भावनारूप अनुभव साथे संबंध लक्षमां लेवायकी थाय छे. कालभावनानुं आरंभक बिंदु वर्तमानकालज छे. वर्तमान एवा कोई एक कालबिंदुथकी भूतनो तेम भाविनो परामर्श करवानुं बनी आवे तोज कालभावना संभवे, नहि तो नहि.

१७. भूतभावनाः— सादामां सादी कालभावना आ प्रकारे ऊपजे छे. बाळक पोताने रस पडे तेवा कोई पदार्थने विलोके छे, ओरडानी भिंत उपर पडता चांदरणाने जुवे छे. तुरतज सूर्य उपर वादळुं आवी जाय छे, अने नाचतुं अजवाळानुं बिंदु विलुप्त थाय छे. ए प्रकाशमय बिंदुने स्थाने काळी के धोळी होय तेवी भिंतनी भिंत जणाय छे. आवा लोपने लीधे ए चांदरणानो अनुभव तुरतज आत्मप्रतीति बहार जतो रहे छे एम नथी. संस्कार रहे छे, अने रसिक होवाने लीधे अवधानने आकर्ष्यां करे छे. तेनी साथेज वर्तमान एवी साफ भिंतनुं पण दर्शन थाय छेज. आ बे अनुभवमांथीज विद्यमान एवो भिंतनो अनुभव अने अविद्यमान एवा चांदरणानी भावना, ए बेना स्वरूपनुं ग्रहण थवा मांडे छे; वर्तमान अने भूत ते वच्चे जे विरोध छे ते समजावा मांडे छे.

आटलुंज नथी पण अनुभवनी साथे भावनाना आवा संभवने लीधे ते ते बनावो वच्चे जे आनुपूर्वीनो संबंध छे ते पण समजावा मांडे छे. अ भावना, अने ब अनुभव, ए बे अमुक क्रमथी युग्मरूप थाय छे. ज्यारे ज्यारे अवधान अ उपर आवे छे त्यारे त्यारे ते ब सुधी पण खेंचाय छे. एटले के अ छे ते ब ना पूर्ववयवरूप थतो चाले छे, अने तेमनां जे प्रत्यक्ष अ, ब, तेमनो संबंध पण अ थी ब उपर गयानी भावनारूपे समजाय छे, उलटी रीते नहि. आवा ज्ञानने पाछुं ए वातथी बळ मळे छे के अनी स्पष्टता अने विपुलता, ब जे साक्षात् अनुभव

छे, ते कायम रही सबल थतो जाय छे तेम घटती चाले छे. आ रीते बाळकनुं मन सारी रीते एम समजी ले छे, के अने स्थाने ब आवेलो छे. "अवर्तमान" एवी अस्पष्ट भावना आ प्रकारे "भूत," "गत" एवी भावनारूपे परिणमे छे.

१८. भविष्यभावनाः—हवे भाविनी अपेक्षानो विचार करीए. भूतनी भावनानी पेठे भविष्यनी भावना पण साक्षात् एवा कोई वर्तमानथी संभवे छे. आ ठेकाणे आनुपूर्वीनो संभव प्रथमथीज धारी लेवामां आवे छे. अना अनुभवथी तेना उत्तरावयव बनी भावनानुं भान त्यारेज थाय के ज्यारे एक अथवा वधारे भूत अनुभवमां ते बेनुं साहचर्य अनुभवायुं होय. जो अनी पाछळ अव्यवहित क्षणेज बनो अनुभव थतो होय, अथवा भावना थतानी साथेज थतो होय, तो तो भविष्यनी भावना थवानो अवकाश नथी. पण भावना थई अने साक्षात् अनुभवथी ते प्रत्यक्ष थई ए बेनी वचमां जो कांई अंतर रहेतो होय तो भविष्यनी भावना संभवे.

आ भावना बंधावानो क्रम बराबर समजवा माटे आपणे एम धारीए के कोई बाळक बहु भूख्युं थयुं छे अने पोताने जमवानी बधी तैयारीओ देखे छे. आ स्थितिमां जमवाथी थता अनुकूळ अनुभवनी भावनानुं तुरतज भान थाय छे. आ प्रसंगे जे भावना थाय छे तेने साक्षात् अनुभव साथे निकट संबंध छे, अने ते अनुभवथीज ते सूचवायली छे, एटले ए भावना असाधारण वैपुल्य अने दृढतावाळी नीवडे छे; ए दृढतामां भावनाना अनुकूळ स्वरूपने लीधे अधिक ऊमेरो थाय छे. आ स्थाने पण प्रत्यक्ष एवा वर्तमान अने नहि प्रत्यक्ष एवा अवर्तमानने सरखाववानो सारो प्रसंग छे.

परंतु आ स्थाने अनुभव अने भावनानो संबंध जुदी जातनो छे.

मनमां अनुभव अने भावना उभये साथे रहे छे तेवामां बाळकने मालूम पडी आवे छे के ज्यारे ज्यारे अ ए अनुभव स्पष्ट रीते प्रतीत थाय छे त्यारे त्यारे, तेनी पाछळ तुरत, ब ए भावना उदय पामे छे. भूतकाल-ना संबंधमां अनुभव अने भावनानो जे क्रम हतो ते करतां आ स्थाने जुदो क्रम थाय छे. वळी अथी बसुधी वारंवार जवाने लीधे, बनुं बळ प्रथम प्रसंगमां घटे छे तेम घटवाने बदले, वृद्धि पामे छे. एटले के अनु-भव अने भावनानो संबंध, भावना अनुभवनो लोप करवा प्रवर्तती चाले छे ए प्रकारे अत्र समजाय छे, भूतभावनामां एथी उलटुं बनतुं हतुं ते प्रकारे नथी समजातो. अ अने ब वच्चे आवा संबंधने लीधे बाळक, प्रत्यक्ष बनावोनो पण जुदोज क्रम माने छे. अ पोते ब सुधी लई जाय छे, अने पोताने स्थाने बने स्थापे छे, एम समजवामां आवे छे. बीजी रीते कहीए तो अनो उत्तरावयव जे ब ते अनी पण पहेलां कल्पी लेवामां आवे छे. त्यारे आ स्थाने अवर्तमाननी अस्पष्ट भावना धीमे धीमे "भावि," "भविष्य" एवी भावनारूपे परिणमे छे.

१९. कालश्रेणिनी भावनाः—काळनी श्रेणिनी भावना पण एने एज प्रकारे साक्षात् अनुभवना संबंधेज, थायछे. अ, ब, क, ड....प एवा बनावोनी एक श्रेणि छे एम धारो. ज्यारे पनो अनुभव थाय छे त्यारे अ, क, ब, ड, इत्यादि भावनाओ पण प्रतीतिमां विद्यमान होय छे. आ बधी भावनाओ भूतकालने अर्पवामां आवशे; परंतु भूतकालमां एकना एक बिंदुए ते सर्वने स्थापवामां आवशे नहि. ए बधी भावनाओ उपर त्वराथकी नजर करी जतां पण अमुक क्रम जणाई आवशे. अ, ब, क, ए क्रमथी दृष्टि सहजे चाली जाय छे, ब क अ, क ब अ, ए क्रमथी नथी जती. आ स्थाने पण, प्रतीति बहार भावनाओ जती रहे

छे तेमां जे तारतम्य रहेतुं समजाय छे तेथकी कालक्रममां ते सर्वनो शो क्रम छे ते समजवामां साहाय्य मळे छे.

२०. समयनी भावनाः—कालक्रम करतां कांईक जुदी रीते समय अथवा कालना अमुक विभागनी भावना बनी आवे छे. अत्र भावना ऊपजवानी सामग्रीमां, विसदृश अनुभव के फेरफारनुं पूर्वोत्तर भावित्व ए कारण नथी, पण सदृश अनुभवनुं सातत्य ए कारण छे. वळी अरसिक एवा कोई अनुभवनी पण आमां तो अपेक्षा होय एम लागे छे के तेना सातत्य उपर लक्ष आपवानी फरज पडे.

लांबो समय चालती अपेक्षामां आवी बधी सामग्री मळी आवे छे. उदाहरण— बाळकने समय अथवा काळसातत्यनुं प्रथम पहेलुं ज्ञान अमुक वस्तु तेने अमुक समय पछी मळशे एम कहेवामां आवे ने ते अनुसारे आपवामां आवे, ते उपरथीज मळतुं हशे. आ बे प्रसंगे बा-ळकनुं लक्ष भावि एवी जे पे'ली प्राप्ति तेनी भावना उपर चोटे छे. आ रीतनी एकाग्रताने लीधे, वचमां थता बनावो, वचमां आवती भावनाओ, ते उपर स्पष्ट लक्ष रहेतुं नथी. प्राप्तिनी अपेक्षा तेज सर्वग्राही भावना छे, एटले वचमां पण तेनी तेज विद्यमान लागे छे. अपेक्षित एवा भावि-थकी विरुद्ध एवुं लांबो समय चालतुं सातत्य आ प्रसंगे पूर्ण प्रतिती-थकी अनुभवाय छे; अने ते उपर विचार करतां, लांबो समय चालती अमुक आनंदजनक प्राप्तिनी आशा अने तेमां ने तेमां वारंवार थती नि-राशा ए प्रतीति अनुभवातां, अमुक समयनुं ज्ञान थवा लागे छे.

आ अनुभव पामवामां पण अमुक काललिंग मानवानी अपेक्षा छे. आपणे अपेक्षा-थकी वाट जोता होईए त्यां अमुक क्षणे केटलो समय थयो एम जेनाथी समजाय तेवां केटलांक काललिंग होवां जोईए. पूर्वापर एवा कोई पण बे क्षणे मननी स्थितिमां अंतर होय छे ए तो स्पष्टज छे. कारण के वाट जोवी ए पण एवो अनुभव छे के जेनी

भावना रह्यां करे छे. वास्तविक स्थितिज एवी छे के आ प्रकारे वाट जोवामां कोई पण क्षणे एम तो जाणीज शकाय छे के वाट जोतां आटलो समय वीत्यो. थनार वातनी अपेक्षाथकी अवधान आगळ आगळ दोडे छे ते, अने ते वात धारेले समये थवामां विलंब थवाथी अपेक्षा पाछी पडे छे ते, ए उभयनी भावना कोई अस्पष्ट रीते पण बंधाय छे; अने आ व्यापार जेटलो समय चाले तेना प्रमाणमां मानसिक श्रम पण थयलो समजाय छे. एम पण कहेवुं जोईए के जेमांथी आपणे मुक्त थवा इच्छता होईए एवो दुःखकर अनुभव थवामांथी पण समयनुं आ प्रकारनुं ज्ञान थवानी सामग्री मळी आवे छे. पाठ न करी लाव्या माटे करता सुधी पूरी मूकेलो विद्यार्थी, अथवा पोताने अप्रिय एवी नीतिना भाषणमांथी छूटवा इच्छतो कोई माणस, ते आ प्रकारनुं समयनुं जे ज्ञान तेने प्राप्त करवाने सारी रीते योग्य छे.

२१. उत्कृष्ट प्रकारनी कालभावनाः— काळनी परिपूर्ण भावनामां, जे बे प्रकारनी भावना अत्र बतावी, तेनुं मिश्रण थाय छे. काळनो अर्थ आपणे एमज जाणीए छीए के प्रत्येक रूपे अने समग्र रूपे अमुक समयसुधी चालता बनावोनी परंपरा दृश्य एवा कोई बे पदार्थथी स्पष्ट कराय छे त्यारेज जेम आपणे दिगंतर अथवा दूरत्व समजी शकीए छीए तेज रीते अथ अने इतिरूप बे बिंदुथी स्पष्ट थाय तोज कोई पण समयनी भावना थई शके छे. आवी समयभावनानी अपेक्षा एटला माटे छे के कोई पण कालपरंपरानी भावना, ए परंपराना अवयवो वच्चे केटलो अंतर छे तेनी भावना विना अपूर्णज रहे छे.

कोई अनुभवपरंपराना समयनुं ग्रहण, जुदा जुदा बनावनी परंपराओ समांतर चाली जाय अथवा एना एज काळमां पण बने एम जाणवाथी वधारे सारी रीते थई शके छे. जेमां आपणने घणो रस पडतो होय एवा कोई बनावनी परंपरानो समय आपणाथी साक्षात् गृहातो नथी, केमके एवे प्रसंगे तो ते अनुभवना उपरज बधुं अवधान लागेलुं होय छे. आवो अनुभव थतो होय तेज काळे जेनो समय आपणा जाणवामां

होय तेवा कोई बनावनी परंपरा पण चाली जाय छे एम जाणवाथी प्रथमना अनुभवनो समय आपणे मापी शकीए छीए.

केवळ मानसिक अने तेथी अनिश्चित एवी काळनुं माप करवानी जे रीतिनुं आगळ वर्णन थयुं ते, आपणा कोईक निश्चित कालमापथी, अने आपणने तेम सर्वने साधारण एवा कालमापथी प्रमित एवा कोई बाह्य पदार्थनी अपेक्षाए जोतां वधारे दृढ अने निश्चयवाळी थई शके छे. आवा मापनुं साधन गति, अने विशेषे करी दृश्यमान गति ए छे. सूर्यनी गति, अथवा घडीआळना कांटानी गति, आवा प्रकारनुं माप पूरुं पाडे छे. दिगवच्छिन्न एवा एक बिंदुथी बीजा बिंदु सुधीनी सरखी रीतनी गतिथी समयनुं माप थाय छे, केमके एवा गतिमान पदार्थनी वखते वखत थती स्थिति कालक्रमने अनुरूप होई, कालक्रमनुं सूचन करे छे. आम छे एटले आपणने दिक्संबंधी जे ज्ञान होय छे ते यद्यपि तेमां कांईक पण कालभावना तो होयज छे तथापि, कालभावनाने वधारे स्पष्ट करवाना उपयोगमां आवे छे.

ध्वनिपरंपराना अवयवोनी वचमां केटलुं अंतर छे ते जोवाथी काळनुं माप थई शके छे ए तो आपणे कहेलुंज छे. गवैयाने ध्वनिध्वनि वच्चेना अंतररूप बाह्य मापज समय मापवा माटे होय तो तेमां कांई असंभावित नथी. एम होवानो पण संभव छे के आपणा शरीरनी गतिथी पण काळ मापी शकाय तेवुं माप मळी आवे.

भूतकालनी जे भावना थाय छे ते भागीतूटीज होय छे; अने जेने आपणे कोई भूतवृत्तांतनी पाकी खातरी कहीए छीए ते तो घणे भागे अनुमानरूप होय छे— पाछला वर्षोनो विचार करतां, घणा थोडा बनावनुं आपणने स्मरण थाय छे, ने जे थाय छे ते पण जोईए तेवुं स्पष्ट थतुं नथी. अविच्छिन्न भूतकालनी जे भावना थाय छे ते विच्छिन्न विच्छिन्न भूतसमय—दिवस, अठवाडीआं, महीना, आदि—नी भावनामांथी ऊपजे छे. जे भूतकालनुं स्मरण थाय छे ते जेम आतिविदूर तेम

बनावोनुं स्मरण वधारे थोडुं थाय छे; अने काळनी भावना मात्र अमुक कालसातत्यरूपेज कशा पण बनावो विनाना सादा कालरूपेज थई आवे छे. छेक बाळपणनुं कोई एक वर्ष संभारतां घणामां घणुं जे आपणने स्फुरी आवे छे ते एज होय छे के ते वर्षे आपणे निशाळे जता हता. ए उपरांत वर्षना विभागरूप जे ऋतुओ छे तेनी अस्पष्ट भावना आना भेगी भळे छे; नियमित रीते ऋतुओ आवती होवाथी अनुमानथकीज वर्षना अंगमां मानी लेवाय छे.

आ प्रकारे जे भूतकालनी भावना उद्भवे छे ते, अनेक प्रकारे, आखा भूत अनुभवना मुख्य मुख्य बनावोने विलोकवाथकी बनी आवे छे. ए विलोकन बे रीते थई शके: (१) भूतथी वर्तमान सुधी आववुं; कोई एक भूतवार्तानुं स्मरण करी त्यांथी जुदा जुदा बनावो उपर अवधान देते देते छेक वर्तमानमां आववुं. (२) वर्तमानथी भूत सुधी जवुं, वर्तमान वार्ताथी तेना आगळना बनावोनी परंपरा जोते जोते भूतवार्ता उपर जवुं. आ बीजी रीतिनो जे व्यापार कह्यो ते एकंदरे वधारे कठिन छे.

भूतनी भावनाने विषे जे वात अत्र कहेवामां आवी तेनी तेज भविष्यभावनाने ण लागु थाय छे. ए भावनाने अमुक समय सुधी चालता अनुभवोनी परंपरानी भावनारूप जाणवी. जेम समय वधारे दूर तेम भावनागत संभवोनी भावना वधारे अस्पष्ट अथवा अपूर्ण. ए तो स्पष्टज छे के भाविकालसंबद्ध बनावोनी भावना तो भूतकालसंबद्ध बनावोनी भावना करतां अस्पष्ट होय छे.

भूतकालनी भावनानो आ रीते विकास थया पछी कोई पण संकल्पनी प्रतीति थतानी साथे, कालपरंपरामां थोडी के घणी पण अवधानने स्थिति करवानी अपेक्षा थाय छे. आम कहेवानुं तात्पर्य एम छे के, वर्तमानपरत्वे जेनी स्थितिनुं अनुमान थयलुं होय, अने जेनो कालकृत अंतर जाणवामां होय तेवा कोई बनावो साथे जेनो संबंध जाणवामां होय, तेवा कोई भूतकालना बिंदु उपर ते संकल्पने स्थापवामां आवे छे. घणी वार आ स्थापना अस्पष्ट अने अपूर्ण पण होय छे. अमुक माणसने

मळ्या छीए एवुं याद आवे छे, पण बराबर दिवस वार याद आवतो नथी. आवा प्रसंगमां एवा बनावने आपणे अमुक अस्पष्ट एवा भूतसमयमां स्थापीए छीए, पण बीजा बनावोनी अपेक्षाए तेनी स्थिति क्यां छे ते कही शकता नथी.

आवी रीते अस्पष्ट स्थितिरूपी नहि, पण स्पष्ट स्थापना करवारूपी सामर्थ्य ज्यारे स्मृतिने प्राप्त थाय छे, त्यारे आत्मभावना, एटले के नित्य अनुभवना अनेकानेक विकारमां पण अविकृत अने तेनो तेज एवो आत्मा छे ए ज्ञान, थई शके छे. आत्मानुं ज्ञान थता पूर्वे भावनाशक्तिनी आटली बधी वृद्धि होवानी अपेक्षा छे, माटेज एम समजाय छे के बाह्य पदार्थोनो ज्ञान पछी घणे वखते आत्मानुं ज्ञान थाय छे.

२२. सादृश्यनिबंधन साहचर्यः—सामीप्यनिबंधनसाहचर्यमां स्मृतिना बधा स्वरूपनो समास थाय छे तथापि साहचर्यना बीजा नियमो पण मानवानो प्रचार पडेलो छे. एवा नियमोमां मुख्य सादृश्यनिबंधनसाहचर्यनो नियम छे ते छे. ए नियमनुं स्वरूप एवुं छे के कोई पण अनुभव, पूर्वे जोयला तत्सदृश अनुभवने पण उद्बोध पमाडी शके छे. नवुं वदन जोता पूर्वे जोयलुं तत्सदृश वदनान्तर सूचवे छे; एक भाषानो कोई शब्द तदर्थक एवा कोई परिचित परभाषाना शब्दने सूचवे छे; इत्यादि. सादृश्यसंबंध जेम वधारे तरी आवतो होय, अने वैसादृश्य करतां सादृश्य जेम अधिक होय, तेम एक पदार्थ स्वसदृश अन्यपदार्थनुं सूचन वधारे सारी रीते करी शके छे.

आ साहचर्य प्रथम प्रकारना साहचर्यथकी स्पष्ट रीते भिन्न छे. सामीप्यथी तो जे पदार्थो अनुभवमां पासे पासे आव्या होय तेनुं साहचर्य बंधाय छे; एटले के समकालीन अथवा अव्यवहितक्षणे थयला बनाव अने पासे पासे रहेला पदार्थोनुं साहचर्य सामीप्यने लीधे घडाय छे.

एथी उलटी रीते कालपरत्वे अत्यंत विदूर एवा अनुभवोनुं पण साहचर्य, सादृश्यथी थई आवे छे. मुंबईमां आज कोई एक वदन जोतां अनेक वर्ष उपर दुनियांना गमे ते भागमां जोयलुं तत्सदृश अन्यवदन याद आवे छे.

सामीप्य अने सादृश्यना नियमो वच्चे यथार्थ संबंध शो छे ए विषे घणी चर्चा चालेली छे. केटलाक उभये नियमोने एकनियमरूपे स्थापवा इच्छे छे, सर विलियम हेमिल्टने तेम करेलुं छे. मि. स्पेन्सरे सामीप्यने सादृश्यरूपे बतावबा यत्न कर्यो छे. तेनुं कहेवुं एम छे के पोताना सवर्गीय संस्कारो साथे वर्तमान संस्कारनुं सामानाधिकरण्य थाय एज साहचर्यनुं तत्त्व छे. कोई वर्तमान संस्कार **अ, ब्य** अने **ब** एवा अन्यसंस्कारोनुं पण स्मरण करावे छे; त्यां **अ** अने **ब्य**नुं सादृश्य एज साहचर्यनुं निदान छे. **ब**नुं पण भान भेगुं थाय छे तेनुं कारण एटलुंज छे के **ब्य**ने जेवो संबंध **अ** साथे छे तत्सदृश संबंध दिक् अथवा काळ अथवा उभयथकी **ब** ने **ब्य** साथे छे.

केटलाक आथी उलटी रीते सादृश्यने काढी नाखी सामीप्यमात्रनेज माने छे. ज्यां कोई अनुभव स्वसदृश अनुभवांतरनुं स्मरण करावे छे त्यां कांईक आवी प्रक्रिया प्रवर्ते छे. **अ क ब** एवी कोई वर्तमानदृष्टि **प क च** एवा संस्कारनुं भान करे छे. एमां **क** सादृश्यभूमि छे. **प क च** एमांना **क**नुं स्मरण थवुं एने साहचर्य साथे कांई लेवादेवा नथी. **अ क ब** ए नवीन अनुभवमां **क** नी सन्निधिने लीधे **प क च** मांना **क** नी भावनानो प्रतीतिमां उदय थाय छे. आवी रीते **क** नो उदय थतानी साथे तेनी साथेना जे **प** ने **च** तेनुं पण भान थाय छे, ने तेज साहचर्यकृत छे. पण आ साहचर्य तो सामीप्यनिबंधन थयुं, सादृश्यनिबंधन नहीं.

साहचर्यना ए बन्ने नियम अंते जतां परस्पर व्यावृत्त नथी ए तो निःसंशय जणाय छे. स्मृतिना ए उभये प्रकारमां जुदा जुदा प्रमाणथी अने जुदी जुदी स्पष्टताथी, सामीप्य अने सादृश्य उभयेनुं कार्य होय छेज. कोई माणसना नामथी तेना मुखनुं स्मरण थाय छे, त्यां वर्तमान जे ध्वनि ते पूर्वश्रुत ध्वनि साथे सहसा सादृश्य पामे छे. एज प्रकारे सादृश्यमां पण, हवणांज बताव्या प्रमाणे सामीप्यनो भाग आवे छे. क्वचित् सादृश्यनुं कार्य केवळ शुद्धरूपे पण जणाय छे; कोई माणसनुं मुख देखतां आपणे तेने परिचित, अभिज्ञात, एवुं जाणी लईए छीए, एटले के तत्सदृश भूत अनुभवनुं स्पष्ट स्मरण करीए छीए, जोके तत्सहभूत अन्य अनुभव लक्षमां आवता नथी. पण साधारण रीते तो जेने आपणे सादृश्यनिबंधन स्मरण कहीए छीए तेमां तत्सहभूत

अन्य अनुभवनुं पण स्मरण थाय छेज. आ बधी वार्ता उपरथी सादृश्य अने सामीप्यना नियमोनो संबंध आ रीते कही शकाय:—

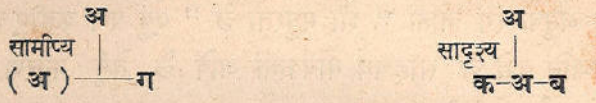

एटले के प्रथम प्रकारना साहचर्यमां जे सादृश्य समजाय छे ते सहसा, अस्पष्ट जेवुं थाय छे; अने स्मरायला सहचारी तेमने स्मरावनारथी जुदे जुदाज समजाय छे. बीजा प्रकारना साहचर्यमां मुख्य बातज आ सादृश्यज्ञान छे, एटले त्यां सहचारी सादृश्यभूमिथकी भिन्न जणाता नथी.

आ प्रकारे, साहचर्यना आ बे नियम मूळे एकरूप छे एम मानवा छतां पण आकारमात्रथकी तेमनो भेद छे एटले तेमने बे जुदे जुदा नियमरूपे मानवा उचित छे. ए बेमांथी एकमां जेने सादृश्य कहीए छीए ते सहचारीरूपे होय छे, अने तेनी साथे ऊर्मिविशेषनी पण कांईक छाया होय छे, एटले ए साहचर्यप्रकारने अन्य साहचर्यप्रकारथी भिन्न मानवाने पूर्ण कारण छे, अने व्यवहारमां आ बे नियमनो भेद जाणवो, मानवो, ए बहु उपयोगनुं छे. कोई वातनी भावना उपरथी ते वातना सहचारी उपर जवुं ए प्रक्रिया, अने एक पदार्थसंभवादिनी भावना उपरथी कालसंबंधे अत्यंत भिन्न एवा अन्य पदार्थ संबंधादि उपर जवुं ए जे प्रक्रिया, ते बेनी वच्चेनो अंतर समजवो ए बहु आवश्यक छे.

२३. सादृश्यसाहचर्यनी असरः—आपणी भावनाओनी गति उपर सादृश्यनी घणी असर प्रवर्ते छे. ज्यां विचार करी जोतां पण सामीप्यनी सांकळे कोई संकल्पना पूर्वावयव उत्तरावयवने सांधी शकाय तेम होतुं नथी, त्यां ए अनुसंधान कोई प्रकारना सादृश्यथी साधी शकाय छे. आवा साहश्यसंधिमां जेने वृत्तिसाधर्म्य कहे छे ते पण गणवुं जोईए. एक पदार्थ, पोताथी विच्छिन्न एवा अन्य पदार्थनुं भान, मात्र प्रथम पदार्थना जेवीज वृत्ति के ऊर्मि पेदा करवाथी, करावी शके छे. रंग अने ध्वनिनां अत्यंत भिन्न एवां प्रत्यक्षने पण "वृत्तिसाधर्म्य"थी सादृश्य होय छे. एम होवाथीज एक प्रकारना पदार्थादिने लागु थई

शके तेवी भाषा अन्य प्रकारना पदार्थादिने पण लागु करी शकाय छे. अमुक राग गवाती वखते " शो रंग जाम्यो छे " एम आपणे बोलीए छीए, तेम अमुक रंग जोतां " शी मधुरता छे " एवुं पण कहीए छीए. रंग अने ध्वनि वच्चे जे साहचर्य मानवामां आवे छे तेनुं कारण आ " वृत्तिसाहचर्य "ज हशे.

सदृशे सदृशनुं जे अनुकर्षण थाय छे तेथकी ज्ञानसमृद्धिमां घणी वृद्धि थई आवे छे. आपणे जे जे जाणवानुं छे, साक्षात् अवलोकनथी के पुस्तकोद्वारे जे जे जाणवानुं छे, ते बधुं केवळ नवे नवुं होत तो आपणा श्रमनो पार रहत नहि. कोई नवी भाषानुं ज्ञान प्राप्त करवामां साद्दश्यने लीधेज श्रम टुंको थई जाय छे. क्रतु एवो संस्कृत शब्द परिचित एवा यज्ञ शब्दनुं भान करावे छे, तेनी साथेज ए नवा शब्दनो अर्थ मनमां दृढ थाय छे. जे नवुं प्राप्त थाय छे ते, सादृश्यसंबंधने लईने जूना भंडोळ साथे नित्यसंबंधथी जोडाई जाय छे.

सादृश्यमां आ रीते संकलन करवानुं जे सामर्थ्य छे ते स्मृतिव्यापारमां उपयुक्त थाय छे, तथापि भूत वृत्तान्तोना पूर्ण अने सुरेख संकल्प बांधवामां कांईक विघ्नकारक थई पडे एवुं जणाय छे. सामीप्यसंबंधथी जोडायला नहीं एवा बे संकल्पने भेगा करवाथी, तेमनी वच्चे जे कालिक संबंध होय ते ढीलो पडी जाय छे. सादृश्यनी जे मन उपर बहु असर रहेती होय ते मनमां स्मृतिव्यापार स्पष्ट थतो नथी. बे शब्द, बे स्थान, आदिनो सादृश्यने लीधे संबंध मानवामांथी एकमांना विसदृश धर्मो बीजाने आरोपवानुं कार्य सहज रीते थई जाय छे. एटलुंज नहीं पण कोई पण बे पदार्थने सादृश्यनी सांकळथी जोडवानो परिचय थते थते एक एवो संकल्प आपणा मन आगळ खडो थाय छे के जे उभयेनी भावनारूप होय छे. आवुं जे थवुं ए तो व्याप्तिनिर्देशना व्यापारनुं बीज कहेवाय ; अने ए व्याप्तिनिर्देशनो तो बुद्धिना पेटामां समास छे.

सदृशे सदृशनुं आकर्षण थवाथी सुरेख संकल्पोना उद्भवमां विघ्न आवी पडे, अने तेथी सारी स्पष्ट संकल्पमय स्मृति थई शके नहि, एवो संभव छे खरो; परंतु एम छतां पण आ आकर्षणथी अन्य प्रकारनी स्मृतिने सारी पुष्टि मळे छे. ए स्मृतिने तात्त्विक

अथवा शास्त्रीय स्मृति कही शकाय. अमुक अमुक व्यक्तिरूप वस्तुसंभवादिने, विचारव्यापारार्थे, वर्गरूपे गोठववानुं काम सादृश्यना बलथीज बनी आवे छे. तेमज आवा वर्गोने जे नियमना ते दृष्टान्त रूपे होय ते साथे योजवा ए पण सादृश्यथीज संभवे छे.

२ ई. विरोधनिबंधन साहचर्यः—सादृश्य उपरांत एक वैधर्म्य, वैसादृश्य— अथवा विरोधनो नियम पण साहचर्यजनक मनाय छे, एनुं तात्पर्य एम छे के कोई पण अनुभव पोतानाथी विरुद्ध एवा अनुभवादिनी भावना पेदा करी शके छे. एम कहेवाय छे के काळुं धोळाने सूचवे छे, गरीबी पैसादारीनुं भान करावे छे, सपाट मेदान पहाडी मुल्कनी भावना उपजावे छे, इत्यादि.

विरोधने लीधे भावनाओनो साहचर्यसंबंध थाय छे के नहीं ए बहु शंका भरेली वात छे. उलटुं एम कहीए तो चाले के कोई बे भावना वच्चेना विरोधथी तो परस्पर-व्यावृत्तिज थाय छे. कोई पण अनुभव अथवा भावना पोताथी विरुद्ध अनुभव अथवा भावनाने तो प्रतीति बहारज काढी नाखे छे.

विरोधसाहचर्य, जेटले अंशे ते यथार्थ छे तेटले अंशे, एटला उपरथी योग्य जणाय छे के ज्ञानमात्रनो उद्भव पदार्थोना विरोध लक्षमां लेवाथी थतो चाले छे. काळुं धोळुं, मो'टुं नानुं, एम वस्तुस्थितिनुं व्यक्तिरूपे ज्ञान आपेक्षिक छे. माता तथा शिक्षक बाळकोने ए प्रकारना विरोध बतावी बतावीने पदार्थो ओळखावे छे एटलुंज नहीं पण बाळक पोते पण तेज मार्गे ज्ञान गृहवा मांडे छे. आम छे एटले एवुं कही शकाय के ज्यां ज्यां कोई उत्कर्षवाळो पदार्थ आपणी दृष्टिए आवे छे त्यां त्यां तेनाथी विरुद्ध धर्मवाळा पदार्थनुं पण आपणने भान थाय छे, केमके बे पदार्थ विषेनुं आपणुं ज्ञान एज रीते उद्भवेलुं छे. भाषानो साधारण प्रचार पण आवाज प्रकारने पुष्टि आपे छे. आ बधा कारणथी एक प्रकारना सामीप्यसाहचर्यथीज विरोधवाळा पदार्थो पण साहचर्य गृहे छे. प्रो० बेन वगेरे केटलाकनुं कहेवुं एम छे के विरोधसाहचर्य पण सादृश्यसाहचर्यनेज वधारे स्पष्ट करे छे, केमके विरुद्ध एवी बे–उष्ण–शीत, उंचुं–नीचुं,– भावनामां पण एकना एकज धर्मपरत्वे तारतम्य छे ए सादृश्य छे.

ज्ञानप्राप्ति अथवा स्मृतिना व्यापारमां विरोधसाहचर्यनो भाग बहु थोडो छे. आ साहचर्यनो मुख्य उपयोग ए छे के अवधानने जाग्रत्

करी, असाधारण, अपवादरूप, अने सामान्य अनुभव करतां विलक्षण, एवी वार्तामात्रने मन उपर वधारे उंडी रीते ठसाववी. केटलीक वार तो कोई पण बे पदार्थ के संभवनी भावनानुं साहचर्य साधवामां सामीप्यना सहकारीरूपे विरोध काम करे छे. उज्जड पर्वतो अने तेनीज पासे लीली छम जेवी खीणो, मो'टा भभकावाळुं नाम ने तेनी साथेज एकाद निर्माल्य नाम, इतिहासमां एक समये सारुं भव्य राज्य अने ते पछीज अति दुःखमय राज्यव्यवस्था, ए आदि स्मृतिमां जडाई रहे छे, तेमां सामीप्य साथे विरोधनो पण व्यापार छे ए स्पष्ट छे.

२५. **मिश्रसाहचर्यः**—आटले सुधी एम धारवामां आवेलुं छे के साहचर्य सादे सादुं छे, एकनुं एकज चित्र एक एक साहचर्यमां विद्यमान छे. पण वस्तुगति तेवी नथी. साहचर्यव्यापार घणोज गुंफित छे. एकज वात अनेक भिन्न भिन्न गुंफनोमां होई शके छे. दिल्हीना प्राचीन दरबारनी भावनानुं आपणने जाणीता इतिहासना बनावो साथे साहचर्य छे, दिल्ही जईने आपणे जे आनंद तेने जोवाथी प्राप्त करेलो ते साथे साहचर्य छे, आगळ थई गयेला महाभारतादि समयनी ते भूमि छे एम ते बनावो साथे साहचर्य छे, इत्यादि. साहचर्यना तार सारंगीना तारनी पेठे जुदे जुदा ने समांतर गोठवायला होता नथी, पण गुंचवेली जाळ जेवा ओतप्रोत रहे छे.

आवी रीते साहचर्यनुं जे मिश्रण थाय छे तेनुं एक परिणाम ए आवे छे के साहचर्यना जुदा जुदा तार एकना एक परिणाम उपर पण आवी शके छे; एटले कोई पण चित्रनुं भान, अनेक साहचर्यसूचनथी थई आवे छे. एक पछी एक आवता घणा शब्दोनी परंपराथी आनुं सारुं दृष्टान्त बतावी शकाय एम छे.

अमुक शब्दपरंपराने गोखीने स्मृतिमां राखी. तेमां श्रोत्र, कंठ, चक्षु, त्रणेनी अनेक परंपराओनुं मिश्रण छे, अने आ मिश्र परंपरा दृश्य पदार्थनी परंपराथी पूर्ण थयली छे. आम आ आखी परंपरा एक अति गुंफित तंतुजाल जेवी छे. एटले एकाद काव्यना के गमे त्यांना शब्दोनी कोई परंपरानुं स्मरण करवामां मन आ बधी परंपराओमांथी गमे ते परंपराए थई तेवुं स्मरण प्राप्त करी ले छे. क्वचित् श्रवणद्वारे संभळायली ध्वनिभावनानी परंपराथी, क्वचित् चक्षुद्वारे दीठेली शब्दभावनानी परंपराथी, क्वचित् शब्दथी बोधित पदार्थपरंपराथी, उक्त स्मरण प्राप्त करी लेवाय छे. ए वात पण त्यारे स्पष्टज छे के ज्यां अनेक परंपराद्वारे एक स्थाने आववाना मार्ग छे त्यां गमे ते कोई एक परंपरा सुदृढ न होय तो अन्य परंपराथी पण कार्य थई रहे छे.

एटलुंज नथी, पण प्रत्येक शब्दपरंपरानी अंगभूत परंपरामात्र परस्पर सुसंबद्ध छे एम मानीए तो, एक परंपरानो मार्ग तूटतां मन अन्य परंपराथी धारेली स्मृति प्राप्त करीने पण ते स्मृतिथी नीकळी पाछुं प्रथमना तूटेला मार्ग उपर ज्यां एक पासाथी जतां तूट हती त्यां आगळ आवी शके छे. एकाद काव्य मोढेथी बोलती वखते बाळकने श्रवणपरंपरा अने ध्वनि(कंठ)परंपरा कोई ठेकाणेथी तूटती लागे, तो पण पदार्थपरंपरातुं भान लावीने, अथवा जो ते काव्य होय तो पुस्तकना पृष्ठनुं चित्र स्मरीने, ते आ बे परंपराना आगळना अंकोडा उपर जई शके छे, अने छेवट पोताने जे परंपरा इष्ट छे ते उपर आवी शके छे. आ प्रकारे साहचर्यना तंतुमात्र परस्परने सारी रीते सहाय थाय छे.

साहचर्यनो आवो परस्पर सहाय थवानो स्वभाव एक बीजे रूपे पण दर्शन देछे. अनेक पण परस्पर असंबद्ध एवी भावनाओ साथे एकनी एकज भावना संबंध राखती होय छे त्यां ते जणाई आवे छे. आवे प्रसंगे मन अमुक स्थाने अनेक मार्गथी आवी शके छे, ने ते मार्ग

समांतर रीते पासे पासे होता नथी, पण अति विदूर स्थानोथी नीकळता होय छे. आपणने जे ज्ञान प्राप्त थाय छे तेमां घणे भागे आवीज जातनुं साहचर्यगुंफन होय छे. कोई ऐतिहासिक बनावना दिवसने, तेज दिवसे आपणा देशमां के परदेशमां थता बनावो साथे साहचर्य थाय छे, तेम तेनी आगळ अने पाछळना बनावो साथे साहचर्य होय छे. एटले आटला बधामांथी गमे ते मार्गे ते बनावनो दिवस स्मरी शकाय. आ बधाना मिश्रणमां सामीप्यनिबंधन तेम सादृश्यनिबंधन उभये प्रकारनां साहचर्य भळेलां छे. कोई माणसना नामनुं स्मरण, तेनी आकृतिनुं स्मरण करवाथी, तेना रचेला कोई ग्रंथनुं स्मरण करवाथी, ए आदिथीज थाय एम नहि पण तेना नामने मळतुं बीजुं नाम सांभळवाथी पण थाय. कोई काव्यनां चरण गोखी राखवामां छंद अने प्रासनी सहायथी सुतर पडी जाय छे.

आ प्रकारनुं जे मिश्र साहचर्य ते एक पासाथी जोतां स्मृतिने बहु सहायरूप छे, पण बीजी पासाथी जोतां विघ्नरूप पण जणाय छे. कोई एक भावना जुदी जुदी अनेक भावनाओ साथे साहचर्य पामेली होय, तो मूळनी भावना उपरथी चालती वखते मन गमे ते भावनाने मार्गे आडुं अवळुं चढी जाय. ने तेम थवानो ज्यां संभव छे त्यां अमुक धारेले मार्गेज मन जशे एवो निश्चय रहे नहि. आ वात तो कोई गामनी वच्चे रहीने गाम बहार जवानो मार्ग शोधी लेवा जेवी छे, गाम बहारथी गाममां आववानो मार्ग शोधवा जेवी नथी. घणा रस्ता होवाथी, बहारथी अंदर आवतां लाभ छे, तेटलीज अंदरथी बहार जतां हानि छे. एकाद काव्य बोलवामां के कोई रागनी चीज गावामां घणी वार कोई आडाज शब्दो भळी जाय छे तेनुं कारण एज छे के ए काव्य अथवा चीजना शब्दोने अनेकानेक अन्य परंपराओ साथे साहचर्य छे. साहचर्यना आ स्वरूपने प्रतिरोधसाहचर्य कहेवाय छे.

२६. व्यापारवत् अने स्थिर स्मृतिकार्यः स्मरणः—अनुभवने पुनः अनुभववा ए स्थिर अथवा यंत्रवत् सिद्ध थतुं कार्य छे, इच्छानो तेमां कशो भाग नथी, ते पोतानाज नियमोथी पोतानी मेळे बने छे. ज्यारे संस्कार सारी रीते बंधायलो होय छे त्यारे भावनाचित्रो स्वतःज ऊपज्यां जाय छे, मनना कोई व्यापारनी अपेक्षा रहेती नथी. नवरा वखतमां, बहार फरवा गया होईए त्यां, के एवा प्रसंगोमां आ प्रकारनां भावनाचित्रो आपणा मनमां सहसाज ऊभरायां जाय छे.

आ प्रकारना पुनरुद्भवना स्थिर अथवा साहजिक व्यापारमांथी जे फळ उपजे छे तेनो आधार ते समये प्रवर्ततां कारणमात्रना वळण उपर रहे छे. तत्काले जे अनुभवो थता होय, अथवा थोडोज समय थयां जे वात बनी गई होय, तेथकी आरंभ थाय छे. आ अनुभव अथवा बनावोथी बीजा पदार्थ बनाव अनुभवादि, जेनी साथे तेमने साहचर्य होय तेमनुं भान थई आवे छे; अने तेवुं भान थवानो आधार ते ते साहचर्यना बळ उपर अने ते ते भावनानी पुनः प्रादुर्भाव पामवानी शक्ति उपर रहे छे. नवा अने असंबद्ध अनुभवो मनमां आव्यां जाय, ते उपरथी वळी नवी नवी भावनापरंपरा सूचवाय, तेमां सामीप्य अने सादृश्यना नियमोथी अधिक ऊमेरो थतो चाले, अने जुदा जुदा मार्गथी मन एक परंपरा उपरथी अन्य परंपरा उपर आकर्षायां करे, ए बधां कारणने लीधे जे आवो स्थिर स्मृतिनो व्यवहार ते अति अव्यवस्थित अने गुंचवणवाळो छे एवुं लागे छे.

आवा स्थिर स्मृतिकार्यथी उलटुं व्यापारवत् स्मृतिनुं पण एक कार्य थई शके छे. एमां इच्छा सहकारी थाय छे. आमां पण भावनाचित्रनी परंपरा छे तो साहचर्यना नियमानुसारज, केमके इच्छा पोते पण आ नियमोनी साहाय्य विना कोई भावनानो उद्बोध करी

शकती नथी, अर्थात् मात्र इच्छा करवाथीज अमुक वातनुं स्मरण थतुं नथी. अमुक वातनुं स्मरण करवा माटे माणस जे कांई करी शके ते एटलुंज के तेवुं स्मरण करवाने अनुकूळ मानसिक स्थिति ऊपजावी शके. आ प्रकारे अमुक भावनाचित्रने माटे शोध करवानी, अने तेने ऊपजावानी, जे शक्ति तेथकी जेने आपणे स्थिर स्मृतिकार्य कह्युं तेमां केटलोक अंतराय आवी जाय छे. एटलाज माटे आपणे एम कहीए छीए के स्मरणव्यापार यद्यपि यंत्रवत् स्वतःसिद्ध छे तथापि इच्छाने अधीन नथी एम नथी. आ व्यापारवत् स्मृतिकार्यने स्मरण पण कहे छे.

२७. अवधान अने स्मरण:—स्मरणमां इच्छानो केटलो भाग रहे छे ते बराबर समजवा माटे आपणे प्रथमे एवुं एक दृष्टान्त जोईए के जेमां इच्छानुं कार्य सारी स्पष्ट रीते जणातुं होय. जेने आपणे स्मरवानो यत्न कहीए छीए ते जुओ. जेम बीजा बधा बुद्धिव्यापारमां तेम अत्र पण इच्छा, अवधानद्वारे कार्य साधे छे. स्मरवानो यत्न करवो एनो अर्थज ए छे के ए व्यापार उपर अवधानने एकत्र करवुं, अने व्यग्रता ऊपजावनार कारणमात्र दूर करवां. एम करवामां शरीरनी जे स्थिति थाय छे, जेवी रीते दृष्टि स्थिर रहे छे, ओठ पीसेला रहे छे, ते उपरथीज जणाय छे के अवधाननो कोई सविशेष प्रयोग ए कार्यमां चाले छे.

आवी रीते अवधान प्रयोजावाथी जे वात मनमां आवी होय ते वधारे स्पष्ट अने स्थिर थाय छे. बाळकने अमुक युद्धनुं वर्ष पूछवुं होय तो अवधानना प्रयोगथी बाळक ते युद्धना चित्रने मनमां सारी स्पष्टताथी विलोके छे, अने एम करीने ते बनाव अने तेना वर्ष वच्चे जे साहचर्यसंबंध छे तेने तुरत स्मरी काढे छे. एटलुंज नहि पण इच्छाथकी प्रतिरोधसाहचर्यने दूर राखवामां, आडे रस्ते दोरी जनार सूचनमात्रथी दूर रहेवामां, अने खरे रस्ते जवानां लिंगमात्रनो यथोचित उपयोग करवामां इच्छा घणुं अगत्यनुं कार्य करे छे. कोई बनावनुं स्मरण थवुं ए क्रिया धीमे धीमे थाय छे. जे चित्र आपणे स्पष्ट रीते स्मरवुं होय छे तेनुं कांईक अस्पष्ट भान तो आपणने प्रथमथीज होय छे, एटले ते चित्रना स्मरणने मार्गे आपणे छीए के नहि ते वात सहजे समजी शकीए छीए.

एटलुं तो स्पष्टज छे के कोई वातने स्मरवानो यत्न करवो पडे ए स्मरणशक्तिनी निर्बलता बतावे छे; साहचर्यनो बंध शिथिल छे एम सूचवे छे. दृढ साहचर्यना अभावने लीधे जे खोट पडे छे ते तो स्मरवाना यत्नथकी पूरी पडी शकवी कठिन छे. छतां ए यत्न पण निरुपयोगी छे एम नथी. सारामां सारी स्मरणशक्तिवाळा माणसना मनमां पण एवां घणांए शिथिल साहचर्य होय छे के जेमने अवधाननी साहाय्यनी अपेक्षा रहे छे. ज्यां स्मरवानो यत्न व्यर्थप्राय लागे छे त्यां पण ते छेक निरर्थ छे एम न जाणवुं. स्मरवाना घणाक यत्न कर्या पछी एका एक कोई एक नामनुं स्मरण थई आवे छे एज बतावे छे के एवी रीते स्मरण थवामां स्मरवाना निष्फलप्राय यत्नो निष्फलज गया नथी.

इच्छानो खरो उपयोग आ प्रकारे कोई पण चित्रना पुनरुद्बोधमां सहाय थवुं एज नथी. आ करतां कोई अस्पष्ट रीते पण पुनरुद्बोध अथवा स्मरणना व्यापारमात्रमां इच्छा विद्यमान होय छेज. अतिपरिचित एवा कोई काव्यनी आवृत्ति करवामां पण, आपणे न जाणीए तेवी रीते, इच्छा आखा व्यापारने योग्य स्थिरता आपी, जुदा जुदा अवयवोनो क्रम बराबर राखी, आडे मार्गे दोरनार सूचनानुं बळ तोडी नाखी, सहाय थया विना रहेती नथी.

स्मरण अथवा संस्कारना उद्बोधना व्यापार उपर अधिकार चलावनी आ शक्ति उत्तमोत्तम वृद्धिने पामे छे त्यारे संस्कारोना आखा भंडारने लक्षमां राखी प्रसंगे प्रसंगे जरूर प्रमाणे एक मार्गे के बीजे मार्गे ए व्यापार करी लेवानी शक्तिरूपे परिणमे छे. उदाहरण. कविने एकाद उपमा जोयती होय, के कोई शास्त्र भणावनारने कोई जातनुं उदाहरण के दृष्टान्त जोयतुं होय, ते समये कवि अथवा शास्त्र भणावनार पोताना आखा ए संस्कार भंडोळने, प्रकृत विषयमां उपयोग आवे तेवी दृष्टिथी तपासी ले छे. आ प्रकारे कोई पण भावना इच्छानुसार तत्काल उपयोगमां आवी शके छे तेथी एम समजाय छे के सामग्रीनी व्यवस्था बराबर रीते थयली छे अने तेमां थता नवा नवा ऊमेरा योग्य रीते संकळायला छे. संस्काररूप सामग्री प्राप्त करती वखते इच्छा आ रीते सहाय थई होय तोज उद्बोध एटले स्मरणने वखते भावनाओनो झट झट उपयोग करी शकाय.

२८. स्मरणनुं तारतम्यः विस्मरणः—भावना ने स्मरवानी शक्तिमां एटलुं बधुं तारतम्य रहे छे के एक पासा केवळ विस्मरण—स्मरवानी अशक्ति—ने एक पासा कांई पण प्रयास विना स्मरण, एवा ए शक्तिना बे छेडा छे. एक छेडे अत्यंत विस्मरण—बीजे छेडे अत्यंत स्मरण, ए वच्चे स्मरणशक्तिनां अनेक तारतम्य दीठामां आवे छे.

कोई पण समये जे पूर्ण स्मरण थाय छे तेमां मने आयासथी उद्बोध पमाडेला संस्कार बहु थोडा होय छे. एवी सरलताथी जे स्मरण थवुं तेनी सामग्री एटली बधी छे के साधारण रीते तेवुं स्मरण सर्वत्र थतुं नथी. रस, पुनरावृत्ति, समीप होय ते साथे साहचर्य, ए बधांनी एवा सहज स्मरण माटे अपेक्षा रहे छे. मनने आयास आप्या विना सहज रीतेज जेनुं स्मरण थाय छे ते (आपणा नित्य संसर्ग, रस) नित्य व्यापारमांनुं होय छे के नित्य संसर्गादि साथे निकट संबंधवाळुं होय छे. उदाहरण. गमे ते वखते कांई पण आयास विना आपणने आपणा निवासस्थाननुं, व्यवहारस्थाननुं, आपणा मित्रादिना शब्दोनुं, नित्य काममां आवता के नित्य लक्षमां रहेता ज्ञाननुं, आपणा व्यापारनुं, आपणी रमतगमतनुं, ए आदिनुं, सहजमां स्मरण थई शके छे.

आवा सहजस्मरणथी ऊतरतुं ए करतां अधिक आयाससाध्य अने ओछी एकरूपतावाळुं तथा ओछा निश्चयवाळुं स्मरण जाणवुं. आ प्रकारना स्मरणमां, आरंभे दृढ रीते बंधायला पण हवणां हवणांमां जेना उपर लक्ष करवानी कशी जरूर न पडेली एवा आपणा ज्ञाननो समास थाय छे. घणा प्राचीन भूतकालना चमत्कारिक बनावोनुं ज्ञान, शाळामां प्राप्त करेलुं आंक वगेरेनुं ज्ञान, जेनो पाछळथी कांई उपयोग करवामां आवतो नथी, ते आवा स्मरणना उदाहरणरूप छे. ए बधानुं स्मरण बहु आयाससाध्य छे, ने खास प्रसंगेज थई आवे तेवुं छे.

आटले सुधीमां आपणे विस्मरणने पहेले पगथीए आव्या. कांईक विस्मृति छे खरी पण अत्यंत विस्मरण नथी; मनमां भावना छे खरी पण तेनो उद्बोध करवा माटे कोई खास आयासनी अपेक्षा रहे छे; आवुं जे अल्प समय रहे तेवुं विस्मरण ते क्षणिकज छे. केमके अमुक समये श्रम, ऊर्मिविक्षोभ, व्यग्रता, आदि कारणथी थयली मन तथा मगजनी स्थितिने लीधे ते थयलुं होय छे. परंतु भावनानो उद्बोध करवानी शक्तिनो ए भाव आथी वधारे वखत टके तेवो पण होय. उदाहरण. कोई परभाषा आपणे घणां वर्ष पर शीख्या होईए अने तेनो उपयोग करवानो वखत न आव्यो होय, तो ते भाषा वापरवामां जे बहु अडचण नडे छे ते दूर करवा सारुं ए भाषा बोलता लोकोमां एक बे दिवस रहेवुं जोईए.

आवा अल्प विस्मरणथी तेम अर्ध विस्मरणथी एम समजाय छे के, जे अनुभव अने तदनुषंगिक विचारो अमुक समये रस पेदा करी अवधानने रोकता होय, ते तत्काल रसवाळी न होय तेवी भावनाओने प्रतीति बहारज काढी नाखे छे. प्रतीति एटले के स्पष्ट अनुभूत प्रतीतिनो प्रदेश घणो नानो छे, अने ते प्रदेशमां अनेक अनुभव संस्कारादिने अंदर रहेवा बहार जवा माटे विरोध थयांज करे छे. प्रत्यक्ष अने भावना परस्परने आ प्रदेशमांथी दूर करवा जे रीते मथे छे, ने तेमां पण प्रत्यक्ष विशेषे करी भावनाने दूर राखवा जे रीते मथे छे, ते उपरथी, मननी जुदी जुदी स्थितिओनो केवो विरोध, आ प्रदेशमां, चाले छे ते सहजे समजाय एम छे. आनां अनेक उदाहरण वाचनारने सहजे मळे तेम छे. उंघमांथी जागतानी साथेज तेज अने शब्दनां जे प्रत्यक्ष थाय छे तेथी ताजे ताजी एवी निद्रानी भावना प्रतीतिमांथी नीकळी जाय छे. आथी उलटी रीते ज्यारे इंद्रियमात्र शान्त होय छे, ज्यारे आपणे कोई एकान्त स्थानमां बेशी सायंकाले कांई मनन करता होईए छीए त्यारे भावनाओनुं परिबल चाले छे. दृढताथी प्रतीतिमां रह्यां करवाने लीधे एक प्रकारनी भावनाओ पण अन्य प्रकारनी भावनाओने काढी नाखी शके छे. भूतकालमां प्राप्त करेला ज्ञानने वर्तमाननुं ज्ञान छाई नाखे छे, अने भूतज्ञान क्वचित् वर्तमान निर्बल थतां पुनः जागी ऊठे छे—जेमके वृद्धावस्थामां—ते बधांनो खुलासो पण अत्र बतावेला विचारोथी मळी शके तेम छे.

अत्यंत विस्मरणनी स्थितिए त्यारे पहोचायुं कहेवाय के ज्यारे इच्छाना गमे तेवा प्रयासथी, के सूचक साधनोना गमे तेवा प्रयोगथी, संस्कारोद्बोध संभवेज नहि. आपणा संस्कारोमांना घणा खरानी आज दशा थाय छे. थोडीक वार रहीने ते अत्यंत विस्मरणमां पडे छे. तेमनो उद्बोध थवो अशक्यज छे.

जेनो उद्बोध थवो अशक्य छे तेवा संस्कारने केवळ निर्मूळ थयला मानवा के नहीं ए विचार जराक कठिनता भरेलो छे. एम पण कही शकाय के पुनरुद्बोध अशक्य छे एम कहेवुंज अशक्य छे. कोई सविशेष प्रसंगना बळे (जेमके घणा मानसोत्कर्षनी स्थितिमां, कोई असाधारण प्रत्यक्ष अनुभववामां,) पुनरुद्बोध थई पण आवे. परंतु आ वात, जे संस्कारो रस अने अभ्यासथी कोई काळे पण मन उपर सजड चोट्या होय तेमना विषे लागु थई शके छे. पण आगळ कहेवाई गयुं छे तेम आपणा

अनुभवनो बधोए भाग आ रीते मनमां जडातो नथी, एटले एवा अनुभवना संस्कार कोई जातनुं चिरायु भोगवे छे एम मानवामां कांई अर्थ नथी. केटलीक मंदवाडनी स्थितिमां, मगजने कांई नुकसान थवाना सबबथी, अनेक वार अत्यंत विस्मृत जेवा संस्कार पण ताजा थता जणाया छे एवुं अवलोकन उपरथी मानीने सर विल्लिअम हेमिल्टने तो संस्कारनो नाश थाय छे ए वातज स्वीकारी नथी. आपणुं आर्यशास्त्र पण संस्कारनाश स्वीकारतुं नथी, अने संस्कारना संग्रहने आधारेज पुनर्जन्मादिनी व्यवस्था माने छे.

२९. स्मृतिना विभागः—स्मृति एकाकार एकज वस्तु होय एम आपणा व्यवहार उपरथी समजाय छे पण एना जुदा जुदा विभाग छे ए वात लक्षमां लेवानी छे. शब्दस्मृति, दृष्टिस्मृति, आदि अनेक प्रकार स्मृतिना थई शके छे. रागना सुरनुं स्मरण करवुं, के कोई दृश्यमान पदार्थोनुं स्मरण करवुं ए बे स्मरणमां भेद छे. जेटली जेटली जातना संस्कार थई शके छे तेटली जातनां स्मृतिना भंडारमां जुदे जुदां खानां छे. चक्षुद्वारे थता संस्कारनुं खानुं जुदुं छे, श्रोत्रद्वारे थता संस्कारनुं खानुं जुदुं छे. एकनी एकज इंद्रियद्वारे थती स्मृतिना पण विभाग छे. रंगनी स्मृति करतां आकृतिनी स्मृति जुदी छे, गानध्वनि करतां वर्णध्वनिनी स्मृति जुदी छे.

एक प्रकारनी स्मृति करतां अन्य प्रकारनी स्मृति जुदी छे ए वात उपर लक्ष खेंचनार वोकमन लखे छे के "जेटला जेटला भावनाप्रकार छे तेटला तेटला स्मृतिप्रकार छे ..... स्मृतिधर्म सर्वत्र छे. स्मृतिजाति कहीं नथी." जुदा जुदा प्रकार विषे हमणांज चर्चा थशे, पण ते सिवाय व्याधिना संबंधे स्मृतिनो आ धर्म सहजे स्पष्ट थई आवे छे. मगजना अमुक भागमां घा पडवाथी अमुक प्रकारना ज्ञानमां फेरफार पडे छे, जेमके अमुक भागने हानि थतां अमुक भाषानुं ज्ञानज जतुं रहे छे, इत्यादि.

तुरत वेळा व्यक्ति व्यक्तिनामां जे न्यूनाधिकता होई शके छे, ते उपर लक्ष न आपतां सामान्य रीते एम कही शकाय के वैधर्म्यपरीक्षापरत्वे कोई पण इंद्रिय जेम वधारे उत्कर्षवाळी तेम तेद्वारे थती स्मृति

वधारे सारी थाय छे. सर्व करतां चक्षुथी थयलां दर्शनोनुं सारामां सारुं स्मरण रहे छे; एथी ऊतरतुं ऊतरतुं शब्दनुं, स्पर्शनुं, रसनुं, ने गंधनुं. वळी, स्नायुइंद्रिय ते तो सारी उत्कर्ष पामेलीज छे एटले आपणा साक्षात् व्यापारना अनुभवो एकंदरे सारी रीते स्मराय छे. एटलुं लक्षमां राखवुं के स्नायुद्वारे थता अनुभवना संस्कार स्वतःज थयां करे छे, ने ते उपरथीज तेमना संग्रहने मदद मळे छे. कारीगर पोताना हाथनी कारीगरीनुं स्मरण पोताना काम करता हाथना व्यापारनुं दर्शन संभारीने करी शके छे.

३०. पदार्थस्मृति अने शब्दस्मृतिः—बधा संस्कार करतां चक्षुथी प्राप्त करेली दृष्टि बहुज अगत्यनी छे. आगळ बतावेलुं छे तेम चक्षुथी प्राप्त करेलां दर्शन, आपणा आखा ऐंद्रिय अनुभवना भंडाररूप होई, इंद्रियोपलब्ध ज्ञाननो मुख्य भाग पूरो पाडे छे. अने बधी इंद्रियो करतां चक्षुने वैधर्म्यपरीक्षा करवानुं सामर्थ्य विशेष छे एटले बीजी इंद्रियोथी प्राप्त करेली दृष्टि करतां चक्षुथी प्राप्त करेली दृष्टिनुं स्मरण बहु सत्वर थई शके छे. आपणने साधारण रीते जे स्मरण थाय छे तेमां मुख्य तो चक्षुथी प्राप्त करेलां दर्शनोज छे. कोई ओरडानो अंदरनो देखाव, लक्ष्मीविलास महेल, महाराजा सयाजीराव, वगेरे गमे ते पदार्थनी भावना करती वखते तेनो चक्षुर्ग्राह्य आकार आपणे धारीए छीए ने बीजा धर्मोनी तो अस्पष्ट रीते भावनामात्रज करी लईए छीए; कोई पदार्थनुं स्मरण करवुं तेनुं तात्पर्यज आ प्रकारे जोतां एटलुं छे के तेनो बाह्याकार स्मरवो.

चाक्षुषभावना पछी श्रावणभावनाओ आवे छे. शब्दसंज्ञानी अतिशय अगत्यने लीधे आपणने जे स्मरण थाय छे तेमांनो मो'टो भाग ते भावनाओनोज होय छे. शब्द अने अर्थ (पदार्थ) वच्चेनो संबंध

एटलो बधो निकट छे के कोई पण पदार्थनी भावना, तेनी साथेज थोडी घणी स्पष्टताथी तेना नामनी भावना विना थती नथी. एटलुंज नथी पण बुद्धिव्यापारनां उत्तमोत्तम फळ –सामान्य, परामर्श इत्यादि– तेमनां संग्रह अने स्मरण पण भाषा विना बनी शकतां नथी.

छतां एकाद नामनुं स्मरण करवुं एटले ते नामना अर्थ (पदार्थ)नुं पण स्मरण करवुं एवो कांई नियम नथी. अमुक स्थान के अमुक माणसनुं नाम आपणने स्पष्ट रीते सांभरी आवे, पण ते नामबोधित व्यक्तिनुं आपणने स्पष्ट भान न ए होय. शब्दनी साथेज तदर्थनां पण स्पष्ट चित्र स्फुरे ते मळे तो प्रथमे उंडा संस्कार होवानी अथवा स्पष्ट दृष्टि होवानी, ने पछी तेमने ते ते नाम (शब्द) साथे साहचर्य करावनानी अपेक्षा छे.

आगळ एम कह्युं छे के शब्दो तो संज्ञामात्र छे, ने संज्ञीना संबंध विनाना होय तो तेमना उपर लक्ष जतुं नथी. अत्र एम कहेवामां आव्युं के आपणे तदर्थ संस्कार विना पण शब्दना संस्कार संग्रही शकीए. आ बे उक्तिनो विरोध आपातदृष्टिथी जणाशे, पण वास्तविक विरोध कशो नथी. अर्थभिन्न (संज्ञिभिन्न) शब्द (संज्ञा) स्वतः कशो रस ऊपजावता नथी, पण आ स्वाभाविक संबंधमां फेरफार करावनार कारण घणां छे. आपणा जोवामां आवशे के साधारण रीते संज्ञारूपे वपरावाना धर्मने लीधेज शब्दो स्वार्थथी भिन्न पडी जाय छे. एटलुंज नहि पण मंडळीमां रहेनार मनुष्यो-रूपे आपणने शब्दसंग्रह करवानीज मुख्य अपेक्षा रहे छे; ज्ञान पामवुं, वाग्व्यवहार शीखवो इत्यादि तन्निबंधनज छे.

३१. भावनाशक्तिनो विकासः स्मृतिनो आरंभः—स्मृतिपूर्वे प्रत्यक्ष अने दर्शन होवां जोईए. इंद्रियोपलब्ध ज्ञान अमुक विकास सुधी आवे नहि त्यां सुधी भावनानो संभव नथी. पदार्थ विद्यमान होय त्यारे तेने ओळखवुं ए रूपेज संग्रहणशक्ति प्रथमे तो देखाय छे. त्रण मासनुं बाळक पोतानी मातानो के पोताना पितानो चेहेरो थोडाक दिवस संभारी शके छे. भावनाचित्र पेदा थवुं ते तो कांईक समय पछी, दृष्टिओना संग्रह जामे छे, त्यारे थाय छे. तत्काल अनुभवथी जेनुं स्मरण

थाय तेवी भावनाथी आरंभ थाय छे. भोजन, स्नान, चलनवलन, आदिना पोताने रसिक एवा अनुभवोनी भावना स्पष्ट रीते बंधाय छे, पदार्थोमां अधिकाधिक रस लागवा मांडे छे; अवलोकनशक्ति वृद्धि पामे छे, तेम तेम पदार्थोनी भावना बंधाय छे.

जेम जेम अनुभवो पुनः पुनः अभ्यसाता जाय छे अने संस्कारोनो उपचय थतो चाले छे, तेम तेम भावना वधारे स्पष्ट अने साहचर्यग्रथित थती जाय छे, अने भावनानी संख्यामां तेम तेना साहचर्यग्रंथिमां वृद्धि थती चाले छे. शब्दोना अर्थ शीखवानुं काम शब्दना प्रयोग करवा पहेलां केटलाक महीना आगळथी थाय छे, पण तेथी सूचक सामग्रीमां घणो वधारो थई आवे छे. ए पछी माता, अविद्यमान पदार्थो विषे पण तेमना नाममात्रथकी, बाळक आगळ वात करी शके छे. संयुक्त अनुभवोनो अभ्यास थते थते भावनानी आखी परंपराओ लक्षमां आववा लागे छे. विद्यमान अनुभव उपरथी तेना अव्यवहित सहकारी उपर बाळकनुं मन जई शके छे एटलुंज नहि, पण सहकारीना सहकारी उपर ने तेना सहकारी उपर, एम पण उत्तरोत्तर जई शके छे. दोढ वर्षनुं बाळक बहार फरी ने पाछुं आवतां एज प्रकारे अनेक अनुभवनी परंपरा स्मरीने कही शके छे.

बाळकने जे अनुभव थाय छे ते पुनः पुनः तेना तेज अनुभवनी परंपरारूप नथी. नित्य नवा नवा अनुभव बाळकने थयांज करे छे, ने तेना ज्ञाननी मर्यादा वधती चाले छे. आवी रीते वृद्धि थवानां कारण बाळकने वस्तु आदिमां जे उत्तरोत्तर अधिक रस पडे छे ते, अने तेना संसर्गोमां निरंतर जे फेरफार थाय छे ते, ए बे छे. आ प्रकारे नवी नवी सामग्रीनो स्मृतिभंडारमां संग्रह थतो चाले छे. केटलेक भागे आवी नवी सामग्री जूनीने दबावी दे छे; गया अठवाडीआना क्षणिक संस्कार

आ अठवाडीआना क्षणिक संस्कारथी ढंकाई जाय छे. परंतु स्मृतिशक्तिनी वृद्धि थई तो त्यारेज कहेवाय के ज्यारे संग्रहणशक्तिनी वृद्धि थाय. बाळकने आवी शक्ति आवती जाय तेनुं लिंग एज छे के नवा संस्कारो जूना संस्कारने ओछा ओछा उन्मूल करी शके छे अने चिरकाल रहे तेवो संग्रह वृद्धि पामतो चाले छे.

३२. स्मृति शी रीते सुधरे छेः— आवो विकासक्रम, आवी ज्ञानभंडारनी वृद्धि, तेनो अर्थज ए छे के ग्रहण करीने संस्कारोने संग्रही राखवानुं बळ आवेलुं छे. आम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के आटले आव्या पछी संग्रहणनुं गमे ते कार्य सरलताथी थई शके छे, अने गमे तेवी कठिन वातो पण स्मरी राखवामां आवे छे.

संग्रहण अने स्मरण ए बे शक्तिनो त्रण क्रमे विचार करी शकाय. प्रथमे संस्कारो बहु सरलताथी प्राप्त करी संगृही शकाय छे. कोई पण संस्कार मनमां ठसाववाने ओछा ओछा अवधाननी अपेक्षा रहे छे. अथवा बीजी रीते कहीए तो अमुक अवधानथी वधारे संग्रहण एटले के वधारे मिश्र प्रकारना संस्कारोनुं संग्रहण थई शके छे. आने संग्रहणनी सरलता कही शकाय. बीजी वात ए छे के संस्कारो वधारे वधारे समय सुधी टकता चाले छे. संग्रहणक्रमसमये अमुक अवधान प्रयोजवाथी संग्रहण प्रथम करतां अधिक समय टके तेवुं नीपजे छे. आ क्रमने स्मृतिसामर्थ्य एवुं नाम आपी शकाय. त्रीजो क्रम ए छे के आ प्रकारना संग्रहणने लीधे, जे स्मरण थाय छे ते वधारे स्पष्ट अने पूर्ण थाय छे. एटले के संस्कारोनो उद्बोध प्रथम करतां ओछा आयासथी, अने वधारे पूर्ण रूपे थई शके छे. आखुं ए भावनाचित्र सर्वांशे सुरेख नीपजे छे एटलुंज नहि पण तत्सदृश अन्यथकी ते स्पष्ट रीते भिन्न पण समजाय छे.

सारी स्मृतिशक्तिना जे त्रण गुण अत्र बताव्या ते परस्परथी अत्यंत व्यावृत्त छे एम न जाणवुं. स्मृतिना एककमपरत्वे जोतां सारो विकास थाय, अन्य क्रममां तेवो न पण थाय. संग्रहण सरलतानो उत्तमोत्तम विकास होय, अने मन तुरत तुरत नवी नवी वातोने पकडी लई थोडी थोडी वार संग्रहतुं होय. आम होय ते तो मात्र संग्रहण-शक्तिनो क्षणिक विकास कहेवाय. एज रीते स्मृतिसामर्थ्यनो विकास थाय, पण संस्कारोद्बोधनुं सामर्थ्य थोडुंज होय. जुदां जुदां माणसमां आ बधा प्रकार जुदे जुदे रूपे दीठामां आवे छे.

एकंदरे संग्रहणशक्तिनो विकास थवो एनो आधार मगजनो स्वतः विकास थतो चाले तेना उपर रहे छे. ज्ञानमात्रनी प्राप्तिमां, मगजनी अंदर अमुक फेरफारो के नवा विकार थाय छे, एम जणाय छे. मगजने आ प्रकारे नवा विकार के फेरफार पामवानी जे संस्कारयोग्यता ते जीवनना आरंभमां, घणी वृद्धि पामेली होय छे. सर्व प्रकारना संस्कारो, त्रण चार वर्षना बाळकना मगज उपर जेटली दृढताथी पडे ते करतां दश वर्षना बाळकना मगज उपर वधारे दृढताथी पडे छे. एनुं कारण मगजनी संस्कारयोग्यता एज छे. केटलांक बाळकोमां मो'टी उमरना माणस जेवी स्मृतिशक्ति होय छे. तेनो खुलासो पण आटला उपरथी थई आवे छे. साधारण रीते एम कहेवाय छे के नवा नवा संस्कार संगृहवानी शक्ति तारुण्यना समयमां घणामां घणी उत्कृष्ट होय छे; ए वातने शरीरगत विकृतिओ साथे अवश्य संबंध छे; केम-के तारुण्य पछी मगजनी स्थिति नियत अने संस्कारी न शकाय तेवीज थई रहे छे.

जेम स्मृतिशक्ति सर्वथी प्रथमे विकास पामे छे तेम उंमर वधतां ते ह्रास पण सर्वथी पहेली पामे छे. नवा नवा संग्रह करवानी शक्तिनो अभाव, जेमके नवां ओळखाणनां नाम याद न रहेवा मांडे तेवी स्मृतिनी खामी, एज बतावे छे के मान-सिक विकासनो परमोत्कर्ष हवे आवी रह्यो छे. स्मृतिना ह्रासना पण तेना विकासनी पेठे स्पष्ट क्रम होई शके छे. जे दुर्बलमां दुर्बल साहचर्यबद्ध संस्कार हशे (जेमके माणसोनां नाम वगेरे) ते प्रथमे विलय पामशे. मनोविभ्रममां पण एज क्रम जणाय छे.

मगजनी संस्कारयोग्यता उपर स्मृतिशक्तिनो आधार छे ए वात मान्य करतां पण एटलुं तो सहजे समजाय छे के स्मृतिनो सुधारो थवानो मुख्य आधार अभ्यास उपर छे. मगजनी संस्कारयोग्यतामां जे फेर पडे छे तेथी एकंदरे संग्रहणशक्तिनी मर्यादा बंधाय छे, पण संग्रहण केटलुं थई शके एनो निर्णय तो (आ मर्यादानी अंदर) अभ्यास उपरथीज करी शकाय.

एक रीते जोईए तो ज्ञानमात्र बीजा ज्ञाननो मार्ग, साहचर्यव्या-पारनो संधि उपजावी आपीने, वधारे सरळ करी आपे छे. पचीश वर्षनो कोई भाषाज्ञानमां प्रवीण साक्षर, बार के पंदर वर्षना बाळक करतां मगजनी ओछी संस्कारयोग्यतावाळो छतां, तेना करतां वधारे सहेला-ईथी नवी भाषानुं ज्ञान प्राप्त करी ले छे. नवी ज्ञानप्राप्तिने, जेटले अंशे ते नवाने जूना साथे मेळवी लेवा रूप छे तेटले अंशे, जूनी प्राप्तिथी संपूर्ण मदद मळे छे. अभ्यासथी स्मृति सुधरे छे एम कहेवानुं तात्पर्य आ अत्र कह्युं ते छे. एज रीते संस्कारयोग्यतानो समय वीत्या छतां पण स्मृतिनो विकास चालतो रहे छे.

आवी सामान्य रीतेज नहि पण सविशेष रीते पण स्मृतिनो सुधारो अभ्यासथी थाय छे. बुद्धिव्यापारनी टेव पडवाथी नवा ज्ञाननुं संग्र-हण करवामां सरलता, अने तेना संस्कारनो उद्बोध करवामां त्वरा, प्राप्त थाय छे. आ बे वात प्राप्त थाय छे एम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के शीखवानी वात उपर अवधान सारी रीते एकत्र करी, शीखेली वातो साथे तेमां केटलुं मळतापणुं छे ते शोधी लेवुं; एम नवी वातनो अभ्यास करवो; अने छेवट तेनुं स्मरण करवा वखत आवे त्यारे अवधान एकत्र करी शकवानी तैयारी राखवी. जेम आवी टेव वधारे सुश्लिष्ट हशे तेम नवा नवा ज्ञानने संगृही चिरकाल सुधी राखी शकवानी शक्ति वधारे सारी रहेशे.

३२. स्मृतिना प्रकारः सामान्य अने विशेषः—माणसे माणसे स्मृतिशक्तिनुं जेवुं तारतम्य दीठामां आवे छे तेवुं बीजी कोई शक्तिनुं भाग्येज आवतुं होय. सामान्य स्मृतिशक्तिवाळा माणसथी, ते शीघ्रकवि गट्टूजी जेवानी अद्भुत स्मृतिशक्तिना दृष्टान्त सुधीमां, जे अंतर रहे छे ते घणो मो'टो छे. एम मानवाने कारण छे के केटलाक माणसो एकंदरे स्मृतिनी बाबतमांज बीजा करतां अधिक होय छे, एटले के स्मृति-सामर्थ्य अने संस्कारोद्बोध ए बे तेमनामां विशेष होय छे.

सामान्य रीते एम दीठामां आवे छे के स्मृति स्मृति वच्चे जे तफावत होय छे ते अमुक दिशाएज होय छे, अमुक संस्कारो परत्वेज होय छे. उदाहरण. एक माणसने एकंदर श्रावणसंस्कार के चाक्षुषसंस्कार माटे सारुं स्मृतिसामर्थ्य होय छे; अथवा चाक्षुष के श्रावण संस्कारना कोई प्रकार—रंग, गान, आदि—माटे सारुं सामर्थ्य होय छे; अथवा कोईने अमुक वर्गना पदार्थोनुंज सारुं स्मरण रहे छे—मो'डानुं, नाकनुं, इत्यादिनुं. आम होवाथीज जेने चित्रस्मृति, गानस्मृति, स्थानस्मृति, आदि स्मृतिशक्ति कहेवाय छे तेनो संभव थई आवे छे. आनां उदाहरणमां केटलाक उत्तम चित्रकारो मात्र स्मृति उपरथीज कोई पुरुषादिनुं चित्र करी आपे छे; केटलाक कविओ सांभळे तेटलुं एकज वखत सांभळतां याद राखी ले छे; केटलाक पंडित गट्टूजी जेवा शतावधानीओ जुदी जुदी भाषाना अनेक शब्द गमे ते क्रमे सांभळ्या पछी पण क्रमवार अने आखा वाक्य-रूपे कही शके छे; ए आदि छे.

सामान्य रीते स्मृतिमां जे तफावतो पडे छे तेनुं निदान पण, घणे भागे, स्मृतिशक्तिना आ विशेष फेरफार छे तेज छे; खास करी शब्द-संग्रहनी शक्तिनुं तारतम्य तेज छे. आपणे कही आव्या छीए तेम शब्दनुं स्मरण करवुं ए तदर्थना स्मरणनी बराबर नथी, तथापि अर्थ-

(पदार्थ)स्मरणनुं काम शब्दस्मरणथी अत्यंत जुदे जुदुं बनी शकवुं अशक्य छे. एम छे एटले संस्कारनो उद्बोध करवानी सारी शक्तिनो सर्वत्र उत्तमोत्तम निर्वाह उत्तम शब्दस्मरणशक्तिथी थाय छे.

माणस माणसमां स्मृतिनां तारतम्य अनंत छे; तेमना विभाग के वर्ग करी बतावबा अशक्य छे. तारतम्यना सामान्य रूपथीज विचार आरंभीए. स्मृतिना जे क्रम आगळ बताव्या छे तेमांनो कोई एक के वधारे सर्व करतां आगळ पडतो होय, अने ए रीतेज अन्य स्मृतिप्रकारथी अमुक स्मृतिप्रकार भिन्न पडतो होय. केटलांक बालक संग्रहणपरत्वे सारां छतां स्मृतिसामर्थ्यमां मंद होय छे. तेमना मनमां संस्कार थोडीकवार रहे छे. केटलांकनुं स्मृतिसामर्थ्य सारुं छतां तेमनी संस्कारोद्बोधनी शक्ति सारी होती नथी. आवा सामान्य तारतम्यना विचार उपरथी विशेष तारतम्यना विचार उपर जईए तो एम जणाय छे के अमुक अमुक संस्कार सारी रीते पुनः स्मरी शकाय एटलीज वातें नहि, पण संस्कारोने अमुक रीते योजीने संगृहवा ए रीतीपरत्वे पण माणस माणसना मनमां तारतम्य होय छे, केटलांक माणस दृश्यमान पदार्थोने स्थान-संबंधथी, बीजां करतां सारी रीते योजी शके छे; जे एम नथी करी शकतां ते बनावोनी भावनाओने सारी रीते योजी शके छे. प्रथम प्रकारना माणसोने स्थानस्मृति—भूगोलनुं स्मरण राखवानी शक्ति—सारी होय छे; बीजा प्रकारनांने इतिवृत्त—इतिहास—स्मरवानी सारी शक्ति होय छे. आ तारतम्य साथे निकट संबंध राखनार बीजुं तारतम्य अमुक बात स्मरीने पाठे करवानी के ज्ञानने मनमां गोठवी राखवानी रीति उपरथी थई आवे छे. केटलांक माणसो पदार्थसंभवादिने दिक्कालादि परत्वे संयोजी राखे छे, केटलांक सादृश्य, कार्यकारण आदि स्वरूपथी संयोजी राखे छे. एज रीते जुदां जुदां माणस शब्दो पाठ करवामां पण जुदी जुदी रीति वापरे छे. आ बधा विचार उपरथीज केन्टे स्मृतिना त्रण विभाग मान्या छेः (१) यांत्रिक स्मृति; एमां शब्दो अमुक परंपरारूपे गोठवाय छे. (२) सयुक्तिक स्मृति; एमां शब्दवोधित अर्थ, विचार, आदिनी भावना-श्रेणिनी साहाय्य लेवामां आवे छे. (३) सविमर्श स्मृतिः एमां बुद्धि पण सहाय थाय छे, अने विचारसंभवादिना संबंधोनो पण स्मरणव्यापारमां उपयोग कराय छे.

३३. तारतम्यनां कारणः—साहजिक तारतम्यने लीधे, अथवा गतजीवनमां थयला अभ्यासना तारतम्यने लीधे, आवां तारतम्य थई आवे छे. एकंदरे स्मृतिसामर्थ्यनां तारतम्य तो साहजिक होय छे. प्रथ-

मथीज एक बाळक, बीजा करतां वधारे सारी रीते सर्व प्रकारना संस्कार संगृही स्थापी शके छे. आवां तारतम्यने मगज सुधांत जे जे शरीरावयवने स्मृतिकार्य साथे संबंध छे, तेना विकासनी न्यूनाधिकता साथे अवश्य संबंध छे. अमुक अमुक इंद्रियना विकासनी न्यूनाधिकताने लीधे थतां विशेष तारतम्य पण लक्षमां लेवां जेवां छे. गानसंस्कारो पामवायोग्य उत्तम श्रोत्रेन्द्रियवाळुं बाळक तेवी उत्तमताहीन इंद्रियवाळा बाळक करतां, गान संस्कारोनो संग्रह सारी रीते करी शकशे. आनां कारण बे छेः (१) आवी उत्तम शक्तिने लीधे ध्वनिनी परीक्षा करवानी उत्तम शक्ति होय छे, (अने एवो नियम छे के परीक्षा करवानी शक्तिना प्रमाणमां संस्कारनो संग्रह थई शके छे); (२) आवी उत्तम शक्तिने लीधे ए प्रकारना संस्कार पेदा करनार अनुभवमां बहु रस लागे छे. जेने गानने माटे कान छे तेवा बाळकने गाननी खांचखुचो जाणवामां खास आनंद लागे छे.

बीजी पासा एम पण छे के स्मृतिशक्तिनां तारतम्यनो आधार स्थितिना तारतम्य उपर, अभ्यासना तारतम्य उपर, के दीक्षाना तारतम्य उपर रहे छे. प्रत्येक माणसना मगजनी संस्कारयोग्यताथी तेनी स्मृतिशक्ति यद्यपि मर्यादित रहे छे, तथापि तेटली मर्यादानी अंदर पण अभ्यासथकी स्मृतिने बहु सुधारी शकाय छे. एकंदरे बोलतां एम कही शकाय के जे दीक्षित साक्षरो छे तेमनी स्मृतिशक्ति निरक्षरो करतां सारी होय छे.

छतां पण कोई खास दिशाए स्मृतिशक्तिने सुधारवी वधारवी होय त्यां अभ्यासनी असर बहु सारी रीते जणाई आवे छे. अमुक प्रकारना संस्कारो उपर मननुं निरंतर वळण थयां करवाथी ते संस्कारोनो संग्रह बहु सबल रीते थवा मांडे छे. आ प्रकारे प्रत्येक माणसनुं मन

तेने जेमां मुख्य रस लागतो होय अने जे उपर वधारे अवधान रहेतुं होय तेनो संग्रह सारी रीते करी शके छे. इजनेर, भाषाशास्त्री, गायक आदि गमे ते धंधामां पडेला माणसनी स्मृति, ते ते धंधाना व्यापारसंबंधे बहु बलवती थई आवे छे.

छेवट एटलुं ऊमेरवुं जोईए के सामान्य अने विशेष स्मृतिने पण केटलोक संबंध छे. सर्वनी संग्रह करवानी शक्ति अमुक रीते मर्यादितज होय छे, अमुक दिशाए स्मृतिशक्तिनो विकास थवाथी अन्य दिशाए तेवो विकास थवो बंध पडे छे, तथापि कोई एकाद दिशाए स्मृतिनो अभ्यास थतो होय तो तेथी पण एकंदरे स्मृतिशक्तिना सामर्थ्यमां वधारो थया विना रहेतो नथी. एनुं कारण एम छे के अमुक अमुक टेवो (अवधाननी एकत्रता, पुनः पुनः अभ्यास, सामग्रीनी योजना) बंधावाथीज स्मृतिशक्तिनी वृद्धि थाय छे; ने आवी टेवो नवा प्रकारना विषय उपर स्मृतिनो व्यापार थाय त्यां पण सर्वथा काम आवे छे.

३५. स्मृतिशक्तिनी केळवणीः—स्मृतिनी केळवणी ए बुद्धिनी आखी केळवणीनो विषय न कहेवाय, तथापि केळवणीनो मुख्य विभाग तो कहेवायज. ज्ञान पामवानो अर्थज ए छे के ज्ञेयनुं स्मरण राखवुं. स्पष्ट भावनाओ अने भावनाश्रेणिओ ज्यारे स्मृतिना भंडारमां भरपूर भराय त्यारे बुद्धिना जे उत्तमोत्तम व्यापार छे ते चालवानो अवकाश थाय—केन्ट कहे छे तेम " बुद्धिनो मुख्य सहाय स्मृति छे. "

माता अथवा ऊछेरनार बाळकने जुदा जुदा पदार्थोनां नाम दई ओळखाण करावता मांडे त्यांथी तेनी स्मृतिनी केळवणीनो आरंभ थयो गणाय. स्मृतीनी पद्धतिपुरस्सर केळवणी तो, प्रथमे, अवलोकन साथेज साधवी जोईए, शब्दोना अर्थ, ते ते शब्दने जुदा जुदा पदार्थ साथे योजीने, शब्द कहेवानी साथेज ते नामनो पदार्थ बतावीने सम-

जावया जोईए. अने ते पछी शब्दमात्रवडे ज जोयला पदार्थोनी भावना करवानी कसरत बाळक पासे करावयी जोईए.

आ प्रकारे पोतानी आंखे प्रत्यक्ष जोईने प्राप्त करेलुं केटलुंक ज्ञान भेगुं थाय, एटले परोक्षे, एटले के शब्दद्वारे कही बतावीने ज्ञान आपवाथी स्मृतिने कसवा मांडवी जोईए. आ प्रकारे शब्दज्ञान प्राप्त करवा सारुं बाळपणे शाळामां जे अभ्यासनो समय छे ते घणो अनुकूळ मनाय छे. आगळ जतां जेटलो श्रम पडे ते करतां आ अवस्थामां, भूगोळ, इतिहास के भाषानी मुख्य मुख्य वातो शीखवामां ओछो श्रम पडे छे. एटलाज माटे आ अवस्थाने "संस्कारयोग्य" अवस्था कहेवाय छे.

शिक्षके स्मृतिने केळववानी वातना बे भाग थई शके छेः (१) बाळकने संग्रहणनी जे शक्ति होय ते खीलववी, अर्थात् ज्ञानना भंडोळमां ऊमेरो करवो; अने (२) बाळकनी पासे तेनुं शीखेलुं पुनः स्मरावयुं. उभये वातपरत्वे योग्य केळवणी आपवा माटे संग्रहण शी रीते थाय छे ते तथा अमुक समये केटलो स्मृतिविकास थई आव्यो छे ते, बे वात बराबर लक्षमां राखवी जोईए.

(१) आ कार्यमां प्रथम नियम ए पाळवानो छे के बाळकने तेनी शक्तिनो प्रकर्ष समजीने कामे लगाडवुं. कोई पण वात गोखीने मो'डे करवी ए बहु कठिन काम छे, अने ए कामथी मगज उपर अने शरीर-शक्ति उपर घणी असर थया विना रहेती नथी, माटे बाळक ताजे ताजुं अने शक्तिथी परिपूर्ण होय तेवा समय उपरज ए काम राखवुं जोईए. वळी तेनी साथे एम पण करवुं जोईए के ए रीते साधवाना काममां सारामां सारो रस पेदा थई अवधान जाग्रत् रह्यां करे. प्राप्त करवाना ज्ञान संबंधे बाळकनुं मन अति आनंदनी अनुकूल स्थितिमां रहे तेम शिक्षके करवुं. क्वचित् प्रतिकूळ अनुभव पण करावयो पडे. जहांगीर

अने अलमगीरने एकज गणी लेवानी भूल कोई बाळक करे तो तेथी तेनो जे उपहास थाय तेज तेने भविष्यमां तेवी भूल करतां अटकाववाने बस थाय छे. आटलुंज नहि पण शीखवानी के शिखेली वात वारंवार बाळकना मन आगळ आण्यां करवी जोईए, के संस्कार वधारे उंडो अने दृढ थाय. विषयने लखी काढवो ए रीति, कोई नवी वात मनमां सारी रीते ठसाववामां बहु सारी थई पडे छे. मो'डे करेली वात मनमां वारंवार रम्यां करे एवी रीते बाळक ते वातने संभार्यां जाय एम शिक्षके युक्ति करवी जोईए, के तेथी अभ्यासनो परिपूर्ण लाभ बाळकनी स्मृतिने मळी शके. छेवट शिक्षके शीखवेला विषयना जुदा जुदा भागनो संबंध, अने आखा ए विषयनो आगळ थई गयला विषयो साथेनो संबंध, बराबर समजाववो जोईए, के ए प्रकारे साहचर्यनुं संयोजक बळ बाळकना ज्ञान-संग्रहने बराबर योजी आपवामां काम आवे. प्लासीनी लडाईनी वात कही बतावतां ते लडाईना जुदा जुदा विभागनो संबंध बतावयो जोईए, अने आ लडाई तथा बीजी तेवी जाणीती लडाईओ वच्चे सादृश्य अने विरोधनो जे संबंध होय ते पण समजाववो जोईए.

शिक्षणपद्धतिमां आज सुधीमां जे अगत्यना सुधारा वधारा थई चूकेला छे ते पछी, शब्दोने गोखी मरडी मारवा करतां पदार्थोनुं स्पष्ट ओळखाण करवानी वधारे आवश्यकता छे एम कहेवानी जरूर नथी. अर्वाचीन शिक्षणपद्धतिनो मुख्य सिद्धान्तज ए छे के ज्ञानमात्र दृश्यमान पदार्थो विषेनुं होवुं जोईए, अने भाषा छे ते तो एवा ज्ञानने प्राप्त करवानुं अने स्मरी राखवानुं एक साधनमात्रज छे. इंद्रियोने योग्य कसरत मळवी जोईए, अने अवलोकननी शक्ति सारी रीते केळवावी जोईए एम आगळ कहेलुं छे तेनुं तात्पर्यज ए छे के खरुं ज्ञान ते पदार्थनुं ज्ञान छे तेज छे, शब्दोनुं ज्ञान नहि. ए वात पण कहेवामां आवेली छे के स्मृतिशक्तिनी

केळवणी आरंभे अने घणा भाग सुधी अवलोकनशक्तिनी केळवणीना भेगीज चालवी जोईए एटलुंज नहि, पण ज्यारे परोक्ष ज्ञान अथवा पुस्तकोथी प्राप्त थतुं ज्ञान प्राप्त करवा जेटलुं वय थाय त्यारे, एटलुं बहु आवश्यक छे के शब्दथी बोधित जे पदार्थ तेनी स्पष्ट भावना करी शकाय एवुं सामर्थ्य आवेलुं होवुं जोईए. इतिहास, भूगोळ के कोई सुंदर काव्य, तेनो विषय आवी भावनाद्वारे स्पष्ट रीते ज्यारे गृहाय त्यारेज ते विषय आवड्यो कहेवाय.

प्राचीन समयमां स्मृतिने सहाय थाय तेवी अनेक युक्तिओ रचवामां आवती. आ प्रकारे स्मृतिने सहाय थवानी वात, ज्ञान पामवानो मुख्य हेतु शब्दभंडार शीखवो एज छे एवा आ समयमां विमत थयेला विचार उपरथी उद्भवेली होवी जोईए. आ विचार प्रवर्ततो हतो त्यारे विद्या प्राप्त करवानुं काम बहु शुष्क हतुं अने शब्दभंडारो गोखी गोखीने विद्यार्थीओ थाकी जता; एटलाज माटे, श्रम ओछो करवा सारुं अनेक युक्तिओ रचाती. अर्वाचीन समयमां ज्ञाननो एवो हेतु छे ए मत अनादरने पाम्युं छे एटले स्मृतिने सहाय थाय तेवी प्राचीन युक्तिओनी बहु गणना थती नथी. श्लोकबद्धकारिकाओ, सूत्रो, आदि जे योजनाओ थयली छे तेथकी मनने कोई नियमपरंपरा प्राप्त करवामां मदद थाय छे खरी; तो पण पदार्थ पोतेज परस्परने संबंधे समजी शकाय ते प्रमाणे बतावबा शीखववामां ज्यारे आवता होय त्यारे तो शीखेला विचारो वच्चेनो जे मूलगत संबंध तेज ज्ञानना आधाररूपे रहेवो जोईए—अर्थात् पदार्थे पदार्थना संबंधोनुं ज्ञान थई शके छे, त्यां शब्दो मो'डे करवानुं काम कशी जरूरनुं नथी.*

* सूत्रादिनी आ रीते अर्वाचीन समयमां अवगणना थई छे खरी तथापि पाणिनीय सूत्र जेवां व्याकरणनां सूत्रो विना भाषाना विषयनुं ज्ञान "पदार्थे पदार्थना संबंध" समजाववाथी केम थाय, बाळकोने आरंभमां शी रीते थाय, ए समजवुं कठिन के अ-

सर्व काळे सर्वथा उपयोगी थई शके एवा स्मृतिने उत्तेजन आपवाना नियमो कही शकाय एम नथी, तथापि स्मृतिनी व्यवस्थामां कांईक चतुराई करी शकाय एमां नवाई नथी. अवधान एकत्र करवाथी, तथा अभ्यासथी, स्मृति दृढ करवानी टेव, आ चतुराईना पेटामां समाय छे एटलुंज नहि, पण ज्ञेय विषयनी यथायोग्य परीक्षा करी योजना करवी ए वातनो पण समास तेमां थाय छे. ज्ञेय विषयमां केटलुं उपयोगी छे ने केटलुं निरुपयोगी छे ए वातनी परीक्षा करवाथी स्मृतिव्यापारनो श्रम घणो ओछो थाय छे. बाळकोने आवी परीक्षा करवानी टेव पाडवी जोईए. वळी आवी परीक्षाथी प्राप्त करेला ज्ञानने यथायोग्य स्थाने गोठववानी योजनाथी पण स्मृतिव्यापारनो श्रम ओछो थाय छे. घरमां जेम खींटीओ होय छे—ज्यां लुगडां भरववाथी अव्यवस्था अने श्रम ओछो थाय छे—तेम मनमां पण अमुक विचारोने भरववानी अमुक खींटीओ होय छे. तेवी खींटीओ शोधी लेवी ए पण स्मृतिव्यापारनो श्रम ओछो करवानुं मुख्य साधन छे. आ योजना करी आपवामां व्यक्ति व्यक्तिनी शक्तिनुं तारतम्य लक्षमां लेवुं जोईए. केटलांक बाळको दृश्यमान चित्रोद्वारे विचारोने सारा स्मरी शके छे. केटलांक श्रोत्रलभ्य शब्दद्वारे सारां स्मरी शके छे. बाळको पोतानी मेळेज पोताने स्मरवानी वातो शी रीते सारामां सारी रीते स्मराशे तेनो मार्ग करतां चाले छे. शिक्षकोए बाळकना मननी आ साहजिक वृत्ति समजी राखी, तेमना मानसिक श्रममां जेम न्यूनता थाय तेम करवानी योजना करता जवी जोईए.

(२) नवी वातो ने नवां सत्य मनमां भरता जवां एटलेज थयुं एम न जाणवुं. जे शीखायलुं होय ते ताजुं ने ताजुं रहे, एटले के शीखेली

शक्य छे. पाणिनीय सूत्र तेमनां लाघव अने पूर्णता माटे तथा स्मृतिने, एक घणा गूढ अने आवश्यक विषयमां उत्तमोत्तम सहाय होवाने माटे जगत्ना पंडितोमां यथार्थ मानने पामेलां छे.

वात ज्यारे जोईए त्यारे तुरत स्मराय एवी स्मृति तीव्र रहे, एम करवुं, ए शिक्षकनो मुख्य उद्देश होवो जोईए. आ उद्देश, वारंवार स्मरण करवानो अभ्यास पडे तोज सिद्ध थाय. आ वात साधवामां पण योग्य समय जोईने आरंभ करवानी आवश्यकता छे. स्मरण करवानो अर्थ ए छे के मन पोते पोतानाज उपर एकाग्र थाय; एने आपणे सामान्य रीते "संभारवुं*" एवुं नाम आपीए छीए—एमां बाह्यावलोकन करतां अवधानने अधिक प्रयास पडे छे. आवो संभारवानो अभ्यास थवाथी मनने, भूतवार्ता उपर तुरत तुरत जई शकवानुं सामर्थ्य आवी जाय छे.

शिक्षणकलामां मुख्य चतुराई तो बाळकोने, तेमनी स्मरण करवानी शक्ति अभ्यासथी केळवाय एवा प्रश्नो, शीखेली वातो विषे, पूछवा एमां रहेली छे. पुनः पुनः तेनी ते वात मनमां आणवाथीज शब्दज्ञाननो अर्थ ताजे ताजो रह्यां जाय छे. पदार्थोनुं ज्ञान बाळकने केवुं थयुं छे ते जोवा सारुं, शिक्षके, बाळको पासे ते जे शीख्यां होय ते तेमनाज शब्दोथी कहेवरावबुं. आवी चतुराईथी प्रश्नो पूछतां शिक्षकना समजवामां आवी जशे, के शीखेला विषयनी भावनाओ स्पष्ट अने सुरेख रही शके ते प्रकारे बाळकने विषयनुं ज्ञान थयुं छे के नहि एटलुंज नहि, पण एम करवाथी ज्ञानविषयना विभाग अने ते विभागना परस्पर संबंध पण स्पष्ट रीते जाणवामां आवी शकशे. ज्ञान प्राप्त करावती वखते ए बधी वातो बतावी शकाती नथी, वारंवार स्मरण करवाने प्रसंगे तेवी बधी वातो बराबर नक्की थई जाय छे†.

* संभारवुं—सांभरवुं—वेरायला दाणा भेगा करी सांभरीने ढगलो बनावाय ते; मनमां पडेला संस्कारोने सांभरी भेगा करी अमुक रूपे संभारवा एम शब्दगत तात्पर्य छे.

† स्मृतिशक्तिना ज्ञानप्राप्ति (संग्रहण) अने स्मरण बे व्यापार जुदा वर्णव्या पण ते व्यापार साथेज चाले छे एम कहेवानी अपेक्षा नथी. नवा ज्ञानने जूना ज्ञान साथे मेळवी लेवानुं जे निरंतर बने छे तेमां उभये व्यापारनुं साहचर्य प्रसिद्ध छे.

शिक्षणना प्रकारमात्रथी, थोडे घणे अंशे पण, स्मृतिने कसरत थया विना रहेती नथी. उंचा प्रकारनुं गणित शीखनार, ए शास्त्रनां सिद्धान्त अने साधनो स्मरतो चाले छे, ने ते स्मरण घणे भागे भाषाद्वारे के बीजां दृश्यमान संज्ञादिथी बनी आवे छे. परंतु स्मृतिने अमुक विषयथी कसोटी मळे छे एम कहेवामां आथी वधारे तात्पर्य समाय छे. एवा विषयोमां अमुक विशेष वात साथे, साक्षात् दृश्य पदार्थ साथे, संबंध राखनारा, अने बुद्धिनो जेमां झाझो खप न पडे तेवा विषयोनी गणना करवानो आपणो उद्देश छे. एवा विषयोमां पदार्थविज्ञाननो मूळ सादो वर्णनात्मक विभाग, भूगोळ, इतिहास, भाषा, अने साहित्यना सादा सादा विषयो, ए बधां गणी शकाय. यद्यपि हालना समयमां गणितने पण बाळकनी सामान्य भावना करवानी ने विचार करवानी शक्तिने केळवनारुं गणवामां आवे छे, तथापि एमां शब्दस्मृतिनो बहु उपयोग आवे छे.

विशेष अने साक्षात् दृश्य एवा पदार्थो विषे गमे तेटलुं ज्ञान प्राप्त करवुं एनुं नाम खरेखरी दीक्षा (केळवणी) कहेवाय नहि. संपूर्ण ज्ञान (दीक्षा) नो अर्थ तो ए छे के विशेष अने साक्षात् दृश्य ने सामान्यरूपे गृहवुं, अनेक विशेष वार्तोने एक सामान्य रूपे समजवी. एम पण त्यारे फलित थाय छे के स्मृतिशक्तिनो उत्कर्ष जोईए ते करतां पण वधारे थवानुं भय छे. विशेष विशेष वार्तानुं अमुक ज्ञान, भावनाओनो अमुक भंडोळ, बुद्धिना उत्तम व्यापारो थता पूर्वे आवश्यक छे; पण शिक्षको आवा ज्ञान अने आवा भंडोळ मात्रनेज वधारवा उपर लक्ष आप्यां करे तो मननी जे बीजी (स्मृति करतां बीजी) उत्तमोत्तम शक्तिओ छे तेनो उपयोग थवानो वखतज आववानो नहि. आम करवाथी वृद्धि एटले मनना वैपुल्यमां वधारो थाय खरो, पण विकास थाय नहि.

बाळकोमां साहजिक रीतेज जे तारतम्य होय छे तेने लीधे स्मृतिश-

क्तिनो उत्कर्ष जोईए ते करतां वधारे थई जवानुं भय घणुं रहे छे. ए वात आवश्यक पण कही शकाय के प्रत्येक बाळकने भूगोल अने इतिहास जेवा विषयनुं अमुक ज्ञान जोईए; पण ए वात लगार आवश्यक के इष्ट नथी के निर्माल्य स्मृतिशक्तिवाळा बाळकना मन उपर घणाक परभाषाना अभ्यासनो बोजो गोठवी देवो. अमुक बाळकनी दीक्षामां केटली शक्ति अने केटला समयनो व्यय स्मृति केळववामांज करवो ए शिक्षणशास्त्रनो घणो सूक्ष्म अने आवश्यक विचार छे.

प्रकरण ८.

उपचायक कल्पना—प्रतिभा.

१. संस्कारोद्बोध अने प्रतिभाः—स्मृति छे ते भावनारूपे वस्तुसंभवादिना चित्रने उपजाववानी शक्ति छे, अने ए पण संकल्प अथवा कल्पनानो एक प्रकार छे. स्मृतिमां जे चित्र जणाय छे ते कोई भूत अनुभवनुं यथायोग्य अनुकरणज छे; एटले के स्मृतिसंबंधे कल्पना संस्कारोद्बोधरूपीज छे. पण जेने सामान्य रीते कल्पना एवुं नाम आपवामां आवे छे तेमां आ करतां कांईक अधिक होय छे. आपणने अपरिचित एवो कोई भाविवृत्तान्त आपणे कल्पीए अथवा कोईए आपेला वर्णन उपरथी कोई स्थाननी कल्पना करीए, त्यारे आपणे आपणा भूत अनुभवनी पार जईए छीए एतो स्पष्टज छे. स्मृतिथी जे चित्रो ऊभां थाय तेमां कोई प्रकारनो फेरफार करी आपणे तेमने फरीथी गोठवीए छीए, कल्पना कांईक नवीकरण करे छे, कांईक विकार कांईक वधारो, उपचय, करीने, नवी सृष्टि रचे छे. आ व्यापारना फलरूप जे चित्र ते, स्मृतिजन्य मूळ चित्रनी अपेक्षाए, गौण चित्र अथवा प्रतिभा कहेवाय.

छतां ऐटलुं कहेवुं जोईए के जेने आपणे संस्कारोद्बोधरूप कल्पना कहीए छीए तेमां पण अज्ञात एवो कोई विपर्यय तो आवीज जाय छे. कोई पण वृत्तान्तपरंपराने ते जे क्रमे थई होय तेज क्रमे आपणे क्वचित्ज स्मरीए छीए, ज्यारे वृत्तान्त घणो दूर होय त्यारे तेना संस्कारमां बहु फेरफारो थई जाय छे; केटलाक भाग जता रहे छे, केटलाकमां फेरफार थाय छे, इत्यादि. आ विषे हवणांज वधारे विचार थशे. पण आ बधी वात उपर लक्ष करावववानुं तात्पर्य ए छे के संस्कारोद्बोधरूप कल्पना अने वैकारिक कल्पना वच्चे वास्तविक जोतां कशो स्पष्ट व्यावर्तक धर्म नथी.

२. कल्पनाव्यापारः—कल्पना जुदे जुदे प्रकारे व्यापार करे छे अने स्मृतिशक्तिथी जे संगृहायलुं होय तेमां अनेक फेरफार ऊपजावे

छे. कोई वार केटलाक भाग मूकीज दे छे, घर, वृक्ष, आदि पदार्थनुं चित्र तेना संबंध अने संसर्ग विनाज ऊपजावी ले छे; के कोई बनावनी आखी सांकळमांना केटलाक, अंकोडाज पडता मूकीने आगळ वधे छे. कोई पदार्थने कदथी नानो थई गयलो कल्पी शकाय छे, अथवा तेनी समग्र आकृतिनो एकाद अंश ऊणो छे एम पण कल्पी शकाय छे. कल्पनाथी करीने पदार्थने अन्य संसर्गोथी जुदा पाडी मनमां धारी शकाय छे ए उपरांत पदार्थोने अन्य संसर्गादि साथे मिश्र पण करी शकाय छे. बाळकनुं मन कोई पदार्थना स्वरूपमां नवा ऊमेरा करे छे, अथवा तेनुं कद होय ते करतां घणुं मो'टुं धारे छे, अने अमुक बनावनी सांकळमां कोई नवा नवा अंकोडा वच्चे घाली दे छे. आ रीते जुदा करवानी ने वधारो करवानी जे शक्ति कल्पनामां रहेली छे तेने लीधे, ते, विसदृश अनुभवोना कटका कटका लईने एक आखुं चित्र पण घडी काढे छे. कल्पनानो जे उपचायक व्यापार तेनुं स्वरूप आ प्रकारनुं छे.

आ लक्षण उपरथी आपणे सहजे जोई शकीए छीए के कल्पनामां केवळ कविकल्पना—जेने प्रतिभा कहे छे ते—एटले के असत् पदार्थ संभवादिनां चित्र उपजाववां, ते करतां अधिक वातनो पण समास छे. आ कल्पनाने ज्ञान साथे समवायसंबंध छे. क्षणे क्षणे शुं थशे तेनो प्रथमथी विचार बांधवो, साक्षात् दर्शन करता पूर्वे नवा नवा पदार्थोनी भावना ऊठाववी, तेमां बाळकनी कल्पनाज निरंतर बधुं साधी आपे छे. बीजां पासेथी पदार्थो विषे ज्ञान प्राप्त करवामां कल्पना आथी पण वधारे कसाय छे. बाळकनी माता तेने जेटली जेटली वातो कहे छे तेटली तेटलीने आधारे पोताना भूत अवलोकनथी प्राप्त करेलां चित्रमांथी ते नवां चित्र ऊपजावतुं रहे छे. शीखवुं एनो अर्थज ए छे के स्मृति तेम कल्पना उभयनो उपयोग करवो. वळी सामा माणसनां विचार अने वृत्तिओ

समजवामां पण कल्पनाज काम आवे छे. कोईना मननी वात जाणवी एटले आपणा मननी भूत स्थितिओनुं स्मरण करीने मनमां एक नवी मानसिक स्थितिनी कल्पना करी लेवी, एज तात्पर्य छे. छेवट कल्पनाना जीवभूत जे उपचयशक्ति ते, कार्यनां नवां नवां संयोजन करी लेवामां उपयोगी थाय छे. एवा तेना व्यापारना फळने शोध एवुं नाम आपवामां आवे छे. बाळक जे नवुं वाक्य बोले छे, जे नवा नवा करपादादिना व्यापार करे छे, ते, आगळ करेला व्यापारनी कल्पनाओनो नवे रूपे उपचय करवामांथीज संभवे छे.

आगळ कह्युं छे तेम स्मृतिचित्रो कोई यंत्रवत् क्रमथी, सहसाज, विकृति पामतां चाले छे. संसर्गना भेद सहित तेना ते पदार्थोनो वारेवारे अनुभव थाय तो मूळ चित्रो करतां बीजां उपचित्रो उद्भवे छे, ने तेमां जुदां जुदां मूळ चित्रना अवयवोनो उपचय थाय छे. मूळथी असंबद्ध एवां चित्रनुं एक काळे स्मरण थवाथी पण आवुं संयोजन थई आवे छे. आ वातनुं दृष्टान्त स्वप्नानुभवमां, तेम जाग्रत्-स्वप्ननी दशामां, वारंवार मळी आवे छे. ए अनुभव अने ए दशामां मनना कोई विज्ञात श्रम विनाज एकाएक अनेक चित्र मनमां तरी आवे छे. बाळकनी कल्पनानी रमतो कशा पण मानसिक श्रमथी सिद्ध थाय छे एम छे नहि, पण सहसा, एमने एमज, थई आवे छे. कोई पण जातनो मनोविक्षोभ थई आवतां चित्रनी संख्यामां वधारो करीने, तथा तेमने सारां स्पष्ट बनावीने, कल्पना आवा निरंकुश व्यापारने अनुकूळ थई शके छे.

पण जे खरो अगत्यनो उपचय छे ते तो विज्ञात एवा मानसिक श्रमथी अने इच्छाना व्यापारथी सिद्ध थाय छे. कोई इष्टार्थप्रति धीमे धीमे वधारो थतो जाय छे, इष्ट फळ मनना सुविज्ञात श्रमथी सिद्ध

थतुं आवे छे. उदाहरण. कवि पद्धतिपुरःसरज पोतानुं कार्य आरंभे छे, कोई देखावनी कल्पना ऊठाववा मांडे छे, ने धीमे धीमे पोताने संतोष पमाडे तेवा चित्र उपर आवी रहे छे. आ प्रकारे नियमित रीते जे उपचय थाय छे तेज ज्ञानसंबंधे खरा उपयोगनो छे.

जेने साधारण रीते संभारवुं कहीए छीए तेमां आवा विज्ञात कल्पनाव्यापारनुं कांईक बीज होय छे. पोते तुरतज जोई आव्यो होय एवुं स्थान, के पोते नजरे दीठो होय एवो बनाव, तेनुं वर्णन कोई बुद्धिमान् माणस, ते वृत्तान्तना चित्रनो उपचय कर्या विना, कोई रीते तेनी गोठवण कर्या विना, करी शकशे नहि. केवळ निरक्षर लोकोज संस्कारोने होय तेवाने तेवा स्मरी काढे छे. साधारण माणस कोई एक बनाववुं तेना गमे तेवा निर्जीव सहकारी समेत पण होय तेवुं वर्णन आपी जाय छे. एथी उलटी रीते कोई साक्षर माणस, पोते न जाणतो होय तेवी रीते पण, केटलुंक मूकी दे छे, केटलुंक कहेवा योग्य गणी चुंटी ले छे, ने बधाने फरी थकी गोठवी काढे छे.

३. उपचयव्यापारनुं पृथक्करणः—(१) चित्रोनुं स्मरण. उपचयना आ व्यापारना बे क्रम मानी शकाय. प्रथम क्रम ए छे के मूळ चित्रोनुं स्मरण करवुं, एटले के साहचर्यना नियमो प्रमाणे स्मृतिगत चित्रोने स्मरवां. कवि, पोते कल्पेली सृष्टिना देखाव अने बनाव कल्पवामां, पोताना अनुभवोनुं स्मरण करवा मांडे छे, केमके ए अनुभवनां चित्रोमांथी नवां चित्रो ऊपजाववानां साधन नीकळी आवे छे. आम छे एटले एटलुं तो सहजे समजाय छे के उपचयव्यापारना उत्कर्षनो आधार स्मरणबलनी मर्यादा उपर रहे छे. स्मृतिथकी भूत अनुभवनां चित्रोनो उदय न थतो होय तो कोई नवो देखाव के नवो बनाव कल्पी शकाय नहि. बाळक पोते जोयला तळाव के सरोवरोना चित्रने संभारी शके नहि तो महासमुद्रना जळनी कल्पना करी शके नहि. शोधनी बाबतमां पण एनुं एज जाणवुं. नवा उपचय करीने शोध करी शकाय ते पूर्वे मूळ व्यापारोनुं यथार्थ ग्रहण स्मरण थवुं जोईए.

(२) नवा चित्रनी उत्पत्ति. साहचर्यबलथकी स्मृतिगत चित्रो आ रीते खडां थाय ते पछी तेमने आधारे नवां चित्र घडाय छे. नवां चित्रमां आ मूळ चित्रनी भावनाज सामग्रीरूपे वपराय छे. जे खरो उपचयव्यापार ते आज छे. जूना सामानथी नवुं मकान ऊभुं करवाना जेवो आ व्यापार छे. केटलांक नकामां गणी काढी नाखवामां आवे छे, केटलांक राखवामां आवे छे, ने एम मन तेमना उपर लाग्युं रहे छे. केटलीक सामग्री तो थोडी छोलछाल पछीज काम आवी शके छे. एम करतां छेवटे सारां गणायलां साधनोमांथी नवुं चित्र ऊभुं करवामां आवे छे.

आवो इच्छापूर्वक जे व्यापर ते छेवटना इष्टफलनी भावनाथी नियमायलो रहे छे अने इष्टफलने शुं उपयोगी छे ने शुं उपयोगी नथी एवी औचित्यभावना वारंवार आखा व्यापारने असर करे छे. आ औचित्यभावनाना स्वरूप उपरज उपचयव्यापारना फळना उत्कर्षनो आधार छे. कविना मनमां काव्य अथवा प्रतिभाचित्र शाने कहेवुं तेनी जेवी भावना होय, ते भावना सिद्ध करवामां औचित्यपुरःसर चालवानी तेनी जेवी शक्ति होय तेना प्रमाणमां तेनी कृति उत्तम के कनिष्ठ थाय छे.

आ प्रकारे जे नियामक भावना ते, अने अमुक फळनी इच्छा ते, ए बेनो संबंध एटलो बधो निकट छे के तेमने जुदे जुदा समजवा एम कहेवानी जरूर पडे छे. कोईकने अमुक फळ—जेवुं के कोई यांत्रिक सुधारो प्राप्त करवानी उग्र इच्छा होय, पण ते शा प्रकारे थाय एवी नियामक भावनानुं स्वरूप तेना लक्षमां न होय. माटे यद्यपि इच्छाबल ए उपचयव्यापारमां मुख्य वात छे खरी तथापि औचित्यभावना करतां ते गौण छे. नियामक एवी आ औचित्यभावना ते स्पष्ट अने दृढ बनावी ने इष्टफल साधवानी इच्छानुं बळ आखा व्यापारने सफल करवामां सहाय थाय छे एमां कांई संशय नथी.

इष्टफल अने नियामक औचित्यभावना ए बे जुदे जुदे प्रसंगे जुदां जुदां होय छे. प्रवासवर्णननुं पुस्तक के कोई काव्य वाचतां आपणे आखी सांकळमां बंध बेसे तेवां चित्र ऊपजावी लेवा यत्न करीए छीए.

यथायोग्य चित्र आपणे हाथ आव्यां एम पण आपणे समजी शकीए छीए, केमके एम थाय त्यारे जे वाचीए ते आपणे बराबर समजता होईए छीए. वळी कोई फळ साधवा माटे जुदा जुदा व्यापारने एकत्र करवामां पण ते फळनी भावना एज नियामक थाय छे. अमुक वस्तु मेळववा माटे बाळक शब्दो भेगा करी बोले छे ते यथार्थ छे एम तेने त्यारे समजाय छे के ज्यारे तेनी मागणी एटला बोलवा उपरथी पूरी पाडवामां आवे छे.

अत्र जे उपचयव्यापारनुं वर्णन करी बताव्युं ते व्यापार जणाय छे ते करतां वधारे गुंचवणवाळो छे. घणीक वार क्रम आवो होय छे. मनमां कोईक इच्छा ऊठे छे– अमक चीज पेदा करवाना यंत्रमां अमुक फेरफार करीने ते चीज सस्ती बनाववानी इच्छा थाय छे. आ उपरथी इष्टार्थ सिद्ध करवानां अनेकानेक साधननी भावनाओ मनमां आववा लागे छे, आवाने आवा अन्य प्रसंगोए जे साधननो उपयोग थयो होय तेनी भावना थाय छे, इत्यादि. केवळ यंत्रवत् व्यापार पामी आवी भावनाओ स्वतःज एकाद समग्ररूपे गोठवाई जाय छे, अने एकाद मानसिक चित्र खडुं करी आपे छे. जे इष्टार्थ छे तेनी सर्वथी पूर्वभावना आवी थाय छे. आ खोखामां पछीथी पूर्ति करवामां आवे छे, अने काढी नाखवुं, राखी लेवुं, फरी गोठववुं, एम करतां करतां आखुं पुष्ट चित्र थाय छे. आ आखा व्यापारमां अति अज्ञात एवी पण कोईएक भावना मूळथीज मनमां संताई रहेली होय छे एतो एटला उपरथीज स्पष्ट छे के ज्यारे आवुं चित्र तैयार थाय छे त्यारे तेज आपणुं इष्ट चित्र छे एम आपणे, ते भावनाने आधारेज, जाणी शकीए छीए.

ई. संग्रह अने उपचय करनार कल्पनाः— उपचयव्यापार, बे विसदृश रूपमांना एकरूपे जणाय छे. आ बे रूपनो विचार करवो आवश्यक छे. स्पष्ट एवा बाह्य सूचनथीज क्वचित् व्यापारनी दिशा बतावी देवामां आवे छे. उदाहरण. एकाद काव्य वाचतां तद्गत पदार्थनुं चित्र कल्पवामां वाचनारनुं मन कविए योजेली कल्पनाथी, अने ते कल्पना जे शब्दोथी जणावेली छे तेनाथी, नियमाय छे. आनुं नाम संग्रह करनार कल्पना कहेवाय. एनो व्यापार बहु सादो छे. पण कविनी जे

कल्पनाए ते चित्र योज्युं छे, ते कल्पनाने तो चालवानुं कोई धोरण न हतुं, एटले ए ठेकाणे जे उपचय नीपज्यो छे ते काव्यना वाचकना मननी कल्पनाना व्यापार करतां उत्तम प्रकारनो छे, केमके एमां काढी नाखवुं, राखवुं, योजवुं, ए व्यापारो आवेला छे अने ते बधा व्यापार अमुक औचित्यभावनाए नियमायला छे. एटलाज माटे आने आपणे साधारण रीते खरी कल्पना अथवा प्रतिभा कहिये छीए.

६. कल्पनानी मर्यादाः— कल्पनाव्यापारने अनुभवनी मर्यादा छे. अनुभवनी भागफोड करवी, पुनः विरचना करवी, एटलुंज कल्पनाथी बने छे. केवल नवीन एवी कृति कल्पनाथी बनतीज नथी. विशालमां विशाल प्रतिभावाळाथी पण नवो रंग कल्पी कढायलो नथी. आटलुंज नथी पण वळी अनुभवने विखेरी भागी नाखवो, अने पुनः विरचना करवी, ए बे व्यापारने पण मर्यादा छे. अनुभवमां कोई बे पदार्थो निरंतर साहचर्यवाळा होय त्यारे तेमने जुदा जुदा कल्पवा ए बनी शकतुं नथी. पदार्थना बाह्याकारने अत्यंत रंगवगरनो कल्पवो ए अशक्य छे.

बे वस्तुनुं जेम साहचर्य वधारे निश्चित अने नियत तेम तेमनी जुदी कल्पना थवी वधारे कठिन. जंगम पदार्थ–जेवांके माणस आदि–तेमने आसपासना संसर्गोथी भिन्न कल्पवां ए सरळ वात छे, पण स्थावर पदार्थोने विषे तेम थवुं कठिन पडे छे. आथी उलटी रीते ज्यां अनुभवथी एम जणाय छे के कोई बे वस्तु वच्चे विरोध छे त्यां ते बेनी भेगी कल्पना करवी कठिन पडे छे. पाणी घन स्थितिमां (बरफ रूपे) होई शके ए कल्पनाज जूना जमानाना लोकोने आवी शकती नथी. पृथ्वीना गोळनी सामी बाजुए, आपणां पगनां तळीआंनी सामां तेमना पगनां तळीआं आव्या छतां पडी न जाय, एवा लोकोनी कल्पना करवी आ-

पणने बहु कठिन पडे छे. आपणा अनुभवमां जेटलुं नियतपणुं होय तेटलीज ते अनुभवना जुदा जुदा भागने विखेरी नाखवामां ने पुनः योजवामां कठिनता पडे छे. ए उपरथीज समजी शकाशे के आपणे परिमाणना फेरफारो के रूपना फेरफारोनी कल्पना करी शकीए छीए—पचास हाथ उंचो राक्षस के सोनानो मेरु कल्पी शकीए छीए—ते वास्तविक छे; केमके परिमाण अने रूपना विषयमां आपणो अनुभव नियत रूपवाळो नथी.

पदार्थोनां चित्र कल्पवानी अशक्यता, अने आपणे जेवुं चित्र कल्पीए तेवुं होय के नहि ए समजवानो अशक्यता, ए बे वच्चे फेर छे ते वात वाचनारे सारी रीते लक्षमां राखवी. 'समजवुं' एटला शब्दमां घणी वार आ उभये अर्थनो समास थई जाय छे अने कोई कल्पना समजवाने अशक्य होय तेने मनमां ऊठवाने पण अशक्य मानवानी भूल थाय छे. गमे तेवी विलक्षण अने बुद्धिमां न उतरे तेवी कल्पना कल्पवामां कांई कठिनता नथी—सूर्य पश्चिममां ऊगे ए कल्पवामां सहज छे; पण ते प्रकारे पश्चिम अने सूर्य एवा दृश्यमान पदार्थनो प्रातःकाले योग थवो अशक्य छे, एटले ते वात समजवी अशक्य छे. कल्पनाने कशुं अशक्य नथी, मात्र काळ अने दिक्नीज मर्यादा छे, बीजी नथी. एकज काळे एक ज दिग्विभागमां बे पदार्थ रही शके एवी कल्पना नथी थई शकती; स्वप्नानुभवमां, आटला विना, बधी जातनी कल्पनाओ देखाय ज छे.

६. **उपचयना प्रकारः**—ए तो कहेलुं ज छे के कल्पनानो जे जीवनभूत व्यापार छे ते अनेक मनोव्यापारमां काम आवे छे. एना त्रण विभाग करी शकाय. (१) पदार्थो विषेना ज्ञानने उपकारक उपचय. (२) अमुक काम केम करवुं, साधन अने साध्यनी योग्यता शी रीते आणवी, एवा ज्ञानने उपकारक उपचय. (३) उर्मिओने संतोषनार उपचय. प्रथम प्रकारनी कल्पनाने ज्ञानकल्पना अथवा स्वरूपकल्पना कहेवाय, बीजीने व्यावहारिक कल्पना अथवा शोध कहेवाय, त्रीजीने सौंदर्यकल्पना अथवा प्रतिभा कहेवाय.

[१] **स्वरूपकल्पनाः**—एतो स्पष्टज छे के जातिअनुभव अने जाते करेला अवलोकननी मर्यादा पार जई ज्ञान प्राप्त करवामां कल्पनानुंज

काम पडे छे. बीजा पासेथी वस्तु, पदार्थ, संभव, आदि विषे जे ज्ञान प्राप्त करवुं तेमां, तेमज आगळ आगळथी पोतानी मेळे केटलीक नवीज वातो शोधी लेवी तेमां, आ वात स्पष्ट समजाय छे. प्रथमनो जे व्यापार ते संग्रह करनार कल्पनानो छे, द्वितीय ते उपचय करनार कल्पनानो छे.

अनुभवना संस्कारोनी, स्मरण करी, योग्यायोग्यनुं हानोपादान करी पुनः योजना करवी, ए तो ज्ञानप्राप्तिना प्रत्येक व्यापारमां प्रत्यक्ष थाय छे. जेने साधारण रीते "शीखवुं" कहीए छीए ते गमे तो मुखपाठथी होय के पुस्तको द्वारे होय, तथापि मात्र स्मृतिनुंज ते कार्य छे एम नथी; एमां कल्पनानो व्यापार पण भळे छे. सांभळवामां आवता के वंचाता शब्दोनो अर्थ प्रतीत थाय तेटला माटे जुदा जुदा पदार्थोनां के वर्णवेला बनावोनां, स्पष्ट चित्र बांधवानी अवश्यकता छे. एकाद रण विषेना वर्णनने समजवानो, बाळक, 'रेती', 'मेदान' एवा शब्दोथी जे पोताना अनुभवोनुं स्मरण थाय ते द्वारे, आरंभ करे छे. आवा शब्दोथी सूचवातां चित्रोमा सहज फेरफार करीने इष्ट एवा नवा चित्रने बाळक प्राप्त करी शके छे.

लक्षमां राखवुं जोईए के सर्व ज्ञान प्राप्त करवामां तेम अत्र पण साधर्म्यवैधर्म्यना परीक्षणथीज ज्ञानप्राप्ति थती चाले छे. जे जे नवी वात बाळकना जाणवामां आवे तेने ते साधर्म्यद्वारे पोताना भूत अनुभवमां मेळवी ले छे, अने तेनी साथेज तेनुं वैधर्म्य जोई भूतवृत्तथी वर्तमान वृत्त केटलुं भिन्न छे ते पण लक्षमां राखे छे. स्पष्ट अने सुरेख चित्र बंधावानो आधार आ व्यापार सारी रीते चाले तेना उपर रहे छे. कोई वर्णन सांभळती वखते बाळको, पोते जे चित्र बांधे छे तेमां जोईए ते करतां अधिक वातो दाखल करी दे छे; शब्दथी सूचवातां चित्रना सहका-

रीने पण चित्रमां भेळवी ले छे. आम थवाथी एटलुं जणाय छे के योग्या-योग्यना हानोपादाननी क्रिया अपूर्ण छे.

कल्पनाना आयासनी सिद्धि उपरज कोई पण वर्णनने समजी शकवानो आधार रहे छे. उदाहरण. दरीयाई खडकोनुं वर्णन वाचती वखते बाळक पथराना महोटा ढगलानो विचार बांधे, पण ते पाणीनी नीचे होय छे अने देखाता नथी एवो विचार कल्पी न शके तो वहाणोने ए खडकोथी जे हानि छे तेनो तेने चीतार आवी शके नहि. स्पष्ट कल्पना अने स्पष्ट विचार वचे जे निकट संबंध छे तेनुं आ सारुं उदाहरण छे.

प्रत्यक्षसंभवपदार्थादि साथे संबंध राखनार इतिहास अने भूगोळ जेवा विषयोनो अभ्यास करवामां कल्पनानो उपयोग छे एटलुं ज नहि पण शास्त्रीय अभ्यासमां पण तेनो उपयोग केटलेक अंशे थाय छे. शास्त्रनो उद्देशज सामान्य निर्णयो उपर जवानो होय छे. पण मनने सामान्य निर्णयो ग्रहवानुं सामर्थ्य आवे ते पूर्वे विशेष विचारो, व्यक्ति-व्यक्तिनां चित्र बराबर ग्रहतां आवडवां जोईए. विशेष व्यक्तिनां स्पष्ट चित्रोनो आधार दर्शन उपर रहे छे, पण ते संबंध नित्यसंबंध नथी. ग्रहोपग्रहनी गति; रुधिरनुं संक्रमण; ए आदिनुं ग्रहण, दर्शन योग्य पदार्थो साथेना तेमना सादृश्य उपरथी कल्पना करीनेज, करवुं पडे छे. इंद्रियग्राह्य नहि एवा पदार्थ अने व्यापार जेवाके तेजस् अने उष्मा, रसायनिक विक्रियामां परमाणुनां संयोगवियोग, तेनी तो मनमां कल्पनाज करवी पडे छे, एटले एवी वातो समजवामां तो कल्पनाज मुख्य व्यापार पामे छे एम कही शकाय. ज्यारे व्यक्तिओ विषे स्पष्ट चित्रो प्राप्त थई रहे त्यारे सामान्य विचार अने तर्क करवानो मार्ग थई शके.

आ प्रकारनो जे कल्पनाव्यापार ते सरळ के सहज होवा करतां घणोज कठिन अने दुर्घट छे. भुलो न जवुं जाईए के भाषा पोतेज, स्वभावथकी, सामान्यरूप अने भावरूप छे. आम होवाथी एवुं बने छे के शब्दप्रयोगमात्रमां कोई प्रकारे व्यक्तिनो आक्षेप थया विना रहेतो *नथी.

आम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के कोई सामान्य (जातिवाचक) नाम समजाववामां अमुक धर्मोथी तेने विशिष्ट करवुं पडे छे त्यारेज तदुक्त पदार्थ स्पष्ट समजाय छे. कोई इतिहास लखनार अमुक राजानुं वर्णन आपतां एक पछी एक तेना अनेक धर्म गणावीने तेनुं स्पष्ट ओळखाण करावे छे. हवे पाछुं जुओ तो आ धर्म पोते पण प्रत्येक भावरूपज छे. 'सुंदर' 'उंचो' आदि शब्दो भाववाचकज छे अने अनेक व्यक्तिने लगाडी शकाय तेवा छे. अमुक पदार्थने ओळखवानुं तो एथीज बने छे के आवा अनेक धर्म तेज पदार्थमां सामानाधिकरण्य पामे छे. कोई नवा प्राणी के वृक्षने अमुक पारिभाषिक रीते लक्षण करीने ओळखाववामां भाववाचक ने व्यक्तिवाचक बनाववानो आ व्यापार केटलो कठिन छे ए सहज समजाय छे. अने ए करतां पण अधिक कठिनता जे अतीन्द्रिय एवां परमाण्वादि तेनुं वर्णन करवामां समजाई आवे छे. ज्ञानचक्षुथी आवां वर्णनोनुं प्रत्यक्ष दर्शन पामवामां कल्पनानो घणो बलवान् व्यापार अपेक्षित छे.

सिद्ध रीते स्थापित जे वस्तुगति ते उपरथी, नवीन ज्ञाननो शोध करवो ए, धीरजपूर्वक अवलोकन अने तर्कनुं काम छे. छतां ए काममां पण शास्त्रीय कल्पनाथी घणी साहाय्य थाय छे. पृच्छक बुद्धि, जिज्ञासा, ते निरंतर ज्ञातथी अज्ञात उपरज दोड्यां करे छे, अने जेनो अर्थ सुविज्ञात तर्कद्वारे स्पष्ट न बतावी शकाय एवी अनेक कल्पनाओ

* सरखावो मीमांसा अने वेदांतनो सिद्धान्त के शब्दो जातिबोधकज छे अने व्यक्ति तो आक्षेपथकीज बोधाय छे अर्थात् प्राप्त थाय छे.

कर्यां जाय छे. आ प्रकारे अवलोकित वस्तुगतिनुं पण भान प्राप्त करवुं तेने पदार्थोना स्वरूपनी कल्पना, अथवा आंतर ज्ञान, कहेवाय छे. बाळक पोतानां रमकडांनी बांधणी विषेनां चित्र कल्पे छे, वृक्षांकुरादि शी रीते पुष्ट थाय छे तेनां चित्र योजे छे, तेमां आ शक्तिनोज प्रभाव प्रत्यक्ष छे.

आ रीते कल्पना अनवलोकित वस्तुगतिनुं भान पामवा यत्न करे छे एटलुंज नहि, पण तेवी वस्तुगतिनुं याथार्थ्य समजवा जेवा ऊह पण योज्यां करे छे. कोई शास्त्रीय ऊह यथार्थ रीते स्थापित थाय तो सामान्य निर्णयरूपे, सर्व मान्य सिद्धान्तरूपे मनाय छे. परंतु त्यां सुधी आववुं ए काम उपचायक कल्पनाना प्रयासथीज सिद्ध थाय छे. एटले के भूत अवलोकन उपरथी, मन, नवां तत्त्वोनी केवी असर थशे तेनी कल्पना करी, आवा ऊहमांथी, नियमो नीपजावे छे.

शास्त्रीय पृच्छकबुद्धि तेनी साथे कल्पनाने आवो निकट संबंध छे. उभये परस्परोपकारक छे. जिज्ञासाने लीधे अनवलोकित अथवा अज्ञात वस्तुगतिनी कल्पना करवानुं उत्तेजन थाय छे; अने उत्तेजित कल्पनानी चपलताथी ऊह करवानी प्रवृत्ति वधे छे, अने ते ऊहने प्रयोगथी साचो खोटो तपासवानी इच्छा तीव्र थती जाय छे. ए वात खरी छे के विवेचकबुद्धि कल्पना उपर कबजो न राखे तो कल्पनामात्रज प्रयोगने स्थाने पण दाखल थई जाय; परंतु विवेचकबुद्धि अने सुविचारथी नियमित कल्पना शोधमात्रनो उत्तमोत्तम सहाय छे.

ज्ञानना प्रदेशमां बाह्यविश्वनोज नहि पण वृत्ति अने बुद्धिना आंतर व्यापारोनो पण समास छे. ए आंतर ज्ञानमां पण स्मृति उपरांत, उपचायककल्पना बहु उपयोगनी थाय छे. आपणने आपणा पोता विषे जे (आत्म-) ज्ञान छे ते, आपणी अनुभूत वृत्ति अने कृतिना स्मरणमात्रजथी थयलुं नथी, पण अमुक प्रकारना प्रसंगे आपणे केवी वृत्ति राखीशुं, केवा विचार करीशुं, केम वर्तीशुं, ए बधानी कल्पनाथी थयलुं छे. भविष्यनो विचार बांधवामां आपणे, नवा नवा प्रसंगोथी आपणी ऊर्मिओ उपर अने आपणी इच्छा उपर शी असर थशे तेनी कल्पनाओज करीए छीए.

(२) **व्यावहारिक कल्पना**:—केटलाक व्यावहारिक ज्ञानमां पण अमुक उपचयव्यापार काम लागे छे. अमुक काम शी रीते करवां, वात करवी, लुगडां पहेरवां, लखवुं, चित्र करवां, इत्यादि काम शी रीते करवां, ए जाणवामां उपचयव्यापार काम लागे छे. नवी नवी जरूर प्रमाणे, ने नवा नवा प्रसंगानुसार, बाळक पोताना व्यापारमां फेरफार करे छे, निरुपयोगी मूकी दे छे, कामनुं होय ते राखी रहे छे, नवी नवी योजनाथी व्यापार करे छे. स्वाभाविक रीतेज बाळकनामां पुष्कल वेगबल होय छे, एटले तेथी सहसाज नवा नवा प्रयोग तेना शरीरथी थयां जाय छे. बाळकना साहजिक वेगनो मो'टो भाग आ रीते व्यावहारिक कल्पनाने केई दिशाए दोरवी तेमांज खपी जाय छे.

आवुं जे व्यावहारिक व्यापार करवानुं नवुं ज्ञान ते सामाना व्यापार जोया उपरथी थाय छे. बीजांने जे जातना व्यापार करतां देखे छे ते जातना व्यापार बाळकने पण तेनी अनुकरणवृत्ति करावे छे. बाळकोनी रमतमां आ वात स्पष्ट जणाय छेः रमतमात्र मो'टा माणसना व्यापारनुं अनुकरणज होय छे. व्यावहारिक कल्पनानुं आ संग्रह करनारुं स्वरूप थयुं. नीशाळमां थतो गायन, लेखन, आदि अभ्यास ते पण एमांज समाय छे. स्वर अने हाथना सादा व्यापार जे शीखवामां आव्या होय तेमना उपरथी कोई नवा नमुना प्रमाणे नवा व्यापार करतां बाळक शीखे छे.

नवा व्यापार माटेनां संयोजन क्वचित् एकी वखते जोईए तेवां थई रहे छे. गावामां बाळक प्रथम जे प्रयत्न करे छे, ते व्यर्थप्रायज होय छे. चित्र अने लेखन उपरना प्रयत्न पण तेवाज होय छे. पण घणीक वार एम होय छे के पूर्वे जे व्यापार सहभूत होय तेमने, नवा व्यापार प्राप्त करवामां, जुदा पाडवा पडे छे. एटले आम करवानी आवश्यकताने लीधे प्रयासनी कठिनतामां वधारो थाय छे. आपणे जोई शकीशुं के नवा राग गावामां बाळकने अप्रासंगिक साहचर्योथी घणी अडचण थई आवे छे. आम होवाथीज, पुनः पुनः अभ्यास करतां जे इष्ट हेतु होय ते सिद्ध थवा वखत आवे छे. आवा नवा व्यापारनुं सारुं ज्ञान थवानो आधार, स्नायुने गति पामवा योग्य चपलतानी स्थितिमां मूळथी राख्या होय ते उपर, अने मननी एकाग्रता उपर तथा धीरज उपर, रहेलो छे.

अनुकरण अने उपदेशथी, आ प्रकारे, व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त थाय छे ए खरी वात छे, पण पोतानी बुद्धिथी अने शोधथी पण ते प्राप्त न थई शके एम नथी. बाळको घणाक नवीन नवीन व्यापारसंयोग पोतानी मेळे शोधी काढे छे. हाथे अने बीजी रीते प्रयोगो करी जोवाथी तेमना साहजिक वेगने शान्ति अने आनंद प्राप्त थाय छे. अमुक कार्य संपादन करवाथी, अमुक विघ्न परास्त करवाथी, जे आनंद थाय छे ते व्यावहारिक संयोजन करवामां जे श्रम पडे छे तेनो सारो बदलो वाळी आपे छे. आवी जे चंचलता तेने जिज्ञासा साथे पण निकट संबंध छे, पदार्थोना बंधारणने जोवुं जाणवुं ए इच्छा साथे निकट संबंध छे. आ रीते व्यावहारिक शोध, नवी नवी वातो ने नवा नवा सिद्धान्त शोधवामां काम लागे छे. पदार्थो विषेनुं घणुंक ज्ञान आ रीतेज, प्रयोगद्वारेज, प्राप्त थाय छे; एटले के पोते जाते पदार्थोने जुदा करी, योग्यायोग्यनुं हानोपादान करी, पुनः संयोजन करी, प्राप्त करी लेवाय छे.

(३) **सौंदर्यकल्पना-प्रतिभाः**—सौंदर्यकल्पना अथवा कवि-प्रतिभा ते ज्ञानप्राप्तिने सहायकारक नथी—पछी ते ज्ञान गमे तो पदार्थस्वरूप विषेनुं मानो, के अमुक कार्य केम साधवां ते व्यवहारविषेनुं मानो. प्रातिभासिक कल्पनानो हेतु तो तत्काल आनंद ऊपजाववो एटलोज छे. संग्रह करनार अने उपचय करनार उभये प्रकारना कल्पना-स्वरूप विषे आनी आज वात समजवी. कोई वात कहेतुं होय तेने बाळक सांभळे, के नवी वात पोतानी मेळे योजी काढे, पण ते बन्ने प्रसंगे नवां नवां चित्रोना मानसिक दर्शनथी तेने जे आनंद मळे छे ते माटेज ते व्यापृत थाय छे. प्राकृत लोक जेने कल्पना कहे छे ते आ प्रकारनी कल्पनानेज कहे छे.

सौंदर्यकल्पना सर्वथी जुदी पडे छे तेनुं कारण ए छे के तेमां वृत्ति अथवा ऊर्मिनुं प्राधान्य होय छे. ए वृत्ति अथवा ऊर्मिने लीधे कल्पना तादृशता गृहे छे, अने ते ते वृत्ति आदिने अनुरूप मार्गे कल्पना दोराय छे. कोई पण वृत्तिथी कल्पना उश्केराय छे. मनमां भयनी वृत्ति ऊठतां कल्पना भयना स्थानप्रति दोराय छे, एटले के भयानक अने विभीषणनुं उद्भावन करे छे. अनुकूळ ऊर्मिओ— राग, प्रेम, अधिकारनी ऊर्मि, सौंदर्यनी ऊर्मि,—ते पोते पोतानी मेळे अमुक प्रकारे, कल्पनाद्वारे, स्वानुभव करी ले छे. माता बाळकना भाविनी कल्पना करे छे; बाळक महापराक्रमोनां स्वप्ने चढे छे; कवि एवी आकृतिओने एवां चित्र कल्पे छे के जेथी आश्चर्य वडे मन सानंद विक्षोभ पामे छे, अने सौंदर्यरसमां विलीन थई जाय छे;—ए बधुं आ जुदी जुदी ऊर्मि कल्पनाद्वारे स्वानुभव पामे छे तेनुंज फळ छे. आ रीते मन पोताना प्राकृत, लौकिक, आनंदोने अप्राकृत, अलौकिक आनंदोथी शोभावी, दीपावी, संतोष अने सुख मेळवी ले छे. माता भाविनी अलौकिक

कल्पना करीने लौकिक सुख जेटलुं सुख भोगवी शके छे. काव्यगत चित्रोथी ऊपजतो आनंद प्रत्यक्ष आनंद जेवोज विलीन करनार, विक्षोभ ऊपजावनार, तादृश, थई रहे छे.

कल्पनाना व्यापारमात्र, अमुक हेतुथी ऊपजे छे, एटले वृत्ति विना तो होयज नहि. कोई गूढ प्रश्ननो निर्णय करवामां वकील के शास्त्रीना मननो हेतु जिज्ञासानी तृप्ति अथवा ज्ञाननो आनंद एवो पण होवो जोईए. आवा प्रसंगोमांनो हेतु अत्यंत उत्तमोत्तम बुद्धिकार्यरूपे छे; ज्यां इष्टार्थ छेक समीप होय त्यांज ऊर्मिविक्षोभनो खरो अनुभव थाय छे पण जेने अत्र सौंदर्यकल्पना एटले वृत्तिप्रेरित कल्पना कही छे तेमां तो ऊर्मिविक्षोभ आदिथी अंत सुधी विद्यमान होय छे, अने इच्छाप्रेरित हेतु करतां कोई अपूर्व हेतु तेमांथी ऊपजी आवे छे. आ वात स्पष्ट छे. ज्यां भय आदि दुःखकर वृत्तिनो प्रादुर्भाव थाय छे त्यां अमुक चित्रो, इच्छा न होय तो पण मन आगळ रह्यां करे छे. ए अनुभव सार्वजनीन छे. भय विना अनुकूळ रागादि वृत्तिपरत्वे पण ऊर्मिविक्षोभथी आखा मनोव्यापारने असर थाय छे ए स्पष्ट छे. आ बधा प्रसंगोमां इष्टार्थ एज छे के जाग्रत् थयली अमुक वृत्ति वधारे दृढ अने उंडी थई जाय, एटले योग्यायोग्यना हानोपादान अने संयोजननो व्यापार तो ते वृत्तिथीज नियमाय छे, अने इच्छानो भाग तो आ आखा कार्यमां अति न्यूनतम रहे छे—एटलेज अंशे रहे छे के अमुक इष्टार्थ उपर जवानुं छे एवा भानथी बधो व्यापार चाले छे.

आपणे एटलुं जोयुं के कल्पना (अमुक मर्यादा सुधी) आपणा अनुभवना वृत्तान्तोने बदलवा अथवा रूपांतर आपवा समर्थ छे. सौंदर्यभावना के भव्यतानी भावना जेवी कोई ऊर्मिने वश रही, कल्पना, अनुभवना व्यावहारिक प्रदेश उपरथी ऊडी साधारण वृत्तांतोथी विलक्षण एवा अलौकिक वस्तुसंभवादि ऊपजावी ले छे. कल्पनानां आवां भावनामय चित्रो व्यवहारथी अत्यंत दूर होय छे. आवी कल्पनानी शक्तिमांथीज कल्पित कथाओ, भव्यभावनामय वार्ताओ, ऊपजी आवे छे.

कल्पनानो जे आ आनंद तेमां विलीन रहेवुं ए अमुक मर्यादा सुधी सारुं छे. परंतु एने वधारवामां चारित्रने तेम बुद्धिने घणी हानि थवानो संभव छे. जे युवकनुं मन दीर्घ काळ सुधी भव्य कल्पनामय वार्तानावृत्तान्तमां ग्रस्त रहे तेने व्यवहारना क्लेशमय जीवित उपर अरुचि थई जाय छे; अथवा तेम नहि तो एवो कल्पनामय वैभव प्रत्यक्ष भोगववामां तेने संतोष रहे छे. आम थवाथी ऊर्मि अने इच्छाने संबंध रहेतो नथी एटले नित्य व्यवहारमां जे साधारण हेतुओथी इच्छा कार्यमात्रनी प्रेरक थई शके छे ते हेतु कांई असर करी शकता नथी. आम चारित्रने हानि थाय छे. बुद्धिने हानि एम थाय छे के कल्पनाना अति अमर्याद आनंदथी वस्तुगति अने कल्पना बे वच्चेनो भेद समजातो नथी. तादृश कल्पनामात्र वास्तविक जेवी श्रद्धा पेदा करे छे.

बुद्धिव्यापार अथवा ज्ञानप्राप्ति साथे कल्पनाने बे प्रकारनो संबंध छे ए आपणे जोयुं. इच्छाथी नियमायली अने सत्यान्वेषणपरायण एवी कल्पना ज्ञान मेळववामां ने संग्रहवामां सारी सहाय थई पडे छे. एथी उलटी रीते इच्छानो अधिकार कल्पना उपर न रहे अने ऊर्मिनेज कल्पना वश थाय तो ज्ञानप्राप्तिने ते सहजे अंतरायरूप थई पडे छे.

कल्पना विषे लखनाराए कल्पनाना आ द्वितीयरूप उपरज वधारे लक्ष आपेलुं छे, अने तर्कव्यापारमां तेम बुद्धिव्यापारमां कल्पनानो केटलो उपयोग छे ते उपर विचारज कर्यो नथी. असलथीज कल्पना अने बुद्धिनो जे विरोध मनातो आवेलो छे ते कल्पनानुं रूप पूर्ण रीते न समजवाथी थयलो छे. एमां कांई संशय नथी के कल्पना अने बुद्धि एटले विचार तेमने कांईक अंशे विरोधतो छे ज, केमके कल्पनाने व्यक्ति व्यक्तिना समग्र स्वरूप साथे संबंध छे, विचारने शुद्ध सामान्य स्वरूप साथे संबंध छे. छतां कल्पना अने बुद्धि वच्चे अर्वाचीन चेतनशास्त्रज्ञोए संबंध शोधी काढेलो छे, ने ते वास्तविक छे. योग्य रीते नियमायली कल्पना उच्च प्रकारना तर्कव्यापारनो मार्ग सरळ करी आपे छे. स्मृतिनां चित्रोने सहजसंपाद्य बनावी ने कल्पना तर्कव्यापारनी सामग्री सुसाध्य

करी मूके छे. मिश्र चित्रो अने चित्रपरंपराओना अवयवे अवयव जुदा पाडी, अने जुदा जुदा अवयवोनां चित्र ऊपजावी आपी, भावरूप (जाति–सामान्य) ज्ञान प्राप्त करवानो मार्ग पण कल्पना सरळ करे छे. मानसिक चित्रोनो संयोग करी नवां चित्र ऊपजावी नवा नवा मार्ग उपर तर्कने वाळवानुं पण कल्पनाज योजी शके छे.

७. कल्पनानो विकासः—दर्शनशक्तिनो अमुक हद सुधी विकास थया पछीज स्मृतिविकासनो आरंभ थाय छे, तेम कल्पनाना विकासनो आरंभ पण स्मृतिशक्तिनो अमुक हद सुधी विकास थया पछी थवा मांडे छे. आ वात पदार्थसंबंधी एटले स्वरूपकल्पना तेम व्यावहारिक कल्पना उभयने लागु पडे छे. भाविसंबंधी नवां चित्र ऊपजावी शके के नवा नवा व्यापार योजी शके ते पूर्वे बाळकनामां अमुक इंद्रियजन्यानुभवोनुं स्मरण करवानुं सामर्थ्य आवेलुं होवुं जोईए.

जे नवुं होय तेनी प्रथमथी कल्पना बांधवारूपी कल्पनांकुर बाळकनामां पण यद्यपि होय छे तथापि भाषानुं सारुं ज्ञान थता सुधी ए कल्पनांकुर वृद्धि पामी शकतो नथी. माता जे सादां सादां वर्णनो करी बतावे ते सांभळवामांथी नवां चित्र ऊपजाववानी शक्तिने कसरत थती जाय छे. एटलुं लक्षमां लेवा जेवुं छे के बाळक पोताना अनुभवोने भाषाद्वारे दर्शावतां शीखे छे, ते पछीज, तेने आवां वर्णनोमां कांईक रस पडवा मांडे छे. नवा संभवोनी परंपरानी भावना बांधवानी शक्तिनो आधार, भूत अनुभवपरंपराने कल्पनाद्वारे स्मरवानी शक्ति उपर रहे छे. बाळकने पदार्थोसंबंधी जे ज्ञान होय छे तेमां आ रीते वृद्धि थती चाले छे; तेनुं ज्ञान तेनां पोतानां अवलोकन अनुभवादि उपरथी दिक् काळना वधारे वधारे विशाल प्रदेश उपर विस्तरतुं जाय छे.

आवी संग्रह करवानी शक्तिरूपे उपचायक कल्पनानो परिचय थता

बाळक स्वतःज कल्पनाओ करवा मांडे छे त्यांथी शुद्ध उपचयना अंकुर तेनामां जणाय छे. नवी शक्ति मारामां आवी छे एम जाणवाथी ते शक्तिनो व्यापार वृद्धि पामे छे. साक्षात् दृश्यमान पदार्थोना दर्शनने संबंधे प्रथमे तो आ कल्पनानो व्यापार देखाय छे. बाळकोनी रमतोमांथी आ वात सहज स्पष्ट थाय छे. व्यावहारिक चातुर्यना प्रयोग माटे रमतमां अनेकानेक प्रसंग आवे छे. वेगचापल्यना प्रादुर्भावनो ए मार्ग छे, कार्यकारित्वनी रुचिनुं स्थान छे, नवा नवा मार्ग साधवानी शाळा छे. पण रमतमां बाळकोने जे रस पडे छे ते बीजाज कारणथी छे. मो'टाना व्यापारनुं ते एक प्रकारनुं अनुकरण छे तेथी तेमने तेमां रस पडे छे. जे पदार्थ, व्यापार, आदिनुं पोते अनुकरण करतुं होय ते साक्षात् प्रत्यक्ष छे एम बाळक कल्पनाथकी मानी ले छे. पदार्थ साक्षात होय ते समयना अनुभव उपर कल्पनानो प्रासाद आ रीते रचाय छे. कल्पनाना रसायनथी ढींगली जीवतुं बाळक बनी जाय छे, लाकडी घोडो थई रहे छे. अति साधारण उपमितिथकी आवी कल्पनाओ सहजे ऊपजी शके छे एटले भागला तुटला रमतना घोडाथी पण बाळक खरा घोडा जेटलो आनंद मेळवी ले छे. आ प्रकारे रमतोमां बाळकनी कल्पनाना चापल्यनुं प्रत्यक्ष दर्शन थाय छे. तेमनी साहजिक रमतोमां उत्तम प्रकारनी अभ्याससाध्य कल्पनाओनां बीज जणाय छे; बाळको एकी वखते कवि अने नटनुं कार्य करे छे.

त्रण चार वर्षना जे बाळके केटलीक कहाणीओ सांभळी हशे, ते पोते नवी नवी वातो जोडवानी शक्ति पण दाखवी शकशे. आवी तेणे पोते जोडेली वातोमां तेनां पोतानां अनुभव तथा अवलोकन अने बीजांनी कहेली वातो ए उभयनी असर जणाई आवे छे. आ वयमां कल्पना अति विलक्षण आकारो ग्रहण करे छे. कल्पनाना उपचयव्या-

पार अद्भुत दर्शननी रुचिथकी सारुं प्रोत्साहन पामे छे. अति दूरदूर प्रदेश सुधी बाळको, कल्पनाद्वारे जई शके छे, अने जुदा जुदा पदार्थोनां रूप धारण करे छे. त्रण वर्षनां बाळकमांनां वधारे तेज प्रकृतिवाळां केटलांक चकलां साथे हवामां ऊडवानी के आकाशना तारारूपे थई जवानी इच्छा करतां जणाय छे. आवी स्वतंत्र अने निर्मर्यादं कल्पना थवानुं कारण ए छे के बाळकने व्यवहारमां शुं शक्य छे ने शुं अशक्य छे, शुं संभवित छे ने शुं असंभवित छे तेनुं ज्ञान होतुं नथी. आकाश सुधी ऊडवुं एमां बाळकने कांई अशक्य लागतुं नथी;—अर्थात् बाळकनी जे निर्मर्यादं कल्पना ते अनुभव अने विचारना अभावथी ऊपजी आवे छे.

अनुभवनी अने ज्ञाननी वृद्धि थतां बालिश कल्पना कांईक नियम अने मर्यादा ग्रहती जाय छे. प्रत्येक अनियंत्रित उत्साहने अनुसरी गमे तेवा उच्छृंखलरूपे प्रवर्तवानो कल्पनानो जे मूलस्वभाव तेने स्थाने इच्छाथी नियंत्रित एवो कल्पनाव्यापार जणावा मांडे छे. वास्तविक, व्यावहारिक अने शक्य होय तेनी भावनाने अनुसारे कल्पना व्यापार करे छे. बाळपणमां जे कहाणीओथी आनंद थतो ते आनंद ऊपजावती नथी, व्यवहारानुसार वार्ताओ, बाळकना इतिहास, एमां रस पडवा लागे छे. एम थतां थतां, अद्भुत अने हास्यास्पद उपर जे रुचि रहेती, ते हवे पदार्थ विषे जाणवानी जिज्ञासा, स्वाभाविक तथा व्यावहारिक एवी वस्तुगतिने अनुसरवानी इच्छा, ए रूपे जणाय छे.

तर्क अने विचार करवानी शक्तिनो विकास थवाथी यद्यपि कल्पनाशक्ति अति संकोच पामे छे, तथापि कल्पनानो विकास पछी थतो नथी एम मानवुं भुलभरेलुं छे. बाळकोनामां अति अनियंत्रित कल्पनाप्रभाव होय छे एम आपणे मानीए छीए. तेनुं कारण ए छे के तेमनी कल्पनाना अवितर्कित व्यापारथी आपणने आश्चर्य लागे छे, पण ज्यारे बाळको आकाश तूटी पडशे, के हुं झाड उपर ऊडीने बेशीश एवी वातो करे छे त्यारे कल्पनाना मूलभूत व्यापारमात्रज शीखे छे एम जाणवुं जोईए. तेमनी स्थिति प्रमाणे आवी कल्पना करवी बहु सरळ अने सहज छे—केमके ए कल्पना बहु सादी छे अने नित्य थता अनुभवने अनुसारे छे. जे बाळक आवा कल्पनाव्यापार करी शके छे तेज बाळक कोई जनावर के शहरनुं तेना आगळ वर्णन कर्युं होय तो तेनी कल्पना करी शकतुं नथी. उपचायक कल्पना करवानी शक्ति, तेनी सामग्रीमां वधारो थाय अने पुनः पुनः अभ्यासथी कसोटी आवे, तेम वधती चाले छे.

वय वधतुं जाय तेम कल्पनाशक्ति वधती जाय छे एम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के कल्पनाना तत्त्वोनुं संयोजन करवानी सरलता आवती जाय छे. वधारे शक्ति आव्या पछी, सरखी गुंचवणवाळुं कोई कल्पना कार्य थोडा समयमां ने थोडा श्रमथी थई शके छे. उद्भिज्जशास्त्र अथवा प्राणिशास्त्र शीखनारने कोई छोड के प्राणीनुं कल्पनाद्वारे ग्रहण करवुं सहेलुं पडतुं जाय छे. बीजी वात ए छे के कल्पनाशक्ति वधी एटले तत्साध्य जे कार्य ते पण अधिकाधिक कठिनतावाळां होई शके छे. अधिकाधिक कठिनतावाळां कार्य एटले जेमां घणां संयोजन करवां पडतां होय तेवां—कोई देखावनुं—एकाद युद्धनुं—दर्शन कल्पवुं पडे, तेवां कार्य; अथवा आपणा परिचित अनुभव करतां विलक्षण संयोजन जेमां करवां पडे तेवां—मेघदूतादिगत कल्पना जेवां—कार्य; मात्र संग्रहरूप के अनुकरणरूप जे कल्पना तेमांना उपचयव्यापार करतां जे मूळ कल्पना छे तेमांनो उपचयव्यापार वधारे उत्तम शक्तिनुं कार्य छे ए तो स्पष्टज छे.

८. **कल्पनाशक्तिना प्रकारः**—स्मृतिशक्तिपरत्वे जुदां जुदां माणसमां फेर पडे छे तेम कल्पनाशक्तिपरत्वे पण जुदां जुदां माणसमां फेर पडे छे. आवा तफावत सामान्य के विशेष गमे ते प्रकारना होय.

एक माणसने सामान्य रीते सारी उपचायक शक्ति होय, तो ते स्मरण-शक्तिनी खास उत्तमता करतां एक जुदीज वात थई. साधारण रीते एमज दीठामां आवे छे के कल्पनाशक्तिनी उत्तमता कोई अमुक एक दिशामांज होय छे. दृश्यमान विश्वलीला माटे कोईनी कल्पना सारी होय छे, तो कोईनी संगीतचित्रो माटे सारी होय छे, कोईनी कल्पना व्यावहारिक संयोजनपरत्वे सारी होय छे तो कोईनी कल्पना परेंगितना ज्ञान माटे सारी होय छे.

आ तारतम्यनो आधार केटलेक अंशे साहजिक शक्तिना तारतम्य उपर, अने केटलेक अंशे संसर्ग, साहचर्यबल अने अभ्यासना तारतम्य उपर रहे छे. एकंदरे उपचयशक्तिपरत्वेज बाळकोमां प्रथमथी तारतम्य जणाय छे. केटलांक माणसनां मन पोताना अनुभवनां नाना प्रकारनां फळने नवा संयोजनमां गोठववामां बहु चपळ होय छे. वळी सारी बुद्धि अने तत्सहकृत जे उत्तम स्मृतिशक्ति तेने लीधे, एकाद प्रकारना कल्पना-व्यापार उपरज, अमुक मननी प्रवणता होय एवुं पण होय छे. जन्म-थीज उत्तम चित्रकार थवा सर्जायलो, रंग ओळखवा पकडवा योग्य सूक्ष्म नजर अने दृढ स्मृतिशक्तिवाळो, पुरुष, रंगसंबंधे कल्पनाव्यापार अति-सरलताथी सहज रीतेज करी शके छे.

अमुक अमुक ऊर्मियोग्यता जे मनने जेवी होय ते प्रमाणमां पण कल्पनाविकासनी दिशा नक्की थाय छे. शास्त्रीयशोध माटेनी साहजिक रुचिथी बाळक पोतानी कल्पनाशक्तिनो उपयोग विश्वलीला अने तेना नियम उपरज करवा मंडे छे; विश्वना सौंदर्य उपर प्रेमवाळा बाळकनी कल्पनाशक्ति कविप्रतिभारूपे परिणाम पामती चाले छे.

कल्पनाशक्तिना सामान्य अने विशेष विकासमां जे तारतम्य जणाय छे तेनो आधार आ रीते साहजिक योग्यता अने स्वाभाविक रुचि उपर

रहे छे, तथापि संसर्ग अने दीक्षा(केळवणी)नी असर पण नथी थती एम नथी. गमे तेवी पद्धतिपुरस्सर दीक्षाथी पण स्वाभाविक रीते क-ल्पनाशून्य बाळक कल्पनाप्रवण थाय ए तो बनतुं नथी, पण शक्ति होय तो तेमां घणो सारो सुधारो थई शके छे, अने एकाद दिशामां उत्कर्ष पण थई शके छे.

९. कल्पनानी केळवणी:—आ विषय संबंधे कल्पनाना जे रूपनो मुख्य विचार करवानो छे ते स्वरूपकल्पना छे. कल्पनाशक्तिने एक पासा बुद्धि साथे ने बीजी पासा ऊर्मि साथे जे सविशेष संबंध छे तेने लीधे घणाक सूक्ष्म विचारो ऊपजी आवे छे. ए तो आपणे जोयुं के अननुभूत अने अनवलोकित एवा पदार्थसंभवादिनी कल्पना करवानी शक्तिथी ज्ञानप्राप्तिने घणो उपकार थाय छे. छतां एज शक्तिने अनियंत्रित रीते वधारी होय तो भ्रममात्रज ऊपजता चाले छे, अने ज्ञाननो जे हेतु ते निष्फल थाय छे.

कल्पनाने नियममां राखवानी आवश्यकता छे ए वातनी तो कोईने पण शंका नहिज होय. कल्पना अनियंत्रित रीते चाल्यां जाय तेना करतां बुद्धिव्यापारने वधारे प्रतिकूळ बीजुं कांई नथी. जे बाळकोनी कल्पना-शक्ति बहु तीव्र होय तेमने शी रीते नियममां राखवां ए जरा विचारनी वात छे. ए तो स्पष्टज छे के गांडी, चित्तभ्रम जेवी अने हानिकारक कल्पनाओ तो विदूरज राखवी जोईये. तेम कल्पनानी ताटशता पण एटले सुधी न वधवा देवी जोईए के वस्तुगति अने कल्पित चित्र तेनो भेदज निर्मूल थई जाय. बहु चपळ कल्पनाशक्ति होय त्यां तर्क करवानी अने विचार करवानी शक्ति वधारवी जोईए के कल्पनाथी थती खोटी असरो अटके.

आ बधी वात खरी छे. परंतु एम मानवाने कारण छे के बाळ-

कोनी कल्पनाने स्वतंत्र रहेवा देवाथी जे हानि बतावामां आवे छे, तेमां घणी अतिशयोक्ति भळेली छे. जे नीरोगी बाळकोने प्रेमदीक्षानी रीतिथी ऊछेरवामां आवे छे, तेमनी कल्पनाना अनियंत्रित व्यापारथी बुद्धि अने चारित्रने हानि थयली दीठामां आवी नथी. बाळकोने कल्पनामय स्वप्नो आवे छे खरां ने ते तादृश लागे छे खरां, पण स्वप्न अने जाग्रत्नो भेद तेमना समजवामां नथी आवतो एम नथी. कल्पनाप्रवणता साहजिक होय तो तेने अटकाववा अने संकुचित करवाना यत्न करवाने बदले, तेने योग्य मार्गे चढाववी ए वधारे उचित छे. विचारपुरःसर केळवणी आपवाथी एवी साहजिक शक्तिमांथी, ऐतिहासिक, शास्त्रीय, के काव्यचातुर्ययोग्य, कल्पनाना अंकुर ऊगी आवे छे.

एटलुंज नहि पण सरासरी शक्तिवाळां बाळकोनामां, योग्य सामग्री पूरी पाडीने, कल्पनाशक्तिने खीलववानी अपेक्षा रहे छे. वारंवार कहाणीओ कहेवी, जुदां जुदां स्थाननां वर्णन करवां, ए आदि, केळवणीने आरंभे घणां आवश्यक छे. जे बाळकने घर आगळथीज कहाणीओ वार्ताओ सांभळवा संभारवानी सारी टेव पडेली होय छे ते शाळामां सारी रीते भणी शके छे. सारी सामग्रीथकी बाळपणमांथीज कल्पनाने उत्तेजित करवाथी ए शक्ति सारो विकास पामे छे, अने ते विकासद्वारे बुद्धिवैभव पण सारो प्राप्त थई शके छे.

कल्पनाने यथायोग्य रीते केळववा सारुं कल्पनाव्यापारना स्वाभाविक नियमो उपर लक्ष राखवुं जोईए. जेमां उपचयव्यापार आवता होय तेवां काम बाळकना अनुभवने अनकूळ थाय तेम राखवुं. त्यारे प्रथम नियम एज छे के बाळकनी पासे यथोचित सामग्री छे के नहि ते तपासवुं. सामग्री एटले मानसिक चित्रनां अंग जेमांथी मळी आवे ते एम नहि पण

आखा चित्रना एक नमुनारूपे चाले तेवी भावना अथवा भावनाओ पण सामग्रीमां समजवी. उदाहरण—बरफथी ढंकायला हिमालयनुं मानसिक चित्र कल्पवामां बाळकने पर्वतना अने बरफना स्मरणथीज ठीक पडशे, पण तेनी साथे खांडनुं मो'टुं ढेपुं एवी कोई एक भावना आखा चित्रने नियमवा सारुं जोईशुंज. बीजो नियम ए छे के यथायोग्य रस ऊपजावी आपवो. उपचयव्यापार माटे आपेली सामग्री, वर्णवेलो देखाव, के कही बतावेलो वृत्तांत, ते पोते रस लागे तेवां अने आकर्षक जोईए, तेम बाळकथी समजाय तेवां पण जोईए. बाळकना स्वभावनो ऊर्मिमय विभाग, अने तेना अनेक प्रकार, आ वातपरत्वे, शिक्षकना लक्षमां होवा जोईए.

बीजी बधी शक्तिओनी पेठे कल्पनाशक्ति पण धीमे धीमे केळववी जोईए. उपचयव्यापार बाळकनी वधती जती शक्ति अने खीलती जती वृत्तिओने योग्य थता रहे तेम चलाववा एटलुंज नहि, पण तेनामां जेटली कल्पनाशक्ति आवी होय तेने पण अनुकूळ राखवा. वर्णनो वधारे लांबां अने वधारे गुंचवणवाळां, धीमे धीमे करता जवां. जनावरनी अने बाळकोनी टुंकी रसमय वातोथकी कल्पनानी केळवणीनो आरंभ करवो जोईए. बाळकने सुगम अने रसिक एवा अनुभवोथी आवी वातो भरपूर होय छे. नानां बाळकोने चकला चकलीनी अने एवीज बीजी वातो कहेवामां आवे छे ते कल्पनाने केळववा माटे बहु योग्य छे. आगळ जतां, जेमां नीतिबोध वधारे कठिन अने अणगमो पेदा करे तेटलो बधो न होय एवी, अने उपहास आदि बालस्वभावोचित वृत्ति जेमां भळेली होय एवी वातो बाळकोने बहु प्रिय थई पडे छे. ज्यारे नवी नवी जिज्ञासा विकसती जाय छे, अने कल्पनाशक्ति अभ्यासथी सामर्थ्य गृहे छे, त्यारे वधारे विचार करवो पडे तेवी अने ओछा हास्यरसवाळी वार्ताओ बाळकोने आपी शकाय छे.

एम कहेवामां बाध नथी के बालसाहित्यनो घणो भागज जेथी करीने तेवुं साहित्य सारा उपयोगमां आवी शके तेज बातनी खामीवाळो होय छे. बाळकनो अनुभव जेने पहोची न शके तेवा अनुभव, तेवा प्रसंग, तेवी वृत्तिओ, तेमनां वर्णन बाळकोना हाथमां मूकवां नकामां छे. बालसाहित्य लखनारा बाळकोनी दृष्टियी दुनियांने क्वचित्ज जुए छे. बाळकनी बुद्धि अने तेनी ऊर्मियोग्यता ए उभयनो आवा लेखकोने यथार्थ विचार होतो नथी. बाळको अनेक कार्यसंपादक हेतुओना कोलाहलने समजी शकशे, मो'टांना समजवामां पण न आवे तेवी काकूक्तिओनो व्यंग्य पकडी लेशे, अने सौंदर्यनुं उत्तमोत्तम रीते ग्रहण करशे, एम धारवामां आवे छे! बाळकोने खरेखरी उपयोगी थई पडे तेवी वार्ताओ अने तेवां लखाण घणांज थोडां छे.

आपणे जोई आव्या छीए के केळवणीना बधा विभागोमां कल्पनानी अपेक्षा रहे छे. केटलाक— इतिहास अने भूगोळ जेवा— विभागमां कल्पनानो सविशेष उपयोग थाय छे. त्यारे एवा विषयोपरत्वे, शिक्षकने जो कल्पनाव्यापारना नियमोनुं ज्ञान होय तो, घणो लाभ थवानो संभव छे. ए विषे थोडीक सूचना आपवाथी दिशा समजाई जशे.

नवी कल्पनाओ जूनी सामग्रीमांथीज ऊपजावी शकाय छे माटे जूना संस्कारोने तादृश रीते जाग्रत् करवा ए बहु अवश्यनुं छे. योग्य शब्दोनी योजनाथी आ हेतु सिद्ध थई शकशे. शब्दो सादा अने परिचित अर्थात् तुरतज चित्र सूचवी शके तेवा जोईए. आटलुंज नहि पण शिक्षके बाळकने तेना अनुभवोमांनी एवी वातोनुं स्मरण करावबुं जोईए के जेनी भावना नवी कल्पनानी सामग्री के नियामक भावनारूपे काम आवी शके. कोई ऐतिहासिक वृत्तांतनुं वर्णन करतां, बाळक जे नाना जगत्मां रहे छे तेमांनी परिचित एवी समान वातोनुं तेने स्मरण करावबुं

जोईए अने एवी सामान्य उपमाने बळे करीने आखो वृत्तांत स्पष्ट अने तादृश करी बतावबो जोईए. आम करवामां नवी वात अने जूनी वातने जुदे जुदी राखतां तो शिक्षके बाळकने अवश्य शीखववुं के ते पोताना जूना अनुभवने के तेना सहकारीने नवी कल्पनामां भेळवी दे नहि.

कल्पनाने केळववामां शिक्षके साहजिक क्रमे चालवुं. याद राखवुं के स्पष्ट कल्पनाचित्रो धीमे धीमे बंधाय छे. प्रथमे अति अस्पष्ट खोखुं ऊठे छे, तेमांथी आखी भागी योजना थई आवे छे, अने तेना जुदा जुदा भाग भरातां भरातां पूर्ण चित्र थई आवे छे. कोई देशनुं वर्णन, तेनी आकृति, तेना आसपासना संबंध, ने तेना मो'टा मो'टा विभाग— पर्वत, नदी आदि—ते थकी आरंभाय छे. एमज इतिहासनुं वर्णन पण प्रथमे वर्षो अने समयना एक खोखा रूपे ठीक आरंभाय छे; बनावो तेमां पछीथी भराय छे. आ वात लक्षमां राखवी एटलुंज नहि पण शिक्षके सादा उपरथी मिश्र उपर अने ज्ञात उपरथी अज्ञात उपर धीमे धीमे जवुं. इतिहास शीखववामां कोई राजाना जीवननुं, तेना संबंधी मांडलिक अने राजकीय संसर्गो विनाज, वर्णन करवुं, ए सादाथी मिश्र उपर जवानुं उदाहरण छे. भूगोळ शीखववामां बाळकना परिचित प्रदेशोना वर्णन उपरथी अपरिचित प्रदेशो उपर जवुं ए ज्ञातथी अज्ञात उपर जवानुं उदाहरण छे. छेवट एटलुं याद राखवानुं छे के इंद्रियग्राह्य अनुभवथी पण कल्पनाने बहु साहाय्य थाय छे. ए तो आगळ कहेलुंज छे के प्रत्यक्षदर्शनरूप पाया उपर कल्पना पोतानो प्रासाद सारी रीते ऊठावी शके छे. आ नियमानुसार नकशा, आकृतिओ, आदि वापरवांज जोईए.

प्रकरण ९.

सामान्यकल्पना—विचार.

१. **जातिव्यक्तिः विचारः**—आटले सुधी जे बुद्धिव्यापारनो आपणे विचार कर्यो ते व्यक्तिसंबंधीज छे. दर्शन, स्मरण, अने कल्पना, ए त्रणेने कोई व्यक्ति—गंगानदी, के कोई बनाव, जेवो के पेटलाद रेलवेनुं ऊघडवुं—ते साथे संबंध छे. पण आपणे घणीक व्यक्तिओ विषे, नदीओ विषे, कोई काम ऊघडवाना घणा प्रसंग विषे, पण विचार करीए छीए. ज्यारे आपणे आ व्यापार करीए छीए त्यारे आपणे विचार करीए छीए एम कहेवाय छे. कल्पनानी पेठे विचारव्यापारमात्र, भावनारूपज छे, पण कल्पना करतां जराक जुदी प्रकारनी भावना छे. व्यक्तिव्यक्तिनी भावना आमां नथी पण अनेक व्यक्तिरूप वर्गनी भावना छे. विचार करवामां आपणे, व्यक्तिव्यक्तिनो तत्तद्धर्मविशिष्टरूपे विचार करता नथी, पण अनेक व्यक्तिव्यक्तिना सामान्यधर्मनो विचार करीए छीए. बुद्धिव्यापारना आ जे प्रकार छे, तेने लीधेज मानुषबुद्धि अने बीजा प्राणीनी बुद्धि वच्चेनो तफावत पडे छे.

२. **विचार एटले शुं**:—इंद्रियद्वारे दर्शन पामी प्राप्त करेला अने स्मृतिमां भरी राखेला व्यक्तिज्ञाननुं पुनरवलोकन करी आखा भंडारने योग्य रीते गोठववो तेने विचार करवो एम कहेवाय. ज्ञानना सादा स्वरूपनी पेठे आमां पण साधर्म्यवैधर्म्यपरीक्षण ए मुख्य व्यापार छे—केमके व्यक्तिव्यक्तिना विशेषांश ने सामान्यांशनोज आ व्यापारमां पण निर्णय करवानो छे—परंतु आ बे व्यापार जे रीते विचार संबंधे काम करे छे ते रीति जराक जुदी छे. विचार छे ते इंद्रियजन्य दर्शन अने तदनंतर थता स्मरणथी जे प्राप्त थाय ते उपर साधर्म्यवैधर्म्यव्यापार चलाववानी प्रक्रिया छे. एटलुंज नहि, पण हवणांज जोवामां आवशे तेम, आ साधर्म्यवैधर्म्यपरीक्षणनो व्यापार कांईक उंचा प्रकारनो पण छे. छेवट एटलुं पण कहेवुं जोईए के इंद्रियजन्य दर्शनथी थता व्यक्तिज्ञानमां वैधर्म्यपरीक्षा ए मुख्य वात हती अने साधर्म्यपरीक्षा गौण वात हती पण विचारमां तो कांईक उलटीज वात थाय छे. व्यक्तिव्यक्तिमां रहेला सामान्यने शोधी काढवुं, घणीक व्यक्तिने एक सामान्यमां लाववी, एनुं नाम साधर्म्यपरीक्षा कहेवाय; अने विचार करवानो अर्थज ए छे के नानात्वमां एकत्व शोधी लेवुं, परंतु हवणांज जणाशे के आवी जे साधर्म्यनिर्णयनी प्रक्रिया तेनी साथेज वैधर्म्यग्रह थया विना रहेतो नथी.

३. **विचार अने बुद्धिः**— विचार अने बुद्धिने घणो निकट संबंध छे, अने भाषामां ए बे शब्दो एकज अर्थे घणी वार वपराय छे. ज्यारे कोई पदार्थने आपणे आखी व्यक्तिरूपे जोईए त्यारे तेनुं ग्रहण कर्युं कहेवाय, पण ज्यारे तेने कोई सामान्य विशिष्टरूपे आपणे जोईए त्यारे तेनो विचार कर्यो कहेवाय. बाळक आ मकाननुं ग्रहण करे छे, एटले के बीजां पदार्थोथी भिन्न पदार्थरूपे गृहे छे; पण तेने घर ए रूपे ज्यारे गृहे त्यारे ते पदार्थनो तेने विचार थयो कहेवाय. एज रीते कोई बनावनो तेने विचार आव्यो त्यारेज कहेवाय के ज्यारे तेवा बीजा पोताने परिचित बनावो साथेना साधर्म्यने लईने तेने तेमां ते मेळवी ले. वस्तुओनो विचार पामवो एटले तेमने बीजी वस्तुओ साथे साधर्म्यथकी मेळवी लेवी एज तात्पर्य छे. विचार शब्दनो यथार्थ अर्थज ए छे.

विचारमात्रमां एक व्यक्तिने बीजी व्यक्ति साथे तुलना करवानुं तो आवेज छे. तुलना करवी एटले इच्छापूर्वक अवधानने एकी वखते अथवा अव्यवहित क्षणे एकथी वधारे पदार्थो उपर लगाडवुं, अने तेमनी

वच्चेनां साधर्म्यवैधर्म्य पारखी काढवां. आवी रीते तोलन करवाना बन्ने पदार्थ प्रत्यक्ष विद्यमान होय,—बाळकना अक्षरोने छापेली कोपी साथे शिक्षक सरखावे छे त्यां होय छे तेम; अथवा एक विद्यमान ने एक भावनामयज होय,—मों आगळ ऊभेला कोई पुरुषना वदन साथे अन्य पुरुषना वदनने सरखाववा तेनी भावना करीए छीए त्यां होय छे तेम.

बाळक कोई पदार्थने ओळखतां साधर्म्यवैधर्म्यथी तेनुं यथायोग्य संयोजन करी ले छे. कोई पदार्थने ओळखतां—आ आकृति मारा भाई के काकानी छे एम कहेतां—ते ते आकृतिने अन्य पदार्थोथकी उंचाई वगेरे कारणने लीधे जुदी करी ओळखे छे. एज रीते कोई पदार्थने बाळक ओळखे छे—आ तो नारंगी एम कहे छे, त्यां पूर्वे दीठेला तेवा पदार्थ साथे तेनुं साधर्म्य करीने ओळखे छे. छतां आवा ओळखवाना व्यापारमां जे साधर्म्यवैधर्म्यनुं ग्रहण छे ते प्रसिद्ध, स्पष्ट नथी एम कहीए तो चाले. जे आकृतिओथी तेना काकानी आकृति जुदी पडे छे ते अथवा जे नारंगीओ साथे अमुक नारंगी मळती आवे छे ते, बाळकना स्मरणमां स्पष्ट रीते आवतुं नथी. वैधर्म्यसाधर्म्य अर्थात् मानी लेवामां आवे छे खरुं पण स्पष्ट रीते तेनुं ग्रहण होतुं नथी.

स्पष्ट रीते साधर्म्यवैधर्म्यनुं मनमां ग्रहण थवा माटेज तुलनानी जरूर छे. मळता आवता के जुदा पडता पदार्थने आपणे मनथकी पासे पासे आणी तुलना करीए छीए. अने स्पष्ट रीते तेमना वच्चे साधर्म्य के वैधर्म्यनो जे संबंध होय ते लक्षमां उतारीए छीए. आ रीते तुलना करवानां व्यापारमांज विचारनो अंकुर जणाय छे, अने ए व्यापार उपरथीज बुद्धिशक्ति अमुक विकास पामी छे एम समजाय छे. कोई बुद्धिमान् कूतरो ओळखी, परखी शके, पण मनथकी बे पदार्थने साथे साथे राखी तुलना करी न शके, करी शके तो पण स्पष्ट रीते तो नज करी शके.

इच्छापूर्वक अवधानने एकाग्र करवानी शक्तिना उत्तमोत्तम व्यापारनुं दृष्टांत आ तुलनाव्यापार छे. बे अथवा वधारे पदार्थोने तेमना अन्योन्य संबंधपरत्वे विलोकवामां अवधानने एकाग्र राखवानो कोई सविशेष श्रम पडे छे. साधर्म्य के वैधर्म्य जे होय ते स्पष्ट जणाय ते माटे मनने एकथी बीजा पदार्थ उपर त्वराथी जा आव करवी पडे छे. एटलुं कहेवुं जोईए के कोई बे पदार्थने साथे साथे आणवाथी साधर्म्यवैधर्म्य पकडवुं बहु सरळ पडे छे, केमके अवधानने जा आव करवुं बहु सुतर थई जाय छे, अने उभयेना संबंधनुं अवलोकन एकज समये सरलताथी बनी शके छे.

तुलना शब्दना मूलार्थ उपर विचार करतां साधर्म्यग्रहणनो अंशज ए व्यापारमां मुख्य होय एम लागे छे. बुद्धि, चमत्कृति अने कविप्रतिभानी तुलना करी जोवाथी एम जणाय छे के आवी तुलनामां मुख्य वात साधर्म्यग्रहण करवानीज छे. कोई बे पदार्थोनी तेमनुं वैधर्म्य ग्रहवा सारु तुलना करवामां आवे छे त्यां पण तेमना साधर्म्यनो आक्षेप नथी होतो एम नथी. तेवा पदार्थने पासे पासे आणी तेमना कोई सामान्य धर्मपरत्वेज तेमनी तुलना करवामां आवे छे; ने वैधर्म्यनो ग्रह ते पछी उद्भवे छे. वास्तविक वार्ताज एम छे के कोई पदार्थो वच्चे अमुक साधर्म्य होय तोज तेमनी तुलना करवानी वात आपणे करीए छीए, बाकी तो "ए बे पदार्थ एटला बधा विसदृश छे के एमनी तुलना थायज नहि" एम कहीने तेमने पडता मूकीए छीए.

४. स्मरणसहकृत तुलना:—ज्यारे तुलना करवाना पदार्थो तत्काल विद्यमान होता नथी त्यारे तुलनाव्यापार कांईक जुदा प्रकारनो थाय छे. आगळ कहेवामां आवेलुं छे ते प्रमाणे आज रीते बधी साधारण तुलनाओ प्रसरे छे. दिगवच्छिन्न पदार्थो अने कालावच्छिन्न संभवो तेमनां जे आकस्मिक संमेलन थई आवे ते उपरज मननुं लक्ष रहे एवी मर्यादा होत तो विचारव्यापारनी सीमा मात्र एक बिंदु जेटलीज थई रहत. परंतु व्यवहारमां अन्योन्यथी अत्यंत विदूर एवा पदार्थसंभवादिने पण आपणे स्मरणशक्तिनी साहाय्यथी परस्पर समीप लावी शकीए छीए, अने आपणा आखा अनुभवनी एकता साधी शकीए छीए.

स्मरणनी साहाय्यथी चालता आ तुलनाव्यापारमां जे भावनाओ काम आवे छे ते साधर्म्यबलेज ऊपजी आवे छे. उदाहरण. पूर्वे जोयला कोई पुरुषना वदन साथे वर्तमान समयमां प्रत्यक्ष एवा कोई पुरुषना वदनने सरखाववाने प्रसंगे, पूर्वदृष्ट वदनना संस्कारनो आगळ कहेवाई गयली रीते उद्‌बोध करी लेवो एज प्रथम क्रम छे. पछी तुलनाव्यापार चाली शके छे. साधर्म्यना जे अंश मूळथीज अस्पष्ट रीते पण समजायला होय छे, ते उपर विचार चोटी पडे छे अने तेमने वधारे स्पष्ट अने चोकश रीते बहार आणी आपे छे.

बुद्धिचमत्कार अने प्रतिभानी तुलना:—भावनासहकृत तुलनाना व्यापारनुं उदाहरण. बुद्धिना चमत्कारोमां के कविप्रतिभाए योजेलां उपमादिकमां अति विदूर अने विसदृश जेवा तर्कोनुं जे संमेलन थाय छे ते उपरथीज मळी आवे छे. साधारण परिचयथकी जेने आजपर्यंत विसदृश अने परस्परव्यावृत्त धारता होईए तेवा पदार्थो वच्चे कांई साधर्म्य दीठामां आवे छे. ए उपरथीज आ उभये व्यापारमां बुद्धिने कोईक चमत्कार अथवा आनंद ऊपजी आवे छे.

५. विकल्पसंकल्प:—विचारव्यापारने घणी वार पृथक्करण अने एकीकरणना व्यापाररूपे अर्थात् विकल्प अने संकल्प रूपे वर्णववामां आवे छे. विकल्प अथवा मानसिक पृथक्करणनो अर्थ ए छे के कोई आखी वातना विभाग करी नाखी ते प्रत्येक उपर पृथक् पृथक् लक्ष आपवुं. संकल्पनो अर्थ एथी उलटो छे; जुदा जुदा अवयवोने भेगा करी एक आखी वात उपचित करवी ते संकल्पनो व्यापार छे. जेम रसायनशास्त्री पोताना हाथामांना पदार्थोनुं पृथक्करण एकीकरण करे छे, तेमज मन पण पोताना पदार्थो—विचारो—नुं पृथक्करण एकीकरण करी शके छे.

ए तो स्पष्टज छे के पदार्थोनां साधर्म्यनी शोध करतां आपणे विकल्पव्यापार चलावीए छीए. कोई एक दृष्टि अने तदनुरूप भावना ए बे, आपणे जोई आव्या छीए तेम अति गुंफित रचना छे, एमां घणाक

इंद्रियजन्य संस्कार अने ते ते संस्कारना अवयवोना परस्पर संबंधोनुं संमिश्रण रहे छे. एकाद नारंगीनी भावना बांधवामां मन अनेक धर्मसमुदाय—रूप, रंग, आदि समुदाय—नुं ग्रहण करे छे. बीजां फळ अथवा बीजा वर्तुलाकार पदार्थो तेमनी साथे नारंगीना साधर्म्य विषे ज्यारे आपणे विचार करीए छीए त्यारे नारंगी अने ते पदार्थोना अमुक अमुक सामान्यांश लई तेमना विषे पृथक् पृथक् विचार करीए छीए, अर्थात् विकल्पव्यापार चलावीए छीए.

परंतु विकल्प ए यद्यपि विचारव्यापारनुं मुख्य अंग छे तथापि आखुं अंग नथी. विचारमां संयोजन, एकीकरण अथवा संकल्पनी पण अपेक्षा रहे छे. उदाहरण. 'ग्रह' ए पदार्थनो विचार ऊपजाववामां, आगळ करेला विकल्पव्यापारनां फळ—वर्तुलाकार पदार्थनुं रूप, एक केंद्रनी पाछळ गति, ए आदि—नो, मन संकल्प करी ले छे. पदार्थ अने संभवोनो संबंध करावनार कारणनो संबंध शोधी लेवो ए विचारव्यापारनुं अगत्यनुं कर्तव्य छे; अने तेवो शोध करवामां तो अद्यापि असंबद्ध एवा विचारादिने संयोजवा एज मुख्य काम छे. बाळकने एम जणाय छे के बरफ, खांड, अने बीजी वस्तुओ अग्निथी ओगळी जाय छे त्यारे ओगळवाना धर्मने अग्निनी साथे बाळक पोताना मनथी योजी ले छे.

आपणने जे व्यक्तिज्ञान थाय छे तेमां विकल्प अने संकल्प उभयनां बीज रहेलां होय छे एम कहीए तो चाले. इंद्रियजन्य दर्शनमां अवलोकनार्थे एकाद पदार्थ के तेना एकदेशने, आसपासनी वात उपर दुर्लक्ष करी, आपणे दृष्टि आगळ आणीये छीए. आ प्रकारे अवलोक्य विषयनी जे पसंदगी करवी ते एक प्रकारनो विकल्पव्यापारज छे. वळी, दृष्टिमात्र, इंद्रियद्वारे प्राप्त करेलां अनेक तत्त्वथी बने छे, एटले ए पण एक प्रकारनो अविज्ञात एवो संकल्पव्यापारज छे एम कही शकाय. एमज पुनरुद्‌बोध = (स्मरण)मां पण भावनारूप चित्रोने तेमना आसपासना संबंधोथी छूटा पाडी लेवा अने तत्कालीन अवधानप्रयोगथी ते भावनाओने पाछी अमुकरूपे एकत्र करता जवी, एवा उभय व्यापार समजाय छे. प्रतिभारूप कल्पनामां संकल्पनां बीज सारां जणाई आवे छे.

आटली चर्चा उपरथी एम जणाय छे के विकल्प अने संकल्प ए शब्दोना अर्थने विस्तारीने वैधर्म्यग्रहण अने साधर्म्यग्रहण ए अर्थ उपर पण लई जई शकाय. इंद्रियजन्य ज्ञान, दर्शन, अथवा भावनो विकल्प करवो त्यारेज कहेवाय के ज्यारे तेना कोई एक अंशने तेनी आसपासना बीजा अंशथी आपणे जुदो पाडी लईए. एज रीते ज्यारे कोई सादृश्यना कारणथी एक करतां वधारे वस्तु विचारादिने आपणे संयोजी लईए त्यारे संकल्पव्यापार थयो कहेवाय. त्यारे संकल्प अने विकल्प ए शब्दोने जो आवा विशाल अर्थवाळा गणीए तो एम पण कही शकाय के एकज मनोव्यापारना ए बे अंग छे. कोई प्रत्यक्ष अथवा भावना एकाद अंशने सविशेष विचार माटे जुदो पाडी लेवो एटले तत्सदृश अन्यप्रत्यक्षांश के भावांश साथे तेने योजी लेवो ए पण अर्थात् सिद्ध छे.*

६. विचार अने भाषा:—ए वात तो सर्वमान्य छे के विचार अने भाषाने समवायसंबंध जेवो संबंध छे. उतरती पंक्तिना प्राणी करतां मनुष्यप्राणी भाषाशक्ति अने विचारशक्ति ए बेने लीधेज उत्तम गणाय छे. जुदी जुदी मनुष्यजातिनी विचारशक्ति ते ते जातिनी भाषानां वैपुल्य अने विशालताना प्रमाणमांज दीठामां आवे छे. बाळकनी विचारशक्ति तेनी भाषा प्रयोजवानी शक्तिनी साथेज क्रमे क्रमे वृद्धि पामे छे. आपणा विचारव्यापारनो मो'टो भाग, मोढे बोलाती भाषाद्वारेज चाले छे ए तो सुप्रसिद्ध छे. परंतु एकान्तमां एकलो माणस विचार चलावतो होय, मौन रही विचार करतो होय, त्यां पण आंतरवलोकनथी सहजे एम समजाशे के कोई प्रकारनो श्रुत्यगोचर पण गुप्त भाषाव्यापार सहकारी नथी एम नथी.

भाषा छे ते स्वरूपथकीज असंख्य पदार्थोनां वाचक एवां अमुक अमुक सामान्य नामनी एक पद्धतिरूप छे. विचार करवो ए वचननो जे यथार्थ अर्थ छे, एटले के पदार्थोना सामान्यांशनो मनमां ग्रह करवो, ते उपर

* आ वात एकंदरे खरी छे, पण आगळ आपणे जोई आव्या तेम वैधर्म्यग्रहण ए प्रथम क्रम छे एमां संशय नथी.

जोतां एमज समजाय छे के भाषा(अथवा तत्तुल्य अन्य लिंगपद्धति)-नी साहाय्य विना विचारव्यापार चालतो नथी. स्मरणव्यापारनो विवेक करती वखते आपणे जोयुं छे के दृश्य पदार्थोने भावनारूपे बनाववामां अथवा अमुक वस्तुसंभवादिनुं स्मरण करावववामां, भाषा केटलुं अगत्यनुं काम करे छे. हवे भाषानो एथी पण वधारे अगत्यनो उपयोग आपणे जोवानो छे; सामान्य अथवा भाववाचकनुं ग्रहण करवामां, अर्थात् विचारव्यापारना साधनरूपे, तेनो केवो उपयोग छे ए जोवानो छे.

७. विचारक्रमः—साधारण रीते विचारव्यापारना आपणे त्रण क्रम मानीए छीए, प्रथमे सामान्यविचार अथवा जातिनो तर्क थाय छे एज विचारव्यापारनी उपादानभूत सामग्री छे. आनुं नाम सामान्यकल्पना. ए पछी आवा कोई बे सामान्य विचार अथवा एवी बे जातिने एक एकनी साथे जोडी कोई निर्देश रचवानो व्यापार थाय छे. जेमके ' जड पदार्थ ', ' गुरुत्व ' ए जातिवाचक शब्दो छे, तेमने योजतां " जड पदार्थने गुरुत्व छे " एवो निर्देश थाय छे. आने निर्देशव्यापार कहे छे. छेवट एवो व्यापार थाय छे के जेमां मन एक निर्देश उपरथी अन्य निर्देश उपर जई शके छे: जेमके " जड पदार्थने गुरुत्व छे " ए निर्देश तथा " लाकडुं जड पदार्थ छे " ए निर्देश उपरथी आपणे " लाकडाने गुरुत्व छे " ए निर्देश उपर जईए छीए. आ व्यापारने परामर्शव्यापार कहेवाय.

आ जे त्रण क्रम सामान्य, निर्देश, अने परामर्श ते चेतनशास्त्रवाळाए पाड्या नथी, नैयायिकोए मान्या छे. प्रत्येक क्रममां जे मनोव्यापार थाय छे ते तो तेनो तेज छे एटलुंज नथी, पण, हवणांज बतावववामां आवशे तेम, आ त्रणे व्यापार परस्परनिरपेक्ष चालता नथी, एक एकनी अंदर एक एक आवीज जाय छे. छतां पण विचारव्यापारना

सादा अने गुंफित क्रमने ए विभागथकी जुदा पाडवानुं बनी आवे छे माटे चेतनशास्त्रमां पण तेवा विभाग स्वीकारवाथी बाध नथी. ए विभाग मान्य राखी आपणे आ प्रकरणमां तो सामान्यकल्पना विषेज चर्चा चलावीशुं, निर्देश अने परामर्शनो विचार आवता प्रकरणमां करीशुं.

न्यायानुसार तथा चेतनशास्त्रानुसार विचारक्रमविवेकः—नैयायिक अने चेतनशास्त्री जे रीते विचारक्रमने समजे छे ते रीति वाचके स्पष्ट रीते लक्षमां ऊतारी राखवी जोईए. नैयायिकने तो ए व्यापारोने कोई एक सत्यता-रूपे मानेला धोरण प्रमाणे नियमवा एटलीज कर्तव्यता छे. तेने तो एवोज एकाद सादा विचारव्यापारनो नमुनो जोईए छीए के जेनी साथे सरखाववाथी गमे तेवा गुंफित विचारनी पण सत्यासत्यता परखी शकाय. आम होवाथी पृथक् पृथक् माणसोना मनमां विचारव्यापार शा प्रकारे चाले छे तेनुं सूक्ष्म अने संपूर्ण विवेचन करवानी तेने अपेक्षा नथी. उदाहरण तरीके जोईए तो नैयायिक एम मानीज ले छे के निर्देश उद्भवता पूर्वे सामान्य तो तैयारज छे; तेमज परामर्शव्यापार चालता पूर्वे सामान्यानिर्देशरूप व्याप्ति नक्की थयेलीज छे.

आथी उलटी रीते चेतनशास्त्रीने तो "शी रीते सत्य विचार थाय?" एनी चिंता नथी, पण ए वातनी चिंता छे के "एकंदरे आपणो विचारव्यापारज शा प्रकारे चाले छे?" आम होवाथी तेने विचारव्यापारनुं घणुं सूक्ष्म पृथक्करण करी जोवुं पडे छे. उदाहरण तरीके जोईए तो चेतनशास्त्रने ए वात निरंतर लक्षमां राखवी पडे छे के सामान्य अने निर्देश ए बेने निकट संबंध छे, तथा परामर्शव्यापारना जे प्रकार न्यायमां मनाय छे ते करतां पण तेना अनेकानेक प्रकार होई शके छे.

८. **सामान्य एटले शुं?**—सामान्य अथवा जाति एटले कोई एक सामान्य नाम उपरथी आपणा मनमां ऊपजती भावना. मनुष्य, प्राणी, इत्यादि नाम बोलातां तेनी जे भावना मनमां थाय छे ते सामान्य. आ जातिना स्वरूप विषे घणो वादविवाद छे. एटलुं तो स्पष्ट छे के व्यक्ति व्यक्तिना दृश्य चित्र साथे जातिने संबंध छे. 'मनुष्य' ए जातिनो मारा मनमां, अनेक व्यक्ति व्यक्तिरूप परिचित मनुष्योना भावनामय चित्र साथे संबंध छेज. परंतु ज्यारे 'मनुष्य' एम एकलो शब्दज

वापरवामां आवे छे त्यारे, मारा मनमां कोई एक व्यक्तिनी स्पष्टता होती नथी. तेमज एवी व्यक्तिओनी कोई श्रेणि पण लक्षमां होती नथी. जे मनमां छे ते 'मनुष्य' एवी एक भावना छे ने अनेक व्यक्तिनी भावनाना संमिश्रणथी एवे प्रकारे थयली छे के तेमांथी विशेषांशमात्र निर्मूल थई सामान्यांशोनो एक पिंड बनेलो छे. 'मनुष्य' ए सामान्यथी कोई अमुक उंचाई, जाडाई, अमुक आकृति, अमुक वस्त्रादि, वाळी व्यक्तिनी भावनामात्रज मन आगळ आवे छे. आनुं नाम सामान्य अथवा जाति कहेवाय.

उपर सूचववामां आव्युं छे तेम व्यक्ति व्यक्तिनां चित्रमां पण सामान्यनो कांईक अंश होय छे. अमुक स्थान अथवा पुरुषनी मारा मनमां जे छाप छे ते पण वास्तविक रीते जोतां परस्परथी जरा जरा भिन्न एवां अनेक दर्शनमांथी थई आवेली छे. पब्लीक पार्कने आपणे उनाळामां जोईए, चोमासामां जोईए, सारी दशामां जोईए, नठारीमां जोईए; आपणे कोई मित्रने जुदा जुदा संसर्गमां जोईए, जुदा जुदा पण विकारवाळो जोइए, जुदां जुदां कार्य करतो जोईए; प्रत्येक प्रसंगे जे भावना मनमां बंधाय छे ते केटलीक विसदृश दृष्टिओ, जेमांना विसदृश अंश परस्परनो लोप करे छे ने सदृश अंश परस्परथी संकलाय छे, तेमांथी उद्भवे छे.

'मनुष्य' ने बदले प्राणी शब्द लईए तो भावनानुं तत्त्व ओछुं थतुं जणाशे. सामान्यतः प्राणीनुं चित्र मन आगळ लाववुं कठिन पडे छे. ए शब्दना अर्थमां अनंत प्रकारनां प्राणीनो समास थाय छे, एटले ते ते प्रकारथी उपजतां चित्रनो एक सामान्यरूप संकल्प योजवो कठिन पडे छे. आवां बहु भावनामय सामान्यमां पण व्यक्तिचित्रनी कोई अंशे भावना नथी रहेती एम नथी. 'प्राणी' ए सामान्यथी जे प्राणीनो आपणने घणो परिचय होय तेवां प्राणीना चित्रनुं भान थया विना रहेतुं नथी. परंतु ए प्रकारे जे भावनाओथी सामान्य बंधाय छे ते जोईए तेवुं संपूर्ण थतुं नथी. 'प्राणी' ए शब्द एकंदरे जोतां स्थूल शरीर, अमुक आकृति, अने जीवन तथा गतिना व्यापार, एटलानुं भान करावे छे.

खास सामान्य जे सारी रीते थई आवेला मानसिक व्यापारनुं परिपक्व फळ छे ते, अने अपरिपक्व सामान्य के जे दृष्टिमां पण विद्यमान होय छे ते, ए बेनो अंतर समजवो आवश्यक छे. जेम प्रत्यक्षमां साधारण रीते दृष्टिनी विद्यमानता रहे छे, अने दृष्टिमां भावना अथवा कल्पनानी विद्यमानता रहे छे, तेज रीते दृष्टिमात्रमां पण सामान्य रहे छे एम कही शकाय.

कोई व्यक्तिनुं दर्शन करतां, एकाद वृक्षने जोतां, आपणे वृक्षत्व ए सामान्यनुं दृश्यरूप अमुक वृक्ष छेएमज मानीए छीए. इंद्रियगाह्य प्रत्यक्ष पदार्थने कोई वर्गमांना एक रूपे जाणवामां, आ प्रकारे, सामान्यनो स्पष्ट पण गूढ सहकार छे. परंतु आ व्यापार, पदार्थ विद्यमान न होय त्यारे पण, नाममात्रनी साहाय्यथी जे सामान्यकल्पना करवी तेनाथी जुदो छे. प्रथमनो जे व्यापार कह्यो ते तो अतिसरल छे, अने आ द्वितीय व्यापारनी पूर्वे बनी आवे छे. बाळको पदार्थोने अमुक वर्गमांना एकरूपे ओळखी शके छे, पण भाषामात्रनी साहाय्यथी सामान्य कल्पना करी शकतां नथी.

९. सामान्य शी रीते उद्भवे छे ?—जे वधारे दृश्यवत् सामान्य छे, ते तो घणे भागे एक प्रकारना अविज्ञात एवा साधर्म्यग्रहणना व्यापारथीज थई आवे छे. उदाहरणः कूतरा कूतरा वच्चेनुं साधर्म्य एटलुं स्पष्ट अने देखाई आवे तेवुं छे के ए वर्गना एकाद प्राणीथी परिचित होय तेवुं बाळक बीजाने जोतां तुरतज ओळखी ले छे के आ कूतरुं छे. प्रथमना कूतरानी भावना अने बीजा कूतरानुं प्रत्यक्ष ए बे एकत्र थई कूतरानुं जे सामान्य होय तेने बहार लावी आपे छे; सविशेषे करीने श्वाकृतिनुं चित्र योजी आपे छे. आ प्रकारे जुदा जुदा कूतरानां प्रत्यक्ष थतां ए चित्र दृढ थाय छे ने छेवट श्वसामान्य बंधाय छे. आ आखा व्यापारमां मनने, साधर्म्यग्रहण माटे विज्ञात रीते व्यापृत करवुं पड्युं होय एवुं कांई नथी, जे साधर्म्य गृहायुं ते स्वतःज मनमां ठसेलुं छे. परंतु ज्यां साधर्म्य आटलुं चमत्कृतिवाळुं न होय, के जे रीते वधारे भावनामय सामान्य (जेवां के प्राणी इत्यादि)मां होवानो संभव छे, त्यां तो विज्ञात एवी स्पष्ट तुलनानो व्यापार मनने करवो पडे छे. आपणे हाल जे व्यापारनुं विवेचन करवानुं छे ते आवा विज्ञात व्यापारनुंज छे.

१०. तुलना, भावाधिगम, सामान्यः—जे विज्ञानव्यापारथी मन सामान्यो घडी ले छे ते व्यापारना त्रण क्रम थाय छेः तुलना, भावाधिगम, सामान्य. ए त्रणेने घणो निकट संबंध छे, अने ते एकना एकज मनोव्यापारना त्रण जुदे जुदा ओळखी शकाय एवा विभाग छे.

प्रथमे एटलुं तो आवश्यकज छे के अन्योन्यथी अमुक साधर्म्य धरावनारा अनेक पदार्थो मन आगळ आवी जवा जोईए. आगळ कहेवाई गयुं छे तेम आवा पदार्थो प्रत्यक्ष विद्यमान होय के भावनामात्रथी कल्पायला होय. पछी तेमनी तुलना थाय छे; एटले के अवधानना सविशेष व्यापारथकी, बधा पदार्थोनो अन्योन्य शो संबंध छे, ने केटली वातमां केटले सुधी तेमनुं साधर्म्य छे ए वात नक्की कराय छे.

ज्यारे पदार्थो अन्योन्यथी अत्यंत विसदृश होय, जेमके केळां, नारंगी, जामफळ, जांबु, इत्यादि, त्यारे तेमना साधर्म्यने पकडवा माटे, रूप, रंग, आदि तारतम्य उपरथी दृष्टि दूर राखवी जोईए. आ व्यापारमांनो कठिनमां कठिन क्रमज आ छे. तरी आवतां तारतम्य मन उपर घणी असर करी शके छे, एटले ते उपरथी मनने दूर लई जई, तेमनी पार रहेला सादृश्य उपर तेने लगाडवुं, एमां घणो श्रम पडे छे. आ जे श्रमसाध्य व्यापार तेने भावाधिगम कहेवाय छे. इच्छासहित अवधान, रसने पण अभिभव पमाडी व्यापार करी शके तेवुं सबल जोईए. आ भावाधिगमना व्यापारमां जेम मनोबल अधिक तेम साधर्म्यग्रहण वधारे स्पष्ट.

छेवट, तुलितपदार्थोमांना साधर्म्यनुं ग्रहण भावाधिगमथी कर्या पछी, बाळक सामान्य विचार योजे छे, एटले के ग्रहण करेला भाव– धर्म– जेमनामां होय तेवा एक आखा वर्गनी कल्पना करे छे. उपर बतावेलां केळां, नारंगी, आदिमांथी 'फळ' एवा एक वर्गरूप सामान्यनी कल्पना करी ले छे.

११. **सामान्य अने अभिधानः**— अभिधानव्यापारनी साथे अव्यवहित निकट संबंधथकी सामान्योद्भवनो व्यापार पण चाले छे. वधारे सरलताथी वात समजी शकाय माटे आपणे एम धारीए के बाळक ज्यारे अनेक वस्तुओनी तुलना करे छे अने तेमनी वच्चे जे साधर्म्य होय ते अंशने गृहण करे छे त्यारे अभिधान– वस्तुने अमुक नाम आपवानो आरंभ करे छे. एम करवामां ते, जेम कोई शास्त्रवेत्ता कोई नवा प्रकारनी वस्तुओने आपवानुं नाम— अभिधान— शोधी काढे छे तेम वर्ते छे. 'फळ' ए अभिधान, अनेक वस्तुओनी तुलना करी तेमनी वच्चे अमुक साधर्म्य छे एम जोई ते वर्गने ते लगाडे छे. आ प्रकारे जणाय छे के जे अभिधान प्रयोजाय छे ते कोई एक पदार्थने माटे नहि, पण आखा वर्गने माटे प्रयोजाय छे; अने आखा वर्गनी व्यक्तिमात्रमां जे अनुगत साधर्म्य छे तेने उद्देशीने ते अभिधान प्रयोजाय छे. 'फळ' एवुं एक अभिधान प्रयोजवाथी, केळां, नारंगी, सीताफळ, केरी आदि सर्व पदार्थमां जे साधारणधर्मरूप साधर्म्य छे ते अनुगत छे एम बतावामां आवे छे. आ प्रकारे जो सामान्य नाम प्रयोजवामां न आवतुं होय तो साधर्म्यांशग्रहण केवळ क्षणिक अने अस्पष्टज रहे.

तुलनाथी प्राप्त करेला फळने सामान्य नाम आपवाने एटले के सामान्यार्थबोधक लिंगरूप नाम ते फळने लगाडवानी खरी अगत्य ए व्यापार सिद्ध थया पछीज समजाय छे. जे सामान्य फळ आवे छे ते,

तुलित एवां अनेक चित्रने एक लिंगथी बतावनाना व्यापारनुं कार्य छे. आम होवाथी अभिधान, नाम, अथवा सामान्य अने तद्बोधित जे व्यक्ति तेनी वच्चे समवाय जेवो निकट संबंध थई रहे छे.

आ प्रकारनो जे व्यापार ते संपूर्ण रीते सिद्ध थया पछी "फळ" एवो शब्द सांभळतां, बाळक, कोई एक व्यक्तिनुं दृश्य चित्र, केरी के केळानुं चित्र, मनमां लावशे नहि. कारण के 'फळ' ए नाम तेने तेज प्रकारे, सीताफळ, नारंगी, आदि अनेक पदार्थ साथे पण संबद्ध छे. एटलुं तो स्पष्टज छे के 'फळ' ए नाम एकीवखते आ बधा फळनुं भान करावी नज शके. जामफळ अने केळानो आकार, तेम केरी अने नारंगीनो रंग, ए बधानी एकी वखते भावना नज बने, केमके ते परस्परविरुद्ध अने एक एकने बाधक छे. 'फळ' ए नामनो आवी सर्व व्यक्ति साथे संबंध छे एटले तेथकी ए बधी व्यक्तिमांनी अमुकनुं भान थाय ए संभवतुं नथी. अर्थात् आ सामान्य नाम अमुक व्यक्तिनुं परिपूर्ण भान करावतुं नथी, पण अनेक व्यक्तिनुं अपूर्ण भान करावे छे; अने ते पण एवी रीते के कोई एक व्यक्तिनुं पूर्ण भान थवा जाय तो ते अन्य व्यक्तिना भानथी तुरत बाधित थाय छे. बीजी रीते कहीए तो जे अपूर्ण भान थाय छे ते एवा प्रकारनुं होय छे के जेमांथी व्यक्ति व्यक्तिना विशेषांश निर्मूल थई गयला होय छे. एटले शब्द अथवा अभिधान अथवा जातिथकी एकत्र थयली अनेक भावना अथवा जेने सामान्य एवुं नाम आपवामां आव्युं छे ते मानसिक ग्रहण तेनो बोध थाय छे.

एवाज कारणथी बाळक, 'फळ' ए नाम, ज्यां ज्यां फलत्वजाति तेना समजवामां आवशे त्यां त्यां लगाडशे. उदाहरण जोईए तो लींबु अथवा जांबु अथवा अंजीरने जोतां पण बाळक 'फळ' ए नामज वापरशे.

तात्पर्य ए छे के जेम 'फळ' ए नाम देखतांज फलत्वजाति (=सामान्य) नुं भान थाय छे, तेम ए वर्गनी कोई पण व्यक्ति देखतां 'फळ' ए नामनुं भान थाय छे. आ प्रकारे अभिधान आखा वर्गनुं अभिधान बने छे, अने अमुक व्यक्तिओनुं भान करावे छे. आवी अभिधानगतशक्तिने व्यक्तिविशिष्टत्व ए नाम आपवामां आवे छे. जे जे अंशे आ बधी व्यक्तिओ परस्परने मळती आवे छे ते अंशोनुं भान पण सामान्य अभिधानथी थाय छे. आवी अभिधानगत जे जातिबोधक शक्ति तेने जातिविशिष्टत्व कहेवाय छे.

आटले सुधी आव्या पछी हवे आपणे ए कल्पना छोडी देवी जोईए के बाळक कोई एकज समये आ आखो व्यापार सिद्ध करी ले छे, अने बतावी ते रीति प्रमाणे पद्धतिपुरःसरज करी ले छे. भावाधिगमनो जे व्यापार छे ते धीमे धीमे प्रवर्ते छे. 'फळ' ए सामान्य घणीक दृष्टि अने भावनाओमांथी, अनेकानेक तुलना कर्या पछी, बंधाय छे; आवी प्रत्येक तुलनाथी सामान्यनी भावनामां थोडे थोडे ऊमेरो थतो चाले छे. आम होवानो अर्थ ए नीकळे छे के शब्दो मूळथीज सामान्यनामरूपे वपराता नथी. आरंभे तो 'फळ' ए शब्द कोई एकाद के बे फळने लगाडवामां आव्यो हशे. ए समये तो 'फळ' ए शब्दथी घणीज अस्पष्ट जातिभावना उद्भवती होवी जोईए. जेम जेम नवी नवी व्यक्तिओने ए शब्द लागु थतो चाले छे तेम तेम जातिभावना स्पष्ट थती जाय छे. कांईक अंशे विसदृश एवी अनेक भावनाओनो एक शब्द साथे संबंध थाय छे, अने भावाधिगमनो व्यापार पुनः पुनः अनेक वार बने छे, त्यार पछीज ते शब्द सामान्यवाचक बनी शके छे.

सामान्यवाचक नामना उद्भवनो जे व्यापार बताव्यो तेमां हजु एक सुधारो करवानो बाकी छे. आपणे एम कल्पेलुं छे के बाळक पोते पोतानी

मेळेज, बीजा कोईनी साहाय्य विनाज पदार्थोने साथे साथे लावी तुलना करी ले छे. आ वात खरी छे. बाळको अनेक पदार्थो वच्चे साधर्म्य जोई शके छे, अने पोतानी मेळेज, बीजानी सूचना विनाज, एकनुं एक नाम तेवा सर्व पदार्थोने आपे छे. परंतु ए वात पण स्पष्ट छे के बाळकोना मनमां जे सामान्यो होय छे तेमांनां घणांक बीजानो व्यवहार जोवाथी, बीजाना प्रयोग सांभळवाथी, थई आवेलां होय छे. आवा प्रसंगमां पण सामान्यग्रहनो जे व्यापार ते तो प्रथमना जेवोज छे. 'मनुष्य', 'सारो छोकरो' इत्यादि शब्दोना अर्थ बाळक, ते ते शब्दोना जुदा जुदा प्रयोगनी तुलना करवाथी, अने अनियत अंशोने तजी नियत साधारण एवा अंशो उपर अवधान लगाडवाथी, ऊपजावी ले छे.

१२. अभिधानवाद अने सादृश्यवादः— सामान्य अथवा जाति, अथवा भावविचार, तेना स्वरूप विषे घणो मतभेद छे. आपणने जे सामान्यरूप ज्ञान थाय छे तेना स्वरूप विषेनी चर्चामांथी आ चर्चानो उद्भव छे. आपणा मनमां जे सामान्य— मनुष्य, वृक्ष, इत्यादि जातिरूप सामान्य— होय छे तदनुरूप कोई अर्थ दृश्यविश्वमां होय छे के नहि? मनुष्य ए सामान्यथी, आपणने व्यक्तिव्यक्तिरूप मनुष्यनुं भान थवा उपरांत कोई अधिक अर्थनुं भान थाय छे? केटलाक तत्त्वज्ञोए एम मान्युं छे के व्यक्तिथी अतिरिक्त एवी जाति— सर्वमय जाति— छे, तेनुं बाह्य अस्तित्व छे. राम, हरि, कृष्ण, आदि व्यक्तिथकी भिन्न एवुं 'मनुष्य सामान्य' बाह्य विश्वमां छे. आपणा नैयायिकोए पण "नित्य एक अने अनेकानुगत" ते सामान्य अथवा जाति एम मानी, जातिनी व्यक्तिथी अतिरिक्त सत्ता स्वीकारेली छे. आ मतने जातिवाद ए नाम आपवामां आवे छे. आथी विरुद्ध मत अभिधानवादीओनुं छे. तेमनुं कहेवुं एम छे के बाह्य विश्वमां व्यक्तिथी अतिरिक्त जातिनुं अस्तित्व छेज नहि. अमुक वर्गनी अनेक व्यक्तिमांथी गमे तेने लगाडी शकाय एवुं अभिधान तेज आ जातिनुं वाचक छे, बाकी जाति एवो अर्थ विश्वमां छे नहि.

वर्तमान समयमां आ वादने चेतनशास्त्रमां पण स्थळ मळ्युं छे. प्राचीन जातिवादीओने स्थाने सादृश्यवादीओ ऊभा थयला छे. तेमनुं कहेवुं एम छे के आपणा

विचार सामान्य होई शके; आपणा मनने व्यक्तिनुं ग्रहण करवा उपरांत सामान्य विचार बांधवानुं एटले के व्यक्तिओना वर्गनी भावना करवानुं पण सामर्थ्य छे. परंतु आवी जे सामान्य भावना ते एवा इंद्रियग्राह्य कोई बाह्य अर्थनी भावना छे एम नथी, मात्र भावकल्पनाज छे, एटले के अनेक व्यक्तिगत जे सादृश्य तेनीज भावना छे. आ मतनी विरुद्ध पण अभिधानवादीओ वाद करे छे. ज्यारे आपणे सामान्यवाचक शब्दो वापरीए छीए त्यारे पण आपणे अमुक व्यक्तिओनीज भावना मनमां आणीए छीए, जोके ते भावना अपूर्ण होय छे केमके व्यक्ति व्यक्तिना सामान्य धर्म उपरज सामान्यवाचक शब्दनुं लक्ष होय छे. सामान्यनुं स्वरूप समजवानुं तो, सामान्यवाचक चिन्होना उपयोगनो विचार करवाथी बनी आवे छे. अभिधानमात्र आवां चिन्हज छे, अने अनियत एवा कोई अनंत व्यक्तिना वर्गने लागी शके छे, एटले तेवां अभिधान अने तद्बोधित भावना तेनी साहाय्यथी आपणे सामान्य परामर्श करी शकीए छीए. जे अभिधान छे ते, आपणे जोयली तेम हवे पछी जोईए तेवी अनेक व्यक्तिनी भावनानुं चिन्ह थयलुं छे. जो आवी बधी भावनाओ एककालावच्छिन्न मनमां आवी शके ए वात चेतनशास्त्रना नियमानुसार संभवित होय तो, एम थवाथी तो विचारव्यापार (परामर्श) सारी रीते चालवाने बदले उलटो गुंचवाई पडे. विचारव्यापारमां अभिधाननो खरो उपयोगज ए छे के अनेक व्यक्तिनी अनेक भावनाने स्थाने एकरूपेज ते व्यवहार करी शके छे. आ प्रकारे जोतां सादृश्यवादनेज टेको आपवानुं कारण रहे छे. अभिधानवादीओ एम पण बतावी शकता नथी के सामान्यवाचक शब्दनो प्रयोग करती वखते आपणा मनमां शानुं भान होय छे, केटलाक कहे छे के अमुक व्यक्तिनुं भान तेना विशेषांशना अभानसमेत होय छे; केटलाक कहे छे के घणीक व्यक्तिनी भावनाओ होय छे. वास्तविक वात तो सादृश्यवादीनीज जणाय छे.

१३. भाषा अने चेतनशास्त्रः— आटली चर्चामांथी जणाय छे के विचारव्यापारमां भाषानो जे उपयोग छे ते कल्पनामां तेना उपयोगना जेवोज छे. जेम एक शब्द, अमुक चिन्ह अथवा लिंगरूपे, आपणने कोई दृश्यसंभवादिनुं स्मरण करावबामां अने ते स्मरेली वात बीजाने समजाववामां साहाय्य थाय छे, तेमज सामान्य चिन्हरूपे शब्द, सामान्य ज्ञान अथवा सामान्य विचारनो संग्रह करवा माटे अने एकबीजाने समजाववा माटे, उपयोगी थाय छे. कल्पनाने संबंधे भाषाना जे जे उत्कर्ष आपणने उपयोगी लागता हता तेज विचार ते संबंधे पण उपयोगी जाणवा. ध्वनिना सूक्ष्म अने स्पष्ट ग्रहण अने उद्भवन उपर, अने तत्सहकृत ध्वनिस्थानना योग्य व्यापार उपर, सूक्ष्म अने सुरेख विचारनो आधार नथी रहेतो एम नथी.

परंतु एटलुं जाणवुं जोईए के शब्द अने सामान्य वचनो संबंध, शब्द अने कल्पनाचित्र वचेना संबंध करतां वधारे निकट छे. अमुक बनावोनी परंपरानुं स्मरण करवामां, अमुक दृश्य चित्रोनी परंपरा उपरांत बीजुं कांई भाग्येज मन आगळ आवे छे, शब्दभावनानुं एटले शब्दबोधित अर्थनी भावनानुं एम अस्पष्ट चित्र ऊपजे छे. पण ज्यारे आपणे विचार करीए छीए त्यारे तो पदे पदे स्पष्टशब्दभावना उपरज बधो आधार रहे छे. आम होवानुं कारण आपणे हवणांज बतावी गया तेम सामान्य चिन्हरूपी शब्दस्वरूप अने सामान्य ते वचेनो निकट संबंध एज छे. सामान्य भावनाने तेना जुदा जुदा भागमां विखेराई जती अटकावी एकत्ररूपे राखनार प्राणरूप शब्द छे एम जाणवुं.

१४. भाषा अने वाणीः— पुनरुद्बोधरूप कल्पनानी चर्चाने प्रसंगे बतावबामां आव्युं छे तेम, सूक्ष्मसूक्ष्म तारतम्यथी नियत स्वरूपवाळा थयला श्रोत्रग्राह्य संस्कारो करतां भाषा कांईक अधिक छे. भाषानुं प्रत्यक्षव्यापारसाधकस्वरूप पण छे, जेने वाणी ए नाम आपवामां आवे छे. आ रीते जोतां भाषानां तत्त्वमात्र द्विरूप छे; वर्णस्थानव्यापार, अने तज्जन्य ध्वनि. आ ध्वनिरूप स्वरूप वधारे अगत्यनुं छे ए वात एटला उपरथी पण सिद्ध थाय छे के श्रोत्रग्राह्यचिन्हो विना बीजांज चिन्ह, जेवां के चाळाथकी जंगली लोको व्यवहार करे छे ते, अथवा मुंगां अने बेहेरांने समजाववा जे योजना करवी पडे छे ते, प्रयोजवामां आवे छे त्यारे तत्तद्ध्वनिने अनुरूप वर्णस्थानव्यापार सहजे थया विना रहेतो नथी.

आनो खुलासो ए छे के भाषा मंडळना संसर्गमांथी उद्भवे छे; मनो मननो संबंध करावबो, अने सार्वत्रिक अनुभव जेने ज्ञान कहीए छीए तेनो संग्रह करवो, ए तेनुं कार्य छे. भाषाने ज्यारे सामान्यवाचक चिन्होनी परिपूर्ण पद्धतिरूपे आपणे विलोकीए छीए त्यारे भाषा अने मंडलसंसर्ग वचेनो निकट संबंध स्पष्ट रीते समजाय छे. अमुक अमुक व्यक्तिरूप जे संस्कार ते एक एक व्यक्तिना के थोडीएक व्यक्तिना मननाज होय छे; ते काळ अने दिक्ना प्रसंगोने आधीन रहे छे. ज्ञाननो जे सार्वजनिक समुदाय ते तो अवश्य सामान्यरूपज होवो जोईए. अनेक व्यक्तिओना एक एक अवलोकन अने अनुभवने एकत्र करी सामान्य ज्ञानरूपे स्थापवामां आवे छे. आ प्रकारे व्यक्ति व्यक्तिना अनुभवने एकत्र करी एक आखा ज्ञानरूपे स्थापवानुं काम सामान्यात्मक वाणी विना बनतुं नथी.

आम होवाथी एम स्पष्ट जणाय छे के वाणीद्वारे द्विप्रकार व्यापार निरंतर चाल्या करे छे. एक पासा सर्वसाधारण वाणीना उपयोगथी मंडलसमस्तनुं मन व्यक्ति व्य-

क्तिना मन उपर असर करी शके छे, समस्त ज्ञानना भंडारमांथी व्यक्तिओने आपी शके छे, अने व्यक्तिनी बुद्धिने एकंदरे समस्त ज्ञानना नियत मार्ग उपर, " विचार-पद्धति "- ना स्थापित स्वरूप उपर दोरी लावे छे. आवो जे वाणीनो व्यापार तेमां शिक्षण अने बुद्धिनी केळवणीनो समास थाय छे. बीजी पासा सर्वसाधारण वाणीने अनुसरतां व्यक्तिओ पण ' विचारपद्धति '-ना सार्वजनिक धोरण उपर पोतानी बुद्धिने (जाणे के अजाणे) लावती जाय छे. कोई पण व्यक्ति ज्यारे ज्यारे सामान्यवाणी वापरे छे त्यारे त्यारे व्यक्तिनिबंधनविचारपद्धतिथी ते दूर जई मंडलनिबंधनविचारपद्धतिना केंद्र तरफ आकर्षाय छे. सामान्यवाचक वाणीनो प्रयोग करवो ए आ प्रकारे मंडळीने आवश्यक व्यापार छे, व्यक्ति करतां अधिक कांईक छे एम स्वीकार कर्यानुं चिन्ह छे. एटलुंज नहि पण व्यक्ति आ प्रकारे सामान्यवाणीनो उपयोग करे छे तेमां मंडळनुं परस्परोपकारकत्व पण स्वीकारे छे. आ प्रकारे वाणीनो उपयोग करवाथी व्यक्ति पोतानुं खास ज्ञान सर्वने उपयोगमां आवे ते रूपे बहार मूके छे; अने ए रीते " विचारपद्धतिना " नियतस्वरूप सुधी तथा वाणीना स्थापित वळण सुधी व्यक्ति पण पाछी पोतानी असर पहोचाडी शके छे.

१५. वाणीनुं शारीरशास्त्रानुसार स्वरूपः—वाणी अने विचार वच्चे जे निकट संबंध छे, ते वाणीना सहकारी तंतुव्यापारोथकी स्पष्ट समजाय एम छे. सामान्य विचार, दृष्टि अने कल्पनाना योगमांथी उद्भवे छे, एटले तेने शारीरशास्त्रवाळा तो दर्शन अने कल्पनानां संवाहक तंतुगतस्थानमांना केटलाक गुंफित व्यापाररूपे माने छे; अने एम पण माने छे के आवा जे गुंफित तंतुव्यापार तेनो आधार, जे वाणीस्थानो छे तेमनो व्यापार उक्त तंतुगतस्थानना व्यापारने अनुषंगे बने, ते उपर रहेछे. वाणीस्थानो छे ते, वर्णस्थाननी गति अने ध्वनिनो उद्भव ए बे कार्य साधे छे, एटले थोडे भागे संवाहकतंतुव्यापार करे छे ने थोडे भागे उद्वाहकतंतुव्यापार करे छे. चिकित्साशास्त्रानुसार एम जाणवामां आव्युं छे के वाणीस्थानोना अनामय पूर्णत्व उपर केटलाक उच्च प्रकारना बुद्धिव्यापारनो आधार रहे छे.

१६. मंडळ अने व्यक्तिमां भाषानो क्रमिक उत्कर्षः— भाषाने विचार-व्यापार साथे शो संबंध छे ए चेतनशास्त्रविषयक प्रश्नना निर्णयने, मंडळना इतिहासमां भाषानी उत्पत्ति कीये स्थाने थाय छे ए प्रश्नना निर्णय साथे घणो निकट संबंध छे. हर्डर आदि विद्वानोए आ विषयनो निश्चय करवा अनेक प्रयोग, शोध, आरंभेला छे, छतां ए प्रश्नना निर्णय अद्यापि थई शक्यो नथी. बुद्धिपूर्वक योजनाथकी भाषा उपजावामां आवी छे एवुं जे मत भाषापूर्वे पण बुद्धि एटले विचारशक्तिनो उत्कृष्ट विकास

थयलो होवो जोईए एम मानी ले छे ते, तेमज एथी विरुद्ध मत के वाणीस्थान अने वाणीना अस्तित्वपछीज विचारनो संभव थाय छे ते, ए उभये एक तरफी अने अयथार्थ छे एम आपणे निःशंक कही शकीशुं. वाणीस्थानना अस्तित्वमात्रथी, मगजनी स्थिति अने विचारनी शक्तिना थोडा पण अनुरूप विकास विना, भाषानो विकास थवोज जोईए एवो कांई निश्चय नथी. बीजी पासा एम पण छे के भाषानी साहाय्य विना बुद्धिशक्ति केवळ सादा मूलरूप करतां आगळ वृद्धि पामी शके नहि. अर्थात् वास्तविक वात एज छे के भाषा अने विचार उभये परस्परोपकारक छे.

व्यक्तिनामां विचारशक्तिनी वृद्धि अने भाषाशक्तिनी वृद्धि तेना संबंध विषे आलोचना करती वखते उक्त प्रश्ननुं रूप जराक फरी जाय छे. आ स्थाने तो भाषा अने विचार उभय शक्ति साथे साथे विकसती चाले छे. मंडलसमस्तमां प्रथम पहेलां भाषानो विकास थतो चालेलो ते समये वस्तुगति केवी होवानो संभव छे ए वात, व्यक्ति पोते पण पोताने जणाता वस्तुसादृश्यना वाचक एवा पोतेज कल्पेला शब्दो उचारीने दर्शावे छे; परंतु आवी जे स्वकल्पित स्वाभाविक भाषा तेने, बीजा लोको जे भाषा वापरे छे ते पोताना उपयोग माटे स्वीकारीने व्यक्ति पोतानी मेळे तजती चाले छे. अने ए वात स्पष्ट छे के अति उत्कर्ष पर्यंत पहोचेली संपूर्णवत् भाषापद्धति जेमां अनंत युगथी स्थपाता आवेला विचारभेद अने विचारसंबंध संग्रहायला होय छे तेने शीखवानो क्रम नवा नवा विचार उद्भवे तेम नवा नवा शब्द फांफां मारी योजता जवा ए क्रम करतां अत्यंत जुदा प्रकारनो छे. भाषा प्राप्त करवानो जे आ व्यापार ते द्वारे विचारशक्तिनो विकास पण अतीव उत्कृष्ट रीते वधतो चाले छे. अमुक वस्तु तथा तेना संबंधो—" कार्य "—" कारण "—ए आदि विचारो बाळकने, ते पोते तेमने जाणी शके के समजी शके ते पूर्वे घणा समयथी परिचित थई जाय छे.

अत्र भाषा अने विचारना विकासपरत्वे जे बे क्रम बताव्या तेथकी, चेतनशास्त्रविषयक जे मुख्य प्रश्न छे के पदार्थोवाचक शब्दो प्रथमे शी रीते उद्भवेला? व्यक्ति व्यक्तिनां नाम रूपे (विशेषनाम रूपे) ? के जाति—वर्ग—ना नामरूपे (सामान्य नामरूपे) ? व्यक्ति पोते प्रथम पहेलां शब्दप्रयोग करे छे त्यारे, कांईक अंशे बिसदृश एवी अनेक वस्तुना वाचक सामान्य शब्दो प्रयोजनारा लोकनो व्यवहार तेनी दृष्टि आगळ विद्यमान होय छे, एथी घणी गुंचवण ऊठे छे. संभव एवो लागे छे के बाळक पोते, आरंभे तो, पोताने जे वस्तुसादृश्य समजाय ते बतावनाने शब्दो प्रयोजे छे. अने आ प्रमाणे बाळकनुं जे करवुं ते, अमुक समय पछी तेनी ते वस्तु जोवा-

मां आवे, अथवा जुदी जुदी वस्तु जोवामां आवे, तथापि एक सरखुंज रहे छे. बाळक बा, बा, कहेतुं होय छे ते पोतानी माने थोडा समय पछी देखे तो पण कहे छे, तेमज बीजां गमे ते बैरांने पण कहे छे. " तेनी ते " अने " तेवी " वस्तु वच्चेनो भेद बहु समय पछी तेना लक्षमां आवे छे.

१७. भावाधिगमनां तारतम्यः— जे दृश्यपदार्थवाचक सामान्य छे तेमां, आपणे जोई आव्या तेम, सुविज्ञात एवो थोडोज तुलनाव्यापार होय छे. हळ, श्वान, इत्यादि सामान्य प्राप्त करवामां बाळकने वैधर्म्य वीसारे पाडवुं कठिन लागतुं नथी. ए प्रसंगमां तो वैधर्म्यने साधर्म्य अभिभव पमाडे छे, अने भावाधिगमव्यापार झाझो करवो पडतो नथी. विकल्पव्यापार ज्यारे आथी पण आगळ लई जवो पडे छे, अने आथी वधारे विदूर एवां साधर्म्य उपर दृष्टि करवानो प्रसंग आवे छे, त्यारे भावाधिगम माटे सविशेष प्रयास करवानी अपेक्षा ऊपजे छे. उदाहरण. हळ, करवत, कोदाळी, आदि ओजारोमां शुं साधर्म्य छे, अथवा श्वान, बिडाल, अश्व, आदि चतुष्पादमां शुं साधर्म्य छे, ए नक्की करवामां बालकने बहु प्रयासपूर्वक सूक्ष्म विचार करवानी, अने घणाक स्पष्ट वैधर्म्य उपरथी दृष्टि खसेडी लेवानी, अपेक्षा रहे छे. एकंदरे एम कही शकाय के जेम जेम तुलना करवाना पदार्थोनी मर्यादा विस्तार पामती जाय छे तेम तेम साधर्म्य न्यून थतुं जाय छे. अने एम थवाथी साधर्म्य करतां वैधर्म्य जेम वधारे वधारे बहार पडतुं आवे छे तेम भावाधिगम माटेनो प्रयास वधारे वधारे करवो पडे छे.

भावाधिगमथी, छेवट, पदार्थोने आपणे कोई एकरूप जे प्रकृत एक वस्तुने तेम बीजी एक वस्तुने साधारण होय ते रूपे अवलोकी शकीए छीए. उदाहरण. वर्तुल, रंग, रूप, इत्यादि, आवा धर्म एक एकपरत्वे ओळखवामां आव्या होय त्यां विशेषणना प्रयोगथी ते वात बतावामां आवे छे. ज्यारे बाळक पोताने रमवाना दडाने गोळ कहे

छे, के पोतानी गाडीने भारे कहे छे, त्यारे ते अमुक पदार्थना कोई एक धर्म उपर पोतानुं मन लगाडी शक्युं छे एम जणाय छे. आमां पण तुलना अने सामान्याधिगम तो छेज, पण अस्पष्ट छे. बाळके जो घणीक गोळ वस्तुओ जोई न होय, अने गोळ होवा संबंधे तेमनी तुलना करी न होय तो, ते पोताना दडाने गोळ कही शके नहि. अने कोई वस्तुने गोळ कहेवी एटलामांज गोळ वस्तुओना आखा वर्गनुं कहेनारने कांईक भान छे एम स्पष्ट समजाय छे. भावाधिगमनी आटला उत्कर्षपर्यंत आवेली शक्तिथी बाळक विकल्पव्यापारने आगळ वधारी शके छे, अने पोते प्राप्त करेली दृष्टिओनुं पृथक्करण करी जातिभावना सुधी पहोचवानुं तेने सामर्थ्य अेंपे छे एटलुंज नहि, पण जातिभावनानुं पण पाछुं सादा धर्मरूपे पृथक्करण करी जातिना अमुक गुण के धर्म गणी बतावनी शक्ति तेनामां ऊपजावे छे. ' जळ ' एटली सामान्य भावनानुं पृथक्करण करी बाळक प्रवाही, पारदर्शक इत्यादि धर्मरूपे वर्णन करी शके छे.

१८. भाववाचक नामनो उद्भवः—रातुं, गोळ, इत्यादि विशेषण अने रताश, गोळपणुं, इत्यादि, ते उपरथी थयलां नाम तेनी वच्चे नैयायिको तफावत माने छे. रातुं, गोळ इत्यादिने व्यक्तिवाचक नाम कहे छे, अने रताश इत्यादिने भाववाचक नाम कहे छे. परंतु चेतनशास्त्रवाळा तो ए उभयने एकना एकज भावाधिगम व्यापारना बे प्रकार माने छे. ' भारे वस्तु ' अने ' भार ' ए बे विचारमां कशो महत्वनो भेद नथी. धर्मने धर्मीथिकी भिन्न कल्पी शकातोज नथी. परंतु भाषानी साहाय्यथी अनेक वस्तुगत साधारणधर्मने आपणे जुदो कही शकीए छीए, अने आश्रयभूत व्यक्तिना भानने तत्काल माटे भूली जईए छीए. गुण, स्थिति, क्रिया, धर्म, इत्यादिनां जे नाम बनी आवे छे तेमां आ भाषाव्यापारनुं उदाहरण स्पष्ट छे; एज भाववाचक नामरूपे गणाय छे. भावाधिगमनो व्यापार तेज आ भाषाव्यापार छे एम मानवानुं बीजुं पण कारण छे के व्यक्तिवाचक नामना उद्भव पछीज भाववाचक नामनो उद्भव संभवे छे तथा बाळक व्यक्तिवाचक नामना प्रयोग पछी घणे काळे भाववाचक नामनो प्रयोग करे छे.

१९. भावाधिगम अने सामान्याधिगमः— भावाधिगम अने सामान्याधिगमना संबंध विषे बहु विवाद थयलो छे. सामान्यना उद्भवनो जे क्रम आटले सुधी बतावामां आव्यो तेमां तो ए उभयने घणो निकट संबंध समजाय छे. परंतु प्रश्न ए छे के भावाधिगममां सर्वदा सामान्याधिगम अर्थात् होवोज जोईए? डुगॉल्ड स्टुअर्ट लखे छे: "कोई माणसे एकज गुलाब विना बीजा गुलाब जोया न होय ते, एम छतां पण, गुलाबना रंगने तेना बीजा गुण करतां निराळे विचारी शके; अर्थात् एकी वखते भावरूप छतां व्यक्तिरूप होय एवी भावना पण न होय एम न कहेवाय." परंतु एम धारवानुं कशुं कारण नथी के अनेक वस्तुओनी तेमना रंगपरत्वे तुलना करेली न होय तो पण आपणे गुलाबना रंगने जुदो विचारी शकीए. बालक कोई पदार्थना रूप के रंगने तेना साथेना बीजा धर्म विना एकलाज लक्षमां लावी शकतुं नथी. सामान्याधिगमशक्तिनो घणो विकास थया विना ए प्रमाणे बनवुं अशक्य छे. तुलना अने सामान्याधिगम ए बे व्यापारथी प्राप्त करेला अनुभवना बळ वडे आपणे कोई पदार्थना धर्मने बीजा धर्मोदिथी भिन्न करी एक रूपे विचारी शकीए छीए. आम छे माटे एम कही शकाय के भावाधिगममां गमे तेवो अज्ञात पण, सामान्याधिगमव्यापार रहे छेज. कोई एक व्यक्तिना अमुक धर्म उपरज विचार स्थिर करवामां आपणे ते व्यक्तिने, व्यक्तिरूपे विलोकवी मूकीने, अनेक अन्य व्यक्ति साथे विलोकवा लागीए छीए. कोई एक व्यक्तिना रूपना कोई अंशने जुदो विचारीए त्यां पण आनुं आज बने छे, केमके 'रूप'—रूपे ते अंशने विलोकवामां आपणे कोई प्रकारनो सामान्याधिगमव्यापारज करीए छीए. आगळ कहेवामां आव्युं हतुं के विकल्प करवो, एटले के कोई पदार्थनो अमुक धर्म लक्षमां लेवो, ए व्यापारमां संकल्प पण अनुगत छे, केमके ते धर्मपरत्वे ते पदार्थने अन्य पदार्थो साथे आपणे योजीए छीए;— आवुं जे आगळ कहेवामां आव्युं हतुं तेनुं तेज प्रकारान्तरे अत्र पण फलित थयुं.

२०. संकल्प सहकृत सामान्यः—आपणां घणांक सामान्यमां विकल्प अने भावाधिगमना व्यापार उपरांत संकल्पनो व्यापार पण विद्यमान होय छे. एटले के भावाधिगमथी प्राप्त थता भावने नवा आकारे गोठववानी अपेक्षा रहे छे. उदाहरण. इतिहासनो अभ्यास करतां अवलोकन अने भावाधिगमनी साहाय्यथी प्राप्त थता भावमांथी "मोगल बादशाह", "झमीनदारी सिस्टम" आदि विचार ऊपजावी लेवा पडेछे.

संकल्पद्वारे गुंफित सामान्योना उद्भवनो आ क्रम, घणेक प्रसंगे, कल्पनाव्यापारना भेगोज चाले छे. कल्पनाथकी प्रथमे कोई एक अथवा अनेक चित्र ऊपजाववामां आवे छे, अने ते उपरथी सामान्यना रूपना निर्णय संभवे छे. "मोगल बादशाह", "ज्वालामुखी पर्वत" इत्यादिना विचार उपर एज प्रकारे आपणे आवीए छीए. घणीक वार कल्पना नथी पण होती. स्पष्ट गृही शकाय एवी भावनानी पार ते वखते, सामान्यनुं स्वरूप गयलुं होय छे.

२१. परिमाण अने संख्यानो भावः—कल्पनानी मर्यादा पार पण सामान्य जाय छे एम जे कह्युं तेनुं उदाहरण मो'टा परिमाणवाळा पदार्थो अने ते परिमाणनी भावना बांधवामांथी मळी आवे छे. नानां परिमाण,-एक मकान, सीपाईनी एक पार्टी, एक गज, एक मण,—तेमज नाना समय—एक क्षण, एक कलाक—ते बधांनो आधार तो दृष्टि अने कल्पनाचित्र उपरज रहे छे; पण नगर, ग्रह, प्रजा, सूर्यथी पृथ्वी सुधीनुं अंतर, सैको, इत्यादि विषेनी जे भावना ते कोई पण स्पष्ट चित्रने मळती आवती नथी. एक प्रकारनो अनंत परिमाणरूप रकमोनो सरवाळो, के जे मात्र सहजोपलब्धिगम्यज रहे छे, तेथकी आवा विचारने आपणे कांईक पहोची शकीए छीए. उदाहरण. पृथ्वीना गोळ विषेनी भावना लाववामां आपणे कोई परिचित परिमाणथी आरंभ करीए छीए अने एवां परिमाण उपर परिमाण उमेरता होईए एवो व्यापार करी जेवी तेवी भावना ऊपजावी लेईए छीए.

जे मो'टी संख्याओ विषे आपणे विचार बांधीए छीए तेना व्यापारमां आ प्रकार स्पष्ट रीते आपणने प्रतीत थाय छे. आगळ बतावामां आव्युं छे तेम नानी नानी संख्याओने तो दृश्य वैधर्म्यवाळी अमुक वस्तुओ रूपे आपणे सहजोपलब्धिथकी कल्पी शकीए छीए. एकना

एक जथानी जुदी जुदी रचनाओ के एक एकथी जुदी पडती वस्तुना घणा जथा, तेमनी तुलना करवाथी, आवी संख्या विषेनी भावना सहजे बनी आवे छे. एम छतां, आवी नानी संख्याओपरत्वे पण, एक प्रकारनो संकल्पविकल्प नथी होतो एम नथी, एवुं आपणा दीठामां आव्युं हतुं. आपणे पांच अथवा छ ए संख्याने एक अंकरूपे त्यारे समजी शकीए छीए के ज्यारे आपणे तेनो उद्भव पांच के छ एकमना सरवाळाथी थयलो छे एम जाणीए छीए. वीश, सो, हजार, इत्यादि मो'टी संख्याने संबंधे तो आ जे सरवाळो करवानो व्यापार तेज ए एक संज्ञानो अर्थ थाय छे. सो ए अंक कोई दृश्य उपलब्धिनो बोध करतो नथी. कल्पनामां आवी शके एवा एकमना आंकडानो सरवाळो अथवा गणतरी करवाना एक लांबा क्रमना, कल्पी न शकाय एवा फलरूपे ते प्रतीत थाय छे.

संख्या विषेना आपणा विचारोमां आवी सविशेषता रहे छे एनुं प्रमाण ए छे के व्यक्ति तेम मंडळ उभयनी वृद्धिना क्रममां संख्यानुं ज्ञान बहु मोडुं उद्भवे छे. उदाहरण जोईए तो साडात्रण वर्षनुं, साधारण रीते अक्कलवाळुं अने अवलोकन करनारुं तथा पदार्थोनां परिमाण (बे माणसनी उंचाई इत्यादि) नी तुलना करवाने पण समर्थ, एवुं बाळक संख्याना संबंधो समजवाने केवळ अशक्त मालुम पड्युं हतुं. एक, बे, त्रण, एम मोढे बोलतां तेने शीखववामां आवेलुं हतुं, तथापि ते गणना मात्र दृश्य पदार्थोने संबंधेज ते करी शकतुं हतुं. बाकी एमने एम तो संख्याने परिमाण साथे पण ते सेळभेळ करी देतुं हतुं. एक दिवस त्रण जुदां जुदां परिमाणवाळा मणका देखतां तेणे नानामां नानाने 'चार' कह्यो, तेथी मो'टाने 'पांच' कह्यो, अने सर्वथी मो'टाने 'छ' कह्यो. जंगली लोको पोतानां ढोर वगेरेमां घटाडो थाय ते समजी शके छे, कारण के

प्रत्येक ढोरने ते ओळखता होय छे, परंतु पांच उपरांत गणतरी करतां तेमने क्वचित्ज आवडती होय छे; अने दशनी पार तो कोई पण जई शकता नथी. आ उपरथी एम मानवानुं कारण मळे छे के गणतरी प्रथमे बे हाथनी आंगळीओ गणवामांथी ऊपजी आवी हशे, केमके इंगितमात्रथी अर्थबोध करवानो जे भाषानो प्रथम क्रम ते समये आंगळीओथीज संख्या बनाववी सुलभ पडती हशे.

एटलुं पण ऊमेरवुं जोईए के परिमाण अने संख्या विषेना केटलाक विचारोमां अत्र बताव्या करतां उलटोज क्रम नजरे आवे छे. एक परमाणु अथवा एक मिलीमिटर इत्यादिनी कल्पना आणतां, सहजोपलब्धिगम्य एवा कोई पूर्ण अंकने आपणे तोडी नाखीए छीए अथवा विभजीए छीए अने कल्पनानी मर्यादानी पार ए व्यापारने लई जईए छीए. अपूर्णांकथी बतावववामां आवतां सर्व नाना परिमाण विषे पण एनुं एज जाणवुं. $\frac{1}{2}$ ने अनुरूप कल्पना आपणे करी शकीए छीए केमके कोई आखा पदार्थना त्रण भाग थयला आपणे धारी शकीए छीए; पण $\frac{1}{100}$, $\frac{1}{1000}$, इत्यादि तो स्पष्ट रीते कल्पनानी मर्यादानी पारज छे.

एक बीजा प्रकारना विचारोना उद्भवपरत्वे आ संकल्पव्यापारनो जराक जुदो क्रम नजरे आवे छे. भूमितिमां जेने सीधी लीटी कहे छे, वर्तुल कहे छे, ते भावना कोई पण दृश्य आकृतिने मळती आवती नथी. भूमितिमां सीधी लीटीनी जे व्याख्या आपी छे तेने दृश्य विश्वमांनी कोई पण लीटी मळती आवती नथी. घणामां घणी संभाळथी दोरेली लीटी पण, सूक्ष्म दृष्टिए जोतां, व्याख्यामां कहेली लीटी करतां कांईक जुदी जणाशे. एम समजाय छे के आवां जे सामान्य ते जे सादा भावाधिगमथी रंग, गुरुत्व, आदि भावनो अधिगम थाय छे ते करतां कोई अधिक व्यापारनुं फळ छे. भावाधिगम उपरांत कल्पितोत्कर्षनो पण

एमां व्यापार रहे छे. भूमितिना अभ्यासीने शुद्ध सीधी लीटी विषे विचार करतां एवा परमोत्कर्षने पामेली कोई सीधी लीटीनी कल्पना ऊठावची पडे छे के जेवीने प्रत्यक्ष दीठामां आवती सारामां सारी सीधी लीटी पण कांईक अंशे मळती आवी शके. आ प्रकारे प्राप्त करेलुं सामान्य मो'टी संख्यानी भावनानी पेठे, कल्पनामर्यादानी पार गयला मनोव्यापारनुं फळ छे, एम समजाय छे.

पदार्थविज्ञानशास्त्रमां सपाटी, शुद्ध द्राव, नक्कर पदार्थ इत्यादि भावनुं पण एमज समजवानुं छे. आवां सामान्य मनमां ऊपजावती वखते पण भावाधिगमना फळ उपरथी कल्पितोत्कर्षद्वारे आपणे विचार बांधवो पडे छे; स्पष्ट कल्पनामां न ऊतरी शके एवा पण शास्त्रीय तर्कने सर्वथा उपयुक्त उत्कर्ष कल्पवा पडे छे.

कल्पनामां आवी शके तेवां सामान्य, अने कल्पनामां न आवी शके तेवां सामान्य, तेमनी वच्चेनो जे भेद छे, ते संज्ञारूपज्ञान अने सहजोपलब्धिरूप ज्ञानभेद साथे संबंध राखे छे. त्रण ए संख्या, के त्रिकोण ए आकृतिनुं ज्ञान आपणने सहजोपलब्धिगम्य छे; पण सहस्र के सहस्रपार्श्वाकृति, तेनुं ज्ञान तो मात्र संज्ञारूपज छे. आ भेदने स्पष्ट करनार लीबनीट्झ कहे छे के संज्ञारूप ज्ञान करतां उपलब्धिरूप ज्ञान वधारे पूर्ण होय छे; विचारव्यापारपरत्वे कल्पनानो केटलो उपयोग छे ते ए उपरथी समजाय तेम छे.

२२. सामान्य अने वैधर्म्यग्रहः— पदार्थगत साधर्म्य उपर लक्ष राखी, वैधर्म्यने वीसारे पाडी, सामान्य ऊपजाववामां आवे छे एवुं कहेवामां आव्युं छे. छतां सामान्यने ऊपजाववाना व्यापारमां थोडे घणे अंशे पण वैधर्म्यग्रहनो संबंध नथीज होतो एम नथी. उदाहरण. 'प्राणी' ए सामान्य ऊपजाववामां आपणे अनेक विसदृश पदार्थोने साधर्म्यना कारणथी संयोजीए छीए एटलुंज नथी पण ते पदार्थोने, तेवा धर्म न होवाने लीधे विसदृश एवा अन्य पदार्थोथी जुदा पण पाडीए छीए.

युरोपियन विषे आपणे बोलीए छीए त्यारे अनुक्त पण युरोपियन नहि तेवा सर्वनो आक्षेप थया विना रहेतो नथी. वास्तविक वातज एम छे के अमुक धर्मना अस्तित्वने लईने, जे पदार्थोमां तेवा धर्म न होय ते थकी उक्तधर्मवाळा पदार्थोने जुदा पाड्या विना, कोई वर्ग बांधी शकातोज नथी. ज्यां विरोध चोखो होय छे—भारे-हलकुं, मीठुं-मोळुं, सारुं—नठारुं,—त्यां वैधर्म्यग्रहनो आ व्यापार स्पष्ट समजी शकाय छे. कोई पदार्थने 'हलकुं' ए सामान्यमां आणवा माटे तेने 'भारे' ए सामान्यथी विरुद्ध मानवोज जोईए. आम छे माटे सिद्ध थाय छे के सामान्याधिगमना व्यापारमां यद्यपि साधर्म्यग्रह मुख्य छे तथापि वैधर्म्यग्रहनो पण थोडो गौण व्यापार नथी एम नथी.

जैनसंमत स्याद्वादमां जे अपेक्षावाद छे ते अत्र लक्षमां लेवा सरखो छे. तेमना मतमां पदार्थमात्रनी स्थिति आपेक्षिक छे. पदार्थने ते मतवाळा सामान्यरूपे माने छे, पण प्रत्येक सामान्य तेम प्रत्येक व्यक्ति पोताथी अन्य सर्वनो आक्षेप अपेक्षाथी करे छे. अश्व एम कहेतां अनश्वनो पण आक्षेप थाय छे. एटले तेमनी परिभाषा प्रमाणे पदार्थमात्र सदसत्रूप छे. पोताना स्वभावकालादिथी वस्तुमात्र सत् छे, परना स्वभावकालादिथी असत् छे. अश्व अश्वत्वरूपे सत् छे, अनश्व एवां घट, पट, गो, वृषभादि रूपे असत् छे. एम आ मतमां सामान्याधिगमना व्यापारमां साधर्म्यग्रहनी मुख्यता अने वैधर्म्यग्रहनी गौणता प्रकारान्तरे स्वीकारमां आवेली छे, ते जोवाथी अत्र जे वक्तव्य छे तेनुं तात्पर्य वधारे स्पष्ट थई शकशे.

२३. सामान्यविन्यासः वर्गीकरण अने विभागः— पदार्थोनां साधर्म्यवैधर्म्यनुं नियमित निरीक्षण करवामांथी जेने वर्गीकरण अथवा विभाग कहे छे ते ऊपजी आवे छे. वस्तुओना वर्ग पाडवा एनो अर्थ एज छे के तेमनां साधर्म्यवैधर्म्य स्पष्ट रीते प्रतीत थाय ते रीते तेमनी निरीक्षा करवी.* थोडामां थोडी व्यक्तिने लागु थती न्यून श-

* वर्गीकरण ए शब्दथी वाचके भ्रममां न पडवुं. वर्ग पाडवा ए बाह्यविश्वस्थ पदार्थोने साथे साथे लावी नाखवानी वातरूपे समजवानुं नथी. ए तो एक प्रकारनो केवळ मानसिक व्यापार छे.

क्तिवाळा सामान्यथी वधतां वधतां उत्तमोत्तम शक्तिवाळा सामान्यपर्यंत जवानी एक क्रमिक श्रेणिद्वारे आ कार्य संपादित थाय छे. धारो के आपणी आगळ हळ, पावडो, इत्यादि सामान्यो विद्यमान छे; आपणे तेमने एमना करतां अधिक शक्तिवाळा "कृषिकर्मोपस्कर" ए सामान्यना पेटामां मूकी शकीशुं. हवे आ उपस्कर उपरांत बीजां सूथारनां उपस्कर, वैद्यनां उपस्कर, यंत्र, आदि लईए, तो पाछुं ए बधानो समास "उपस्कर" एटलाज एक सामान्यना पेटामां कराय. जे वर्ग कोई बीजा वर्गना पेटामां समाय ते, ते वर्गनी अपेक्षाए, अपरसामान्य कहेवाय; अने उपलो वर्ग, नीचलानी अपेक्षाए, परसामान्य कहेवाय. आ आखा व्यापारने प्रत्येक पदे आपणे, अमुक वैधर्म्यने लीधे परस्परथी भिन्न एवां अपरसामान्योने साथे साथे लावी, कोई एक एवा सर्वानुगत साधर्म्यने लीधे, कोई परसामान्यना पेटामां समावीए छीए.

अपरसामान्यथी परसामान्य उपर जवाना क्रममां आपणे वैधर्म्यने विदूर करता जईए छीए, अने अधिकाधिक शक्तिवाळा साधर्म्य उपर लक्ष देता चालीए छीए. पण सर्वोत्कृष्ट शक्तिवाळो कोई परसामान्य* रूप वर्ग लई नीचे ऊतरते ऊतरते आपणे तेना अनेक अपरसामान्यरूप विभाग करी शकीए. कळा ए वर्ग लीधो, तो तेना प्रथम बे विभाग थायः उपयोगी कळा अने साहित्य कळा. ए प्रत्येक विभागना पण पाछा विभाग थाय. साहित्यना पाछा बे विभाग थायः चक्षुःसहकृत

* एवा सामान्यने अत्रत्य नैयायिको नित्य माने छे अने सत्ता एवुं नाम आपे छे. ए सत्तानां अपरसामान्य मात्र त्रणज माने छेः द्रव्य, गुण, कर्म; अने बाकीना चार पदार्थः सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव, तेमने सत्ता—जाति—नथी एम कहे छे; अर्थात् ते तो एक संबंधमात्रनां नामज छे एम माने छे. अत्र अमुक ने सामान्य होय के अमुकने न होय ए तकरारनो अवकाश नथी केमके सामान्य अथवा जाति तेने व्यक्तिथी भिन्न मानवामां आवती नथी.

(चित्र, शिल्प, कोतरणी) अने श्रोत्रसहकृत (काव्य अने गान). परसामान्यथी अपरसामान्य उपर आववाना व्यापारनेज विभाग एवुं नाम आपवामां आवे छे. विभागनो व्यापार, धीमे धीमे वैधर्म्यने विदूर करवाथी चालतो नथी पण एक एक वैधर्म्य ऊमेरता जवाथी चाले छे.

एटलुं स्पष्टज छे के अपरथी पर उपर जवामां आपणे एक प्रकारनो विकल्पव्यापार करता चालीए छीए, एटले के गुंफित एवी भावनाओने लई लईने तेमांथी कोई एक एक साधारण धर्म ग्रहता चालीए छीए. आथी उलटी रीते परथी अपर उपर ऊतरवाना व्यापारमां, उक्त विकल्पव्यापारनी अनुपूर्तिरूप जे संकल्पव्यापार ते करता चालीए छीए. एटले के पदे पदे नवा नवा धर्म ऊमेरी नवां नवां सामान्य ऊपजावीए छीए. आ रीते वर्गीकरण अने विभागना व्यापारमांथी पण, विकल्प अने संकल्पने केवो निकट संबंध छे, ते एकज व्यापारनां केवां गौण मुख्य अंग छे, ए वात आपणे स्पष्ट रीते जोई शकीए छीए.

प्राणिशास्त्र अने उद्भिज्जशास्त्रमां जे वर्ग बांधवामां आवे छे तेमा आवा क्रमिक व्यापारनुं स्पष्ट दर्शन थई शके छे. छतां गमे तेवा सामान्यना पण एवाज विभाग न थई शके एम न जाणवुं. घर, पुस्तक, भाषा, इत्यादि सामान्योना अनेकानेक प्रकारे विभाग करी शकाय. भाववाचक शब्दथी जे सामान्योनो बोध थाय छे तेना पण एवा विभाग बनी शके छे. रंग अथवा गुणना पण वर्ग करी शकाय छे. कोई पण सामान्यना आ प्रकारे विभाग करवाथी आपणे तेनां साधर्म्यवैधर्म्य स्पष्ट बतावी शकीए छीए, अने ते सामान्यवाच्य पदार्थबोध सारी रीते करी शकीए छीए.

२४. सामान्यनी पूर्णापूर्णताः—आपणने जे सामान्य प्राप्त थाय छे ते अनेकानेक रीते अपूर्ण होवानो संभव छे. दृष्टि अथवा कल्पना करतां

सामान्यो संबंधे आवी अपूर्णता होवानो घणो संभव छे. जेम दृष्टि अने कल्पनामां अपूर्णताने लीधे अयथार्थता आवी जायछे, तेम सामान्यनुं पण जाणवुं. सामान्याधिगमना व्यापारना स्वभाव उपरथी, अने ए व्यापारना फळने भाषाद्वारे दर्शाववामां आवे छे तेथी, सामान्यो अपूर्ण रहेवानो संभवज छे. नित्यव्यवहारमां साधारण रीते, कांई स्पष्ट अर्थ मान्या विना पण शब्दप्रयोग थाय छे. घणाक परामर्शव्यापार, अमुक शब्दश्रेणि उपर दृष्टि करतानी साथे थई जायछे. आम छे एटले अपूर्ण अथवा अस्पष्ट सामान्यो उद्भववानो अवकाश छे.

केटलांक सामान्य तो प्रथमथीज अपूर्ण होय छे, केमके तेमनी प्राप्तिने अंगभूत एवो जे भावाधिगमव्यापार तेज प्रथमथी पूर्ण रीते थयलो होतो नथी. आपणे सर्वे, घणुं करीने, अन्ये करेला शब्दप्रयोगने आधारे आपणां सामान्य ऊपजावी लईए छीए, एटले पण सामान्यबोधित पदार्थो विषे अस्पष्ट भान होवानो घणो संभव छे. घणीक वस्तुने एकनो एक शब्द लगाडातो जोईने बाळक, ते सर्व वस्तुगत साधर्म्यने यथार्थ समजी शके ते पूर्वेज, कोई अस्पष्ट भासमात्र प्राप्त करी ले छे एटलुंज नथी पण जेम जेम समय वीततो जायछे तेम तेम स्पष्ट अर्थवाळां सामान्य, घसाते घसाते, अस्पष्ट अने अपूर्ण अर्थभान करावनारां बनी जायछे. हवे आपणे आवी बधी अपूर्णताओ विषे अने तेमने सुधारवाना उपाय विषे विचार करवाना छे.*

स्पष्ट, सुरेख, अथवा पूर्ण सामान्यनो अर्थ ए छे के तेमां ए सामान्यनां अंगभूत तत्त्वमात्र स्पष्ट रीते भावनामां उदय पामी शके छे. धातु अथवा छोडनुं आपणने स्पष्ट सामान्य छे, केमके धातु अने छोडने ते ते

* आ चर्चा न्यायनो विषय छे; केमके न्यायमांज बाह्य एवा कोई सत्यधोरणानुसार आंतरव्यापार चलाववानो विचार छे परंतु जेमना व्यापारथी बाह्य सत्य साथे आंतरव्यापारनी अनुरूपता बनी आवे छे ते व्यापारनो विचार चेतनशास्त्रने पण कर्तव्यज छे.

रूपे स्थापनार तत्त्वनुं आपणने स्पष्ट भान छे. एथी उलटी रीते कोई पण विचार अस्पष्ट, विकृत, अथवा अपूर्ण, त्यारे कहेवाय के ज्यारे तद्वाच्य पदार्थनुं तत्त्व आवी रीते स्पष्ट भासतुं होय नहीं.

सामान्यनी स्वतः जे स्पष्टता हवणां कही बतावी तेवीज स्पष्टता सामान्य सामान्य वच्चे पण होवी जोईए; अर्थात् कांईक अंशे सदृश एवा अन्य सामान्यो साथे सेळभेळ न थई जतां तेने सामान्य स्वरूपे स्पष्ट रहेवुं जोईए. आपणने ग्रह विषेनुं स्पष्ट सामान्य त्यारे थयुं कहेवाय के ज्यारे बीजा तारानुं जे सामान्य आपणा मनमां होय तेनाथी तेने ओळखी जुदे जुदुं ग्रही शकाय. आथी उलटी रीते कोई पण सामान्य त्यारे अस्पष्ट कहेवाय के ज्यारे तत्सदृश अन्य सामान्योमां ते सेळभेळ थई जाय. नियमितराजसत्ता विषेनुं आपणुं सामान्य, अनियमितराजसत्ताना सामान्यमां सेळभेळ थई जाय त्यारे ते अस्पष्ट छे एम कहेवाय.

ए तो उघाडुंज छे के, साधारण रीते जोतां, आ बे प्रकारनी जे स्पष्टता ते एक एकने आश्रयेज रहे छे. जेटले अंशे कोई पण सामान्य स्वरूपे स्पष्ट हशे तेटले अंशे ते अन्य सामान्योथी भिन्न थई शकशे. छतां आवो जे परस्पराश्रय ते देखायछे तेटलो दृढ नथी.

कोई पण सामान्य स्पष्ट छे के नथी एनो निर्णय आपणे जे सरलताथी ते सामान्यनो प्रयोग करी शकिए, अथवा तद्वाच्य व्यक्तिमांनी गमे तेने तुरत ओळखी शकीए, ते उपरथी थाय छे. एकंदर जोतां, एक अथवा बीजा प्रकारनी जे अस्पष्टता होय तेनाथी, आ प्रकारे शब्दप्रयोग करवामां विघ्न आवे छे. जातिविशिष्टतामां अस्पष्टता होवाथी व्यक्तिविशिष्टतामां पण अस्पष्टता आवे छे. आ वात वास्तविक छे, परंतु अस्पष्ट सामान्य ज्ञान छतां पण आपणे व्यक्तिओने अभिधानथी ओळखी शकीए छीए. उदाहरण, बाळक अथवा कोई अभण माणस 'फळ.' ने

एकदम ओळखी शकशे, जोके फलत्व सामान्य विषे ते भाग्येज कांई पण कही शकशे. आ उपरथी एम समजाय छे के कोई पण सामान्य, स्पष्टतानो जे प्रथम अर्थ बताव्यो तेपरत्वे द्वितीय अर्थ जेटलुंज स्पष्ट होवा विना, द्वितीय प्रकारनी स्पष्टतानुसार स्पष्ट होई शके. सामान्यांगभूत भावना तद्बोध्य अभिधानने अन्य अभिधानोथी भिन्न समजी शकवा जेटली तथा पदार्थोने साधारण रीते लागु करी शकवा जेटली स्पष्ट होई शके छे; मात्र तें भावनानुं पृथक्करण करी तेना सर्व अंश समजी शकाता नथी.

एम पण कही शकाय के आवी रीतनुं जे सामान्य होय ते संपूर्ण रीते उद्भूत नथी, केमके कोई दृष्टिना अंगमां तेनो समास छे ने तेथी ते दृष्टिनी विद्यमानता उपर आ सामान्यना भाननो आधार छे. आपणे आगळ बताव्युं हतुं के घणांक माणस तेना ते पदार्थने केटलेक समये जोतां पाछो ओळखी शकेछे, अने ते पदार्थनी अविद्यमानताना वचला समयमां कल्पी शकतां नथी; तेमज तेवां माणस पदार्थने प्रत्यक्ष देखे त्यारे त कीया वर्गनो छे ए कही शके अथवा तेना वर्ग करी शके, पण कोई वर्ग विषेनी भावना, ते वर्गनी कोई पण व्यक्ति विद्यमान न होय तो करी शके नहीं.

जे अपूर्णता विषे चर्चा चाले छे ते, आगळ बतावेलां बे कारणमांना गमे ते कोई कारणथी उद्भवेली होय छे. घणांक सामान्य, तदनुरूप दृष्टि अने कल्पना अस्पष्ट होवाने लीधे, अथवा कोई पदार्थवर्गना साधारण धर्म स्पष्ट रीते गृही शके एवो भावाधिगमव्यापार सारी रीते न थवाने लीधे, प्रथमथीज अस्पष्ट होयछे, भावाधिगमव्यापारनी खामीने लीधे सामान्यनी अस्पष्टता होवानो जे संभव छे ते बाळक अने निरक्षर लोको-परत्वे वारंवार बनी आवे छे. सामान्य शब्दोनी साहाय्यथी, व्यवहार पुरती रीते, जुदा जुदा पदार्थोने ते ओळखी शके छे, परंतु तेमणे पोते जे सामान्योनो प्रयोग करे छे तेना तत्त्वविषे कदापि विचार कर्यो होतो नथी.

पण वळी सामान्यो कालक्रमे, तथा स्मरणशक्तिनी अपूर्णताए, अस्पष्ट थतां जायछे. आपणे हवणांज जोयुं तेम एकना एकज शब्दसाथे अनेक

भावनाओ संलग्न रहेवाथी कोई एक सामान्यनां तत्त्व एकरूपे भेगां रही शके छे. आ जे साहचर्यबंधन ते शिथिल थतां के तूटी जतां सामान्य पण अस्पष्ट थई जाय के अस्त पामी जाय. शब्द साथेना बंधनमांथी एक अथवा बधी भावनाओ छूटी पडी जाय अने अस्त पण पामी जाय, तो भावना अथवा कल्पनारूप पोषणने अभावे सामान्य पण अस्त पामे. अथवा कदी भावनाओ रहे तोपण शब्दरूप चिन्ह साथे तेमनो संबंध दृढ रहेतो नथी, अने ते परस्परथी भिन्न थई जायछे, अने एकत्र पिंडरूपे प्रतीत न थतां, एक पछी एक आवता क्रमरूपे प्रतीत थायछे. आम थवाथी जे सर्वसाधारण साधर्म्यांश तेनी भावना एटले के सामान्य ते भुसाई जई अस्पष्ट थायछे. आ प्रकारे कालक्रमे करीने सामान्य पोतानुं जे मूलरूप——अनेक कल्पनाचित्रनी श्रेणि——ते उपर जायछे.

सारे संस्कारे पहोंचेली भाषानी अनिवार्य उपाधिरूप जे दोषोथी सारामां सारी भाषा पण मुक्त होती नथी ते भाषास्वभावने लीधे पण, कालक्रमने लीधे थई आवती आ अस्पष्टताने साहाय्य थायछे. भाषामात्रनो उद्देश विचार विचारना अंतर स्पष्ट रीते दर्शाववा एवो होयछे; एटले जेना अर्थ थोडे थोडे अंशे एक बीजामां आवी जता होय एवा, अथवा अतिसूक्ष्म रीते समजी शकाय एवा, एकज वस्तुना अथवा वस्तुसंबंधना झीणा झीणा भेद दर्शावता, एक करतां वधारे शब्दो प्रत्येक भाषामां विद्यमान होयछे. प्रजा, मंडळी, ए बे शब्दोज जुओ. निरक्षर बुद्धिवाळो माणस आ शब्दोनो अति अस्पष्ट अर्थभास कल्पेछे; बे वच्चे कांईक अंतर छे एम तेने लागेछे, पण केवो ने केटलो छे ते तेनाथी समजातुं नथी.

एटलुंज नथी पण भाषानी अपूर्णता, भाषाना दोष, अने भाषामां चालती पुनरुक्तिओ, ते सर्व पण आ अस्पष्टतामां ऊमेरो करेछे. शब्दोनुं व्यर्थत्व, एकना एक शब्दमां घणा श्रमथी समजाय तेवा नाना प्रकारना

अनेक अर्थ सूचववानुं सामर्थ्य, तेथकी अस्पष्ट सामान्यो उद्भववानो अति घणो संभव छे एम विचारव्यापारप्रवीण पुरुषोए स्वीकारेलुं छे. एम पण कहेवुं जोईए के भाषानी पुनरुक्तिओथी, एटले के पकडी शकाय तेवा कोई अर्थांतर विनाज एक करतां वधारे शब्दो भाषामां चालता होयछे तेथी पण आ अस्पष्टता वधेछे. परस्परने विसदृश एवी बे संज्ञा (शब्द) साथे एकना एक सामान्यनो संबंध थायछे, छतां संज्ञाना जुदापणाने लीधे भान एम थई आवेछे के सामान्य पण, एक नहि पण जुदे जुदां, बेज हशे.

सामान्योमां पण, कल्पनानी पेठे, साधारण अस्पष्टता अने खरेखरी अयथार्थता वच्चे तफावत करी लेवो आवश्यक छे. स्पष्ट सामान्यनो आधार तेनां जे तत्त्व छे ते सर्वनी यथायोग्य भावना थवा उपर छे, यथार्थ सामान्यनो आधार ते तत्त्वोने बराबर ग्रहवा उपर छे. याथार्थ्यनुं अत्र तात्पर्यज ए छे के आखा वर्गना जे साधारण धर्म ते बधा, अथवा वधारे चोकस रीते कहीए तो, ते शब्दना चालता अर्थथी जेटला धर्मनो बोध थतो होय ते बधा, यथार्थ सामान्यमां आवेला होवा जोईए. अथवा तेनी ते वात बीजी रीते कहीए तो यथार्थ सामान्य ते कहेवाय के ए सामान्यमां जेटला शब्दोनो समास थई शकतो होय ते प्रत्येकने अथवा तेमांना हर कोईने ते लागु थई शके तेवुं होय, अने तेटला शब्दो विना बीजा कोईने लागु न थाय.

याथार्थ्यनुं व्यवहारोपयोगी स्वरूप आटलाथी समजवुं सहज छे. छतां एटलुं स्पष्ट छे के आ याथार्थ्यनो बे प्रकारे संबंध रहेलो छेः एक पासा वस्तुओमां जे धर्म वास्तविक रीते होयछे तेनी साथे, तेम बीजी पासा वस्तुओना जे धर्म धारवामां आवेछे तेनी साथे, सामान्यने संबंध होयछे. माणसोमां घणाक, अने नानी वयनां बालकमात्र, तेमने माटे तो एटलुंज बस छे के वस्तुओमां जे धर्म धारवामां आवेछे तेने अनुरूप तेमना मनमांनां सामान्य होय एटले थयुं. भाषाना व्यवहार साथे तेमनी सामान्य भावनाओ मळती आवे एटलेथीज तेमने चालेछे. पण थोडाक एवा बुद्धिमान् माणसो पण होयछे के जे, पदार्थोनुं वधारे संपूर्ण अने यथार्थ ज्ञान मेळवी, शब्दोना व्यावहारिक अर्थमां सुधारो

करेछे, अने साधारण रीते चालतां सामान्योने वस्तुगति साथे वधारे यथार्थ रीते वेंच बेसतां करी आपेछे.

आरंभमां जे तुलना अने भावाधिगम थायछे ते व्यापारमां खामी होवाने लीधे, अथवा पछीथी सामान्यभावनामां कोई प्रकारे शिथिलता के भ्रष्टयवापणुं पेशी जाय तेथी, सामान्यनुं अयाथार्थ्य ऊपजी आवेछे.

२३. अपूर्ण भावाधिगमथी थतुं अयाथार्थ्यः—भावाधिगम-व्यापार अपूर्ण होय तो सामान्य अयथार्थ थई आवेछे. आपण सर्वने जे सामान्यो प्रथम प्राप्त थाय छे ते अयथार्थज होयछे, केमके अपूर्ण रीते करेली तुलनाना फलरूपे ते होयछे. आम होवाथी एवां सामान्य अयथार्थ होयछे एटले के ते सामान्यना पेटामां जेटली व्यक्ति आवती होय ते सर्वने बदले तेथी अधिक के न्यून व्यक्तिने ते सामान्य लागु थतां होयछे. ज्यां सामान्य न्यून व्यक्तिने लागु थतुं होय त्यां अव्याप्तिदोष जाणवो, ज्यां सामान्य अधिक व्यक्तिने लागु थतुं होय त्यां अतिव्याप्तिदोष जाणवो.

सामान्यो, वस्तुओना अति टुंकाज अवलोकनथी ऊपजावेलां होय, ने तेथी आखा वर्गनी प्रत्येकव्यक्तिमां न होय एवा औपाधिक धर्म पण ते व्यक्तिना असाधारण धर्मरूपे सामान्यमां आवी गया होय. जे बाळके मात्र राता गुलाबज जोयाछे ते 'गुलाब' ए सामान्यनो 'रताश' ए असाधारण धर्म छे एम मानेछे. एज रीते केळवणी न पामेलो कोई अंगरेज के हिंदु राज्य एटले अमुक राजानो अधिकार एमज मानी लेछे. आवां जे सामान्य ते अव्याप्तिदोषवाळां जाणवां.

आथी उलटी रीते कोई सामान्य, लक्ष्य करतां अधिक व्यक्तिने लागु थई अतिव्याप्तिदोषवालुं पण होय. पदार्थावलोकन उपरचोटीयुं अने त्वरित होय, तो ते पदार्थोना अभिधान (सामान्य) मां तेमना साधारण धर्ममांनो थोडोक भागज आवे छे. बाळक अने निरक्षर माणस तेमनां सामान्य अति-

व्याप्तिवाळांज होयछे. जे शब्दोना प्रयोग तेमना सांभळवामां आवे छे ते उपरथी ते शब्दना जातिविशिष्टत्वनो कोई भागमात्रज ते गृही लेछे. 'माछलुं जळमां रहेछे' एटलुंज ते जुवेछे अने ते उपरथी सीलने पण माछलुं कहेछे.

२४. सामान्यभावनानी शिथिलता के भ्रष्टताथी अयाथार्थ्यः— प्रथमथीज सामान्यो, आ रीते, भावाधिगमादिना दोषने लीधे, अयथार्थ होयछे एटलुंज नहि पण पाछळथी पण कालक्रमे करीने सामान्यगत तत्त्वोनी शिथिलता के *भ्रष्टताथी सामान्यो अयथार्थ थई जाय छे. सामान्यवाचक शब्द अने ते सामान्यबोधित व्यक्तिओ वच्चेनी अनुरूपता आवी शिथिलता के भ्रष्टताने लीधे ओछी थती चालेछे. बीजी रीते कहेतां एम कहेवाय के सामान्योमां अतिव्याप्तिदोष आवेछे; जेम जेम सामान्यनामोनां तत्त्व ओछां थतां चालेछे तेम तेम तेमां मूळ करतां वधारे वधारे व्यक्तिओनो समास थतो चालेछे. "स्वार्थी" ए शब्दना मूल अर्थमां स्व—पोता—ने, बुद्धिपूर्वक उद्देशीने के जाणी जोईने पोताना सुख अथवा लाभ माटे जे कर्युं होय तेज समायछे; छतां तेने वीसरी जई केटलाक लेखको परार्थ एवां कार्यने पण 'स्वार्थी' ए विशेषण लगाडेछे. आटलुंज नथी पण आवी भ्रष्टताने लीधे एक सामान्य अन्य सामान्यने मळतुंज थई जायछे, अने तेम थवाथी ते ते सामान्याभिधानो वच्चे पाछी गरबड ऊपजी आवेछे. सामान्यनां तत्त्वोमांथी सर्वथी प्रथमे ते तत्त्वो नीकळी जवा मांडेछे के जेने लीधे ते सामान्य ते रूपे सिद्ध रहेलुं छे, अने अन्यसामान्योथी जुदुं ऊभेलुं छे. आम थवाथी एवा सामान्याभिधान साथे संबंध राखनारा शब्दोमां गरबडाट थई आवेछे. 'परार्थकारी' अने 'अर्थकारी' ए बे शब्दो वच्चे, प्रथमना शब्दमां रहेलो

* आ शब्द अत्र तेना मूलार्थे समजवो. भ्रंश एटले छूटा पडवुं, भ्रष्ट छूटा पडेला; एटले भ्रष्टताथी एटले छूटा पडी जवाथी.

'आंतर शुभ वासना' नो अर्थ मूकी देवाथी सेळभेळ गरबड थवानो संभव छे.

सामान्योमां अयाथार्थ्य केवी रीते प्रवेश पामेछे ए विषेनी आटली चर्चाथी एटलुं समजाय छे के जेने सामान्यनी अस्पष्टता कहेवामां आवीछे तेनी साथे अत्र जेने अयथार्थता कहेवामां आवेछे तेनो निकट संबंध छे. ज्यां सामान्य स्पष्ट न होय अथवा अन्य सामान्योथी भिन्न रही शके तेवुं सुरेख न होय, त्यां अयाथार्थ्यने अनुकूळ सामग्री तैयारज छे एम जाणवुं.

व्यक्ति व्यक्तिना मनमां शब्दो अने सामान्योना क्रमनो जे इतिहास जणाय छे ते, ते शब्दो अने सामान्यो मंडलसमस्तमां जे इतिहासनां पात्र थाय छे तेनी साथे सरखावावाथी केटलीक जाणवाजोग वात मालुम पडे एम छे. शब्दार्थने वधारवानी जे क्रियाने 'सामान्याधिगम' ए नाम आपवामां आवेछे ते, जेने सामान्यमर्यादा अधिक व्यक्तिपर्यंत पहोचवा रूपे आपणे वर्णवी आव्या, तेना जेवीज क्रिया छे, केमके एमां पण अमुक प्रकारे केटलाक अंश मूली जवानीज वात छे. एथी उलटी रीते 'व्यक्तिस्थापन'मां नवा नवा धर्म ऊमेरवा पडे छे अने शब्दनुं व्यक्तिवाचकत्व न्यून थतुं जायछे. व्यक्तिने पण आने अनुरूप ए क्रिया बने छे के प्रसंगे प्रसंगना जुदाजुदा अनुभवथी ते पोताना विचारोने चोकस करती चालेछे.

आटली बधी चर्चामांथी सार ए नीकळे छे के पूर्ण अने यथार्थ अभिधानो (सामान्यो) एकज तुलनाव्यापार तथा भावाधिगमव्यापारनां फळ होतां नथी, पण घणाक तेवा व्यापारनां फळ होयछे; तेवा व्यापारक्रमथीज मूळनी अस्पष्ट भावना स्पष्ट थायछे अने शब्दार्थमां भ्रष्टता थवाना जे संभव ते विदूर रहेछे. अयथार्थ शब्द(सामान्य)ने, अवलोकेला पदार्थोनुं वधारे सूक्ष्म अवलोकन करवाथी, तेमज पदार्थोनां साधर्म्य-वैधर्म्य अनेकानेक रीते तपासी जोवाथी, यथार्थ करी शकाय छे.

वळी सामान्य पूर्णरूपे बंधाया पछी पण, ते स्पष्ट अने यथार्थ रही शके तेटला सारुं, जे दृश्य पदार्थोमांथी तेमनुं तत्त्व काढवामां आव्युं होय ते उपर पुनः पुनः दृष्टि करवानी अपेक्षा रहेछे. आम करवाथीज व्यक्तिवि-

हीन नाममात्रने पदार्थरूपे मानवानी चूकथी आपणे दूर रही शकीशुं; अने आपणा मनमांनी सामान्यभावनाने ताजी अने स्पष्ट राखी शकीशुं. दर्शन अने कल्पनाद्वारे, दृश्यवस्तुगति साथे निरंतर संबंध राखवाथी, सामान्यो नित्य ताजां थतां चालेछे. व्यक्तिओने संबंधे पुनः पुनः शब्दोनो प्रयोग करवाथी आपणां सामान्यो स्पष्ट अने सजीव रह्यां करेछे. विचार करवो अने कल्पना करवी ए बे एक वात नथी, छतां विचारनो आधार कल्पना उपर छे, अने कल्पनाथी तेने छूटो पाडी शकाय एम नथी. स्पष्टसामान्य होवानुं तात्पर्यज ए छे के प्रसंग पडतां प्रत्यक्ष थई शके तेवी कल्पनानी सामग्री ते सामान्यनी पाछळ तैयार छे. कोई पण शब्दनो दृश्यपदार्थरूप अर्थ आपणे त्यारेज करी शकीए छीए के ज्यारे कोई एक पण दृश्य उदाहरण आपणे कल्पी शकीए.

२५. सामान्यनो कल्पना साथे संबंधः—आटले सुधी जे चर्चा थई तेमांथी कल्पना अने विचार वच्चेनो संबंध वधारे स्पष्ट थई आवेछे. एटलुं तो आपणे जोई आव्या छीए के सामान्य अने कल्पना वच्चे, अनेक साधारणधर्मनी भावना अने एकनाज धर्मनी भावना एटलो, तफावत छे. ज्यारे कोई शब्द दृश्यव्यक्तिनुंज भान करावेछे, अने आखा वर्गनी भावनानुं भान करावतो नथी, त्यारे विचारव्यापारमां विघ्न आवेछे. कल्पनाप्रवण मन कोई पण संज्ञा(शब्द)ने तुरत दृश्यव्यक्तिरूपे धारी लेछे, एटले तेवा मनमां केवळ अव्यक्तभावरूप विचारव्यापार सारी रीते चाली शकतो नथी. व्यक्ति व्यक्तिना अनेक रसमय सहकारी उपर लक्ष लागवाथी, सर्वव्यक्तिने साधारण एवा धर्म लक्षमां आवता नथी.

ए पण खरुं छे के सामान्योनो प्रभव कल्पनामांथीज थायछे. विचारव्यापारनो पायोज कल्पना छे. शब्दनो अर्थ दृश्य व्यक्तिओना अवलोकनमांथीज ऊपजावेलो होयछे. अर्थात् कोई पण सामान्य पूर्ण, स्पष्ट, अने

स्थिर, होई शके ते माटे तेने कल्पनाचित्रथकी निरंतर टेको मळतो रहेवो जोईए. प्रत्येक शब्दमां अनेक कल्पना ऊपजाववानुं सामर्थ्य रहेवुं जोईए, पछी गमे तो एवा सामर्थ्यथी ऊपजती कल्पनाओ परस्परविरुद्ध होय तो पण भले. विचार अने कल्पना वच्चे ज्यारे आवो प्राण जेवो संबंध बंधायछे त्यारेज मन, व्यक्तिहीन शब्दोनी जालमां फसाया विना विचारव्यापार चलावी शकेछे.

२६. लक्षणनिर्देशः—दृश्य वस्तुगतिनो पुनः पुनः विचार करवाथीज सामान्यभावना स्पष्ट थायछे एम नथी पण जेने एकंदर 'लक्षणनिर्देश' एवुं नाम आपी शकाय तेवी बीजी केटलीक अनुपूर्तिरूप क्रियाओनी पण अपेक्षा रहेछे. न्यायशास्त्रानुसार बोलीए तो कोई शब्दनुं लक्षण करवानुं तात्पर्य ए छे के ते शब्दनुं जातिविशिष्टत्व जेटलुं होय तेटलुं बतावबुं, एटले के ते शब्दना अर्थमां जेटला धर्मनो समास होय ते बधा बतावबा. 'धातु', 'मनुष्य', 'सुधरेलो देश,' इत्यादि अनेक सामान्य शब्दो आपणे, ते ते शब्दनुं संपूर्ण जातिविशिष्टत्व समजता पूर्वे पण ऊपजावीए छीए, ए तो आगळ कहेलुंज छे. ते ते शब्दनुं जातिविशिष्टत्व समजवामां जे विकल्पव्यापारनी अपेक्षा छे ते, मनमां भावाधिगम करवानुं सामर्थ्य वधेछे त्यार पछीज पूरी पडी शके छे. भावाधिगमव्यापार थाय ते पछी सामान्यनुं तत्त्व शब्दद्वारे लक्षमां रहेछे. बाळक एम शीखे के काच ए पारदर्शक पदार्थ छे, अमुक पदार्थोथी बनेछे, बरड छे, अग्निथी ओगळे तेवो छे, सारो ऊष्मावाहक नथी, इत्यादि, त्यारे शब्दस्मृतिद्वारे संगृहायला आ बधा धर्मो काचसामान्यने स्पष्ट करवामां सहाय थायछे. ज्यां पदार्थना अनेक धर्म होय त्यां तो कोई एक मुख्य धर्मने लईनेज सामान्य बंधायछे, ने लक्षण घडायछे.

लक्षणनिर्देशना व्यापारनो एक बीजो गौण क्रम ए छे के कोई पण सामा-

न्यने बीजां सामान्योथकी भिन्न रूपे ओळखी शकाय तेम करवुं. कोई पण शब्दनो चोकस अर्थ त्यारेज समजी शकाय छे के ज्यारे ते शब्दने तेथी उलटा शब्द साथे सरखाववामां आवे अने बीजा सदृश शब्दोथकी भिन्न करी लेवामां आवे. ' डाह्यो ' ए शब्दनो स्पष्ट अर्थ तेने ' मूर्ख- ' नी साथे सरखाववाथी अने 'पंडित' आदि शब्दोथी भिन्न पाडवाथी, थई आवेछे.

छेवट वस्तुओनी कोई वर्गपद्धति रची होय ते परत्वे आपणा मनमांनां सामान्योने विलोकवाथी पण तेमनी आकृति वधारे स्पष्ट थती चाले छे. नैयायिको एम कहे छे के कोई पण वर्गवाचक शब्द(सामान्य)नुं लक्षण करवामां, (विशेषे करीने ज्यां ते शब्दना धर्म अनेक होय अने बराबर जाणी शकाय तेवा न होय त्यां), सारो रस्तो ए छे के ए शब्दनुं जे अपरसामान्य ते लई तेमां, ए शब्दने अन्य शब्दोथी जुदो पाडनार जे धर्म होय, जेने विशेष कहेवायछे, ते ऊमेरवो. समचाजुचोखुणनुं लक्षण करवामां एम कही शकाय के चार बाजुवाळी जे आकृति (अपरसामान्य) नी साम सामेनी बाजु समांतर होय (विशेष) ते समचाजुचोखुग. आवां लक्षणोथी लक्ष्य वस्तुना केटलाक मुख्य धर्म लक्षमां दृढ थाय छे, अने ते सामान्य अन्य सामान्यथी भिन्न थई शकेछे. वळी कोई शब्दना विभाग करवाथी, अथवा ते शब्दना व्यक्तिविशिष्टत्वथी समजाता वर्गमात्र बनाववाथी, एक रीते लक्षण बनी आवेछे. सामान्यो व्यक्ति व्यक्तिना अवलोकनमांथीज उद्भवेछे एटले कोई पण शब्दथी जेटली व्यक्तिओनो बोध थतो होय तेनुं सामान्यतः सूचन करवाथी पण सामान्यभावना स्पष्ट थई आवेछे. बाळकने ' धातु ' जेवा कोई शब्दनो अर्थ समजावतां त्रांबुं, पीतळ, लोहुं, एम जुदी जुदी जातो तेना लक्षमां ऊतारवी ए वधारे ठीक पडेछे. वास्तविक रीते जोतां, लक्षण करवामां,

जातिविशिष्टत्व बतावबुं, अथवा व्यक्तिविशिष्टत्व बतावबुं ए उभये व्यापार परस्परोपकारक छे.

२७. भावाधिगमव्यापारनां अन्य फळ: आत्मविचार:—जे भावाधिगमव्यापारथी बाळक, बाह्यसृष्टिना पदार्थोने तेमना साधर्म्यानुसार योजतां शीखेछे, तेज व्यापारथी तेने आंतर सृष्टि अर्थात् पोतानुं मन, पोतामां रहेलुं चेतन, तेनुं पण भान थायछे. ए तो आपणे आगळ जोई आव्या छीए के पोताने लागती अनुकूलता प्रतिकूलतानी वृत्तिनुं स्थान पोतानो देहज छे एम दर्शन थवाथी तेना मनमां आत्मा (पोतापणा)नो विचार ऊपजवा मांडेछे. आवो बीजवत् आत्मविचार ते पण बहु धीमे धीमे प्राप्त थायछे. प्रो. प्रीअर बतावेछे तेम बाळकने प्रथमथी पोताना देहनुं भान, पोतानी अनुकूलता प्रतिकूलतानी वृत्ति साथे संबद्ध कोई पदार्थरूपे होतुं नथी. एक वर्षनी वयना तेना बाळके पोतानाज हाथने जाणे ते पारको होय एम, बचकुं भर्युं हतुं. बाळक, आरंभे पोता विषे वात करतां पोताना नामथी वात करे छे ते समयमां आवुं बनवानो संभव रहेछे. ए समये बाळक पोताने बधा बाह्य पदार्थोथी भिन्न, अने ते सर्वथी विरुद्ध, मानतुं नथी, पण तेमांनुंज एक पोते पण होय एम माने छे.

जेम जेम भावाधिगमनी शक्ति वधती चालेछे, तेम तेम आत्मभावना वधारे वधारे संपूर्ण थती चालेछे, अने तेनां आंतर एवी मानसिक वृत्तिओ आदिनी भावनानो पण समास थवा मांडेछे. प्रथमे तो बाळक पोतानी आंतरवृत्तिओ उपर कांई लक्ष आपतुं नथी. तेने हर्ष शोक थायछे खरा पण क्षणिकज. क्षण पछी ते तेमना विषेनी तमाम वात भुली जायछे. तेनुं ध्यान बाह्य पदार्थोमां पाछुं जामी जायछे. आंतर सृष्टिनुं अवलोकन करवामां कांई, ज्ञानपूर्वक, श्रम करवानी अपेक्षा रहेछे, बाह्य सृष्टि उपरथी अवधानने ऊठावी लेवानो प्रयत्न रहेछे. आ जे प्रयत्न ते केटलोक समय

गया पछी बनी शकेछे, अने घणुं करीने केटलीक वृत्तिओना उद्बोधनी साथेज ते थतो आवेछे. कार्य साधवामां जे कांई स्वाभाविक अहंवृत्ति थायछे, ना'नी ना'नी रमतो पार ऊतारवामां जे संतोष लागेछे, ते सर्वथी आत्मभावना स्पष्ट थवामां साहाय्य मळती चालेछे, अने ए रीते प्राप्त थता विचारने स्पर्धाथी, तथा तद्दंते प्राप्त थता विजयादि भावथी, अधिक पूर्णता मळती जायछे. परसंसर्गनी असरथी पण आत्मभावना संपूर्ण थायछे*. नीतिशिक्षण अने तेना अनुषंगे थई आवता स्तुतिनिंदाना प्रसंग ते थकी, सविशेषे करीने, आत्मभावना पूर्ण थवामां साहाय्य मळेछे. ज्यारे बाळक पोतानांज कृत्य उपर, ते केवा हेतुथी उद्भव्यांछे ए विलोकवा माटे, आंतर दृष्टि करी विचार करवा समर्थ थायछे, त्यारे संपूर्ण आत्मभावना तेना लक्षमां उदय पामेछे. भाषाना प्रयोगथी पण आरंभे बाळकने आ भावनामां थोडी साहाय्य थायछे एम नथी, हुं अने तुं एवा शब्दोनो परस्परविरुद्ध प्रयोग करातां जोईने पण बाळकनी आत्म(हुं)भावना बंधायछे. त्रणेक वर्षनुं वय थतां, बाळक पोताना नामथीज पोता विषे वात करतुं हतुं तेने बदले, हुं मारुं इत्यादि शब्दो प्रयोजी शकेछे एज बतावेछे के आत्मभावना स्पष्ट थवा लागीछे.

अविकृत नित्य आत्मा;—एक समये बहारनी असरो प्राप्त करनार, एक समये हर्षशोकनी आंतर वृत्तिओ अनुभवनार, एक समये बाह्य कार्य साधनार हेतुरूप, छतां नित्य अविकृत एवा आत्मानी भावना

* सरखावो:—

हतो बाळ तो सुधु भासतुं,
वध्यां वर्ष ज्ञान मळ्युं उंधुं,
परभाव मन बनीयुं कुडुं,
मळे बाळपण पाछुं क्यां जई,

प्रेमजीवन.

थवामां उक्त भावाधिगम करतां पण अधिक भावाधिगमव्यापारनी अपेक्षा छे. सर्वदा एकनो एक अने सर्वदा विद्यमान एवा देहरूपी आत्मानी भावनाथी अविकृत आत्मभावनामां घणी साहाय्य थई आवेछे. वृत्ति ऊर्मि आदि विकारमात्रमां सर्वदा एकरूप एवा चेतनमय आत्मानी केवळ मानसिक, भावनाए पोहोचता पूर्वे तो स्मरणशक्तिनो अमुक उद्बोध होवो जोईए, भूतकालना जाति अनुभवोने मुख्यरूपे पुनः स्मरवानुं सामर्थ्य आवेलुं होवुं जोईए. आवा जे भूत अनुभव तेनी अनंत श्रेणि उपरथी अवधानने दूर करी, आखी श्रेणिमां जे अंतर्गत सर्वसाधारण कांईक छे, जेनाथी ए आखी श्रेणि श्रेणिरूपे छे, तेना उपर लक्ष करवुं जोईए.

२८. परविचार:— एक रीते कहीए तो अहं ए व्यक्ति बीजी बधी व्यक्तिओ, चेतनवाळां मनुष्यो समेत, तेनाथी विरुद्धज छे. बाळक अहं अने त्वं—हुं अने तुं—तेने तो ओळखी शकेछे. छतां आत्मज्ञान पोता विषे—हुं एवुं—ज्ञान तेज, परज्ञानमां साधनभूत छे; पारकाने पण जड पदार्थ करतां कांईक अधिकरूपे, वृत्ति ऊर्मि आदि अनुभवनार चेतनरूपे, समजवामां आत्मज्ञान ए पण कारण छे.

आपणा विनानां अन्य मनुष्योने पण ज्ञान अने जीवन छे एवुं सहजज मानी जवायछे. आपणे धीमे धीमे जोईशुं तेम बाळको एकंदरे सामानी वृत्तिओना अर्थ करी लेछे; पोताने तेवी वृत्तिओनो अनुभव थई ते ते वृत्तिरूप संज्ञा कीया संज्ञीनी बोधक छे ए जाणता पूर्वे पण अर्थ करी लेछे. एटलुंज नहीं पण कोई पण प्रकारे जेनामां मनुष्याकृति के मनुष्यव्यापार जेवुं समजाय तेवा बाह्यपदार्थमात्रने बाळक जीवन, वृत्ति, हेतु, आदि आरोपेछे. आवी रीते बाह्यपदार्थोने जे जीवारोपण थायछे ते बाळक पोते पोताना बेवडा अनुभवने लीधे करेछे: पोताने पण द्विप्रकार—चेतनमय, जडमय,—जीवन छे, तेम सर्वने होवुंज जोईए.

जेम जेम बुद्धिमां वधारो थायछे अने बाळक पोतानां वृत्ति, इच्छा अने हेतु उपर विचार करवा समर्थ थायछे, तेम तेम सामा माणसोमां पण तेवां चिन्ह जोतानी साथे ते ते वृत्ति, इच्छा, हेतु आदि आरोपतां शीखेछे. पोतानां माता पिता आदिनी जे भावना पोताना मनमां होय तेनी अंदर आगळ जते जते, बाळक, पोतानी अविकृत आत्मभावना उपरथी, अविकृत आत्मा कल्पी ले छे. आथी पण आगळ भावाधिगम-व्यापार चलावतां आत्मप्रकारनी भावना थाय छे, डाह्या, प्रेमी, सारा, इत्यादि आत्माना विचार उद्भवे छे.

२९. सामान्याधिगमशक्तिनी वृद्धिः—आपणे जोई आव्या छीए तेम, जे शक्तिथी मन सामान्योने प्राप्त करे छे, ते शक्ति, दर्शनादि मूळ बुद्धिव्यापारमां जे बीजरूपे जोवामां आवे छे, तेनाज अधिक विकास रूप छे. आ आखा मनोव्यापारनुं तत्त्व ए छे के अनेक वैधर्म्यमांथी साधर्म्यने पकडी लेवुं. आ व्यापार बाळक पोतानी वयना प्रथम वर्षमांज करी शकेछे. पोतानी माताना शब्दने अनेक प्रकारना ध्वनि वच्चे 'तेनो ते' एम ओळखी लेवो एमां थोडो पण बीजरूप भावाधिगम छेज.

पदार्थो अने वर्गनुं ज्ञान पामवुं, अथवा सामान्यो प्राप्त करवां, ते माटे जे शक्ति तेनो जे क्रमिक विकास ते तपासवो, ए, व्यक्तिना मनोविकासरूप इतिसहानुं घणुं रसिक पानुं छे. बाळको शब्दोने समजी प्रयोजवा मांडे ते समयमां तेमनुं योग्य अवलोकन करवामांथी आ शक्तिना विकासना क्रम विषे घणुं जाणवामां आवेछे.

बुद्धिविकासना आ क्रमनी आलोचना करतां एक भूल थवानो संभव छे तेथी सावधान रहेवानी जरूर छे. आगळ बतावामां आवेलुं छे के आखा मंडळे जे रीते भाषा प्राप्त करेली तेज रीते बाळको भाषा प्रयोजतां (बोलतां) शीखतां नथी, एटले के पोते प्रथम पहेलां जे वस्तुसाधर्म्य देखे ते उपरथी नवा नवा शब्दो योजीने वापरवा मांडे एम (बाळको परत्वे) बनतुं नथी. बाळकने हाथ तो तैयार भाषाज आवे छे, एटले अनुकरणबले, तथा पोतानो अर्थ स्पष्ट रीते समजाववा माटे, तेने परप्रयुक्त संज्ञाओ (शब्दो) वापरवीज पडेछे. एम मानवुं ए तो अयोग्यज छे के बाळक पोते अमुक शब्दने समजीने वापरवा मांडे छे त्यारथीज वृद्धो ते शब्द जे अर्थे वापरे छे तेज अर्थ समजीने वापरेछे. शब्दो प्रथमज वपराती वखते सामान्यसंज्ञारूप होता नथी, पण अमुक व्यक्तिनोज बाळकने तो बोध करेछे. प्रथम अवस्थामां सामान्याधिगमनी शक्तिना व्यापारनुं सारुं उदाहरण बाळक, पोतानी मेळे स्वतंत्र रीते नवा नवा शब्दप्रयोग करेछे ते उपरथीज मळी आवे छे.

स्वाभाविक रीते आपणे धारीए तेम एवुंज बने छे के प्रथम पहेलां जे सामान्यभावना थायछे ते अमुक साधर्म्यवाळा नाना नाना वर्गो विषेनीज थाय छे; तेमज बाळकने पोताने जेमां खास रस होय तेवी वस्तुओ विषेनीज थाय छे. खोराकना अमुक पदार्थो, दूध, रोटला, इत्यादिने ते तुरत ओळखे छे. पोतानां रमकडांमां पण जेने एक एक साथे साधर्म्य होय एवां पदार्थने पण ते तुरत ओळखी शके छे. एम ने एमज बाळको 'बा' 'मा' एवा शब्दोने बीजां स्त्रीपुरुषने पण लगाडतां शीखे छे.

३०. सामान्याधिगम अने वैधर्म्यग्रहणनी वृद्धिः—एटलुं लक्षमां लेवुं जोईए के बाळकना मनमांनां सामान्यो, तेने साधर्म्यवैधर्म्य परखवानी शक्ति जेम जेम आवती जाय छे तेम तेम स्पष्ट थतां जायछे. आरंभे तो व्यक्ति अने जाति (वर्ग) वच्चे स्पष्ट भेद होतो नथी. अनेक पदार्थो साधर्म्यवाळाज होय एम मानीने प्रथमे शब्दप्रयोग थायछे, परंतु आपणने तेवा प्रयोग उपरथी एम मानवानुं कारण रहेतुं

नथी के एवो प्रयुक्त शब्द बधा पदार्थोने जुदा जुदा मानीने प्रयोजायो छे के एकज मानीने प्रयोजायो छे एनुं स्पष्ट ज्ञान ते प्रयोग करनारने छे. जेटले अंशे वैधर्म्यग्रह स्पष्ट होय छे, जुदा जुदा पदार्थोनां चित्र—आ माणस, पेलो माणस, आ श्वान, पेलुं श्वान, इत्यादि चित्र—एक एकथी जुदां पडे तेवां स्पष्ट थतां जाय छे, तेटले अंशे सामान्य स्पष्ट थई आवे छे. आ उपरथी एक बीजी वातनो पण खुलासो थाय छे. बाळक अपर-सामान्यवाचक नाम प्रयोजता पूर्वे परसामान्यवाचक नाम प्रयोजे छे. 'तू तू' ए नाममां कूतरांने मळतां एवां बकरां वगेरेनो पण, प्रथमे, बाळक समास करे छे.

एकाद धर्मनेज लईने ज्यारे बाळक वर्गो रचतां शीखे छे त्यारे उपर कह्यो ते करतां वधारे उत्कृष्ट मनोव्यापार करे छे. पोताने जेमां घणो रस होय तेवा पदार्थोपरत्वे आ उत्कृष्ट भावाधिगमव्यापारनो क्रम चालेछे. भोज्य पदार्थोने एकत्र करवामां बाळक सारी रीतनी सामान्याधि-गमयोग्यता दर्शावे छे. अनेक जातना भोज्य पदार्थोने बाळक 'मम्' एवुंज कहेछे; अने ते शब्द कोईना पण शीखव्या विना केटलांक बाळक पोतानी मेळे शोधी काढे छे. पछीथी ए शब्दमां अमुक अमुक धर्म ऊ-मेरी जुदा जुदा भोज्य पदार्थोने बाळक ओळखे छे. 'गळ्युं मम्', 'खाटुं मम्' इत्यादिथी साकर, कढी, वगेरेने ते ओळखवा यत्न करे छे. बाह्याकृतिगम्य धर्मो गृहवा ते तो थोडा समय पछी बने छे. आ *लखनारने जाणीता एक दोढ वर्षना बाळके 'दडो' ए शब्द दारुना प्याला उपर थता फीणना परपोटाने पण लगाड्यो हतो. आवी रीते ते बाळके कर्युं एनो अर्थ एज छे के तेनामां रंग, परिमाण, अने रूप ए धर्म गृही भावाधिगम करवानुं सामर्थ्य हतुं.

* मि. सली जेना अंगरेजी ग्रंथ उपरथी आ लेख योज्यो छे.

जेम जेम अनुभव वधतो जाय छे, अने भावाधिगमनी शक्ति सबल थती जाय छे, तेम तेम थोडा स्पष्ट अने घणा झीणा एवा साधर्म्यांश पण लक्षमां आवता जाय छे. बाळको जे शब्दो वापरे छे तेथी केटलीक वार तेमनां गुरुजनने समजवामां घणी गुंचवण ऊपजी आवे छे, केमके जे साधर्म्य बाळकोने जणाय छे तेज तेमनां गुरुजनने जणातुं नथी. धीमे धीमे बाळकनुं मन वधारे वधारे भावरूप विचार बांधी शके छे. बे'लामां बे'ला जे आवा विचार बाळक करी शके छे तेमांनो एक अभावनो, न होवापणानो, जेने ते कोई पण शब्दथी बतावे छे, ते छे.

बाळको विशेषणना प्रयोगथी पदार्थोने विशिष्ट करी बतावववानुं सामर्थ्य प्राप्त करे छे त्यारे तेमनी सामान्याधिगम शक्ति घणी वधी छे एम समजाय छे. भाषा वापरवा मांडे त्यारथीज बाळक केटलांक सा-धारण विशेषणो—ऊनुं, टाढुं, नठारुं, सारुं,—पकडी ले छे. परंतु एवां विशेषणो तो पोताने थई आवतां, जेमां पोताने रस लागे छे तेवां, प्रत्यक्षोनी संज्ञारूपज छे. कोई सापेक्षविशेषण होय—जेवुं के मो'टुं, भारे,—ते गृहवामां खरो विशेषणग्रह रहेलो छे. एक बाळक मात्र बावीसज महीनानुं हतुं पण तेणे कागडाने माथा उपर थईने ऊडी जतां जोई "केवुं मो'टुं जनावर" एम कह्युं हतुं.

बाळकनी प्रथम वयमां प्राप्त करेला वधारे भावनारूप विचारोमां संख्या अने काळना विचार उपर सहज लक्ष करवुं अत्र उचित छे. प्रो-प्रीअर लखे छे के "मारा बाळकने छवीश महीनानी वये संख्या विषेनो कशो विचार हतो नही." जे बाळकनी आपणे कागडा परत्वे वात करी आव्या तेज बाळक बावीश महीनानी वये एक वस्तुने अनेक थकी ओळखी शकतुं हतुं, पण एक, बे, त्रण, इत्यादि संख्यानुं भान तेने ते पछी घणे काळे थयुं हतुं. एज बाळक, एज रीते, भूतकालमात्रने

'काळ' एम कही बतावतुं हतुं अने भविष्यकालने 'आवती काल' कहीने बतावतुं हतुं. एक अने अनेकना ग्रहणमांथी एक एक संख्याना ग्रहण उपर, के काळ अने काळना ग्रहणमांथी भूत भविष्यना काल, परमादिवस, पेलो दिवस, एवा विभागना ग्रहण उपर, बाळक आवी पहोंचे ते पहेलां तेनी बुद्धिनो घणो विकास थयो होवो जोईए.

बाल्य मूकीने तारुण्यमां आवतां, भावाधिगमसामर्थ्य, एटले के पदार्थोनां पृथक्करण करी तेमनां साधर्म्य गृहवानी शक्ति, केटलीक सबलता पकडे छे. बाल्यनो समय छे ते मुख्य रीते दृश्य व्यक्तिज्ञाननोज छे. ए समयमां जे सामान्यो ऊपजी शके छे ते बहु थोडां होय छे, अने ते थोडां पण जेमां आंधळाने पण जणाय तेवां के अनेक साधर्म्य होय एवा पदार्थो विषेनां होय छे. पण आशरे चौदेक वर्षनुं वय थया पछी भावाधिगमशक्तिनी स्पष्ट रीते वृद्धि थती मालुम पडे छे. जे बाळकोनी अवलोकनशक्ति अने कल्पनाशक्ति केळवायली होय तेमनामां तो, आटली वये, पदार्थोने सामान्यरूपे विलोकवानी घणी दृढप्रकृति थयली दीठामां आवे छे. तेमनी भाषाज वधारे सामान्यरूप अने वधारे भावरूप देखाय छे.

सामान्याधिगमशक्तिनी वृद्धिनुं माप घणी रीते करी शकाय. भावाधिगमसामर्थ्य वृद्धि पामे छे तेम तेम अमुक संस्कारो अने अवलोकनो, वधारे वधारे, सामान्य रूपे विलोकातां चाले छे. वळी एम पण जणाय छे के सरखीज सामान्यतावाळा शब्दो वधारे वधारे सरलताथी बनी आवे छे. नवो शब्द बनाववामां थोडो कालक्षेप अने थोडो श्रम लागे छे. प्राप्त थयलां सामान्य (शब्दो) पण वधारे सरके कर्यु वाळां अने वधारे भावरूप थाय छे. कर्म, जीवन, धर्म गृही शब्दोनो प्रयोग थाय छे तेज सामान्याधिगमशक्तिमां स्पष्ट बतावे छे. नित्य व्यवहारना दृश्य अनुभव छ.

भावना केटली विदूर छे ए जोवा उपरथी सामान्याधिगम शक्तिनुं घणुं यथार्थ माप मेळवी शकाय छे. सामान्याधिगम शक्तिनुं माप वळी ए उपरथी थई शके छे के प्रयोजेलां सामान्य वधारे स्पष्ट होय छे, प्रयोजायला शब्दोनुं व्याख्यान वधारे सरलताथी करी शकाय छे, अने ते शब्दोने तेवा जे शब्दो साथे सेळभेळ थवानो संभव होय ते थकी स्पष्ट रीते जुदा पाडी शकाय छे.

३१. सामान्याधिगमशक्तिना प्रकारः—भावाधिगमशक्ति सर्वमां सरखी होती नथी. वैधर्म्यमां साधर्म्य गृहवानी केटलाक मननी तीव्रता अति असाधारण होय छे. भावाधिगमशक्तिनां जे आवां तारतम्य तेनो मुख्य आधार मनमांनी साधर्म्यग्राहक शक्तिना तारतम्य उपर रहे छे एम पण लागे छे. अवधान उपर अंकुश राखवानी शक्तिना तारतम्य उपर, एटले के वैधर्म्य उपरथी मनने खसेडी नाखी आग्रहथकी साधर्म्य उपरज लगाडवानी शक्तिना तारतम्य उपर, पण भावाधिगमशक्तिना तारतम्यनो आधार छे.

आवुं जे आ शक्तिनुं तारतम्य ते अमुक अमुक विषयोपरत्वे—संख्या, दिक्, विश्वव्यापार, इत्यादिमां—जणाई आवे छे. कोई पण प्रकारनुं सामान्य तुरत बनावी लेवानी प्रबल शक्ति होय एज उत्तमोत्तम भावाधिगमशक्तिनुं अनुमान करवाने कारण छे. आवी रीते साधारण प्रकारमां तारतम्य जणाय छे ते उपरांत केटलांक विशेष तारतम्य पण दीठामां आवे छे. एक विद्यार्थी विश्वव्यापारादि संबंधे के गणितशास्त्रपरत्वे बहु भावाधिगमशक्ति दर्शावे छे, छतां आंतर मनःस्थिति विषे विचार करवा ए करतां ओछी शक्ति होय छे. आथी उलटी रीते मनःस्थिति चलाववानी उत्तमोत्तम शक्ति छतां विश्वव्यापारादिहोय एम पण बने छे.

आ तारतम्यनो केटलेक अंशे, स्वाभाविक शक्तिना तारतम्य उपर पण आधार रहे छे एम समजाय छे. बाळकोने प्रथमथी साधर्म्य-ग्रहणनुं समान सामर्थ्य होतुं नथी. उपरांत वळी मननुं कोई अमुक प्रकारनुं स्वाभाविक बंधारण होवाथी पण अमुक प्रकारना सामान्याधिगममांज तेनी प्रवणता रहे छे. उदाहरण. बीजी बधी वात समान होय एम धारीए तो रूपावलोकन माटे योग्य नजरवाळा बाळकने भूमिति आदिमां सारी भावाधिगमशक्ति होय छे, व्यापारकुशल एवा दृढांग अने उपयोगी योजनाओ करवामां चतुर बाळकने विश्वव्यापार एटले के विशेषे करी यांत्रिकक्रियाओपरत्वे सारी भावाधिगमशक्ति होय छे. आवी रीते स्वाभाविक तारतम्य छतां पण केळवणी, अभ्यास, इत्यादि उपर पण घणो आधार रहे छे. एकंदरे जोतां एम मालुम पडे छे के साक्षर बाळक निरक्षर करतां तुरत जुदुं पडी आवे छे, ने ते ए उपरथी के साक्षर पासे सामान्यदोष अति विपुल होय छे, अने पोतानी नजरे पडता पदार्थोमांथी सामान्य गृहवानी तेने सरलता पण सारी होय छे. तेम ए पण सुप्रसिद्ध छे के अमुक शास्त्रादिनोज अभ्यास राखवाथी ते प्रकारनां सामान्य गृहवानी उत्तमोत्तम शक्ति अने सरलता वधे छे.

३२. भावाधिगमशक्तिनी केळवणी:—भावाधिगम अने सामान्याधिगमनी शक्तिने केळववी शी रीते ए विषयनी चर्चा धारवामां आवे तेवी सरलतावाळी नथी. एम कहेवामां आवे छे के बाळकोने दृश्यव्यक्तिमात्रमांज रस लागे छे, भावमय वार्ता श्रम भरेली अने पर रस लागे छे. छतां बाळकोने पदार्थोनां साधर्म्य शोधवानी के कर्यु प्रकारे सामान्याधिगमनी पण घणी टेव होय छे ए तो धर्म गृही पदार्थो वच्चे साधर्म्य शोधी काढवामां बुद्धिने कोई प्रत संतोष लागे छे. साधर्म्य शोधता बराबर बाळक छ.

प्रकाश दीपी आवे छे तेज आ वात सिद्ध करे छे. आवी रीतनो जे आनंद तेने सहज रीते ऊपजे छे तेने आधारे बाळकनी आ शक्तिने केळववानुं बनी शके तेम छे. सामान्यमां तेने रस लागतो नथी तेनुं एक कारण ए पण छे के जेमांथी तेवुं सामान्य ऊपजावेलुं छे तेवी दृश्य व्यक्तिओनां दृष्टान्त बाळकना मनमां होतां नथी.

इंद्रियद्वारे अवलोकन करावबानो आरंभ थतानी साथेज सामान्याधिगमशक्तिनी केळवणीनो पण आरंभ थवो जोईए. पदार्थोने पासे पासे राखी बाळकने तेमनी अंदर रहेलुं साधर्म्य परखवानी टेव पाडवी. आम करवामां पण बाळकनी कार्यसंपादक वृत्तिओनो उपयोग करवो; ते एवी रीते के अनेक पदार्थोने सेळभेळ करी नाखी पछी तेमांथी सरखे सरखा पदार्थोने जुदा करवानुं कहेवुं. आवी रीते अनेक दृष्टांतोने एक साथे अवलोकवाथी परापरसामान्य तथा भूमितिगत आकृति आदिनुं सारुं ज्ञान थवा मांडे छे. वळी व्यक्ति व्यक्तिने पण विचारपूर्वक योजी, अवलोकन करवा माटे मूकवाथी सामान्याधिगमशक्ति केळववामां सारी साहाय्य थाय छे. एवोज नियम राखवो उचित छे के कोई पण वर्गना जोईए तेटला सरासरी सारा दाखलाथीज आरंभ करवो; एवा दाखलाथी आरंभ करवो के जेमां जातिचिन्ह स्पष्ट अने बहार पडतुं होय. आवा दाखला आखा वर्गनी संज्ञारूपे थई पडशे. आवी केळवणी थया पछी जे घणा कठिन होय तेवा दाखला बतावबा. प्रत्येक प्रसंगे जोईए तेटलां दृष्टांत योजवां, पण केटलां योजवां तेनो आधार तो जे प्रकारनुं सामान्य ऊपजाववुं होय ते उपर रहेछे. भावाधिगमशक्तिने खीलाववाना आ आखा प्रकरणमां शिक्षके संभाळथी साधर्म्यग्रहनी साथे वैधर्म्यग्रहनो पण अभ्यास बाळकने करावता जवो. एक पदार्थने बीजा पदार्थ वच्चे, एक पक्षीने बीजा पक्षी वच्चे, एक आकृतिने बीजी

आकृति वच्चे, शुं वैधर्म्य छे ते पण बाळक पासे कढावबुं, आ प्रकारनो जे तुलनाव्यापार अने वर्गीकरणव्यापार तेने अंगे ते ते वर्गगत पदार्थोने नाम आपवानुं पण बाळकने शीखववुं, अने आखा वर्गमां जे सविशेष असाधारण धर्म होय तेने लईने लक्षण योजवानी पण कांईक टेव पाडवी.

सामान्याधिगमशक्तिनी आवी केळवणीमां शिक्षक अथवा माताए प्रथम तो एटलाथीज संतोष मानवो के पदार्थगत मुख्य साधर्म्यने बाळक ग्रही शकेछे, अने तेने नाम आपी शकेछे. एक उदाहरण लईए तो बाळक पासे आरंभेज एकाद छोडना सर्व आकृतिक विशेष गणाववानी आशा राखवी ए भुल भरेलुं छे. भावाधिगमशक्तिनी वृद्धि थती चाले तेम तेम लक्षणो वधारे संपूर्ण अने यथार्थ थतां जवां जोईए.

बुद्धिनी आ केळवणीमां खास हरकत एज छे के सामान्यो उद्भवे छे ते व्यक्तिओना साक्षात् विलोकनथी उद्भवतां नथी. पोताने समजण नथी पडती एवा शब्दो बाळक वारेवारे सांभळे छे. एमांना वणाकने समजवानी तो एने शक्ति पण होती नथी; अने ए वात एने प्रथमथी जणाववी ते सारुं छे. पण शिक्षणना अंगमां ए वात मुख्य रीते रहेली छे के सामान्यशब्दोनो अर्थ स्पष्ट करी आपता जवो. इतिहास के भूगोळ विषेना गमे तेवा उपलकीआ पाठमां पण केटलाक सामान्य शब्दो प्रयोजावानाज. आवे प्रसंगे बाळकने एक प्रकारनो संकल्पव्यापार करवो पडे छे, पोते साक्षात् अवलोकेला एवा पदार्थोमांथी जे भावाधिगम थयो होय ते लईने नवी भावना कल्पवी पडेछे. प्रथमना प्रयासमां तेणे केवी पूर्णताथी काम करेलुं छे अने तेनी कल्पनाशक्ति एकंदरे केवा बळवाळी छे ए बे वात उपर आ संकल्पव्यापारना विजयनो आधार छे.

बाळको जे शब्दो वापरे तेनी जेटला लक्षथी संभाळ राखवी पडेछे

एटला लक्षथी बुद्धिनी केळवणीना बीजा कोई भागने भाग्येज जोवो पडतो हशे. पोते जेटला शब्दो वापरे ते सर्वनो यथार्थ अर्थ समजीने वापरे एम बाळकोपरत्वे बनवुं अशक्य छे, बाळकने बीजा साथे वातचीत करवी पडे छे; अने तेनी सामान्योने समजवानी शक्ति, पोतानी शब्दप्रयोगनी शक्तिनी साथे साथे वधती चालेछे. आथी उलटी रीते पदार्थो विषे अस्पष्ट अने साधारण भावना आवे एटलाथीज संतोष वाळी लेवानी मनने टेव होयछे तेथी एवा बुद्धिशैथिल्यने लीधे स्पष्ट अने यथार्थ ज्ञान थवामां विघ्न आवेछे. आवी टेव अटकाववा माटे बाळकना मनमां प्रथमथीज प्रत्येक शब्दनो अर्थ बने तेटलो स्पष्ट अने यथार्थ करी लेवानी टेव ठसावी राखवी. जे जे शब्दो बाळक वापरे तेनो अर्थ करी बतावानी तेने प्रथमथीज टेव पाडवी. एवो नियम राखवाथी पण लाभ छे के स्पष्ट अर्थ धार्या विना कोई पण शब्द बाळकने वापरवा देवो नहिं. जे कोई शब्द बाळक प्रयोजे तेनो अर्थ तेनी पासे मागवो, अने तेना मनमां जे सामान्य होय तेनां दृष्टांत तेनी पासे मागवां, तथा ते सामान्यनुं गमे तेवुं आखुं भागुं पण लक्षण मागवुं. आरंभे तो बाळको स्वप्रयुक्त शब्दोना अर्थ घणा अयोग्य अने अपूर्ण बतावे ए स्वाभाविक छे. परंतु ज्यां सुधी बाळकना पोताना व्यवहारार्थे पोते कल्पेलो अर्थ स्पष्ट छे एम तेना शिक्षकने लागे त्यां सुधी आवी अयथार्थ अर्थकल्पना पण सारी छे. जेमजेम ज्ञानमां वधारो थतो चाले तेमतेम शिक्षके काळजी राखीने आवा अयथार्थ अर्थोने यथार्थ अने पूर्ण करी आपता जवा जोईए. पर्याय शब्दो, तथा निकट संबंधवाळा शब्दो उपर पण बाळकनुं लक्ष दोरीने सूक्ष्म सूक्ष्म भेद समजावी तेनां सामान्योने वधारे वधारे याथार्थ्य अर्पवानी युक्ति पण शिक्षके साधवी जोईए.

भावाधिगमशक्तिनी जेमां घणी अपेक्षा रहे एवा विश्वव्यापार संबंधी

शास्त्रो, व्याकरणशास्त्र, इत्यादि विषयो क्यारे आरंभवा ए, शिक्षणपद्धतिमां अगत्यनो पण घणो गुंचवण भरेलो प्रश्न छे. आ प्रकारनो जे बुद्धिविकास तेनी तीव्रतामां माणस माणस वच्चे घणो फेर होवानो संभव छे तेथी आ विषयमां कोई सर्वसाधारण नियम बतावी शकाय नहि. निश्चय एटलो छे के जेमां स्मरणशक्ति अने कल्पनाशक्तिनोज उपयोग पडेछे एवा भूगोलइतिहासादि विषयो, जेमां भावाधिगम अने सामान्याधिगमशक्तिनो उपयोग पडेछे तेवा विषयोना पहेलां शीखववा जोईए. मनमां अनेक व्यक्तिरूप दृष्टांतोनो समूह जाम्यो न होय ते पूर्वे व्याकरणशास्त्रनो उपदेश आरंभवो ए चेतनशास्त्रना नियमोथी जोतां मो'टी भूल छे. जेमां इंद्रियद्वारे अवलोकन करवानी शक्तिथी पण घणी साहाय्य थायछे एवा गणित भूमिति आदि विषयो पण, बुद्धिशक्तिनो यथायोग्य उपयोग करवाना हेतुथी बोलतां तो, घणा जलदी आरंभवामां आवेछे एम कही शकाय; परंतु गणितपरत्वे तो, वखते, ए अभ्यासनी उत्तमोत्तम उपयुक्तताथकी आवी शास्त्रीय कल्पनाओ बाजू उपर मूकवाने कारण मळतुं हशे.

प्रकरण १०.

निर्देश अने परामर्श.

१. **विचारनो उत्तरक्रमः**—आपणे जोयुं तेम विचारव्यापारमां सामान्याधिगम उपरांत निर्देश अने परामर्शनो पण समास थाय छे. कोई एक सामान्य प्राप्त थया पछी, आपणे ते सामान्यने बीजी कोई व्यक्तिने अथवा व्यक्तिओना वर्गने पण लगाडीए. उदाहरण. आपणे 'ग्रानीट' ए सामान्य जाण्या पछी 'आ पथरो ग्रानीट छे' एम पण कहीए. आवो जे व्यापार तेने निर्देशव्यापार एटले के कांईक निर्णय बतावावानो व्यापार कहे छे. आ प्रकारे निर्देश प्राप्त कर्या पछी वळी आपणे एक निर्देशथी अन्य निर्देश उपर जईए; बधा जड पदार्थो गुरुत्ववाळा होय छे माटे हवाने पण गुरुत्व छे एम कहीए. आनुं नाम परमार्श. आ बे विचारव्यापार जे परस्परने अतीव संबद्ध छे ते विषे आ प्रकरणमां चर्चा करवानी छे.

२. **निर्देशः**—साधारण व्यवहारमां निर्देश ए शब्द कांई पण निर्णय उपर आववाने माटे वपराय छे; ज्यां परामर्श करीने निर्णय करवामां नथी आवतो, पण गत अनुभवना आधारथी नवा प्रसंगने समजी सहजरीतेज तुरत कही बतावावामां आवे छे, त्यां निर्देश ए शब्द प्रयोजाय छे. अमुक माणस शुद्धहृदयनो छे के नथी, अमुक नकशो सारो छे के नथी, ए आदि विषे आपणे तुरत विचार करीए छीए अने एक निर्णय उपर आवी अमुक निर्देश करीए छीए के सारो छे के नथी, शुद्ध छे के नथी. चेतनशास्त्रमां आनो आज शब्द कांईक विशेषार्थे वपराय छे. ज्यारे ज्यारे आपणे कोई पण बे भावनाने अमुक वचनरूपे योजी बतावीए छीए त्यारे त्यारे आपणे निर्देशव्यापार करीए छीए

एम कहेवाय. जे छेवट निर्देश ते कोया प्रकारना मनोव्यापारथी उद्भवे छे, साक्षात् अवलोकनथी निर्देश करीए छीए के अनुमानथी करीए छीए, ए विषे हाल कांई विचार करवानो नथी. गमे ते प्रकारे उद्भवे परंतु जेमां बे भावनाने योजी कोइ वचन कहेलुं होय ते निर्देश जाणवो.

३. निर्देश अने वचन अथवा वाक्यः—निर्देशव्यापारना फळने पण निर्देश अथवा वचन के वाक्य कहीए छीए. निर्देशव्यापार करवो अने शब्दथकी वाक्यमां तेनुं फळ कही बतावबुं ए बे वच्चे, सामान्याधिगम अने अभिधान वच्चेना जेवोज निकट संबंध छे. ना'नुं बाळक के असाधारण अक्कलवाळुं जनावर थोडाक निर्देश (जेवाके मने खवरावबानी तैयारी छे इत्यादि) भाषा विना पण बांधी शके छे; पण मो'टी वये तो मनमां के मोढेथी शब्दप्रयोगरूप निर्देश बोल्या विना आपणे कदापि विचार चलावी शकता नथी. प्रत्येक निर्देशनां बे मुख्य अंग छेः (१) उद्देश अथवा कर्ता के विषय जेने माटे कांईक विधान करवानुं छे ते; अने (२) विधेय अथवा उद्देश विषे जेनुं विधान थाय तेनो वाचक शब्द. "आ चप्पु बूठो छे" एम निर्देश करवामां आपणे चप्पुने उद्देशीने बूठापणानुं विधान करीए छीए.

हमणांज कहेवामां आव्युं तेम एवा घणा आर्थिक निर्देश होय छे के जेमां वाक्यप्ररूपण थतुं नथी. दर्शनव्यापार अने स्मरणव्यापार ते विषे आ वात यथार्थ रीते खरी छे. बाळक कोई मो'टो पदार्थ प्रथमे जोतांज "मो'टुं" एवो उद्गार करे, तेमां "आ पदार्थ मो'टो छे" एवो निर्देश अर्थात् रहेलो छे एम मानी लेवाय. एज रीते कोई बनाववुं स्मरण करवामां, अमुक समये ते बनाव बन्यो हतो एम आपणे अर्थात् कहीए छीए. शब्दप्रयोग विना थई आवता आवा निर्देशोनुं स्वरूप, विचार अने भाषा वच्चेना अति निकट संबंधने लीधे बराबर गृही शकातुं नथी.

४. व्यक्ति विषे अने वर्ग विषे निर्देशः—अत्र बतावेलां दृष्टान्तो उपरथी एटलुं तो स्पष्ट छे के निर्देशनुं विधिपद सर्वदा कोई सामान्य होय छे.*

तेमज उद्देशपद पण एक व्यक्तिवाचक सामान्य होय अथवा वर्ग-(जाति)वाचक सामान्य होय. अमुक पुष्प के अमुक मनुष्य विषे कांई विधान करी कही शकाय के 'आ पुष्प श्वेत छे' 'नारायण घणो उद्योगी छे.' आवा निर्देशने व्यक्तिनिर्देश कहे छे. बाळक प्रथमे एवाज निर्देश ऊपजावे छे, अने विचारविकासना क्रममां, एम बनवुं ए घणा उपयोगनी वात छे.

आवा व्यक्तिनिर्देश उपरांत आपणे बीजा जातिनिर्देश अथवा सर्वदेशी निर्देश पण जोईए छीए. "गुलाब ए पुष्पनी जात छे", "डाह्या माणसो आग्रही होता नथी" इत्यादि निर्देशो आ प्रकारना छे, केमके ते आखा वर्गने उद्देशीने कांई पण विधान करे छे. †

व्यक्तिनिर्देश अने जातिनिर्देश (सर्वदेशी निर्देश) वच्चे, सामान्यशब्दो अने विशेष शब्दो वच्चे जे संबंध छे तेवोज संबंध रहे छे. सर्वदेशीनिर्देशोमां अनंत एवी व्यक्तिओ विषेनुं आपणुं ज्ञान एकत्र करी लेवामां आवेलुं होय छे.

५. निर्देशव्यापार ए संकल्पव्यापार छेः—निर्देश करवो एनुं तात्पर्य ए छे के (व्यक्ति अथवा वर्ग विषेनी) बे भावनाने संबंध

*"हरी तेज कृष्ण" एवा जे निर्देशोमां विधिपद अने उद्देशपद उभये विशेषनाम होय छे, ते निर्देश आ नियमना अपवादरूप छे, परंतु ते विषे अत्र विचार लेवानी जरूर नथी.

† न्यायमां अने चेतनशास्त्रमां निर्देशोना स्वरूपने चर्चवामां जे भेद पडे छे ते वाचक सहजे समजी लेशेज. नैयायिको व्यक्तिनिर्देशोने सर्वदेशी निर्देश भेगाज गणी ले छे अने ए आखा विभागने एकदेशी निर्देशोथी जुदो माने छे. चेतनशास्त्रवाळा तो व्यक्तिनिर्देशने सर्वदेशी निर्देशथी विरुद्ध माने छे.

करावववो. उदाहरण. ज्यारे आपणे एम बोलीए छीए के अमुक पुरुष जूठो छे त्यारे ते पुरुषनी भावना साथे आपणे जूठापणानी भावनाने योजीए छीए. एमज "लोढुं उष्मावाहक छे" एम कहेवामां पण आपणा मनमां लोढानी जे भावना (सामान्य) होय तेने उष्मावाहकनी भावना (सामान्य) साथे योजीए छीए. वधारे चोकशपणे बोलीए तो विधिपदनुं जे सामान्य तेने आपणे उद्देशपदना सामान्यमां ऊमेरीए छीए. आम छे माटे निर्देशव्यापारने एक प्रकारनो संकल्पव्यापारज कही शकाय केमके एमां बे सामान्योनो परस्परथी संयोग थाय छे.

भावनामात्र अमुक पदार्थ विषेनीज होय छे एटले निर्देशरूपे कोई पण बे भावनाने जोडवामां, ते भावनाना आश्रयरूप पदार्थोने परस्परथी संबंधवाळा आपणे मानीए छीए. "लोढुं उष्मावाहक छे" एम कहेवामां आपणे एम भावना करीए छीए के लोढुं ए नामनी धातुमां उष्मावाहकत्व धर्म रहेलो छे.

आगळ बतावववामां आव्युं छे तेम निर्देश सामान्य करतां आकृतिमात्रथीज भिन्न छे; अने हवे आपणे स्पष्ट जोई शक्या छीए के ए भिन्नता क्यां रहेली छे. सामान्याधिगममां पण एक रीते संयोजन करवानो व्यापार चाले छे. 'लोढुं' ए सामान्य, अमुक गुरुत्व, अमुक कठिनत्व, इत्यादि धर्मोनो समुदाय मनमां एकत्र संयोजवा थकी उपजे छे. परंतु सामान्यमां तो आवा जे अनेक धर्म संयोजवामां आवे छे ते एकभावनारूप एकज अधिष्ठानमां एकत्र थाय छे. बधा धर्म मळीने एक पदार्थनुं पदार्थत्व ऊपजावे छे ए रूपे मन तेमने समजे छे. निर्देशमां कोई पण बे भावना (सामान्य) ने बे रूपे स्पष्ट जुदे जुदी राखी परस्परथी संयोग करावववामां आवे छे. अमुक पदार्थ अने धर्मोने परस्परथी भिन्न रूपेज आपणे विलोकीए छीए, छतां तेमने परस्पर संयुक्त पण, अर्थात्,

स्वीकारीए छीए. "लोढुं उष्मावाहक छे" एम कहेवामां 'उष्मावाहकत्व' नो 'लोढुं' ए थकी जुदे जुदो आपणे विचार करीए छीए, लोढामां निर्देशगतविधानद्वारे ऊमेराय छे एवा कोई नवा तत्त्वरूपे तेने गणीए छीए. बीजी रीते बोलीए तो लोढानी भावना आपणे उष्मावाहकत्वना आश्रय रूपे करी लईए छीए.*

सामान्याधिगम अने निर्देशव्यापार वच्चे आवो भेद छतां घणो निकट संबंध पण छे. घणाक निर्देशनी श्रेणिद्वारेज सामान्यो उद्भवे छे. साधर्म्यने लईने पदार्थोने मनमां एकत्र करवा ए व्यापारमांज आपणे तेमने एक एकथी सदृश मानवारूप निर्देशव्यापार करीए छीए. एज रीते पदार्थोने, तेमना वैधर्म्यने लीधे, जुदा पाडवामां पण निर्देशव्यापार थाय छे. आटलुंज नथी पण आपणां सामान्यो धीमे धीमे, एटले के एक पछी एक साधर्म्यो जडे छे तेम तेम, बंधातां चाले छे. लोढाना देखीता धर्मो—गुरुत्व, काठिन्य, आदि—जाण्या पछी बाळक थोडा देखीता एवा—अग्निथी द्रव पामवानो धर्म इत्यादि—धर्मो जाणी शके छे. आ प्रकारे जे ऊमेरण थाय छे ते निर्देशनोज आकार गृहे छे. लोढाने बाळक जेवुं जाणतुं हतुं तेमां नवो जडी आवेलो धर्म ते ऊमेरे छे, अने एवी ऊमेरवानी वातने निर्देशद्वारेज दर्शावे छे. "लोह अग्निथी द्रव पामवाना धर्मवाळुं छे" आ रीते जणाय के सामान्यना विकासनो प्रत्येक क्रम निर्देशव्यापारथी—सिद्ध थतो चाले छे; अने ए रीते थई आवतां सामान्य ते पाछां हवे पछी थवाना निर्देशोमां उपयोगी थाय छे.

संकल्पनिर्देश, विकल्पनिर्देश:—उद्देशपदमां कोई नवो धर्म ऊमेरनारा अने उद्देशपदनो स्वगत धर्म एटले के ते शब्दना जातिविशिष्टत्वथी प्रसिद्ध थयलो धर्म स्पष्ट करी बतावनारा, एवा निर्देशो वच्चे नैयायिको भेद माने छे. प्रथम प्रकारना निर्देशोने संकल्पनिर्देश अथवा वस्तुनिर्देश कहेवामां आवे छे, बीजा प्रकारना निर्दे-

* अत्रत्यन्यायमां द्रव्यनुं लक्षण आपाय छे ते सरखावो. गुणाश्रय ते द्रव्य.

शोने विकल्पनिर्देश अथवा शब्दनिर्देश कहेवामां आवे छे. सामान्य अने निर्देश वच्चे जे भेद हवणांज कही बताव्यो तेने आ भेद मळतो आवे छे. सविशेष अवधानथकी कोई सामान्यगत धर्मने आपणे जुदो लईए अने तेने निर्देशरूपे करी बतावीए; परंतु आवा निर्देशमां जे निर्देशनां तत्त्व—प्रथमथी भिन्न मानेली एवी कोई बे भावनानी संयोजना, अने ते ते भावनाना आश्रयरूप पदार्थो वच्चे पण तेवा संयोजननी भावना,—ते छे नहि. आवा निर्देशमां वास्तविक नहि पण भासमात्र रूपे निर्देशव्यापार थाय छे.

आवो जे निर्देशो वच्चे भेद मान्यो ते न्यायमतानुसार छे, अने सर्वसाधारण एवा वास्तविक धोरणने अनुसारे विचारव्यापारने चलावववा माटे मानेलो छे. आवो भेद पाडवामां एटली वात स्वीकारी लेवामां आवी छे के शब्दोना संपूर्ण अर्थ आपणे जाणीए छीए, अने तेमने तेज अर्थे वापरीए छीए. परंतु चेतनशास्त्रमां तो व्यक्तिना मनमां ज्ञानना उद्भवथी ते विकास केम थतो चाले छे ए वातज जोवानी छे, एटले व्यक्तिना पूर्वज्ञानने आधारे, चेतनशास्त्रवाळाने वस्तुनिर्देश शब्दनिर्देशनो भेद मानवो अति आवश्यक छे. हवणांज बतावववामां आव्युं छे तेम पदार्थोना धर्म आपणने धीमे धीमे प्राप्त थता जाय छे, अने प्रत्येक प्राप्ति कोई प्रकारना संकल्पव्यापारने अधीन एवा निर्देशने ऊपजावे छे. जे उदाहरण आ वात बतावती वखते आपेलुं छे तेमां बालक, वास्तविक रीते जोतां, पोताना मनमां लोढानुं जे सामान्य छे तेमां एक नवो धर्म ऊमेरे छे. एथी उलटी रीते एम पण बने छे के कोई पदार्थमां कोई नवो धर्म जाण्या पछी. साधारण रीते ते पदार्थवाचक शब्दना अर्थमां तेनो समास न मानवामां आवतो होय तथापि आपणे आपणा मनमां ते पदार्थनुं जे सामान्य होय तेमां तो तेने ऊमेरीए छीए. आम छे एटले आवी रीते ऊमेरायला धर्मने ज्यारे आपणे कोई वखत स्पष्ट करी जुदो बतावववा इच्छीए त्यारे आपणे कोई सामान्यगत धर्मनेज जुदो करीए छीए (शब्दनिर्देश करीए छीए). आ प्रकारे व्यवस्था होवाथी एम कहेवुं वधारे उचित छे के आरंभे तो निर्देशमात्र वस्तुनिर्देश होय छे, पण पदार्थो विषेनुं आपणुं ज्ञान पूर्ण थतुं चाले तेम, ते वधा, शब्दनिर्देश थता चाले छे.

६. निर्देश अने श्रद्धाः—निर्देशव्यापार उपर आपणे जराक वधारे सूक्ष्म दृष्टि करीशुं तो जणाशे के एमां श्रद्धानुं पण कांईक मिश्रण होय छे. आगळ कहेवामां आव्युं छे तेम कोई बे भावनाने संयोजवामां, आपणे, ते भावनाना आश्रयरूप पदार्थना संयोजननी पण

भावना करी लईए छीए. आवी जे पदार्थोना संबंधनी भावना तेमां श्रद्धानुं तत्त्व रहे छे. ज्यारे लोढाने अग्निथी द्रव पामवाना धर्मवाळुं कहेवामां आवे छे त्यारे लोढामां तेवो धर्म छे ए श्रद्धा विना ते कहेवुं बनतुं नथी. जो आवी श्रद्धा न होय तो तेना विना कोई बे भावनाना संयोजनमात्रथी निर्देशव्यापार थयो कहेवातो नथी. उदाहरण जोईए तो आळसमां पड्ये पड्ये गमे तेवी कल्पनाओ दोड्यां जाय छे ते समये जे संयोजनो थई आवे छे तेमां कशी पण श्रद्धा भळेली होती नथी. ज्यारे पदार्थस्वरूप उपर विचार राखीने, आपणे आपणा मनना व्यापार उपर लक्ष करीए छीए, एटले के मनमां आवती भावनाओने सत्य पदार्थोनी भावनारूपे जोईए छीए, अने एवी कोई बे भावना वच्चेना संबंधने विचारनो विषय बनावीए छीए, त्यारे आपणे श्रद्धाव्यापारमांज पडेला छीए, एम समजवुं.

श्रद्धानो विषय शो छे? निर्देशव्यापारमां जेना विषे आपणे खास भावना करीए छीए ते विषय शो छे? ए प्रश्ननो कांईक निर्णय कर्या विना निर्देशव्यापारनुं संपूर्ण स्वरूप समजवुं अशक्य छे. "जळ ए मिश्रपदार्थ छे" आ निर्देशने लई विचारतां एम जणाय छे के आमां, मन जे वात गृहे छे ते, अमुक प्रकारना एक पदार्थ (जळ)नो, अमुक प्रकारनो एक धर्म (मिश्रपदार्थ होवापणुं) जे ते पदार्थमां रहे छे के तेनुं समवायी कारण छे, तेनो संबंधज गृहे छे. पण कोई पदार्थमां अमुक धर्म छे एम मानवा माटे ते धर्म बीजी जे वस्तुओमां होय तेना संबंधे आ पदार्थने पण आपणे केटलेक अंशे विचारवो पडे छे. आवी जे बीजी वस्तुओ ते अने आ पदार्थ ए बे वच्चे सादृश्य—साधर्म्य—संबंध छे ते विषे पण मन विचार करे छे.

श्रद्धानुं स्वरूपः—श्रद्धानुं चेतनशास्त्रानुसार स्वरूप निरूपवुं ए कांईक गुंचवणवाळो अने अनिश्चित विषय छे. आम होवानुं कारण ए छे के जुदा जुदा लेखकोए तेनुं निदान जुदा जुदा चेतनव्यापारथी मान्युं छे. केटलाक तेने एक बुद्धिप्रकार, बुद्धिस्थिति, एटलुंज माने छे; केटलाके तेने वृत्ति अथवा ऊर्मिरूपे वर्णवी छे; केटलाके तेने मननी कार्यसंपादक प्रवृत्तिनुं अंग गणी छे. श्रद्धा छे ते तत्त्वतः बुद्धिनाज अंगमां छे केमके ज्ञान पामवाना जेटला जेटला व्यापार छे तेनुं ए मुख्य तत्त्व छे. छतां

एने ऊर्मिरूपता पण नथीज एम कहेवातुं नथी. कोई पण वात उपर श्रद्धा करवी एमां, जे अश्रद्धा अथवा शंकानी स्थिति विषे हवणांज बोलवामां आवशे तेनाथी विरुद्ध एवी कोई वृत्तिनो मनमां उदय पामे छेज. तेमज श्रद्धा अने कार्यसंपादकप्रवृत्ति वच्चे पण निकट संबंध छे एम पण लागे छे. आगळना एक प्रकरणमां कहेवामां आवेलुं छे तेम अपेक्षा ए श्रद्धानो एक प्रकारज छे, तेमां पण कार्य करवानी तत्परता अर्थात् रहेलीज छे. परंतु श्रद्धाने यद्यपि बीजी मनःस्थितिओ साथे आवो संबंध छे तथापि ते स्थितिमांनी कोई एक रूपे श्रद्धाने बतावी तो नज शकाय. श्रद्धा तो अतीव सादी एवी मनःस्थिति छे, अने तेने पोतानुं विशेष स्वरूप छे.

श्रद्धा आ प्रकारे स्वत्ववाळी निराळी मनःस्थिति छे, छतां श्रद्धाना विषयना स्वरूपानुसार, तथा आनुषंगिक वृत्तिओना स्वरूपानुसार, तेमां फेरफार जणाय छे. कोई सारी वातनी आशा उपर श्रद्धा करवी ते श्रद्धा, कोई भयंकर वातना उपरनी श्रद्धा करतां जुदीज पडे छे. आपणा व्यवहार उपर जेनी साक्षात् असर न होय एवी कोई राजकीय बनावनी वातो के कोई नवा शास्त्रीय शोधनी वार्ता तेना उपरनी श्रद्धा, जे वात आपणा व्यवहारनी कसोटीए चढवानी होय ते उपरनी श्रद्धा करतां कांईक जुदी पडे छे. आपणी पोतानी कार्यसंपादक शक्ति उपरनी श्रद्धा पारकानी कार्यसंपादक शक्ति उपरनी श्रद्धा करतां जुदी पडे छे. आपणां स्मरण अने आपणी अपेक्षाओना स्वरूपमां पण स्पष्ट भेद रहेछे ए आपणे बतावी आव्या छीए. एम तकरार बतावावामां आवे छे के पदार्थ पदार्थ वच्चेना नित्यसंबंधोपरत्वे आपणे ज़े निर्देश करीए छीए, ते, तथा आपणा सर्वदेशी निर्देशमात्र, ते सर्वनुं पृथक्करण अपेक्षा (स्मृतिना पाया उपर रहेली अपेक्षा) रूपे करी शकाय एम छे. "जळ ए मिश्र पदार्थ छे" एवी जे श्रद्धा तेनुं तात्पर्य एमज कही शकाय के कोई पण जलसमूह ज़े उपर आपणे प्रयोग करवा इच्छा करीशुं ते जुदां जुदां तत्वनोज बनेलो मालुम पडशे एवी आपणने आशा (खातरी) छे. सर्वदेशी सत्य उपर जे श्रद्धा रहे छे तेनो विषय शो छे? एनो आवो निर्णय, सामान्यशब्द प्रयोजती वखते आपणे ते शब्दने अनिर्णीत एवा अनेक पदार्थो जेनुं पृथक् चित्र आपणी दृष्टि आगळ होतुं नथी तेने माटे प्रयोजीए छीए, एवुं जे आगळ कह्युं छे तेमांथीज सहज रीते उद्भवे छे एम समजाशे. आ प्रमाणे छे एम मानीए तो पण एटलुं स्पष्ट छे के आ प्रसंगे जे अपेक्षा रहे छे, तेनी अनिश्चितताने लीधे, मनःस्थितिमां कांईक फेरफार पडे छे. अव्यवहित भविष्य काळमां कोई दृश्य वार्तानी संभवनी अपेक्षा होय ते साथे मनमां जे कार्यसंपादकत्वानुकूल चांचल्य रहे छे ते आ प्रसंगे रहेतुं नथी.

७. विधि अने निषेधः—निर्देशनो आरंभ विधिथकीज थाय छे; कोई पण बे भावनाने संयोजी, ते भावनाना आश्रयभूत पदार्थोने तेनो संबंध छे एम मानवाथी थाय छे. परंतु आपणे जेटला निर्देश प्रयोजी शकीए ते बधा विधिरूपज होय एवो नियम नथी. जेम विधिवचनो आपणे बोलीए छीए तेम निषेधवचनो पण बोलीए छीए; अमुक छे एम कहीए छीए तेम नथी एम पण कहीए छीए. निषेधपूर्वे विधि होवो जोईए. "वरसाद आववानो नथी" एम कहेवाथी एवुं नीकळे छे के एथी उलटुं वचन-"वरसाद आववानो छे"—कोईए कहेलुं छे, अथवा कोई रीते मनमां आवेलुं छे. कोई विधिने अयथार्थ अथवा खोटो कहेवो एज निषेध छे. जे आवश्यक संकल्पव्यापार ते, मन करतुं नथी. जेटला जेटला निर्देश थाय ते खरा होय के खोटा होय एटले एम निश्चय जणाय छे के विधि अथवा निषेध बेमांथी एक वात मने ग्रहण करवीज जोईए. "आ हीरो खरो छे के खोटो छे," "आ छोकरे तकसीर करी छे के नथी करी", एम बेमांनी एक वात कहेवीज पडे छे. अर्थात् निर्देशव्यापारनो हेतुज आवी एक वातनो अभ्युपगम करवो एटलो छे, अने एक न्यायाधीशना व्यापारने मळतो आवे छे.

निर्देशने वस्तु वस्तुना साधर्म्य साथे जेटले अंशे संबंध छे तेटले अंशे तो विधि छे ते साधर्म्यग्रह साथे मळतो आवे छे, अने निषेध वैधर्म्यग्रह साथे मळतो आवे छे. प्राणीनो वर्ग करती वखते आपणे ज्यां एम कहीए के "सिंह चतुष्पाद छे," "बतक माछलुं नथी" त्यां साधर्म्यग्रह अने वैधर्म्यग्रहनोज व्यापार, अनुक्रमे, करीए छीए. साधर्म्य छे ते आ प्रकारे वस्तुगत अस्तिनुं रूप छे, मनमां वस्तुओने जेनाथी भेगी करी शकाय छे ते ए छे. वैधर्म्य छे ते वस्तुगत नास्तिनुं रूप छे, केमके एनाथी संयोग नहि पण वियोग साधी शकाय छे.

श्रद्धा अने अश्रद्धाः—एकना वचन परत्वे श्रद्धा अने अश्रद्धा बने नहीं. आपणे एम मानीए के क अपराधी छे, तो तेने तेज समये एम न मानी शकीए के क अपराधी नथी अथवा निरपराधी छे. छतां एटलुं कहेवुं जोईए के कोई एक वचन

उपर श्रद्धा थवानो अर्थज ए छे के तेथी विरुद्ध वचन उपर अश्रद्धा छे. आपणे एम मानीए के क निरपराधी छे तो तेना अपराधी होवा विषेनां वचनमात्र आपणे मानीए नहिं. 'सर्वमनुष्य दोषने पात्र छे' एम मानीए तो 'केटलांक मनुष्य दोषने पात्र नथी' ए वात नज मानीए. श्रद्धा अने अश्रद्धा ए आ प्रकारे बहु निकट संबंधवाळां छे, अने, कोई बे विरुद्ध अथवा व्याहत निर्देशपरत्वे मननी जे स्थिति तेनां रूपान्तरमात्रज छे. *

श्रद्धा अने शंका:—आटले सुधीनी चर्चामां एम मानवामां आव्युं छे के मन अमुक वचनने स्वीकारे छे अथवा नथी स्वीकारतुं, एमांथी एक निर्णय उपर आववुंज पडे छे. पण स्वीकार अस्वीकारनी वच्चे पण मन होई शके, अने निर्णय करवामां विलंब होय. आवी स्थितिने शंका एवुं नाम आपवामां आवे छे. वरसाद आववानी तैयारी छे के नहि ए विषे मारा मनमां केवळ अनिश्चयज होय, एटले हुं ते विषे कशो निर्णय बांधी शकुं नहींज. जेने श्रद्धा कहेवामां आवे छे तेनाथी आ स्थिति उलटी छे. कोई वात उपर आपणे श्रद्धा करीए छीए त्यारे मन स्थिर रहे छे, अने कार्यकर्तृत्वयोग्यता मनमां आवेली होयछे. पण ज्यारे शंका थायछे त्यारे तो मन बे पासा खेंचायछे. कोई प्रकारनो विरोध समजवामां आवेछे, अने कार्य बनी शकतुं नथी. आम होवाथी श्रद्धा करतां शंकानी स्थिति वधारे गुंचवण भरेली छे, अने बालमनना विकासक्रममां श्रद्धा करतां वधारे मोडुं दर्शन दे छे. बाळकोने घणी एक विश्वासपूर्ण श्रद्धाओ थाय छे (हवणां खावानुं मळशे, हवणां फरवा जईशुं, इत्यादि), अने शंकानी स्थिति तो ते पछी घणे समये तेमना समजवामां आवेछे. आपणे हवणांज जोईशुं तेम आ जे शंकानी स्थिति ते तो घणोक अनुभव भेगो थया पछी थई आवेछे.

श्रद्धाना प्रकार:—अमुक निर्देशव्यापारनी तरफ तेम तेनाथी दूर, एवी मननी स्थिति शंकासमये थायछे. आवां जे बे विरुद्ध बळ तेनुं प्रमाण गमे तेवुं न्यूनाधिक होयछे,

* जुओ न्याय: 'निर्देशविरोध.'

एटले श्रद्धा अने शंकाना अनेक प्रकार बनी शके छे. एक अंत उपर जोईए तो पूर्ण विश्वास छे, शंकामात्रनो अभाव छे. त्यांथी शंकानी पासा आववा मांडीए तो उत्तरोत्तर क्रमे अनंत क्रमथी शंकानुं बळ वधते वधते मूळना विश्वासना बळनी बराबर थई रहेछे ए बीजो अंत छे. आ स्थिति शंकानी स्थिति छे, एमां उभये श्रद्धा अने अश्रद्धा, तुल्यबळवाळां छे. वळी पाछो बीजो क्रम चालु थायछे; तेमां अस्वीकारनुं बळ स्वीकारना बळ करतां अधिक वर्तें छे. एम करतां छेक छेडो आवी जायछे अने स्वीकार के अस्वीकार जे ते एक बळ अन्यनो पराजय करी पोताने स्थिर स्थापेछे.

२. श्रद्धानां निदान:—श्रद्धा तेम शंका उभये कार्यरूप छे, एटले ते कार्यनीसाधक सामग्री पण होवी जोईए. आपणी इच्छानुसार गमे ते बे भावनाने मनमां लावी, तेना आश्रयरूप पदार्थना संबंध विषे श्रद्धा के शंका पामवानुं बनी शकतुं नथी. श्रद्धा अमुक रीते ऊपजी आवीछे, पदार्थावलोकनथी, परामर्शथी, शब्दज्ञानथी, गमे ते कारणथकी ऊपजी आवीछे एम आपणे बोलीए छीए. ज्यारे अमुक प्रकारनी सामग्री पूर्वथी सधायछे त्यारेज, श्रद्धास्पद थाय एवी रीते कोई बे भावनानो मनमां योग थई आवेछे. बीजी रीते कहीए तो, निर्देश अथवा श्रद्धाना व्यापारमां जे संकल्पव्यापार गर्भित छे तेमां भावनाओनो योग मेळवी आपवा माटे कोईक मनोव्यापारनी अपेक्षा रहेछे. आ जे व्यापार, अथवा सामग्री, अथवा श्रद्धानुं निदान, तेनुं वर्णन सर्वसामान्यरीते चेतनशास्त्रवाळा आपेछे.

(१) अनुभव अने साहचर्य:—श्रद्धाने ऊपजावनार अथवा तत्पूर्वभावी सामग्री, अनुभव छे एम स्पष्ट जणायछे. आगळ आपणे जोयुं तेम अनुभवमां कोई बे प्रत्यक्ष भेगां आववाथी ते बे भावनानुं साहचर्य नक्की घडायछे. अने निर्देशमां भावनासंयोजनना बळनो निर्णय पण आ साहचर्यबळ उपरथीज थायछे. स्मरण अने अपेक्षा जेवा सादा श्रद्धाप्रकारमां पण आ वात सहज समजाय छे. उभये विषयमां जे क्रमे अनुभव थायछे ते प्रमाणे श्रद्धा नियमायछे.

एकंदर जोतां एम कही शकाय के साहचर्योत्पादक बळना प्रमाणमां श्रद्धाना बळमां फेरफार पडेछे. उदाहरण. ज्यां तदुत्पादक अनुभवसंयोग अनेकानेक होयछे त्यां अपेक्षा प्रबल वर्ते छे, जेमके निराधार थयलो पदार्थ पडशेज एम मानवामां, एथी उलटी रीते अनुभवनी एकरूपता न होय, अने साहचर्योत्पादक बळ तेथी निर्माल्य होय, त्यां पूरी श्रद्धा नथी होती अथवा शंकाज होयछे. एक प्रकारना तर्क बीजा प्रकारना तर्क साथे ताणांताण चलावे छे, अने श्रद्धाप्रवणता तद्विरुद्ध प्रवणताथी अटकेछे. उदाहरण. जे बाळकने तेनी माता कोई वार दर्शन करवा जतां साथे लई जायछे ने कोई वार नथी लई जती तेना मनमां तेने फरी दर्शन माटे जती जोई शंका पेदा थायछे.

एम कहेवामां आवेछे के दृढ श्रद्धा थवा माटे अनेक अनुभवनो योग पूर्वथी थयलो होवो जोईए एवुं नथी. एकज अनुभव जो ते सारो हृदयग्राही होय तो एवी सारी श्रद्धा उपजावी शके छे के जेमां ते अनुभवना पुनः पुनः अभ्यासथी अभ्यासना प्रमाणमां वृद्धि थती नथी. जो आखुं ए श्रद्धाप्रेरकबल एकज पासा जतुं होय तो तो अनुभव एक होय के अनेक होय तेमां कांई अर्थ नथी. छतां कोई पण साहचर्य दृढ थाय तेमां अभ्यास ए पण एक कारण छे, एटले श्रद्धामां पण ते रहेलो होय एम लागेछे—ज्यां अनुभव एकसरखो नथी होतो त्यां अनेक अनुभवसंयोगनी आवश्यकता लक्षमां आवेछे. एवे प्रसंगे तो श्रद्धानी पासा अने तेनी विरुद्ध जे बळणो होय तेना न्यूनाधिकत्वमांथी छेवटनो निर्णय उद्भवेछे अने श्रद्धा, शंका, के अश्रद्धानी स्थिति प्राप्त थायछे.

(२) शाब्दसूचनः—निर्देशरूपे जे भावनासंयोजन बतावामां आवेछे तेने एकलो अनुभवज असर करे छे एम नथी. बीजां कारणो पण घणी अगत्यनो जो के गौण भाग आ असर पेदा करवामां ले छे. आमां मुख्य तो शाब्दसूचनज छे. श्रद्धाव्यापार, अने निर्देशमां शब्दद्वारे तेनुं प्रदर्शन, ए बे वच्चेनो निकट संबंध बतावामां आवेलोज छे. आंतर जे श्रद्धा तेनुं बाह्य प्रदर्शन निर्देश छे;

माटेज ए बे वच्चे निकट संबंध छे; अने एटलाज कारणने लीधे, प्रामाण्यनिर्णय कर्या विना पण परोक्तवचननो स्वीकार करवानी प्रवणता रहछे. शब्दयोजना जोतां के सांभळतां, वाचनार के सांभळनारना मनमां तद्वाच्य भावनाओनी योजना थायछे, अने ते भावनाना आश्रयरूप पदार्थोना तेवा संबंध विषे कांईक सहज श्रद्धा पण अंकुरित थायछे. परंपराथी चालतां आवतां वचनोने सर्वथा स्वीकारवानी जे रीति, अने गमे तेवा अशक्यवत् वचनने पण एक क्षणभर मानी जवानी मनोवृत्ति, ए बधुं आ नियमनुंज उदाहरण छे एम समजवुं. आपणी पोतानी उक्तिओ जे परावर्तित असर उपजावे छे तेमां पण आ नियम उदाहृत थायछे. हार्टलीए कह्युं छे तेम, पोते न मानतो होय एवी वार्ता पण कोई माणस पुनः पुनः कह्यां करे तो छेवट ते वार्तानें पोते मानवा लागे छे.

(३) वृत्तिनी असरः—वळी श्रद्धाने आपणी वृत्तिओ तथा इच्छाओथी पण असर थायछे. कल्पना उपर वृत्तिनी शी असर थायछे ते बतावती वखते कहेवामां आव्युं छे के ऊर्मिविक्षोभथी, कल्पनाचित्रो घणां तादृश थायछे, अने ते विक्षोभना प्रमाणमां कल्पनाचित्रोना क्रमनुं निर्माण थायछे. विचारोने भेगा मेळवी, दृढ वृत्तिनी असर मनमां जामेली होय तेवा समयमां, तेमनुं मनन करवाथी, मनने ते ते विचार प्रेरनार बाह्यपदार्थनी स्थिति विचारानुसारज छे एम मानवानी श्रद्धा थायछे. युवावस्थामां जे उन्मत्त स्वप्न जेवा तरंगो ऊभरायछे ते आ वातनुं सारुं उदाहरण छे. साधारण रीते एम तो होय के एवा संयोजनने व्यावहारिक विश्वना अनुभव साथे कांईक संबंध तो होय छेज. वृत्तिनी प्रबलता जे करे छे ते एटलुंज के अमुक प्रकारना विचारोने मन आगळ तरता अने ताजा राखेछे, अने जे बीजा प्रकारना विचारो, आवुं वृत्तिप्राबल्य न होत तो मनमां आवी प्रथम प्रकारना विचार करतां पण अधिक थई पडत,

तेमने विदूर राखे छे. आवी मनःस्थितिने पक्षपात, अथवा तत्प्रवणता, अथवा पूर्वनिपात, एवुं नाम आपवामां आवेछे; एम होय त्यारे विचारनो क्रम यथार्थ रीते वे'तो नथी. श्रुतिपरंपरा उपर जे श्रद्धा थायछे ते अधिकारने नमवानी ऊर्मिने लईने ऊपजे छे.

१०. श्रद्धा अने कार्यसंपादकताः—हवणांज कहेवामां आव्युं तेम श्रद्धा अने कार्यसंपादकताने घणो निकट संबंध छे. आरंभेज एम कहेवुं जोईए के कार्यसंपादकतानो बुधिपूर्वक व्यापार चालता पूर्वे श्रद्धा होवीज जोईए. कोई पण फळ प्राप्त करवामां साधन अने साध्य वच्चेनो संबंध तो आपणा लक्षमां आवेलो होवोज जोईए. एटलुंज नहीं पण श्रद्धा करवी एनो अर्थ, घणे प्रसंगे कार्यसंपादकव्यापार माटे तत्पर रहेवुं एटलोज होय छे. कार्यसंपादकव्यापार करवानी अपेक्षा छे एवुं थोडुं घणुं स्पष्ट भान, साधारण रीते जोतां श्रद्धामात्रमां विद्यमान होयछे.

छतां आ प्रकारे यद्यपि श्रद्धा कार्यसंपादकव्यापार पूर्वे थाय छे, अने भावि व्यापारने अनुलक्षे छे, तथापि एक रीते जोतां कार्यसंपादकतानुंज ए फळ छे. कार्यसंपादकतानी तीव्र ऊर्मिथकी व्यापार करवानी आतुरता अति घणी वृद्धि पामे छे अने तेथी मननी शंकारूप स्थितिने स्थाने श्रद्धारूप स्थिति ऊपजवामां घणी अनुकूलता बनी आवे छे. धीमे धीमे वधारे विस्तारथी बतावामां आवशे तेम उग्र इच्छाओ अने कार्यसंपादकतानी तीव्र ऊर्मिओ जेमां अति सुलभ अने प्रबल छे तेवा यौवननुं ए एक लक्षणज छे के कार्यसंपादकव्यापारथी फळ थशेज ए प्रकारनी श्रद्धा ते समये विद्यमान रहे छे. शंका अने अनिश्चयनी स्थिति जणाय त्यां तो आवा ऊर्मिरूपी घोडाने अनुभवनी लगामथी रोकवामां आवेलो छे एटलुंज जाणवुं. अति आतुर युवावस्था अने धीमाशथी विचारपूर्वक पगलां भरनार पाकी वय ए बे वच्चे जे आ प्रकारनो विरोध

जेवो अंतर जणाय छे तेनुं आ करतां ओछुं देखाई आवे तेवुं पण बीजुं दृष्टान्त व्यावहारिक अने तरंगी मननी स्थिति वच्चेना अंतरमांथी पण मळी आवे छे. तरंगी मनने जे शंकानी स्थिति सहज अने परिचित छे तेमां, तुरत गमे ते रीते निश्चय करी कार्य साधवा माटे व्यापार करवो जोईए एवी प्रकृतिवाळुं व्यावहारिक मन थोडी वार पण रही शकतुं नथी.

आटली चर्चाथी एम फलित थाय छे के कार्यसंपादकता अने श्रद्धा परस्परने असर करे छे. दृढ श्रद्धाथी कार्यसंपादकताने उपकार थाय छे, अने कार्यसंपादकव्यापार करवानी आतुरताथी मनने निश्चय उपर आववानी त्वरा थाय छे. कार्यसंपादकता अने श्रद्धा एमांथी कीयुं कार्य ने कीयुं कारण ए कहेवुं कठिन छे. जुवान माणसने जे विश्वास (श्रद्धा) होय छे ते, अज्ञाननुं के कल्पना अने अनुभव सर्वदा मळतां आवेलां एवा प्रसंगनुं फळ छे, अने ते माणस जातिने जे कार्यसंपादक व्यापार माटेनी आतुरतानी सामग्री मळे छे तेनुं केटले भागे एक अंग छे ए नक्की करवुं कठिन छे; तेमज ए पण नक्की करवुं अशक्यवत् छे के आवी आतुरतानुंज ए विश्वास केटले भागे फळ छे. कल्पनानी तादृशता साथे श्रद्धानो संबंध होय एम लागे छे. एम कहेवामां आवे छे के गमे तेवी असंबद्ध के अशक्य कल्पना, पण सारी तादृश होय तो, श्रद्धा ऊपजाववा जाय छे खरी.

११. निर्देशनी पूर्णताः स्पष्टताः—आपणां सामान्योनी पेठे, आपणा निर्देश पण न्यूनाधिक पूर्णतावाळा होई शके छे. पूर्णतामां पे'ली वात स्पष्टता छे. पूर्णतानो अर्थ ए छे के निर्देशमां संयोजेलां सामान्य पोते स्पष्ट छे, अने संयोजनद्वारे तेमनो वच्चे स्थपायलो संबंध स्पष्ट गृहायो छे. मूळ शब्दोमांज अस्पष्टता होय तो प्रवचन पण अस्पष्टज थाय छे. "जूठुं बोलवुं ए पाप छे" आ निर्देशनी स्पष्टतानो आधार "जूठुं" अने "पाप" ए शब्दोना स्पष्टार्थ उपरज रहे छे ए खुल्लुंज छे. आटलुंज नहीं पण कोई पण निर्देश बराबर स्पष्ट थाय ते माटे एटलुं ए आवश्यक छे के निर्देशगत जे वार्ता (संबंध) ते, तथा तेवाज शब्दोवाळा

बीजा निर्देशोथी प्रकृत निर्देश केटलो जुदो छे ते, अने बीजा तद्विरुद्ध निर्देशोथी प्रकृतनिर्देशनी केटलो विरोध छे ते, ए बधुं मनमां स्पष्ट स्फुरेलुं होवुं जोईए.

निर्देशो अनेक रीते अस्पष्ट थई जाय छे. साधारण रीते तो अपूर्ण अवलोकनथी पण अस्पष्टता थई आवे छे, केमके मनने यथार्थ रीते स्पष्ट न थयलो एवो कोईक वस्तुसंबंध तेवा अवलोकनथी मानी लेवामां आवे छे. आपणे घणी वखते कोई बे वात वच्चेनो संबंध मानी लईए छीए, पण तेम मानवामां आपणे एटले सुधी विचार करेलो होतो नथी के ए संबंध शा प्रकारनो छे; केई वात आश्रित छे, केई आश्रय छे, ए आदि विचारेलुं होतुं नथी. वळी स्मरणशक्तिनी खामीने लीधे पण, अपूर्ण स्मृति ऊपजवाथी निर्देशोनी स्पष्टतामां विघ्न आवे छे. पदार्थोना यथार्थ धर्मनुं स्मरण थतुं न होय तो, पदार्थोना संबंधनो निर्देश करवो सरळ पडतो नथी. सामान्योपरत्वे थाय छे तेम निर्देशो परत्वे पण बने छे के शब्दशक्ति क्षीण थवाथी जे वात एक वार स्पष्ट होय ते अस्पष्ट थई जाय छे. प्रथमे स्पष्ट रीते गृहायली वस्तुगति, कालक्रमे करीने, अभ्यास तथा परिचयना बळे, जेमां स्पष्ट अर्थरूप जीव समजाय नहीं अने साक्षात् श्रद्धा ऊपजे नहीं एवी निर्जीव शब्दमात्रज थई रहे छे. अस्पष्टतानुं बीजुं कारण ए पण कहेवा जेवुं छे के बुद्धिना प्रदेशमां वृत्तिनो विप्लव पण घणो विकार ऊपजावे छे. घणो तीव्र वृत्तिविक्षोभ होय तो अवलोकन यथार्थ थई शकतुं नथी, विचारो स्पष्ट रीते गृहाता नथी; आवा ऊर्मिविक्षोभने समये करेलो निर्देश घणुं करीने अनिश्चितज होय छे.

निर्देशनी अस्पष्टतानुं एक कारण तो कांईक विशेष विचारने पात्र छे. ए तो आपणे जोयुं के बाळको, अन्यनो शब्दव्यवहार जोईने,

पोतानो शब्दव्यवहार रचे छे, एटले तेमना मनमां ते ते शब्दबोधित जे सामान्य तेनुं भान अस्पष्ट रहे छे. तेज रीते, अन्यप्रोक्त निर्देशो के श्रद्धावचनो एमने एम स्वीकारवाथी, निर्देशनी अस्पष्टता घणे भागे ऊपजी आवे छे. परंपरा अने शिक्षण ए बे द्वारथीज आपणने आपणा ज्ञाननो मो'टो भाग प्राप्त थाय छे ए तो सुप्रसिद्ध छे. अनेक वर्षोथी संगृही राखेलुं ज्ञान परंपराथी प्रत्येकना हाथमां आवे ए यद्यपि महालाभ छे तथापि अनिश्चित निर्देशो करवानी टेव पडवानुं एक कारण छे. परोक्त वचनोने स्वीकारी लेवानी मननी जे स्वाभाविक प्रकृति छे तेने लीधे, अंतर्गतसत्यनो मर्म विचार्या विनाज, आपणे अनेक वचनोने मानी लेता चालीए छीए. अन्य मनुष्योना पोशाख वगेरेनुं जेम आपणे अनुकरण करी लईए छीए, तेम तेमना अभिप्रायोनुं पण करीए छीए. आवा बधा प्रसंगोए आपणा पोताना तरफथी संपूर्ण निर्देशव्यापार थयलो होतो नथी. स्वीकारवामां आवता अभिप्रायो विषे बुद्धिए पूर्ण विचार कर्यो होतो नथी, वचनगत सामान्योना अर्थनुं स्पष्ट ग्रहण होतुं नथी, अने सामान्यो वच्चेनो संयुक्त संबंध स्पष्ट रीते प्रतीत होतो नथी.

१२. याथार्थ्यादि अन्य निर्देशगुणः——वळी सामान्योनी पेठे निर्देशो पण यथार्थ होय के अयथार्थ होय. जे वस्तुगति कहेवानी होय तेने संपूर्ण रीते बराबर मळतो आवतो निर्देश ते अयथार्थ कहेवाय. निर्देशव्यापारमां अस्पष्टता आववाथी, निर्देश पण अस्पष्ट ऊपजे छे. जे वचनो स्पष्ट नथी समजातां ते खरी रीते समजायांज न कहेवाय. खरेखरुं अयाथार्थ्य अनेक कारणथी पेदा थायछे. एमांनां केटलांक तो निर्देशनी अस्पष्टता ऊपजावनारां कारण जेवांज छे. ए तो स्पष्टज छे के ज्यां अवलोकनमां खामी होय, के ज्यां वस्तुओनुं स्मरण बराबर न होय, त्यां अयाथार्थ्य पण थईज आवे. वळी उग्र ऊर्मिविक्षोभथी अस्पष्टता उपरांत

अयाथार्थ्य पण ऊपजवानो संभव छे. जोयली के सांभळेली वातने जरा वधारीने कहेवानी जे सहज प्रकृति छे ते आवाज कारणथी थई आवेली जाणवी. आपणा पोताना सामर्थ्य उपर हठथकी विश्वास ऊपजावनारी कार्यसंपादक, व्यवहारशील आपणी प्रकृतिनी असर, तथा आपणी पासेनी सामग्री उपर तेज प्रकृतिने लीधे थतो विश्वास, ए पण याथार्थ्यना धोरणथी निर्देशने दूर खेंचनार कारणोना पेटामांज समाय छे.

अयाथार्थ्यनां आटलां कारणो उपरांत प्रत्येक व्यक्तिना अनुभवनी मर्यादा अने अपूर्णता पण ध्यानमां लेवा जेवी छे. जे प्रकारनो आपणने अनुभव होय, जेवा साहचर्यसंबंध होय, ते प्रकारना आपणा निर्देश ऊपजे छे. निर्देशोमां याथार्थ्य आणवा माटे, व्यक्ति अने मंडळनी बुद्धिनो परस्पर व्यवहार थवानी, एटले के स्वभाव, अनुभव, प्रधानता भोगवतां साहचर्य, इत्यादि उपाधिकृत व्यक्तिप्राधान्यताने मंडलसमस्तना स्वीकृत अनुभवना धोरणथी सुधारवानी, पूर्ण अपेक्षा रहेछे.

निर्देशना पोताना स्वरूपने लईने जे गुणदोष आ प्रकारे बताव्या ते उपरांत जे प्रकारे निर्देशो प्राप्त थायछे अने मनाता चाले छे ते आधारे पण केटलाक गुणदोषनो विचार करवा जेवो छे. आ गुणो उपरथीज आपणे अमुक अमुकनी विचारशक्तिनी तीव्रतामंदतानो तर्क लईए छीए.

स्पष्ट रीते विचार करवाना व्यापारनुं तात्पर्यज ए छे के कोई पण विषय उपर तुरतज निश्चय करी लेवानी शक्ति होवी जोईए. विरोधी आकर्षणोथी आमतेम आकर्षातुं, अने तेमने पोताने स्वाधीन करवाने असमर्थ, एवुं मन निर्बल विचारशक्तिवाळुं छे, एम कहेवाय. परंतु बीजी पासा जोईए तो आथी उलटा प्रकारनो दोष पण थई आवेछे. विचार-(निर्देश)व्यापारमां कोईने एटलो बधो संभ्रम रहे छे, निश्चय उपर आवी जवानी एटली बधी आतुरता थायछे, के ए व्यापारमां पुराव

इत्यादिनुं तोलन करवामां जे विलंब थाय तेने तेमनाथी जरा पण सहन करातो नथी. सारी निर्देश (विचार) शक्तिमां तात्कालिकता साथे ससारता जोईए. व्यावहारीक निश्चयोनी चर्चापरत्वे आ बे गुण विषे वधारे विचार करवामां आवशे.

जे प्रकारे निर्देशो उद्भवेछे ते प्रकारने लईने जेम तेमनी उत्तमता अधमता मनाय छे तेम ऊपज्या पछी ते केवा स्थायी थई शके छे ते उपरथी पण तेमनी उत्तमता अधमता समजायछे. नक्की ऊपज्या पछी निर्देश स्वाभाविक रीते तो मनमां स्थिरज थवा जायछे. आ स्वभावने लीधेज निर्देशोमां एकरूपता रही शकेछे. आज एक वात कहेवी ने काले बीजी कहेवी ए तो विचारशक्तिनी घणीज निर्बलता बतावे छे. बीजी पासा एम पण छे के नवी असरोथी—अनुभवद्वारे प्राप्त करेला नवा ज्ञानथी, के नवी विचारपद्धति समजायाथी—पण आपणा निर्देशोमां विकृति थई आवेछे. दृढविचार ए गुण छे तथापि दुराग्रह ए दोष छे. बुद्धिविकास माटे प्रथम आवश्यक वात एज छे के आपणे आपणा मनमां नवा नवा संस्कारोने स्थळ आपवा तत्पर रहेवुं; एटले के नवो पुराव मळतो जाय तेनुं तोलन करी आपणा अभिप्रायोमां घटतो फेरफार करवा माटे आपणे तैयार रहेवुं. विचारनी उत्तमता, आ विषयमां तो, सामसामेना बे छेडा—अस्थिरता अने दुराग्रह—नी वचमांज रहेली छे.

स्थिरताना गुण साथे स्वातंत्र्य पण घणो निकट संबंध राखे छे. व्यक्तिने पोतानोज कोई दृढ अभिप्राय न होय तो, मन आसपासनी मांडलिक असरोथी आम तेम दोलायमान थाय छे. एथी उलटी रीते, बीजांना अभिप्रायो उपर केवळ दुर्लक्ष करवुं ए पण दुराग्रही अने कठिन बुद्धिनुं चिन्ह छे. आम जोतां पण एनुं एज नीकळे छे के विचारनी उत्तमता बे अंतनी मध्यमांज रहे छे. सबल अने शुद्ध विचारशक्तिमां अमुक स्वातंत्र्यनी साथेज बीजांना अभिप्रायोनुं पण योग्य मान भळेलुं रहे छे.

सबल शुद्ध विचार थई आववामां अनेक साधन कारणभूत छे ए बतावबा माटे जोईए तेटलुं कहेवाई चूक्युं छे. विचार अथवा निर्देशनो जे व्यापार ते आपणा आखा अनुभवनुं फळ छे, एटले एमां अवलोकन, स्मरण, तुलना, आदि व्यापारोनो समास छे. आ बधा व्यापार संपूर्ण रीते थाय त्यारेज विचार पण पूर्ण अने यथार्थ थई आवे. सबल विचारशक्तिना अर्थमां ए पण जाणी लेवानुं छे के बुद्धि अने वृत्तिना व्यापार उपर अंकुश राखवानी शक्ति आवेली छे, प्रकृत विषय उपर अवधान जोडी शकाय छे, अने पक्षपातादि वळणोना आकर्षण सामे टकी रहेवानुं सामर्थ्य प्राप्त थयलुं छे.

व्यष्टिबुद्धि अने समष्टिबुद्धिः—आ चर्चामांथी एटलुं जणाय छे के व्यक्ति व्यक्तिनी बुद्धिनो मंडळनी बुद्धि साथे जे संबंध छे ते घणो गुंचवण भरेलो छे. एक पासा व्यक्तिने पोताना ज्ञानना मोंटा भाग माटे मंडळ उपरज आधार राखवो पडे छे. संभाळथी संचित करेलो अनेक काळनो जे ज्ञानभंडार तेनी सामा थवुं ए तो कोई गांडा माणसनुंज काम छे. व्यक्तिना पोताना ज्ञान अने श्रद्धाने यथायोग्य करी आपवामां मंडळना ज्ञानथी जे साहाय्य थाय छे ते अति विपुल छे. बीजी पासा एम पण थवानो संभव छे के तैयार मळी आवता अभिप्रायोने व्यक्ति बगरविचारे स्वीकारी ले. विचार-शक्तिनो संपूर्ण उपयोग करवो एमांज व्यक्तिना अभिप्रायनो परिपूर्ण व्यापार देखाई आवे छे. एटलुंज नहीं पण कोई एक समयना चालता अभिप्रायो छेवटनाज छे एम कही शकाय नहीं; ज्ञानना उपचयनो अर्थज ए छे के पदार्थो विषेना अभिप्रायोमां निरंतर वधारो घटारो थयां जवो; एटले समष्टिबुद्धिनुं व्यष्टिबुद्धि उपर अयोग्य दबाण थवाथी समष्टिज्ञानना भंडोळमां ऊमेरो थतो बंध पडी जवानो संभव छे. व्यष्टिज्ञान अने समष्टिज्ञाननुं शी रीते संयोजन थाय, व्यक्तिनामां प्रमत्तता न आवतां व्यक्तिनुं स्वातंत्र्य शी रीते सचवाय, एनो मार्ग योजवो ए काम जरा कठिन छे.

१३. निर्देशव्यापार अने परामर्श(विचार)व्यापारनो संबंधः

—अत्यार सुधी आपणे निर्देशमात्रनोज विचार कर्यो छे; एमां ए प्रश्न उपर लक्ष आप्युं नथी के एवा निर्देशो कोई पण परामर्श-

व्यापार विना साक्षात् उद्भवे छे के एवा व्यापारद्वारा परोक्ष रीते उद्भवे छे. आवो साक्षात् अने परोक्षनो भेद चेतनशास्त्र करतां न्यायशास्त्रमां वधारे अगत्यनो छे; केमके हवणांज बतावबामां आवशे तेम अन्य निर्देश उपरथी ऊपजावेला एवा घणाक निर्देशो, ते अन्य निर्देशोने मनमां आणी ते द्वारे ऊपजावेला होता नथी. छतां आवो जे भेद छे ते चेतनशास्त्रमां पण चाली शके तेवो छे; केमके ज्यारे ज्यारे निर्देशपूर्वे अनुमान (परामर्शव्यापार) थयलुं होय छे त्यारे मनोव्यापार वधारे गुंचवायलो होय छे, अने छेवटे जे वात(निर्देश)नो स्वीकार थाय छे ते एकाएक स्वीकारायली वातथी एटले अंशे जुदी पडे छे के ए वात अन्य वातोने आधारे स्वीकारायली होय छे.

घणाक निर्देशो साक्षात्ज, कांई पण व्यवधान विनाज, सहज रीते, उद्भवी आवे छे, एमां अनुमाननो कशो व्यापारज होतो नथी. आम होत तो परामर्श शाना उपरथी ऊठत? परामर्शनो आधारज रहत नहीं; अनुमानज बनत नहीं. आवा निर्देशोने सहज निर्देश अथवा प्रत्यक्ष निर्देश एवुं नाम आपीए. घणाक व्यक्तिनिर्देश आ प्रकारनाज होय छे. अवलोकन अने स्मृतिना फळने एकत्र करी बतावनार निर्देश पण तेवाज होय छे. साधारण रीते जोतां एवा निर्देशमां कोई पण जातनो अनुमानव्यापार जणातो नथी.

सहज श्रद्धानी मर्यादाः—सहज श्रद्धानी मर्यादा केटली मानवी ए प्रश्न विवादास्पद छे, अने तत्त्वशास्त्रमां ए उपर घणो मतभेद थयलो छे. घणाक पंडितो एम माने छे के अनुभवातिरिक्त, तथा अनुमानव्यापार विनाज अधिगत, एवां घणांक सर्वदेशी सत्यो छे. गणितशास्त्रना मूळ नियमो एवाज प्रकारना छे तेमज पदार्थविज्ञानना मूळ सिद्धान्तो पण तेवा छे. उदाहरण. (१) कोई एकने समान एवी बे वस्तु परस्परने समान छे. (२) विश्वनी एकरूपताज रहे छे; कार्य मात्रने कारण होय छे. आवां सहजोपलब्ध सत्योने अनेक नाम आपवामां आवे छेः सहजोपलब्धि,

बुद्धिना आकृतिक नियम, साधारण बुद्धि, इत्यादि. आ मतनी विरुद्ध मत धरावनारा कहे छे के पाकी वयना माणसने आवां सत्यो यद्यपि सहजोपलब्ध लागे छे, तथापि एवां सत्यो, अनेक अनुभवना उपचयथीज बनेलां होय छे, अर्थात् अनुभव उपरथी ते अनुमानद्वारा प्राप्त करेलां होय छे. ए सत्यो एटली बधी बाबतोने लागु थाय छे, तेमनी मर्यादा एवी विशाळ होय छे, के आपणे तेमने बहु वे'लां समजी शक्या एम जाणवामां तेमने शी रीते प्राप्त कर्यां ए वात वीसरी जईए छीए. आ बे मतनी वच्चे परिणामवाद एवुं समाधान योजे छे के आपणा पूर्वजोना अनंतानंत अनुभवथी प्राप्त करेलां सत्य आपणने, परंपरित बुद्धिप्रवणतारूपे प्राप्त थई, सहजोपलब्धिरूपे जणाय छे.

साधारण बुद्धि:—आवां स्वसिद्ध सत्योनुं मूळ निदान शोधवानी तात्त्विक चर्चामां उतर्या विना एटलुं तो कही शकाय के पाकी वये सहजरूपे जणाता आवा निर्णयोमांना घणाक, प्रथमे तो, कोई प्रकारना अनुमानद्वाराज प्राप्त थयला. चेतनशास्त्रमां निर्देशस्वरूपनो जे विवेक बतावामां आव्यो तेमांथी एम फलित थाय छे के मनमां दृढ रीते चोटेली वात, कालक्रमे करीने, स्वतंत्र अने सहजोपलब्ध वातनुं रूप धारण करी लेछे, तेना अधिगमनो इतिहास भूली जवाय छे, अने ते एम ने एमज प्राप्त थई छे एवुं लागे छे. प्राकृत लोक जेने "साधारण बुद्धि" कहे छे ने जेमां व्यवहारोपयोगी एवी घणीक एम ने एम मनाती जेवी बातोनो समास थाय छे तेनो अर्थ अत्र बताव्यो तेटलोज छे. आपण सर्वने आवी बातो पोत पोताना अवलोकनथी एटले के ए प्रकारना व्याप्तिव्यापारथी, कांई भागे वृत्ति अने ऊर्मिना प्रवाहानुसारे, ने मो'टे भागे श्रुतिपरंपराथी, प्राप्त थाय छे. आवी स्वीकृत बातो उपर शंका करवी ए गांडाबळनुं चिन्ह गणाय छे. आवो जे "साधारण बुद्धि" नो समूह ते, व्यष्टिबुद्धिने असर करनार समष्टिबुद्धिनुं एक मुख्य बळ छे. आपणा नित्य व्यवहारना निर्देशोनो जेना उपर आधार रहे छे एवा सिद्धान्तो, नियमो, स्वीकृतपक्षो, आदिनां निदाननो शोध करवानी प्रेरणा करनार बुद्धिव्यापार उपर प्रबल संकोचरूपे एनी असर प्रवर्ते छे.

बीजी पासा जोईए तो आथी बाकी रहेला आपणा निर्देशोनो मो'टो भाग—व्यक्तिनिर्देश के सर्वदेशीनिर्देश—सर्व, कोई प्रकारना अनुमानव्यापारद्वाराज प्राप्त थाय छे. अर्थात् आवा निर्देशोने, प्रथमथी प्राप्त करेला अन्य निर्देशोद्वारा, आपणे ऊपजावी लईए छीए. आ अन्य निर्देशोने छेवट निर्देशनी अपेक्षाए, अवयव एवुं नाम आपवामां आवे छे. माणसमात्र भूलने पात्र छे, पंडितो पण माणसो छे, तेथी पंडितो भूलने पात्र छे, एम जे निर्देश ऊपजाववो तेने परामर्शव्यापार करवो एम कहे छे. छेवट निर्णय अथवा निगमनमात्रने अनुमितनिर्देश कही शकाय.

निर्देश अने परामर्श वच्चे, सामान्य अने निर्देश वच्चे जेवो संबंध छे, तेवोज कांई संबंध छे. स्फुट के अस्फुट एवा पण कोई प्रकारना परामर्शव्यापारद्वाराज निर्देशो उद्भवे छे; अने आ रीते प्राप्त करेला निर्देशो बीजा परामर्शव्यापारमां अवयवरूपे काम आवे छे.

१४. अनुमाननुं स्वरूप:—परामर्श अथवा अनुमान करवुं एनो अर्थ एज छे के एक अथवा वधारे निर्देश उपरथी अन्य निर्देश उपर आववुं. आनुं तात्पर्य ए थयुं के अवयवोने आधारे निगमनने मन स्वीकारी ले छे. बीजी रीते कहीए तो जे निगमन प्राप्त थाय छे ते नवा अने जूना निर्देश वच्चेना संबंधनुं ग्रहण थवामांथी थई आवे छे; अवयवोमांज निगमन रहेलुं छे, एमांथी नीकळ्या विना के ऊपज्या विना रहे एवुंज नथी एम जाणवाथी थई आवे छे. त्यारे प्रश्न एम करवामां आवे के आमां मुख्य बुद्धिव्यापार कीयो छे? अवयव अने निगमन वच्चे एवो शो संबंध मनने जडी आवे छे के अवयव उपरनी श्रद्धा निगमन उपर पण बेसे छे?

आ प्रश्ननुं उत्तर समजवा माटे एक उदाहरण लईए. "वादळां आव्यां छे माटे वरसाद थवानो संभव छे" आवुं निगमन ऊपजावतां हाल जे वादळां आव्यां छे तेने आपणे जोयलां अथवा सांभळेलां एवां आगळ आवेलां वादळां साथे आपणे सरखावीए छीए. पण आ वादळांने ते वादळां साथे सरखावीए छीए एटलुंज नथी; पहेलांनां वादळांनुं जे सहकारी (वरसाद इत्यादि) हतुं ते परत्वे पण हालनां वादळांने ते

वादळां साथे सरखावीए छीए. आ उपरथी समजाय छे के परामर्शव्यापार ए, वधारे उत्कृष्ट अथवा गुंफित एवा साधर्म्यग्रहनो अथवा वर्गीकरणनो व्यापार छे. दर्शन अने सामान्यग्रहथकी ए एटले अंशे जुदो पडे छे के एमां तेमनां सहकारी परत्वे पदार्थोनुं साधर्म्य लक्षमां लेवाय छे, अथवा टुंकामां कहीए तो, एमां पदार्थ पदार्थ वच्चेना संबंधोनुंज साधर्म्य गृहवामां आवे छे.

आम आपणे जोई शक्या के अनुमानव्यापार साधर्म्य उपर चाले छे. पदार्थ अने संभवो वच्चेनां साधर्म्य आपणे गृहीए छीए एटलोज अनुमानव्यापार छे. वैधर्म्य पण अनुमानमां आवेछे खरुं, पण नवा अने जूना निर्देश वच्चेना संयोजकरूपे नहीं. वैधर्म्यमात्र उपरथी कशुं पण अनुमानी शकाय नहीं. गणितगत परामर्शोमां ए वात अनुपद जणायछे; **क** अने **ग** एक त्रीजा पद **ख**ने असमान छे तो **क** अने **ग** वचे कशो संबंध कही शकातो नथी.

पण वैधर्म्यनो अनुमानमां गौण उपयोग रहे छे खरो. अनुमान करवानी शक्ति, एक निर्देशने बीजा निर्देश साथे योजवानी शक्ति, साधर्म्य पकडवाना सामर्थ्य विना आवती नथी. जड, मूढ बुद्धिनो अर्थज ए छे के तेवी बुद्धिथी अनुमानव्यापार थई शकतो नथी, अनुमानव्यापारमां ऊतरातुं नथी, अवयव अने निगमनने संयोग करावनार साधर्म्यनुं तेनाथी ग्रहण थई शकतुं नथी. बीजी पासा व्यग्र बुद्धि तेने कहीए छीए के जे बराबर वैधर्म्य न पारखतां, ज्यां साधर्म्य न होय त्यां पण साधर्म्य मानीने अनुमान चलावे छे. जेटले अंशे आपणे वैधर्म्यपरीक्षा करी साधर्म्यग्रह करीए तेटले अंशेज अनुमानव्यापार यथार्थ थई शके छे.

१९. अनुमान अने पूरावो:—अनुमानव्यापार करवामां मन, अवयवो उपरथी निगमन उपर, ते व्यापार सुविज्ञात रूपे चलावीने आवे

छे एम आपणे मानी लीधुं, परंतु मनोव्यापारनी जे प्रक्रिया घणे खरे प्रसंगे चाले छे ते सर्वमां आवुंज बने छे एम न धारवुं. निगमन सर्वथी पे'लुं मनमां स्फुरे छे, अने अवयव अथवा कारण, जो ते कदापि पण स्पष्ट रीते समजवामां आवे तो, पछवाडेथी, एटले के नवा अने जूना प्रसंगना सादृश्यना बळे करीने स्फुरी आवे छे. आवा सर्व प्रसंगोए बुद्धि एकाएक निगमन उपरज जईने थोभे छे. भूत दृष्टान्तोनुं तुरत स्मरण थतुं नथी, अने जो निगमन उपर कोई शंका ऊठावनार न मळे तो, कदापि पण थाय नहीं. आम होवाथी समजाय छे के आगला समयना दृष्टान्तरूप निर्देशने उद्देशी अनुमिति करवी ए तो प्राप्त करेला निगमन विषे फरी विचार करी पूरावो बतावावाना क्रममां बने छे, बाकी प्राथमिक अनुमानव्यापारमां तेनो कशो भाग होतो नथी.

एक अथवा बे निर्देश उपरथी अन्य निर्देश उपर जवानो व्यापार बेमांथी एकरूपे होई शके छे. एक अथवा बे व्यक्तिनिर्देश उपरथी आपणे कोई बीजा व्यक्तिनिर्देश उपर आवीए, अने एम करवामां निगमनना कारणभूत सर्वदेशी निर्देशरूप व्याप्ति तथा अवयवो स्पष्ट रीते बतावीए नहीं. कोई बाळक एक अथवा वधारे लाकडाना कटकाने तरता देखी, बीजो कोई तेवोज कटको पण तरशे एम माने तो ते आवा प्रकारनुं अनुमान करे छे. आने एकदेशीनिर्देशनिबंधन अनुमिति कहे छे, केमके एमां व्याप्ति बतावावामां आवती नथी.

आ प्रसंगमां पण जोवानुं ए छे के भूत दृष्टान्तनो सुविज्ञात अनुकर्ष करवानी अपेक्षा नथी. उक्त उदाहरणमां बाळकनुं मन लाकडाना विचार उपरथीज तरवाना विचार उपर जाय छे. अपेक्षा विषेनी चर्चाने प्रसंगे आपणे जोयुं छे तेम, साहचर्यबले करीने, मन, ते साहचर्यना निदानरूप भूतदृष्टांतोनो सुविज्ञात अनुकर्ष कर्या विनाज, अपेक्षित वात

बनशेज एम धारी लेवा तत्पर थाय छे. ए तो स्पष्टज छे के ज्यां भूत अनुभव अनेकधा होय त्यां तो तेनुं सुविज्ञात अनुकर्षण थवानी आवश्यकता नथीज.

आ अनुमानप्रकार, बुद्धिना विकासक्रममां, सर्वथी प्रथमे आविर्भाव पामे छे. ऊतरता वर्गना प्राणीओमां अनुमानशक्तिना जे अंकुर देखायछे ते आ रूपेज दर्शन दे छे. बाळकोना अनुमानव्यापार पण आवीज जातना होय छे. भूत अनुभव उपरथी, ते बधां, नवा अनुभव उपर जाय छे, अने वचमांनो व्याप्तिरूप नियम लक्षमां लेतां नथी. मो'टी उंमरनां मनुष्य पण घणे भागे एज प्रकारे अनुमानव्यापार करे छे. साधारण व्यवहारमां, व्याप्तिरूप नियमो सुलभ छतां पण, एकंदरे आपणे तेमने लक्षमां लावता नथी. अने एवा प्रसंग पण थोडा नथी होता के जेमां निगमनने आवी कोई व्याप्ति साथे संयोजवुं अति कठिन न थई पडे; जेमके अन्य मनुष्योना व्यवहारना हेतु आदि विषे तर्क करवामां.

व्यावहारिक अनुमिति, चतुराई, इत्यादि:—आ प्रकारना अनुमानने अविज्ञात, अथवा यंत्रवत् स्वसिद्ध अनुमान कही शकाय. भूत दृष्टान्तोनी एवी स्पष्ट स्मृति नथी होती के जे उपरथी बुद्धि आगळ प्रवर्ते. अमुक प्रकारेज अनुमानव्यापारनुं वळण थाय एवा घणा संस्कारो अनेक अनुभवोमांथी मनमां एकत्र थई रहेला होय छे. बुद्धिना संबंधे जे आवुं बनेछे ते काम करवा संबंधे जेने टेव कहीए छीए तेना जेवुंज छे. जेम टेव पडी गयली होय एवा कोई काम तरफ, प्रथमथी हेतु आदिनो स्पष्ट विचार कर्या विनाज, प्रवृत्ति थाय छे तेमज स्वसिद्ध अनुमानमां पण तेवी अनुमितिना कारणनो विचार कर्या विनाज निगमन उपर जवानुं वळण मनमां घडायलुं होय छे. उभये प्रसंगमां सुस्थापित तंतुसंबंधो उपर आवा कार्यनो आधार होवानो संभव छे. आ प्रसंगोमां भूत अनुभवनो केटलो सुविज्ञात अनुकर्ष होय छे ए वात ए उपरथी पण स्पष्ट थाय छे के घणाक शुद्ध निगमन उपर आवी शकनारा माणसो पोते प्राप्त करेला निगमननां कारण पछीथी बतावी शकता नथी. तेमने व्याप्तिनुं भान नथी होतुं एटलुंज नहीं पण जे उपरथी व्याप्ति ऊपजी शके तेवी कोई हकीकतनुं पण भान नथी होतुं. व्यावहारिक प्रसंगोमां जे निगमनो ऊपजी आवे छे तेने आ वात सारी रीते लागु थायछे.

व्यवहारचतुर माणस तेज कहेवाय के जे पोताना भूत अनुभवनो उपयोग आवुं तुरत निगमन करवामां करी शके. परायां माणसनी वृत्तिओ अथवा तेमनुं चारित्र सहज रीते दृष्टिमात्रथीज समजवानी शक्ति, जनव्यवहारमां चतुराई, सावधानता एटले के अकस्मात् बनी आवता प्रसंगोने तुरत गृही तेमां बुद्धिव्यापार तुरता तुरत योजी लेवानी शक्ति, ए बधां जुदे जुदे प्रकारे आवां स्वसिद्ध बुद्धिव्यापारनांज कार्य छे. आ बधी बातोमां अनेक भूत अनुभव अने अवलोकनना अविज्ञात संस्कारोथी अमुक संधिए अमुक रीते विचार करवानी प्रवणता स्थपाई गयली होवाथीज आवी शक्ति उद्भवेली होय छे.

एक एकदेशी निर्देश उपरथी बीजा एकदेशी निर्देश उपर साक्षात् रीते जवानी जे आवी बुद्धिप्रवणता ते अत्र बताव्या करतां उलट व्यापारमां, नवी वात उपरथी ते वातनुं कारण बतावबा के स्पष्टीकरण करवा जूनी वात उपर जवामां, सारी रीते जणाई आवे छे. बाळको अने निरक्षर लोको आ प्रमाणे बहु वार करे छे. नवा अने अपरिचित प्रसंगने एक अथवा वधारे जूना प्रसंगो साथे मेळवी लेवामां तेमनी बुद्धिने अमुक प्रकारनो संतोष थायछे. नवा प्रसंगोनो खुलासो आवी रीते ते बधां करी ले छे, पण ए व्यापारांतर्गत जे व्याप्ति ते उपर लक्ष करतां नथी. जड पदार्थोनी गति विषे अलंकारिक रीते बोलवामां, अग्निना तणखा उंचे "ऊडे छे" एम कहेवामां, व्याप्तिद्वारा पूर्ण खुलासो थवाथी न्यायनिष्णात बुद्धिने जे संतोष थाय तेवोज संतोष आपण सर्वने थतो लागे छे.

आवा बधा अनुमानव्यापार विषे विचार करी जोतां जणाय छे के आपणे, अविज्ञात रीते पण, कोई व्याप्ति मानी लईए छीए. उक्त उदाहरणमां बाळक एम मानीज ले छे के "लाकडुं मात्र तरे छे." ए वातनो जो तेना मनमां निश्चय न होत तो "आ लाकडुं तरशे" एवी अनुमितिज ते करत नहीं. एटलुंज नहीं पण आवी अनुमितिनुं कारण तेनी पासे मागवामां आवतां ते आ नियमज पूरावरूपे कहेशे. एम ज्यारे

थाय त्यारे अनुमान पूर्णरूपे जणाय छे. एने परार्थानुमान एवुं नाम पण आपी शकाय केमके परने संतोषवा माटे एवुं अनुमान प्रयोजाय छे. स्वसिद्ध अनुमानने परार्थानुमाननी दृष्टिथी स्वार्थानुमान कही शकाय. आपणे आपणा मनमांना अनुमानव्यापार उपर जेटले अंशे विचार करीए छीए तेटले अंशे परार्थानुमानज करीए छीए. नित्यव्यवहारना व्यापारथी भिन्न एवी जे शास्त्रीय अनुमानप्रवृत्ति ते आवी व्याप्तिद्वाराज चाले छे. अनुमानव्यापार आ रूप पकडे त्यांथी मनुष्यबुद्धि उत्कर्षे पहोची छे, सामान्य विचार करवानी तेने शक्ति आवी छे, पदार्थगत साधर्म्योने गृहीने समजवानुं सामर्थ्य आव्युं छे, एम समजायछे.

१६. **व्याप्तिग्रह अने परामर्शव्यापारः**—सर्वदेशीनिर्देशद्वारे अनुमानव्यापार चलाववानी जे रीति तेना एकंदरे बे विभाग मानवामां आवे छेः (१) प्रथम भाग सर्वदेशीनिर्देश अथवा व्याप्ति प्राप्त करवी ए छे; अने (२) बीजो भाग आ रीते उद्भवेली व्याप्तिने कोई एक प्रसंगमां लागु करी जोवी ए छे. आ बीजा भागने परामर्श कहे छे. व्याप्तिग्रहनो जे व्यापार ते एक एक वातथकी उपर उपर जतां सर्वदेशीनिर्देशे पहोचवारूपी छे; परामर्शनो व्यापार व्याप्ति उपरथी नीचे उतरी एकाद वात उपर आववारूपे थाय छे.

एकदेशी निर्देशो उपरथी सर्वदेशी निर्देश उपर जवामां जे चेतनव्यापार थाय छे ते विचारमात्रना स्वरूपमां जे व्यापार रहे छे—अनेक वैधर्म्यमांथी साधर्म्य पकडी लेवुं—तेनुं उत्तमोत्तम उदाहरण छे. व्याप्तिग्रहनुं एकाद उदाहरण जोईए. बाळक एम अवलोके छे के रमकडां, चमचा, वासण, पोते जाते, इत्यादि सर्व, आधार न होय तो पडी जाय छे. आवा बधा अनुभवोने एक बीजा साथे सरखावीने, जे सर्वमां समायलो साधारण नियम तेने पकडी ले छे. आ बधा पदार्थोमां सर्व-

सामान्य वात एवी तेने लागे छे के ए बधां जड पदार्थ छे. आटली वात अने तत्सहकृत जे पडी जवानी वात ते बेने ते जुदां पाडी ले छे; एटले के "जड पदार्थो पृथ्वी उपर पडे छे" एवो, अनुमानव्यापारथकी, मनमां निर्णय बांधे छे. आ व्यापार अनुमानव्यापारज छे केमके ते करवामां एनुं मन साक्षात् अवलोकायला प्रसंगोनी पार एवुं कांईक ऊपजावी ले छे. "जड पदार्थो" एमां तेणे जोयला जडपदार्थोज नहीं पण न जोयला एवा सर्व जडपदार्थो आवी जाय छे.

आ व्यापार, स्पष्ट रीते, सामान्याधिगमव्यापारनी साथे संबंध राखे छे. उभयमां अनेक वैधर्म्यमांथी आपणे साधर्म्य पकडी लईए छीए. सामान्याधिगममां पदार्थोने एक एक व्यक्तिरूपे अवलोकी तेम करीए छीए, व्याप्तिग्रहमां पदार्थोने अन्य पदार्थोना संबंधे अवलोकी तेम करीए छीए. जेम उत्तरोत्तर चढतां ऊतरतां सामान्य होय छे तेम उत्तरोत्तर चढती ऊतरती व्याप्ति पण होय छे. बाळक केटलीक एकदेशी व्याप्तिओथी आरंभ करे छेः "माखो मरे छे"; "चकलीओ मरे छे"; इत्यादि. आवां अवलोकनने ते एक बीजा साथे सरखावी तेमांथी ए करतां चढता प्रकारनी व्याप्ति जुदी करी ले छेः "प्राणीमात्र मरे छे." आगळ जतां साधर्म्यद्वारा प्राप्त करेली बीजी व्याप्ति पण आ व्याप्ति साथे ते ऊठावे छे के "वृक्षमात्र मरे छे," अने एम धीमे धीमे सर्वोपरि व्याप्ति प्राप्त करे छे के "जीवंत वस्तुमात्र मरे छे."

व्याप्तिग्रहव्यापार, पदार्थोना वर्गोपरत्वे प्रवर्ते छे एम यद्यपि आपणे धारीए छीए तथापि, एक एक व्यक्तिना धर्मो—ते धर्मो नानारूपे दर्शन दे तेटले अंशे—तेमने समजवामां पण एवो ने एवोज व्याप्तिव्यापार रहे छे. "कोई बाळक सत्यवादी" छे ए वात जे मनोव्यापारथी नक्की कराय छे, ते, कोई कोई अंशे विसदृश एवा अनेक बनावो जेवा के तेनां जुदां जुदां काम इत्यादि तेनी तुलना करवा रूप, अने ते बनावोमां रहेला सर्वसाधारण धर्मना ग्रहणरूप, होय छे.

१७. साहजिक व्याप्तिग्रहः—बाळकने अनुभव उपरथी व्याप्ति योजी लेवानी स्वाभाविक, सहज, टेव होयछे. वारंवार एम बनेछे के एकज दृष्टान्त उपरथी व्याप्तिरूप नियम तेना लक्षमां आवी जायछे. देवताने स्पर्श करतां एक वार दाह थयाथी "अग्नि दाह करे छे" ए नियम तुरत ग्रहाय छे. आवी साहजिक प्रवणताने लीधे बाल्यमां घणीक व्याप्तिओ उतावळथी बांधी लेवामां आवेछे. उदाहरण. एक अढी वर्षना छोकराने हुं आगळ जतां घणो मो'टो थईश ए वात उपर विचार करवानो घणो परिचय पडी गयो हतो. एक दिवस एक ना'नी सोटीने हाथे झालवानी लाकडीने ठेकाणे ते वापरतो हतो ते जोई तेनी माए कह्युं के ए सोटी तो बहु ना'नी छे. ते उपरथी छोकरे उत्तर वाळ्युं के "मो'टी थशे त्यारे लाकडीने ठेकाणे वापरीश." छोकरे एमज मानी लीधुं हतुं के वस्तुमात्र मो'टी थती चालेछे. बाळक अने निरक्षर माणसोनो व्याप्तिग्रह आवीज जातनो घणुं करीने होयछे. आपण सर्वना मननुं सहज वळणज एवुं छे के जे वात आपणा पोताना विषे अने आपणी अवलोकनमर्यादामां आवता पदार्थो विषे खरी होय ते बधा विषे अने बधा पदार्थो विषे पण खरीज छे एम मानी लेवुं.

१८. पद्धतिपुरःसर व्याप्तिग्रहः—टुंका अवलोकन उपरथी व्याप्ति ऊपजावी लेवानी जे आवी प्रकृति तेमां अधिकाधिक शिक्षण अने अनुभवथी सुधारो थायछे. बाळक एम माने छे के छोकरांमात्रने मारा जेवी रमवानी गेडी होयछे, अथवा कूतरांमात्र पाणीमां पडेछे, पण पोताना अवलोकनथी अथवा बीजां पासेथी सांभळीने, धीमे धीमे एम जाणे छे के आवी व्याप्ति खरी नथी. व्याप्तिग्रहना प्राथमिक व्यापारमां आ प्रकारे संकोच नडवाथी बाळक वधारे सावधान थायछे. व्याप्तिग्रहव्यापार छेक अटकी पडतो नथी, वधारे नियमित अने पद्धतिपुरःसर थाय छे; वधारे

अवलोकन करवानी आवश्यकता समजवामां आवे छे. अवलोकनथी भेगां करेलां दृष्टान्तोने पण बाळक वधारे लक्षथी तपासेछे, अने खरा वस्तुगत साधर्म्यने मात्र औपाधिक साधर्म्यथकी जुदुं पाडवा यत्न करेछे. आवी रीते जोतां तेने एम समजाय छे के " मो'टा थवुं "—वृद्धि पामवी—एने तो जेने आपणे जीव कहीए छीए तेनी साथे संबंध छे; एम समज्या पछी " मो'टा थवा "—नो विचार सजीव पदार्थो साथेज ते योजतां शीखेछे.

व्याप्तिद्वारा प्राप्त थता उत्तमोत्तम नियमोमां मुख्य नियम कारणतानो छे. कोई पण कार्य ऊपजावता पूर्वे ते कार्यनी सामग्रीमात्र जाणवी जोईए. जे सामग्री उपर कार्य अथवा संभवोनो आधार होय तेनुं यथार्थ ज्ञान थया विना तेमना विषे आगळथी कशो तर्क बांधी शकाय नहीं. वस्तुस्थिति गति आदिनां कारणोनी तपास करवी ए अनुमानव्यापारनो मुख्य विभाग छे. अनुमाननो अर्थज ए छे के कार्यकारणसंबंधद्वारा कोई नवी वात शोधी लेवी.

बाळकने पोताना नित्य अनुभवमां जणाय छे के पदार्थमात्र अमुक क्रमेज उद्भवेछे, देखाय छे. अन्न खाधाथी क्षुधा निवृत्त थायछे, पाणी पीवाथी तरश छीपेछे, शरीर उपर झपाटो लागवाथी दुःख थायछे, ए आदि वातो तो तेना समजवामां घणी जलदीथी आवी जाय छे. एम पण तेना समजवामां थोडाज समयमां आवेछे के हुं पोते पण अमुक अमुक कार्य ऊपजाववा समर्थ छुं. पातळी सोटीने वाळवाथकी हुं भांगी शकुंछुं, बारणानो ऊलाळो उंचो करीने धकेलवाथी बारणुं उघाडी शकुंछुं, इत्यादि तेना समजवामां आवे छे. आगळ जतां तेना समजवामां आवेछे के मारी आसपासना पदार्थोने पण एवा ने एवा अन्योन्यसंबंध छेः सूर्यदर्शनने दिवस साथे संबंध छे, वर्षादने रस्ताना कीचड साथे संबंध छे, इत्यादि. आवा अनेका-

नेक अनुभव थते थते तेना मनमां कारणतानो विचार स्फुरे छे. साक्षात् अवलोकननो विषय नहि एवा पदार्थो सुधी पण पछी तेनी दृष्टि पहोंचेछे अने तेना मनमां एम निश्चय थायछे के वस्तुसंभवादि सर्वने कारण होवुंज जोईए.

१९. कारणता:— एम मानवाने पुरतां कारणो छे के बाळकना मनमां जे कारणतानो ग्रह थायछे ते तेना पोताना व्यापार अने तेनां फळ उपरथी थायछे; अर्थात् जे जे वात बने छे ते पोताना जेवाज कोई व्यापारना फळरूपे छे एम तेना मानवामां आवेछे. बाळको आरंभे एवाज प्रश्न करेछे के "फुल कोणे ऊगाड्यां ?" "आकाश कोणे कर्युं ?" "बाजरी कोणे करी ?" इत्यादि. आ उपरथी पण एज सिद्ध थायछे. कोई पण कार्यनो उद्भव थतां ते अमुक प्रकारना स्नायु-व्यापारथीज थयुं छे एम बाळक माने छे. आ भावनुं पूर्णरूप, बाळको जे एम धारे छे के सर्व वातने पोतपोतानो उपयोग, हेतु, छे, तेमां जणाई आवेछे. "आम केम ?" एवो जे प्रश्न बे त्रण वर्षनुं बाळक पूछे छे तेनो अर्थज ए होयछे के "आनो उपयोग शो छे ? आनो हेतु शो छे?" सहेतुक व्यापार अने निर्हेतुक कारणतानो तफावत बुद्धि कांईक वधारे विकास पामे त्यार पछी समजवामां आवे छे.

पदार्थोनां कारण कल्पवामां बाळकोनी साहजिक व्याप्तिग्रहप्रवणता देखाई आवेछे. वस्तुसंभवादिनां कारणोनी पृच्छा बाळको जे ना'नी वये करवा मांडे छे ते उपरथी एम समजाय छे के तेमनामां ए प्रकारे विचार करवानी एटले के वस्तुसंभवादिने अन्यवस्तुसंभवादि बनेछे माटेज आ बनेछे ए रूपे विलोकवानी परंपरित प्रकृतिज होयछे. आवी साहजिक प्रकृतिने लीधे घणीक व्याप्तिओ ऊतावळथी करी लेवामां आवेछे. कोई बे वस्तु वच्चेना यत्किंचित् साधर्म्य उपरथी पण बाळक ते बेने एक

कारणजन्य मानी ले छे. आ वातनुं उदाहरण जडपदार्थोने पण पोता जेवाज धर्म आरोपवाना दृष्टान्तथी आगळ अपाई गयलुं छे.

कारणतापरत्वे व्याप्तिव्यापार बहु ऊतावळथी करी लेवायछे ए वात अन्य रीते पण छती थायछे. अमुकनुं कारण शोधवानी आतुरतामां तेना कारणनां कोई तुच्छ सहकारी जेनो कार्य ऊपजाववामां कशो भाग होतो नथी, ते उपरज लक्ष चोटी पडेछे. एक बे वर्षना छोकराए दूध धोळुं होवाना कारणरूपे दूध आपनारी गाय धोळी छे एम बताव्युं हतुं.

वळी मन एम पण मानी लेवा वळे छे के अमुक वस्तु सर्वदा एकना एकज कारणथी बने छे; आम मानवाथी भूल थई आवेछे. एक बाळके पोतानी टोपी पवनथी ऊडी पडती जाणवा उपरथी एम मान्युं के लोटो हाथमांथी पडी गयो ते पण पवने पाड्यो.

यथार्थ रीते कारण खोळी लेवुं ए वात घणी मुश्केल छे, एटले तेमां कोई पण पद्धति होवी आवश्यक छे. आ व्यापारमां जे मुख्य प्रक्रियाओनो समास थायछे तेमां बे सर्वोपरि मुख्य छे: (१) प्रकृत कार्य जेमां थतुं होय एवां अनेक अने नानाविध दृष्टान्तोनुं यथार्थ स्मरण, अने (२) नियत तथा असाधारण एवी कई वात छे के जेना उपर ए कार्यनो अवश्य आधार रहेछे ते जोवा माटे बधां दृष्टान्तोनुं अति सूक्ष्म पृथक्करण. आ उपरांत वळी पदार्थो उपर विविध प्रयोग करी जोवानी पण अपेक्षा रहेछे, के कार्यना स्वरूपमां विक्षेप ऊपजाव्या विना कई कई वातो काढी नाखी शकाय एवी छे ने कई नथी ते समजवामां आवे.

अयथार्थ व्याप्ति अने अयथार्थ सामान्यना कारणनी समानता वाचके लक्षमां लेवा जेवी छे. अयथार्थ व्याप्ति थोडां दृष्टान्तो अवलोकवाथी अथवा अवलोकेलां दृष्टान्तने यथार्थ रीते पृथक्करण न करी जोवाथी पेदा थई आवेछे. मीसील आ बे वातनुं उदाहरण भविष्य वक्तानी वात मानवाना दृष्टान्तथी बतावे छे. माणस आवी भूलमां बे रीते पडेछे

जेटला जेटला प्रसंगे ते भविष्यवक्ता खोटो पड्यो होय ते लक्षमां न लेवाथी, अथवा जे जे वातमां ते खरो पड्यो छे त्यां तेने तेवो योग करवानां साधन हतां ए वात न तपासवाथी, भूल थाय छे.

२०. परामर्श अथवा अनुमानः——व्याप्तिद्वारा बाळक वणाक सर्वदेशी निर्देश प्राप्त करे छे. शिक्षणद्वारा जे तेज प्रकारना बीजा निर्देशो तेना समजवामां आवे छे तेथी पण आवा ज्ञानमां वृद्धि थाय छे. आटली सामग्री प्राप्त कर्या पछी पदार्थानुमानव्यापार करवानी तत्परता बाळकनामां आवे छे. जे बाळकना जाणवामां एम आव्युं होय के "माणसो भुलने पात्र छे" ते एवी व्याप्ति लागु करीने मारी मा अथवा बहेन भुल करे छे एम अनुमिति करी शके छे. अनुमानने पूर्णरूपे विस्तारवामां आवे त्यारे ते रूपने परामर्श अथवा न्याय कहे छे. ते आ प्रमाणेः—

बधा क, ग छे. श्रमथी ऊपजावेली वस्तुमात्रनी किंमत बेसे छे.
बधा ख, क छे. रमकडां श्रमथी ऊपजावेलां छे.
माटे, बधा ख, ग छे. माटे रमकडांनी किंमत बेसे छे.

अथवा निषेधगर्भानुमाननुं रूपः—

कोई क, ग नथी. नठारां छोकरांने कोई चहातुं नथी.
बधा ख, क छे. आ छोकरुं नठारुं छे.
माटे, कोई ख, ग नथी. माटे एने कोई चहाशे नहि.

आ उपरथी स्पष्ट थाय छे के व्याप्तिग्रहमां जेवो मनोव्यापार छे तेवो के तेनो तेज आमां पण छे. मुख्य वात आमां पण साधर्म्यग्रहनीज छे. आपणे कोई एक व्यक्ति (ख) अने बीजा एक वर्ग (क) वच्चे अमुक साधर्म्य (ग) होवा न होवारूप समानता, मानीए छीए.

आ ठामे पण साबीती माटे आवश्यक जे न्यायानुसारक्रम ते, अने

साहजिक मनोव्यापारक्रम, ते वच्चेनो भेद लक्षमां लेवा जेवो छे. अत्र बताव्या प्रमाणे अवयवो उपरथी निगमन उपर आववानो जे क्रम ते रीते आपणे क्वचित्ज अनुमानव्यापार करीए छीए. केटलीक वार प्रथमथीज निगमन मनमां स्पष्ट रीते आवी जाय छे, अने अवयवादिक निर्देश पछीथी स्फुरे छे; केटलीकवार तो बे अवयवमांनो एक करतां वधारे अवयव मनमां कदापि आवतोज नथी.

ज्यां सादे सादो परामर्शव्यापार होय अने उभये अवयव प्रथमथीज सुविज्ञात होय, त्यां जे सूचनव्यापार आपणे समजावी आव्या छीए तेटलाथीज, मन, निगमन उपर जई शके छे. आ रीते ज्यां बने छे त्यां अमुक निगमन स्वीकार्या पछी तेना समर्थन माटे अवयवोनुं स्मरण पछीथी पण क्वचित् थाय छे. परंतु घणा प्रसंगे तो निगमन उपर आवता पूर्वे मनमां एकाद अवयवनो विचार आव्या विना रहेतो नथी. घणाक प्रसंगोमां आपणे उभये अवयवोनो विचार करता नथी एनुं कारण तो एटलाज समजाय छे के ए उभय अवयवगत जे ज्ञान ते उभये ज्ञान आपणने एकज समये प्राप्त थयलां होतां नथी. क्वचित् प्रथमथी आपणे एक अवयवने स्मरीए छीए, क्वचित् बीजाने, द्वितीयावयव सुधी मन आवे छे के त्यांथी तुरतज निगमन उपर जाय छे, प्रथमावयवनुं स्मरण करवा ऊभुं रहेतुं नथी. "रमकडां श्रमथी ऊपजे छे" एम जे बाळक जाणतुं होय, ते प्रथम वारज एम जाणे के "श्रमथी ऊपजावेली वस्तुओनुं मूल्य बेसे छे" त्यारे तुरतज एवा निगमन उपर जई शके छे के रमकडांनुं पण मूल्य बेसे छे.

कोई वार व्याप्तिने विकल्प अने परामर्शने संकल्प एवुं पण नाम आपवामां आवे छे. आ नाम सकारण छे. व्याप्तिमां आपणे घणांक दृष्टांतमांथी एक सर्वसामान्य नियम शोधीए छीए, एटले के प्रत्यके दृष्टान्तनुं पृथक्करण अथवा विकल्प करी जोईए छीए के तेमांथी साधारण अंश हाथ लागे. आथी उलटी रीते परामर्शमां मुख्य व्यापार संकल्प अथवा एकीकरणनोज छे. बे निराळा निर्देशने एकत्र करी निगमन उपर आवीए छीए; अने परामर्शव्यापारमां सरलता प्राप्त थवानो आधार पण आवा कोई भिन्न निर्देशने एकत्र करवानी शक्ति उपरज रहे छे. वळी परामर्शमां छेवटना निगमनमां संकल्प पूर्णरूपे प्रदर्शित थाय छे. केमके निगमनने व्यवहारगत पदार्थना संबंध साथे साक्षात् संसर्ग नथी. पण मनःकल्पित पदार्थसंबंध साथे संसर्ग छे. छतां पण व्याप्तिमां ए थोडे भागे स्पष्ट संकल्प होयज छे, केमके कोई बे सामान्यो उपरथी सर्वदेशी

निर्देश ऊपजाववानो होय छे; तेमज परामर्श पण विकल्परूप थई शकेछे, जेमके शाब्द निर्देशरूप निगमन होय त्यां; माणसो बुद्धिमान् प्राणी छे, हबसीओ माणस छे, माटे हबसीओ बुद्धिमान् प्राणी छे.

२१. आविष्करण अने समर्थन:—परामर्शव्यापार बेमांथी एक रीते आरंभाय. आपणने एकाद सिद्धान्त आपवामां आवे अने ते उपरथी कोई निगमन ऊपजाववानुं होय. आनुं नाम सिद्धान्तनो आविष्कार करी, तेने लागू करी नवां दृष्टांत शोधवां कहेवाय. जाणीता सत्यना सयुक्तिक मिश्रणथी नवा नवा शोध ऊपजी आवे. उदाहरण. बाळकने एम कहेवामां आवे के हवा भारवाळी छे अने दबाई शके तेवी छे तो ते उपरथी ते एम अनुमान करी शके के उपरना स्तर करतां नीचेनुं स्तर वधारे घन हशे.

आथी उलटी रीते आपणे कोई सिद्धान्तथी नहि पण अवलोकनथी प्राप्त करेला कोई एक निर्देशथीज आरंभ करी ते निर्देशनुं समर्थन करवा कोई सिद्धान्तने खोळीए. आनुं नाम अमुक निर्देशने समर्थन करवो, तेनुं कारण आपवुं, अथवा कोई वातनो खुलासो करवो एम कहेवाय. उदाहरण. बाळकने एम कहेवामां आवे के अमुक काम खोटुं छे; ने पछी तेने एम पूछवामां आवे के शा माटे खोटुं छे, तो तेनी पासे ते कामने खोटुं ठरावववानो सिद्धान्त मागवामां आवे छे एम कहेवाय. चोपास अवलोकन करवामां बाळक पोतानी जातने तथा बीजाने अनेक वातो, प्रथमथी प्राप्त करेला सिद्धान्तोने आधारे समजावी शके छे. देवतामां कलाईने गळी जतां जोईने बाळक एमज खुलासो करी शके छे के अग्निथी पदार्थो ओगळी जाय छे. एज रीते कोई कामनी स्तुति के निंदानो पण खुलासो बाळक एवोज करी ले छे के प्रेम अथवा दयावाळां काम स्तुतिपात्र छे, अने निर्दय काम निंदायोग्य छे.*

* ज्यां कोई पण सिद्धान्त प्रथमथी जाणवामां न होय त्यां मन एकाद सिद्धान्त कल्पे छे. आनुं नाम अभ्युपगम कहेवाय. शास्त्रीय विचारोमां वारंवार आवा अभ्युपगम करी पछी थकी तेमने सिद्ध ठरावी ते उपरथी सिद्धान्त बांधवा पडे छे. संकल्पव्यापारनो आ उत्तम दाखलो छे.

२२. पूर्ण अने अपूर्ण परामर्शव्यापार:—परामर्शव्यापारमांथी अदुष्ट तेम दुष्ट उभये प्रकारनां निगमन फळी शके छे. न्यायनुं काम ए छे के अदुष्ट परामर्श शाने कहेवा ते बतावबुं. चेतनशास्त्रवाळाने तो आ भेद साथे मात्र एटलोज संबंध छे के दुष्ट तेम अदुष्ट सर्व प्रकारना परामर्शोनो तेने मनोव्यापाररूपे खुलासो करवानो छे.

परामर्शगत दोष अथवा हेत्वाभासनुं वर्णन न करतां एटलुंज कहेवुं उचित छे के विचारव्यापार ए साधर्म्यग्रहरूपज छे, एटले दुष्ट अनुमितिमां साधर्म्यग्रहनी गरबड, अथवा स्पष्ट विवेकाभाव एज मुख्य कारण छे. आगळ बतावामां आवेलुं छे तेम अयोग्य रीते विचारव्यापार चलावनारने साधर्म्य क्यां पूर्ण थायछे अने वैधर्म्यनो क्यांथी आरंभ थाय छे तेनी खबर होती नथी. परामर्शमां जे घणा दोष संभवे छे तेमांनो मुख्य तो शब्दोना द्व्यर्थत्वमांथीज ऊपजी आवे छे. एकना एक शब्दना अर्थ अर्थांतरना सूक्ष्म भेद जाणवामां नथी होता त्यारे सहजे भुल थई आवे छे. कोई वातनुं कारण शोधी लेवानी आपणी उत्कंठाथीज घणी वार तो आपणे आवी भुलमां पडीए छीए; अने एनो अनुभव आपणने, लोको पोताने जाणीती नहीं एवी वातोना पण जे खुलासा आपे छे तेमां, निरंतर थयां करे छे. आवी अव्यवस्थाने, कोई पण प्रकारनो ऊर्मिविक्षोभ होय तो ते, बहु सहाय थाय छे.

आवी अव्यवस्थामां वळी पण वधारो एथी थाय छे के विचारव्यापार चलाववामां घणीक वार, पदार्थस्वरूप विषे आपणने जे स्पष्ट भाव होय तेने स्थाने शब्दमात्रज स्थिति पामी जाय छे. शब्दनो अर्थ विलोक्या विना पण निर्देश निर्देशनो संबंध सहजे पकडी शकाय छे; एटले मनमां जे विचारव्यापार बहु त्वराथी चाले छे तेमां तो, एक निर्देशथी बीजा निर्देश उपर, शब्दार्थ विचार्या विनाज, मन तुरत चाल्युं

जाय छे. आमांथीज अव्यवस्थानुं द्वार उघडे छे. सामा माणसनो वाद ग्रहण करवामां पण एमनुं एम थाय छे. कोई वक्ता अथवा लेखकनां वचन न्यायानुसार क्रमने अनुसरे छे एवो भासमात्र थतांज तेना विचारने अदुष्ट मानवानुं वळण थाय छे. जे तीक्ष्ण बुद्धिवाळां मन छे ते आ प्रकारनी यंत्रवत् शब्दप्रयोग करवानी प्रकृतिने, प्रत्येक शब्दगत विचारनुं विलोकन करवानी टेव पाडी, अटकाव्यां करे छे.

२३. मिश्र परामर्शः—अत्र जेनुं वर्णन कर्युं तेवा सादा परामर्शव्यापार सर्वदा काममां आवता नथी. व्यवहारमां तो घणा मिश्र व्यापार करवानी अपेक्षा रहे छे. कोई एक अथवा वधारे वात आपणा जोवामां आवे ते उपरथी कोई सिद्धान्तनुं भान थाय छे, अने तेमांथी आपणे पाछा बीजां निगमन ऊपजावीए छीए. वळी आवा निगमनने नवा अवलोकनथी तपासता चालीए छीए, अथवा आवी रीते प्राप्त करेला सत्यने ते पूर्वे प्राप्त करेलां बीजां सत्य साथे मुकाबले आणी, ते सत्योथी आ सत्य समर्थन पामे छे, के नथी पामतुं, अथवा तेमनी साथे कोई रीते अविरोधथी वटतुं आवे छे के नथी आवतुं ते तपासीए छीए. कोई जाणीतुं कारण व्यापार पाम्युं छे एम कल्पी तेनां कार्यनी आखी श्रेणि उपर आपणे अनेक परामर्श करता चाल्या जईए छीए, एम पण वारंवार बने छे. जेने घणा लांबा वादनी श्रेणिरूपे आपणे मानीए छीए, ते घणो गुंफित अनुमितिव्यापारज छे, अने ते व्यापारमां मन क्वचित् दृष्टान्त अथवा अमुक वात उपरथी सिद्धान्त उपर जाय छे, क्वचित् जाणीता सिद्धान्तोना परिणाम ऊपजावतुं चाले छे. शास्त्रपद्धति पण परामर्श अने व्याप्तिना व्यापारनी आवी श्रेणिरूपज छे.

२४. शक्यता विषे अनुमानः—मिश्र परामर्शव्यापारनो एक मो'टो भाग शक्यता विषेना परामर्शोथी रोकाय छे. घणा एक सर्वदेशी कहेवाता सिद्धान्तो पण शक्यतासंबंधथी सर्वदेशी छे, अर्थात् सर्वदेशी होवाना घणा संभववाळा छे, सिद्धसर्वदेशी नथी. ते सिद्धान्तो अमुक वर्गनी घणी व्यक्तिने लागु थाय छे, पण बधीने थता नथी. आम होवाथी, आवा सिद्धान्तो उपरथी करेलां अनुमान, भूमितिना निर्विवाद सर्वदेशी सिद्धांतमांथी करेलां अनुमान जेवां, निश्चित होई शके नहीं एटले आपणे जे जे निगमन ऊपजावीए ते शक्य होय एटलुंज बने. शक्यतानी उत्पत्ति जनव्यवहार, तेना हेतु, अने तेनां फळ, तेटलामांथी थाय छे. अमुक प्रसंगे अमुक माणसे अमुक हेतुथीज व्यवहार कर्यो एम कहेवुं; अथवा अमुक माणसोनी साहाय्यथी योजेली अमुक पद्धति अमुक फळ ऊपजावशेज, एम कहेवुं घणुंज दोष भरेलुं छे.

आवी स्थिति होवाथी शक्यता विषेनां अनुमान घणाक विचारोने एकत्र करवामांथी ऊपजी आवे छे. उदाहरण. कोई वातने पूरावाथी साबीत करवामां आनुषंगिक पूरावानी अपेक्षा रहे छे. एक माणस अमुक वात कहे छे माटे ते खरीज छे एम आपणाथी कही शकाय नहीं. "मैं जोयुं छे" एम जे तेनुं जाणवुं छे ते भुल भरेलुं पण होय. वळी आवो जे अनुमानव्यापार तेमां अमुक विचारोने अमुक विचारो साथे मुकाबल करी छेवट शुं रहे छे ते पण तपासवानुं होय छे. उदाहरण. घणी वखत आपणे आवी कोई वात नक्की करवानी होय छे. "आ बाळके आ वासण अकस्मात् भांग्युं के जाणी जोईने भांग्युं?" "अमुक माणस अमुक करे छे तेमां स्वार्थ छे के प्रेमजन्य प्रवृत्ति छे?" "अमुक रीतिथी बाळकनी टेव सुधरशे के उलटुं ते बगडशे?" आवा आवा सर्व प्रसंगोमां अनेक वातो अने तेमने लागु थता सिद्धान्तोनो विचार मनमां आणवो पडे छे, अने एक अथवा बीजी पासा पूरावो वधारे सिद्ध थाय ते प्रमाणे निर्णय बांधवो पडे छे अथवा क्वचित् निर्णय न करतां मनने तटस्थज राखवुं पडे छे.

आवा बधा प्रसंगोमां छेवटनो जे निश्चय (अथवा तटस्थतारूप अनिश्चय) ते जुदां जुदां आकर्षणो के जे ते ते साहचर्यना बळना प्रमाणमां बलवान् के निर्बल होय छे, तेना परिणाम उपर आधार राखे छे. आम होवाथीज पोतपोताना खास अनुभवना प्रमाणमां, जुदां जुदां मनमां, तेना तेज प्रसंगो जुदी जुदी शक्यताबाळा निश्चय ऊपजावे छे. शक्यतानी न्यायानुसार पद्धति प्रमाणेनो क्रम रचाय ते पूर्वेज, आमां पण, प्रथम दर्शनेज, सहजोपलब्धिथीज, निगमन उपर जई शकाय छे. घणी वार तो, जे माणसो आवी मिश्र रीतिथी निगमन पर्यंत जवानुं सामर्थ्य धरावे छे ते पोताना निर्णयनां कारण बतावबे बहु असमर्थ होय छे. आपणे जोई आव्या तेम व्यवहारकुशल मांणस व्यावहारिक बुद्धिथी अमुक प्रसंगे खरा निर्णय उपर आवी शके छे, पण तेनां कारण बतावी शकता नथी.

आ प्रकारना मिश्र परामर्शनां अनेक उदाहरण व्यवहारमां मळी आवे छे. आपणने क्रमे करीने जणाशे तेम, बधा प्रसंगोनो विचार करवानी, आ अथवा पेला परिणामनी शक्यतानुं माप करवानी, अने आ अथवा पेली पद्धति स्वीकारवानां लाभहानिनी तुलना करवानी, शक्ति सारी रीते होवी एज बुद्धिपुरःसर व्यापार अथवा डहापण भरेला आचारनो अर्थ छे.

२९. परामर्शमां मननो व्यापारः—परामर्शव्यापारना जुदा जुदा प्रकारना आटला लघु विवेचन उपरथी पण वाचकने एम समजावुं सहज छे के आ व्यापारनो आधार मूलभूत मनोव्यापार—अवलोकन अने स्मृति—उपर रहेलो छे. परामर्शव्यापार चलाववाने माटे एटलुं आवश्यक छे के मनमां जाते अवलोकेली अथवा शिक्षणथी प्राप्त करेली घणी वातोनो सारो संग्रह होवो जोईए. वळी ए पण आवश्यक छे के नवी नवी वातोनो खुलासो करी शकाय तेवां सिद्धान्त के सत्य मनमां सारी रीते सुविज्ञात होवां जोईए. आ बे वातमां अमुक वातोनुं संयोजन करवाथी सरलता, नवां सामान्य अने नवा अभ्युपगम ऊपजाववानी बुद्धि, ए त्रीजी वात पण ऊमेरवा जेवी छे.

आ त्रणे वात उपरांत जो इच्छापूर्वक अवधाननो अने एकाग्रता करवानी शक्तिनो सारो उद्बोध न होय तो पण लाभ थवानो नहीं. आपणा मित्रनी विलक्षण चाल अथवा एवीज कोई वातनो खुलासो शोधवामां, आपणुं मन एक घणी लांबी शोधमां पडे छे. आ शोधनो जे हेतु तेने निरंतर लक्षमां राखवो पडे छे, अने पछी ए विषयने लागु पडे तेवा तेवा जे जे विचार दृष्टिआगळ आवे तेमांथी एक एकने लई तेना उपर वधारे सूक्ष्म विचार चलाववो पडे छे. आ स्थाने आपणे कल्पेला उदाहरणमांज जोईए तो आपणे तेना ते माणसनां बीजां कृत्यो उपर अथवा बीजा माणसनां कृत्यो उपर दृष्टि करीए छीए, अने जनस्वभावना जाणीता नियमोथी तेमनो विचार करीए छीए, एवी आशाथी के एम तपास करतां आपणने जोईए छीए ते खुलासो मळी आवे. आटलुंज नथी पण ज्यारे आ व्यापार संपूर्णपणे चाले छे त्यारे, अव्यवस्थानां जे जे कारण ऊपजी आवे तेने तथा वृत्ति अने पक्षपातनी असरोने इच्छा दूर राखती रहे छे. जेम एकाग्रता वधारे, जेम इष्ट फळनी भावनानुं ते काळे चालता मनोव्यापार उपर वधारे प्रबल, अने ते फळ उपर तेमने ताणी लाववानी वधारे शक्ति तेम परामर्श वधारे शुद्ध अने यथार्थ.

२५. श्रद्धा अने ज्ञानः—आपणे जोयुं तेम ज्ञानमात्रनुं आंतरस्वरूप तो श्रद्धाज छे. कोई सत्यने जाणवुं एटले तेनी मनमां श्रद्धा थवी एज तात्पर्य छे. ज्ञान ए शब्दमां श्रद्धा करतां जे कांई अधिक छे ते कोई बाह्य वार्ता छे, एटले के श्रद्धाने बाह्य सत्य साथे अनुरूप करवानी वात छे. ज्ञानना याथार्थ्यनो प्रश्न, कोई एक श्रद्धा बाह्य विश्वपरत्वे केटले सुधी यथार्थ छे ए नक्की करवानो नियम शोधी लेवानो विचार, ते, आगळ बताव्या प्रमाणे आ शास्त्रनो विषय नथी, पण ज्ञानवादनो विषय छे.

श्रद्धामात्रने ज्ञानमात्रथी भिन्न करनार चेतनशास्त्रानुमत लिंग विषे आपणे, आ ज्ञानवादनी चर्चामां ऊतर्या विना कांईक कहीए. जे प्रथम दृष्टिए जणाय छे ते एक भेद तो अंशानो भेद छे. व्यावहारिक रीते अमुक वातनुं ज्ञान होवानुं आपणे लारेज

कहीए छीए के ज्यारे आपणने निःशंक अने संपूर्ण निश्चय होय छे; जेमके अत्यारे सूर्य उग्यो छे, बे ने बे चार थाय छे, इत्यादि आपणे बोलीए छीए तेमां छे. पण ए करतां ओछो निश्चय ज्यां आपणने होय छे त्यां तो आपणे "मने आम लागे छे," "मने आवी श्रद्धा छे" एम बोलीए छीए. जेमके आज वर्षाद थशे इत्यादिमां. स्मृति-विषयक वातोमां पण ज्यारे अमुक वात तुरतज थयली आपणा जाणवामां होय छे अने स्मरण ताजुं होय छे, त्यारे आपणे "हुं जाणुं छुं, मने अमुकनुं ज्ञान छे" एम कहीए छीए; पण ज्यारे ते वातनुं बनवुं घणा दूरना समयमां होय छे अने स्मरण अस्पष्ट होय छे त्यारे तो "हुं मानुं छुं" "मने लागे छे" इत्यादिज कहीए छीए. परंतु श्रद्धानुं विपुलत्व एज एकलुं ज्ञानलिंग नथी. वारंवार सहज रीतेज, ज्ञान छे एम कहेवानी सामग्री न छतां पण, आपणे कोई अमुक वात विषे निश्चय उपर आवी जईए छीए. अंधश्रद्धा गमे तेवी सबल होय, पण साक्षात् ज्ञानथी सर्वथा भिन्नज छे. ज्ञानना अर्थमां, श्रद्धा उपरांत, श्रद्धा उपर पुनः विचार कर्यो छे, सूक्ष्म विलोकनथी तेनी निरीक्षा करी तेने तावी जोई छे, एम पण तात्पर्य रहेलुं छे. श्रद्धामां निश्चयगत जे ऊर्मिनुं तत्त्व ते प्राधान्य पामेलुं रहे छे; ज्ञानमां निश्चयगत बुद्धिनुं तत्त्व प्राधान्य भोगवे छे. आपणुं घणुंक ज्ञान अस्पष्ट श्रद्धारूपे स्वरूप पामी क्रमे क्रमे स्पष्ट अने दृढ थाय छे. आ वात आपणा व्यावहारिक ज्ञाननेज लागु छे एम नथी, शास्त्रीय ज्ञाननुं पण एमज छे.

पदार्थग्रहणगत "बुद्धिव्यापार"—नो हेतुज ए छे के आपणी श्रद्धामात्रनुं अवलोकन करी तेनी तपास करी जोवी. आपणा निर्देशोनो अर्थ सूक्ष्म रीते तपासवो, तद्गत विचारोने स्पष्ट करी जोवा अने छेवट न्यायानुसार विचारथी तेमना परस्पर संबोधोनी आलोचना करवी, ए आ अवलोकननुं तत्त्व छे. आवा व्यापारथी मन ज्ञाने पहोंचे छे; प्रथमे दूर न थई शके तेवी सहज श्रद्धा जेने कोई प्रकारना सूक्ष्म अवलोकनथी पण टाळी न शकाय ते उदय पामे छे; पछी ए श्रद्धामांथी अवश्य रीते फळती अन्य श्रद्धा प्राप्त थाय छे. आ प्रकारे प्रथमनी अस्पष्ट श्रद्धा स्पष्ट ज्ञानरूपे परिणमे छे अथवा ज्ञानाभास रूपे जणाई विलय पामे छे.

२७. निर्देश करवानी अने तर्क करवानी शक्तिनो उद्बोधः- सामान्यग्रहणशक्तिथी निर्देश करवानी अने तर्क अथवा परामर्श करवानी शक्ति मोडी आवे छे. आपणे जोई आव्या तेम एक वर्षनु बाळक पदार्थोने नाम आपी शकशे, अने पदार्थत्वना मूलभूत विचार

पण जणावी शकशे. परंतु हजु तेनाथी स्पष्ट निर्देश करी शकाशे नहि. प्रथमे जे स्पष्ट निर्देशो थई शके छे ते एक एक पदार्थ विषये होय छे. कोई पदार्थमां बाळकने कांई विलक्षणता अथवा वैचित्र्य जणातां ते पोताना अवलोकनना परिणामने निर्देश रूपे जणावे छे. जे छोकरा विषे वारंवार कहेवामां आव्युं छे ते १९ मासनी वये "बा, बा" एम कहीने "बहेन रुवे छे" एटलो निर्देश करी शक्युं हतुं.

बाळकना आहारना पदार्थ अथवा एवीज तेने आवश्यक वस्तुओना संबंधे आवा प्राथमिक निर्देश प्रवर्ते छे. जेम जेम अवलोकननी शक्ति वधती जाय छे, अने पदार्थोमां बाळकने वधारे वधारे रस लागतो जाय छे, तेम तेम तेना निर्देशोमां पण वृद्धि जणाय छे. अने जेम जेम संबंध समजवानी तथा शब्दोच्चार करवानी अने शब्दो योजवानी शक्ति वधती चाले छे तेम तेम बाळक वधारे वधारे लांबा निर्देशो पण करी शके छे.

निर्देशशक्तिना विकासना क्रममां जाणवा जोग एक क्रम 'ना' 'नहि' ए अर्थना ग्रहणनो छे. प्रथमे निषेध बतावामां माथुं हलावे छे, पण आनो अर्थ तो नाखुशी, नामर्जी, एटलोज होय छे. न्यायमां जेने निषेध कहीए ते नथी होतो. सारामां सारुं बाळक त्रण वर्ष पहेलां स्पष्ट निषेध करी शकतुं नथी.

"ना" एटला शब्दनो प्रयोग, सत्य अने असत्य ए उभय विकल्पनुं ज्ञान मानी ले छे. प्रश्नोत्तरना प्रयोगथी आ प्रयोगने सारी मदद मळे छे. कोई एक प्रश्न बराबर समजायाथी परस्परविरुद्ध अने परस्परथी भिन्न एवी बे वात स्पष्ट रीते मनमां ऊतारी दे छे. निषेधवाचक अव्ययोनो प्रथमे जे प्रकारे प्रयोग थतो चाले छे ते जोवा लायक छे.

जेम जेम बुद्धि विकसती चाले छे तेम तेम बाळक एक एक व्यक्ति विषेज नहि, पण आखा वर्गो विषे विचार करी शके छे. पोतानी आसपासनां

माणसो जे कहे छे ते पोते तुरत उपाडी ले छे अने बोले छे के "नठारां छोकरां धूळमां रमे." निर्देश करवानी शक्तिनी वृद्धि थयानुं चिन्ह, विधिवाक्यो उच्चारवामां सावधानता अने सूक्ष्म विवेचना करवानी टेवमां वधारो थवा उपरथी समजाय छे. जे जोवामां आव्युं होय ते वधारे सूक्ष्म रीते वर्णवे छे; अतिशयोक्ति करवानी जे टेव वृत्ति, ऊर्मि आदिने वश थईने पडेली होय छे ते न्यून थती जणाय छे. कल्पनाने सत्य मानवानी वात पण ओछी थती लागे छे. बाळकना अनुभवमां वधारो थाय छे तेम शक्य शुं अने अशक्य शुं, संभवित शुं अने असंभवित शुं तेनुं एक प्रकारनुं सादुं धोरण तेने हाथ आवतुं जाय छे. वळी अन्यजनोक्त वचनोनुं विवेचन करवानी पण तेने टेव पडे छे, अने ए रीते विधि अथवा निषेध करवानी शक्ति सबल थती जाय छे. बाल्यमांथी यौवनमां आववानुं चिन्हज ए छे के पदार्थादि विषे अभिप्राय बांधवानी शक्तिमां घणुं स्वातंत्र्य देखावा मांडे. बार वर्षनुं बाळक पदार्थो विषे पोते पोताना अभिप्राय बांधी शके छे, अने बीजा ते विरुद्ध कांई कहे तो पण तेने वळगी रहे छे.

२८. **विचारशक्तिनी वृद्धिः**—आ प्रकारे विचार, अभिप्राय अने निर्देश करवानी जे शक्ति, तेनी साथे साथेज परामर्श करवानी एटले के निगमनो ऊपजाववानी शक्तिनो पण विकास थतो चाले छे. आरंभे आ व्यापार अस्पष्ट होय छे, एकदेशी निर्देश उपरथी एकदेशी निर्देश उपर आववारूप होय छे. आ शक्ति एक बाळकनामां १७ मासनी वये जणाई हती. तेने खावाने रोटलो जोयतो हतो, ता, ता, कर्यां छतां न मळतां, वाडकी लईने बतावा लाग्यो. आ उपरथी एम समजाय छे के पोतानी भूख अने वाडकी वच्चे भूखने शमाववा रूपी जे संबंध हतो ते तेना समजवामां आव्यो हतो. पोतानी गरजना योगे तेनी अनुमानशक्ति

आ प्रकारे खीली आवी. २१ मासनुं वय थतां आनी आगळनो क्रम दीठामां आव्यो हतो, केमके केटलीक खांड पडेली हती ते खावाने तेने ना कहेवामां आवतां "वा" "वा" एम करवा लाग्यो ने खातो गयो, जेथी एम जणाय छे के हुं खांड खाउं छुं ते सारी लागे छे माटे खाउं छुं एवुं कारण बतावावानी पण तेने शक्ति आवेली हती.

आगळ कहेवामां आव्युं छे तेम कारणपरत्वे बाळकना प्राथमिक परामर्श घणा सादा होय छे. पोताना भूत अनुभवमांथी गमे ते एक दृष्टांत लईने प्रकृत संभवोनो खुलासो करवा जाय छे. आ उपरथी संभवमात्रना ते मानुषी खुलासा करतां शीखे छे. २४ मासना एक बाळकनी लखोटा रमवानी पेटीमांथी एक काकरो नीकळ्यो, ते उपरथी तेनी माताए पूछ्युं के ए काकरो शुं करे छे? बाळके कह्युं लखोटा रमे छे. आवी रीते जे खुलासो बाळके कर्यो ते पोतानो धर्म काकराने आरोपवा रूपी मानुषी खुलासो हतो. त्रण वर्षनुं वय थतां तो ते बाळक, अमुक पदार्थ कोणे बनाव्यो ने अमुक कोणे बनाव्यो ए आदि प्रश्न करतुं थयुं. त्रण वर्ष पूर्ण थतां बाळक प्रत्येक वातनां कारण पूछीने माताने त्रास आपे छे. आटली वये पहोंच्या पछी तेने एम लागे छे के वस्तुमात्र अमुक उद्देशथी थई आवे छे, अने मारा पोताना सोद्देशव्यापार जेवाज सर्व व्यापार होवा जोईए.

बाळकनुं मन जेम जेम विस्तार पामे छे तेम तेम पदार्थो वच्चेना वास्तविक संबंध वधारे स्पष्ट रीते समजतुं चाले छे, अने व्याप्तिरूप निर्देशने आकारे तेमने ते दर्शावतुं रहे छे. आटलेथी ते कारणनुं वास्तविक स्वरूप समजवा लागे छे, पोतानी आसपासना विश्वनियमोना व्यापार पण समजी शके छे. परंतु ए वात संभवित छे के मनुष्यव्यवहार अने स्वाभाविक विश्वव्यवहार तेना प्रदेश वच्चे स्पष्ट विवेक करतां तो

यौवननो आरंभ थता सुधी तेने आवडतो नथी. अने विकासना आ अंतिम क्रममां ज्यारे भावाधिगमशक्ति सबल थती चाले छे, त्यारेज जे महा व्यक्तिओने आपणे शास्त्रीय नियमो कहीए छीए तेनुं ज्ञान बाळकने थई शके छे.

आनो आज क्रम परामर्शरूप विचारविकासमां पण प्रत्यक्ष थाय छे. त्रण के चार वर्षनो बाळक कोई सादो नियम अमुक दृष्टान्तने लगाडी शके छे; परंतु एवी रीते बनवुं ते मात्र बहु सादा प्रसंगोमांज बनी शके छे. अमुक कार्यने अमुक वर्गनुं (क्रूर के उदार) होवा रूपे ओळखवुं, अने ते उपरथी तेने स्तुति अथवा निंदाने पात्र गणवुं एमां भावाधिगमशक्ति झाझी जणाती नथी; तेम पदार्थो वच्चेनो सादृश्य संबंध गृहवानी शक्ति पण झाझी देखाती नथी. पुनः पुनः अभ्यास थतां, धीमे धीमे, अमुक सिद्धान्तोमांथी अमुक निर्देश ऊपजाववानी शक्ति आवती जाय छे. कोई नियम अथवा सिद्धान्तनुं अमुक स्थाने लागु थवुं बहु अस्पष्ट छतां पण जाणवामां आवी शके ए उपरथी परामर्शनी शक्तिमां वृद्धि थई जणाई शके. अने जेम जेम सर्वदेशी सिद्धांतोनो बाळकनी पासे संग्रह सारो थतो चाले छे तेम तेम, ते उपरथी निगमनो उपजाववामां परामर्शव्यापार करवानी शक्तिनो वधारे वधारे उपयोग करवाना तेने प्रसंग मळता जाय छे. अने ज्यारे आ रीते साधारण प्रसंगोमां पोतानी परामर्शव्यापार करवानी शक्तिनो उपयोग करतां बाळकने आवडे छे, त्यार पछी, ते वधारे मिश्र व्यापार करवा, अने भूमिति जेवा सिद्धान्तोने सिद्ध करवा, समर्थ थाय छे.

२९. **विचारशक्तिना प्रकारः**—जुदां जुदां माणसमां विचारशक्तिना स्पष्ट अने जुदा जुदा प्रकार होय छे. पदार्थ अने तेमना संबंध वच्चेनां सादृश्यने ग्रहण करवानी अने कोई सिद्धान्तने ग्रहण करी

तेने लागु करवानी कोईने सारी योग्यता होय छे. एकनी एकज हकीकतपरत्वे बे माणसमांनो एक तुरतज ते हकीकतमां रहेला सिद्धान्त उपर ऊतरी पडशे, अने एकना लक्षमां पण ते नहीं आवे. एमज एक माणस, बीजा करतां वधारे सरलताथी नवी वातोने जूना सिद्धान्तोना पेटामां लावी शके छे. आम जोतां एम समजाय छे के विचारशक्तिनी उत्कृष्टतानुं माप, परिचित सिद्धान्तोने नवा दृष्टान्त उपर लागु करवानी अने हकीकतमांथी नवा सिद्धान्तो ऊपजाववानी, तात्कालिक सरलता उपरथी करी शकाय छे.

बीजी शक्तिओनी पेठे आ शक्तिनां आवां तारतम्य पण सामान्यरूप तेम विशेषरूप होय छे. अ एकंदरे, ब करतां सारो विचार अथवा तर्क करनार होय; पण एवुं ए बनी आवे छे के अनी उत्कृष्टता कोई अमुक दिशामांज होय. एम होवानो संभव छे के अमुक प्रकारनी परामर्शपद्धति उपरज तेनुं वधारे वळण होय. व्याप्तिपरायण बुद्धिवाळुं मनुष्य, वस्तुपदार्थादिनुं अवलोकन अने पृथक्करण करवामां बहु चपळ होई, संभवमात्रना नियमोने शोधी लेवामांज आनंद माने छे. आवुं माणस सिद्धान्तो उपरथी हकीकत उपर आवी शके छे, अने स्पष्ट रीते अवलोकन करी सिद्ध कर्या विनानी कोई पण हकीकत स्वीकारवा ना पाडे छे. आथी उलटा प्रकारनी परामर्शपरायण बुद्धि थाय छे; ने ते बुद्धिवाळां मनुष्य साक्षात् हकीकतने बदले भावरूप नियमोनी आलोचनामांज आनंद माने छे. आवां भावरूप सत्योनी योजना करी तेमांथी कोई क्रमिक वाद ऊपजाववानी शक्ति तेवां माणसमां बहु सारी होय छे. प्रथम प्रकार जे कह्यो ते विश्वविद्याना अभ्यासीओनो छे; बीजो प्रकार गणितादिशास्त्रना अभ्यासीओनो छे. एक त्रीजा वर्गनां पण मनुष्य थाय छे; तेमनी व्यावहारिक विचारशक्ति कोई पण गुंफित

प्रसंगने अनुकूळ एवी हकीकतमात्रने पकडी शके छे, अने सर्वनुं यथायोग्य तोलन करी, शक्य फळना निश्चय उपर आवी शके छे.

ए पण कहेवा जेवुं छे के विचारशक्तिनो उत्कर्ष, कोई अमुक प्रकारना विषयपरत्वे पण होई शके छे. भूमिति अनुसार विचार करनारने कहेवाय के ते भूमिति संबंधी वातोमां सारो तर्क करी शके, आकृतिओना नाना धर्म वच्चेना संबंध तेनी दृष्टिए तुरत प्रतीत थई जाय, अने ते भूमितिना सिद्धान्तोने अथवा प्रत्यक्ष प्रमाणने नवा नवा प्रसंगो उपर तुरत तुरत लागु करी शके. एज रीते आपणे रसायनपरत्वे सारो तर्क करनार, यंत्रशास्त्रपरत्वे सारो तर्क करनार, एम विषय परत्वे तर्कशक्तिना तारतम्य विषे व्यवहार करीए छीए.

बीजां बधां बुद्धितारतम्यनी पेठे आ तारतम्यनुं निदान पण स्वाभाविक योग्यतानुं तारतम्य तेमज संसर्ग अने शिक्षणनुं तारतम्य ए छे. सर्वे बाळकने सरखीज विचारशक्ति होती नथी. आ वात एटली सुप्रसिद्ध छे के एनां उदाहरण आपवानी अपेक्षा नथी. आटलुंज नथी पण स्वाभाविक प्रकृतिथी अने तेने योगे अमुक प्रकारनो रस लागवाथी बाळक अमुक रीतेज विचार करवा वळी जाय छे. प्रयोग करी जोवा उपर जेनी रुचि छे तेवो बाळक, विचार अने कल्पनाना राज्यमां आनंद माननार बाळक करतां, स्वाभाविक रीतेज विश्वविद्यानो सारो शोधक नीवडशे. विचारशक्तिनुं अने तेनी खास प्रवृत्तिना प्रदेशनुं यद्यपि आ रीते स्वाभाविक प्रकृतिथीज नियमन थाय छे, तथापि, बाळक जे शिक्षण पामे, अने जेवा मांडलिक संसर्गमां रहे तेवो पण ते शक्तिने रंग लाग्या विना रहे नहीं. प्रकृतिथकी निर्बल विचारशक्तिवाळाने पण, योग्य अभ्यासथी, अति भव्य नहीं तो पण साधारण रीते सारी शक्ति आवी शके. अने विचारशक्तिनो कोई खास दिशाए

विकास करवो छे एनो निश्चय लाववामां तो खास शिक्षणथी घणुं साधी शकावानो अवकाश छेज.

३०. निर्देश अने परामर्शनी शक्तिनी केळवणीः—बाळकनी निर्देशशक्ति केळववा माटे तेने निर्देश करवानी टेव पाडवी जोईए. तेनी पासे कोई पदार्थनुं अवलोकन करी वर्णन करावबुं, तेना पोताना विषेनी कोई वात होय ते कहेवरावबी, तेणे सांभळ्युं होय ते यथास्थित कहेवरावबुं, अथवा तेने स्वीकारवा के न स्वीकारवा माटे कोई कोई निर्देश आपवा, इत्यादि प्रयोग कर्या जवाथी आ शक्ति खीली नीकळे छे. आवो अभ्यास करावबामां माता के शिक्षक जे होय तेणे मुख्य लक्ष निर्देश सावधानता अने याथार्थ्यथी थता चाले ते उपर आपबुं. बाळकोने अतिशयोक्ति करवानी जे टेव होय छे तेना उपर नजर राखी तेने अटकाववानी अपेक्षा रहे छे. बाळक जे शब्दो वापरे ते विचारीने वापरे एवी तेने टेव पडवी जोईए. प्रत्येक शब्दथी जे अर्थनुं विधान थतुं होय अने जे अर्थनी व्यावृत्ति थती होय तेनो तेणे विचार राखवो जोईए. आ स्थाने न्यायमां जेने विरोध, परिवर्त, इत्यादि कहे छे तेनुं ज्ञान शिक्षकने बहु काम आवे छे. परंतु आ प्रकारे निर्देशशक्तिने नियमवी ए बहु सूक्ष्म काम छे. बाळकोने विचित्र अने तादृशने वर्णवतां आनंद पडे छे, अने सहज अतिशयोक्ति तेमना कहेवामां जणाय तो ते क्षन्तव्य छे. अतिशयोक्तिने आरंभथीज बहु चीकणापणुं करी निषेधवाथी विश्वास न्यून थतां निर्देशमात्रमां अनिश्चित शंकामां रहेवानी टेव पडी जवानुं भय रहे छे.

निर्देशशक्तिनी केळवणीमां, स्वमतनुं स्वातन्त्र्य अने गुरुमतनो अनुरोध, ए बे वच्चेना प्रमाणनो नियम करवो ए बहु कठिन काम छे. बाळक पोतानी माता पासेथी के पोताना शिक्षक पासेथी कोई निर्देश प्राप्त

करे तेमां तेनी निर्देशशक्तिनी जे केळवणी थाय ते करतां ते पोते जे निर्देश बांधे तेमां वधारे थाय छे, ए तो आपणे जोयुं छे. निर्देश करवो एनुं तात्पर्यज ए छे के बाळके पोतानी मेळे निर्देश करी लेवो. अवलोकन करवाना केटलाक प्रदेशोमां आ रीते सहजे बने एम छे; जेमके कळाथी निष्पादित पदार्थोना अथवा विश्वलीलाना सौंदर्य विषे निर्देश करवामां बीजी बधी बाबतोमां बाळकनी निर्देशशक्ति उपर कांईक अंकुश राखवो आवश्यक छे. अननुभवी बाळकने, अमुक प्रसंगे शुं संभवित के शक्य छे तेनो निर्णय करवानुं सांपवुं ए ठीक नथी; अने कोई कार्यनी योग्यायोग्यता विषे तेने विचार जणाववानुं सांपवुं ए तो एथी पण वधारे अनुचित छे. निर्देश करवामां आत्मस्वातंत्र्य अने गुरुमतावरोध ए उभयनुं यथायोग्य मिश्रण करवा माटे शिशुशिक्षणमां प्रवृत्त पुरुषोने विषे बहु डहापण अने चातुर्यनी अपेक्षा रहे छे. आ स्थाने बाळकना स्वभाव अने जाति(स्त्री अथवा पुरुष)ना जे फेरफार ते लक्षमां लेवा जोईए. छोकरानी विचारशक्तिने केळववानुं काम छोकरीनी विचारशक्तिने केळववाना कामथी एकंदरे भिन्न छे. पारका उपर विश्वास राखवानी प्रकृतिना मृदु प्रकृतिवाळा बाळकने सारुं, उद्धत अने उग्र प्रकृतिवाळा तथा गुरुमतानवरोधी अने स्वमतावलंबी बाळक करतां, जुदीज पद्धति प्रयोजवी पडे छे.

विचारशक्तिनी केळवणी निर्देशशक्तिनी केळवणीनी भेगीज चालवी जोईए. प्रथमे (चोथा वर्षना आरंभथी) बाळकने खुलासा पूछवानी जे जिज्ञासा थाय छे ते तृप्त करवानी माताने जरूर पडे छे. बाळकना भावि उद्बोध परत्वे आ समय घणो उपयोगनो छे. माता पिता क्वचित् एम धारे छे के बाळको वारंवार केवळ एक यंत्रनी पेठेज, खुलासो मेळववानी कशी पण वास्तविक रुचि विनाज, एक रमुजनी खातर प्रश्नो

पूछवा मांडे छे. बाळकना कुतूहलना स्वरूप विषेना विवेचनमां ऊतर्या विना पण एटलुं कही शकीए छीए के बाळकोना प्रश्नो जेटले अंशे खरी जिज्ञासाथी उत्पन्न थया लागता होय तेटले अंशे तो तेमनी आलोचना करी तृप्ति अवश्य करवी. ज्यां कोई सादा खुलासाथीज समाधान थतुं होय त्यां खुलासो करवो ए सारो नियम छे; पण एटलुं याद राखवुं के ते खुलासो बाळकनी पोतानी शक्तिथी थई शके तेवो न होय. लोक आ प्रमाणे कहे छेः "बने त्यां सुधी तेनी जिज्ञासाने उत्तेजन आपो ते माटे तेनी शक्ति अनुसार, तेना प्रश्नोना खुलासा करो, तेनी बुद्धिने दीप्त करो."* आरंभे बाळकनी बुद्धि जेटली होय तेटली बुद्धिवाळा थईने वात करवी ते पण सारुं छे. विश्वनियमोमां जीवारोपण करी, बाळकने सहज समजाय तेवा तेम रसिक लागे तेवा आकारे ते नियमो समजाववाथी बहु लाभ थवानो संभव छे.

परंतु विचारशक्तिनी केळवणीमां बाळकोनां प्रश्नोनां उत्तर आपवा करतां वधारे वातनो समास थाय छे. बाळकोने पण तेमनी चोपासा जे कांई बने छे ते विषये सामा प्रश्न पूछवा जोईए. प्रत्येक वातने कारण अने खुलासो होय छे ए सिद्धान्त बाळकना मनमां एकाएक ऊतारी शकातो नथी. अनेक संभवो उपर तेनुं लक्ष करावी ते शी रीते बने छे ते शोधवानी टेव पाडी, माता अथवा शिक्षके बाळकना मनमां तपास

* बाळकने प्रति विषयमां प्रश्न पूछवा उपर केटली मर्यादा राखवी ए पण विचारवानुं छे. एक भमरी काच उपर बेठी हती तेने अडकवुं नहीं एम माए कह्युं. बाळके पूछ्युं शा माटे ? माए कहुं करडे. बा. काचने केम नथी करडती ? मा. केमके काचने लागणी नथी. बा. लागणी केम नथी ? मा. ज्ञानतंतु नथी माटे. बा. तंतुओमां लागणी शाथी छे ? आनुं उत्तर आपवुं मोटा पंडितथी पण बने एम नथी. ज्योर्ज इलियटे कहींक लख्युं छे के " प्रत्येक बात विषे बाळक साथे विवाद करो तो ते राक्षस रूप थई जशे, मान बुद्धिज भूली जशे, प्रेम समजी नहीं शके."

करवानी टेव ऊपजाववा उपर निरंतर दृष्टि राखवी. नवा बनावोनो खुलासो करवा सारुं, पोताना भूत अनुभवमांथी सादृश्य खोळी लेवानी तेने प्रसंगे प्रसंगे इच्छा थवी जोईए.

परामर्श अने व्याप्तिना व्यापारमां जे सामान्य दोष आवी जाय छे तेमांथी विदूर रहेतां शीखववुं ए पण विचारशक्तिनी केळवणीनो उद्देश होवो जोईए. उदाहरण, बाळकोने ऊतावळथी व्याप्तिग्रह करतां अटकाववां जोईए. कोई साधारण सहभूत उपाधिने वास्तविक कारणरूपे मानतां, अथवा बहु कारण होय त्यां एकने मूकी अन्य कारणनी उपेक्षा करतां, अटकाववां जोईए. जेणे न्यायना व्याप्तिखंडनुं यथार्थ अध्ययन कर्युं होय तेने बाळकना व्याप्तिग्रहोपयोगी व्यापारने यथार्थ नियमतां सारुं आवडी शके छे. एज रीते, व्याप्तिओ उपरथी निगमन ऊपजाववामां पण बाळकना विचारोने यथार्थ रीते शिक्षके नियमवा जोईए; तेने व्याप्तिनी मर्यादा बतावबी जोईए, सपक्षविपक्षना स्वरूपनुं तेने लक्ष करावबुं जोईए, अने द्व्यर्थ भाषामांथी जे दोष ऊपजे छे तेथी दूर रहेतां तेने शीखववुं जोईए. आ स्थाने न्यायना परामर्शखंडनुं कांईक ज्ञान उपयोगी थई पडशे.

निर्देशशक्ति अने विचारशक्तिनी केळवणीनो आरंभ, माताए तेम शिक्षके, बाळक नित्य दृष्टिए पडती सामान्य वस्तुओने ओळखतुं चाले तेनी साथेज करी देवो जोईए. एनी परिसमाप्ति पद्धतिपुरःसर शाला-शिक्षणने प्रसंगे थाय छे. बुद्धिमान् अने अनुभवी शिक्षक कोई पण अभ्यास विषेनो आ वातमां उपयोग कर्या विना रहेतो नथी. विश्ववर्णन-पुरःसर भूगोलना अभ्यासमांथी विश्वचमत्कारनां कारणो विषे बाळ-कने ते विचार करवानुं शोधी आपेछे, इतिहासने, सादृश्य शोधवानी शक्ति तथा मो'टा बनावोनां कारण निरूपवानी शक्ति, अने अमुक

प्रसंगे शुं वास्तविक अथवा योग्य के शक्य छे एनो, बधा प्रसंगनी तुलना करीने, निर्णय करी जोवानी शक्ति, ते सर्वने केळववाना साधनरूपे तेवो शिक्षक वापरे छे.

परंतु शास्त्रशिक्षण एज विचारशक्तिनो उद्बोध करवा माटे अने तेने सबल करवा माटे सारामां सारुं साधन छे. साधारण ज्ञानने यथार्थ रीते योजनाथी दर्शाववानुं नाम शास्त्र कहेवायछे, एटले बधा वि-चारव्यापारने एना अभ्यासथी चोकस तथा सुरेख करवानुं आवडे छे. वळी शास्त्र छे ते ज्ञानमात्रने तेना परस्परावलंबनानुसार पद्धतिपुरःसर विभाग प्रविभागमां गोठवी आपेछे; व्याप्तिग्रहनी पद्धतिथी प्राप्त करेला सिद्धान्तोथी आरंभ करी ते ते सिद्धान्तनां जे फळ ऊपजे ते परा-मर्शद्वारा बतावबां ए शास्त्रनुं कार्य छे. एटले शास्त्रथी पद्धतिपुरः-सर अने क्रमवार विचार चलाववानी शक्ति पण केळवायछे.

केटलांक शास्त्रमां व्याप्तिनुं प्राधान्य होय छे, केटलांकमां परा-मर्शनुं. विश्वविवेचनशास्त्रो व्याप्तिमय छे; तेमां अवलोकन अने प्रयो-गथकी प्रत्येक वातना नियमनुं स्वरूप तपासवामां आवेछे. आमां पण रसायन अने शारीर जेवां केटलांक शास्त्र तो केवळ व्याप्तिमय छे. आ बेमां अभ्यासीने संभवोनुं अवलोकन तथा पृथक्करण करी नियमो—व्याप्ति—उपर आववानुं छे. आथी उलटी रीते जे गणितशास्त्रो छे ते केवळ परामर्शमय छे. एमां जे सिद्धान्तो छे ते सादा अने देखतां सिद्ध जणाय तेवा होयछे, अने विचारव्यापारनुं बळ तेवा अनेक सिद्धान्तोने योजी परामर्शद्वारा नवा सिद्धान्त ऊपजाववामां रहे छे. आम व्यवस्था होवाथी विश्वविवेचनशास्त्रोना अभ्यासथी व्याप्ति-ग्रहनी शक्ति सारी केळवाय छे अने गणितशास्त्रोना अभ्यासथी परामर्शशक्ति सारी खीले छे.

शास्त्रमात्र जेम जेम वृद्धि पामे छे तेम तेम परामर्शमय थतां जायछे एटले के तेमां परामर्शनो वधारे वधारे उपयोग थतो चाले छे. आनुं उदाहरण गणितशास्त्रोनो दिवसे दिवसे विश्वविवेचनशास्त्रोमां वधारे वधारे उपयोग थतो चाले छे एथीज स्पष्ट छे. छतां शास्त्रमात्रने आ नियम लागु थाय छे. उदाहरण जोईए तो व्याकरण तथा भाषाशास्त्रने पण ते लागु थायछे. आरंभे तो जेवी भाषानी स्थिति होय तेवी विलोकी तेनुं पृथक्करण करवुं, शब्दोनां रूप अने तेमना संबंध जोवा तथा समजवा, अने तेमना नियमो शोधी लेवा एम प्रवृत्ति थाय छे. पण नियमो हाथ लाग्या पछी ए शास्त्रो परामर्शरूपता गृहे छे, एटले के नियमोथी आरंभ करी ते नियमना केवा परिणाम थाय ते बतावबा उपर लागु रहेछे.

आम छे एटले, विषयचर्चा अथवा शीखववानी पद्धति प्रत्येक माणसना मनने रुचे ते रीते, ज्ञान मेळववाना स्वाभाविक क्रमथकी, आघीपाछी पण थई शके छे. बीजी रीते कहीए तो शिक्षणपद्धति, शोध करवानी पद्धतिथी भिन्न छे. छतां जे स्वाभाविक क्रम छे तेनो दुर्लक्ष करवो ठीक नथी. केटलांक पण दृष्टांत आप्या विना तो व्याप्ति अथवा सिद्धान्त लक्षमां ऊतारी नज शकाय, छतां मनुष्यवर्गे ए सिद्धान्तो शी रीते प्राप्त कर्या ते आखो क्रम बतावबानी जरूर नथी. स्वतःसिद्ध एवा भूमितिना सिद्ध नियमोने पण थोडा प्रत्यक्ष दृष्टान्तथी सिद्ध करवानी जरूर पडे छे. आ बधी वात लक्षमां लेतां जणाशे के कोई पण विषय शीखववानी योग्य पद्धति, एक रीते कोई शोध करवानी पद्धतिना दृष्टान्त रूपज छे.

कोई एक वातनुं सारामां सारुं विवेचन करवामां जे नियमो काम आवे छे तेना तेज जुदी जुदी वातोना विवेचनने पण लागु पडे छे. आनो निश्चय चेतनशास्त्रना नियमरूप सिद्धान्तो उपरथीज थाय छे,

बुद्धिनी वृद्धिना नियमोथीज बनी आवे छे. चेतनशास्त्रथी एटलुं जणाय छे के जे विषयोमां स्मृति अने कल्पनानो घणो भाग होय (जेमके भूगोल अने इतिहास) ते विषयो, विचारशक्तिनो जेमां मुख्य भाग होय तेवा विषयो (गणित, विश्वविवेचनशास्त्र) नी पूर्वे जवा जोईए. पण आ मुख्य व्यवस्था लक्षमां राखी अवांतर योजना न्यायपुरःसर करी लेवामां बाध नथी. अर्थात् आपणे विषयोनी परस्पर तुलना करी कीयो कोनाथी वधारे सादो छे ते जोवानुं छे. तेमज विषयोनो परस्पर आश्रय संबंध केवो छे ते विचारवानुं छे. आवा तर्कमांथी आपणने एम नियम मळी आवे छे के शुद्ध गणित पछी व्यावहारिक गणित आववुं जोईए, अने शारीर रसाययनी पछी आववुं जोईए.

प्रकरण ११.

वृत्ति—सादी वृत्तिओ.

आटले सुधी बुद्धिविकासनो विवेक करी रह्या पछी हवे आपणे चेतनाविकासनो बीजो जे मो'टो विभाग वृत्ति तेनी वृद्धिनो विचार करवा मांडीए.

१. वृत्तिलक्षणः—प्रत्येक चेतननी सुखरूप के दुःखरूप स्थिति ते वृत्ति कहेवाय. वृत्तिओ विविध प्रकारनां सुखदुःखरूपे, मननी अनुकूळ प्रतिकूळ स्थिति रूपे, छे. प्रत्येक वृत्ति, थोडे अंशे पण सुखरूप के दुःखरूप, अनुकूळ के प्रतिकूळ होयज छे. वळी वृत्तिनी केटलीक मिश्र स्थितिओ पण छे, जेवीके शोक, क्रोध, इत्यादि, जे कांईक अनुकूळ कांईक प्रतिकूळ एवा मिश्रणरूप होय छे; एमां कीया अंशनुं प्राधान्य छे ते नक्की करवुं घणी वार कठिन पडे छे.

वृत्तिमां सर्व प्रकारनां सुखदुःखनो समास छे. प्रथमे, ए शब्दना

अर्थमां, तंतुप्रतानता साक्षात् फलरूप जे अंतःकरणनी स्थितिओ, जेमने सामान्यतः सुखदुःखनां प्रत्यक्ष, जेवांके क्षुधा तृषानां, कहेवाय छे, तेनो समास छे. पछी, वृत्ति ए शब्दना अर्थमां, कोई पण प्रकारना मनोव्यापार उपर जेनो आधार छे, अने जेने भय, आशा, आश्चर्य, अनुशय, इत्यादि वाचक ऊर्मि ए नामथी भिन्न पाडवामां आवे छे, तेवां फलमात्रनो समास थाय छे.

आपणे जोई आव्या छीए तेम वृत्ति ए, चेतननो स्वतः भिन्न स्पष्ट विभाग छे. आपणा अनुभवनी जे रसप्रद बाजु छे ते आपणां सुख दुःखनीज बनेली छे. आपणी वृत्तिओना संबंधेज बाह्य पदार्थोनी आपणे कांई पण गणना करीए छीए. वृत्तिमय जीवन, सुखदुःखरूप जीवन, ते तो खास करीने आपणुं आंतर जीवन छे. आपणा ज्ञानने बाह्य विश्व साथे संबंध छे, आपणां कर्म ज्यारे कराय छे त्यारे बाह्यत्व पामे छे, पण आपणी वृत्तिओ तो आंतर सृष्टिमांज रह्यां करे छे. सुख अथवा दुःखना कारणरूप वृत्तिओ छे मोटे तेमना स्वरूप अने नियमोनुं थोडुं पण ज्ञान, सुखनी यथार्थ योजनाने माटे आवश्यक छे.

परंतु वृत्ति पोते बहु अगत्यनी वात नथी, चेतनना जे बीजा बे विभाग तेनी साथे अमुक संबंधे ते रहे छे. अभ्यासमां जे रस आवे छे ते ऊपजावना रूपे एनो एक पासाथी बुद्धिविकास साथे संबंध छे. एटलाज माटे ऊर्मिप्रवणतानो जेमां विचार करवामां न आव्यो होय तेवी बुद्धिव्यापारनी योजना कदापि पण संपूर्ण कहेवाय नहीं. बीजी पासा जोईए तो वृत्तिओने क्रिया तथा इच्छा साथे समवायसंबंध जेवो संबंध छे. क्रियाना हेतुमात्र वृत्ति भावनामयज (विविध प्रकारनी अनुकूळ साधनारूप भावनाओ) होय छे. माणसनो व्यवहार पण वारंवार मुख्यत्व पामी प्रबल थयली कोई वृत्तिने अनुसरे छे.

नीतिशिक्षणनी पद्धति योजवामां, तेमज चारित्रघटनामां आवश्यक उपयोगी होवाने लीधे वृत्तिओनो सूक्ष्म विचार करवो उचित छे.

२. वृत्तिनो ज्ञान साथे संबंधः—चेतनविकासना बुद्धि ए विभाग साथे ऊर्मि ए विभागनो जे संबंध छे तेनो थोडोक विचार करवानी आवश्यकता छे. ए संबंध परस्पर विरोधरूप तेम परस्परोपकाररूप छे.

वृत्ति अने ज्ञान एक रीते परस्परथी विरुद्ध छे. एकना एक समये मन अति तीव्र विक्षोभनी अने दृढ बुद्धिव्यापारनी स्थितिमां होई शके नहि. जेटली जेटली उग्र वृत्ति होय छे ते मनने घेरी ले छे, अवधानने पराहत करी दे छे, अने बुद्धिव्यापार, यथार्थ रीते थवा देती नथी. सूक्ष्म बुद्धिव्यापार, जेवा के पदार्थोमां रहेला नजरे न आवे तेवा साधर्म्यवैधर्म्यना भेद शोधी लेवा, अथवा गुंचवण भरेलो कोई विचारव्यापार करवो, ए बधुं मन शान्त न होय तो, थई शकतुं नथी. दृढ ऊर्मिविक्षोभ न होय त्यारे पण, विचार उपर वृत्तिओनी जे असर थई होय तेनाथी ऊपजी आवता अति अज्ञात एवा पण पक्षपातना वळणथी, बुद्धिव्यापार यथार्थ संभवतो नथी. जे बाळकने कोई काम अरसिक लागतुं होय तेने ते काम उपयोगी छे ए विचार उपर लक्ष जवानुं नहीं. अरसिकतानी वृत्ति एना मनने रंग लगाडी देछे, अने एम न थयुं होय तो जे विचार तेना मनमां ऊतरी शके ते ऊतरी शकता नथी. अति ऊर्मिप्रवण स्वभाववाळां बाळकोना शिक्षणमां जे खास विघ्न नडेछे ते आवाज कारणथी उद्भवे छे.

बीजी पासा जोईए तो, आपणे हमणांज जोई आव्या तेम, बुद्धिव्यापारमात्रनो आधार, जेटले अंशे ते व्यापारमां रस होवानी आवश्यकता छे तेटले अंशे, वृत्तिना थोडा पण अस्तित्व उपरज रहेलो छे. एम

पण कही शकाय के जेटलुं जेटलुं सारुं अने असरकारक बुद्धिकार्य उद्भवे छे तेमां आनन्दऊर्मिनी मृदुलहरनो अंतर्भाव होवोज जोईए. ज्यारे आनंदनी आवी अंतर्भूत लहर चाले छे त्यारे अवधान वधारे जाग्रत् रहे छे, कल्पनाचित्रोनो प्रादुर्भाव त्वराथी चाले छे, अने विचार पोताना संबंधो तुरत तुरत शोधी ले छे. आ उपरथी सिद्ध थाय छे के त्वरित बुद्धिविकास, बुद्धिव्यापारानुकूल तीव्र वृत्तिओथी सारो चाली शके छे.

आ उपरथी एटलुं फलित थशे के बुद्धिना उत्तमोत्तम विभागनो उत्कर्ष थवामां अमुक अमुक वृत्तिओनो पण उत्कर्ष थतोज जवानो, अभ्यासमां रस लागे, अने बुद्धिव्यापारनो आयास खमवानो हेतु जडे, ते माटे बाळकना मनमां अमुक ऊर्मिओनो विकास थवो जोईए, जेम के इनाम मेळववानी खुशी, स्नेह अने ज्ञान उपर प्रेम, तथा कुतूहल ए बे बुद्धिअनुकूळ उर्मि, इत्यादि.

आ प्रकारे वृत्तिनी वृद्धि उपर ज्ञाननी वृद्धिनो एक रीते आधार रहे छे खरो, तथापि ए आधार करतां पण वृत्तिनो ज्ञान उपर वधारे आधार रहे छे. वृत्तिनां उत्कर्षमय जे जे रूप छे, एटले के ऊर्मिओ, तेमां बुद्धिव्यापार सर्वथा अनुगत होय छे. दर्शन, भावनामय चित्र, इत्यादिमां ते साक्षात् सहकारीरूपे होय छे. उदाहरण. कोई पदार्थ जेवो के एक हडकायो कूतरो तेनी मानसिक भावनाथी भय ऊपजे छे. आत्माभिमान पूर्वे आत्मा शुं ते, तथा अमुक गुणो अने तेनो ते आत्मा साथे संबंध ते, ए उभयनुं ज्ञान जोईए. कोई माणस उपरनो प्रेम, अथवा देशहित, एना जेवी घणीक वृत्तिओमां अनेक गुंफित बुद्धिभावनाओ रहेली होयछे. सर्व करतां उत्कृष्टमां उत्कृष्ट जे सत्य प्रति माननी वृत्ति अने न्यायवृत्ति, तेनी पूर्वे भावाधिगमरूप विचार थयलो होवो जोईए अने तेथी बुद्धिनो पण तेटलो विकास होवो जोईए. बुद्धि जे जे वातो लई

बेसे तेमां फेरफार थवाथी, अने बुद्धिविकासनो उत्तरोत्तर क्रम वधतो चालवाथी, जे ऊर्मिना परिवर्त समजाय छे तेनुं पण एज कारण छे वृत्तिओनो आ प्रकारे बुद्धिव्यापार एटले भावना उपर जे आधार छे तेथकी बुद्धि पछी ऊर्मि अथवा वृत्तिनुं विवेचन आपवुं ए क्रमज यथार्थ जणाय छे.

आ प्रकारे आपणे जोई शकीए छीए के ऊर्मिनी तेमज बुद्धिनी केळवणीमां उभयनुं थोडुं घणुं केवुं मिश्रण होय छे. बुद्धिशक्तिनो घणामां घणो व्यापार करवा सारुं अभ्यासमां रस लागवो जोईए. एमज जो उत्तम प्रकारनी ऊर्मिओ—जेवीके नीतिवृत्ति अने सत्यप्रीति—तेमने सबल करवी होय तो आपणे बुद्धिशक्तिनो व्यापार करवो जोईए.

३. **वृत्तिनो आविर्भाव**:—मन अने शरीर वच्चेना निकट संबंधनुं सारामां सारुं दृष्टान्त अमुक वृत्तिस्थिति अने अमुक शरीरस्थिति वच्चे स्पष्ट संबंध समजाय छे ते छे. वृत्तिनी साथेज सुस्पष्ट कायिक फेरफार थता चाले छे; एमने अनुभाव, सात्विक भाव, भाव, अभिनय, स्वरविकार, इत्यादि नाम आपवामां आवे छे, अने एवा बाह्य फेरफारो साथे, वृत्तिने योगे शरीरव्यापारमां केटलाक आंतर फेरफार पण थाय छे. सुख अने दुःख, अने थोडेक अंशे सुखकर अथवा दुःखकर वृत्तिओ जेवीके क्रोध, भय, प्रीति, मान, तेमने पोत पोतानो जुदो जुदो अनुभाव होय छे. वृत्ति अने तदनुषंगी अनुभाव ते वच्चे एवो निकट संबंध छे के घणी वार अमुक अनुभाव करवा उपरथीज ते अनुभावनी आनुषंगिक वृत्ति मनमां जमवा मांडे छे*. वृत्ति अने तदनुषंगी शरीरस्थिति वच्चेना संबंधनी

* नाटकना प्रयोग जोतां एज प्रमाणे बने छे. नाट्यवर्गना मनमां वृत्ति न छतां ते अनुभावमात्र अभिनयथी बतावे छे, पण प्रेक्षकने ते थकी इष्टवृत्ति-ऊर्मिनुं स्फुरण अनुभवाय छे.

वात वृत्तिओ उपर इच्छा जे अधिकार चलावे छे तेमां पण आवे छे. एम थाय छे त्यां बाह्य अनुभवज अटकवा लागे छे एम आपणे हमणां जोईशुं.

ऊर्मि अथवा भावनो अनुभाव साथे संबंध घणो निकट छे. तंतुस्थाननो ऊर्मि-मात्रमां विक्षोभ थाय छे, अने आ विक्षोभ उत्तरोत्तर वृद्धि पामता परिघवाळा वर्तुल रूपे आखा तंतुचक्र उपर पथराई जाय छे. कोई पण भावनुं स्थायी थवुं आवी स्थिति कायम रहे ते उपरज आधार राखे छे. ज्यारे आवी कायिक प्रवृत्ति अटकी पडे छे, जेम के आपणे कोई वृत्तिना आविर्भावने अचकावी दईए त्यां बने छे, त्यारे ऊर्मि-विक्षोभ घणो मंद पडी जाय छे, अने शान्त थवा लागे छे. आवा जे तंतुचक्रगत कायिक परिवर्त तेमने अनुषंगे केटलाक तंतुओमां अने केटलाक अवयवोमां पण परिवर्त थाय छे, अने ते पण ऊर्मिना स्वरूपने बांधवामां कारणरूप थाय छे. जेम के भयने समये रक्ताशयनो व्यापार मंद पडे छे, क्रोधने समये केटलाक इच्छानुसार चालता हालता स्नायु अटकी जाय छे, इत्यादि. परंतु आवा जे परिवर्त ते ऊर्मि-थकी भिन्न पाडी शकाय छे, अने घणी वार तो ते, ऊर्मिना शान्त थया पछी पण रहे छे.

अनुभावनी कल्पनाः—अनुभावमां जे व्यापार थाय छे ते केटलाक साहजिक, केटलाक प्राप्त करेला एवा होय छे. रोदन, हास्य, आंख बतावबी इत्यादि साहजिक छे; बाल्य समयथीज सर्वत्र जणाय छे. बीजी केटलीक गतिओ, जेवी के मूठी वाळवी इत्यादि पण साहजिक छे. केटलाक प्रसंगोमां तो अनुकरण (ज्ञात के अज्ञात) नो पण कांईक भाग होय छे. अनीति उपर अनादर जणाववानो अनुभाव, दिल नथी लागतुं ए जणाववानो अनुभाव, इत्यादि, केटलेक अंशे, आपणे आ प्रकारेज प्राप्त करीए छीए. केटलीक वातोमां तो इच्छापूर्वक आपणे अमुक अनुभाव ग्रहण करीए छीए; जेमके सुधरेला लोकने योग्य आकृति, वाणी, अने रीति, इत्यादि उपचाररूप शिष्टाचार ग्रहण करवामां.

अनुभावना व्यापारनो खुलासो करवा माटे घणीक कल्पनाओ योजवामां आवी छे. एकंदरे एम स्वीकारवामां आव्युं छे के शरीर अने मनना व्यापारने जे निकट संबंध छे तेने लीधे वृत्तिमात्र अमुक अमुक असरो तथा व्यापारादि शरीर उपर ऊपजावे छे, अने ते व्यापार तथा असरनां बळ मर्यादा आदि, ते ते वृत्तिना घनत्व अने स्थिरत्वने अनुसारे रहे छे. मि. हर्बर्ट स्पेन्सर एम बतावबा यत्न करे छे के वृत्तिनुं घनत्व जेम जेम वधतुं जाय छे तेम तेम, वधारे वधारे मो'टा स्नायुने असर थती आवे छे. वंट, वधारामां, एम कहे छे के वृत्तिमात्र अवधाननां जे उद्ग्राहक स्थान छे तेने असर करे छे, अने तेथी विचारनी यथायोग्य प्रवृत्तिमां पण भंग थाय छे. आ वातनो अनुभव सर्व प्रकारना उग्र ऊर्मिमां प्रत्यक्ष थई आवे छे. ज्यां ऊर्मिप्रघर्ष थाय छे त्यां तो स्नायु स्तब्ध थाय छे एटलुंज नहीं पण अवधान पण अटकी पडे छे.

अमुक अमुक वृत्ति साथे तेना तेना जे खास शरीरव्यापार जोडायला छे तेनो विवेक करवा माटे जुदी जुदी कल्पनाओ करवामां आवे छे. दा. बेन एवो विचार जणावे छे के सुखदुःखनो जीवनबलना उत्कर्ष के निष्कर्ष साथे संबंध छे एटले सुखना अनुभावने दुःखना अनुभावथी जुदो पाडवामां, शरीरव्यापारनी वधती ओछी स्फूर्ति एज स्पष्ट कारण छे. परंतु जुदी जुदी वृत्तिना अनुभावमां जे स्फूर्तिनुं तारतम्य जणाय छे तेने ते ते वृत्तिना सुखदुःखरूप स्वभाव साथे कांई पण संबंध होय एम लागतुं नथी. उग्र अने प्रक्षुब्ध करे तेवी वृत्तिओ, पछी ते सुखमय होय के दुःखमय होय, पण एकज जातना फेरफार ऊपजावे छे. आटलुंज नथी पण केटलीक वृत्तिओ वच्चे वेगपरत्वे जे स्पष्ट विरोध छे, जेम के एक पासा क्रोध अने बीजी पासा भय, तेनो सुख अने दुःखना विरोध साथे कांई संबंध जणातो नथी. एकंदरे वृत्तिना स्वभाव उपर बधो आधार छे, के ते जीवनबलने उत्तेजक छे, के क्षीण करे तेवो छे.

आ उपरथी ए प्रश्न ऊठे छे के क्रोध जेवी अमुक वृत्तिओने पोतपोतानो खास अनुभाव होय छे ते शी रीते उपजी आवे छे? आवा अनुभाव जेटले अंशे साहजिक छे तेटले अंशे तेमनां बे कारण धारवामां आवे छे. (१) केटलाक व्यापार अमुक अमुक अनुकूळ प्रतिकूळ वृत्तिओ साथे कामना के उपयोगी जाणीने (ज्ञात के अज्ञात रीते) करवामां आवेला. अश्रुपात करवामां जे स्नायुव्यापार थाय छे ते चक्षुमां खुंचे तेवा कोई पदार्थ भेगा थाय छे तेने बहार काढवा माटे थायछे; तालुने उंचुं करी जीभने बेसाडी देवानो जे व्यापार कांई कडवी चीजनो विचार आवतां थई जाय छे, ते मूल कडवी वस्तु खाती वखते थयलो होवो जोईए. आवां कारणोमांथी वृत्ति अने व्यापार वच्चे साहचार्य थई जाय, अने ज्यारे ज्यारे वृत्ति थाय त्यारे त्यारे व्यापार थयांज जाय. (२) आवा व्यापार जे वृत्तिने अनुषंगे थता होय त्यांथी तत्सदृश वृत्तिने अनुषंगे पण थवा लागे. अश्रुपातनो व्यापार तमाम दुःखकर वृत्ति साथे लागु थई गयो, तालुने उंचे चढावबा वगेरेनो व्यापार कडवी एवी वृत्तिमात्रने लागु थयो. आवां जे संबंध अने साहचर्य ते मनुष्यना उद्भवना क्रममां घडातां आवेलां अने प्रतिव्यक्तिने साहजिक प्रेरणारूपे संक्रामित थयलां.

४. वृत्तिनुं माप अथवा विलोकनः प्रकृतिः—वृत्तिने अनुषंगे स्पष्ट अनुभाव, व्यापार अथवा गतिओ जणाय छे ते बहु लाभकारक छे, केमके ए थकी वृत्तिनुं यथार्थ विलोकन करवानुं ठीक पडे छे. विशेषे करी तरुण जनोनी वृत्तिओनुं माप आ रीते तुरत काढी शकाय छे, केमके ते एकंदरे आत्मसंयमन अने प्रतारणानी रीति शीखेलां होतां नथी, एटले भोळे भावे वृत्ति अने अनुभावनुं दर्शन थवा दे छे. आवी रीते आपणे केटलेक अंशे माणसनी वृत्ति अथवा ऊर्मिप्रवणतानुं माप करी शकीए छीए. आपणे कोई बे बाळकोनी अमुक वृत्तिना घनत्व अने समयनुं, बीजा बधा प्रसंग सरखा राखतां, केटलुं तारतम्य छे तें जोई शकीए. अथवा कोई बे माणसमां सरखे सरखी तेटली अने तेवी वृत्ति जाग्रत् करवा केटलुं उद्बोधक बळ जोईए छीए तेना माप उपरथी ते माणसनी ऊर्मिप्रवणतानुं माप करी शकीए.

आवां साधनोथी ऊर्मिप्रायप्रकृतिनां तारतम्य मापवानो कांईक मार्ग करी शकाय छे. एम मालुम पडे छे के केटलांक मनने सुखमय के दुःखमय उद्बोधकनी वधारे असर थाय छे, केटलांकने एकला सुखमय के दुःखमय उद्बोधकनां परिणामथी असर थाय छे, केटलांकने अमुक अमुक उद्बोधक जेवां के क्रोधनां इत्यादि, तेनीज वधारे असर थाय छे; इत्यादि.

५. सुखदुःखना नियमः—चेतनशास्त्र लखनाराए, घणो समय थयां, कायिक तेम मानसिक सुख अने दुःखना विविध प्रकारने थोडाक नियम रूपे दर्शाववा यत्न कर्यो छे. यद्यपि हजी सुधी ते आ काममां विजयी थया नथी, तथापि जे एक बे नियमो तेमने हाथ लाग्या छे ते एकंदरे सत्य जणाय छे अने कांईक उपयोगना पण लागेछे.

१. प्रोत्साहन अथवा व्यापारनो नियमः—जे नियमो हाथ आव्या छे तेमांना मुख्य नियमने प्रोत्साहननो नियम अथवा व्यापारनो नियम एवुं नाम आपवामां आव्युं छे. तंतुस्थानो साथे अथवा प्रत्यक्षचेतनना स्थान साथे जेने संबंध होय एवा कोई अवयवना व्यापारने अनुषंगे सुख अथवा आनंद समजाय छे. अथवा आवा स्थूल व्यापारनुं मानसिक अनुषंगी पण होय छे एटले एम पण कही शकाय के सुखमात्रने मननी कोई एक शक्ति, अथवा गति, अथवा वृत्तिना व्यापार साथे संबंध छे. अने एकंदरे एवुं मालुम पण पडशे के कोई पण अवयवनुं साधारण रीतनुं प्रोत्साहन, अथवा कोई पण शक्तिनो साधारण रीते व्यापार, सुख के आनंद ऊपजावे छे.

सुख अथवा आनंदने, आपणे तंतुव्यापार साथे एटले के कोई अवयव, इंद्रिय, मगज, इत्यादिना व्यापार साथे, अथवा कोई प्रकारना मानसिक व्यापार साथे, संबंध राखतुं मानी शकीए. आ नियम बतावबामां हेमिल्टन आदि केटलाक लेखको केवळ मानसिक व्यापार उपरज लक्ष करे छे, केटलाक ततुंव्यापारमात्रनेज दृष्टिमां राखे छे. एकंदरे एम जणाय छे के सादां इंद्रियजन्य सुखोमां तंतुव्यापारनी मुख्यता समजाय छे, अने ऊर्मि आदि मिश्र आनंदोमां मनोव्यापारनी मुख्यता समजाय छे. परंतु सुखमात्रमां कोईने कोई प्रकारना पण तंतुव्यापार न होय एम न धारवुं. बीजी पासा एम पण छे के सादामां सादां सुख तेमां पण मनोव्यापारनो अंश न होय एम नथी; अमुक स्पष्टतावाळुं भान थवाने जोईए तेटला पण मनोव्यापार विना चालतुं नथी.* सुखने एकंदरे मनोव्यापार साथे संबंधवाळुं मानवामां बाध एटलोज आवे छे के इंद्रियप्रोत्साहनजन्य सुख जेवां स्थिर सुखनो तेमां समास थतो नथी. सुखने माटे जे शरीरसामग्रीनी अपेक्षा छे ते जोतां एम समजाय छे के तंतुतंत्रमांना संवाहकतंतुओ साथे सुखने वधारे संबंध छे. स्नायुव्यापार जेवां प्रवृत्तिरूप सुख तेमां पण संवाहक तंतुनुं प्रोत्साहन मुख्य होय छे एम लागे छे.

* लीबनीट्झ वगेरे केटलाकनुं एम मानवुं छे के सुखनुं प्रत्यक्ष भान थवामां जे सामग्रीनी अपेक्षा छे ते अमुक मनोव्यापार रूपज छे; केम के जीवनशक्तिना उत्कर्षरूप जे सुख तेनी प्रतीति ते व्यापार विना थाय नहीं.

आ नियमनुं स्पष्ट दृष्टान्त प्रत्यक्षपरत्वे समजाय छे, अने विशेषे करी जे उत्कृष्ट इंद्रियो छे तेपरत्वे जणाई आवे छे. चक्षु अने श्रोत्रनुं, तेमनां तेमनां उचित प्रोत्साहक थकी, सहजप्रोत्साहन सुखरूप छे; अने अमुक मर्यादा सुधी प्रोत्साहकना बलानुसार सुखमां वृद्धि थती जणाय छे. प्रातःकालनी असर, अथवा अमुक गाननी असर, इत्यादि जोवाथी आ वातनो निश्चय थई आवशे. आनो आज नियम, स्नायुव्यापारमां तेम जेने खास मगजनो व्यापार मानीए छीए तेवा बुद्धिव्यापारमां पण लागु पडे छे. साधारण व्यापारथी सुख लागे छे, अने अमुक मर्यादा सुधी व्यापारनी वृद्धि साथे सुखनी पण वृद्धि थाय छे.

परंतु ज्यारे प्रोत्साहन अमुक मर्यादानी पार जाय छे त्यारे सुखमय असर न्यून थवा मांडे छे, अने त्वराथी दुःखरूपता गृहवा मांडे छे. उदाहरण. ऊगता सूर्यनुं तेज अमुक विपुलता करतां अधिक थाय छे त्यारे आंख तेथी पराहत थई जाय छे. एज प्रकारे अति तीव्र स्वरथी पण कानने पीडा थाय छे. घणा आयासवाळो स्नायुव्यापार, के बुद्धिव्यापार, ए पण एवाज कारणथी दुःखरूप थाय छे.

सुखमय अने दुःखमय प्रोत्साहननुं मापः—प्रोत्साहनना बळ साथे सुखमय के दुःखमय वृत्तिना संबंधनुं बराबर माप लेवुं अति कठिन छे. वंट नीचे प्रमाणे माप धारे छे. प्रोत्साहन स्वाभाविक मर्यादा तजी कांईक समजवामां आवे तेवुं प्रत्यक्ष ऊपजावे छे त्यांथी सुखनो आरंभ थाय छे, अने प्रोत्साहननी वृद्धि साथे सुखनी वृद्धि थयां जाय छे. एम करतां घणामां घणुं जे सुख आ प्रकारे थई शके, तेनी मर्यादानुं केन्द्र आवी जाय छे, अने एटलेथी पछी सुख ओछुं थते थते, उदासीनतानी स्थितिए पहोचता सुधी ओछुं थयां जाय छे. आटले सुधी आव्या पछी पण जो प्रोत्साहनना बळमां वृद्धि करवामां आवे तो दुःख पेदा थाय छे, ने ते दुःखमर्यादाना केन्द्रपर्यंत प्रोत्साहननी वृद्धिना प्रमाणमां वधे छे.

सुखमात्र साधारण प्रोत्साहन अथवा व्यापारथकी ऊपजतुं जणाय छे, पण दुःखमात्र अतिशय प्रोत्साहनथी थाय छे एम जणातुं नथी.

अमुक अमुक प्रसंगे तो योग्य प्रोत्साहनना अभावने लीधे दुःखवृत्तिनो उदय थतो जणाय छे. अंधकारथी जे असर थाय छे तेमांथी आ वात केटलेक अंशे समजाय एवी छे. दीर्घ काळ पर्यंत चालता अंधकारथी प्रकाशनी इच्छा थाय छे; ए वातनो ए वात साथे संबंध जणाय छे के प्रकाश गृहनार इंद्रिय पोताना व्यापार माटे तत्पर छे, पण प्रोत्साहननी अपेक्षा करे छे. स्नायुव्यापार करी न शके तेवा चपळ बाळकनां त्वरा अने चंचलता, तेमज जेने निर्वेद, अणगमो, बेचेनी, आळस, इत्यादि नामथी बतावाय छे तेवी मननी स्थिति, जेनो अनुकूळ मानसिक प्रोत्साहनना अथवा मनोव्यापारने वहार निकळवाना द्वारना अभाव साथे संबंध छे, ते सर्व एना एज नियमनां दृष्टान्त छे.

व्यापारनो जेथी जेथी अवरोध थाय तेथी तेथी इच्छानी दुःखरूप वृत्ति उद्भववानो संभव छे. एमां अवरुद्ध व्यापाररूप प्रतिकूल वृत्तिनुं भान ऊपजी आवे छे. उदाहरण. ज्यारे कोई एक अंकोडो वीसरी जवाथी आखी विचारश्रेणिनो अवरोध थाय छे त्यारे, अस्खलित व्यापार थवा सारुं मार्ग न मळवाथी मनमां आवी अवरुद्धवृत्ति उदय पामे छे. अवरोधथी ऊपजता दुःखमां, अवरोधने दूर करवामां निष्फल थतां, वपराता व्यापारनुं आधिक्य पण साधारण रीते होय छे.

आ उपरथी एम समजाय छे के एक पासा अतिशय अथवा हदपार व्यापार अने बीजी पासा न्यून अथवा अवरुद्ध व्यापार ए बेनी वचमांना व्यापारमां सुख छे. अतिशय, हदपार, न्यून, अवरुद्ध, ए शब्दो ते ते अवयव अथवा इंद्रियना स्वाभाविक व्यापारनी अपेक्षाए लखेला छे. जाग्रत् व्यवहारमां लगभग आखोए वखत जेने व्यापारवान् रहेवुं पडे छे एवी चक्षु जेवी इंद्रियने ते थकी श्रान्त थयाना निर्वेदनुं दुःख लागतुं नथी. एथी उलटी रीते, घ्राणेन्द्रिय जेवी इंद्रिय जेनो व्यापार

अनियमित रीते क्वचित् क्वचित् थायछे, तेमां प्रोत्साहक व्यापारना अभावे दुःख लागतुं नथी. जे उभय कक्षान्तर्गत साधारण व्यापारमां सुख कह्युं ते व्यापार साधारण छे के असाधारण एनो आधार ते ते इंद्रियनी ताजी के थाकेली स्थिति उपर तेमज रोगी निरोगी दशा उपर रहे छे.

एम मानवुं सकारण छे के कोई पण अवयवना साधारण व्यापारथी ते अवयवने लाभ थाय छे, तेनी अनामयता सचवाय छे, तेनी शक्तिमां वृद्धि थाय छे. एथी उलटी रीते अतिशय अथवा न्यूनताथी हानि थाय छे. अतिशय थकी शक्ति क्षीण थाय छे, अने न्यूनताथी शक्ति अनुपयुक्त रहे छे, तेथी हानि थई आवे छे. त्यारे एटलुं स्पष्ट कही शकाय के शक्तिनो एक पासाथी व्यय तेम एक पासाथी उपचय तेनी यथायोग्य योजना उपर सुखनो आधार छे.

आगळ सहज ईशारो कर्यो छे तेम आ सिद्धांतना एक बे अपवाद पण छे. केटली वार कोई पण अतिशयरहित अने अतिन्यून प्रोत्साहन पण दुःखरूप थाय छे. उदाहरण. कडवो स्वाद गमे तेटलो न्यून के अधिक होय पण सर्वदा प्रतिकूळज लागे छे. आ अपवादनो वांट एवो खुलासो करवा यत्न करे छे के उदासीनतानी मर्यादा आ प्रसंगे एटली बधी नीचे छे के आरंभमर्यादाथी तेने जुदी पाडवी कठिन छे. संगीतमां ऊपजी आवता विवादी स्वरोना संधानथी थती कर्णकटुता सर्व प्रकारे अप्रिय लागे छे; ते अपवाद उपरथी फेकनर एम पण कहे छे के सुख अथवा आनंदनो आधार प्रोत्साहनना बळ उपरज नहि पण, ते ते अवयवानुकूल तेनी जाति उपर पण रहे छे. बीजी पासा जोईए तो व्यापारना अभावथी इच्छारूप दुःख ऊपजे छे, तेम आरामनुं सुख पण ऊपजे छे. आ विषये हवणांज पुनः कहीशुं.

२. परिवर्त अथवा विरोधनो नियम.—सुखदुःखना बीजा नियम रूपे परिवर्त अथवा विरोधनो नियम जाणवामां आवेलो छे. दीर्घकालव्यापी मनोव्यापारने माटे संस्कारोमां परिवर्त राखवानी जरूर छे एम आपणे कही आव्या छीए. एवा परिवर्तथी वृत्ति उपर, अने विशेषे करी सुख अथवा आनंद उपर शी असर थाय छे ते हवे जोवानुं छे. ऊ-

र्मिना उपर प्रोत्साहनना नानात्वथी अथवा परिवर्तथी शी असर थाय छे ए जाणवुं घणुं आवश्यक छे.

सुखकारक प्रोत्साहनने लंबाववाथी शी असर थाय छे ते जोईए. सुखना उपर प्रोत्साहनना परिवर्तनी असर शी थाय छे ते समजवा सारुं परिवर्त पाम्या विना एक ने एक रूपे जे प्रोत्साहन लंबायां जाय तेनाथी, एटले के परिचय अने टेवथकी, सुख उपर शी असर थाय छे तेनो प्रथमे विचार करीए. सुखकारक प्रोत्साहनना सामान्य नियम उपरथी तो एम फलित थाय छे के प्रबल प्रोत्साहनना सतत व्यापारथी, अथवा पुनःपुन थता व्यापारथी, ते व्यापारना आश्रयरूप अवयवने निर्वेद अथवा अन्यथा हानि थई, दुःख ऊपजवानो समय आवे छे. रणसिंगनो क्षण वार थतो नाद गमे, पण बहु वार चाले अथवा वारे वारे थाय तो तो निर्वेदज आवे.

बीजी वात ए छे के जेमां अप्रिय एवी वृत्तिनो उदय न थाय त्यां पण घणो समय चालता प्रोत्साहनथी प्रियता अथवा सुखनो उदय तो साधी शकातो नथीज. एकनो एक स्वर वारंवार सांभळवाथी अवधानने प्रोत्साहन मळतुं नथी. प्रातःकाले वहेला ऊठीने फरवा जतां बागबगीचानी लीलोतरी आनंद आपे छे, पण एक कलाक पहेलां तो तेना उपरथी अवधान ऊठी जाय छे. शरीरना घणा एक व्यापार निरंतर चालता होवाथी, तेमना विषे भान पण रहेतुं नथी अने तेथी ते कशो पण आनंद ऊपजावता नथी. साधारण रीते श्वासप्रश्वासनो जे व्यापार चाले छे तेमां कशो आनंद नथी; अने मनोव्यापार पण, नियमित रीते थयां करतो होय अने पुनः पुनः आवतो होय तो, तेटले अंशे, आ व्यापारना सरखोज छे. आपणां नित्यकर्म पण, आरंभे तेमां जे आनंद आवतो ते आनंद, पुनःपुनः अभ्यास थई जवाने लीधे, ऊपजावी शकतां नथी. आपणी

आसपासनो देखाव, आपणी नजरे नित्य पडतां वदनादि, आरंभे गमे तेवां आनंदजनक छतां, थोडा समय पछी कशो आनंद आपतां नथी; एमने मूकी अन्यत्र फेरफार करवो एम मन थाय छे.

केटलाक लेखकोए आनंदजनक प्रोत्साहनना क्षयनो नियम ऊपजाववा यत्न कर्यो छे. दा. बेन लखे छे के "आरंभे ते क्षय त्वरित होय छे पण अमुक समय पछी, अमुक वर्ष नहीं पण अमुक मास के अठवाडिआं पछी, विशेष क्षय थतो जाय ते समजातो नथी." एकनी एकज स्थिति चाल्यां करे ए रूपी एकता अने पुनःपुनः तेनी ते वात आव्यां जाय ए रूपी अभ्यास ए बेनी जुदीजुदी असरोने आपणे स्पष्ट रीते ओळखवी जोईए. आपणा घरना संसर्गो, भींतो उपर टांगेली छबीओ, इत्यादि निरंतर आपणी दृष्टि आगळ होवाथी, आनंदजनक रही शकतां नथी. बीजी पासा नियमित वखते पुनःपुनः आवता आनंद, जेवाके भोजन, जनप्रसंग इत्यादि ते, यद्यपि क्षयना नियमने आधीन छे तथापि परिवर्तनी जे आवश्यकता ते थोडे घणे अंशे पण पूरी पाडे छे. एकता अथवा अभ्यासथी प्रोत्साहननी आनंदजनक शक्ति क्षीण थवानुं जे आवुं वळण छे तेनो बीजां अनेक कारणोथी अटकाव थाय छे. विरोध स्पष्ट करवाने आवश्यक एवी जे वात होय तेना अभावनी कल्पना करवी ए आ कारणोमांनुं मुख्य छे. जे स्थितिमां, हालनुं सामान्य आनंदजनक कारण न हतुं, ते स्थितिनी कल्पना जाग्रत् राखवाथी, ए आनंदनो आरंभे जे रस हतो तेनो ते, केटलेक भागे, ताजो करी शकाय छे. उदाहरण. निरामय होवाथी, सारी रीते खावापीवानुं पासे छे एम जाणवाथी, आपणने आनंद थाय छे ते जे समये ए वस्तुओ आपणी पासे न हती ते समयनुं अथवा न होय तो केम थाय एवा संभवनुं कल्पनाद्वारा स्मरण करवाथी थाय छे. आ उपरथी दुःखादि भावनुं चित्र करी बतावनार चीतारानी कलमनो उपयोग पण समजी शकाशे. एवा चित्रनुं दर्शन थतां, जेने आपणे साधारण सुखरूपे मानतां होईए तेनाथी विरुद्ध कोई भावनुं स्फुरण थाय छे अने परिचयथी रसमय न लागतुं एवुं ते सुख वधारे रसवाळुं थई आवे छे. जेनी कल्पनाशक्ति बहु वेगवाळी छे तेवां माणसो यद्यपि तेवी शक्तिने लीधेज वधारे दुःखी थाय छे तथापि, परिचित एवां सुखोने पण वधारे सारी रीते भोगवी शके छे.

त्यारे एटलुं जणाय छे के आनंद माटे परिवर्त अथवा विरोधनी अपेक्षा छे; अने तेनां बे कारण छेः (१) सुखजनक प्रोत्साहनना जेटला प्रकार छे ते सर्वनो समय, जो तेमनाथकी सुखने बदले दुःख न ऊपजावुं होय तो, अमुक रीते नियमित थवो जोईए; (२) जेना उपर मननी उत्तम प्रतिनी जागृतिनो आधार छे तेवुं परिपूर्ण अवधान संभवे ते सारुं परिवर्त, नानात्व, अथवा विरोधनी आवश्यकता छे. जेम परिवर्त विशेष (पण विशेष एटले त्रास ऊपजावे तेवो आकस्मिक नहीं) तेम आनंद वधारे गाढ अने रसमय. आने लीधेज तीव्र विरोधनी आपणने विलक्षण असर थाय छे; जेमके नगरना संसर्गो करतां गामडाना संसर्गोनी, इत्यादि.

परिवर्तनो जे आ नियम तेनो बेमांथी एक प्रकारे विचार थई शके. एक तो एम मानी शकाय के कोई पण प्रकारनो आनंदजनक जे व्यापार ते, जे अवयव व्यापृत होय तेनी कोई निकृष्ट प्रवृत्तिमांथी उत्कृष्ट प्रवृत्तिरूप छे. निकृष्ट एटले चालता आनंदकरतां ओछी आनंदजनक अथवा दुःखरूप. आनुं नाम व्यापारना अंशने परिवर्तनी असर थई कहेवाय. बीजी रीते आनंदजनक व्यापारने तत्पूर्वभूत एवा तद्विसदृश व्यापारनी स्थाने आवेला व्यापाररूपे पण मानी शकाय. आनुं नाम व्यापारनी जातने परिवर्तनी असर थई कहेवाय. आ बे प्रकारना परिवर्तने नानात्व अने नूतनत्व एम नाम आपवामां आवे छे. उभयनो विचार थोडाकमां करीए.

३. व्यापारना अंशमां परिवर्त (नानात्व).—व्यापारथी आनंद एटलेज अंशे ऊपजे छे के जेटले अंशे ते व्यापार, पूर्वनी निर्व्यापारस्थितिमांथी अथवा न्यून व्यापारनी स्थितिमांथी परिवर्तरूपे होय छे. जे घणामां घणो आनंद ऊपजावनार व्यापार छे तेनी पूर्वे अवरुद्ध व्यापार अथवा बलात् प्राप्त थयलो निर्व्यापार अने तत्सहभूत व्यापाराकांक्षा, एवी स्थिति होवी जोईए. उदाहरण. थोडो वखत ताजी हवा न मळी शक्या पछी ताजी हवा मळे तेनो आपणे बहु आनंदे उपभोग करीए छीए. निरामयत्व, स्वातन्त्र्य, इत्यादिना पूर्ण सुखानुभवनो आधार, ते ते वातनो ते पूर्वे

अभाव अने तेथी तेमने माटेनी इच्छा, ते उपर रहे छे. व्यापारना निकृष्ट अंशथी उत्कृष्ट अंशे जवामां जे सुख ऊपजे छे ते, आ जे प्रकार बताव्या तेना करतां, कांइक न्यून रहे छे. शरीरबलनी वृद्धि, ज्ञाननी वृद्धि, समृद्धिनी वृद्धि, अथवा प्रतिष्ठा के यशनी वृद्धि, तेमां जे आनंदवृत्ति अनुभवाय छे ते विस्तार पामता व्यापाररूपे समजाय छे.

वळी अतिशय व्यापारनी दशामांथी साधारण व्यापारनी दशा उपर आववामां पण आनंद समजाय छे. अतिप्रचंड सूर्यप्रकाशमांथी थोडा प्रकाशमां जवाथी मनने सुख लागे छे. ज्यारे कोई कार्य आपणी शक्ति उपरांतनुं होय छे त्यारे जेनाथकी ते साधवामां सरलता थाय तेनाथकी आनंदकारक सुख ऊपजी आवे छे. विघ्न अथवा अंतराय जेमने दूर करवा बहु कष्टसाध्य प्रयत्ननी जरूर पडी होय, ते दूर थाय छे त्यारे व्यापार स्वाभाविक रीते चालवा मांडवाथी, आनंद ऊपजे छे. प्रचंड व्यापारमांथी शान्त पडवामां सर्वदा सुख लागे छे. गजा उपरांत श्रान्त थयली कोई इन्द्रियनो आराम पण सुखरूप लागे छे. व्यायाम पछी शरीरने आराम आपवो ते, तथा अभ्यास पछी मगजने शान्त पडवा देवुं ते, आनंदकारक सुखरूपे अनुभवाय छे.

४. व्यापारनी जातिमां परिवर्त (नूतनता):—कोई पण व्यापार आनंदकारक थई शके ते माटे एवुं सर्वदा आवश्यक नथी के तेनी पूर्वे इच्छानी क्लेशरूप स्थिति थयली होवी जोईए, अथवा अतिशय व्यापारथी व्यग्रता उद्भवेली होवी जोईए. व्यापारनी जातिमां योग्य फेरफार दाखल करवाथी जोईए तेटलो परिवर्त ऊपजावी शकाय छे. ए रीते मन तथा शरीरमां चालतो कोई एक आनंदजनक व्यापारनो प्रवाह, घणा समय सुधी कायम राखी शकाय छे; ते व्यापारमां प्रवृत्त इन्द्रियने क्रमे करीने व्यापार अने आराम एटले सुधी आपता जवां के अतिशय तेम

अतिन्यून व्यापारनो क्लेश पेदा थाय नहि. आ स्थाने पण परिवर्तनी आनंदना वैपुल्य उपर जे असर ते परिवर्तना वैपुल्यना प्रमाणमां रहेशे. शरीरव्यापारमांथी मनोव्यापारमां जवुं, अथवा एथी उलटुं करवुं, एक इन्द्रियना व्यापारमांथी बीजी इन्द्रियना व्यापार उपर जवुं, एक विचारश्रेणि उपरथी बीजी स्वतंत्र अने असंबद्ध विचारश्रेणि उपर जवुं, एमां आ असरनुं कार्य समजाय छे.

जेने नूतनतानो आनंद कहे छे ते पण, परिवर्त अथवा नानात्वना आ नियमनुं एक उदाहरण छे. जे नवुं, अपरिचित अथवा विरळ होय छे, ते, आपणे जोयुं छे तेम, अवधानने तेम एकंदर मनोव्यापारने, बहु बलवान् प्रोत्साहक थई पडे छे; कारण के एमां साधारण व्यापारप्रकार करतां स्पष्ट परिवर्त दीठामां आवे छे. ना'नी वयमां कोई नवो अनुभव थाय छे, जेमके कोई गाम जवुं, नाटक जोवा जवुं, जमणवारमां जवुं, इत्यादि, ते मनोव्यापारने सारो जाग्रत् करे छे, अने मनने नवा अने अपरिचित मार्गे प्रवृत्तिमान् करे छे. एटला उपरथीज आवा प्रथमानुभवोमां बहु आनंद आवे छे. ज्यां नूतनतानो आनंद संभवतो नथी, त्यां ते अनुभवनो विरलताथी पण तेटलो अथवा तेवोज आनंद ऊपजे छे. रविवारनी रजानी आशाथी ना'नां छोकराने जे आनंद थाय छे ते सुप्रसिद्ध छे. पूर्वना वृत्तान्त साथे संबंध न राखनारो एवो कोई पण अनुभव जे अकस्मात्ज आवी पडे छे तेथी पण केटलेक अंशे तेवीज असर थई आवे छे.

आनंदनो परिवर्त उपर आधार छे ए बात प्राचीन तेम अर्वाचीन लेखकोए सारी रीते मान्य करेली छे, सुखमात्र अभावरूप छे, पूर्वनी दुःखरूप स्थितिनो अभाव ते सुख छे, एवो जे प्लेटोनो वाद ते थकी पण सुखना सापेक्षत्वनी सिद्धि थाय छे. आपणां घणांक सुख, पूर्वनी दुःखरूप स्थितिना अभावरूपेज छे. छतां ए बात शंकास्पद छे के सुखनो समग्र आधार परिवर्त उपरज छे. दुःखरूप थई पडेली तीव्र इच्छा अथवा उत्कंठाने संतोष पमाडवाथी कोई पण प्रकारनो व्यापार तो ऊपजी आवे छेज.

दा. बेन केटलीक वृत्तिओ जेमके आश्चर्य, नूतनता, स्वातंत्र्य, अधिकार, तेमने लईने तेमने " सापेक्ष ऊर्मिओ " एवुं नाम आपे छे, केमके परिवर्त उपरज तेमनो आधार छे. उदाहरण. स्वातंत्र्यमां जे आनंद लागे छे ते पारतंत्र्यमांथी आनंदकारक मुक्ति थवा रूपज छे स्वातंत्र्य अने पारतंत्र्यनो विरोध मनमां आणवाथकी स्वातंत्र्यमां सुख लागे छे. अधिकार, उत्कर्ष, इत्यादि आनंदनुं पण एनुं एज जाणवुं.

आटले सुधी तो, प्रोत्साहनने लंबाववाथी तथा तेमां फेरफार करवाथी, आनंद उपर शी असर थाय छे तेटली वात संबंधेज आपणे विचार चलावता आव्या छीए. परंतु आनंदनो जेना उपर आधार छे ते आखी सामग्रीना स्वरूपने समजवा माटे, एनी एज वातोनी दुःखक्लेशादि उपर शी असर छे ते जोवुं जोईए.

दुःखकारक प्रोत्साहनने लंबाववामां आवतां, तेनी जे प्राथमिक सबल असर ते एकंदरे ओछी थाय छे. दर्दीने, शरीरगत दुःख, जो ते लांबुं चाले (अने वधतुं न होय) तो तेथी थोडी पीडा थाय छे; अने ना'ना प्रकारना क्लेश अने विक्षेपथी, लांबो परिचय पडतां, आपणने पण झाझी पीडा पडती नथी. जेने लागणीनुं बहेर मारवुं कहे छे ते पण आना आज नियमनुं दृष्टान्त छे. जे बाळकने वारंवार ठपको देवामां आवे, अथवा वारंवार उपहासविषय बनाववामां आवे, तेने दिनप्रतिदिन लागणी ओछी थती जाय छे, ए पण जाणीती वात छे. दुःखकर प्रोत्साहन वारंवार प्रयोजातां, उदासीनता के उपेक्षानी स्थिति पेदा थाय छे. आम होवाथी एम कही शकाय के अतिशय सुखनी पेठे, अतिशय दुःखमां पण अमुक प्रकारना परिवर्त, नानात्व, नूतनत्व, जोईए.

६. प्रोत्साहनने अनुकूळ थवुं:—दीर्घकाल चालतां सुखकर के दुःखकर प्रोत्साहनथी, ते ते वृत्तिनुं वैपुल्य न्यून थाय छे. ए उपरथी स्पष्ट समजाय छे के ते वृत्तिना आश्रयमां अवयव के इंद्रियमां, पण कांईक परिवर्त थतो हशेज. एक प्रकारनी व्यवस्था अथवा अनुकूळतानो व्यापार चाले छेज; तेने साधारण रीते अवयवनी प्रोत्साहनी साथे अनुकूलता कहेवाय छे; तेमां आ करतां पण कांईक अधिक छे. जे प्रोत्साहन प्रथमे स्पष्ट रीते प्रतिकूळ होय ते पण समय जतां उदासीनतावाळुं थई पडे छे एटलुंज नहीं, पण अनुकूळ अर्थात् सुखकर पण थई जाय छे, ए वातनो उक्त अधिकतामां समास छे. रसनेंद्रियने जे स्वाद पडे छे तेमां आ वात स्पष्ट जणाय छे. दारु पीवानी आतुरता, तीखा मशाला उपर प्रीति, इत्यादि तेनां उदाहरण छे. आपणे हवणांज जोईशुं तेम कोई पण अवयव अथवा शक्तिनी वृद्धिनो अर्थज ए छे के वधारे बलवान् प्रोत्साहनने ते अवयवादि अनुकूळ थाय छे, अने एम थवाथी जे प्रयास प्रथमे आयास के कष्टरूप लागतो होय छे ते आनंदजनक थई जाय छे. आ बधा प्रसंगोमां एम बने छे के नवा प्रकारना अथवा वधारे बळवाळा प्रोत्साहनने अवयव हंमेश माटे अनुकूळ थाय छे.

प्रोत्साहनने लंबाववाथी अथवा पुनःपुनः लगाडवाथी दुःखपरत्वे जे असरो थाय छे तेमांनी एक हजी रही गई छे. आपणे जोई आव्या तेम परिचित एवां आनंदजनक प्रोत्साहनमात्रनी असर घणे भागे क्षीण थाय छे. ज्यारे आपणे आपणा संसर्गोथी घणा परिचित थईए छीए, आपणा धंधा, आपणी रमतो, ए बधां जेम जेम नित्य नित्य थयां करे छे, तेम ते सर्वनी जे प्रथम वैपुल्यवाळी सुखकरता ते जती रहे छे, अने तेने स्थाने शान्त उपभोग अथवा उदासीनताज आवी जाय छे. परंतु बीजी पासा एम पण थाय छे के आवी वातो परिचित थाय छे एटलाज कारणथी मन ते ते वात उपर बहु वळगी पडे छे, एटले सुधी वळगी पडे छे के ते वातोना अभावे मनने गमतुं नथी अने तीव्र इच्छा थयां करे छे. बीजी रीते कहीए तो पुनःपुनरभ्यास अने परिचित उपयोगथकी एक प्रकारनी " अपेक्षा " पेदा थाय छे. आ रीते, कोई पण प्रोत्साह-

नना अभ्यास के दीर्घत्वथी ते प्रोत्साहनजन्य जे आनंद तेमां न्यूनता थाय छे एटलुंज नहीं, पण अभावजन्य जे दुःख अर्थात् ते ते प्रोत्साहन न होय त्यारे तेनी तीव्र अपेक्षा थाय ए दुःखनी वृद्धि थाय छे. अभावथकी दुःख थवानी जे असर अत्र बतावी तेने "टेव" अथवा "परिचय" एवा नामथी कही शकाय.

दुःखजनक प्रोत्साहनना दीर्घत्वथी पण कांईक आवाज प्रकारनी असर थाय छे. अभ्यास अने परिचयनुं फळ, दुःखजनक प्रोत्साहन विद्यमान होय त्यां सुधी लागणीने निष्ठुर अने उदासीन करी नाखवा रूप थाय छे एटलुंज नहीं, पण ज्यारे ते प्रोत्साहननो अभाव होय त्यारे जे आनंद आवे तेमां वृद्धि करवारूप पण थाय छे. जे बाळकने निष्ठुरता अने ठपकानीज टेव पडेली छे, ते मातानो बोल सांभळतां घणो हर्ष दर्शावे छे. पण आ उदाहरणमां वात वधारे गुंचवायली छे, केमके लागणीने वांरंवार टोचा मारवाथी तेनो समग्र नाश थई गयलो छे, हर्ष तेम शोक उभये परत्वे नाश थई गयो छे. जे बाळकने निरंतर निष्ठुरताथीज राखवामां आवे छे ते बीजानी वृत्ति अने रीतभात उपर अत्यंत उदासीनताज राखतां शीखे छे. एम पण कहेवाय छे के दीर्घ समय सुधीना केदखानाथी स्वातंत्र्य मळे त्यारे तेमां आनंद आवतो नथी. प्रत्येक वृत्ति, ऊर्मिरूपे उपभोगयोग्य रहे तेटला सारु, आवश्यक छे के तेने संतोषवी जोईए, अर्थात् आनंदजनक प्रोत्साहन आपवुं जोईए.

अनुकूलता अथवा परिचयनो नियम, जे अत्र समजाव्यो, ते परिवर्त, नानात्व अथवा नूतनत्वना नियममां कांईक विक्षेप ऊपजावे छे. परिवर्त छे ते सुखनी सामग्री छे पण अमुक मर्यादा सुधीज. मूळथी प्रतिकूळ एवा प्रोत्साहनने, जेटले अंशे मन अनुकूळ थई शके छे, तेटले सुधी प्रोत्साहनने लंबाववाथी सुख थशे एम कही शकाय. अने मन जेटले अंशे टेव अथवा परिचयनी असरने अधीन थाय छे तेटले अंशे परिवर्त दुःखजनक थाय छे, सुखजनक नहीं.

विशेषमां ए पण जोवानुं छे के मिश्र प्रकारनां एवां घणां एक सुख मननी थोडीक एकतानता पछीज अनुभवी शकाय छे. कोई एक देखावनी सुंदरता, कोई रागनुं स्वरूप, ते उपर मन कांईक समय रमे त्यार पछीज तेमां आनंद आवे छे. आम होवाथी

जेटला जेटला उंचा प्रकारना (बुद्धिविषयक अथवा सौंदर्यविषयक) आनंद छे तेमां परिवर्तने अमुक सीमा छे. परिवर्तनी अतिशय रुचिथी तो जे उंडा अने विशाल आनंद छे ते अशक्य थई पडे छे.

आपणा ऊर्मिमय जीवनमां परिवर्तेच्छा अने परिचितासक्ति ए उभय परस्परविरुद्ध स्वरूपवाळा नियमो छे. अनुभवनुं सामान्य स्वरूप, जे भूतकालथी चालतो आवतो परिचय तेमां विक्षेप ऊपजावे तो नवी वात पण आनंद आपती नथी. आ बे वातोनी बराबर व्यवस्था उपर सुखनो आधार रहे छे. एम पण कही शकाय के जुदां जुदां मनमां आ बेमांथी एक वृत्ति वधारे ओछी प्रबल होई शके छे. केटलांक बाळक स्वभावथीज संरंभ, नानात्व, नूतनत्वने इच्छे छे; तेमने नवां नवां माणस जोवामां, नवां नवां स्थान जोवामां, आनंद आवे छे. केटलांक बाळक दृढताथकी प्राचीन अने परिचित वस्तुओनेज वळगी रहे छे.

व्यापारनो परस्परोपकार अने परस्पर बाध. सुखदुःखनो एक वधारे उपनियम बतावबो रही गयो छे. आटले सुधी कोई पण इंद्रिय अवयवादिना व्यापार विषे आपणे कह्युं तेमां ते व्यापार, अन्यनिरपेक्ष स्वतंत्र होय एम मान्युं छे. पण एम होतुं नथी. जुदा जुदा अवयवो जेवाके मगज, इंद्रियो, स्नायु, इत्यादि तेमने एक एक साथे निकट संबंध छे. आम होवाथी एमांना कोई एकनुं प्रोत्साहन परंपरित तेम साक्षात् उत्तम प्रकारनी असरो विस्तारे छे. उदाहरण. सुंदर रागथी श्रोत्रनुं प्रोत्साहन थतां श्रोत्रेंद्रियनुं प्रोत्साहन थई शब्दप्रत्यक्षना सुखनो उद्भव थाय छे एटलुंज नहीं, पण बीजां घणांक स्थानोनुं पण साथेज प्रोत्साहन थाय छे अने भावनारूप अथवा साहचर्यबोधित अनेक सुखनो उदय थाय छे. आटलुंज नथी, पण ऊर्मिमात्रना सह-

भूत शरीगत फेरफार संबंधे आगळ कह्युं छे तेम, प्रत्येक सुखकर के दुःखकर मनोव्यापारनी साथे जीवननिर्वाहक अवयवो अने इच्छाधीन स्नायुओ उपर पण असर जणाय छे.

भिन्न भिन्न तंतुओ अने अवयवोना आवा निकट संबंध उपरथी एम फलित थाय छे के एकनी स्थितिथी अन्यनी स्थिति उपर असर थया विना रहेती नथी. पाचन अने रुधिरक्रमणनो जे जीवननिर्वाहक व्यापार ते बराबर चाले छे त्यारे मगजनो व्यापार तेज रहे छे, विचार अंतराय विना स्फुर्यां जाय छे, अने मनने आनंद लागे छे. एथी उलटी रीते ज्यारे सुखकर विचारोथी मन प्रफुल्ल होय छे त्यारे शरीरना अंतर्व्यापार सारा चाले छे. बीजी पासा एम जणाय छे के कोई पण अवयवने वधारे जोर पहोचाडवाथी अथवा अटकाववाथी, ते अवयवमां दुःख थाय छे एटलुंज नहीं, पण बीजा अवयवोनी सुखकर प्रवृत्तिमां विरोध पडे छे. आनुं जोवा जेवुं उदाहरण अति दुःखकर ऊर्मि जेवीके भय, त्रास, इत्यादि, तेमज बहु विप्लावक शोक, तेनी असर छे ते छे. आ महादुःखकर मनोव्यापारथी मगजनी शक्ति दुर्बल थाय छे एटलुंज नहीं पण अंतर्व्यापार करनार अवयवो तेम स्नायु पण क्षीण गतिवाळा थता समजाय छे.

एकंदरे कोई एक अवयवनी सुखमय स्थिति बीजा सर्व अवयवनी तेवी स्थिति राखे छे. शरीर एवुं परस्परानुस्यूत विभागनुं बनेलुं छे के तेमां प्रत्येकना सुखदुःखथी सर्वने सुखदुःख थाय छे. परंतु आवा सामान्य नियममां थोडाक अपवाद पण छे. घणुं उग्र मानसिक प्रोत्साहन अति आनंद ऊपजावे, पण तेनी पाछळ असरो दुःखकर थई आवे. बहु तोफान अने दोडधामथी प्राप्त करेलो आनंद थाक च'डावी दे छे. हर्षनो पण अतिशय बळवाळो धक्को, एक मो'टा झपाटा जेवी हानि करे छे. आथी उलटी रीते कोई प्रोत्साहननुं साक्षात् फळ कांईक दुःखकर वृत्तिरूपे जणाय तथापि परंपराए तेमांथी सुखकर वृत्ति ऊपजी आवे छे. अप्रिय एवो कोई

आचको (जेमके अति तीव्र शब्द, ठाडा पाणीमां पडवुं, इत्यादि), पडी रहेला वेगने जाग्रत् करी सुख ऊपजावी शके छे.

दा. बेन एम माने छे के प्रोत्साहननी जे परंपरित असरो, एटले के जीवननिर्वाहक व्यापार उपर असरो, तेमने सुख साथे संबंध छे. तेना मत प्रमाणे सुखनो जीवननिर्वाहक व्यापारना उत्कर्ष साथे संबंध छे, दुःखनो ते व्यापारना न्यून थवा साथे संबंध छे. मी. हर्बर्ट स्पेन्सर एम माने छे के कोई पण अवयव तथा इन्द्रियनो सुखप्रद व्यापार, एकंदरे, शरीरने लाभकारक अथवा शरीर अने जीवनने साचवनार एवुं जे कांई होय, ते साथे संबंध राखे छे.

६. मानसिक स्थितिनी अनुकूलताप्रतिकूलता:— भिन्न भिन्न प्रकारना मनोव्यापार एकी वखते थई आवे छे त्यारे, शरीरव्यापार अने मनोव्यापारनी जे परस्पर अनुकूलताप्रतिकूलता अत्र कही, तेवुंज कांईक थई आवे छे. शरीर जेम अनेक विभागनी एकतारूप समूह छे तेम, अथवा तेथी पण अधिक, मन पण एवीज एकतारूपे छे. कोई क्षणे थता सर्व मनोव्यापारमांथी जे जे स्थितिओ उद्भवे तेमांनी घणीज थोडी सुविज्ञात चेतनप्रदेशमां आविर्भाव पामे छे. आपणे जोई आव्या छीए तेम स्पष्ट भान ते तो क्रमे क्रमे योजायली मनोव्यापारनी एकज श्रेणिरूप होय छे. आम छे एटले एकी वखते मन बे विरुद्ध स्थितिमां होई शकतुं नथी. त्यारे जे समये मन उपर बे विरुद्ध असरोनुं बळ चाले ते समये परस्परविरोधनी असर ऊपजी आवे छे, अने तेने अनुषंगे दुःखरूप विरोधवृत्तिनो अनुभव थाय छे. आथी उलटी रीते, एकज कालावच्छिन्न एवा बे सुखप्रद व्यापारना प्रकार परस्परानुकूल होई मिश्र थई शके तेवा होय, तो व्यापार परस्पर विवृद्धि पामे छे, अने तेने अनुषंगे अनुकूलतानी वृत्तिनो आनंदप्रद अनुभव थाय छे.

विरोध, आपणां वळण अने इच्छा तथा बाह्य संसर्ग तेमना विरो-

धना भानमांथी, अथवा आपणा व्यापारने कोई अंतराय होय तेना भानथी थई आवे छे. ओरडीमां पूरी राखेला बाळकने विरोधवृत्ति-नो अनुभव, तेनां वळण, इच्छा, अने रमतमां स्थानादिनी पुनःपुनः ऊठी आवती कल्पनाओ, इत्यादि, जे बाह्य संसर्ग (बंध बारणां, भींतो, इत्यादी) तेनी वच्चेना विरोधने लीधे, थई आवे छे. कोई आशामां निराश थवुं एनुं तात्पर्य पण एज छे के आशा अने वस्तु-स्थिति वच्चे विरोध आव्यो छे. आथी उलटी रीते ज्यां संसर्गो इच्छाने अनुकूळ होय छे, आशा सफल थती चाले छे, इत्यादि अनुभवाय छे, त्यां आनंदप्रद एवी अनुकूलतानी वृत्तिनो अनुभव थाय छे.

सामान्य रीते प्रतिकूलतानी वृत्तिनो जे अर्थ छे तेनो अनुभव, बे अथवा वधारे मनोव्यापारप्रकार परस्परना प्रदेशने अवरोधे छे अने एम परस्परने विरोधी थाय छे त्यारे थई आवे छे. विक्षेप ए आनुं उदाहरण छे. आपणी आसपास घणाक माणस भेगा थई वातो करता होय छे, त्यारे अवधान आम तेम खेंचायां करे छे, अने दुःखकर अथवा अप्रिय एवी अव्यवस्थानी वृत्ति अनुभवाय छे. बीजी पासा जोईए तो ज्यारे एककालावच्छिन्न थता संस्कार परस्परसंवद्ध होय छे त्यारे अनुकूलतानी वृत्ति अनुभवाय छे. विरोध अने अनुकूलतानां बीजां उदा-हरण शंका तथा तेनुं समाधान ए बे छे. प्रतिज्ञाए प्रतिज्ञा अथवा प्रतिज्ञा अने वस्तुस्थिति तेना विरोध अथवा आनुरुप्यनी वृत्ति ए पण उदा-हरण छे. वेग अने हेतुनो विरोध त्यां थाय छे के ज्यां वेग आपणने एकज वखते भिन्न भिन्न दिशाए आकर्षे छे, अथवा ज्यां वेग अने कर्तव्यतानो विरोध होय छे; अने अनुकूलता त्यां थाय छे के ज्यां कर्तव्यतानी दिशामांज अनेक वेगनुं पण आकर्षण वळेलुं होय छे. छेलुं उदाहरण ए पण आपी शकाय के माणसोनी आपणा प्रति अनुकंपा के उदासीनता, आपणां

कार्यनी अनुमति के विमति. बुद्धिगत विरोधवृत्तिना अनुभव जेवोज, उदासीनताथी अने विमतिथी, क्लेषकर एवी भेद अथवा विरोधवृत्ति-नो उदय थाय छे; अने अनुकंपा तथा अनुमतिथी एकता अने अनुकूलतानुं भान अनुभवाय छे.

अनुकूलताप्रतिकूलता अथवा एकता अने विरोधनो जे नियम एक अथवा बीजेरूपे सर्व चेतनशास्त्रीओए स्वीकार्यो छे ते, जे लेखको वृत्तिने भावनाओमां वर्ततां अवरोध अनुकलनादि साथे संयोजे छे, तेमना मतानुसार, सुखदुःखना मुख्य नियमरूप थई पडे छे.

ए नियम आपणा ऊर्मिमय जीवनमां बहु रीते लागु थाय छे. आपणी वृत्तिओ-मांनी घणी एक बहु मिश्र होय छे, सुखनां के दुःखनां के उभयनां घणांक तत्त्वनी ते बनेली रहे छे. गौणभावे रहेलुं विरोधनुं तत्त्व, सुख ने दुःखथकी जुदुं पाडी आपवामां सहाय थवा रूपे, कोई सुखना वैपुल्यमां बहु वृद्धि करी शके छे. साधारण रीते जे वृत्तिथकी आपणे भावि एवा कोई अनिश्चित सुख उपर दृष्टि करीए छीए, अने गत एवा कोई सुखनो विचार करीए छीए, तेने आ नियम सारो लागु पडे छे. करुणरसप्रधाननाटक जोवा के वाचवामां जे वृत्ति थाय छे तेने पण ए नियम लागु थाय छे. उपहास अने भव्यतानी ऊर्मिओमां आपणने कोई क्लेषकारक अने विसदृश तत्त्वनुं भान थाय छे, पण तेने चेतनामां प्रत्यक्ष थतां, बीजी विपुल भावनाओ ऊटकाव करे छे.

७. सुखदुःखना प्रकारः वृत्तिना वर्गः—सुख अने दुःखना बे मो'टा विभाग थाय छे, ए तो आपणे जोयुं छेः (१) तंतुगत प्रोत्सा-हन, एटले के सविशेषे संवाहक तंतुओना प्रोत्साहनथी थतां सुखदुःख अने (२) कोई प्रकारना मनोव्यापारने आधीन सुखदुःख. प्रथम प्रकार जेने प्राकृत लोक शरीरनी लागणीओ कहे छे, तेमने ऐन्द्रिय वृत्तिओ अथवा वृत्तिओ कहेवाय, केमके तेमां जे व्यापार चाले छे तेनो प्रदेश शरीरना बाह्य भाग उपर होय छे. बीजा प्रकारनां जे सुखदुःख तेने केन्द्रस्थानीय तंतुव्यापार (मगजना) साथे संबंध होवाथी तेमने के-न्द्रवृत्तिओ अथवा ऊर्मिओ कहेवाय.

(१) ऐन्द्रियवृत्तिओ अथवा वृत्तिओः––आ प्रत्येक वर्गना बीजा घणा उपवर्ग करी शकाय तेम छे. शरीरना कोईक भागमां परिवर्त अथवा विक्षोभ थवाथी वृत्तिओ उद्भवे. आवी वृत्तिओ शारीरवृत्तिओ कहेवाय, जेवीके क्षुधा, तृषा, त्वचानी उष्मामां वृद्धिह्रासनी वृत्ति इत्यादि. जे प्रत्यक्षोनी आ वृत्तिओ आनुषंगिक छे ते पोतेज घणे भागे स्वरूप अने स्थानपरत्वे विवेची शकातां नथी ए आपणे आगळ कही आव्या छीए, तो वृत्तिओनां भिन्न भिन्न तत्त्वोने एकएकथी विवेची पृथक् करवां ए वात सहज नज होय.

वृत्तिओना बीजा उपवर्गमां विशिष्ट इन्द्रियोना प्रोत्साहन साथे जे सुखदुःखनो संबंध छे तेनो समास थाय छे. आमां, स्नायु प्रत्यक्ष, गतिनो आनंद, प्रवितत प्रयासनो क्लेष, इत्यादि पण ऊमेरवां जोईए. शारीरवृत्तिओ करतां आ वृत्तिओ वधारे स्पष्ट करी शकाय तेवी छे, एटले तेमने स्थानपरत्वे पण नियत करी शकाय छे.

एटली वात लक्षमां लेवा जेवी छे के शारीरप्रत्यक्षोमां दुःखमयी वृत्तिनुं सुखमयी वृत्ति करतां वधारे प्राधान्य छे. रुधिरक्रमण, पाचन इत्यादि व्यापारना यथायोग्य निर्वाहथी, कांई सुख समजातुं नथी. बीजी पासा जे विशेष इन्द्रियनां प्रत्यक्ष छे तेमां तो सुखमय तत्त्वनुं प्राधान्य छे; अने जे उत्तम इन्द्रियो छे ते परत्वे तो ते तत्त्व तद्विरोधी तत्त्व करतां अधिक रहे छे.

वृत्तिना वर्ग विषे हवे बे शब्दो कहीने बंध करवा जेवुं छे. आपणा सुखदुःख परत्वे ते घणी उपयोगी छे. विशेषे करी ऊर्मिओना प्रबोध पूर्वेना बाल्यजीवनमां, जे वृत्तिथी जीवन अनुभवाय छे तेनो मुख्य भाग आ वृत्तिओनोज बनेलो रहे छे. अपचो, शीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा, इत्यादिनां जे दुःख तेज बाळकनां मुख्य दुःख होय छे; तेमज क्षुधा तृषा

संतोषवानो आनंद, उष्ण शीतनो आनंद, ए आदि आनंदज तेना मुख्य आनंद होय छे.

एटलुं वधारामां कहेवानुं छे के शरीर अने मन वच्चेना निकट संबंधने लीधे शारीरवृत्तिओनी ऊर्मि उपर घणी असर पहोचे छे. शरीरने कोई दुःखकर स्थितिमां राखवुं पडे ते, पहेरेलां लुगडां कहींक वधारे दबाण करतां होय ते, कोई अवयव पीडा पामतो होय ते, इत्यादि मनशक्तिने खिन्न करी दे छे, प्रकृतिमां चीडीआपणुं ऊपजावे छे, कशुं गमे नहीं ने रीस आव्यां जाय तेवी स्थिति लावे छे, अने क्रोधनो आविर्भाव करावे छे. आथी उलटी रीते शरीरनी सुखरूप स्थितिथी प्रसन्नता रहे छे, मन सुखमय आशामां रमे छे. यथार्थ रीते नहीं समजायली एवी शारीरवृत्तिमात्रनो कोई एक समये जे सरवाळो नीकळे ते उपरज एकंदरे "सारुं छे" अथवा "गमे छे" अने "सारुं नथी" अथवा "नथी गमतुं" एवी जे स्थितिने मननी प्रसन्नता के खिन्नता ऊपजाववा साथे संबंध छे, तेनो आधार रहे छे.

छेवट समग्र वृत्तिओ (ऐन्द्रियवृत्तिओ)मांथीज, ऊर्मिओनो विकास थई आवे एवां तत्त्व मळी शके छे एम समजाशे. उदाहरण–क्रोध अने भयनी उत्पत्ति कोई शारीरदुःखनी मानसिक भावनामांथी थाय छे (जेमके प्रहार अथवा बळवानी असर); प्रेम जेवी अति उत्तमोत्तम ऊर्मिनुं निदान पण बाळकना मनमां रहेली अनेक शारीरसुखनी स्मृतिओ (जेवीके क्षुधातृषा निवृत्त कर्यानी, शीतोष्णथी साचव्यानी इत्यादि) मां होई शके छे. उत्तम इंद्रियोना आनंद वृद्धि पामीने सौंदर्यनी ऊर्मिरूपे वर्तीय छे.

(२) ऊर्मिओ अने तेमना वर्गः––मानसिक वृत्तिओ अथवा ऊर्मिओना स्वाभिमान, प्रेम इत्यादि रूपे सुखकारक तेम तद्विरुद्ध दुःख-

कारक एवा विभाग पडी शके छे. चेतनशास्त्रनो एवो उद्देश छे के साधारण रीते मान्य थयला आ विभागोमां जे तात्त्विक साधर्म्य वैधर्म्य होय ते शोधी काढी तेमना यथास्थित वर्ग बांधवा. अद्यापि पर्यंत कोई प्रकारनुं संतोषकारक वर्गीकरण थयुं नथी. एटले आपणे केटलाक स्पष्ट रीते जाणीता प्रकारोने लई, तेमने कोई एक नियमानुसार वर्गरूपे योजी, संतोष मानवो जोईए.

एक श्रेणि अथवा चढता ऊतरता क्रमरूपे तेमने, तेमना गुंफित के शुद्धस्वभावानुसार एटले के भावनानो तेमनामां केटलो भाग छे ए निश्चयानुसार, गोठववा ए रीति वधारे ठीक लागे छे. गुंफित तत्त्वने लीधे जे भेद पडे छे ते स्पष्ट रीते जोवो होय तो आपणे भय अने नीतिभावनानो विचार करी जोवो. ज्यां पृथक्करण करीने आवो निश्चय न थई शके एम होय, त्यां व्यक्तिना जीवनमां जे क्रमे ते ते वृत्तिनो उद्भव थयो होय ते अनुसार विभाग करी शकाशे. त्यारे, बनी शके त्यां सुधी जेमां भावनानुं तत्त्व थोडुं छे एवी भय, क्रोध, प्राथमिक प्रेम, इत्यादि ऊर्मिओ विषे आपणे प्रथम विचार करीशुं, अने ते पछी जेमां भावनानुं तत्त्व अधिक छे एवी अनुकंपा, नीतिभावना इत्यादि ऊर्मिओने लेईशुं.

ऊर्मिओना वर्ग पाडवामां विक्षेपः—ऊर्मिओनुं सशास्त्र वर्गीकरण ऊपजाववामां घणी अडचणो छे. अविज्ञात एवा भावनासमूह साथे ऊर्मिने जे निकट संबंध छे तेथी, ऊर्मिना स्वभावथीज, आवुं वर्गीकरण कठिन थई पडे छे. प्राकृत लोक जे मानसशास्त्र माने छे ते अनुसार तो प्रेम क्रोध, इत्यादि विभागो सुप्रसिद्ध छे, परंतु ए विभाग परस्परना प्रदेशमां आक्रमण करे छे अने गुंचवण ऊपजावे छे. यद्यपि भय छे ते मान करतां भिन्न ऊर्मि छे तथापि भयनो कांईक भास मानमां नथी होतो एम नथी.

वळी कोई सरल विभाजकधर्म पण हाथ लागतो नथी. देखीतो नियम तो सुख अने दुःखना भेदमांथी ऊपजी आवे छे ते छे. पण आटलानेज विभाजकधर्म मानी वर्गो पाडवा जतां तो स्वाभिमान, प्रेम इत्यादि आपेक्षिक सुख दुःख वच्चे जे घणां अगत्यनां सादृश्य छे तेनी उपेक्षा थवानो संभव रहे छे.

ऊर्मिओना विभाग प्रत्येक ऊर्ममां जेटलो बुद्धिव्यापार थतो होय, जेटलुं भावनानुं तत्त्व होय, तेने आधारे पण करी शकाय. प्रत्यक्ष, दर्शन, कल्पना विचार ए आदि प्रत्येकने अधीन केटलीक ऊर्मिओ थवी जोईए, एम आ नियमानुसार प्राप्त थाय छे. मि. स्पेन्सरे एज नियम राखेलो छे. तेणे वृत्तिओना विभाग आ प्रकारे कर्या छे:—(१) प्रत्यक्षमय (एटले खरेखरी ऐन्द्रिय वृत्तिओ); (२) प्रत्यक्षयुक्त भावनामय (एटले प्रत्यक्ष तेम पुनरुज्जीवन पामेली ऐन्द्रियवृत्तिओ); (३) भावनामय (एटले पुनरुज्जीवन पामेली ऐन्द्रियवृत्तिओ); अने (४) भावमय (पण वधारे भावरूप भावना—जेवीके न्याय इत्यादिनी—ते जेमां मुख्य होय तेवी वृत्तिओ), परंतु आ विभाग पण ऊर्मिओनी जातिने अनुसारे होय एम लागतुं नथी केमके उदाहरणरूपे जोईए तो एक सौंदर्यनी ऊर्मिज २-३-४ त्रणे विभागमां आवी शके एवी छे.

ऊर्मिओने तेमना गुंफितत्वने अनुसारे वर्गमां गोठववा यत्न करीए तोपण अडचणो नडे छे. आपणे एम मानी शकीशुं के ऊर्ममात्र ऐन्द्रियवृत्तिनुं विशेष विकसित रूप छे? आम मानवुं ए तो बहु शंकावाळुं छे. आश्चर्य, निराशा इत्यादि जेवी केटलीक वृत्तिओनो आधार, संस्कार अने ते संस्कार उपर अवहित मननो ते संस्कार सामेना प्रत्याघातनी उपर, अथवा एककालावच्छिन्न के क्रमे क्रमे थती मानसिक स्थितिना संबंध उपर, रहे छे. बीजी रीते कहीए तो, मनोव्यापारना आकारमांथीज सुख के दुःखनुं तत्त्व ऊपजी आवे छे. वळी ऊर्मिओ एक एक साथे बहु गूढ रीते मिश्र थई जाय छे एने लीधे पण गुंफितत्वानुसारे तेमना वर्ग पाडवा कठिन पडे छे. छेवट एवी पण अडचण नडे छे के बधी नहीं तो घणीक ऊर्मिओ केटलेक अंशे साहजिक होय छे. परंपरागत अनुभवनां मिश्र फळ आ साहजिक तत्वमां घणी वार दीठामां आवे छे. आम होवाथी गुंफितत्वनां जुदां जुदां तत्व अने तेनां प्रमाणनुं माप करवुं अशक्य थई पडे छे.

आ बधा विवेचनमांथी एम फलित थाय छे के तेमना गुंफितत्वानुसार ऊर्मिओनुं संतोषकारक वर्गीकरण अशक्य छे. जे घणामां घणुं थई शके छे ते एटलुंज के, पृथक्करणथी थई शके तेटले सुधी, एकंदर नाममात्रनी गणना करी जवी, अने व्यष्टि तेम समष्टिमां ते ते ऊर्मिनो उद्भव जे क्रमथी थतो समजाय ते क्रमानुसार आ वर्गीकरणमां सुधारो वधारो करता जवो.

८. ऊर्मिनो विकासः—बुद्धिशक्तिओना संबंधे विकासना जे नियमो आपणे नक्की कर्या छे तेना तेज ऊर्मिओने पण लागु पडे छे. अभ्यासथी करीने, वृत्तिओ

वधारे गाढ अने दृढ थाय छे, एटले के सादा तथा थोडी भावनावाळा स्वरूपमांथी वृत्तिओ मिश्र तथा वधारे भावनावाळा स्वरूप उपर जती चाले छे. प्रथमे आपणे, जेटले अंशे ए नियम सर्वत्र तेनो तेज रहे छे तेटले अंशे, एक एक ऊर्मिनो विचार चलावीशुं. जुदी जुदी ऊर्मिओ जे क्रमथी विकसती चाले छे ते क्रमनो जेवो तेवो विचार करवानो प्रयत्न आपणे ते पछी करीशुं.

ऊर्मिनी वृद्धिः— (१) साहजिक अने परंपरित तत्त्व, ए वात अधुना सर्व साधारण रीते मान्य थई छे के व्यष्टिना अनुभवना फलरूपे, एटले के ऐन्द्रिय वृत्तिओना फलरूपे, ऊर्मिओने परिपूर्ण रीते समजावी शकाय तेम नथी. भय, क्रोध, प्रेम एवी वृत्तिओने स्पष्ट वर्गानुकूल, जुदी जुदी ऊर्मि माटेनी साहजिक योग्यता होय छे. आ भयक्रोधादि ऊर्मिओ ज्यारे योग्य संसर्ग ऊपजी आवे छे त्यारे अवश्य पेदा थाय छे, अने ते पण बहु नानी वयमांज जणाय छे. उदाहरण—ज्यारे तेने चीडववामां के पीडा करवामां आवे त्यारे केटलांक बाळकनामां क्रोधनी ऊर्मि दर्शाववानी साहजिक प्रकृति होय छे. नीतिभावना जेवी केटलीक वृत्तिओ जे घणे भागे व्यष्टिना अनुभवना फलरूपे कही शकाय तेमां पण साहजिक तत्त्वनो कांईक भाग होवानो संभव लागे छे.

अमुक प्रकारनी ऊर्मि माटेनी आ साहजिक योग्यता सर्वत्र समान होती नथी. एम मालुम पडे छे के सरखाज संसर्ग अने अनुभव जुदी जुदी व्यक्तिमां सरखाज वैपुल्यवाळी ऊर्मि ऊपजावता नथी; अने आ उपरथी जणाय छे के बाळको जुदी जुदी वृत्ति पामवा परत्वे बहु असमान साहजिक योग्यतावाळां होय छे. साहजिक रीते आवेली आवी योग्यतानो एकंदर सरवाळो तेज कोईनी पण ऊर्मिप्रकृतिनुं माप बतावे छे. मगज तथा तंतुचक्रना बंधारण अने व्यापारप्रकार साथे, तथा वृत्तिओना बाह्य आविर्भावमां जे स्नायु अने जीवननिर्वाहक अवयवोनो संबंध छे तेनी साथे, आ प्रकृतिने संबंध छे ए तो निर्विवादज छे.

एम मानवाने सबल कारण छे के साहजिक एवी जे आ ऊर्मियोग्यता तेने परंपरित अनुभव साथे संबंध छे. नाना प्रकारनी ऊर्मिशक्तिओनां बीज बाळकनी प्रकृतिमां होय छे एटलुंज नहीं, पण ते ते ऊर्मिनो उद्बोध पण अमुक अमुक प्रोत्साहन अथवा पदार्थथीज थाय छे. आ उपरथी एम जणाय छे के परंपरित साहचर्यनुं पण तत्त्व आ विषयमां विद्यमान छे, ने ते तंतुचक्रमां कोई प्रकारे रहे छे. थोडांकज अठवाडीयांनुं बाळक होय छे तो पण मातानुं वदन जोतां हसवा लागे छे. आ ऊपरथी जणाय छे के अमुक पदार्थ—मनुष्यवदन—जोतां अमुक आनंद ऊपजी आवे एवी परंपरित योग्यता बाळकनामां आवेली होय छे. बाळकने मातानां वदनथी जे आनंद थाय छे तेनो खुलासो एम थई शके के समष्टिना भूतविकासक्रममां साहचर्य अने प्रेमना जे आनंदजनक अनंत अनुभव तेनुं कांईक स्मरण बाळकने थाय छे. वळी ए वात पण संभवित लागे छे के बाळकने अजाण्या माणस अने अमुक जनावरनी भीति लागे. आनो पण खुलासो एम थई शके के समष्टिना भूत अनुभवमां जे हानि अने भयनुं अजाण्यां माणस अने अमुक जनावरोना दर्शन साथे साहचर्य स्थपाई गयलुं तेनीज परंपरित असरनुं आ फळ छे. कोई कोई लोकोमां, अने कोई कोई कुटुंबोमां, कोई सविशेष ऊर्मियोग्यता परंपराथकी जणाय छे ते उपरथी पण, ऊर्मि उपर परंपराना अमुक नियमोनी केवी असर छे ते स्पष्ट जणाय छे.

(२) **अभ्यास अने अनुभवनी असरः**—बीजी वात ए छे के विकसित रूप पामेली ऊर्मिमात्र पोतानी पूर्वे व्यक्तिनुं पोतानुं प्राप्त करेलुं कांईक, अनुभव, इत्यादि तेनी अपेक्षा करे छे. साहजिक शक्तिना पुनः-पुनरुपयोगथीज वृत्तिओ, बुद्धिव्यापारनी पेठे, पूर्णताने पहोंचे छे. आ वात नाना प्रकारे सिद्ध थाय छे.

(क) **आनुकूल्यः व्यापारनुं सबल थवुं:**—कोई पण प्रकारना व्यापारने अनुषंगे आनंद उद्भवे छे एटले शरीर अने मननी नाना प्रकारनी शक्तिओनुं सामर्थ्य वधे तेम आनंद माटेनी योग्यतामां पण वधारो थायज एम कही आ चर्चानें आपणे आरंभीए. जे लौकिक* सुखनो संभव इन्द्रियो अने स्नायुना व्यापारनी साथे छे तेमने आ नियम लागु पडे छे. जेम जेम ते इंद्रियो अने स्नायुओ बलवान् थाय छे तेम तेम तेमना अधिक थयला व्यापारथी अधिक आनंद आवे छे, अथवा एम बने छे के आनंदजनक व्यापारनी कोई अधिक, उच्चतर, पंक्तिए पहोची शकाय छे. आज रीते मनोव्यापारना प्रदेशने विलोकतां जणाय छे के बुद्धिशक्ति, प्रोत्साहनना बळने अनुकूल थई जाय छे, अथवा ते शक्तिथकी जेटलुं कार्य ऊपजावबुं होय तेनें ते अनुकूळ थई रहे छे. जे कहेवामां आवे ते उपर सावधान लक्ष आपवुं, कल्पना अने विचार ए शक्तिनो व्यापार करवो, ए बधी वात, पुनःपुनरभ्यासथी, सरल अने सुखप्रद लागे छे, प्रथमनी पेठे कठिन के क्लेशकारक लागती नथी.

(ख) **ऊर्मिजन्य संस्कार अने प्रकृतिः**—सुख अथवा आनंद अने दुःख अथवा क्लेश तेनो जे जे अनुभव थाय छे ते ते अनुभव पोतानो संस्कार पोताना आश्रयरूप मन उपर मूकतो जाय छे. जेमके, अवधाननी शक्तिना प्रत्येक व्यापारथी मन उपर संस्कार पडे छे अने मन, भविष्यमां तेज मार्गे वळवानी प्रकृति गृहे छे; जेमके कोई पण वृत्तिनी परितृप्तिथी कांईक संस्कार रही जाय छे, अने हवे पछी तेज प्रकारनो मार्ग ते वृत्ति ले एवी तेनी प्रकृति थवा मांडे छे.

ऊर्मिप्रवणतानी तीव्रता.—ऊर्मिना आ रीते जे संस्कार रहे छे तेनी

* इन्द्रियग्राह्य.

एक असर तो ए थाय छे के कोई पण ऊर्मि माटेनी प्रवणता प्राप्त थया पछी ते प्रवणतानो जेम जेम उपयोग थतो चाले छे तेम तेम ते ऊर्मि ऊपजाववाने प्रोत्साहननी अपेक्षा न्यून न्यून थती जाय छे. बाळकने क्रोध अथवा द्वेषनी वृत्ति दर्शाववानी प्रवणता कोई एक वातपरत्वे थाय छे एटले पछी ते ते वृत्तिना आविर्भावमां तेने कठिनता रहेती नथी. हास्योत्पादक, भव्य, सुंदर, इत्यादि पदार्थोना दर्शनथी मनने ते ते वृत्तिनी प्रवणता थई जतां, तेवाने तेवाज प्रोत्साहथी तेतें वृत्ति दर्शाववामां मनने बहु सरलता पडे छे.

वृत्तिओनुं गाढ थवुं.—ऊर्मिना संस्कारो आ प्रकारे रहे छे तेनी बीजी असर एवी थाय छे के प्रत्येक वृत्ति पुनःपुनरभ्यास थतां वधारे गाढ थती जाय छे. पोतानी जातनीज जे वृत्तिनो पूर्वे अनुभव थयो होय तेना संस्कार आ नवी वृत्तिमां मिश्र थाय छे; अथवा नवी वृत्ति तेवा तेवा संस्कारने उद्बोधे छे. कोई एक उदाहरण तपासीए तो क्रोध अथवा उपकारनी वृत्ति आ प्रकारेज गाढ थाय छे. विद्यमान एवी पीडाने अनुषंगे ऊपजतुं दुःख, विद्यमान एवा प्रसादने अनुषंगे ऊपजतुं सुख, ते पोतपोताना सजातीय संस्कारने उद्बोधी सबल थतुं जाय छे. जेम प्रत्यक्षजन्य संस्कार, पूर्वना सदृश संस्कारोनुं पोतामां मिश्रण थवाथी वधारे स्पष्ट थाय छे, तेमज वृत्ति पण पूर्वना स्वसदृश संस्कारोना मिश्रणथी वधारे गाढ थाय छे.

ऊर्मिनो पुनरुद्भवः—ऊर्मिना संस्कार रहेवामांथी जे त्रीजी असर थाय छे तेने पुनरुद्भूत ऊर्मि, अथवा भावनारूप वृत्ति कहेवाय छे— भय, क्रोध, इत्यादिनो सिद्ध अनुभव थया पछी, भावनाशक्ति थोडी घणी विकसित थतां, बाळकने ते ते वृत्तिनी भावना करी कल्पना करतां आवडे छे. क्रोधना कोई आवेगनुं ते स्मरण करी शके छे, अथवा कार-

णोनी नवीज कल्पना ऊठावी पोते क्रोध दर्शावी शके छे, अने ज्यारे सामा माणसने क्रोधनी वृत्ति अनुभवतो जुवे छे त्यारे तेनो बराबर भाव समजी शके छे. आ स्थाने पण इंद्रियजन्य संस्कारोनी एकत्रित असर जेवी थाय छे तेवीज असर आपणे देखीए छीए. इंद्रियजन्य संस्कारोना एकत्र थवाथी कल्पनाचित्र संभवे छे, तेमज साक्षात् अनुभवेली वृत्तिओना संस्कारना एकत्र थवामांथी उत्तम भावनाओनो उद्भव थाय छे.

(ग) **वृत्तिओनुं साहचर्य**:— सान्निध्यना नियमथी आ पुनरुद्भव अथवा भावना संभवे छे. जे संस्कार, पदार्थ, अथवा प्रसंगने अनुषंगे सुख अथवा दुःखनी वृत्ति थई आवी होय, ते संस्कारादिनो पुनः अनुभव थतां पूर्वना जेवी ने जेवी वृत्ति मनमां आवे छे. सुंवाळा रेशमना लुगडाने जोतां, मृदु स्पर्शना जे संस्कार मनमां होय ते जाग्रत् थाय छे, अने तेमने अनुषंगे जे सुखवृत्तिनो अनुभव थयलो ते स्मरावे छे. जेणे कांई उपकार कर्यो होय तेनी विद्यमानताथी आपणने, तेना उपकारनुं स्मरण थतां, आनंद आवे छे.

पुनरुज्जीवित वृत्तिमात्रनो आधार कोई ने कोई प्रकारना प्रत्यक्षनी साथेना साहचर्य उपर होय छे. वृत्तिओने पुनः स्मरवी एनो अर्थज एटलो छे के जे संस्कारना अनुषंगे ते वृत्तिओ ऊपजेली तेमने आपणे स्मरी शकीए. आथी वधारे आपणुं सामर्थ्य पण नथी.* कोईने माटे प्रेम अथवा आपणा देश उपर प्रेम, ए आदि वृत्तिओनी वृद्धिनुं तत्त्वज ए छे के ते ते वृत्तिनुं पुनरुज्जीवन करवानी शक्ति पण वृद्धि पामी छे. पुनरुज्जीवन तत्काल सिद्ध थई शके तेनो आधार, प्रत्यक्षो उपर रहे छे. ते-

* आ संबंधे मतभेद छे. वृत्तिना उद्भवमां सर्वदा प्रत्यक्षनो भाग रहेतो नथी. **वोकमेन** कहे छे के वास्तविक रीते जोतां वृत्तिनो पुनरुद्भव एवुं कांई छेज नहीं, वृत्तिनो तो सर्वदा नवो नवो अने अपूर्व पण उद्भव छे.

मज, मूल वृत्तिनी गाढता उपर, अमुक प्रत्यक्ष साथेना साहचर्यनी दृढता उपर, अने छेवट साहचर्योना नानात्व अथवा मर्यादा उपर, रहे छे. ऊर्मिप्रधान प्रकृतिबाळुं बाळक प्रत्यक्ष अने वृत्तिनां अनेकानेक दृढ साहचर्य ऊपजावी ले छे.

सुखदुःखनी वृत्ति तेमने ऊपजावनार पदार्थो साथेज नहीं, पण कोई प्रासंगिक वात साथे पण साहचर्य पामी रहे छे. आवा साहचर्यवाळी वृत्तिने स्थानांतरित वृत्ति कहेवाय छे. सुख अथवा दुःखनी वृत्ति ते क्षणनी सर्व प्रासंगिक वातोने पोतानो रंग लगाडे छे, अने तत्कालानंतर आपणने ते वृत्तिनां जे दर्शन स्मरण थाय छे तेने पण ते रंग आपे छे. जे स्थाने सुखरूप के दुःखरूप अनुभव थया होय ते स्थानो प्रति रुचि अरुचिनी जे वृत्ति थाय छे ते आनुं सारुं उदाहरण छे. जे स्थाने कोई भयंकर बनाव बन्यो होय ते स्थान उपर बाळकने निरंतर निर्वेदज आवे छे. बाळकने कोई माणस विषे अणगमो थवा मांडे छे तेमां पण ते माणसनो कोई एक पोत्तानुं दुःख साथे अति आकस्मिक जेवो संबंध कारणरूप होय छे. जे त्वराथी आवां साहचर्य करी लेवामां आवे छे, अथवा बीजी रीते कहीए तो ऊर्मिने पदार्थो उपर पोतानी छाया विस्तारवानी जेटली शक्ति होय छे, ते प्रमाणमां ऊर्मिग्रवणपद्धतिनुं अनुमान थाय छे.

सुख अने दुःखनी वृत्तिमात्र सरखी रीते पुनरुज्जीवित करी शकाय तेवी नथी होती. उत्तम इन्द्रियोनी जे वृत्तिओ छे ते, अधम इन्द्रियोनी तथा अंतर्व्यापारनी वृत्तिओ करतां वधारे तादृश रीते स्मरी शकाय छे; अने आशा निराशानो हर्ष शोक, इत्यादि ऊर्मिओ ऐन्द्रिय वृत्तिओ करतां वधारे तादृश रीते स्मरी शकाय छे. आवो जे भेद छे तेनो आधार एटला उपर छे के उत्तम प्रकारनी अने सहजे स्मरी शकाय एवी जे वृत्तिओ छे तेमने स्पष्ट एवा इन्द्रियजन्य संस्कार तथा दृष्टिओ साथे संबंध होय छे; मने अधम प्रकारनी वृत्तिओ तो अस्पष्ट एवी मानसिक स्थितिने अनुषंगे उद्भवे छे. सुखदुःखनी वृत्तिओनुं स्मरण करवानी शक्तिपरत्वे व्यक्ति व्यक्तिमां फेर रहे छे.

आपणे साधारण रीते धारी शकीए तेम उत्कट ऊर्मिप्रवणतावाळां बाळको, जेमने वृत्ति बहु तीव्र थई शके छे, ते पोतानी वृत्तिओने बीजा करतां सारी रीते स्मरी शके छे. बहु लागणीवाळुं बाळक भावि दुःखथी डरी जाय छे, भावी सुखथी बहु प्रसन्न थाय छे. परंतु सुखदुःखनी स्मृतिनो आधार आ एक बात उपरज नथी. घणां बाळको एवां होय छे के तत्काल तेमने बहु लागणी थाय. पण पछी कांई स्मृतिमां रहे नहीं. जे बाळकने कशीक वातना अभावथी घणुंज लागी आवे छे, तेने ते दुःख बहु वखत सांभरतुं नथी. स्मरणशक्तिना एकंदर तारतम्यने लीधे आ बातमां फेरफार पडे ए लक्षमां राखवा जेवी वात छे. वळी केटलाक सविशेष भेद पण कारणरूप छे. केटलांकने दुःख करतां सुखनुं सारुं स्मरण रहे छे, ने केटलांकने एथी उलटुं होय छे. प्रथम प्रकारनां माणस सुखमात्र उपरज दृष्टि राख्यां जाय छे तेथी आशावान् अने साहसिक थई जाय छे; बीजा प्रकारनां माणस दुःखना संभवोने लक्षमां राखी, बीहीकण अने चीकणां थई जाय छे.

(घ) मिश्र ऊर्मिनी वृद्धिः— तेमना पूर्ण रूपे तो ऊर्मिओ अनेक वृत्तिओना मिश्रणरूपे छे, अने घणीक सादी वृत्तिओनी बनेली होय छे. स्मृति अने पुनरुज्जीवननो जे व्यापार हवणांज कही बताव्यो तेनो आ वधारे गुंफित प्रकार छे. ज्यारे कोई पण पदार्थ, अनेक सुखरूप (के दुःखरूप) वृत्तिओने ऊपजावे छे अथवा कोई अन्य रीते तेमनी साथे साहचर्य पामे छे त्यारे ते सर्व वृत्तिओना संस्कार आ एक पदार्थमां एकत्रित थाय छे, अनेक, सर्वमय, एकरूप, एवी एक वृत्ति ऊपजावे छे, अने जेने आपणे नित्य रुचि अरुचिनी वृत्ति कहीए छीए तेने मनमां स्थापे छे. आज प्रकारे, बाळकने पोतानां प्रिय पुस्तको के रमकडां उपर जे आदर होय छे, जे परिचित मनुष्यादि उपर प्रीति होय छे, ते सर्व बंधाय छे. जेम ते ते वृत्तिना कारणभूत अनुभवो घणा अने नानात्ववाळा तेम ते वृत्ति वधारे गाढ अने दृढ थाय छे.

कोई माणस माटे आपणो प्रेम बंधातो चाले छे ते आ व्यापारनुं उदाहरण छे. बाळकने पोतानी माता उपर जे प्रेम थाय छे ते बहु धीमे धीमे वृद्धि पामे छे. आरंभे ते अति लघु अने अनियत होय छे, अने

घणाक अनुभव थया पछी ते गाढ, दृढ, अने स्थिर थाय छे. बाळकना नित्यानुभवनी माताना आसपास अनेक आनंदजनक साहचर्यो ऊभां थाय छे; अने जेम जेम वर्ष तथा बुद्धि वधतां जाय तेम तेम आवां साहचर्य पण वधतां जाय छे. स्मरणमां आणेली ऐन्द्रिय वृत्तिओ रूपे प्रथम आ प्रेम होय छे, पण ते क्रमे क्रमे करीने निवारित दुःख, आश्वासना, विपत्ति समये मार्गदर्शन, इत्यादि भावना स्मरणथी पुष्ट थई स्थिर थाय छे. माताना डहापण अने चातुर्य प्रति बुद्धिपूर्वक मानबुद्धि अने तेना चारित्र उपर पूज्यभावना, ए आदि उच्चतर तत्त्वो पण आ ऊर्मि जेम जेम पक्व थती जाय छे तेम तेम तेमां मळीने ते रूप थतां चाले छे.

जेम कोई वस्तु माटेनी रुचि, आ प्रकारे, अनेक आनंदजनक अनुभवोमांथी घडाई आवे छे, तेम उंडी अरुचि ते पण अनेक शोकजनक अनुभवोमांथी घडाय छे. पोताने सुख न पडे तेवी जगा उपर बाळकनी अरुचि, अथवा जेनी पासेथी वारंवार अप्रिय आचारज मळतो होय तेवा पुरुषनो तेनो अणगमो, ए, ते पदार्थ के ते पुरुषने अनुषंगे जे अनेक दुःखकर अनुभव थयला तेनुं फळ छे.

ज्यारे भेगां थयलां साहचर्यो परस्पर विसदृश होय त्यारे आ भेद अथवा शोक जेनुं प्राधान्य थाय तेनी असर वृत्तिने लागे छे. ज्यां आपणे वस्यां होईए तेवां स्थान अने अनेक मनुष्य प्रीत आपणी वृत्ति अवाज प्रकारनी होय छे. एकंदरे आनंदमय एवी वृत्तिने थोडा सरखा शोकनी छांटथी वधारे गाढता प्राप्त थाय छे. पोताना उडाऊ छोकराने पश्चात्ताप करतो जोईने पितानो वधारे प्रेम ऊपज्यो. आ स्थाने एक बीजो नियम वच्चे आवे छे. भूत अने वर्तमान वच्चेनो विरोध, अने तेमांथी ऊपजती सुखनी वृत्ति.

आगळ कहेवामां आव्युं छे तेम आवी गूढ अने मिश्र वृत्तिनां जे भिन्न भिन्न प्रत्यक्षोनी साथे तेनो संबंध होय ते सर्वमां स्पष्ट स्मृति होती नथी. मनोव्यापारना स्वरूपथकीज आ वात अशक्य छे. एकना एक पदार्थ साथे संबंध राखती अनेक

विसदृश वाक्योनुं एकज काळे स्पष्ट स्मरण थवुं अशक्य छे. उदाहरण. आपणा बाळपणना निवासने फरीथी जोतां, अथवा जूना सतीर्थने मळतां, भूत अनुभवनां अनेक अस्पष्ट कल्पनाचित्रोनुं आपणने भान थाय छे; परंतु ते बधी भावनाओ एक पछी एक एवी त्वराथी आवे छे अने एक एकमां एवी मळी जाय छे, के एमांनी कोई एकनुं स्पष्ट भान थवा पामतुं नथी. छतां जेटलुं स्मरण थाय छे तेटलाथी तेनी आनुषंगिक वृत्तिओनुं स्मरण थया विना रहेतुं नथी. ए उपरथीज ते ऊर्मिनी गाढता अने विपुलता घडाय छे*.

परंपरित एवां ऊर्मिसाहचर्यमां जे भावनानुं तत्त्व ते घणुंज अस्पष्ट होवुं जोईए एम आ उपरथी समजाय छे. कोई व्यक्तिने, पोताना पूर्वजोना अनुभवनुं, एटले के पोताना जीवनमां थयला अनुभवनुं, स्मरण केम संभवे? ए प्रश्न ऊठाव्या विनाज आपणे एटलुं तो कही शकीए के एवा अनुभवोनी अनंत संख्याने लीधे तथा कालकृत विदूरताने लीधे तेमनी आनुषंगिक भावनाओनुं स्पष्ट स्मरण थवुं अशक्य छे. आ प्रसंगमां तो भावनानुं तत्त्व ऊर्मिपरत्वे थई शके तेटलुं अस्पष्ट छे†.

(च) वृत्तिनुं शील.—आ प्रकारे वृत्तिनुं शील एटले अमुक वृत्ति जेमां प्रधान छे एवुं अमुक प्रकारनुं शील, अमुक प्रकारनी एवी टेव बंधायछे. कोई माणस अथवा स्थान सारुं कोई बाळकने नित्य रुचि के अरुचि थई गई होय तो ते माणस के ते स्थान विषे ते बाळक ते वृत्तिनुं तात्कालिक भान थया विना स्मरण करी शकशे नहीं. जेम वृत्ति बलवती, अने पदार्थादि तथा बाळक वच्चनो संबंध वधारे बलवान्, तेम वृत्तिनो उद्भव वारंवार अने स्वभावसिद्ध शीलरूपे थाय छे.

ऊर्मिमय जीवननी वृद्धि, बुद्धिमय जीवननी वृद्धिनी पेठे, आवां आवां निश्चित शील बंधाते बंधातेज थती जाय छे. अमुक प्रकारनी वृत्तिओ पुनः पुनः प्रादुर्भाव पामती थई जाय छे, अमुक पदार्थ अथवा

* सामान्य रूपे परिणामना सामान्यनामथी जे अस्पष्ट कल्पनाचित्र स्मराय छे तेनो अने आ व्यापारनो सादृश्यसंबंध वाचके विचारी जोवो.

† स्पेंडरनुं मत एवुं छे के भावना कोई काळे पण परंपराथी प्राप्त थती नथी; परंपराथी तो मात्र दर्शन अने केटलीक वृत्तिओनो कार्यकारणरूप संबंध तेज मळे छे.

प्रसंग साथेना संबंधमां नियत थई जाय छे. उदाहरण. घर उपरनी वृत्ति घरनां माणसो उपरनी वृत्ति, शाळा उपरनी वृत्ति, इत्यादि वृत्तिओ, ऊर्मिमय जीवननुं नियम अने पुनःपुनः प्रादुर्भाव पामतुं तत्त्व थई रहे छे.

आवो जे परिणाम थवो तेनो अर्थ ए छे के एक पासा जेम वृत्ति धीमे धीमे गाढ थाय छे, तेम बीजी पासा अस्पष्ट अने क्षीण थती जाय छे. परिचित अथवा पुनः पुनः प्रादुर्भाव पामती वृत्तिओ तादृश होती नथी. ताजा अनुभवमां जे वृत्तिवैपुल्य होय छे ते तो अत्र होवानी वातज नथी. बाळको पोतानी माता उपर विपुल प्रेमभाव निरंतर राखी शकतां नथी. व्यवहार, परिचय, तेथकी आनंदनुं माधुर्य ओछुं थाय छे; अने क्वचित् ऊर्मियोग्यताज शून्य पडी जाय छे.* पण साधारण प्रसंगोए जणाती आ प्रकारनी वैपुल्यनी न्यूनतामां ऊर्मिनी गाढता न होय एम न धारवुं. बाळकना परिपक्व प्रेममां वैपुल्यनुं अनुद्भूत सामर्थ्य रहे छे, ने ते कोई अपूर्व प्रसंग (जेवो के लांबा वियोग पछी मळवुं इत्यादि) बनी आवतां प्रादुर्भाव पामे छे. जेने शीलरूप वृत्ति आपणे कहीए छीए ते तो, संसर्गगत कोई नित्य पदार्थने अनुषंगे शान्त रूपे प्रकट थती, अने शान्त प्रवाहरूपे जीवनना घणा भाग उपर विस्तरती, वृत्ति छे.

छेवट एम पण जाणवुं के वृत्तिनुं शील बंधावानो अर्थ ए छे के तत् तत् वृत्तिने अनुरूप ऊर्मिनी अपेक्षा पेदा थाय. अभ्यासथकी थता व्यापारमात्र, पोतानी पाछळ तेना तेज व्यापारनी प्रवणतारूप संस्कार मूकी जाय छे, अने अनुरूप अपेक्षा पेदा करे छे. शील अथवा टेवनो जे अर्थ आपणे धार्यो छे तेमां आ मुख्य तत्त्व छे. वृत्तिना सहभूत

*वारंवार आवतां व्रतोपवासादि के अमुक धर्माचारनी असर, अथवा बहु भारे संस्कारवाळा प्रसंगोनी असर, आना उदाहरणमां विचारवी.

जे व्यापार (शरीरना के मनना) ते अमुक दिशाप्रति नियत होवाथी, ज्यारे ज्यारे ते दिशाए ते व्यापारने लई जनार जे परिचित प्रोत्साहन अथवा द्वार ते नथी होतुं त्यारे त्यारे असुख ऊपजी आवे छे. ज्यां आ व्यापार नियमित अने सामयिक होय त्यां भूखनी पेठे नियमित के सामयिक अपेक्षा थाय छे. ज्यारे गाढ अने विपुल वृत्तिओ— प्रेमादि— नियमित प्रवाहरूपे नियत थई जाय छे, त्यारे ते वृत्ति संतोषनार के ऊपजावनार जे प्रेमस्थान तेना अभावे महावेदना पेदा थाय छे. कोई मित्रना वियोगे जे शोक थाय तेना वैपुल्य अने नित्यत्व उपरथी मूळना प्रेमनुं, ते प्रेमभोगना आनंदनी विपुलतानुं, अने ते वृत्ति बुद्धि उपर एक शीलरूपे केवी अधिकृत हती तेनुं, माप थई शके छे.

(छ) **साधारण ऊर्मिमय प्रकृतिनुं बंधारण**:— ऊर्मिनी वृद्धिनो अर्थ एटलोज नथी के अमुक वृत्तिओना समूहनुं कोई एक पदार्थ उपर सर्वदा वळगी रहेवुं. ए अर्थमां, ऊर्मियोग्यतानो विस्तार, अने उचित स्वरूपवाळा पदार्थमात्र प्रति अमुक वृत्तिज धारण करवानी प्रकृतिनो उद्भव, ए बे वातनो पण समास छे. कोई पण वृत्तिना प्रत्येक अनुभवथी ते वृत्तिमां तेनी योग्यता सबल थाय छे ए तो आपणे जोयुं छे. जे बाळके एक मनुष्य प्रति प्रेम अने माननो अनुभव कर्यो छे ते बीजां मनुष्यने पण प्रेम अने मानथी सहजे जोई शकशे. प्रेमादिथी उलटी वृत्तिओ द्वेषादि ते परत्वे पण एनो एज नियम जाणवो. अथवा उत्तम ऊर्मिओमांथी एक उदाहरण लेईए; पोताना स्वाभाविक संसर्गो उपर बाळकने जे भाव बंधाई जाय छे तेमांथी ए भाव करतां वधारे विशाल एवी समग्र विश्वलीला प्रति सौंदर्यभावना (अथवा क्वचित् शास्त्रीय परिपृच्छाना भावनी) ऊर्मिनो तेना मनमां मार्ग थई आवे छे. आ प्रकारे

सर्वसाधारण एवी ऊर्मिमय प्रकृति अथवा प्रवणता बंधाय छे, अने तेना परितोषना साधननी पण अनुभव अने ज्ञाननी वृद्धि साथे वृद्धि थाय छे. आवां साधारण, ऊर्मिमय, शील अने तेमने अनुषंगे ऊपजती अपेक्षाओ तेज माणसनी अधिकृत वृत्तिओ कहेवाय छे.

आवी सर्वसाधारण ऊर्मिमय प्रकृतिनी जे वृद्धि तेनो, चंचळ मनने नवा नवा पदार्थो उपर वृत्ति आरोपवानी जे प्रकृति होय छे ते थकी, भेद पाडवो जोईए. बाळको उपर नूतनतानी घणी असर थाय छे, अने तेमनामां स्मृति अने साहचर्यनुं झाझुं बळ होतुं नथी तेथी, ते नवा नवा पदार्थोने तुरत पकडी ले छे अने जूना पदार्थो उपर ऊर्मिनो जे एकान्त प्रवाह रेडातो ते नवा पदार्थ उपर रेडी दे छे. एक सोबतीथी बीजा उपर, एक शिक्षकथी बीजा उपर, एम जे तेमनी रुचि बदलाया जाय छे, तेमां आ पण एक तत्त्व छे. वृत्तिनी आवी चंचलता अने क्षीणप्रायता ते तो वृद्धिने अनुकूळ नहीं पण प्रतिकूळ छे. अन्य करतां अधिक अने सविशेष एवी जे रुचिओ तेमां कांईक न्यून बळवाळी अने सामान्यरूप रुचिओनो ऊमेरो थवो एज खरी वृद्धि छे. एटलुं कहेवुं जोईए के विशेष रुचि सामान्यरुचिने उपकारक थाय छे, छतां जे घणीज विशेष रुचि छे ते तो सामान्यरुचिनी विरोधिनी छे. आपणे सर्व जाणीए छीए के बाळको तरुण करतां विपुल, संकुचित, अने विप्लावक प्रेमवाळां होय छे. संकुचित (सविशेष) अर्थवाळुं शील, अने विशाल अर्थवाळी वृद्धि, ते बचेना विरोधनुं आ उदाहरण छे.

(ज) **ऊर्मिना संस्कारनी वृद्धि**.—ऊर्मिनी वृद्धिना बीजा अंगनो समास, आ विभागमां करी लेवाय तेम छे. कोई पण इंद्रिय ज्यारे स्वव्यापार माटे न्यूनप्रोत्साहन मागे, अने वधारे विवेचक थाय, त्यारे तेना संस्कारमां वृद्धि थई छे एम कहेवाय. ऊर्मिपरत्वे पण तेनुं तेज समजवुं. प्रेम जेवी कोई वृत्ति संस्कारमां वृद्धि पामी त्यारे गणाय के ज्यारे प्रेमस्थानना अति अस्पष्ट अने गूढ प्रकारोथी पण* ते जाग्रत् थती जणाय, अने ते उपर चोटती समजाय. सौंदर्य माटेनी संस्कृत वृत्तिथकी विश्वलीलाना असाधारण अने गूढ चमत्कारनुं पण दर्शन थाय

*जेम के न सजवामां आवे तेवी शरीरनी खुबीओ अथवा तेवा चारित्रना गुणो इत्यादि.

छे. ऊर्मिनी ग्रहणशक्तिमां आवी जे वृद्धि थाय छे तेनी साथे ऊर्मिनी विवेचक शक्ति पण वधे छे. केटलीक ऊर्मिओ जेवीके सौंदर्यनी अथवा नीतिमत्तानी ऊर्मि, पोतानी वृद्धि साथे विवेचकत्वनी पण वृद्धि दर्शावे छे.

विवेचकत्वमां वृद्धि थवा साथेज ऊर्मिओनी स्पष्टतामां पण वृद्धि थाय छे. आम कहेवानुं तात्पर्य एवुं छे के ते ऊर्मि पदार्थोना अमुकरूप संबंधादि साथे वळगी पडे छे. वृत्तिमात्र आरंभे अस्पष्ट होय छे, केमके पोताना उद्भव, कारण तथा पदार्थनुं भान ते समये होतुं नथी. जेम जेम बुद्धिनुं शिक्षण वधतुं चाले छे तेम तेम भावाधिगमद्वारा वृत्तिना आनुषंगिक भावोनुं पृथक्करण करी शकाय छे. आ प्रकारे वृत्तिमात्र बुद्धिमत्ता गृहे छे, अने सुविज्ञात एवा विचारव्यापार उपर पोतानो आधार स्थापे छे. आ प्रकारनी स्थितिनुं स्पष्ट अवलोकन उत्तमप्रकारनी वृत्तिओ अथवा उत्तम भावोना संबंधे करी शकाशे*.

वाचक सहजे जोई शकशे के जे क्रम अत्रे बताव्यो ते जोतां वृत्ति पण बुद्धिना जेवाज विकासक्रमने अनुसरे छे. आरंभे ते प्रत्यक्षरूप एटले साक्षात् प्रत्यक्षथीज उद्भवे तेवी होय छे, पछी भावनामय थाय छे, एटले के प्रत्यक्ष पदार्थोने अनुषंगे उद्भवे छे, ने छेवट अमुक भावनामय विचारोने अनुषंगे द्विगुणित भावनामय थई आवे छे. आ कहेवुं सत्य, न्याय, इत्यादि भावनेज लागु पडे छे एम नथी पण अहंभाववाळी जे प्राथमिक वृत्तिओ तेने पण लागु पडे छे. उदाहरण. क्रोधनी वृत्ति प्रथम अंध होय छे, तेने अनुषंगे आत्मभान झाझु होतुं नथी. मन जेम जेम विकास पामे छे तेम तेम आत्मा अने तेना शुभना विचार तेमनुं स्पष्ट भान थवा मांडे छे, अने वृत्तिनो बुद्धिमय आधार थई रहे छे.

* एम पण कही शकाय के आरंभे तो ज्ञानमां वृत्ति गौणरूपे रहे छे. कोई पदार्थने आपणे एटलाज माटे सारो कहीए छीए के ते आपणने आनंद आपे छे. आगळ जतां तो वृत्तिमां ज्ञान गौणरूपे रहे छे. कोई माणसने आपणे प्रेमपात्र कहीए छीए ते एटला माटे के तेनामां बुद्धि अने चारित्रना उत्तम गुणो छे.

९. **ऊर्मिना विकासनो क्रम.**—गुंफन अने भावना ए उभयनी वृद्धिना प्रमाणमां ऊर्मिओना स्वरूपनी वृद्धि थती चाले छे ए तो कहेवामां आवेलुं छे. उदाहरण. क्रोध अने भय ते न्याय अने उपकारनी वृत्तिओनी पूर्वे जणाय छे. अने तेनुं कारण एटलुंज छे के ए उभय न्याय तथा उपकार करतां वधारे सादी वृत्तिओ छे, अने एमनामां भावनानुं घणुं न्यून अने अतिसरल तत्त्व अपेक्षित छे. कोई ऊर्मिना इतिहासना सर्व क्रममां भावनानी वृद्धिनो क्रम शोधी शकवानुं बने तेम नथी, तथापि ऊर्मिना विकासनुं सामान्य स्वरूप विचारतां भावनानी वृद्धिनो क्रम एज ते विकासनो क्रम छे एम एकंदरे बतावी शकाशे.

त्यारे ऊर्मिविकासनुं आ स्वरूप ध्यानमां राखी, ऊर्मिमय जीवनना विकासमां स्पष्टरूपे जणाता त्रण क्रमना स्वरूपनो विचार करवो ठीक पडशे. प्रथमे आत्मसंबद्ध ऊर्मिनो विचार करवानो छे. जे ऊर्मिओ आत्मा एटले पोताना संबंधीज होय, पोतानी जातना कोई अनुभव के संबंधमांथी ऊपजती होय तेनो आ वर्गमां समास थाय छे. अथवा बीजी रीते कहीए तो तेवी ऊर्मिमात्रमां व्यक्तिनुं पोतानुं कांई कांई अनुकर्षण होय छे. आ अनुकर्षण सर्वदा स्पष्टज होतुं नथी, पण होय छे एमां संशय नथी. पोते -आत्मा- अने तेना व्यापारनी भावनाने अनुषंगे थती भावनाओ तेमज आशा, जय, कीर्ति इत्यादिना आनंदनी ऊर्मिओ, ए सर्व आ वर्गनां उदाहरण छे; अथवा आवी ऊर्मिओ आत्मा साथे अमुक संबंधवाळा पदार्थने वळगेली होय, जेमके बाळकनो पोताना निवासस्थान उपर के पोतानी माता उपर प्रेम, पोताने कांई कष्ट ऊपजावनार उपर अरुचि, पोता सरखा बाळकनी स्पर्धा, इत्यादि.

बीजो वर्ग अनुकम्पाप्रधान वृत्तिओनो छे. स्वेतर अथवा पारकानां सुखदुःखमां सभागी थवुं अने एकंदर उपकारपरायणवृत्ति, ए सर्वनो आ

वर्गमां समास छे. आ वृत्तिओ शुद्ध भावनामय छे. अन्य साथे अनुकम्पा पामतां आपणे, अन्यने केवी वृत्ति हशे तेनी, भावना अथवा कल्पना करवी जोईए. वळी आ वृत्तिओ व्यक्तिसंबद्ध वृत्तिओना पछीज आवे ए स्वाभाविक छे, केमके पोतानी जातनो केटलोक ऊर्मिरूप अनुभव होवा विना आ वृत्तिओनो अनुभव अशक्य छे. आ वर्गमांनी ऊर्मिओ आत्मेतरसंबद्ध अने सर्वसाधारण छे. अनुकम्पामां आपणे सामानां सुखदुःखनो विचार करीए छीए, आपणो पोतानो विचार करता नथी. वळी वृत्तिना आश्रयरूप मन अने ते वृत्ति ऊपजावनार पदार्थ तेनी वच्चे, आ वर्गनी ऊर्मिओ परत्वे जोतां कशो विशेष संबंध होतो नथी, केमके तेनो ते पदार्थ, अनेक प्रकारे, तेनी ते वृत्ति, अनेक मनमां ऊपजावी शके छे.

त्रीजो वर्ग केटलीक अतिगुंफित वृत्तिओनो छे; तेमने भाव कहे छे; जेवा के स्वदेशप्रीति, विश्वलीला उपर प्रेम, जनताप्रेम, इत्यादि. आवा भावना एकंदरे त्रण भाग पाडवामां आवे छेः (१) बुद्धिप्रधानभाव, एटले के सत्यपरायणता; (२) सौंदर्यभाव, एटले के सुंदरता माटे सानंदाश्चर्य; (३) नीतिप्रधानभाव, एटले के कर्तव्यता माटे मान (जेमां चारित्र्यगुणो तथा भक्ति, जनताप्रेम, तेनो पण समास छे). आ ऊर्मिओ विकास पामी, पदार्थगत अमुक धर्मोने, अथवा भावमय विचारोने, सत्य, सुंदरता, प्रीतिमत्ता, तेमने वळगे छे. साक्षात् अनुकम्पा करतां उत्तम प्रकारनी भावना आमां भळेली होय छे. परंतु अनुकम्पा उपर तेमनो घणे भागे आधार छे, अने परंपराथकी पण अनुकम्पानुं तत्त्व आ वर्गनी ऊर्मिमात्रमां सर्वदा होय छे, एम कही शकाय. एम होवाथीज अनुकम्पाप्रधान ऊर्मिना वर्ग पछी आ वर्ग आवे छे. खरे खरी आत्मेतर अने सर्वसाधारण ऊर्मिओ आज छे.* सुंदर चित्रथी सानंदाश्चर्य पामतां, अथवा कोई

* अनुकम्पा आना जेटली आत्मेतरवृत्ति नथी. तेनुं कारण के अनुकम्पामा जे वस्तुथी वृत्ति ऊपजे छे ते वस्तु व्यक्तिसंबद्ध वृत्तिज छे.

नूतन शास्त्रीय सत्यथी आनंद अनुभवतां, आपणने आपणी जातनो अथवा आपणा लाभनो विचार आवतो नथी. आत्मा अने तत्संबद्ध व्यवहारमात्रमांथी विदूर थई जई, कोई पदार्थना लाभहानिनिरपेक्ष ध्यानमां मन लीन थयुं होय छे; अने आवा भावमां अनेक जन भाग पण लेई शके एवुं छे. ज्ञान अथवा सत्य, सौंदर्य, भलाई इत्यादि विषयो सर्वसाधारण ध्याननना विषय छे.

आ प्रकारे जे त्रण विभाग करी बताव्या ते ऊर्मिना स्वरूपनुं विलोकन करवानी सगवडने माटे करेला विभाग छे, परस्परव्यावर्तक अथवा शक्य संभवमात्रनी गणनारूप, ए विभाग नथी. अमुक वृत्ति कीया विभागमां आवे तेज बहु वार तो नक्की थतुं नथी. उदाहरण. बाळकनो पोतानी माता उपरनो जे प्रेम तेमां केटलांक आत्मसंबद्ध तत्त्व होय छे, केटलांक आत्मेतरतत्त्व होय छे. एज प्रकारे स्वातंत्र्यना प्रेममां पण आत्मसंबद्ध तत्त्व—आपणने पोताने स्वातंत्र्यथी केटलुं सुख थाय ए तत्त्व—तेम आत्मेतरतत्त्व -बीजाने पण स्वातंत्र्यथी केटला लाभ छे ए तत्त्व -रहेलां होय छे. वृत्तिओ एक पासा आत्मसंबंधथी आरंभी धीमे धीमे छेक आत्मेतर संबंधपर्यंत एक बीजामां मिश्र थती चाले छे एम जणाय छे. कोई माणस उपर रुचि के अरुचिनी वृत्ति घणे भागे आत्मसंबद्ध होय—आत्मानुकर्षण मुख्यरूपे जणातुं होय -अथवा केवळ लाभहानिनिरपेक्षआत्मेतरसंबद्ध होय. कोई पण वृत्तिनी वृद्धिमां आ बधा क्रम स्पष्ट जणाय छे.*

* रागद्वेषादि वृतिओनी पेठे ज्यां ज्यां कोई आत्मेतरसंबद्ध वृत्ति आत्मसंबद्ध वृत्तिमांथी ऊपजती होय छे त्यां आत्मेतरसंबद्ध वृत्तिनो एक धर्म– सर्वसाधारणत्व– तेमां न्यून हशे. पण कोई वृत्तिनो ते वृत्ति रूपेज अने तेना उद्भवनी अपेक्षा विना आपणे विचार करीए तो जेटले अंशे ते आत्मानुकर्षण न करती होय, अने कोई पदार्थनी स्वाभाविक अनुकूलताप्रातिकूलतानी भावनाने वळगेली होय, तेटले अंशे ते वृत्ति सर्वसाधारण कहेवाय के न कहेवाय. बाह्य अने आंतर ए विभाग उपर दृष्टि देवाथी पण आ विवेचन समजाशे.

वळी जुदी जुदी मर्यादावाळी वृत्तिओमां पण आपणने तेनो तेज क्रम जणाय छे; जेम के कोई कुटुंबना सर्व माणसोने घर उपरनो भाव; कोई स्थानमां वसनार सर्व पडोशीने ते स्थान उपर भाव; अने सर्व देशप्रेमीओने देश उपर भाव.

एम पण कही शकाय के ऊर्मिपरत्वे आत्मसंबद्ध अने आत्मेतरसंबद्ध एवो जे विभाग कर्यो ते ऐन्द्रिय वृत्तिना प्रदेशमां जे उत्तम अने अधम प्रत्यक्षनो विभाग छे तेना जेवोज छे. शरीरसंबद्ध आनंद (जेवा के क्षुधा तृषानी निवृत्ति थवी इत्यादि) तेमने शरीरनी अमुक स्थिति साथे संबंध छे अने अमुक व्यक्ति--आत्मा साथेज ते नियत छे; प्रकाश, रंग, शब्द, एमना आनंद ते बाह्य पदार्थोथी सिद्ध थाय छे, अने सर्वसाधारण छे एटलाज माटे, आपणे हमणा जोईशुं तेम तेमने सौंदर्यजन्य आनंदमां गणेला छे.

वळी ए पण कहेवानुं छे के आत्मसंबद्ध वृत्तिओने प्रथम कहेवामां एवुं कहेवानो हेतु नथी के बीजी वृत्तिओना विकासना आरंभपूर्वे आ वृत्तिओनो पूर्ण विकास थवोज जोईए. पोता विषेनी ऊर्मि आत्मविचार स्पष्ट थया पछी परिपूर्ण थाय छे; अने आत्मविचारना विकासनो क्रम जोतां आपणे जोई आव्या छीए तेम, आ विचार तो भावाधिगमना जे छेवटना व्यापार तेनी साथे जोडायलो छे. छतां अत्र जे त्रण विभाग बताव्या छे ते तेमना तेमना आरंभे तो एक पछी एक एमज विकास पामे छे एम कहेवामां बाध नथी.

१०. बाळकोनी वृत्तिओनुं स्वरूप.--आपणे जोई आव्या छीए तेम बाळकोनी वृत्तिओ तेमना अनुभवना प्रमाणमां, अने तेमनी जातनी भावना ऊपजाववानी शक्तिना प्रमाणमां, मर्यादित रहे छे. तेमना हर्षशोकनो प्रदेश जे विद्यमान होय अथवा अव्यवहित भूत के भावि क्षणस्थित होय तेटलामांज रहे छे. आवी प्राथमिक वृत्तिओमां ऐन्द्रिय वृत्तिओ मुख्य होय छे. क्षुधा अने तृप्ति, पाचनक्रियानो अवरोध के अनवरोध, शीत अने उष्णनो अनुभव, अवरुद्ध अने अनवरुद्ध व्यापार, ए इत्यादिथकी बाळकना महा शोक अने महा आनंदनुं स्वरूप बंधातुं समजाय छे.

वृत्तिनो आ प्रकारे प्रत्यक्ष उपर आधार होवाथी, एक पासाथी तेनो अधिकार होय त्यां सुधीमां ते जेम उग्र अने विप्लावक थाय छे, तेम बीजी पासाथी ते क्षणिक अने सहजे विस्मरी जवाय तेवी पण थाय छे. स्मरण अने अपेक्षा ए उभय बाळकनामां निर्बल होय छे, तेथी वर्तमाननुं बळ तेना उपर संपूर्ण रीते चाले छे. एकाद सपाटो वागवाथी के कोईएक रमकडुं खुंचावी लेवाथी जे दुःख थाय छे ते, ते समये, बाळकना आखा मनने दुःखमय करी दे छे. आम होवाथीज राग मात्र अति उग्र रहे छे अने ऊर्मिनो अधिकार पूर्ण प्रवर्ते छे, जेमांनुं कांई पण पक्व वये पहोच्या पछी दीठामां आवतुं नथी. आम छे खरुं तथापि बाळकना मन आगळ नवा पदार्थो के नवां सूचन आवी पडे तो तुरत रागनो विप्लावक प्रवाह स्तब्ध थई जाय छे. जे बाळक क्षण पहेलां महादुःखना दरीआमां डुबी गयुं हतुं तेज तुरत हतुं तेवुं आनंदी थई रहे छे.

प्राथमिक वृत्तिओः आत्मसंबद्ध वृत्तिओ.--बाळपणनी प्राथमिक वृत्तिओ घणे भागे पोताना संबंधी एटले के आत्मसंबद्ध होय छे. शुभ अशुभनी भवितव्यताना विचारथी थतां आशा अने भय, अनिरुद्ध स्नायुव्यापारथी थतो आनंद, ए आदिनो आमां समास जाणवो. साधारण रीते बाळको स्वभावथीज बीहीकण होय छे, अने आपणे जोई आव्या छीए तेम, मूळथीज भय पामवानी प्रवणता तेमनामां परंपरित होय छे. वळी तेमनामां शरीर अने मनना बळनी जे न्यूनता होय छे, तेने लीधे पण ते भयशील थई जाय छे. आथी उलटी रीते जोईशुं तो निरामय अने दृढ शरीरवाळुं बाळक पोताना सामर्थ्यनो उपयोग करवामां आनंद मानतुं जणाशे. अंतरायने ओळंघी पोतानी इच्छा सिद्ध करवामां संतोष

पामतुं देखाशे. एम करतां प्राथमिक क्रममांज ते "मारुं" अने "तारुं" ओळखतां शीखे छे, अने रमकडां, चित्र इत्यादि पोतानां करी राखवामां आनंद माने छे, अर्थात् स्वामित्व अथवा मीलकतनो विचार तेना मनमां ऊपजी आवे छे.

मंडलविरुद्ध वृत्तिओः स्पर्धा:—बाळकोनी प्राथमिक वृत्तिओनी आत्मसंबद्ध प्रकृति तेमनो अन्य प्रति जे व्यवहार रहे छे तेमां दृष्टिए पडे छे. मंडलविरुद्ध वृत्तिओ, जेवी के क्रोध, विद्वेष, ईर्षा, अधिकारेच्छा, ए वृत्तिओ आरंभे प्रबल होय छे. पोतानी गरजो अने इच्छाओ अन्यनी गरजो ने इच्छाओ थकी विरुद्ध छे ए वात बाळक आरंभथीज समजी शके छे. एमांथी विरोध, अरुचि, ईर्ष्या इत्यादि वृत्तिओ ऊपजे छे. तेने अमुक काम करावत्रा माटे बळ वापरवामां आवे तो ते तेने रुचतुं नथी, कोई कांई ईजा करे तो ते तेनी सामुं थाय छे, तेनो भाई भांडु रमकडां लेई जाय तो तेने तमाचो मारे छे, इत्यादि, इत्यादि. बीजो कोई वस्तुनो उपभोग करे ते तेने रुचतुं नथी, अने पोताने जेनी इच्छा होय तेवी वस्तुनो जे उपभोग करतां होय तेमना उपर, ईर्ष्याने लीधे, क्षणवार क्रोध करे छे. बीजा उपर अधिकार भोगववो पण बाळकने गमे छे, बीजां तेनी इच्छाओ तृप्त करवानां साधन थाय ते तेने रुचे छे.

व्यापारमात्र करवाथीज जे आनंद थाय तथा सफल प्रयत्नथी जे आनंद थाय तेमां, बाळपणमां सुलभ जे ईर्ष्या अथवा स्पर्धानी वृत्ति तेथी घणो वधारो थाय छे. एटले के स्पर्धाने योगे जे सबल प्रयासनी जरूर पडे छे तेमां जे आनंद लागे छे तेनो आमां समास जाणवो. पण आथी वधारे जोतां एम छे के स्पर्धामां विरोधनो अंश रहे छे, अने क्रोध अथवा अहितनी जे वृत्ति विरोधमां सर्वथा रहे छे तेनो पण अंश जणाय छे; एटले आने लीधेज सर्व प्रकारनां स्पर्धा अने विरोधमां पशुवृत्तिओ

उत्तेजित थवाथी जे आनंद थाय ते प्राप्त थाय छे. स्पर्धानो अंतिम आनंद तो विजय प्राप्त करवामांथी उद्भवे छे; पण ए आनंद केवळ विजयनोज आनंद नथी, एमां अमांडलिक वृत्तिनुं पण कांईक तत्त्व छे, एटले के प्रतिपक्षीने पराहत कर्यानो, तेना करतां अधिक थयाना हर्षनुं पण तत्त्व छे. बाळपणमां सबल एवा अनुकरणनो जे वेग तेने पण स्पर्धा साथे संबंध छे एम आपणे हवणां जोईशुं. बीजां जे करतां होय तेवुं पोते न करी शके तो बाळकोने ओछुं आवे छे, अने जो तेवुं पोते करी शके तो तेमनी बराबरी कर्यानो आनंद थाय छे.

बाळपणनी मांडलिक वृत्तिओः—मंडलानुकूल एवी वृत्तिओना प्रथमाविर्भावमां पण एनुं एज जणाय छे. प्रथमथकीज बाळको मंडलसंसर्गने चहाय छे. पोतानी माताने जोतां बाळकना वदन उपर जे आनंद जणाय छे तेथी आ वातनो निश्चय थाय छे. बाळक पोतानी माता पासे सहवास माटे जाय छे, पोतानी रमतोमां ने पोतानां काममां ते भाग ले अने खुशी थाय ते माटे जाय छे. पोताना आनंदमां माता अनुगत रहे एवी एक १६ मासना बाळकनी वृत्ति समजाई हती. ज्यारे ते पोताने आनंद के गमत ऊपजावे एवुं कांई पण देखतुं त्यारे पोतानी माताना वदन उपर हाथ फेरवी ते पदार्थ भणी तेनी दृष्टि वाळवानो यत्न करतुं. माता अथवा धाव पासे होय तो पण बाळकने आनंद थाय छे, ए स्पष्ट छे. तेनी पासे होय, अने तेनुं घणामां घणुं ध्यान पोता उपर आकर्षी शकतुं होय, तथा पोताना प्रेमना चिन्हरूपे वखतोवखत लाड करतुं होय, त्यारे बाळक घणो आनंद माने छे. एथी उलटुं ज्यारे मा अथवा धावथी ते बहुवार विखुटुं रहे छे, ते पछी पोते एकलुं होय के परायां माणसनी मंडळीमां होय, त्यारे ते घणुं शोकार्त्त जणाय छे. बाळकनो मात्रापनी संभाळ उपर जे स्वाभाविक आधार छे तेथकीज बाळक माता

उपर प्रेम धरतां शीखे छे. परंतु आवो जे प्राथमिक प्रेम ते आत्मसंबद्ध एटले के स्वार्थमय वृत्तिरूपे होय छे. बाळकने माता अथवा कोई साथे रमनार विना चालतुं नथी. तेमने ते पोताना आनंद अने सुखनां साधन माने छे. हजी तेने तेमनां सुखदुःख विषे कशो पारमार्थिक विचार होतो नथी, ते पोते स्वतः शुं छे, पोतानी साथे तेमनो संबंध छे ते न होय तो पण तेमनी शी योग्यता छे, ते तेना जाणवामां होतुं नथी.

स्तुतिप्रियता.—बाळपणनी एक घणामां घणी उपयोगी वृत्ति स्तुतिप्रियतानी छे; बीजांना अभिप्राय, बीजांनी स्तुति, तेथी संतोष मानवानी वृत्ति छे ते छे. आ वृत्ति आत्मेतर अथवा पारमार्थिक वृत्ति नथी. ज्यारे बाळकने अन्यनी स्तुति प्राप्त थाय छे त्यारे पोतानोज विचार आवे छे. आम जोतां आ वृत्ति आत्मप्रियता अथवा आत्मगुणानुवादनुं रूपान्तर छे. (संघटनना नियमानुसार) ज्यारे अन्यनो विचार अनुकूळ होय छे त्यारे बाळक खुशी थाय छे, केम के पोताने पोता विषे जे सारो विचार होय तेमां ते विचार भावतो आवे छे.

छतां आ वृत्ति एक अगत्यनी वातपरत्वे स्वार्थमय अथवा आत्मसंबद्ध वृत्तिओथी भिन्न छे. ते एटलीज वातपरत्वे के आमां अन्यनुं पण अनुकर्षण छे. अन्यना सारा अभिप्रायनी किंमत गणवी एनो अर्थज ए छे के आपणे अन्यने मान आपीए छीए. आटलुंज नथी पण कोई रीते अति अस्पष्ट एवुं ते अन्यनी वृत्तिओनुं पण आ वृत्तिमां अनुकर्षण छे. आ वृत्तिमां जे पोताने संतोष थाय छे ते अन्यनी आनंदमय वृत्तिथकी थाय छे, लज्जा अथवा पोतानो तिरस्कार तेनी जे वृत्ति थाय ते पण अन्यना शोकनी वृत्तिमांथी थाय छे. आम छे तेथीज आ वृत्तिनी नीति अने शिक्षणनी स्थापनापरत्वे पूर्ण उपयुक्तता छे. मि. स्पेन्सरना वचनथी बोलीए

तो आ वृत्ति स्वपरभावरूप छे; ए थकी बाळकनो पर साथे संबंध थाय छे, अने शुद्ध परमार्थवृत्तिनो बीजारोप थाय छे.

अन्यकृत स्तुतिने सारी मानवानो बाळकने स्वभावज होय छे. पोताने तथा पोताना कामने वखाणवानी जे साहजिक वृत्ति ते साथे आ स्वभावनो संबंध छे. एम होवुं पण असंभवित नथी के मनुष्यजातिना इतिहासमां पराभिप्रायने सारो मानवानो जे दीर्घ अभ्यास तेथकी पण परस्तुति आदिने शुभ मानवानी परंपरित वृत्ति प्राप्त थई होय. गमे तेम हो पण जीवनना अनुभवमां बाळकने बहु वे'लुं समजवामां आवे छे के पोताना सुखनो केटलो आधार पोतानां मावाप, शिक्षक, साथे रमनार, इत्यादिना सारा अभिप्राय उपर रहे छे.

अभिमान, अहंता.—आत्मसंबद्ध एवी आ वृत्तिनो अंतिम क्रम "हुं कोईक छुं" एवा भावना उद्भवमां जणाय छे. पोता उपर प्रीति, पोते अने पोतानां कार्यादिने सारां गणवानी रुचि, ए तो हवणांज कह्युं तेम साहजिक होय छे, अने आत्मप्रपोषण साथे तेनो संबंध छे. पण प्राथमिक रूपमां ते वृत्ति अज्ञात अने अविचारित होय छे. विकसित रूपे तो आ वृत्तिमां स्वविचारना अति गुंफित एवा आंतरव्यापार चाले छे, एटले ते अन्यना अभिप्रायनी प्रीतिनी वृत्ति पछीज दर्शन दे छे.

पण आ अहंतानी वृत्तिने स्तुतिप्रियतानी वृत्तिथी थोडी पुष्टि थती नथी. जेम पोता विषे अन्यजनोए करेली वार्तथी बाळकने पोता उपर विचार करवानुं थई आवे छे, तेम अन्ये करेली स्तुतिथी "हुं कोइक छुं" एवी अहंतानी वृत्ति पण पोषाय छे अने पुष्ट थाय छे. अन्यनां स्तुतिनिंदाथी बाळकने प्रथमे तो पोता उपरज संतोष असंतोष थाय छे. आथी उलटी रीते एम पण अनुभव थाय छे के जे बाळकोने अन्यनी

स्तुति झाझी मळी नथी तेमनामां घणुं करीने अहंता बहु थोडी होय छे. बाळको आम, शरीरपरत्वे तेम चारित्रपरत्वे, पराधीनज छे.

पण जेम जेम बाळकनी शक्तिओ खीलती चाले छे, अने तेने पोताना विषे तथा पोतानां कार्य विषे विचार करवानुं सामर्थ्य आवे छे, तेम तेम तेना मनमां स्वसंतोष अने अहंतानी स्पष्ट वृत्तिओ स्फुरवा मांडे छे. हवणांज कहेवामां आव्युं तेम आत्मप्रपोषणनी साहजिकवृत्तिथकीज अहंताने पुष्टि मळे छे. अने ज्यां प्रसंग अनुकूळ होय छे, ने बाळक पोतानां नित्यकर्ममां जय पामतुं चाले छे, त्यां बाळकने पोता विषे तथा पोताना संसर्गो विषे अनेक अनुकूळ वृत्तिओ थई आवे छे. पोताना संसर्गथी ते हठतुं नथी एवी तेने हींमत आवे छे. शरीरबल, ज्ञान, अने समृद्धिनी मारी पासे वृद्धि थाय छे एम तेने समजाय छे. आ प्रकारे अविरत आत्मभाननी साथे अमुक अमुक अनुकूळ वृत्तिओनो परिचयज थई जाय छे, अने ते वृत्तिओने जरा जरा जुदे जुदे प्रकारे विलोकतां तेमने अभिमान, स्वसंतोष, आत्मश्लाघा, आदि नाम आपी शकाय छे. आवी सुखप्रद वृत्तिओनुं निरंतर जे बळ रहेतुं होय तेना प्रमाणमां ते ते व्यक्तिना सुखनुं माप गणाय छे.*

आत्मविचार अने आत्मश्लाघा ए उभय साथेज वृद्धि पामे छे, अने परस्परने पुष्टि आपे छे, हुंपणानी जे वृत्ति ते आरंभे अस्पष्ट अने साहजिक प्रेरणारूपे होय छे; अने ए वृत्ति पण आत्मविचारना विकासमां मुख्य साधन छे. बीजी पासा जोईए तो, आत्मविचार एक वार स्पष्ट रीते उदय पाम्यो के सुखमय के दुःखमय भावमात्र स्पष्ट थता चाले छे. उदाहरण. कोई दुष्कर कार्य करवाथकी बाळकने प्रथमे जे अभिमाननी वृत्ति थई आवे छे ते समय जतां, पोतानी कोइ महत्तारूपे समजाय छे.

* ए वृत्ति हद पार होय तेने पण आनो आज नियम लागु पडे छे. अतिशय अभिमान ते पण, तेवा माणसना सुखमय जीवननुं एक मुख्य साधन थई पडे छे.

११. ऊर्मिनी केळवणी:—ऊर्मिओने केळववानी व्यावहारिक पद्धतिना विचारमां घणाक वांधा छे. बाळकना बुद्धिवैभवने वधारवानां साधन तेना शिक्षकना हाथमां छे. शिक्षक बाळकनी दृष्टि आगळ पदार्थोने मूकी बतावे, शब्दद्वारा ज्ञाननो संक्रम करे, अने एम साक्षात् रीते तेनी शक्तिओने केळवे; पण तेनी वृत्तिओ उपर तेणे शी रीते असर करवी ? ए तो स्पष्टज छे के कांई पण फळ ऊपजाववुं ते बुद्धिनी केळवणीमांथी ऊपजावी शकाय, पण वृत्तिओमांथी शी रीते ऊपजावाय ? वळी बाळकोनी प्रकृति वृत्तिओपरत्वे परस्पर विभिन्न होय छे तेथी पण ऊर्मिओने केळववानी वात मुश्केल थई पडे छे. त्यारे आपणे जोईए के शिक्षणशास्त्र आ विषयमां शां साधन बतावे छे. ऊर्मिनी केळवणीना मुख्य बे विभाग थाय छे: (१) निषेधप्रधान शिक्षण, (२) विधिप्रधान शिक्षण.

वृत्तिनिरोध:—केटलीक ऊर्मिओ जेवीके भय, अमांडलिक वृत्तिओ, क्रोध, ईर्ष्या, इत्यादि, ते घणी वार जोईए ते करतां अधिक होय छे. आवी वृत्तिओनो केटलेक अंशे निरोध करवो जोईए, अने तेमने योग्य मर्यादामां राखवी जोईए. जुवान माणसोनी वृत्तिओना वेगनो निरोध करवानी वात घणे भागे अति कठिन छे. तेमना जे ऊर्मिविक्षोभ ते बहु बलवान् होय छे. वळी, आपणे धीमे धीमे जोईशुं तेम, जे साधनथी वृत्तिओनो वेग अटकावी शकाय छे, अर्थात् आत्मसंयमन, ते उपर तेमना परत्वे आधार रखाय एम नथी, केम के तेमनी इच्छा हजी जोईए तेटली बलवती होती नथी. बीजी पासा बाळकोना मननी सहजसाध्यताने लीधे, ते ते वृत्तिना प्रोत्साहक उपरथी तेमना अवधानने कोई सारो शिक्षक खसेडी लेई शके तेम पण छे.

अनिष्ट वृत्तिओनो प्रादुर्भाव थाय त्यारे तेमनो निरोध करवाना

यत्न करवा उपरांत कुशल शिक्षक अंदर रहेली तीव्र ऊर्मियोग्यताने पण निर्बळ पाडवा यत्न करशे. केटलीक वार तो तेगे संभाळ राखवानी छे के जेनो निरोध साधवो छे ते वृत्ति बहु तीव्र थई आवी न होय. भयशील बाळकने, केटलेक भागे, भयजनक कारणोथी दूर करवुं जोईए. ईर्ष्यानी प्रकृतिवाळा बाळकने ज्यां ईर्ष्या ऊपजवानो संभव होय त्यां राखवुंज नहीं. अमुक ऊर्मियोग्यता केटलेक अंशे निर्बळ थई जाय छे, अने अभ्यासना अभावे क्वचित् शुष्क पण थई जाय छे. वळी बाळकना मननी बुद्धिमत्ताने वधारी सबळ करवाथी, एटले के तेना ज्ञानमां वधारो करवाथी अने तेनी विचारशक्ति तीव्र करी आपवाथी पण वृत्तिओ निर्बळ पडे छे. आवी योजनाथी, निराधार भय मटी जशे, अने शोक तथा क्रोधनो वेग नरम पडशे. छेवट, कोई अनिष्ट वृत्तिने, तद्विरुद्ध वृत्ति जाग्रत् करवाथी घणी सारी रीते, निर्बळ पाडी शकाय छे के छेक मारी शकाय छे. उदाहरण. पोताथकी अन्यना शुभ गुणो माटे जेटली जेटली मानवृत्ति थई आवे छे तेटलो तेटलो बाळकनामांथी स्वाभिमान ओछो थाय छे. बीजां उपर प्रेम, अने बीजांने पण आपणा जेवुंज लागशे एवी वृत्ति, तेनाथी क्रोध अने ईर्ष्यामां घटारो थाय छे.

ऊर्मिनुं प्रोत्साहन:—परंतु जेने ऊर्मिनी केळवणी कहीए छीए ते तो प्रेम, कर्तव्यता इत्यादि इष्ट अने उपयोगी वृत्तिओने जाग्रत् करी सबल करवानी वात छे. साधारण रीते बोलतां एम कही शकाय के जेम आत्मसंबद्ध वृत्तिओने निर्बळ करवी पडे छे, तेम उत्तम प्रकारना भावने सबळ करवानी जरूर छे. वृत्तिनी वृद्धि अभ्यासथी थाय छे एटले विचारवानी वात एटलीज छे के अमुक ऊर्मियोग्यताने पूर्ण रूपे विकसावी व्यापारवती शी रीते बनाववी? आ विषयमां शिक्षक बे वात करी शके एम छे. (१) बाळकने एवा पदार्थ, प्रसंग, व्यापारप्रकार, नो संसर्ग कराववो के जे थकी अमुक वृत्ति जाग्रत् थाय. उदाहरण. बाळकनी अनुकम्पाने जाग्रत् करे एवी कोई वार्तानें अंगे अमुक पदार्थोनुं तेने ओळखाण करावावामां आवे. विश्वनां अने कळाथी ऊपजावेलां सुंदर वस्तु आदि तेने बतावी तेनी सौंदर्यवृत्तिने जाग्रत् करी शकाय. उदार स्वभावनां वृत्तान्त तेने कही संभळावी नीतिभाव तेना मनमां लावी शकाय. छेवट, गमे ते हेतुथकी पण बाळकने पोतानी शक्तिओ वापरवानुं मन करावीने अनुभव मेळववाने मार्गे मूकी शकाय, के ए प्रकारे ते आनंदनां नवां नवां निदान प्राप्त करे. विजयना आनंदनो स्वाद चाखवाथी, के प्रयासथी प्राप्त करेली स्तुतिनो रस लीधाथी, सुस्त अने लघुसंतोषी, एवा बाळकने पण पोतानी शक्ति वापरवानुं मन पेदा थई आवे. (२) बाळकना मांडलिक संसर्गमां जे कोई आवतो होय ते एक अमुक प्रकारनी वृत्ति निरंतर दर्शावे तो तेथी पण घणो लाभ थाय. पोतानां मावाप, शिक्षक, सहचर, इत्यादि जे जे वृत्तिओ दर्शावे छे ते उपर बाळको बहु विचार करे छे. अनुकम्पानो विवेक करती वखते आ वातनो पुनर्विचार करवामां आवशे. बाळकना हजी खीलता एवा ऊर्मिमय स्वभावने उत्तेजन आपवामां आनो जे उपयोग छे तेनुं सूचन करवुं ए अत्र पूर्ण छे.

वृत्तिओने प्रोत्साहन आपवामां शिक्षके ध्यानमां राखवानुं छे के जेने प्रोत्साहन आपवुं छे तेनोज निरोध न थई जाय. शिक्षणना काममां आ भय घणुं संभाळवा जेवुं छे, केम के निरोध करवाना हेतुथी वृत्तिना दुःखमय स्वरूपनुं वारंवार प्रोत्साहन करवुं पडे छे. आगळ बतावावामां आव्युं छे तेम कोई पण ऊर्मियोग्यता उपर वारंवार टोचा मारवामां आवे तो ते बेरी थई जाय छे. लज्जा आदि वृत्तिओ परत्वे आ नियम अवश्य लागु पडे छे,

आत्मसंबद्ध वृत्तिओनी व्यवस्थाः—आत्मसंबद्ध वृत्तिओ परत्वे शिक्षकनुं काम केटलेक भागे निरोधरूप अने केटलेक भागे प्रोत्साहनरूप छे. आ वृत्तिओ बाळकोमां प्रधानपणे होय छे ए तो निर्विवाद छे. अति उग्र एवी भयशोकादि दुःखमय वृत्तिओनो निरोध करवा माटे माता तेमज शिक्षकने मथवुं पडे छे. विशेष करी अमांडलिक वृत्तिओ-क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या,—तेमनो निरोध अवश्य साधवो पडे छे.

छतां निरोध करवाथीज पतुं नथी. आत्मसंबद्ध एवी जे जे वृत्तिओ छे ते संसारनी अहमहमिकामां पोतानो निर्वाह चलाववा माटे बाळकने अति आवश्यक छे. तेमने निर्मूळ करवानी इच्छा होय तो पण ते निर्मूळ थई शके एवी नथी, निर्मूळ थई शके तो पण तेमने निर्मूळ करवी उचित नथी. क्वचित् एज वृत्तिओ निर्बळ होय अने तेमने प्रोत्साहन आपवानी जरूर होय एम पण बने छे. सुस्त अने बेदरकारी बाळकोने अहंतावाळां बनाववानो यत्न घणो लाभकारी छे. तेमनामां अभिमान, लोभ, असंतोष, अने न चाले त्यां तो स्पर्धा जेवी बीजानो पराजय पमाडवामां आनंद माननारी वृत्ति पण जाग्रत् करवी पडे छे. आथी उलटी रीते घणा अविचारी अने साहसिक बाळकनामां भयनी वृत्ति जाग्रत् करवी ठीक पडे छे.

ज्यां आ वृत्तिओनी स्वाभाविक न्यूनता नथी होती त्यां पण शिक्षकनुं काम ए रहे छे के तेमनो निरोध करवाने बदले तेमने उच्च अभिलाषा तरफ वाळवी, पदार्थोना उच्चभाव गृहवा माटे तैयार करवी. तेमने सारी रीते संस्कार आपी तेमनुं रूप ते बदलवानो प्रयत्न करे छे. उदाहरण. शरीरहानिना भयमांथी शिक्षक तेने चारित्रहानिनुं भय समजावे छे, शरीरथकी स्पर्धा करवानी वृत्तिने मन थकी स्पर्धा करवा रूपे संस्कारी ले छे, भौतिकसमृद्धिना अभिमानने बुद्धिवैभवना अभिमानरूपे

करी ले छे, इत्यादि. आ व्यापार, उत्तम अने आत्मेतर वृत्तिओना अभ्यास भेगोज चाल्यां जाय छे.

आत्मसंबद्ध वृत्तिओनी व्यवस्थाने संबंधे शिक्षणक्रममां जे अडचणो आवे छे तेनुं स्वरूप, बुद्धिना शिक्षणमां केवा केवा हेतु प्रयोजवा ते संबंधी वर्तमान समयमां जे चर्चा चाले छे, तेमांथी स्पष्ट रीते जणाई आवे छे. स्पर्धा अथवा समानता करवानी वृत्तिनो जे वेग छे तेनी शी व्यवस्था करवी ए शिक्षणशास्त्रनो घणो कठिन प्रश्न छे. आ ऊर्मि पोताना शुद्ध स्वरूप थकी आत्मसंबद्ध अने अमांडलिक वृत्ति छे, अने शाळामां परस्परनी स्पर्धा करतां बाळकोमां ते स्पष्ट द्वेषनुं रूप ले छे ए निर्विवाद छे. पोते जे उपहार लेवो धारे छे तेने लेवा इच्छनार रूपे, जेनी साथे पोताने पोतानुं बळ अजमाववुं पडे छे ते रूपे, सामा माणसने स्वभावथीज पोतानो प्रतिपक्षी मानवाथी बाळक, अज्ञात रीते पण, तेना उपर सविशेष अरुचि अथवा द्वेष राखे छे. आम होवाथी आ वृत्तिना वेगनो निरोध करवो जोईए.

परंतु ए वृत्ति एटली बधी बलवती छे, अने शिक्षणना काममां एना बळनी एटली बधी साहाय्य छे के एने केवळ निर्मूळ करवी पण ठीक नथी. योग्य मर्यादामां रहे, अने स्नेहयुक्त स्पर्धाने रूपे तेमां उदार भाव भळेलो रहे, तो ए वृत्तिनी विद्यमानताथी कशो बाध नथी. ए वृत्ति सामे मो'टामां मो'टो बाध तेनी संकुचित मर्यादा छे तेज छे. उपहार इत्यादि मानचिन्हो परत्वे शाळामां आ वृत्ति व्यापारवती जणाय छे. आम होवाथी सुस्त अने मंद बुद्धिनां बाळकोने ए वृत्ति लागु थती नथी. अने जे चालाक तथा तेज बुद्धिवाळां बाळक छे ते तो सुस्त अने मंद बुद्धिवाळां करतां शिक्षणमां वधारे आनंद मानेज छे एटले, कोई एक उपहार प्राप्त करवो एज सर्वस्व छे एवुं प्रोत्साहन तेमना

आगळ मूकवुं ए तो जमेलाने जमाडवा बराबर छे. आ उपरथी, एक बीजी वृत्तिने निरंतर जागती राखवानी आवश्यकता सिद्ध थाय छे. ते वृत्ति ते स्तुतिप्रियता. आ वृत्ति सर्व उपर सरखी असर करे छे, अने अर्धी मांडलिक अर्धी अमांडलिक एवी होवाथी, स्पर्धा करतां वधारे नीतिमत्तावाळी छे. आम छे त्यारे शिक्षक, शिक्षणक्रमने आरंभे आ वृत्तिनो वधारे उपयोग करे तेम सारुं छे. करेला प्रयत्न, सिद्ध करेली वृद्धि, तेने सर्वदा योग्य रीते वखाणता रहेवाथी, एटले के संपूर्ण वृद्धि नहि पण परस्पर सापेक्ष जे वृद्धि विद्यार्थीओमां जणाय तेने वखाणता रहेवाथी, स्वाश्रय अने स्वसंतोषनी वृत्ति बाळकोमां ऊपजी आवशे. ए वृत्ति ज्यारे पूर्ण विकासे पहोचशे त्यारे बाळकनो बुद्धिसमृद्धि प्राप्त करवा माटेनो उद्योग कोई पण प्रकारना बाह्यप्रोत्साहननी अपेक्षा करशे नहीं.

प्रकरण १२.

गुंफित वृत्तिओ—भाव.

१. अनुकम्पा:— आत्मसंबद्ध अधमवृत्तिओमांथी आत्मेतरसंबद्ध उत्तम वृत्तिओना प्रदेशमां जे जवानुं ते, आपणे जोई आव्या छीए तेम, अनुकम्पानी वृत्तिना विकासद्वारा संभवे छे. अनुकम्पा एटले, ए शब्दनो धात्वर्थ सूचवे छे तेम, कोईने लागे तेवुं आपणने लागवुं, सामाना सरखी वृत्ति अनुभववी. माणसने पोताना मांडलिक संसर्गो (कुटुंब, शाळा, प्रजा) साथे दृढ बांधनार शक्ति अनुकम्पाज छे. एनुं उत्कृष्ट रूप शुद्ध परमार्थ छे ते छे, एटले के पोतानां सुखादिने सामानां सुखादि सारुं अत्यंत तजी देवानी वृत्ति ते अनुकम्पानुं उत्तमोत्तम रूप छे.

आपणी आसपास जे होय तेमनां वृत्ति ऊर्मि आदिनुं प्रतिबिंब ग्रहण

करवानुं जे वळण स्वाभाविक छे तेमांथी अनुकम्पा आदि वृत्तिओ उद्भवे छे. सामा माणसनी वृत्तिनुं, अज्ञात रीतेज, अनुकरण करवुं ते आ वळणनुं सादामां सादुं रूप छे. जेने आवी असर थाय छे ते माणसनुं मन सुविज्ञात रीते सामानी वृत्तिनी भावना बांधतुं नथी के ते उपर विचार करतुं नथी, पण मात्र ते वृत्ति अनुसारज व्यापार करे छे.

आवुं वळण बहु नानी वयथी देखावा मांडे छे. वृत्तिओनी संज्ञा समजवानुं कांईक साहजिक ज्ञानज होय एम लागे छे, तेमज वृत्तिए वृत्तिनो आघातप्रत्याघात थतो होय तेम स्मिते स्मित इत्यादि वृत्तिओ सामसामे आपवा लेवानो पण स्वभावज होय एम जणाय छे.* परंतु नानाप्रकारनी वृत्तिओ अने तेमनी बाह्य संज्ञाओ एटले के तेमना अनुभाव तेनो संबंध बेसाडता पूर्वे कांईक अनुभवनी अपेक्षा रहे छे. ए अनुभाव प्राप्त थाय छे एटले बाळक पोतानी मेळेज एक मंत्रनी पेठेज, पोतानी आसपासनां माणसोनां हर्ष, चिंता, निराशा, आदिमां भाग लेवा मंडे छे. अनुकरणनी कोई स्वाभाविक शक्ति ते ते अनुभवानुसार बाळकने अनुकरण करावे छे एम लागे छे. एकना एकज प्रकारनी वृत्ति जेमनामां जणाती होय एवां घणां माणस बाळकनी आसपास होय त्यारे तेने पण तेमनी वृत्ति जेवीज वृत्ति धारण करवानुं मन थाय छे. रमुजवाळां कूदतां बाळकोना टोळामां कोई बाळकने मूकवामां आवे तो ते पण रमवा ने कूदवा लागे छे. क्रोध अथवा साश्चर्य-भक्तिनी वृत्ति आखा वर्गमां फेलाई जाय छे, जेमके कोई एक शाळामां अथवा आखी प्रजामां, ते आवुं जे बलवती वृत्तिने प्रतिबिंब पमाडनार वळण तेनुंज उदाहरण छे. आने वृत्तिनो चेप एम कहेवाय छे.

* बाळकने आवुं ज्ञान साहजिक होय छे एम मानवानुं ए उपरथी कारण मळे छे के स्मितादि साथे जोडायला आनंदादिनो पोताने परिचय थता पूर्वे पण बाळक पोतानी मातानुं स्मितवदन जोतां स्मित करे छे.

आविर्भाव पामेली वृत्तिना अनुकार करतां पण, ज्यारे परिपुष्टरूपे जणाय छे त्यारे अनुकम्पा कांईक अधिक छे. एवी अनुकंपामां बीजा माणसनां सुख अथवा दुःखनी स्पष्ट भावना होय छे, अने ते सुखदुःखने आपणां करी लेवानुं वळण पण होय छे एटले के आपणने ते सुखदुःख भोगवनार रूपे थवानी इच्छा थाय छे. ए वृत्ति बीजाने माटे तेम बीजाना जेवी वृत्ति छे. बीजाना आंतर अनुभवनी मानसिक भावना अनुकंपामां होय छे एटले अंशे ते बीजाना मनना ज्ञान साथे संबंध राखे छे; पण ए ज्ञान करतां ते अधिक छे केमके ज्ञानथी आपणे दुःखनी विद्यमानता जाणीए खरां, पण तेमां प्रवेश करीने दुःख खमनार साथे खमवा लागीए एवुं बने नहीं. अनुकम्पा विषे बोलतां आपणुं लक्ष घणुं करीने दुःख उपरनी अनुकम्पा उपर रहे छे तथापि सुखदुःख उभय प्रकारनी अनुकम्पानो एमां समास जाणवो. अनुकम्पा पामवी एटले रडतां साथे रडवुं अने हसतां साथे हसवुं.

अनुकम्पाना भिन्न भिन्न अंश होई शके छे. संकटमां पडेला कोई माणस उपर आपणने अनुकम्पा आवे छे, पण क्षण पछी तेना दुःखनी वात वीसारे पडी जाय छे. अन्यजनोना आनंदपरत्वे पण एमनुं एमज थाय छे. आवी जे क्षणिक अनुकम्पा तेनो चारित्रपरत्वे कशो उपयोग नथी, केमके एनाथी व्यवहारने असर थती नथी. खरी अनुकम्पा तेज कहेवाय के जेमां आपणे, अनुकम्पानो जे विषय होय ते रूप घणा समय सुधी थई जईए अने तेनुं दुःख आपणुंज दुःख होय ने तेमांथी छूटवा आपणे प्रयत्न करीए तेवा प्रयत्न आदरीए. दया, आर्द्रभाव, अथवा परमार्थ, तेमां अन्य साथे आ प्रकारे एकता पामवी एज तत्त्व छे. अनुकम्पानुं आ स्वरूप, एकवृत्तिमात्रनुं लाभालाभनिरपेक्ष वेग रूपे स्थिर थवुं, कोई माणसनुं दुःख दूर करी सुख वधारवा प्रयत्नपरायण थवुं,

एज अति उत्तम नीतिमत्ता अने सद्गुणवाळी प्रकृति अर्थात् चारित्र तेनुं निदान छे एम आपणे जोईशुं.

२. अनुकंपानो व्यापारक्रमः— अवलोकन करीने वृत्तिना अनुभवनो अर्थ करी लेवामांथी, बीजां माणसनां सुखदुःख उपर अनुकम्पा पामवानी आ वृत्ति ऊपजी आवे छे. (१) पहेलो क्रम अवलोकन छे. जो बीजानां हर्षशोकथी आपणे आपणी जातने असर करवी होय तो, वदनना विकार, वाणिना विकार, इत्यादि उपर लक्ष आपवुं जोईए.* मो'टी वयनां माणसो साथे अनुकम्पा पामवा सारुं तो बहु सूक्ष्म अवलोकननी जरूर पडे छे, केमके तेमने तेमना अनुभाव दबावतां आवडे छे. (२) बीजो क्रम ए छे के आवी रीते जाणेला अनुभावनो, आपणने जे अनुभव ऊर्मिओपरत्वे थयो होय तेनुं स्मरण करी तेने आधारे, अर्थ ऊपजावी लेवो. ज्यारे कोई बाळकना जयपराजय उपर आपणने अनुकम्पा थाय छे त्यारे ते आपणा पोताना तेवाज अनुभवना स्मरणद्वारा थाय छे. ज्यां बीजांनां सुखदुःख, आपणा अनुभवमांथी स्वसदृश कोई वातनुं स्मरण करावी शकतां नथी; त्यां आपणे समजी शकतां नथी अने तेथी अनुकम्पा पण पामी शकतां नथी. (३) छेवट अनुकम्पाना उत्तम प्रकारमां संयोजक कल्पनाव्यापार पण आवे छे. अन्यजनोनां हर्षशोकादि आपणां हर्षशोकादि साथे सर्वांशे क्वचितज मळतां आवे छे. आपणा जाति अनुभवनां तत्त्वोने सुधारी, वधारी, पुनःसंयोजी, अने सामानी वृत्तिनो अनुभव ऊपजावी लेवो पडे छे. कदापि अनुभवेली एवी स्थितिनी कल्पना करवी पडे छे, अने ऊर्मियोग्यतामां जे आपणी तथा तेनी वच्चे तारतम्य होय तेने लीधे लागणीनी न्यूनाधिकता होय ते पण कल्पी लेवीज पडे छे.

* मनुस्मृतिमां एक श्लोक आ प्रसंगने अनुकूळ छे:—

आचारैरिंगितैर्गत्या चेष्टया भाषणेन च ।
नेत्रवक्त्रविकारैश्च ज्ञायतेऽन्तर्गतं मनः ॥

३. अनुकम्पानां तत्त्वः—अनुकम्पाना व्यापारना आटला टुंका वर्णन उपरथी अनुकम्पावाळी प्रकृतिनां मुख्य मुख्य तत्त्वोनुं स्वरूप आपणे समजी शकीशुं. (१) ज्यां विप्लावक अने विशाल मर्यादावाळी अनुकम्पा जणाय छे, त्यां ऊर्मियोग्यता एटले के हर्शशोक पामवानी नानाप्रकारनी तीव्र शक्ति विद्यमान होय छे. बीजांनी साथे गाढ, तात्कालिक, अने समग्र अंशे अनुकम्पा पामवी एथी एम जणाय छे के आपणने पोताने तेवा अनुभव घणा थया छे अने आपणे तेमने तुरत स्मरी शकीए छीए.* (२) उत्तम ऊर्मियोग्यता जोईए एटलुंज नहीं पण अवलोकन करवानी तात्कालिक अने सूक्ष्म शक्ति जोईए, बीजा माणसोना अनुभाव तुरत तुरत समजवानुं चातुर्य जोईए. आ वातनो प्रथम वातमां समास थाय छे एम न धारवुं. उग्र ऊर्मियोग्यताने अनुषंगे मननी आंतरवलोकननी स्थिति वारंवार दीठामां आवे छे, आपणी पोतानी वृत्तिओनोज विचार कर्यो करवो, आत्मा (पोते) अने तत्संबद्ध वातोना विचारमां गरक थवुं एवी प्रकृति दीठामां आवे छे. आवी प्रकृति अनुकंपानी विरोधिनी छे. तीव्र अने तीक्ष्ण अनुकंपानी वृत्ति साथे बाह्यपदार्थनां अवलोकन नीरस होवां जोईए, अने सविशेषे बीजांना अनुभाव जोवानो रस, होवोज जोईए. (३) अनुकम्पापरायण प्रकृतिमां कल्पनाशक्ति पण होवीज जोईए. तात्कालिक अने विशाल मर्यादावाळी अनुकंपानो आधार, नवा नवा प्रसंगोमां आपणी जातने मूकी जोवानी, अने आपणा ऊर्मिमय अनुभवने आधारे नवी नवी ऊर्मिओने जोडी जोवानी, कल्पनाशक्ति उपरज रहे छे. आ प्रकारनी अनुकम्पाप्रधान कल्पनाने अभावे, गाढ वृत्तिओ अनुभवनारा अने सूक्ष्म अवलोकन करनारा एवा माणसो पण सामानी वृत्ति समजवे मंद रही जाय छे.

* स्मरणशक्तिना तारतम्यथी फेरफार पडे छे पण तेनो अत्र हीसाब गण्यो नथी.

अनुकम्पानी आवी विधिरूप सामग्रीनुं वर्णन कर्युं. हवे निषेधरूप सामग्रीनुं पण थोडुंक विवेचन करीए. प्रथमथकी मन कोई वातमां रोकायलुं होय एवी स्थिति अनुकम्पानी विरोधिनी छे. चंचलतामांज प्रधान रस (जेवो बाळकोमां घणुं करीने दीठामां आवे छे), बुद्धिमत्ताना के कोई कळाना व्यापारमां नितान्तग्रस्तता, ए निकट अने गाढ अनुकंपानां विरोधी छे. छतां जे सर्वोपरि मानसिक अंतराय अनुकम्पाने रोधी शके तेवो छे ते तो अनुकम्पा विरुद्ध कोई वृत्ति जेवी के सामानां अभिभवादिथी संतोष, तेना सुखनी ईर्ष्या, इत्यादि, तेनी विद्यमानता छे ते छे. एकंदर जोतां एम समजाय छे के हर्ष साथेनी अनुकम्पामां आ आत्मसंबद्ध वृत्तिओ जेटली विघ्नरूप थाय छे तेटली शोक साथेनी अनुकम्पामां थती नथी. सामानां हर्षसुखादिथकी असंतोष अथवा ईर्ष्या ए जेटली वखत दीठामां आवे छे* तेटली वखत सामानां शोकदुःखादिथी खुशी थवानुं दीठामां आवतुं नथी. आम छे माटेज सामां माणसना आनंदमां शुद्ध अनुकम्पा धरवी ए कठिन छे.

४. अनुकम्पानी असरः—अनुकम्पा पामवी ए कांईक आनंदरूप छे कांईक दुःखरूप छे. सामाना हर्षमां भाग लेवो ए शुद्ध आनंद छे. एथी उलटी रीते दुःखीनी साथे दुःखमां भाग लेवो ए दुःखकर छे. ए वात खरी छे के आवी दुःखवृत्तिना मर्ममां गुप्त रीते वहेता प्रेमप्रवाहना आनंदथी ए दुःख कांईक न्यून थाय छे, पण ते दुःखरूपे मटी जतुं नथी.

* दा० बेन कहे छे के सामानां शोकदुःखादिना दर्शनमात्रथीज आपणने स्वाभाविक रीते सारुं लागे छे; अने प्रतीकारमां जे कांई परितोष लागे छे तेनुं निदान आपणी प्रकृतिना आ स्वरूपमांज छे. परंतु आ मत वास्तविक ठर्यो नथी (जुओ माइन्ड वोलुं. १ पत्र २८५,४२९; वा. ३. पत्र ४१५,५६२). गमे तेम हो पण शिक्षण थकीने उच्च सहवास थकी आवा परितोषनी मर्यादा बहु संकोच पामे छे.

अनुकम्पानो वास्तविक आनंद तो जेने अनुकम्पा थाय तेने थाय छे ते करतां जेने माटे अनुकम्पा थाय तेने वधारे थाय छे. आनंदी बाळकनो आनंद पोतानी मातानी अनुकम्पाथी द्विगुणित थाय छे; दुःखी बाळकनुं दुःख तेनी अनुकम्पाथी ओछुं थाय छे. आनंदमां सरूपतामय कोई तत्त्व ऊमेरीने अनुकम्पा आनंदने वधारे छे, अने दुःखमां आश्वासनानुं तत्त्व ऊमेरीने दुःख हलकुं पाडे छे.

पदार्थादिसंबंधे आपणा जे विचार अने निश्चय होय तेमने वधारे गाढ बनावी वधारे दृढ करवानुं पण अनुकम्पाद्वारा बनी आवेछे. सफल प्रयत्नथी आनंद थतां बाळकने पोता विषे बहु उत्तम अभिप्राय आवी गयो होय, तो ते आत्मपरितोषनी वृत्ति पोतानी माता के पोताना शिक्षकनी स्तुतिथी तेनामां दृढ थई जाय छे. मनुष्य तेम पदार्थ सर्व माटेनी तेनी रुचि, तेने मानपूर्वक आश्चर्य लागवानी वृत्ति, तेना नीतिमय भाव, ते सर्व वृत्तिओमां बीजां सभागी छे एम जाणवाथी ते दृढ थाय छे. आपणने जे जे वृत्तिओनो नित्य परिचय छे ते बधी आ रीते, अनुकंपाना आधारथीज टके छे.

अनुकम्पा पामवी ए घणे भागे एक प्रकारनो विनिमय छे. कोईनी अनुकम्पा पाम्याना हर्षथी अनुरूप वृत्ति ऊभी थाय छे. कोई माणस आपणने बदलामां कोई पण प्रकारनी ऊर्मि अर्पे नहीं तो तेना उपर दीर्घ काळ सुधी आपणे अनुकम्पा पामी शकता नथी. आम होवाने लीधेज, जे लोक निरंतर पोतानाज काममां मशगुल छे ते झाझी अनुकम्पा पामता नथी.

आवो अनुकंपानो जे परस्पर विनिमय ते आत्मसंबद्ध सुखदुःखना विनिमयरूपे पण होई शके छे, जेम के बे मित्रो पोतानां सुखदुःखनो विनिमय करे छे. वारंवार एम बने छे के उभयसाधारण आनंद अथवा

दुःखना सहचररूपे अनुकम्पा प्रवर्ते छे. क्रीकेटनी मेच जीतवाथी आखी नीशाळने जे हर्ष थाय छे, अथवा पोतामांथी कोईना मरणथी आखा कुटुंबने जे शोक थाय छे, तेमां परस्पर अनुकम्पाथकी सर्वसाधारण हर्षमां वृद्धि के सर्वसाधारण शोकमां न्यूनता थती देखाय छे. जीवनमां जेने उंचा प्रकारनुं सुख कहेवाय छे, सुधरेलुं सुख गणाय छे, ते उभयसाधारण वृत्ति अने निश्चय, जेवा के राजकीय विचार, सौंदर्यसंस्कार, इत्यादि तेना परस्पर विनिमय रूपज होय छे. कोई शाळामां अथवा आखी प्रजामां सर्वसाधारण एवा कोई अभिप्राय, अथवा अमुक प्रकारनुं चारित्रबल, इत्यादि टकावी राखवामां आवी परस्परविनिमयमां प्रयोजाती अनुकम्पा बहु उपयोगी साधन छे.

अनुकम्पाना स्वरूप विषे जे कहेवामां आव्युं छे ते उपरथी एम फलित थाय छे के तप्त अने गाढ अनुकम्पा कोई बन्ने वचे थवी एनो आधार कोई विशेष कारणो उपर रहे छे. उभये अनुकम्पायोग्य स्वभावनां होय एटलुंज पूर्ण नथी, ते उपरांत विशेष कारणो होवां जोईए.

(१) प्रथम एकंदर प्रकृतिनी अने ऊर्मिमय अनुभवनी अमुक समानता होवी जोईए. वय, प्रकृति, रसिकता अथवा जीवनप्रकार, तेमां बहु भिन्नता होय तो अनुकम्पा बंधाती नथी. वयोवृद्धने जे वृत्तिओ थई आवे छे, ते अनुभवरहित एवां अल्पवयनांने अपरिचित होवाथी, अल्पवयवाळां ते वृत्तिओ साथे अनुकम्पा पामी शकतां नथी; तेम वयोवृद्ध पण अल्पवयनी वृत्तिओथी परिचित छतां, अल्पवयवाळां उपर जोईए तेटली अनुकम्पा धरतां नथी.

(२) केटलोक नित्य परिचय, अने सरखो अनुभव पण जोईए. कोई बे जण नित्य वारंवार भेगा न थाय तो परस्परनी वृत्तिओनुं सूक्ष्म ज्ञान मेळवी शके नहीं. आ उपरांत बीजो लाभ ए छे के सहवासथी, उभयने

समान बाह्यसंसर्गो, हर्षशोकनां समान कारण, लागु थाय छे. एकज घरमां के एकज शाळामां रहेतां बाळको घणे भागे एकनी एकज वातमां हर्ष माने छे, एकनी एकज यंत्रणाने आधीन होय छे. आम होवाथी ते एक बीजानी वृत्तिनां सभागी थाय छे, अने अनुकम्पा आपे छे तथा ले छे. नित्य संसर्गमां रहेनार माणसो परस्परना प्रतिस्पर्धी थवा लागे छे ए वात पण नित्यसंसर्गना लाभ गणती वखते, लक्षमां लेवानी छे. एक एकनां दुःखादि माटे बाळकोने थोडुं लागे छे तेनुं आ पण एक कारण छे; केमके ते, एक एकने, समान लाभ प्राप्त करवाना प्रतिस्पर्धी रूपे समजे छे.

(३) त्रीजी वात अमुक व्यक्ति उपर प्रीति ए पण छे. जे कोई वात थकी एक माणस पासेथी बीजा माणस प्रति प्रीतिनी वृत्ति प्राप्त कराती होय ते वात पण, जे तादृश अवधान उपर अनुकम्पानो आधार छे, तेने जाग्रत् करी शके छे; अने वळी प्रीतिनी वृत्तिने लीधे प्रीतिपात्रना उपर अनुकम्पा सहजे थई आवे छे. जेने आपणे वात्सल्य अने प्रेम कहीए छीए तेमां अभिरुचि अथवा आनंदप्रद मानभाव अने अनुकम्पानो अभियोग आ उपरथी थई आवे छे. मृदुभाव, उपहारवृद्धि, मानपूर्वक आश्चर्य, ए आदिने सामानामां जाग्रत् करवां एज तेनी अनुकम्पा आकर्षवा बराबर छे. आथी उलटी रीते अनादरगर्भित मान, एटले के जेमां मृदुभावनो अंतःप्रवाह होय नहीं तेवुं मान, ते अनुकम्पा जाग्रत् करवाथी प्रतिकूळ छे.

५. अनुकम्पानी वृद्धिः—अनुकम्पाना स्वरूप अने कारणनी आटली चर्चामांथी एटलुं जणाय छे के, एकंदर जोतां, अनुकम्पानी वृत्ति बीजी वृत्तिओ करतां मोडी विकसे छे. आगळ कहेवामां आवेलुं छे के स्मिते स्मित, अश्रुए अश्रु, आपवानी प्रेरणा तो साहजिक रीतेज होय छे.

पण आवी साहजिक प्रवणताने अनुभव तथा अभ्यासथी विकास पमाडवानी अपेक्षा रहे छे. पूर्ण अने सुविज्ञात पक्व रूपे अनुकम्पा, सहानुभाव, ते बीजाने माटे दयानी अथवा तेमनां दुःखथी दुःखी थवानी वृत्तिरूपे दर्शन दे छे. शीतोष्ण, श्रम, व्याधि, हानि, इत्यादि शरीरसंबद्ध परिचित वृत्तिओ अने निराशा, भय इत्यादि सादी ऊर्मिओ, ए प्रकारना दुःख उपर प्रथमे अनुकम्पा थाय छे. बीजां बाळकना दुःखनी कहाणी सांभळतां बाळक उत्साहभंग अने शोकनां चिन्ह अवश्य दर्शावशे. आवी प्राथमिक दया, उतरती पंक्तिनां प्राणीओ के जेमना ऊर्मिविकार सहज रीते स्पष्ट देखाय छे, तेमना उपर घणी ऊपजी आवे छे. एकवीश मासनो एक बाळक, एक कूतरो डुबी गयलो तेने काढतां अने पछी दाटतां जोई घणो रोयो हतो, अने घणा दिवस सुधी तेनी ते वात शोकार्त स्वरे कहेतो हतो. दयाना वेगना परितोष उपरज केटली बधी कहाणीओना रसनो आधार रहे छे ए वात प्रत्येक माताने सुविदित होवी जोईए.*

आरंभमां सामानी वृत्तिना सभागी थवानी शक्ति कांईक संकुचित होय छे. बीजानां हर्षादि जोवाथी बाळकने सारी वृत्ति थाय छे ए तो निर्विवाद छे, पण आ वृत्ति अज्ञात अनुकम्परूपे होय छे, एमां सुखना वेगनुं स्पष्ट प्राधान्य होतुं नथी. आपणे वारंवार एम जोईए छीए के वार्ताओ अने कहाणीओमां बीजाना सुखनी वात आवे तेथी बाळकने जे आनंद आवे छे तेटलो प्रत्यक्ष रीते परसुख जोवाथी तेमने आनंद आवतो नथी, केमके ए वये ईर्ष्यानो वेग हजी सबल होय छे. पण

* यथायोग्य परिभाषाथी बोलीए तो दया छे ते अनुकम्पा करतां कांईक अधिक छे. जे निराधार होई दयापात्र छे, तेना प्रति कोई मृदुभाव, प्रेमभाव, विस्तरवा मांडे छे, ए दयानुं तत्त्व छे अने आ तत्त्व सर्वथा हर्षप्रदज होय छे. मी. हबर्ट स्पेन्सर दयानो वैभव, दयानुं सुख, एमज पोताना लेखमां लखे छे.

दया रूपे अनुकम्पानो अनुभव थते थते ए वृत्ति सबल थाय छे, अने सामाना सुखथी सुखी थवानी जे उच्च वृत्ति तेनो मार्ग थतो चाले छे.

अनुकम्पानी वृद्धि जुदे जुदे मार्गे जोई शकाय एम छे. ए वृत्तिना प्रत्येक व्यापारथी ए प्रकृति दृढ थाय छे, अने अनुकम्पानुं शील बंधातुं चाले छे. आ प्रकारे बनेज छे ए वातनी सिद्धता एटली छे के आ वृत्ति, एम करतां करतां, वधारे निश्चित रीते अने तात्कालिक रीते आविर्भाव पामती चाले छे.

वळी आ शक्ति आ प्रकारे जेम जेम सबल थती चाले छे, अने बुद्धि तथा भावनाशक्तिनी वृद्धि थती चाले छे, तेम तेम बाळकनी अनुकम्पानी मर्यादानो विस्तार थतो जाय छे. कुटुंबमांथी, एटले के बाळकना अने जे लोकोना स्वार्थ साधारण होय छे तेमना संबंधमांथी, अनुकम्पानो आरंभ थाय छे. पण जेम जेम बाळकनी शक्ति विकास पामती जाय छे तेम तेम ते पोतानां कुटुंबी माटे अनुकम्पा धरे छे एटलुंज नहीं, पण रस्तामां रझळता भीखारी उपर तेम बंदीखानामां पडेला गुलाम उपर पण अनुकम्पा लावतां शीखे छे. आ प्रकारे जेने आपणे आर्द्रभाव, परमार्थवृत्ति, एवुं नाम आपीए छीए, तेवी अनुकम्पानी सर्वसामान्य वृत्ति बंधाय छे.

छेवट ए पण लक्षमां लेवुं के अनुकम्पानी वृद्धि साथे तेनी तीव्रता अने गाढतानी पण वृद्धि थाय छे. अनुकम्पानी वृद्धिमां ए अर्थनो पण समास छे. जेम जेम समग्र ऊर्मिस्वभाव विकसतो चाले छे, तेम तेम बाळक बीजानी वधारे गुंफित अने सूक्ष्म वृत्तिओने ग्रहवा समर्थ थतुं जाय छे. पोतानी साथे रमनार तेम पोताने प्रिय एवां जनावर आदिनां जे सादां क्लेषदुःखादि तेना सभागी थवा थकी बाळक आ अनुभव आरंभे छे, अने सुसंस्कारवाळा मनने जे नानाप्रकारना सूक्ष्म सूक्ष्म ऊर्मिप्रकार अनुभवाय छे ते प्राप्त करवामां ते अनुभवनी पर्याप्ति पामे छे.

५. अनुकम्पानो शिक्षणमां उपयोग:— अनुकम्पानो आवेग शिक्षकने अति अवश्य उपयोगनो छे. वृत्ति पोतानो विस्तार करवा वळे छे एवुं जे अनुकम्पानुं तत्त्व तेमां शिक्षणोपयोगी एवां घणां अगत्यनां फळ समायलां छे. एम जे आग्रह करवामां आवे छे के शिक्षके पोते सारी वृत्ति दर्शाववी अने पोताना वर्गमां के पोतानी शाळामां उच्चभाव विस्तारवो, तेनुं निदान, अत्र जे वात दर्शावी तेमांज रहेलुं छे. परिपक्व अने परिपूर्ण रूपवाळी अनुकम्पा रसवाळी पण थई शके छे. शिक्षक पोताना शिष्य साथे विजयी थाय तेनो आधार तेनी अने पोतानी वच्चे परस्पर अनुकम्पा ऊपजावी तेने केळवी टकाववानी पोतानी शक्ति उपर रहे छे. ज्ञान माटे औत्सुक्यनी जे वृत्ति तेने पोताने होय ते वृत्ति शिष्यनामां पण जाग्रत् करवी, पोतानी रसिकता तेनामां रोपवी, ए इत्यादि तेनो उद्देश होवो जोईए अने आ उद्देश सिद्ध करवा सारुं अनुकम्पा शी रीते जाग्रत् थई शके छे ते पण तेणे थोडुं घणुं जाणवुं जोईए. वळी नीतिविकासमां पण अनुकम्पानो प्रधान भाग छे. पोतानी आसपासनां माणसनी नीतिवृत्तिओनुं अज्ञात अनुकरण करवामांथी, केटलेक भागे, बाळकनी नीतिमत्ता घडाती चाले छे. पण आ सर्व करतां आपणे हवणांज जोईशुं तेम जे नीतिभाव तेमां तो अन्य उपर अनुकम्पा एज मुख्य तत्त्व छे. सत्यनी निःस्वार्थ प्रीति होवा पूर्वे बीजांना लाभ अने हक विषे भावना बांधी तेनो अनुभव करवानी शक्ति होवी जोईए. आ बधी चर्चामांथी एम फलित थाय छे के अनुकम्पानी केळवणीनो बुद्धिनी अने नीतिनी केळवणीमां मुख्य अने प्रधान भाग छे.

६. अनुकम्पानी केळवणी.—बाळकोनी प्रकृतिमां जे साहजिक भिन्नता होय छे तेने लीधे अनुकम्पाने केळववानी पद्धतिनो विचार बहु गुंचवाई गयलो छे. ए गुंचवाडाने हाल बाजु उपर राखी माता अथवा

शिक्षकने एकंदरे उपयोगी थाय तेवा एक बे साधारण नियमो चर्चीए. प्रथम तो एज कहेवानुं छे के अनुकम्पा माटेनी जे योग्यता बाळकमां होय तेने यथायोग्य प्रोत्साहन मळवुं जोईए. साक्षात् व्यवहारमांथी अथवा ते न मळे तो कथावार्तामांथी, अनुकम्पाने प्रोत्साहन आपे तेवा पदार्थादिनी योजना थवी जोईए. बीजांना अनुभवनो बाळकने प्रथमथीज परिचय करावववो जोईए. अनुकम्पानी न्यूनता घणी वार अवधाननी न्यूनताने लीधे पण होय छे माटे शिक्षके बाळकने बीजांनी वृत्तिओ उपर अवधान आपतां पण शीखववुं जोईए. विशेषे करी पोतानां कार्यथी बीजांने शी असर थाय छे ते उपर तेने लक्ष अपाववुं. मूर्खता अने अज्ञानने लीधे तथा आत्मपरितोषनी स्वार्थ वृत्तिने लीधे, बाळक जे कार्यो करे छे तेथी बीजाने केवा घा वागे छे, अने केवुं दुःख थाय छे ते तेना लक्षमां आणवुं जोईए. बीजी पासा सारी वर्तणुकनां सारां फळ, तथा तेथी जे आश्वासना अने संतोष बीजांने प्राप्त थाय छे ते पण तेना लक्षमां आवे तेवुं तेने उत्तेजन रहेवुं जोईए. अनुकम्पाथी प्रेरायला वेगने अनुसरवानो एटले के परमार्थनां कार्य करवानो बाळके अभ्यास राखवो. ज्यां तेनाथी बने एवुं होय त्यां दुःख विपत्ति आदि टाळवा माटे तेने प्रयत्न करावववो, पोतानां रमकडां, पुस्तक, आदि आपी देतां बीजाने सुख थतुं होय तो तेम करवानी तेने टेव पाडवी; आ अभ्यास धीमे धीमे चलावववो. पोताना पदार्थादिने वहेंचीने भोगववानी टेव पाडवाथी आरंभ करते करतें, पोते अत्यंत त्याग करी अन्यने भोगववा देवानी, आत्मार्पणनी टेव ऊपजावववी. आ प्रकारें अनुकम्पाना आनंदनो तेने अनुभव थशे, अने तेना चारित्रमां अनुकम्पा पामवानी प्रकृति मुख्य अधिकार पामशे.

बाळकनी अनुकंपानी केळवणीमां अगत्यनी मदद तेना उपर अनुकम्पा

दर्शाववाथी मळे छे. बाळको प्रथमे आत्मसंबद्ध वृत्तिओ अनुभवे छे, अने निःस्वार्थ पारमार्थिकता सुधी पहोची शकतां नथी. प्रथम पहेलां जे अनुकम्पाना व्यापार ते करे छे ते सामेथी प्राप्त थती अनुकम्पाना बदला रूपे होय छे. एटले जे लोको तेमना उपर आर्द्रभाव दर्शावे तेमना उपर ते अनुकम्पा राखे छे. शिक्षक जेम जेम शिष्यप्रति आर्द्रभाव दाखवे छे, तेनां विघ्न, संकट, अने तेने जेमां रस पडतो होय ते सर्वमां सभागी थाय छे, तेम तेम शिष्यना मनमां वधारे अनुकम्पा पेदा थाय छे. शिक्षकनी एम इच्छा होय के बाळके पोताना वृत्तिवैभवनी सीमाए पहोचवुं तो प्रथम तेणे बाळकना वृत्तिवैभवमां भळी जवा मांडवुं. अमुक शिष्य उपरज अनुकम्पा राखवा करतां, सर्व उपर सामान्य रीते आर्द्रभाव राखवाथी हर कोईनी अनुकम्पा सारी खीली शकशे. वृत्तिना बीजा प्रकारनी पेठे, अनुकम्पा पण घणे भागे दृष्टांतथीज शीखाय छे. विवेकवाळा लोकोमां उछरेलुं बाळक पण विवेकवाळुंज नीवडे छे.

७. बुद्धिभाव, जिज्ञासाः—अनुकम्पाना स्वरूपनो विचार कर्या पछी, जे आत्मेतर ऊर्मिओ अथवा भाव सर्वसाधारण एवां अमुक पदार्थविचारादिने अंगे ऊपजी आवे छे तेनुं विवेचन करीए. आवा सर्वमां मुख्य, बुद्धिभाव अथवा ज्ञान अने सत्यने अंगे जे आनंदवृत्ति रही छे ते तथा तदनुषंगी एवी अज्ञान अने असत्यने अंगे जे शोकवृत्ति रही छे ते छे. ज्ञानना अन्वेषणमां आ भाव स्फुरी आवे छे. जुदे जुदे रूपे विलोकतां एनो एज भाव जिज्ञासापरितृप्ति, ज्ञानाधिगमनो आनंद, सत्यभक्ति, इत्यादि नाम पामे छे.

ज्ञानना आनंदनुं पृथक्करणः—पोताना निदानरूप शक्तिने अनुकूळ होय, तेमज स्वसमये प्रवर्तती मगजनी दशाने अनुकूळ होय तो मनोव्यापारमात्र आनंदप्रदज छे. अमुक मर्यादा सुधी सर्व प्रकारनो

बुद्धिव्यापार आनंदप्रद छे. परंतु ज्यारे नूतनतानो ऊमेरो थाय छे, त्यारे ते आनंद अधिकतर थई आवे छे. परिचित पदार्थनुंज अवलोकन करवुं, जाणी वातनुं स्मरण करवुं एमां झाझो आनंद आवतो नथी. एथी उलटी रीते कोई नवीन पदार्थनुं अवलोकन करवुं, अथवा विस्मृत थयली वातनी स्मृति करवी, एमां घणो आनंद लागे छे. आ उपरथी एम सिद्ध थाय छे के, नवीन ज्ञाननी प्राप्ति अने शोध आनंदप्रद छे; तेमां पण ज्यारे नवी वात आपणी जाणीती वातने संबंधे मूकतां वधारे आश्चर्यकारक लागे त्यारे आनंद वधारे लागे छे, केमके ते प्रसंगे आश्चर्यनी आनंदकारक वृत्ति पण अनुभवाय छे. खगोळ अथवा रसायन जेवा नवा प्रदेशमां बाळक प्रथम वार प्रवेश करतां आनंदना तरंग अनुभवे छे.

आश्चर्य अने क्लेषः—परस्पर वैसादृश्यनुं उदाहरण ज्ञानना आनंदमांथी एक बीजे प्रकारे पण मळी आवे छे. ए आनंद पूर्वगामी एवी क्लेषनी स्थिति पछी वधारे सुखरूप लागे छे. अंधकारमां होवुं, अज्ञाननो अनुभव करवो, एथी दुःखकर एवी कोई न्यूनतानी वृत्ति अनुभवाय छे. अज्ञाननो क्लेष जेने अनुभवाय छे एवा बाळकने ज्ञाननो आनंद सारामां सारी रीते रस ऊपजावी शके छे.

ज्ञाननो आनंद लेवा सारुं अज्ञानना भान करतां पण वधारे सारो मार्ग, जे कांई अपरिचित अने अपवादरूप लागतुं होय तेना दर्शनथी जे गुंचवण अने क्लेषनी वृत्ति थई आवे छे ते छे. जे अपरिचित एटले के नित्य व्यवहारथी विलक्षण होय ते, हवणांज बताव्युं तेम, मनने आश्चर्यनी आनंदकारक स्थितिमां पाडे छे. पण आ वृत्तिने जो बहु वधवा देवामां आवे तो ते ज्ञाननी विरोधिनी थाय छे. आश्चर्यकारक एवी वात माटेनी अति उत्कंठाथी, एक प्रकारनो मद चढी जाय

छे, अने शोधकबुद्धि मंद पडे छे. मितस्वरूपे प्रवर्तती आश्चर्यवृत्तिथी वधारे शोध करवानुं प्रोत्साहन मळे छे. परिचित अनुभवना क्रममांथी नवीन वातने जुदी ज राखीने आश्चर्य पोतानो निर्वाह करे छे. पण ए प्रकारे ते वातने भिन्न राखवा सामे जिज्ञासानी वृत्ति जागी ऊठवाथी ए रीते भिन्न राखी पोतानो निर्वाह करवानी वृत्ति उपर अभाव ऊपजी आवे छे. कोई वस्तु उपर सूक्ष्म अने दीर्घ अवधान आप्या छतां पण ते वस्तु पोतानुं आवी भिन्नतारूप वैलक्षण्य तजे नहीं, त्यारे मनमां अमुक प्रकारनो क्लेष थई आवे छे. बलुनना ऊडवा जेवी कोई नवी वात देखतां बाळक प्रथमे आश्चर्य पामे छे; अने क्षण वार आश्चर्यवृत्तिनो परितोष अनुभवे छे; पण तुरतज ते वातनो खुलासो शोधवा बेसे छे अने जो खुलासो न मळे तो मनमां क्लेष पामवा लागे छे. शोध कर्याथी जे अतुल आनंद थाय छे, ते तेनी पूर्वे जे गुंचवण, क्लेष गभराटनी स्थिति थयली तेने लीधे छे.

आश्चर्यनी ऊर्मिः—ऊर्मिओमां आश्चर्य छे ते एक सविशेष स्वरूपवाळी ऊर्मि छे. नवीन अथवा अनअपेक्षित एवी वातथी जे नवाई लागे ते रूपे ए सादामां सादा ऊर्मिविक्षोभनो प्रकार छे. डेकार्ट तेने सर्व ऊर्मिमां प्रथम माने छे अने ऊर्मिविभागमां तेने प्रथम गणे छे, दा. बेन तेने सादी ऊर्मिओ (अपेक्षाजन्य ऊर्मिओ) मां गणे छे; अने प्रो. बंट तेने ऊर्मिविक्षोभनो सादामां सादो प्रकार माने छे. प्रो. प्रीयरना विचार प्रमाणे बाळक जे ऊर्मिनुं स्पष्ट रीते प्रथम पहेलुं दर्शन करावे छे तेमांनी आ एक छे.

नवाई अथवा चमत्कृतिनी वृत्ति करतां विस्मय ए वधारे गुंफित मनःस्थिति छे. जे माटे अवधान संपूर्ण रीते तत्पर नथी एवी कोई अनपेक्षित वातथी जे नवाई लागे छे ते क्षणिक छे. आश्चर्यमां एक पदार्थनी अन्य पदार्थो साथे, अनुभूत विषयो साथे तुलना थाय छे, अने तेमांथी ते उभय वच्चे जे विरोध अथवा वैषम्य होय तेनुं भान थाय छे. जे केवळ नवुं के अपरिचित होय तेथी नवाई लागे, पण तेथी अवश्य करीने आश्चर्य लागी शके नहीं. दा. बेनना मत प्रमाणे नवाई तेम आश्चर्य उभये उदासीन वृत्तिओ छे. केटलेक प्रसंगे आम थतुं हशे खरुं; पण सर्वदा तेमज थाय छे ए वात शंका भरेली छे. नवाईथी जे आचको लागे छे तेथी अवधान अने बुद्धिशक्तिओ संपूर्ण वेगमां

आवी जाय छे, अने तेथी आनंद लागे छे. पण ए आचको बहु प्रक्षोभकारक होय तो तेथी गभराट अने प्रतिकूळ वृत्ति ऊपजी आवे छे.

जे अपरिचित होय तेथकी आश्चर्य थाय ते, घणी वखत, स्पष्ट रीते हर्षकारक ऊर्मिरूपे समजाय छे; केटलाकने " आश्चर्यकारकज रुचिकर " लागे छे ए उक्ति पण तेमांथीज जन्म पामी छे. विरलताने लीधे वस्तुओनुं जे मूल्य कराय छे तेथी पण आश्चर्यनुं आनंदजनकत्व समजाय छे. घणामां घणो निर्वेद ऊपजावे तेवी अनीतिमयतादि वातो पण, तेमां रहेली चमत्कृतिने अंगे जे आनंदकारक आवेग ऊपजी आवे छे ते थकी कांईक अंशे ओछी निर्वेदवाळी लागे छे. आश्चर्यनो जे आनंदजनक आवेग ते वारंवार सौंदर्यादि ऊर्मि साथे मिश्र थई, साश्चर्यभक्तिरूपे परिणाम पामे छे. बीजी पासा भयनी ऊर्मि साथे पण आश्चर्यने, विक्षोभ ऊपजावनार आचकारूपे, निकट संबंध छे. जे केवळ अपरिचित होय तेनाथकी आपणने कांईक भीति लागे छे. कोईनी पण सूचना विनाज बाळकोना मनमां अंधकारनी जे भीति होय छे, तेनो घणुं करीने, ए स्थितिना अपरिचितपणा साथे तथा तेमां जे ज्ञानाभाव होय छे ते साथे संबंध छे. ए वात पण लक्षमां लेवा जेवी छे के प्रोत्साहक के तेथी विपरीत एवी असर अपरिचित पदार्थादिथी थाय तेनो आधार केटलेक भागे भिन्न भिन्न प्रकृति उपर पण रहे छे.

आश्चर्यनी वृत्ति विषे आटली जे चर्चा करी तेमांथी समजाशे के बुद्धिजन्य ऊर्मिओ साथे एने कोई खास संबंध छे. सादी चमत्कृति रूपे ए ऊर्मिमां केटलोक बुद्धिव्यापार, अवधाननी एकाग्रता, रहे छे. आश्चर्यमात्रमां ए पछी, बुद्धिनो जे मूलभूत व्यापार, वैधर्म्यग्रह, ते पण विद्यमान होय छे. आश्चर्य पामतां आपणे, वस्तुओने भिन्न पाडी तेमना वैधर्म्य उपर लक्ष करीए छीए. जाणेली वातनुं साधर्म्य समजी तेने सुविज्ञात ज्ञानराशिमां मेळवी लेवानी, क्षणभर जे अशक्ति ते उपर जेटले अंशे आ ऊर्मिनो आधार छे तेटले अंशे ते अधिक बुद्धिव्यापारने प्रतिकूळ थई पडे छे. प्राकृत लोक जादुगरना चमत्कारोने पहोळे मो'डे जोई रहे छे ए तेनुं उदाहरण छे. पण जिज्ञासापूर्ण मनने तो एटलेथीज वधारे तपास करवानो आरंभ थाय छे. जेम वैधर्म्यग्रहमांथी साधर्म्यग्रह थई आवे छे, तेम आश्चर्यना आनंदजनक आवेगमांथी ज्ञानाधिगमनो आनंद ऊपजे छे. छेवट, आ ज्ञानाधिगमनी जे साधर्म्यग्रहरूपक्रिया ते पोते पण आश्चर्य जेवीज आनंदजनक छे एम आपणे हवणां जोईशुं.

८. **साधर्म्यग्रहनो आनंदः**—प्रत्येक प्रकारना बुद्धिव्यापारने अंगे पोतपोतानो सविशेष आनंद तो रहे छेज. पदार्थ अथवा विचारने

परस्परथी भिन्न करी तेमना वैधर्म्यनुं जे ग्रहण करवुं तेमां पण एक जातनो अवाच्य संतोष अनुभवाय छे. बुद्धिशक्तिनो जेमां वधारे खप पडे छे एवा झीणा झीणा भेद शोधी लेवानो व्यापार ते पण जो श्रमावह न होय तो स्पष्ट रीते आनंद ऊपजावे छे. साधर्म्यग्रहनी शक्तिनो व्यापार एटले के अनेक प्रकारनो वैधर्म्यमां साधर्म्य शोधी लेवानी शक्तिनो व्यापार एथी पण अधिक आनंद आपे छे. अति विभिन्न के विदूर एवां विचार, भाव, पदार्थ, आदिने उपमादिद्वारा संयोजनार कवि आ आनंद सारी रीते ऊपजावी शके छे. नवी वातो समजवामां आ प्रकारनो केटलोक आनंद मळी आवे छे, अने ते नवी वातनी अपरिचितताना प्रमाणमां वधारे ओछो थई आवे छे. विचारव्यापारना जे वधारे क्लिष्ट व्यापार छे (सादृश्याधिगम कारणान्वेषण इत्यादि) तेने अंते पूर्ण मानसिक आनंद अनुभवाय छे.

ज्ञानाधिगमनो आनंदः—ज्यां मन कोई नवा सत्य अथवा नवी वस्तुस्थितिने शोधतुं होय तेवा दीर्घ व्यापारमां आ आनंद पूर्णरूपे अनुभवाय छे. नवा ज्ञाननी अन्य पासेथी करेली प्राप्ति, तत्पूर्वे अज्ञान अने क्लेषनी दुःखकर दशा गई होय तथापि, पोते जाते ते ज्ञान शोधी लीधुं होय तेना जेटलो आनंद ऊपजावी शकती नथी. भूमितिना कोई प्रमाणने पोतानी जाते सिद्ध करी लेनार बाळकने जे आनंद आवे छे ते आनंद ते प्रमाणनी सिद्धता अन्य पासेथी समजनारने नथी आवतो. जाते ज्ञान मेळवी लेवामां मननी समग्र शक्ति जाग्रत् थाय छे. विचारनी श्रेणिओ त्वरा थकी मनमां जा आव करे छे. अने एकंदरे बुद्धिविक्षोभनो प्रताप सर्वत्र व्यापी जाय छे, वळी अमुक साध्य ने साधवाना एकताना आभासनो पण आनंद एमां ऊमेराय छे. तेमां कांईक अवरोध आवे तो वळी शक्तिओ वधारे उद्दीप्त थाय छे, ने आनंदमां

वधारे रस पडे छे. अंते विघ्नपरम्परानें उपहत कर्यानो, साध्य सिद्ध कर्यानो, पूर्ण विजयनो आनंद अनुभवाय छे.

ज्ञानवत्त्वनो आनंदः—ज्ञान प्राप्त थया पछी तेनी विद्यमानतानें अंगे अमुक सामर्थ्य होवानुं भान रहेवा रूप आनंद उद्भवे छे. कोई नवी प्राप्तिथी पोतानी समृद्धिमां वधारो थयो छे एवुं मनने भान थाय छे; अने ते नवी प्राप्ति अमुक सामर्थ्यना निदानरूपे समजाय छे. अज्ञात अने अगम्यनो प्रदेश एटले अंशे, आपणे माटे, न्यून थयो, आसपासना विश्वमां भळवामां आपणने एटलुं नवुं सामर्थ्य प्राप्त थयुं; एक वार अगम्य हती ते वात हवे गम्य थई, ज्ञानना अनेक कटकाने एक सूत्रे बांधवानुं साधन मळ्युं; एम जे नवी प्राप्ति ते अधिक व्यापारयोग्यतारूपे आनंदप्रद थाय छे. अमुक करवानी के अमुक साधवानी शक्ति अर्पे छे माटेज "ज्ञान एज सामर्थ्य छे." अमुक ज्ञान छे ए भानथी वखत आवतां ते प्रमाणे करवानुं सामर्थ्य छे एवो विश्वास थई आनंद ऊपजे छे.

९. बुद्धिभावनाना बीजा प्रकारः न्यायानुसार वृत्तिओः—ज्ञानाधिगम अने ज्ञानवत्त्वनें अंगे जे आनंद ऊपजे छे ते उपरांत बुद्धिव्यापारनी केटलीक वृत्तिओ ऊपजी आवे छे. तेमने न्यायानुसार वृत्तिओ कहीए. आपणे जोयुं तेम शंकामात्र मनना विरोधनी कांईक क्लेषकारक दशा छे, श्रद्धा छे ते मननी शान्तिनी सुखकारक दशा छे. आपणा अनुभवथी विरुद्ध एवा निर्देश विरोधनुं भान करावे छे, जे आपणा अनुभवने अनुरूप होय छे ते आनंदथी श्रद्धाविषय थई पडे छे.

निर्देशनी एकरूपता अने भिन्नरूपताथी जे वृत्तिओ ऊपजे छे ते आ वृत्तिओ साथे निकट संबंध धरावे छे. भिन्न रूपवाळा बे निर्देश, विरोध ऊपजावी, मनने क्लेष पमाडे छे, एकरूप निर्देश समता ऊपजावी

मनने संतोष ऊपजावे छे. मनोविग्रहनी एटले विरोधनी दशामांथी समतानी दशामां जवामां आनंद लागे छे. देखीता विरोधनुं समाधान करी लेवामां नवा ज्ञानने जे जूना ज्ञानथी ते विरुद्ध जणाय छे तेनो साथे मेळवी लेवामां शास्त्रीय शोधना रसनो मुख्य आधार रहेलो छे. सत्य उपर मान राखवानी जे वृत्ति तेमां निर्देशनी एकरूपता तेम निर्देशनुं याथार्थ्य ए उभय माटे माननी जे वृत्ति तेनो पण समास छे. प्रामाणिकता अथवा सत्यपरायणताने अनुषंगे जे नीतिभावना ऊपजे छे तेना सरखी आ वृत्ति छे.

बुद्धिजन्य ऊर्मिओनुं विवेचन जुदा जुदा लेखको जुदी जुदी रीते करे छे. वॉक मेन वगेरे केटलाक आ मथाळा हेठळ जुदा जुदा विभाग स्वीकारता नथी. नोलोस्की एम माने छे के बुद्धिजन्य ऊर्मि ते स्पष्ट सत्यग्रहरूप नहीं एवी श्रद्धा अश्रद्धानी स्थितिनुं नाम छे. जे वात बीजाने संतोषकारक रीते साबीत करी आपी शकाय तेवी न होय ते विषे आपणे एम बोलीए छीए के "मने आम लागे छे" तेनो खुलासो पण आ उपरथी थई शकशे. परंतु बुद्धिजन्य ऊर्मिना आवा विवेकथी यद्यपि एटली वात बहार आवे छे के उग्र वृत्ति अने बुद्धिव्यापार ए परस्पर विरोधी छे, तथापि बुद्धिजन्य ऊर्मिनी यथार्थ मर्यादा आ विवेकथी समजवामां आवती होय एम लागतुं नथी. न्यायपूर्वक स्पष्ट रीते कोई सत्य गृहवानी साथेज अमुक वृत्ति पण विद्यमान होय छेज. बीजी वृत्तिओनी पेठे बुद्धिवृत्तिओनां पण निकृष्ट उत्कृष्ट रूप होय छे. बुद्धिवृत्तिओमां वेट, बधा भाव, सौंदर्य, बुद्धि, नीति, धर्म, सर्व भावनो समास करे छे.

१०. बुद्धिवृत्तिनी वृद्धिः बाळकोनुं कौतुकः—घणी नानी वयथीज बाळको नवी वातो अने नवा खुलासा शोधी लेवामां आनंद माने छे. एमना कुतूहल अथवा कौतुकमां जे तीव्रता होय छे तेथी आ वात सिद्ध थाय छे. नवुं ज्ञान प्राप्त करवानो आनंद, इच्छानुं प्रबल रूप धारण करी कौतुकरूपे जणाय छे. तेमनी चारे पासा जे वातो थयां जाय छे तेमनी नूतनताथीज तेमना कौतुकनो वेग वधे छे. परंतु आरंभे आ कौतुक थोडी मर्यादावाळी अने निर्बळ वृत्ति रूपे होय छे.

त्रण चार वर्षनो जे बाळक मावापने अनेक प्रश्नो पूछी पजवे छे ते पोते जे पूछे छे ते शोधी काढवा झाझो यत्न करशे नहीं. एवुं कौतुक मात्र क्षणिकज होयछे अने तृप्त करवामां न आवे तो मनमां औत्सुक्य ऊपजावतुं नथी. वळी एवुं कौतुक अल्पमर्यादावाळुं रहे छे; छेक पासे होय, स्वतः आकर्षक होय, के पृच्छकना अंगनां होय, तेवां पदार्थादि विषयेज ते कौतुक उद्भवे छे.

बाळकपणमां जणाता विविध गुणादिनुं वधारे वखाण करनारा, तेम ते गुणादिना दर्शनने "अहंत्व" वृत्तिना दर्शन रूपे माननारा उभये, बाळकोना कौतुकनुं स्वरूप घणे भागे यथार्थ समजता नथी. ए उभयना समजवामां नथी के ए वृत्तिना विकासना बे क्रम रहेछे. प्रथम क्रम सादी जिज्ञासामात्र रूपे जणायछे; एमां एवुं अस्पष्ट भान होयछे. वस्तुमात्रनां कारण अथवा खुलासा होयछे, पण अमुक बातनुं अमुक कारण योग्य छे के नहीं ते जाणवा जेटली बुद्धि होती नथी. आवी जे जिज्ञासा ते तो गमे तेवा कोई एक खुलासाथी पण तृप्त थई जायछे. बीजो क्रम वधारे सुरेख जिज्ञासानो छे; एमां अमुक बुद्धिविकास होयछे अने जे खुलासो आपवामां आवे तेनी परीक्षा करवा जेटली शक्ति होय छे. जे प्रथम क्रम ते धीमेथी आ द्वितीय क्रम भेगो थई जई ते रूपे परिणमे छे.

११. बुद्धिभावनाना प्राथमिक क्रमः— शाळामां अभ्यास करवाने आरंभे बाळकने अभ्यासमां जे रस लागे छे तेनो आधार घणे भागे बीजा लोको ज्ञाननी जे कीमत गणे ते उपर रहेछे. छोकरा तथा छोकरीओने देखाय छे के बधां माणस ज्ञाननो संग्रह करवामां मच्यांछे; निपुणतानो योग्य सत्कार थायछे; जे पोतानो अभ्यास सारो करे तेमनी प्रशंसा थाय छे, अने शिक्षक तथा तेमना सोबती तेमना उपर अभिरुचि राखे छे. आ प्रकारे ज्ञाननें माटे माननी वृत्तिनुं परावर्तन बाळकना मनमां

भासेछे, अने मान तथा प्रतिष्ठा उपरनी पोतानी रुचिना प्रमाणमां बाळकना मनमां ते मानबुद्धि वृद्धि पामेछे के न्यून थायछे. बाळक पोतानो पाठ बराबर करी गयानो अभिमान राखेछे ते एटलाज कारणथी के बीजा माणस ज्ञानने मान आपेछे. आपणें कहीं गया छीए तेम प्रेम अने अनुकम्पानो पण आमां थोडो भाग आवेछे खरो. प्रेमल बाळक पोताना शिक्षकने खुशी करवा इच्छे छे तेथी अभ्यासमां मंडेछे. एटलुंज नहीं पण एने एम मालुम पडे छे के सहवास अने अनुकम्पानो आनंद, अज्ञान रहेवाथी मने मळी शकतो नथी, ते ज्यारे ज्ञान प्राप्त करवाथी हुं मारा शिक्षक साथे वधारे वधारे निकट संबंध भोगवी शकुं छुं त्यारे मळे छे. छेवट व्यावहारिक उपयोगनी दृष्टिथी पण ज्ञान उपर रुचि थशे. जे ज्ञाननो व्यावहारिक उपयोग करी शकाय ते ज्ञानने बाळको वधारे चहायछे. ज्यां आवो उपयोग स्पष्ट जणातो नथी होतो त्यां बाळको ज्ञाननी परवा थोडी करे छे.

१२. बुद्धिभावनानो आगळनो क्रमः— आ प्रकारे परावर्तन पामेली वृत्तिओना बळथी, तेमज बुद्धिना व्यापार तथा ते व्यापारमांज अनुभवातो आनंद तेना स्वादथी, ज्ञाननी शुद्ध अभिरुचि पेदा थाय छे. ज्ञाननो प्रत्येक वधारो नवो नवो ऊर्मिमय उपभोग आपी शके छे; ज्ञाननी शोध, ज्ञाननी प्राप्ति अने ज्ञाननो उपभोग, तेनो नवो नवो आनंद भोगवावे छे. आवा घणा अनुभव एकत्र थवाथी ज्ञानाभिरुचिनी गाढ वृत्ति विकसे छे.

टेवनी असरथी आ वृत्तिनी मर्यादा पण संकोच पामे छे. बाळक अमुक जातना ज्ञाननेज मान आपे छे, जेवांके तेनी पोतानी रसिकताने अनुकूळ होय, अथवा जेने खास रीते पोते प्राप्त करवा इच्छतुं होय. बीजी रीते कहीए तो ज्ञानाभिरुचि एकंदर ज्ञान प्राप्त करवानी इच्छा रूपे

ज रहेतां इतिहास, गणित, आदि अमुक विषय उपरनी रुचिरूपे जणायछे. घणा वखत सुधी जे ज्ञान उपर आयास करवामां आवे ते, घणुं करीने, पोताने खास रुचिकर थई जाय छे, पोतानो लाभ तेमांज छे, पोताने तेमांज रस पडेछे, एम समजाई जायछे. शुद्ध पारमार्थिक ज्ञानाभिरुचि ते आ करतां अधिक छे अने आपणा खास अभ्यासना विषय बहार तेम तेनी अंदर एवुं सर्व प्रकारनुं ज्ञानमात्र प्राप्त करवानी वृत्तिरूपे जणाय छे. एवी वृत्ति थता पूर्वे बुद्धि घणी संस्कारवाळी थवी जोईए. पाकी वयनां माणसोमां पण आ गुण अति विरल छे.

न्यायानुसार वृत्तिओ—जेवी के एकरूपता अने याथार्थ्यनी भावना तेमनो विकास बहु धीमे धीमे थाय छे, अने तेनो आरंभ शाळामां भणवाना समयथी थवा लागेछे. सामां माणसना बोलवामां जे अयाथार्थ्य अने भिन्नरूपता आवे ते पकडवामां बाळको बहु चंचल जणायछे, पण ए चंचलता, सामाने नमाववामां आनंद आवे एवी वृत्तिरूपेज छे, विरोध उपर बुद्धिज अरुचि बतावे तेवी न्यायवृत्ति नथी. आवी वृत्तिओ तीव्र रूपे होवी ए घणुं विरल छे, अने तेमना पहेलां अमुक प्रकारना ऊर्मिसंस्कार प्राप्त थयला होवा जोईए. ए वृत्तिओना विकासने बुद्धिविकास तथा ज्ञानाभिरुचिनी वृद्धि साथे निकट संबंध छे. प्रगाढ ज्ञानाभिरुचिमांथी याथार्थ्य अने एकरूपतानी तीव्र अभिरुचि स्वतः ऊपजी आवेछे; अने अयाथार्थ्य तथा भिन्नरूपताथी जे दोषमां पडाय छे तेनो अनुभव थतां ए अभिरुचि अधिक दृढता गृहे छे.

१३. बुद्धिभावनानी केळवणी:— बुद्धिना शिक्षणनी साथेज ज्ञानने अंगे जे जे ऊर्मिओ उद्भवे छे तेनी केळवणी चाली जायछे. जे बुद्धिशिक्षण सारामां सारुं होय तेमां शुद्ध ज्ञानाभिरुचि अने कौतुकवृत्ति सर्वथा विद्यमान होयज. आ ठेकाणे लक्षमां राखवानुं एटलुंज छे के जेम बने तेम बाळक पासे लेवाना कामने बाळकनी शक्ति अने स्वाभाविक रसिकताने अनुकूळ करी आपवुं, के ए काममांथी पूरेपूरो आनंद

उद्भवे. बुद्धिव्यापार अमुक बातो खोळी काढवी, विघ्नने परास्त करवां—तेमां जे आनंद पडे छे तेनी साथे बाळकने प्रथमे ओळखाण करावबुं. (गमे तेवा आनुषंगिक प्रयोगोथी ए हेतु साधवो) साहचर्यना नियमनो विवेकपूर्वक उपयोग करवो. अभ्यासने अनुषंगे जे जे आवतुं होय ते जेटलुं बने तेटलुं आनंदकारक करवुं के ज्ञानाधिगमना व्यापारमां रस लागे. केळवणीना आरंभे बाळकने, पोताना अभ्यासना पुस्तकना रूपरंगथी पण ते विषय उपर रुचि अरुचि थई आवे छे- शाळाना संसर्ग जेम वधारे आकर्षक होय छे तेम बाळकोनी अभ्यासमां अभिरुचि वधे छे. ज्ञानमां आनंद पडे तेवो रस ऊपजाववामां विरोधना नियमनो पण उपयोग करवो जोईए. प्रथमे ज्ञाननो आनंद एटलो बधो तीव्र होई शके नहीं; पण अज्ञाननी वृत्ति तेनी पूर्वे जाग्रत् करवाथी, आश्चर्य अने क्षोभनी वृत्ति ऊपजाववाथी, प्रबल कुतूहल पेदा करी शकाय, अने ते कुतूहलने तृप्त करवामां ज्ञानाधिगमनो आनंद द्विगुणित रसवाळो लागे. वळी ज्यां बनी शके त्यां बाळकोने ज्ञान पोताने हाथेज शोधी लेवा देवुं के ज्ञानाधिगमना व्यापारनो पूर्ण आनंद तेमना अनुभवमां आवे. वस्तुस्थिति आवी हशे एम धारवानी, तथा कारणो योजवानी, जे बाळकनी वेगवती वृत्ति तेने व्यापार करवानो योग्य अवकाश मळे एम योजना राखवी एज कुशल शिक्षकनुं कर्तव्य छे.

१४. सौंदर्यभाव:—जे त्रण भावनुं अत्र विवेचन करवानुं छे तेमांना बीजा भावने सौंदर्यनी ऊर्मि, सौंदर्यनो आनंद अथवा रसिकतानो आनंद एम कहे छे. आ भावमां अनेक आनंदकारक वृत्तिओनो समास छे. विश्वलीलामां अथवा कळाथी सिद्ध करेलां कार्यमां जे कांई सुंदर, ललित, समतावाळुं, भव्य, हास्यास्पद होय, तेथी ऊपजती वृत्तिमात्रनो आमां समास छे. आ आनंदने अनुषंगे तेमनी विरुद्ध एवी वृत्तिओ—कदरूप, असम, इत्यादिथी ऊपजावेली वृत्तिओ—पण समजवी.

बाह्य पदार्थो चेतन उपर जे संस्कार, चक्षु के श्रोत्र अने सविशेष चक्षुद्वारा, ऊपजावे छे तेने अनुषंगे आ आनंद अनुभवाय छे. पदार्थगत कोई अनुकूळ धर्म के रूपनुं दर्शन के ग्रहण थतां आ आनंद अनुभवाय छे. आवो जे आनंदजनक गुण तेने सौंदर्य एवुं साधारण नाम आपी शकाय छे; जोके आ शब्द अनेक रूपरेखादि के जेमांना कोई एकथी पण

आनंद थई आवे तेनो वाचक छे. उदाहरण. आपणे कोई रंगना सौंदर्यनी वात करीए छीए, त्यां ते रंगनी भभक के शुद्धतानीज वात इष्ट छे; कोई मूर्तिना सौंदर्यनी वात करीए छीए त्यां तेना अवयवोनुं लालित्य अने सौष्ठवज इष्ट होय छे; इत्यादि. पदार्थोनां आवां गुणरूपादि ते सर्वमां साधारण अंश ए छे के तेमनाथी, जोनारने, आनंद ऊपजे छे. आ जे सौंदर्यनिबंधन आनंद तेनामां विशेषता एटलीज छे के पदार्थगत रूपादिना विचार भेगोज ते आनंद ऊपजे छे, दृश्य द्रष्टाना संबंधनी अपेक्षा करतो नथी. माता पोताना बाळक सामुं जोवामां आनंद माने छे, के पैसा भेगा करी राखनार पोताना भंडार जोई खुशी थाय छे, ते शुद्ध सौंदर्यवृत्ति नथी. कान्ट कहे छे तेम सौंदर्यवृत्तिनो आनंद विशुद्ध होवा माटे एटलुं आवश्यक छे के तेमां प्राप्तिनी आशा जेवुं स्वसंबद्ध तत्त्व लेश पण जोईए नहीं.

सौंदर्यनो आनंद शा प्रकारे उद्भवे छे तेनुं आ टुंकुं वर्णन थयुं ते उपरथी ते आनंदना मुख्य स्वरूपनो पण आपणे निर्णय करी शकीशुं. (१) जे बे उत्तम तथा बुद्धिसंबद्ध इंद्रियो छे ते द्वारा ऊपजवाने लीधे, इंद्रियजन्य आनंदथकी सौंदर्यनो आनंद स्पष्ट रीते भिन्न पडे छे, अने ते आनंद करतां वधारे संस्कार पामेला आनंदरूपे जणाय छे. प्रथमे तो ते वधारे शुद्ध एटले के प्रतिकूळ सहकारीथी निर्मुक्त (प्रथमे आशा अने पछी परितृप्ति एवा प्रकारना सहकारीथी निर्मुक्त) होय छे; अने वळी दीर्घकाळ चाली शके छे, तथा नाना रूपे पण होई शके छे.

अधम इन्द्रियोथी जे आनंद ऊपजे छे तेनी पूर्वे अमुक इच्छा होय छे, उत्तम इन्द्रियजन्य आनंदोमां एम होतुं नथी. वळी अधम इंद्रियनी बाबतमां जे दुःख थई आवे ते पण, तेथी ऊपजी शकता आनंदना प्रमाणमां होय छे, पण उत्तम इन्द्रियोमां तो तेवां दुःख वधारे तीव्र होतां नथी. चक्षुरिन्द्रियनेज जोईए तो, श्रम थकी मुक्त थवानी तेनी जे त्वरित शक्ति छे तेने लीधे, दीर्घ काळ सुधीना प्रोत्साहनने ते खमी

शके छे. सौंदर्यसंबद्ध जे बे इन्द्रिय छे तेनी वधारे खाशीअत ए छे के तेद्वारा प्राप्त थयला संस्कार, काळ अने दिक्ना रूपने, अमुक सुखावह आकारे गोठवी शके छे.

(२) बीजुं जे स्वपरू छे ते प्रथमनी साथे निकट संबंधवाळुं छे. जे व्यापारने अनुषंगे आ आनंदो उद्भवे छे ते कोई प्रकारे आवश्यक अथवा जीवननिर्वाहक, एटले के अनामयत्व साचववाना उपयोगना, के गुनाह अटकाववाना उपयोगना, इत्यादि उपयोगना नथी. कोई सुंदर पदार्थने विलोकवामां ते विलोकनमात्रनोज जे आनंद तेज ते व्यापारनुं समग्र फळ छे. कोई कलासाध्य जे फळ होय तेने ऊपजाववामां तेथकी जे आनंद थाय तेज मुख्य हेतु छे. सौंदर्य अने कळामां आवी जे खाशीअत छे ते, प्राचीन काळथी सुंदर अने उपयोगीनो जे विरोध चाल्यो आवे छे तेमांथी स्पष्ट समजाय छे. सौंदर्यजन्य आनंद छे ते, आ प्रकारे जीवितसुखमां चोखा वधारारूपज छे. जीवितना गंभीर व्यवहारोमां ए आनंद कामकाजपरत्वे रमतनो जे संबंध छे तेवा संबंध वाळो छे,—जाते केवळ निरुपयोगी छतां पोते पोतानेज माटे मूल्यवाळो गणाय छे.

आ कारणने लीधेज बुद्धिभावना अने नीतिभावना थकी सौंदर्यभावना भिन्न पडे छे. एमना विषे विचार करनार निःस्वार्थ वृत्ति राखे छे एम तो ए बे परत्वे पण छे, तथापि तेमनो संबंध जे कोई उपयोगी होय, व्यक्तिने नहीं तो मंडलसमस्तने उपयोगी होय, तेनी साथे रहे छे. व्यावहारिक उपयोगथी अत्यंत विदूर एवा घणामां घणा भावनामय सत्यनो विचार पण सौंदर्यभावनाने अति समीप छे. अर्वाचीन समयमां प्रसिद्धि पामेला परिणामवादने अनुसरी हर्बर्ट स्पेन्सर आदि केटलाके उपयोगी अने सुंदर वच्चेना विरोधनो नवोज अर्थ घटाव्यो छे, अने निरुपयोगी एवा पण स्वाभाविक क्रमागत व्यापारने अधीन थई माणसो सौंदर्यादि भावमां निमग्न थाय छे एम मान्युं छे.

(३) सौंदर्यजन्य आनंदनो त्रीजो स्वभाव ए छे के ते अनेक जनथी एकी वखते भोगवी शकाय छे. ए आनंद चक्षु अने श्रोत्र द्वारा प्राप्त

थाय छे, अने ते बे इंद्रियो उपर दूरस्थ पदार्थो पण असर करी शके छे, तथा आ आनंद ऊपजवामां द्रष्टा अने दृश्य वच्चे कोई अमुक संबंध होवो आवश्यक नथी, एटले ए आनंद एकी वखते घणा जनथी भोगवी शकाय छे. आम होवाथी अनुकंपानो विनिमय बनी शके छे, अने तेम थतां आ आनंद बहु प्रगुणित थाय छे.

१९. **सौंदर्यजन्य आनंदनां तत्त्व**:—आगळ कहेवामां आव्युं छे तेम पदार्थोमां विविध प्रकारोना दर्शनथकी सौंदर्यनो आनंद ऊपजी आवे छे; रंगनी शुद्धताथी, रूपना लालित्यथी, गतिना विलासथी, इत्यादि. कोई सुंदर पदार्थथी जे आनंद थाय छे ते, सर्वदा नहीं तो घणे खरे प्रसंगे तो, आनंदानुभवनो एक मिश्र राशि होय, पदार्थगत विविध धर्मानुसार विविध अनुकूळ वृत्तिओनो समूह होय, एम समजाय छे. हवे आपणे सौंदर्यनां आ विविध तत्त्वोनो निश्चय करवानो छे, तथा ते ते तत्त्वानुसार आनंदना प्रकारनो पण विचार करवानो छे.

एकंदर जोतां सौंदर्यना आनंदनां तत्त्वना त्रण मुख्य विभाग करी शकाय. (१) इंद्रियग्राह्य अथवा जड तत्व. भव्य प्रकाश, शुद्ध रंग, एकसरखो शुद्ध राग, अस्खलित परिशुद्ध रेखा, तेमनी असरो एकंदरे आनंद ऊपजावे छे, अने सुंदर पदार्थोनी सुंदरता जेमांथी उद्भवे छे ते जड तत्त्व आवा प्रकारनुं होय छे. दृश्य पदार्थोनुं अने स्वरश्रेणिनुं जे सौंदर्य छे तेनो मुख्य भाग, नाना प्रकारना आनंदजनक संस्कार ऊपजे एवां इंद्रियग्राह्य प्रत्यक्षोना मिश्रण रूप, के रंग, स्वर, अने रेखाना कोई खास अनुकूलतावाळा मिश्रणरूप होय छे.

(२) सौंदर्यजन्य आनंदमां बीजुं तत्त्व दर्शन अथवा आकृतिमांथी उद्भवे छे. दर्शनशक्तिना व्यापारथकी अनेक झीणी झीणी वातोने गृहवी अने ते सर्वने कोई [illegible] नाना सूत्रथी एकरूपताए जोवी, ए

वात साथे आ तत्त्वनो संबंध छे. दृश्य पदार्थोनी बाबतमां तो चक्षु विविध जातिनां आनंदजनक दिग्रूप ऊपजावे छे; रेखाना विविध प्रकार, आकारसौष्ठव, आकारप्रमाण, इत्यादि योजे छे. ध्वनिनी बाबतमां श्रोत्र अनेक प्रकारनां आनंदकारक ताल, गति आदिनुं राग, छंद, स्वर, इत्यादि साथे मिश्रण करी ले छे.

(३) सौंदर्यनो आनंद ऊपजावनार त्रीजुं तत्त्व साहचर्य अथवा भावना कही शकाय. दृश्य पदार्थोथी जे जे सूचन थाय तेथी जे जे आनंद उद्भवे छे तेनो आमां समास थाय छे. विश्वगत प्राकृतिक पदार्थोना सौंदर्यनो घणो भाग साहचर्यजन्य होय छे. कागडानुं काका करवुं ए स्वरूपथकी आनंदकारक नथी, पण प्रियना आगमनरूप शुभसूचक रूपे तेमां आनंद मनाय ले. भव्यतानी जे असर छे ते पण घणे भागे आवी सूचनानोज प्रभाव छे. हिमालयनुं महाशिखर जोतां जे भव्यता लागे छे ते सामर्थ्य, भय अने एकान्तताना सूचमनांथी ऊपजी आवे छे. साहचर्यना बळथी, सुंदर पदार्थो इंद्रियजन्य वृत्तिओने भावना रूपे दर्शावेछे एटलुंज नहीं, पण ते ते ऊर्मिनी भावनामय परितृप्ति पण साधी आपेछे.

सौंदर्यनी असरो उपर साहचर्यनुं जे बळ छे तेनुं सारुं उदाहरण जेने सापेक्ष अथवा सुश्लिष्ट सौंदर्य कहेछे तेनाथी ऊपजता आनंदद्वारा मळी आवेछे. सुश्लिष्ट सौंदर्य एटले जे पदार्थो तेमनाथी सधाता कार्यने सारी रीते अनुकूळ होय, तेनुं सौंदर्य, जेमके कोई एक सारी रीते घडेला सामाननुं इत्यादि. जे उन्नत अथवा भव्य होय तेनां लिंगनी पण अतुल असर ऊपजे छे तेमां साहचर्यज कारणभूत छे.*

* ए साहचर्य कांईक भागे ते ते व्यक्तिना अनुभवमांथी ऊपजे छे, कांईक भागे आखी जातिनी परंपरामांथी क्रमागत होय छे. मी. स्पेन्सर आ बीजा तत्त्व उपर वधारे भार मूके छे.

आ प्रकारे सौंदर्यनां त्रण तत्त्वनो जे विवेक बताव्यो ते सामान्य छे, अने तेना उपर बहु भार मूकवानुं कारण नथी. वास्तविक रीते कहीए तो अत्र जेने आकृतिक तत्त्व कह्युं छे, एटले के एकत्व अने नानात्वनुं आनंदकारक मिश्रण जे तत्त्वनो सार मान्युं छे, ते तत्त्वज आखा सौंदर्यभावनो सार छे. जे ऐंद्रियतत्त्वो छे तेना भान समये पण मनने एक प्रकारना ऐक्यनुं भान रहेछे. शुद्ध रंगनो समूह, सम उपर चालतो राग, सुश्लिष्ट रेखा, ए सर्वमां पण एकतानुं तत्त्व छे. कोई एक सुंदर वांकमां एकता अने परिवर्त उभयनुं मिश्रण छे. हेमहोल्टझना शोध प्रमाणे संगीतमां रागनी सुश्लिष्टतानो आधार, मिश्र थता ते ते स्वरमां रहेला सादृश्य उपरज रहेछे. रंगनी सुश्लिष्टतानो आधार पण नानात्वमां व्यापी रहेली एकताना भान उपरज रहेछे. सुंदरपदार्थथी थतां सूचन, एटले के तज्जन्य भावनाओमां पण नानात्वमां एकत्वरूप तत्त्वनुं भान थया विना रहेतुं नथी. कोई एक वृक्ष के प्राणीना स्वरूपनुं जे नानात्वमां एकत्वरूप आ तत्त्व ते रेखा अने आकृतिना विन्यासमांज वसे छे एम नथी, पण भिन्न भिन्न अंगना जे जे कार्यनुं सूचन थायछे तेमां, व्यापारमात्रनुं एक उद्देशने अधीन रहेवानुं–स्वरक्षण सिद्ध करवानुं—जे सूचन थायछे तेमां पण प्रत्यक्ष समजाय छे–एज रीते कोई एक सुंदर विश्वलीलाप्रदेशमां, रागमां, काव्यमां पण अनुभवाय छे.

कोई एक सुंदर पदार्थनी समग्र असर, आपणे तेनो विवेक करी शकीए तेटले सुधी तो एवी समजाय छे के, इन्द्रिय, बुद्धि, अने ऊर्मिना विविध आनंद, कोई नवाज मिश्रण रूपे उद्भवे तेमां रहेली छे. उदाहरण—कोई सुंदर पदार्थ, एकाद भव्य वृक्ष, तेमां भळेला प्रकाश अने रंगना क्रमथी, तेनी आकृतिना सौष्ठवमां नानात्व अने एकताना मिश्रणथी, अंगे अंगनी सुश्लिष्टताथी, अने आखा स्वरूपनी आसपासना पदार्थो साथेनी सुश्लिष्टताथी, तेमज कल्पना उपर तेना दर्शनथी जे असर थायछे तेथी, पवन अने वर्षादनां तोफानमां ते स्थिर रहेलुं ए सूचनथी, आनंद ऊपजावेछे. एज रीते कोई सुंदर चित्र प्रकाश अने छाया, रंग अने रेखाना मिश्रणथी आंखने आनंद आपे छे; अमुक योजनापद्धति दर्शावी, यथायोग्य सुरेखतावाळो पूर्ण अभिनय बतावी बुद्धिने संतोषेछे; अने जे रसनी भावना समग्र चित्रथी ऊपजावी होय ते बराबर ऊपजावी ते समग्र चित्र ऊर्मिने

विक्षोभे चढावेछे. आ रीते जोतां सुंदरतानी असरनो आधार एकज काळे एकज अधिकरणमां परस्परानुकूल एवां आनंदजनक प्रोत्साहन, इन्द्रिय, बुद्धि, अने ऊर्मि त्रणेने मळे, तेना उपर रहे छे.

सौंदर्यनी असरनुं आ प्रकारे जे पृथक्करण कर्युं ते एकंदरे, मी. स्पेन्सरे पोताना "मानस शास्त्रनां तत्त्व" ए नामना लेखमां जे बताव्युं छे तेने अनुसरतुंज छे. सुंदर पदार्थोथी जे असर थायछे तेनुं समग्र पृथक्करण करी राखी परिपूर्ण स्पष्टता हजी सुधी थई शकी नथी. नानात्व अने एकत्वनां जे अनेक संयोजन थई शकेछे तेनो सूक्ष्म विचार करी जोतां, तथा ते संयोजनोथी ऊर्मि उपर जे असर थाय छे ते लक्षमां लेतां, सौंदर्यभावनुं घणे भागे स्पष्टीकरण थई शके तेम छे खरुं, पण एवा पृथक्करणथी जेटलुं जोईए तेटलुं बधुं प्राप्त थई शकतुं नथी. वर्तमान समयमां मी. इ. गर्नीए एम जणाव्युं छे के सौंदर्यनी ऊर्मिमात्रमां एक साधारण नियम व्याप्त छे एवुं बुद्धिथकी सिद्ध थई आववुं असंभावित नथी. सौंदर्यनी असरना मुख्य नियम रूपे स्वीकारेलो "नानात्वमां एकत्व" जे जे सिद्धान्त तेने, आ लेखक, सौंदर्यनी विशाल मर्यादा रूपे मानेछे, सौंदर्यना तत्त्वरूपे स्वीकारतो नथी. सारी शैली साथे व्याकरणना नियमोने जेटलो संबंध छे, तेटलोज आ नियमने सौंदर्य तथा कळा साथे संबंध छे. राग, रंग, अने तेमनां मिश्रण ए सर्वनी साहचर्यप्रयुक्त असरो परंपराथी जनस्वभावमां चाली आवे छे एम मानवामां आवे तो, सौंदर्यनी असरमांनो जे अपृथक्कृत विभाग छे तेना घणा भागनो खुलासो थाय खरो.

भव्यता:—सौंदर्यवृत्तिओना प्रदेशमां बे विभाग मानवामां आवे छे. एकता, समता, प्रमाण ए जेमां मुख्य छे एवा सौंदर्यमात्रने भव्यताथी भिन्न गणवामां आवे छे. भव्यतामां आकार के रूप ए मुख्य वात नथी पण परिमाण ज मुख्य वात छे. दिक्, काल, अंश, के सामर्थ्य, गमे ते वातमां जे कांई अपरिमित होय तेना दर्शनथी आपणने भव्यतानी वृत्तिनो अनुभव थाय छे. सौंदर्यनी वृत्ति करतां आ वृत्ति ओछी निगूढ छे. बीजी पासा एम पण छे के आ वृत्तिमां गौण रीते कांईक असुखनो अंश मिश्र रहे छे. दर्शन अने कल्पनाने प्रबल प्रोत्साहन आपे तेवुं कांईक प्रत्यक्ष देखाडीने भव्यता आपणने उश्केरे छे तथा प्रमोद आपे छे. आनंदकारक व्यापार परिपूर्ण रीते विक्षुब्ध थाय छे, पण तेनीज साथे परिमाणना अति विपुलत्वने लीधे, समग्रनुं एक काळे यथार्थ ग्रहण थतुं नथी. कोई विपुल अने भव्य पदार्थने जोतां आ बे स्थिते वाराफरती अनुभवायां जाय छे; कोई वार एक, कोई वार बीजी वृत्ति प्राधान्य पामे छे. प्रदीप्त

सामर्थ्य (पछी कायिक के चारित्र संबंधी) तेथी आपणने विशालतानो अनुकम्पाजन्य वेग चडे छे. ते साथे एम पण थाय छे के एनुं ग्रहण थई शकतुं नथी. जे अपरिमित अमर्यादित होय छे, ते भव्यदर्शन मनमां गूढ पण भयनी, असुखनी वृत्ति ऊपजावे छे; अपरिमित आकाशप्रदेश के अनन्त काळनुं चिंतन करतां आपणा मनने भयमिश्रित एवी कोई वृत्ति अनुभवाय छे. गिरिप्रदेश, राक्षसबळ, इत्यादि भव्यतानुं दर्शन थतां भयनी वृत्ति वधारे स्पष्ट रीते समजाय छे*.

हास्य:—सुंदरतानी जे असर छे तेथी भव्यता करतां पण वधारे विदूर एवो एक अन्य भाव छे, तेने हास्य वृत्ति कहेवाय छे. सुंदरनी पेठे भव्य पण उचित अने मानप्रेरक देखाव छे; हास्यकारक पदार्थ तो मानमां न्यून अने निर्जीव होय छे. आनंदकारक एवी अनेक वृत्तिओने अनुषंगे हास्य ऊपजी आवे छे. ए वृत्तिनां प्रोत्साहन पण कायिक होय छे, जेमके गलीपची थवी इत्यादि. घणे प्रसंगे, अने विशेषे जुवानीमां घणो उत्साह मनमां प्रपूर्ण थतां ते ऊपजी आवे छे. मनने जेम तेम करी ठेकाणे राखवाना यत्न पछी, जे प्रत्याघात थाय ते साथे पण एनो संबंध होय एम लागे छे. जे असाधारण, विलक्षण, के विचित्र होय तेनाथी हास्यनी ऊर्मि ऊपजी आवे छे. आ वृत्तिमां मुख्य रूपे, विस्मयजन्य आनंदनो घणो भाग अनुभवमां आवे छे. विचित्रतानुं जे तत्त्व आ वृत्तिमां रहेलुं छे तेथी तो कोईक प्रतिकूळ वृत्ति जेवी के विरोध ते ऊपजवी जोईए एम लागे छे, पण तेवा विरोधनी निःसारता समजातां आनंद रूप जे प्रत्याघात थाय छे तेथी आ प्रतिकूळ वृत्ति पराहत थाय छे. हास्यनी ऊर्मि साथे बीजी आनंदकारक वृत्तिओ पण होय छे. अमुक प्रतिष्ठावाळा मनुष्यनो कांईक भ्रंश के पराभव थतो जोई मनमां जे पोताना सामर्थ्यनुं भान थाय छे तेनो आनंद आ ऊर्मिने अनुषंगे वारंवार दीठामां आवे छे. गमत अथवा टोळ रूपे एमां मृदुता अने दयानी वृत्तिनुं पण कांईक मिश्रण रहे छे.

१६. रसवृत्ति, रसनिर्देश: रसिकतानी शक्ति:—सौंदर्यवृत्ति,

* बर्के भव्यतानुं निदान भयमां मान्युं छे; लोन्गाइन्स आदिए आंतर उल्लासमां मान्युं छे, डुगोल्डस्टुअर्टे आंतर उन्नति, कांईक अधिक प्राप्ति उच्च वृत्ति, ए स्वरूप स्वीकार्युं छे. दा. बेन सामर्थ्यनी भव्यताने भव्यताना मूळ रूप मानेछे. हेमिल्टन भव्यतामां सुख ने असुख उभयनां तत्त्व स्वीकारे छे. मी. जी. एलन परिणामवादानुसार परंपराथी एनो उद्भव बतावे छे.

अथवा सौंदर्यनुं ग्रहण के दर्शन, ए विषे आपणे सामान्य रीते अचोकस रीते, वारंवार बोलीए छीए ए उपरथी जणाय छे के वृत्तिनुं जे तत्त्व छे ते वास्तविक रीते जेने बुद्धिव्यापार कहेवाय तेनी साथे निकट संबंध राखे छे. वधारे मूलभूत वात वृत्ति छे. कोई पण पदार्थने जोयाथी अमुक प्रकारनी अने अमुक विपुलतावाळी खुशी थाय छे. आवी जे ऊर्मिरूप असर तेने आधारे आपणे ते पदार्थने सुंदर कहीए छीए; अर्थात् ते पदार्थ अमुक प्रकारे असर करी शके छे माटेज तेने सुंदर कहीए छीए. आनुं नाम अविज्ञात रसनिर्देश कहेवाय. सुविज्ञात अथवा बुद्धिपूर्वक रसनिर्देशमां आ करतां अधिक होय छे, एटले के पदार्थे पदार्थनी तुलना होय छे, अने ते तुलनाद्वारा अमुक साधारण अंश जोई, आनंदनुं खास कारण मानवामां आवे छे. अने आम करवामां पण जे सुंदर पदार्थो छे तेना धर्मनुं असुंदर अथवा बेडोळ पदार्थोना धर्मथी स्पष्ट पृथक्त्व समजवामां आवे छे. जेने आपणे रसज्ञता अथवा रसिकतानी शक्ति कहीए छीए तेमां, जे सुंदर, उत्तम इत्यादि धर्मवाळुं होय तेनाथी आनंद पामवा जेवी ऊर्मियोग्यता अने तेनुं पृथक्त्व करी, तुलना करवानी, अने विचार बांधवानी बुद्धि शक्ति, उभयनुं मिश्रण होय छे.

रसिकतानुं धोरण:—रसिकता आनियत अने तुरंगी छे ए तो सुप्रसिद्ध छे. माणस माणसनी रसिकतामां भेद होय छे. कोईने घेरो लीलो रंग पसंद होय छे, कोई तेनो तिरस्कार करे छे. कोईने एक राग पसंद होय छे, कोईने तेनो तेज नापसंद होय छे. आवो जे माणस माणसमां रसिकतानो भेद होय छे ते स्वाभाविक वृत्तिने लीधे, ऊर्मिप्रकृतिना साहजिक बंधारणने लीधे, तेमज अनुभवमांथी जे आकस्मिक वळणो घडायां होय तेने लीधे, थई आवे छे. आ त्रण कारणो विना, बाह्य एवुं कोई रसिकतानुं सिद्ध प्रमाण नथी.

परंतु अमुक हदमां रहीए तो, आवुं एक प्रमाण पण, अमुक मंडळ के प्रजाना लोक एकंदरे शाने रसवाळुं माने छे ते जाणवाथी मळी आवे छे. सुंदर, ललित, आकर्षक, शाने कहेवाय ए विषये, अमुक मंडळमां, अमुक समये घणे भागे ऐकमत्य* होय छे; अने एमांथी प्रत्येक माणसने पोतपोतानुं प्रमाण मळी आवे छे. परिचय अने शीलनी असर रसज्ञता उपर वधारे थाय छे. जेनो आपणने परिचय होय ते आपणने वधारे पसंद पडतुं थई जाय छे अने तेथी ते जेवुं छे तेवुंज सत्य छे एम लागे छे. एम होवाथी प्रत्येक माणस पोताना देशनुं, पोताना समयनुं जे रसज्ञतानुं धोरण होय तेने वधारे पसंद करे छे. †

आ बाबतनी केळवणीनो प्रथम उद्देश एज छे के माणस माणसनी जे खासीयत होय ते सुधारवी, अने माणस माणसना जे भेद होय ते यथायोग्य करी लेवा, अने जे मंडळनो ते माणस एक होय ते मंडळने मान्य एवा धोरणने अनुसार तेनी रसज्ञताने नियमवी.

छतां आवुं जे प्रमाण ते घणुं अनिश्चित अने टुंकुं रहेवानुं. वधारे विशाल अवलोकन करतां जणाय छे के प्रजासमस्तने कळानी बाबतमां अमुक अमुक रुचि अरुचि होय छे. "बेग पाईप" के "किल्ट‡"

* आ ठेकाणे पद्धतिभेद के शिक्षणभेदथी उद्भवता कळानी शैलीना भेद उपर लक्ष आप्यो नथी. एवा भेद सुप्रसिद्ध छे. हिंदुस्तानी कार अने तैलंगी कार गायनमां भिन्न छे. उभये सुंदर गणाय छे. अंग्रजी कार उभयथी विलक्षण छे. शिल्पमां ग्रीक, हिंदु, मुसलमान, गोथिक, ए पद्धतिओ भिन्न छे–सर्वे सुंदर गणाय छे. इत्यादि.

† पोशाक, घर सामान, इत्यादि आनां स्पष्ट उदाहरण छे.

‡ ए उभय वादित्र छे.

मां खुबी जाणवाने माटे स्कोचमेन*नोज कान जोईए; तंजोर नृत्य समजवाने तंजोरनोज रहिश जोईए. आवी रीते रसज्ञतामां जे भेद आवे छे ते प्रकृतिना, चोपासनी विश्वचरनाना, अने जीवनपद्धतिना, तफावतोमांथी उद्भवे छे, अने टाळी शकाय एवा नथी. केटलेक अंशे तो एवा भेद केवळ आकस्मिक जेवा होई कोई मुख्य माणसनी मरजी प्रमाणे थया होय एम पण लागे छे. आम होवाने लीधेज आपणां पोतपोतानां मंडळ के प्रजामां जे रसज्ञतानुं धोरण होय तेवां सापेक्ष धोरणमात्रने पूर्ण स्वरूपे स्थापवा सारुं निरपेक्ष अने स्वतंत्र धोरण समजवुं आवश्यक छे.

आवुं सर्वनिरपेक्ष अने स्वतंत्र धोरण ते तो जुदी जुदी प्रजाओनां अने जुदा जुदा काळनां रसज्ञता अने रसनिर्देशनी तुलना करवामांथीज मळी शके एम छे. एम करवाथी जे असाधारण वस्तुरूप हशे तेने आपणी प्रजाना वर्तमान विचारोनी उपाधिथी मुक्त करी शकाशे. रसज्ञतानुं आवुं बाह्य धोरण नक्की करवामां छेली वात ए छे के आ रीते प्राप्त करेली भिन्न भिन्न देश अने काळना लोकनी वृत्तिओनी समानताने चेतनशास्त्रसंमत सिद्धान्तो साथे सरखावी जोवी. उदाहरण. राग अने रंगमिश्रणमां अमुक अमुक बातने पूर्व अने पश्चिम उभय देशो पसंद करे छे, तेमज प्राचीन अने अर्वाचीन समयमां पण ते मान्य छे एम जणाय तो, आनंदनी जे सादी सामग्री शारीरशास्त्रानुसार के चेतनशास्त्रानुसार मनाती होय तेनी साथे ते बातने संबंध छे एम सहज सिद्ध थशे. आ प्रकारे, जेना उपर रसिकताना निश्चयनो आधार राखी शकाय एवुं बाह्य धोरण आपणने मळी शकशे.

सारी अथवा शुद्ध रसिकता:—जेनी चर्चा थई गई तेवी कोई

* स्कोटलंडनो रहीश.

तपासथी आपणने रसिकताना मूळ अथवा शुद्ध स्वरूपनुं भान थई शके. सारी अथवा शुद्ध रसिकता एटले के परिपूर्ण अने अनामय प्रकृतिवाळा तथा पोताना संसर्गो साथे सुश्लिष्टताथी रहेनार माणसनी रसिकता एम जाणवु. स्वाभाविक रसिकता होवा पूर्वे साधारण रीते माणसोमां होय छे तेवी संस्कारयोग्यता अने बुद्धिशक्ति होवी जोईए. आ तर्कने धोरणे चालतां, सर्वत्र नहीं तो घणेक प्रसंगे पण आपणे एम कहेवाने समर्थ थई शकीशुं–के अमुक रसिकता सारी अने शुद्ध छे के नहीं. उदाहरण, चीना लोकोना पगनी पाटलीओ दबावी देवामां जे रसिकता छे, अथवा अंगरेजोने स्त्रीओनी कमर दबावी दबावीने छेक पातळी करी देवामां जे रसिकता छे, तेने आपणे अयोग्य, नठारी, अशुद्ध रसिकता कही शकीशुं. केम के एवी रसिकतामां साधारण जीवननी जे सामग्री छे तेनाथी विरुद्ध वृत्ति समायली जणाय छे. एज रीते अतिशय भभकवाळा रंग उपर जे रसवृत्ति लागेली होय ते पण खोटीज छे, केमके एमां रंगने गृहनारी इंद्रियनुं निर्भेळपणुं समजाय छे.

संस्कारवाळी रसिकता:—आपणे सारी रसिकता ने संस्कृत रसिकता विषे बन्ने एकज होय ए रीते बोलीए छीए, पण एम बोलवुं यथार्थ नथी. "सारी रसिकता" मनुष्यमात्रने साधारण एवी रसिकतानुं नाम छे, अने "संस्कृत" अथवा "संस्कारवाळी रसिकता" तो व्यक्ति व्यक्तिमां के जुदी जुदी प्रजाओमां थयला विकास अथवा शिक्षणनी कोई वधारे उच्च पंक्ति दर्शावे छे. आपणे एम मानीए के शिक्षण, एकंदरे सुखाकारीमां वधारो करे छे, प्रकृतिने संसर्गो साथे वधारे सुश्लिष्ट करी आपे छे. शिक्षणनो आवो अर्थ मानवा सुधीमां तो "सारी रसिकता" अने "संस्कृत रसिकता" ए बे एकनी एकज वात छे. संस्कार शब्द ज्यारे आपणे जाड्य, जाडपणथी विरुद्ध अर्थे वापरीए त्यारे

"संस्कृत रसिकता" सारी रसिकता करतां उत्तम छे एम समजाय छे. सारी रीते विकास पामेला पुरुत मनुष्यने, कायिक दुःख, अनीति, इत्यादिनुं सूचन करी, क्लेश अथवा निर्वेद ऊपजावे ते जाड्यवाळी अथवा जाडी रसिकता कहेवाय. परंतु एटलुं तो सर्वने मान्य छे के रसिकतानुं सारापणुं अथवा अनामयत्व तेनाथी संस्कार क्वचित् विरुद्ध पण होय छे. सादी रसिकताथी विरुद्ध जे संस्कार ते अनामय रसशक्तिनुं लक्षण नथी. सादा अने सर्वसाधारण उपभोगनी रुचि जेमांथी जती रही होय एवी अति संस्कृत रसज्ञता तो खोटीज कहेवाय, सारी कहेवाय नहीं. आ प्रकारे सर्व पासाथी विचार करी जोतां सर्वना धोरणरूपे मानी शकाय तेवी स्वतंत्र भावमय रसिकतामां सादा साधारण (जेवाके भव्य प्रकाश, भभकतो रंग इत्यादि) आनंदोनुं, वधारे बुद्धिगम्य अने झीणा (जेवाके रागताल, योग्य छाया, इत्यादि) आनंदो साथे योग्य मिश्रण होवुं जोईए. बीजी रीते कहीए तो एवा धोरणमां अमुक मर्यादा साथे सर्वग्राहीपणुं अने झीणवट–संस्कार–साथे योग्यायोग्य गृहवानी शक्ति, ए सर्वनुं मिश्रण होवुं जोईए.

१७. **रसिकतानां कार्यं: कळानां फळं:**—रसिकताने साधारण रीते मौन विचारमयतारूपे मानवामां आवे छे, एमां कांई कार्यकर्तृत्व छे एम कहेवामां आवतुं नथी. पाणीना धोध के बरफना समूहथी भरेला गिरिशिखर जेवा कोई सुंदर पदार्थने जोतां जे सौंदर्यानंदनो अनुभव थाय छे तेमां कार्यकर्तृत्वनो कशो वेग होतो नथी एम कहेवाय छे. छतां सौंदर्यनी जे वृत्ति ते जातेज कार्यकर्तृत्वने वेग आपनार प्रबल कारण छे. माणसना मनमां कांईक पण घडवानुं प्रबल वळण, सृजनारना तेम बीजांना आनंदमात्रने सारुंज सुंदर पदार्थो सृजवानो वेग, स्वाभाविक रीतेज रहेलो छे. आवो जे वेग माणसनामां रहेलो छे तेमांथीज

साहित्यकलानो उद्भव छे. सबल बाळकनामां स्वाभाविक रीते जे व्यापार-प्रवणता होय छे तेनी साथे कांईक सृजवाना आ स्वाभाविक वळणने कांइक संबंध छे. आवश्यक कामकाजमां ज्यारे माणसनी स्वाभाविक शक्तिओ रोकायली होती नथी, त्यारे रमतमां अथवा कळाथी कांईक ऊपजाववामां ते शक्तिओने आनंदकारक व्यापार करवानो अवकाश मळे छे. आवो जे व्यापारप्रवणता उपर स्वाभाविक प्रेम छे तेनी साथे खास कलोपकारक वळणो पण माणसनी प्रकृतिमां होय छे. एमां प्रथम अनुकरण एटले कोई स्वाभाविक पदार्थ, कार्य, इत्यादिनी नकल करवानी इच्छा ते छे; बीजे स्थाने कांईक सृजवानो खास वेग, सौंदर्यनी कोई नवी प्रतिमा प्रकट करवानी इच्छा, कोई नवीन कलाभावना ऊपजावी सिद्ध करी आपवानुं कौतुक, ए छे. आवा कलोपकारक हेतुने कांईक देखाव करवानी प्रीति, कळामां नैपुण्य बतावनानी इच्छा, अने प्रतिस्पर्धाओथी आगळ वधवानो स्वार्थ, ए सर्वथी पण बहु मदद मळे छे.

साहित्यकलाना प्रकार:—कलोपकारक वेगने विविध प्रकारना कार्यरूपे परिणमाववामांथी जुदी जुदी साहित्यकलाओनो उद्भव अने विकास थयलो छे. एना सर्वत्र प्रसिद्ध प्रकार पांच छे; स्थपत्य, शिल्प, चित्र, संगीत, काव्य ए पांचेने विविध प्रकारे वर्णवी शकाय. एना बे विभाग करी शकाय; (१) दृश्य कळाओ एटले के जे कळाओ चक्षुगम्य छे अथवा जेमां चक्षुने जे असर थाय एज मुख्य छे (जेम के चित्र, शिल्प, स्थपत्य); (२) श्रव्य कळाओ एटले के जे कळाओ श्रोत्रगम्य छे; अथवा जेमां श्रवण उपर थती असर एज मुख्य छे (जेम के संगीत अने काव्य*). अथवा बीजी रीते पण विभाग करी शकाय, जेम के (१) अनुकरण कळा एटले के जे कळाओ विश्वलीलानुं अनुकरण करे

* आ बे विभागने दिक्कला अने कालकला एम पण केहेवाय.

छे अने याथार्थ्य साधवा उपर दृष्टि राखे छे (चित्र, शिल्प, काव्य); अने (२) अननुकरण कळा एटले के जे प्रथम वर्ग करतां वधारे स्वतंत्र होई कांईक सृजी शके छे (संगीत अने स्थपत्य). अनुकरण कळाओमां आकृतिना तत्त्व उपर भावनानुं तत्त्व वधारे प्राधान्य भोगवे छे, अननुकरण कळाओमां आकृतिनुं सौंदर्य एज मुख्य वात छे.*

कळानां फळ अने कळानुं ग्रहण ते वच्चे संबंध:—मौन विचारमात्रथी कळानां फळ अथवा कार्यनुं आनंदपूर्वक अवलोकन करवुं ते, अने कार्यकर्तृत्वव्यापारथी कलाद्वारा कांई ऊपजाववुं ए उभयने निकट संबंध छे, अने उभये एक एकना उपर घणी असर करे छे. एक पासा कोई एक मूर्ति घडवामां, के कोई एक चित्र चीतरवामां, मौन विचारथी सौंदर्यने विलोकवाना आनंदनो हेतु रहेलो छे. ते मूर्ति के ते चित्र तैयार करवामां सौंदर्यबुद्धि पण सारी रीते खीले छे. विश्वलीला उपरथी चित्र काढवामां, रंग अने पीछी वडे, दृष्टिगोचर एवा कोई पदार्थ के प्रदेशनी प्रतिकृति ऊपजाववामां, रंग अने आकृति उपर सूक्ष्म अवधान आपवुं आवश्यक छे. बीजी पासा अमुक वस्तु कळाथी नीपजावेली छे ए जाणवाथी ते वस्तु उपर जोवानी दृष्टिमां फेर पडे छे. कोई विश्वदर्शनना चित्र उपर आपणे वास्तविक विश्वदर्शन उपर जे दृष्टिथी जोईए ते दृष्टिथी जोता नथी. ते चित्रने आपणे कळाना फळ रूपेज विलोकीए छीए, अने तेनाथी जे आनंद थाय छे ते मूळनी साथे चित्रना मळतापणाथी तथा चित्रकारनी बुद्धि अने चतुराईए जे खूबीओ करी होय तें जोवाथी, थाय छे. त्यारे बेवडा कारणथी एम सिद्ध थाय छे के रसिकताना पूर्ण विकासमां, कळाथी जे कांई ऊपजे छे तेनी पद्धति साथेना अमुक परिचयनो पण समास थाय छे.

* आ प्रकार उपरात चक्षु अने श्रोत्र उभयनुं जेमां मिश्रण छे एवी पण कळाओ छेः-नाट्य, नाटक, संगीत नाटक, इत्यादि.

१८. रसिकतानी शक्तिनी वृद्धिः—उच्च प्रकारनी सौंदर्यवृत्ति ते तो घणा वखत पछी आवे छे; ते पूर्वे उच्च प्रकारनुं बुद्धिशिक्षण अने ऊर्मिशिक्षण थयलुं होवुं जोईए. छतां सौंदर्यबुद्धिनुं बीज तो प्रथमथी ज होय छे.

सौंदर्यवृत्तिना विकासनो जे क्रम छे ते आगळ ए वृत्तिनां जे त्रण तत्त्व बताव्यां तेने एकंदरे मळतो आवे छे. सौंदर्यमां प्रथम जे आनंद पडे छे ते इंद्रियजन्य होय छे; जेमके गुलाबनो रंग जोतां, वाजानो राग सांभळतां, इत्यादि. आकृति जोवाथी सौंदर्यनो आनंद थाय ए वृत्ति ते पछी आवे छे, अने पदार्थोने अंगे रहेलां आनंदजनक साहचर्यनुं ज्ञान थई शके ते पूर्वे तो घणा अनुभवनी अपेक्षा छे.

आ प्रकारे आपणे सौंदर्यवृत्तिना विकासना त्रण क्रम मानीए तथापि एटलुं वीसरवुं नहीं के आ वृत्तिनां सर्वे अंग साथे साथेज—विकसतां चाले छे. जाडा आनंदमांथी धीमे धीमे संस्कृत आनंद ऊपजावाय छे, सादा आनंदमांथी मिश्र आनंदमां प्रवेश कराय छे. ना'नुं बाळक प्रथमे तो प्रकाश अने स्वरना जे घणा चमत्कृतिमय विकार होय तेमांज आनंद माने छे. पछीथी धीमे धीमे तुरत न समजाय तेवी खुबीओ समजतुं थाय छे. जेम जेम वैधर्म्यगृहनी शक्ति खीलती जाय छे तेम तेम इंद्रियग्राह्य एवां सौंदर्यतत्त्वो समजवानी वृत्ति पण खीलती जाय छे. जेम जेम एक रंगने बीजा रंगथी, एक रेखाने बीजी रेखाथी, एक स्वरने बीजा स्वरथी, जुदा पाडतां ते शीखे छे, अने रंग तथा स्वरनुं शुद्धत्व अने रेखानुं समत्व समजवानी तेने शक्ति आवे छे, तेम तेम तेनो आनंद विपुल अने संस्कृत थतो चाले छे. एज रीते रंग अने स्वरना पोतपोताना संबंधो अने आकृति आकृतिना संबंधो पण संस्कारवाळा थता चाले छे. आरंभे रंगना जे भभकदार विरोध होय तेज ते ओळखी शके छे, पण धीमे धीमे संमेलनना सूक्ष्म विवेकपूर्वक आनंद अनुभवी

शके छे. पूर्ण रीते सुरेख आकृतिओने पसंद करवाथी आरंभ करे छे, अने धीमे धीमे स्पष्ट न जणाती एवी सुरेखतावाळी आकृतिओने पण वखाणतां शीखे छे. छेवट जेम जेम तेनो अनुभव विस्तार पामतो जाय छे अने तेना ज्ञानमां वृद्धि थती जाय छे, तेम तेम पदार्थोना अर्थ अने तत्कृत सूचन वधारे गाढता अने विपुलता गृहतां जाय छे. मनने रचनानी अने तत्साध्य कर्तव्यनी विलक्षणता समजवानी शक्ति आवे छे तेम एक साधारण पुष्प पण वधारे चमत्कार ऊपजावी शके छे; अने पोताना अनुभवथी तेम काव्यादिना परिचयथी, जेम जेम पुष्पने अंगे बीजां साहचर्योनुं भान थतुं जाय छे, तेम तेम मन तेने वधारे सौंदर्यवाळुं गणे छे.

विचारमयतानी पासा रसिकतामां आवी वृद्धि थाय छे तेनी साथे कार्यकर्तृत्वनी पासा पण तेमां वृद्धि थया विना रहेती नथी. प्रथम वर्षमां पण बाळकोनामां कलोपकारक वेगनां बीज नथी होतां एम नथी. रमत रूप अभिनयमां ते भाग ले छे, पोताना ना'ना मृदु हाथथी पदार्थो बनाववामां के गोठववामां तेमने आनंद लागे छे. बाळकोनी रमत एक प्रकारनी कलाजन्य सरल सृष्टिज छे. जे परिचित होय तेनुं अनुकरण करवाना, तेमज नवी आकृति सृजवाना वेगनुं ए उदाहरण छे. पोतानी रमतोमां बाळको अभिनेता, शिल्पी, कवि, अने क्वचित् गायक पण थई जाय छे. जेम तेमनी रसिकता अने तेमनी कार्यसाधक शक्ति वृद्धि पामे छे, तेम सारां रसिक कार्य ऊपजाववामां तेमने रमुज पडे छे. अने आम थवाथी एकंदरे कळानां फळ मात्र उपर तेमने अभिरुचि बंधाय छे.

वळी बाळकने रसवृत्तिनो जे अनुभव थाय छे तेमांथी निश्चय करवानी विवेकशक्ति यथार्थता अने झीणवट प्राप्त करे छे. विश्वगत सुंदर पदार्थो अने कलासिद्ध कृत्रिम पदार्थोना विलोकनथी जे असरो थाय छे तेमांथी ते एक धोरण ऊपजावी ले छे. आम करवामां एना उपर लोका-

चारनी घणी असर थाय छे, अने जे मांडलिक संसर्गो तेनी चोपासा होय तेनी पण असर तेमां मळे छे. जेम एनो अनुभव विशाल थतो चाले छे तेम सौंदर्यभावना संस्कारवाळी थती जाय छे, अने जेम एनी बुद्धि खीलती चाले छे तेम रसवृत्ति विषेना तेना निश्चय वधारे दृढ अने स्पष्ट थता जाय छे. सुंदरता के रसिकतानुं तत्त्व बताव्या विनाज आ, पेली, के गमे ते वस्तुने ते सारी, सुंदर, रसवाळी, कहेशे नहीं, पण सौंदर्यना कोई एक नमुना साथे, धोरण साथे, के नियम साथे, ते वातने मेळववा जशे. आटलुं ज नहीं पण एनी विवेकबुद्धिमां पण सुधारो थशे. वधता अनुभव, शिक्षण, अने आत्मविचारथी एना धोरणमां धीमे धीमे योग्य फेरफार थशे.

आवो फेरफार बेवडो थशे. पहेलां जे वस्तुओ दृष्टिने आकर्षती न हती तेमां पण जेम जेम सौंदर्य समजातुं जशे तेम तेम एनुं धोरण विस्तारवाळुं थशे. अने एनी विवेकबुद्धि सर्वग्राही थती जशे. बीजी पासा तेज धोरण कांईक संकोचाशे अने विवेकबुद्धि पोताने स्वीकारवाना पदार्थमां वधारे योग्यतानी अपेक्षा करशे. जेम जेम तेनी रसिकता संस्कारवाळी थशे तेम तेम जे वस्तुओ आगळ संतोष पमाडती ते संतोष पमाडी शकशे नहीं. बेडोळ जेवां रंगीन रमकडां, अने घोडीआमां सुवाडीने गावानां गीत, एनां चक्षु अने श्रोत्रने गमशे नहीं. शुद्ध कळाना पूर्ण आनंदो भोगववानी तेनामां शक्ति आवशे ते प्रमाणमां आवा पदार्थ नजीवा अने नीरस लागता जशे.

१९. रसिकतानी केळवणीः—रसिकतानो पूर्ण अने अनामय विकास थवामां केटलीक बाह्य असरोनी पण अपेक्षा छे. एमां केळवणी अथवा शिक्षण ए मुख्य छे. रसिकतानी स्वाभाविक खोट होय तो ते माता के शिक्षक यद्यपि पूरी पाडी शके नहीं तथापि साहजिक योग्यताने खीलावी सबल करवामां ते घणुं करी शके एम छे.

(१) योग्य स्थाने योग्य व्यापार थवाथीज बीजी शक्तिओनी पेठे रसवृत्ति पण केळवणी पामे छे. माटे प्रथमथीज बाळकनी आसपास सुंदर, आकर्षक, अने रसिक पदार्थो राखवा ए बहु आवश्यक छे. बनता सुधी तेने खुल्ली हवामां फरवा लेई जवुं जोईए के ते विश्वलीलाना सौंदर्यनो—देखाव तेम ध्वनि उभयनो—परिचय पामे. जलप्रवाह, वनप्रदेश के गिरिगुहामां जेथी आनंद लागे छे ते साहचर्यो, विश्व साथेना आवा प्राथमिक संबंधमांथीज बंधाय छे. गृहमां जे कृत्रिम सामग्री पूरी पाडवामां आवे तेमां तादृशता अने शुद्धता अवश्य साचववां. बीजी शक्तिओनी तेम रसिकतानी केळवणीमां प्राथमिक दर्शनना संस्कारथी बहु असर थाय छे. शुभ संस्कार पामेली माता गृहोपस्करमां, चित्रोमां अने पोताना वस्त्रभूषणथी ते रीतभातपर्यंतमां लालित्य साचववा जे यत्न करे, ते बाळकनामां लालित्य तथा सुंदरतानो भाव ऊपजाववामां अति उपयोगनुं थई पडे छे. रसिकतामां शाने उत्तमोत्तम गणवुं एमां देशाचार वधारे प्रबल वर्ते छे ए तो आपणे कहेलुंज छे. एटला माटे बाळकने तेनी योग्यता प्रमाणे, पण जे कांई बतावबुं समजाववुं तेमां एम समजण पाडवी के सारी रसिकतावाळुं कीयुं कहेवाय ने कीयुं न कहेवाय. वस्त्रालंकार, गृहोपस्कर, इंगित, ध्वनिसंयमन, इत्यादि जेने एकंदरे आचार कहेवाय तेमां औचित्यानुसार अने घटे तेवुं शुं कहेवाय ए बतावबाथी, अज्ञात रीतेज बाळकना मनमां अमुक धोरण बंधाशे, अने ते तेने आगळ जतां सौंदर्यना निश्चयो करवामां काम आवशे.

(२) जे जे सुंदर पदार्थो होय ते उपर बाळकनी दृष्टि खेंचीने तेमांना जे जे अंश दृष्टि तथा मनने आनंद आपता होय ते देखाडी रसवृत्तिने आवा अभ्यासनो परिचय पाडवाथी पण माता अथवा शिक्षक घणुं साधी शके एम छे. ए शक्तिना ऐंद्रिय अंशने केळववो ए पण एक

महत्कार्य छे. पदार्थसूचित साहचर्य, एटले के ते पदार्थ पोते अने तेना उपयोग, तेमना विषेना विचारमां आपणे रंगना सूक्ष्म मिश्रण अथवा रेखानां उचित समत्व आदि ऐंद्रिय तत्त्वोना यथार्थ स्वरूपनी कांईक उपेक्षा करीए छीए. लीलथी छवाई गयला वृक्षस्कंधने, के कोई भींतने, जोतां बाळक ते स्कंध अने ते भींतने समग्ररूपे अथवा एक एक पदार्थ रूपेज विलोके छे, अने ए केवां उंचां छे, एमना उपर शी रीते चढाय, इत्यादि विचारमां पडे छे. पण चक्षु आगळ साक्षात् शुं आवेलुं छे ते बराबर जोवा माटे इंद्रियजन्य संस्कारो जाणवामां रस, अने सूक्ष्म अवधाननी टेव ए बे आवश्यक छे. अमुक करवाना विचारोमांथी, बाळकना मनने विश्वदर्शनना ने विश्वध्वनिना सौंदर्यना तत्त्व उपर मौन विचार करवामां वाळवाथी, सुसंस्कार युक्त माता के शिक्षक, बाळकनी आ शक्तिने खीलववामां घणुं साधी शके एम छे.

विश्वलीलाना विलोकनथी तथा इंद्रियजन्य संस्कारोमां जे लक्ष आपवा योग्य होय ते उपर बाळकनुं लक्ष खेंचवा उपरांत विश्वना पदार्थोनां आकृति, सौष्ठव, आदि उपर, पर्वतना सौष्ठव उपर, नदीना आडा अवळा वांक उपर, शरीरधारी पदार्थोना यथोचित संयोजन अने आकार उपर—शिक्षके तेमने लक्ष आपतां शीखववुं जोईए. चित्र, संगीत इत्यादि कळामात्र उपर वृत्ति लागे ते माटे ते ते सौंदर्यनां तत्त्व उपर (रंग, रेखा, ध्वनि), तेमना संयोजन उपर (सौष्ठव, आकृति), अने एकंदरे समग्र स्वरूप उपर (ते ते पदार्थ शुं बतावे छे), बाळकनुं लक्ष दोरवानी आवश्यकता छे ए तो स्पष्टज छे.

(३) त्रीजी वात ए छे के रसिकताने कार्यकर्तृत्वपरत्वे पण उत्तेजवी. ध्वनिमां, इंगितमां, वचनमां, वस्त्रादिपरिधानमां, इत्यादिमां, जे कोई अनुकूळ, संस्कारयुक्त, के सुंदर होय ते माटेनी बाळकनी अभिरुचि

(वृत्ति) त्यारेज पूर्ण रीते खीले छे के ज्यारे तेने ते ते वात पोतानी जाते करवामां आनंद आवे एवी योजना थाय. रंग, रेखा, अने ध्वनि माटेनी वृत्ति तो जे जे जोवामां आवे ते करी बतावववामांथी बंधाय छे. चित्र, रेखानिरूपण, संगीत, शीखववुं एज सारमां सारी रसवृत्ति विकसवानो सिद्ध मार्ग छे.

केळवणीनो क्रम उतावळे चालतो न होय, ए माटे बहु संभाळ राखवी. जो बाळकोना आगळ तेमनी शक्तिपारनी वात मूकवामां आवे, तो पोते जेने सारुं वास्तविक रीते कशी दरकार करतां न होय तेमां जुठे जुठी रसिकता बतावतां शीखे छे. सादा रसानंद—भभकवाळा रंगनुं आकर्षण इत्यादि-मां आनंद मानवानुं बाळकोने शीखववुं जोईए. तेमनी रसिकताने अति संस्कार आपी न जवाय तेनी काळजी राखवी, केम के साहजिक जे वृत्तिओ ते खोटी थई जाय अने जोईए तेटलो उपभोग पछीथी बनी शके नहीं.

सौंदर्यपरत्वे निर्णय करी अभिप्राय आपवामां बाळकोने स्वाभाविक थवा उत्तेजवां, अने तेमने पोतानी मेळे अभिप्राय आपवा देवो, संस्कारयोग्यता अने रसज्ञतानां साहजिक फेरफारो होय छे ते उपर शिक्षके लक्ष राखवुं, अने व्यक्तिव्यक्तिने स्वतंत्र अभिप्राय आपवा देवो. रसिकता एज एवो प्रदेश छे के जेमां अभिप्रायनुं घणामां घणुं स्वातंत्र्य चाली शके छे, अने तेथीज व्यक्तिव्यक्तिना स्वतंत्र अभिप्राय बांधवानी योग्य कसरत मळवानुं सारमां सारुं स्थान छे. बीजी पासा बाळकने नम्र रीते अभिप्राय दर्शाववानी टेव पाडवी, मारी वातज खरी छे एवा आग्रहे न चढवा देवुं, अने बीजांना रसिकतापरत्वे जे अभिप्राय होय तेने पण मान आपतां शीखववुं.

रसभावनानी केळवणी, शिक्षणना प्रत्येक विभागमां आवी शके छे.

एक पासा तेने बुद्धिनी केळवणी साथे घणो निकट संबंध छे. वाचन अने लेखन जेवा देखीता जाडा अभ्यासनी साथेज लालित्यवृत्ति, केटलेक भागे, विकसे छे; अने ए वृत्तिद्वाराज ए कार्योमां कलोपकारक रसिकता ऊपजावी शकाय छे. निबंधरचनामां स्वभाषानो उपयोग शीखववामां, शैलीना सौंदर्यनी वृत्तिनो विकास थवानो प्रसंग मळी आवे छे. विश्ववर्णन ते पण एवी रीते शीखवी शकाय के तादृशता अने भव्यतानी वृत्तिओ विकसती चाले, अने इतिहास पण मनुष्यस्वभावमां जे कांई उच्च अने उदार एवुं रहेलुं छे ते माटेनी आश्चर्ययुक्तमात्रनी वृत्ति विकसावी शके. वधारे भावनामय एवा भूमिति अने पदार्थविज्ञान जेवा विषय पण सौंदर्यवृत्ति खीलववाना साधन थई शके.

बीजी पासा सौंदर्यवृत्तिनी केळवणीने नीतिनी केळवणी साथे संबंध छे. परिधान, वाणी, अने आचारमात्रमां, बीजानी सौंदर्यवृत्तिने रुचिकर होय तेवुं स्वीकारवुं ए एटली बधी मांडलिक आवश्यकतानी वात छे के ए पण आपणां नाना नानां नीतिकर्तव्योमांनुं एक थई शके छे. आटलाज उपरथी गति, वाणीनो प्रयोग, शब्दयोजना, इत्यादिमां स्वाभाविकता, सरलता, औचित्य, साचववानी आवश्यकता कहेवामां आवे छे.

सौंदर्यवृत्तिनी पूर्ण अने पद्धतिपूर्वक केळवणी आवा प्रयोगोथी पण आगळ जई, साहित्यकलानो आश्रय करी केळवणीना खास मार्ग योजशे. गान वाद्य, रेखानिरूपण, चित्र, अने छेवट काव्य तथा साहित्य ए सौंदर्यवृत्तिनी केळवणीनां खास साधन छे.

केळवणीना साधारण क्रममां कळाना अभ्यासने एटले सुधी दाखल करवो, अने कळाना किया किया विभाग खास केळवणीनेज उपयोगना छे, ए प्रश्नमांथी बीजा बगाक व्यावहारिक प्रश्नो ऊभा थाय छे, जेनी चर्चा अत्र थई शके एम नथी; परंतु ए प्रश्नने संबंधे एक बे अगत्यनी

वातोनुं सूचन मात्र करवुं उचित छे. आमां प्रथम तो एज छे के जीवनना उपभोग मात्रमां सौंदर्यना आनंदो किये स्थाने गणवामां आवे छे? आ दृष्टिबिंदुथी विलोकतां, संगीतनी केळवणी सर्वोपरि गणाय, अने माणसना उपर मांडलिक तथा नीतिसंबंधी जे उत्तम असरो आ कळाथी थाय छे ते लक्षमां लेतां आवी तेनी उत्तमता वधारे वास्तविक गणाय. बीजी पासा रेखानिरूपण जेवी कळाने बुद्धि तथा व्यावहारिक केळवणीने अंगे उत्तम गणी शकाय. आनंद ऊपजाववा परत्वे, तेमज बुद्धिपरत्वेनी तेनी महत्ताने लीधे, काव्यने सर्वोपरि गणवामां बाध नथी. जे जे शक्तिओ अने संस्कारयोग्यताओ आ केळवणीमां काम लागती होय तेना विकासना क्रमानुसार, कळानी केळवणीनो पण अमुक क्रम लेवो जोईए. उदाहरण तरीके जोईए तो रेखानिरूपण पहेलां संगीत शीखवी शकाय, अने निबंधादिपूर्वे रेखानिरूपण शीखवी शकाय.

२०. **नीतिभावना**:—जे त्रण भाव अथवा भावनानुं आरंभे विवेचन कर्युं छे तेमांनी त्रीजी जे नीतिभावना तें उपर हवे आपणे आवीए छीए. आ वृत्तिने विविध नाम आपवामां आवे छे. कर्तव्यवृत्ति अथवा नीतिकर्तव्यवृत्ति; नीतिनियम माटे माननी वृत्ति; गुणानुराग; सारा नठारा कहेवावानी वृत्ति; इत्यादि.

नीतिवृत्ति शी रीते उद्भवे छे:—अमुक प्रकारनो व्यवहार के अमुक वर्तणुक ए नीतिभावनानो विषय छे. जे कामोंने आपणे सारां अने नठारां कहीए छीए, अथवा वधारे संकोचथी बोलतां, सारां के खोटां कहीए छीए, तेमना भानथी अने तेमना उपर विचार करवामांथी, ए भावना बहार नीकळी आवे छे. एवां काम ते आपणां पोतानां होय तेम पारकां पण होय. आपणामां तेम बीजामां जे सारुं होय तेने आपणे पसंद करीए छीए. सारा कामनो अर्थ, हाल तुरत, एम राखीए के जे

नीतिनियमानुसार होय तेवुं काम, नीतिनियमो सर्वमान्य सत्य—सारुं—शुं छे ते नक्की करवा यत्न करे छे. मांडलिक संबंधो अने व्यक्तिव्यक्तिनो अन्योन्य उपर जे आधार छे, प्रत्येकनामां सर्वने तेम एक एकने गमे तेवी अदृश्य पण लाभ हानि करवानी शक्ति जे संबंधथी आवे छे, ते सर्व उपर ए नियमोनो आधार छे.

एटलुं मात्र ऊमेरवुं अगत्यनुं छे के सर्व प्रकारे आत्मसंस्पर्शरहित होय त्यारेज नीतिवृत्ति सुपरिशुद्ध कहेवाय. बाळकने खोटुं कर्या माटेनो जे पश्चात्ताप थाय ते, दंडना भयरूपज होय, तो तो तेने आत्मसंस्पर्शवाळो अने नीतिमय नहीं एवो भाव जाणवो. एज रीते कोईए करेला अपकारनो बदलो वाळवानो तेनो वेग ते पण तेवोज जाणवो. जे स्वतंत्र रीते स्वतःज सारुं के सत्य होय तेने शुद्ध नीतिवृत्ति स्वीकारे छे, तेनो आपणी पोतानी साथे कशो पण संबंध होय ते उपरथी स्वीकार करती नथी.

२१. **नीतिभावनानी सविशेषताः**—नीतिवृत्तिनी आवी विवेचना उपरथी आपणे तेना स्वरूपविषे पण विचार करी शकीशुं.

(१) प्रथमे तो ए मांडलिक भावना छे. ज्ञानाभिरुचि अने सौंदर्यवृत्ति एमांज. मांडलिक संबंधो अने सर्वसाधारण लाभालाभनो समास छे. पण ज्ञानप्राप्तिना आनंदमां के सौंदर्यदर्शनना प्रमोदमां, अन्यनां आनंद, लाभ, के सुखनो साक्षात् उद्देश करवामां आवतो नथी. नीतिवृत्तिमां आवो साक्षात् उद्देश रहेलो छे. कर्तव्यवृत्तिमां अवश्य रीते, अन्य माटेनी लागणी, तेमना लाभालाभ अने हकनो विचार, विद्यमान होय छे. ए भावज एवो छे के माणस माणसने ते संयोजे छे, माणसने आखा मंडळ साथे संबंधमां लावे छे.

(२) बीजी वात ए छे के नीतिवृत्तिमां आवश्यकता अने अनिवार्यत्वनी कोईक वृत्ति रहे छे. सत्य आचार ते एवी वात लागे छे के तेने करवा के न करवाने आपणे स्वतंत्र नथी; पण जाणे कोई अधिकारथकी ज ते आपणने वश करतो होय एम लागे छे. आपणाथी बाह्य एवा कोई नियम के आदेशरूप ते जणाय छे; पछी तेने मनुष्येच्छाथी के ईश्वरेच्छाथी गमे तेनाथी प्रेरित मानो. बीजी रीते कहीए तो आपणी पोतानी इच्छाथी अत्यंत निरपेक्ष, अने वस्तुगतिथीज आवश्यक ठरेला नियमरूपे आ नियम जणाय छे. आ प्रकारे नीतिभावना आगळ कहेली बे भावनाथी जुदी पडे छे. ज्ञान उपयोगी छे खरुं, पण आपणने एम लागतुं नथी के आपणे ते प्राप्त करवाने बंधायलाज छीए, अने सौंदर्य तथा कळानी केळवणी प्राप्त करवानी तो एथी पण ओछी अगत्य आपणने लागे छे. आवी सविशेषताने लीधेज नीतिभावनाने, व्यक्ति करतां अधिक एवी कोई इच्छानी प्रेरणा होवारूप अधिकारनुं मान मळे छे, अने तेना आगळ भयमिश्र भक्तिथी आपणे अधीन थई उभा रहीए छीए.

(३) नीतिभावनाना आ स्वरूप साथे निकट संबंध राखनार एक त्रीजी वात छे. नीतिनियमो संपूर्ण रीते व्यावहारिक छे. नीतिनियमोनो प्रदेश आचार छे, तेथी अमुक प्रकारनां कार्यो प्रतिज तेनुं वळण रहे छे. आपणामां के अन्यनामां जे खोटुं होय ते जोवा जाणवाथी, तेनाथी दूर जवानी इच्छा थाय छे. जे सारुं, नीतियुक्त, उदार, होय तेनो विचार तुरतज तेवा थवानी बुद्धि प्रेरे छे. आम नीतिवृत्ति इच्छाने असर करे छे, अने तेने तुरतज गतिमां मूकी शके छे. आ तेना स्वरूपथी ते बुद्धिभावना तेम सौंदर्यभावना उभयथी भिन्न पडे छे, विशेषे करी सौंदर्यभावनाथी केमके एमां तो आपणे जोई आव्या तेम मौन विचारमग्न थवुं एज मुख्य वात छे.

२२. **नीतिभावनाना प्रकारः**—नीतिभावनामां असाधारण तत्त्व

ए छे के 'आम होवुं जोईए' एवी आवश्यक शक्यतानी वृत्ति तेमां रहे छे. जे सत्य अने सारुं छे ते नीतिनियम आपणने कर्तव्यरूपे करवानी आज्ञा करे छे. पण आ वृत्ति अनेक रूपे प्रदर्शित थाय छे. प्रथमे रुचि के अरुचिनो विषय एवुं जे कर्म ते आपणुं छे के पारकुं एथी-ज तफावत पडे छे. आपणे पोते कर्युं होय एवुं जे कोई तेने अयोग्य ठरावववामां अंतःकरणने पीडा थाय छे, लज्जा के पश्चात्तापनो क्लेष थाय छे. आ स्थाने अहंभाव मुख्य वर्ते छे; आपणो उपरि अने आपणने आ-ज्ञा करनार एवा नीतिनियमथी आपणे विरुद्ध छीए एम समजाय छे. बीजी पासा अन्यनां अनीतिमय कर्म उपर अरुचि बतावतां आपणने आवो अहंभाव रहेतो नथी. ते समये तो आपणे नीतिनियमरूप थई बेशीए छीए, अने तेना प्रतिनिधिरूपे वर्तीए छीए.

वळी कर्मना स्वरूपथी, तेम ते कर्मनो जे विषय होय तेनाथी पण आपणी वृत्तिमां फेरफार पडे छे. जुदी जुदी जातनी सारी नठारी वर्त-णुकथी जुदी जुदी नीतिवृत्ति ऊपजे छे. अन्याय के पक्षपातनी वृत्तिथी जे खास दंश लागे छे, घातकीपणानी वृत्ति उपर जे त्रास ऊपजे छे, नीच तथा हलका काम उपर जे तिरस्कार आवे छे, ए आदिने नीतिवृत्तिमां जे विविध रंग समजाय छे तेनां उदाहरणरूपे मानी शकाय.

आटलुंज नथी पण स्पष्ट रीते सुविज्ञात एवां प्रामाणिकतादि जेवां कोई कर्तव्यने साधवाथी जे वृत्ति ऊपजे छे, अने कोई असाधारण कर्त-व्य, जेवुं के डुबता वहाणमां नाविक पोताने स्थानेथी न खसतां आत्मार्पण करता सुधी कर्तव्य बजावे इत्यादि तेने साधवामां जे वृत्ति ऊपजे छे, तेमां पण फरक रहे छे. प्रथम प्रकारनी जे वृत्ति छे ते अपेक्षित कर्तव्य कर्म-ना संतोषथी आम करवुंज जोईए एम धारवामां आवे ते प्रमाणे कर्याना संतोषनी वृत्ति छे; बीजा प्रकारनी जे वृत्ति छे ते कांईक अन-

पेक्षित, विरळ, आश्चर्यकारक, मानार्ह, साधवाने लीधे स्तुति करवानुं मन थाय तेवा उल्लासनी वृत्ति छे. अथवा जो एवी उत्तमोत्तम वर्तणुक आपणी पोतानी होय तो स्वसंतोष उपरांत आपणुं नीतिसंबंधी उत्तमत्व जाणवानुं भान पण तेमां ऊमेराय छे.

आ उपरथी एटलुं नीकळे छे के नीतिभावनाने बीजी वृत्तिओ साथे, अने सविशेषे सौंदर्यभावना साथे घणो संबंध छे. एम पण कहेवाय के नीतिभावना सौंदर्यभावना करतां वधारे गुंफित छे, केम के एमां साधारण रीते सौंदर्यभावनानुं पण तत्त्व रहे छे. आ उपरांत एम पण छे के सत्यता माटे जे नीतिवृत्ति थाय छे, अने तेनाथी प्रतिकूळ प्रतारणा अने असत्यता माटे जे नीतिवृत्ति थाय छे तेमां बुद्धिभावनानो पण भाग होय छे. आम होवाथी नीतिभावनाने बुद्धि तथा सौंदर्यनी भावना पछीज चर्चवी ए क्रम यथायोग्य छे एम सहजे समजाय छे.

२३. **नीतिवृत्ति अने नीतिनिर्देशः**—सौंदर्यशक्तिनी पेठे आ-मां पण अत्र बुद्धिव्यापार साथे ऊर्मिनुं तत्त्व मिश्र थाय छे. अंतःकरण एटले अमुक प्रकारनी वृत्ति पामवानी योग्यता एमज नहीं पण व्यवहा-रमात्रमां अमुक प्रकारना गुणोनुं अस्तित्व नास्तित्व परखवानी शक्ति. प्रत्येक नीतिवृत्तिनी पूर्वे अने तेनी साथे केटलोक बुद्धिपूर्वक विवेक तो होवोज जोईए. नीचता के क्रूरताना कर्मथी आपणने नीतिजन्य निर्वेद, ते कर्मनुं स्वरूप समज्या विना, ऊपजे नहीं. पण घणीक वार आवो बुद्धि-पूर्वक विवेक अस्पष्टज होय छे, अने वृत्ति उपरज रहेलो होय छे. आ-पणने अमुक कर्मना अन्यायनी बहु तीव्रवृत्ति थई होय, पण यथार्थ रीते आपणा जाणवामां न होय के अन्याय केवो ने क्यां छे. आवा ऊर्मि-प्रधान निर्देशथी विरुद्ध बीजा प्रकारनो सुविज्ञात अने सबुद्धिक निर्देश थाय छे, जेमां वृत्तिने बुद्धि नियमे छे. नीतिशक्तिना पूर्ण व्यापारमां वृत्ति अथवा भावना अने निर्देशरूप विवेकबुद्धि उभयनुं मिश्रण रहे छे.

नीतिनुं धोरणः—शुं सारुं अने शुं खोटुं ए विषये माणसना नि-

श्रयो सर्वथा एकरूपतावाळा होता नथी. जुदां जुदां मंडळमां जुदां जुदां धोरण मनाय छे. अने एकना एक मंडळमां पण जुदे जुदे वखते जुदां जुदां धोरण प्रमाण गणाय छे. उदाहरण, आपणा लोकमां जे नीतिनुं धोरण मनाय छे ते करतां पाश्चात्य लोकमां जुदुं मनाय छे. एवाने एवा तफावत नानां नानां मंडळोमां पण देखाय छे. एक मत प्रमाणे मतनी अप्रतिष्ठा इत्यादिनुं जे धोरण होय ते बीजा मत प्रमाणे तेज विषयना धोरण करतां भिन्न होय छे. परंतु आवा अनेक तफावत छतां घणे भागे एकता देखाय छे. अमुक हद पर्यंत मनुष्यमात्र ए वातमां तो एक मतज छे के अन्यने हणवुं, लूटवुं, के ठगवुं ए अनीति छे. नीतिवेत्ता नीतिनां जुदां जुदां धोरणने सरखावी तेमांथी सर्वसाधारण भाग जुदो काढे छे. पछी माणसना उत्तमोत्तम अने सर्वोपरि लाभनो विचार करी, तेने साधी शके तेवा नीतिनियमनुं स्वरूप ते बांधे छे. आम ऊपजावेलो जे नीतिनियम ते एकंदरे साराखोटाना सर्वसाधारण धोरणरूपे चाली शके छे.

२४. **नीतिभावनानुं निदान**:—ए विषये घणा काळथी विवाद चाले छे के नीतिशक्ति माणसमां साहजिक अने स्वाभाविक छे ? के अनुभव अने शिक्षणनुं फळ छे ? केटलाक लेखकोने एम भीति लागी जणाय छे के आ शक्तिने सारी वृत्तिओमांथी ऊपजाववा देवामां आवे तो अंतःकरणने जे अधिकार आपवामां आवे छे ते शिथिल थई जाय. पण आवुं मत अधुना झाझुं प्रचलित नथी. एम मानवामां आव्युं छे के अंतःकरणनी प्रमाणतानो प्रश्न तेना निदानना प्रश्नथी भिन्न छे. बाळकनी प्रकृतिमांज ते साक्षात् विद्यमान न होय, अने शिक्षणक्रमना फळ रूपे धीमे धीमे उद्भव्युं होय, तो पण तेने जे अधिकार आपवामां आवे छे, ते आपवामां कशो बाध नथी.

नीतिभावना कांईक अंशे साहजिक छे एम कहेवामां बाध नथी.

घणा युगथी चालता मांडलिक अनुभवने लीधे नीतिमार्गे वृत्तिव्यापार करवानुं अने ते मार्गे विवेक करवानुं शील बंधाई गयुं होय, ने ते प्रतिबाळकमां परंपराथी संक्रान्त थई साहजिकरूपे जणातुं होय, एम मानवामां कशी अशक्यता नथी. पण आ बधी वात मान्य करवा छतां ए एटलुं निर्विवाद सिद्ध छे के नीतिभावनानो घणो भाग व्यक्तिना जीवनक्रममांज घडाय छे.

नीतिभावनानी वृद्धिपरत्वे जे साधारण अर्वाचीन मत छे तेनो सार आवो छे. (१) नीतिकर्तव्यता अथवा अमुक नीतिमय कार्य अवश्य कर्तव्य छे एवी जे वृत्ति ते सादी वृत्तिओमांथी उद्भवे छे. ते सादी वृत्तिओनो घणो भाग आत्मसंबद्ध वृत्तिओनो छे. अमुक हद सुधी सारा थवुं एमां प्रत्येक व्यक्तिनो लाभ समायलो छे. दंडभय, स्तुतिविषय इत्यादि शुद्ध आत्मसंबद्ध वृत्तिओमांथीज नीतिनियम माटे अमुक मानभाव पेदा थशे. पण एटलाथीज बधुं बनतुं नथी. सारी वातने माटे स्वतंत्र निःस्वार्थ प्रेम मनमां बंधाय ते माटे, जेने खास करीने मांडलिक वृत्तिओ कहीए छीए ते, अने सविशेषे अनुकम्पा, आमां भळवी जोईए. बीजांने माटे अनुकम्पा थवा मांडे, तेमना लाभ उपर नजर रहे, तेमनां लाभ हानि आपणां पोतानांज मानवानी वृत्ति थाय, तेमांथी कर्तव्यता माटे मान पेदा थाय छे.

(२) सादी वृत्तिओमांथी आवी नवी नीतिनी वृत्ति ऊपजी आवे, जेने आपणे नीतिभावना कहीए छीए ते ऊपजी आवे, एनो आधार अमुक बाह्य सामग्री उपर पण रहे छे. मांडलिक संसर्गो अने मांडलिक अनुभवनुंज ए फळ छे.

कर्तव्यवृत्तिना विकासमां जे मांडलिक अनुभव खास काम करे छे ते बे प्रकारनो छे. प्रथमे ए छे के कोई पण मंडळनी प्रत्येक व्यक्ति आरं-

भयीज मात्रापः, रक्षक, शिक्षक, इत्यादि कोईने पण आधीन होय छे, एटले के व्यक्तिमात्रने अमुक आज्ञा ऊठावबी पडे छे. अने तेमां खामी पडवाथी अमुक शिक्षाने पात्र थवुं पडे छे. आवी जे शिक्षा ते कायिक उपमर्दरूप, केद करवारूप, कृत्रिम होय, के बीजां माणसनी मानबुद्धिमां न्यूनता थाय तेनां बधां माठां फळ भोगववां पडे एवी स्वाभाविक होय. एम कहेवामां आवे छे के शुद्ध कर्तव्यवृत्ति उद्भववा माटे, अने नीतिनियम माटे मानबुद्धि प्रकटवा सारुं, आवा अनुभवनी आवश्यकता छे, अने अवलोकनथी ए वात खरी लागे छे; केम के जे बाळको आरंभे कवायत, नियमन, आज्ञाकारित्व इत्यादिना परिचयमां पड्यां होतां नथी ते घणुं करीने कर्तव्यबुद्धिनी नीतिवृत्तिने समजता नथी.

बीजी वात ए छे के प्रत्येक व्यक्ति बीजां सर्वनी साथे आ करतां वधारे स्वतंत्र जातनो संबंध राखे छे. बाळक एक कुटुंबमां होय छे, अने त्यां ते कुटुंबनां अन्यजनो साथे नित्यसंबंधमां आवे छे. आवा नित्यना सहवासथी स्पर्धा अने द्वेषनो प्रसंग थाय छे. तेनी साथे कुंटुंब कुटुंबनी व्यक्तिमात्रने साधारण लाभ अने साधारण उद्देशने लेई वधारे निकट संबंध बंधाय छे, अने अनुकम्पा तथा प्रीतिनो उद्भव थाय छे. आ प्रकारना जे स्वतंत्र मांडलिक संबंधो तेमांथीज नीतिनियम माटेनी मानबुद्धि, कर्तव्यमात्रनीज आवश्यकतानी वृत्ति, बाळकना मनमां ऊपजी आवे छे. व्यक्तिव्यक्तिनो वेग अने इच्छानुं जे मिश्रण रमवाना स्थान उपर तेम घरमां बाळकना दीठामां आवे छे ते उपरथी तेने पोताना अने पोताना सहचरोना स्वार्थनुं परस्पराश्रितत्व, तथा एकत्व समजाय छे. अने नीतिमार्गे जेने सारुं कहेवाय ते माटेनी निःस्वार्थवृत्ति आवा नित्यसंसर्गोमांथीज जन्म पामे छे.

२९. **नीतिभावनानी वृद्धि, अधिकारनी असरः**—हवे जे क्रमथी नीतिभावना विकसे छे तेने विलोकीए. आपणे जोई आव्या तेम अधिकारना अनुभवमांथी नीतिनियम माटेनी मानबुद्धि पेदा थाय छे. नीतिसंयमनुं प्रथमरूप मातापितानो अधिकार ए छे. आरंभे बाळक खोटुं करतां पाछुं हटे छे ते शिक्षाना भयथीज. साहचर्यना नियमानुसार, अमुक कार्योना परिणाम माटे जे अरुचि होय, ते कार्य उपरज लागु थई जाय छे. छतां बीजां पण कारणो आमां नथी मळतां एम नथी. बे वर्ष के तेथी ओछा वयनां बाळक जेमने शिक्षानो अनुभव होतो नथी ते पण, सारी असरकारक रीते करेली आज्ञा प्रति मानभाव दर्शावे छे. वळी आपणे कही आव्या छीए तेम अन्यकृत स्तुति बाळकोने बहु गमे छे, अने आ वृत्तिथी (यद्यपि ते आत्मसंबद्ध छे तथापि ते) नीतिनियमने वश रहेवानी, अने तेने मान आपवानी, वृत्ति बंधावामां सारी साहाय्य थवानो संभव छे.

ज्यारे स्नेह अने अनुकम्पानुं बळ चालवा मांडे त्यारे आ मानबुद्धिनुं स्वरूप घणुं सुधरी जाय छे. स्नेह अने अनुकम्पापूर्ण हृदयवाळुं बाळक अनाज्ञाकारित्व अने अनाचारथी मातापितने दुःख थाय छे एम जोतांज तेवां कार्यथी विदूर रहेशे. खोटाथी खोटारूपेज विदूर रहेवानी शुद्ध वृत्ति बंधावानुं अचुक साधन, जे मात्रापना हाथमां अधिकार होय तेना उपर बाळकने दृढ प्रेम होय ए छे. पिता उपर प्रेम अने भक्तिमांथी जे नीतिनियमनो ते प्रतिनिधि छे, जे नियमनो ते अमल करे छे, तेने माटे पण प्रेम अने भक्ति पेदा थाय छे.

अविरुद्ध सहवासनी असरः—आटले सुधीमां पण जे सत्य अथवा सारा माटेनी वृत्ति ते सत्यनी खातरज सत्य उपर अभिरुचिरूपे होती नथी, जे मनुष्योने मान अने प्रेम अर्पवामां आवेलां छे तेमनी आज्ञाने अधीन थवानी भक्तिरूपे हजी ते वृत्ति जणाय छे. एवी आ-

ज्ञानुसार थतां सत्यकर्तव्योमां पण बुद्धिपूर्वक नीतिमत्ता समजाय ते सारुं बाळकने अत्र जे कहेवाशे ते प्रकारनो मांडलिक अनुभव अपेक्षित छे.

अन्य जनोना संमर्दमां बाळकने समजाय छे के तेमनां कर्मोथी तेने पोताने विविध असरो पहोंचे छे. कोई बाळक एनुं रमकडुं लेई जाय छे, अथवा एने मारे छे, तो तेथी एने दुःख थाय छे, क्रोधनी वृत्ति अनुभवाय छे, अने प्रतीकार करवानो वेग थई आवे छे. आथी उलटी रीते जो पेलुं बाळक सारुं होय अने पोतानां रमकडां वगेरे आनी साथे रमवामां वापरे तो एना आनंदमां वृद्धि थाय छे, अने एने उपकारबुद्धि थई आवे छे. आ रीते बाळकने, पोताना सुखदुःख उपर अन्यना सारां नठारां कर्मथी केवी असर थाय, तेनो अनुभव थाय छे. आ अनुभव थवाथी नीतिविवेचनानुसार जे भेद तेनुं एने विशेष ज्ञान थतुं चाले छे. तेना पोताना सुखसंबंधे "खरा" अने "खोटा" नो अर्थ तेना मनमां बंधाय छे. आटलेथी ए आज्ञाकारी, अबुद्धिक, वशंवदनी स्थितिमांथी मुक्त थाय छे; अने आज्ञाने बुद्धिपूर्वक प्रमाण अप्रमाण गणवा जेवी स्थितिमां आवे छे. एटले सुधी पण थाय छे के नीतिनियमनो अमल करनार ते पोतेज थई पडे छे, अने स्वार्थमय कर्म करनार बाळकने "नठारुं" अने आर्द्रभाववाळुं कर्म करनारने "सारुं" कहेवा मांडे छे.

नीतिवृत्तिनुं आवुं संकुचित अने मूलभूत रूप विचारथी वधारे संस्कारवाळुं थाय छे. वधारे अनुभवथी एने सारी के नठारी चालनुं परस्पराश्रितत्व समजाय छे; ब, क, ड, इत्यादिनां प्रामाणिकता, न्यायबुद्धि आदि, तेमना आचारनो जे नियम होय तेने ते अनुसरे ते उपर आधार राखे छे, एम तेने समजाशे. आ प्रकारे, ते पोतानी जाते सारुं

करवामांज लाभ समजशे. छतां आवा आत्मसंबद्ध विचारथी ते कांई बहु आगळ वधी जशे नहीं. खोटुं अथवा अयोग्य करवामां तेने स्वाभाविक रीतेज निर्वेद आवे तेम थवा सारुं तो अनुकम्पादि बीजी वृत्तिओ पण खीली शकवी जोईए.

अनुकम्पानुं सहकारित्व:—अनुकम्पानी असरो समजवा माटे एम धारीए के बना क्रोधावेगथी, अथवा लोभथी अने परिताप थाय छे. अने एम जणाय छे के क अने ड पण पोताना जेवुंज दुःख वेठे छे. पोतानी जातना दुःख उपरथी ते, बीजां जेने तेवुं दुःख थतुं होय तेने स्थाने पोतेज होय तेम भावना करी शके छे, अने बीजानुं दुःख पण जाणे पोतानेज थयुं होय तेम ते दुःख देनारना सामां थाय छे. आरंभे तो जे तेना गाढ प्रेमनां विषय होय अथवा तेनी पासे होय तेवांने माटेज तेने लागणी थाय छे, जेवां के माता, पिता, भाई, भगिनी, पत्नी, पुत्र, मित्र, इत्यादि. आम होवाथीज कुटुंबवात्सल्यता घणी उपयोगी वृत्ति थई पडे छे, केम के ते द्वारा अन्य माटे अनुकम्पानी अने तेमना लाभहानिमां लक्ष आपवानी वृत्ति घडाय छे. जेम जेम आवी अनुकम्पानी शक्ति वृद्धि पामे छे, तेम तेम अन्याय उपर क्रोधनी जे वृत्ति ते वधारे विशाल थती जाय छे, अने पोताना जातिबंधुओमांना वधारे वधारे जनो उपर विस्तरती चाले छे. आ रीते ते अन्यना आचारनो निःस्वार्थ द्रष्टा रहीने, अथवा नीतिनियमना प्रतिनिधिरूपे, रहीने पोतानी नीतिशक्तिनो उपयोग करतो थाय छे.

अन्तःकरण:—अनुकम्पाजन्य जे आवो खोटा उपरनो क्रोध तेनुं शील पडतां पोताथी खोटुं थाय त्यारे पण निःस्वार्थ निर्वेद ऊपजी आवे एवुं फळ थाय छे. अ, बने कांइक हानि ऊपजावे छे; पण पोताने जे अनुकम्पानुं शील बंधायुं छे तेथी बने जे दुःख थाय ते पोताने पण थाय

छे. जेने हानि थई छे तेने स्थाने ते पोताने मूके छे अने त्यांथी ए हानि ऊजावनार जे पोतानी जात तेना उपर जुए छे, अने नीतिवृत्तिजन्य क्रोध अथवा आत्मविडंबनापूर्वक जुए छे. पूर्वे ज्यारे खोटुं थाय त्यारे दंडनी भीतिथी के अन्यना उपालंभनी भीतिथी, जे दुःख लागतुं हतुं ते दुःख हवे पोतानी अनुकम्पावृत्तिमांथी ऊपजता अन्यना दुःखने लईने द्विगुण लागे छे. नीतिनियमना प्रतिनिधिरूपे, तेने, पोताना विचार तथा निश्चय अने वृत्तिओना शीलानुसार, आ स्थितिमां ऊभेला दुःखने, पोतानी जातने नीतिनियम तोडनार मानी पोता उपरज वहोरवुं पडे छे. बाळक नीतिनियमने अधीन रहेवा करतां ते नियमना पक्षमां रहे छे, बीजानी सामे थईने नीतिनियमनुं संरक्षण जेवी रीते करे तेवी रीते पोतानी जात सामे थईने पण करे छे, ए स्थिति ज्यारे सिद्ध थाय त्यारे तेनामां अंतःकरणनो एटले के निःस्वार्थ रीते कर्तव्यता उपरज प्रेम राखवानी वृत्तिनो प्रकाश थयो एम, परिपूर्ण रीते, कही शकाय.

नीतिभावना अने नीतिशक्ति उभये, अभ्यासथी वधे छे. खोटाथी निर्वेद पामवानी वृत्ति—गमे ते रूप रूपान्तरवाळी ए वृत्ति—बीजी बधी ऊर्मिनी पेठे अनुभवना वधवा साथे वधारे गाढ थती जाय छे, अने खोटुं करवानुं अन्याय्य स्वरूप तथा तेना परिणाम समजवामां आवी जाय छे. आ रीते, प्रामाणिकता अथवा वचनानुपालन जेवा कर्तव्यने वळगी रहेवानी वृत्ति जेम वय वधे तेम वधारे सबल अने दृढ थती जाय छे. नीतिविवेक पण अभ्यासथी सुधरे छे, अने तेनी साथे नीतिभावना वधारे संस्कृत अने सूक्ष्मरूप वाळी थती चाले छे. ए रीते झीणाझीणा भेद पण समजावा लागे छे, खराखोटानुं वास्तविक स्वरूप बुद्धिपूर्वक अवगत थाय छे, अने जे मात्र आपाततः खरुंखोटुं जणातुं होय तेने वास्तविक खराखोटाथी जुदुं पाडतां आवडे छे.

मांडलिक संसर्गोनी असरनी मर्यादाः— एटलुं कहेवानी अपेक्षा छे के आ आखा विकासमां बाळकने घणे भागे अन्यना आश्रयनी आवश्यकता छे. मंडळ छे ते व्यक्तिओ उपर अमुक नियमोनो अमल करावबाज इच्छे छे एम नथी, पण तेनी बुद्धि अने तेनी शुभवासनाने उत्तेजी ते द्वारा तेनो स्नेहसंबंध पण इच्छे छे. नीति अने धर्मनी केळवणीना समग्र क्रमनो हेतुज ए छे के नीतिशक्तिने संस्कार आपवो, वहेम अने पक्षपातादि दूर करवां, अने बाळकोने कर्तव्यताना उच्चतम स्वरूपनुं लक्ष करावबुं.

एम फलित थाय छे के नीतिशक्तिनुं यथार्थ स्वरूप, प्रत्येक व्यक्तिपरत्वे घणे भागे ते ते व्यक्तिना मांडलिक संसर्गोथी नक्की थवानुं. जे नीतिसंबंधी कवायत बाळकने घरमां अने शाळामां मळे तेथकी तेनी नीतिशक्तिना बंधारणमां घणी असर थवानी. नरम कवायत अने अतिशय लाडमांथी कर्तव्यता माटे लेश पण माननी बुद्धि रहे एम लागतुं नथी. कवायत उपरांत बीजी वात ए छे के बाळक जे संसर्गमां रहेतुं होय त्यां चालती नीतिभावनाओथी पण तेनी नीतिशक्तिने घणी असर थाय छे. आ भावनाओ यद्यपि मांडलिक तिरस्कार, प्रतिष्ठाहानि आदि दंडभयने लीधे बाळकमां पेशी जाय छेज, तथापि ते न होय तो ए अविज्ञात एवी अनुकरणनी टेवथी पण ते बळ्या विना रहेती नथी. जे शाळामां उच्च प्रकारनी नीतिभावनानुं साम्राज्य साचववामां आवे छे, ते शाळानां बाळकोनी नीतिशक्ति सारी थवानो संभव छे. एथी उलटी रीते हलका प्रकारनी नीतिभावनाथी, बाळकोनी वृत्तिओ अने विचारशक्तिओ हलका प्रकारनी थाय छे.

मांडलिक संसर्गोनी जे आवी असर थाय छे तेमां व्यक्तिना पोताना अवलोकननी ने विचारनी पण आवश्यकता छे. ए विना घणा उच्च

प्रकारनो नीतिविकास अशक्य छे. व्यक्तिए पोते चालता नीतिनियम अने नीतिसूत्र उपर लक्ष राखी तेमनी सारासारता विचारवी जोईए. छतां घणे भागे आपणे एम जोईशुं के माणसो पोताना बाळपणना संसर्गोनी नीति करतां वधारे आगळ जई शकतां नथी.

२६. **धर्मभावना**:—नीतिभावना साथे साधारण रीते धर्मभावनाने पण गणवामां आवे छे. सुधरेला मंडळमां अवतरेला माणसना मानसिक विकासमां धर्मभावना नीतिनी कवायतने संबंधे उद्भवे छे. नीतिने अधिक बळ अने आधार आपवा माटे धर्मनो विचार लाववामां आवे छे. पण समष्टिमां—जनसमूहमां—धर्मभावनाना विकास उपर दृष्टि करतां एम जणाय छे के, ते नीतिभावनाथी भिन्न छे; अने विश्वमात्रना तेम मनुष्यजीवनना व्यापारमात्रने नियमनार तथा समष्टि तेम व्यष्टिनां सुखदुःखादि उपर पूर्ण अधिकार भोगवनार कोई शक्तिना भय अथवा मानरूपे धर्मभावनानुं मूळ रूप देखाय छे. कोई गूढशक्ति आगळ जे सभय मानबुद्धि थाय छे अने आश्रिततानी जे वृत्ति अनुभवाय छे, ए आ भावनानुं सादामां सादुं निदान छे, अने धर्मवृत्तिनुं नियत तत्त्व छे. परिपूर्ण रीते विकसित स्वरूपे आ भावना बीजी भावनाओनां तत्त्वमांथी पण केटलुंक ले छे, अने सर्व करतां वधारेमां वधारे गुंफित वृत्तिरूपे जणाय छे. सत्यप्रियतानी वृत्ति धर्मवृत्तिमां भळे छे अने सर्वज्ञानना निदानरूप सर्वज्ञनी भक्ति पूजा इत्यादि वृत्तिरूपे देखाय छे. दिक्, काळ, आदि परिच्छेदथी निर्मुक्त एवा अनादि अनन्तनी भावना ते भव्यतानी भावनानुं रूपान्तर छे, अने समग्र नीतिमत्ता अने बुद्धिमत्ता अने विश्वमात्रमां अभिव्याप्त जे अस्पष्ट एकत्व तेनी भावना ए सर्वथी संवेष्टित जे परमसत्ता मानवामां आवे छे ते सौंदर्यभावनाना तत्त्वना मिश्रणमांथी उद्भवे छे. छेवट नीतिनियमने धर्मभावनाद्वारा घणामां घणो टेको मळे छे, नीतिमत्तानुं

परमभावनामय दृष्टान्त मळी आवे छे, अने ते द्वारा मनुष्यना हृदयमां भक्तिपूर्ण प्रेमवासनानो प्रबल वेग ऊपजी आवे छे.

२७. **नीतिशक्तिनी केळवणी**:—बाळकनी नीतिवृत्तिओ केळववानी वात ते बाळकनुं नीतिमय चारित्र घडावा साथे संबंध राखे छे. आपणे जोयुं तेम सत्यासत्यनी जे वृत्ति ते व्यावहारिक ऊर्मि छे, अने आचार उपर घणी असर ऊपजावे छे; एटले सत्य आचार करावनाना हेतुरूपे तेनी साथे शिक्षकने घणो संबंध छे. अत्र आपणे जे विचारवानुं छे ते ए छे के नीतिवृत्तिओने तीव्र अने तादृश शी रीते कराय? नीतिविवेक, नीतिद्वारा थता निश्चय, यथार्थ अने सुरेख शी रीते थाय?

माबाप अने शिक्षकनी बाळक उपर जे असर रहे ते आखीए तेनी नीतिशक्तिनी वृद्धि थवा उपर वपरावी जोईए, एम कहेवुं वास्तविक करतां वधारे नथी. प्रथम वात ए छे के जे कवायतनो बाळक उपर अमल करवामां आवे ते घणामां घणी असरकारक अने लाभप्रद थाय एम करवुं. नियमो रचवा तेमां अपवाद राखवा के करवा नहीं, एकसरखी रीते ते नियमोनो अमल करवो, छतां व्यक्तिव्यक्तिनी प्रकृतिना फेरफार अने प्रसंगनुं स्वरूप विचारीने काम लेवुं. आम करवा जतां निष्पक्षपात रीते रुचि अरुचि दर्शाववाथी नियमनुं अस्खलित नियमरूपे भान थवानो संभव छे. जे हेतुथी अने जेवी प्रकृतिथी कवायतनो अमल करवामां आवे ते उपर पण घणो आधार छे. अमुक प्रकारनी गंभीर शान्ति प्राङ्विवाकनामां होवी जोईए, एटले जे माबाप के शिक्षक बहु आवेगथी खेंचाई जाय ते नीतिनियमनो अमल करवाने नालायक छे. क्षुद्र अंगत द्वेष जेवी वृत्तिमात्र विदूर रहेवी जोईए.

बीजी पासा शिक्षक जडवत्, प्रतिमावत्, नहीं रहेवो जोईए. तेणे नीतिनियमना प्रतिनिधिरूप रहेवुं, पण तेम रहेवामां तेणे, असत्य के

अन्याय के खोटाथी परम दुःख पामनार सजीव—सहृदय—रूपे जणावुं. ए रीते शिक्षक, पोता उपर बाळकनां जे प्रेम अने भक्ति ते ऊपजावी तेनो उपयोग करी शके. जुठुं बोलवुं केवुं नीचुं काम छे, निर्बल अने निराधार प्राणीने दुःख करवुं ए केवुं नीच अने अपुरुषार्थवाळुं काम छे, ए वात तेवा तेवा आचारथी तेनां शिक्षक के मात्रापने जे दुःख थाय ते जोवरावी बाळकनी वृत्तिमां स्थापवी जोईए. एवीज रीते एथी उलटां जे औदार्य अने प्रेमभावनां कार्य छे तेथी जे हर्ष ऊपजे छे ते देखाडी बाळकने ते वृत्तिओनो पण परिचय करावको जोईए. ज्यां नीति, शिक्षकनां वृत्ति तथा नीतिसंबद्ध उत्साह के निर्वेद, तेनाथी सजीव अने सतेज रहे छे, त्यांज बाळकना मनमां तेनो उंडो संस्कार पडे छे. पोताना चारित्रनी अने पोतानी जातनी नीतिमत्ताने लीधेज एक मात्राप के शिक्षकनुं शिक्षण बीजा मात्राप के शिक्षकना करतां वधारे असरकारक गणाय छे.

स्वसंबद्ध वृत्तिव्यापार अने विवेकव्यापार थकी नीतिशक्तिने केळववामां विवेकशक्तिनी साथे अनुकम्पाना सतत अभ्यासनी अपेक्षा छे. पोताना आचारनां शां परिणाम थाय छे ते उपर बाळकनुं लक्ष पहोंचवाथी घणुं करी शकाय एम छे. खोटुं करवाना परिणाम, तेम सारुं करवाना सारा परिणाम बाळकने स्पष्ट रीते समजाववा जोईए, अने तेनी वृत्ति खोटानी सामे अने सारानी तरफेणमां सर्वदा रहे तेम करवुं जोईए. एटलुंज नहीं पण आचार आचारनी तुलना करतां घणाक आचारोमां जे नीतिसादृश्य होय ते पकडी लेतां तेमज जुदा जुदा प्रसंगे थता सादृश्यवाळा आचारने ओळखतां एवी रीते बाळकने टेव पाडवी जोईए के नीतिविवेकानुसार तेने निर्णय करवामां विलंब के विघ्न नडे नहीं.

नीतिशिक्षण एवुं जे कहेवाय छे ते आरंभे तो, कर्तव्यता अनें सद्गुणनां दृष्टान्तो बाळकने बतावबारूप, अने ते द्वारा तेनी वृत्ति अने विवेकशक्ति केळववारूप, होवुं जोईए. बाळकना अवलोकननो जे लघुप्रदेश तेने इतिहास तथा कथाथी विस्तारी आपवो. एम करवाथी वधारे नानात्ववाळा नीतिमय आचार तेना दीठामां आवशे अने सामान्यव्यवहारनी पार ते जई शकशे. आवी केळवणी खरेखरी नीतिनी केळवणी छे, केम के वृत्तिओने ते आकर्षे छे तेम विवेकशक्तिने सतेज करे छे. बीजी पासा ए पण लक्षमां राखवुं के नीतिनियमना विभागनां नाममात्र शीखववाथी, कर्तव्यतानो पाठ करावबाथी, सद्गुणोना वर्ग पाडी बतावबाथी, अथवा एवीज बीजी योजनाओथी यद्यपि ज्ञान मळे अने नीतिशक्तिनुं बुद्धिसहकृत जे अंग ते कांइक पुष्ट थाय, तथापि तेथी नीतिवृत्ति केळवाय एम लागतुं नथी.

आटले सुधी जे चर्चा थई तेमांथी एम नीकळे छे के पूर्ण अने समग्र विकास थवा माटे मात्राप अने शिक्षकनी असर उपरांत बीजी असरोनी पण अपेक्षा छे. नीतिवृत्तिना अनामय विकासमां बीजा बाळकोना सहवासथी लाभ थाय छे. घणाकना लाभ अने हकनुं मिश्रण थाय तेमांथीज न्यायबुद्धि ऊपजी आवे छे. एकना एक बाळकने एकलुंज केळववामां आवे तो तेनामां आ वृत्ति जणाशे नहीं. स्वतंत्र रीते व्यापार करवाना प्रदेशथी, घरमां अथवा बहार रमवाथी, बाळक पोताने घणामांनुं एक समजे छे, सारा आचारथी सामानो सारो आचार थाय छे एवो अनुभव ले छे, अने बीजाना हक उपर लक्ष राखी पोतानी आशाओने मर्यादामां राखवानी वात शीखे छे; एवा नीतिमय लाभ थई आवे छे.

एटलुंज नथी पण घणां छोकरां साथे हंमेशां भळवामांथी बाळकने नीतिनियमनुं आत्मेतर स्वरूप समजाय छे, घरमां कुटुंबभावनाना विचारमांथी तेने लोकोक्तिनो बीजरूप भास समजाय छे; पण आ नवो

विचार पूर्णपणे जे बळ करी शके छे ते तो शाळामांज. जे शाळामां अनामय नीतिमत्तानुं साम्राज्य होय; अपौरुषता, नीचता, क्रूरता इत्यादिनो तिरस्कार, अने होशीआरी एकनिष्ठा, उदारता इत्यादिनो स्तुतिपूर्वक भाव, प्रवर्ततो होय; ते शाळा बाळकनी वृद्धि पामती नीतिभावनाने घडवामां सारी सहायरूप थई शके छे. आवा विशाल अनुभवमांथी बाळकना समजवामां आवे छे के सारा अने खोटाना जे विभाग करेला छे ते गमे तेवा योग्य छतां पण कोई एक व्यक्तिनी मरजीनुं रूपज नथी, पण समग्र मंडळनी इच्छानुसार थयला छे, अने नीतिनियम पण सर्वतंत्र नियम होई जनतामात्रनी इच्छानुसार सुसिद्ध छे. हुं पण मंडळमां एक छुं एम आ रीते जाणवाथीज, नीतिनियमना प्रतिनिधिरूपे, तेनो अमल करावनाररूपे, पोतानी स्थिति बाळक सारी रीते समजी शके छे.

आ सर्वसाधारण भावना अने लोकोक्तिनुं नियमन अने स्पष्टीकरण ए नीतिशिक्षकनुं एक मुख्य कर्तव्य छे. नीतिनुं धोरण नक्की करवामां लोकाचार ए प्रबल वात थई पडे छे. पाकी वयनां माणस पण, लोक अमुक वातने मान्य करेछे एटलाज उपरथी तेने नीतिवाळी के वास्तविक गणी ले छे. अने नानी वयमां तो जे मंडळमां आपणे होईए तेना मतने अनुसरीने आपणे मुख्य रीते चालीएज छीए, त्यारे बाळक जो नठारी नीतिवाळा मंडळमां पडी गयुं तो तेनो नीतिविकास अटकी पडे छे. शाळाना मुख्यने जोवानुं ए छे के योग्य मार्गे प्रवर्ततां जे बळ नीतिविकासने सहायरूप छे ते विरुद्ध मार्गे वर्ती नीतिशक्तिने विपरीत करी नाखतुं होय नहीं.

प्रकरण १३.

इच्छा.

हवे आपणे चेतनना तृतीय अंग उपर जईए: तेना कार्यसंपादक स्वरूपने विलोकीए—

१. इच्छामां शानो शानो समास छे? चेतनना कार्यसंपादक व्यापारमात्रने "इच्छा" ए शब्दथी उद्देशवामां आवे छे. कार्यसंपादक व्यापार एटले बाह्य कर्म अथवा व्यापार एटलुंज नहीं, पण आंतर एवां मानसिक एकाग्रता, तेमज कर्मना पूर्वे थता अमुक मानसिक व्यापार, जेवा के अमुक वस्तुनी इच्छा थवी, ते कर्म करवा न करवानो विचार थवो, करवानो निश्चय थवो,—इत्यादि सर्वनो कार्यसंपादक व्यापारमां समास जाणवो.

आवा बनावोमां संपूर्णताए पहोचेलां बाह्य कृत्य ए मुख्य छे. इच्छाना आविर्भावरूपे आपणे जेने साधारण रीते मानीए छीए ते कोई बाह्य व्यापार के कार्य होय छे. आ प्रकारे जोतां इच्छा उद्वाहक तंतुचक्रसाथे निकट संबंध राखती जणाय छे. साधारण रीते कहेवाय छे तेम कार्यसंपादक इंद्रियो (शरीरना अवयव जिव्हा इत्यादि) इच्छानां साधन छे.

कर्म अथवा व्यापार ते यद्यपि इच्छाशब्दनो विशाल अर्थ करतां तेमां समाय खरां, तथापि ते सर्वथा इच्छासहितज छे एम साधारण रीते मनातुं नथी. आपणे इच्छासहित अने इच्छारहित एवा व्यापारना भेद मानीए छीये. हाथे करीने कोई प्रकारनो प्रतीकार करवो ते इच्छासहित व्यापार छे, आंख आगळ कोई पदार्थ एकाएक आवी जतां आं-

ख मीचाई जवी ए इच्छारहित व्यापार छे. इच्छारहित व्यापारमांना केटलाक, आपणे हवणांज जोइशुं तेम, मनोव्यापारज नथी, केमके तेमां भाननो थोडोज आविर्भाव होय छे. बीजा केटलाक यद्यपि भानसहित होय छे तथापि स्पष्ट रीते अमुक हेतुपरत्वेज नियत जणाता नथी. त्यारे जेने पूर्ण रीते इच्छासहित कर्म कही शकाय ते भानसहित अने अमुक हेतुपरत्वे नियत एवा कर्मनेज कही शकाय एम नक्की थाय छे. टुंकामां, भानसहित अमुक हेतुपरत्वे नियत जे कर्म ते इच्छासहित कर्म कहेवाय.

२. **इच्छानो बुद्धि (ज्ञान) अने वृत्ति साथे संबंधः**—इच्छा ए शब्दनो आ प्रकारे जे अर्थ आपणे ठराव्यो तेने आधारे इच्छानो ज्ञान तथा वृत्ति साथे शो संबंध छे ते जोई शकाशे. आ स्थाने पण अमुक विरोध अने अमुक संबंध उभय छे. कर्म साधवामां लागेला मननी बाह्यप्रवृत्ति, जेमां उद्ग्राहक तंतुचक्र तथा स्नायुना व्यापार चाले छे ते, कोई पण वातनुं अवलोकन करी ते विषे विचार करवाने आवश्यक एवी शरीरनी जे शान्त स्थिति, तेनाथी विरोधी छे. लोकव्यवहारमां पण तीव्र संवेगवाळा कर्मपरायण माणसथी, शान्त विचारशील माणसने जुदो मनाय छे. एज रीते उग्र ऊर्मिविक्षोभ अने कर्मसाधकता ए विरोधी छे; अने दृढ इच्छाशक्तिवाळो माणस तेज कहेवाय छे के जे, सर्व करतां ऊर्मिओने वश राखी शके.

आनी साथेज एम पण छे के इच्छासहित कर्ममात्रमां केटलेक अंशे ज्ञान अने वृत्तिनो समास होवोज जोईए. इच्छासहित कार्य साधवामां जे हेतु, एटले के जे इष्ट वात होय, ते कोई वृत्तिनी परितृप्तिज होवी जोईए (जेवी के लोभनी, स्तुतिप्रियतानी, इत्यादि) अने जे इष्ट फळ मेळववानुं होय तेनी अने आपणा कर्मनी वच्चेनो संबंध जाण्या विना आपणे कर्मपरायण थई पण शकीए नहीं. आम छे एटले इच्छाने प्रेरनार वृत्ति ठरे छे, अने तेने मार्ग बतावनार बुद्धि ठरे छे.

३. **इच्छाव्यापारनुं स्वरूपः**—इच्छासहित कार्यनी व्याख्या एवी करी छे के भानपूर्वक अमुक हेतुपरत्वे नियत व्यापार. हवे जोवानुं ए छे के आवा कार्य, कर्म, के व्यापारमां शुं तत्त्व छे. बाळकनी स्थितिमांथी एक उदाहरण लईए. पोताना माथा उपर एकाद भींते फूल उगेलुं छे एम बाळक देखे छे. तेने तोडी लेवा माटे ते पोतानुं शरीर ताणीने लांबुं करे छे, तथा हाथ उंचो करे छे. आ कर्म इच्छासहित छे. आमां शुं थाय छे ? फूलने जोवाथी बाळकना मनमां तेना सुगंधना आनंदनी, अथवा तेने पोताना हाथमां राखवाना आनंदनी भावना उदय पामे छे. ते भावनाथी ए फूल लेवानी प्रेरणा थाय छे. तेवी इच्छा थतां इष्ट फळ साधवाने योग्य जे व्यापार तेनुं सूचन थाय छे; बीजी रीते कहीए तो जे इष्ट फळ छे ते, तदर्थे करेला व्यापारथी प्राप्त थशेज एवी श्रद्धा थाय छे.

बीजुं उदाहरण लईए. बगीचामां रमतुं एक बाळक वर्षादनां फोरां पडतां देखे छे, अने गर्जना सांभळे छे. तुरतज ते पासेना छापरामां जईने भराय छे. आमां पण कर्म तेना तेज प्रकारनुं छे, मात्र पेला उदाहरणमां अनुकूळनी प्राप्तिप्रति व्यापार हतो, अत्र प्रतिकूळना परिहारप्रति व्यापार छे, एज तफावत छे. अत्र प्रतिकूळ निर्वेद ते प्रेरक छे, तत्र अनुकूळ उपरनी प्रीति प्रेरक छे.

आ सादां उदाहरणमांथी एटलुं स्पष्ट थाय छे के इच्छाव्यापारमां मुख्य तत्त्व इच्छा छे; पछी ते अनुकूळ प्राप्तिरूप, के प्रतिकूळ परिहाररूप गमे ते रूपे होय. सव्यापार मननुं अनुकूळ तरफ, अने प्रातिकूळथी दूर, जे वळण तेज इच्छाव्यापारनुं तत्त्व छे. बाळकने अनुभवथी खबर पडे

छे के अनुकूळ शुं छे ने प्रतिकूळ शुं छे, तथा एकने प्राप्त करवा तथा बीजाने परहरवा केवा व्यापारनी अपेक्षा छे. पण सुख गृहवुं, ने दुःख त्यजवुं, वेग तो साहजिक, स्वभावसिद्धज होय छे.

आटला पृथक्करणमांथी एम सिद्ध थाय छे के इच्छाव्यापार समजता पूर्वे इच्छानुं स्वरूप समजवुं जोईए. इच्छा ए इच्छाव्यापारनुं पूर्वरूप छे.

(१) **भावनानुं तत्त्व**:—इच्छानुं पृथक्करण करी जोतां मुख्य तत्त्व भावना समजाय छे. आपणे कोई समृद्धि, कोईनो सारो अभिप्राय, के कोई धंधो, इच्छता होईए छीए त्यारे इच्छानो जे विषय तेनी भावना करीए छीए. एमां भावनानुं तत्त्व रहेलुं छे माटे इच्छाने चेतनना बुद्धिस्वरूप साथे संबंध छे. ज्यां ज्ञान (बुद्धि) न होय त्यां इच्छा पण न होय. अनुभव थयला होय, अने ते अनुभवनुं स्मरण थतुं होय तोज तेवा नवा अनुभवो माटे इच्छा थाय. गरमीने वखते शीतल जळना तळावमां पडवानी इच्छा बाळकने थाय छे ते तेना पूर्व अनुभवनुं फळ छे. आम होवाथी अनुभव अने ज्ञाननी वृद्धि साथे इच्छानी पण वृद्धि थाय छे.

इच्छामां जे भावना रहे छे ते स्मृतिचित्र होय, के कल्पनाजन्य प्रतिभाचित्र होय. जेनो आपणने कशो अनुभव न होय तेवी वस्तुओनी पण, जो आपणे तेनी भावनाने जरूरनां कल्पनाचित्र जोडी शकीए तो, इच्छा थाय छे. अर्थात् भूत अनुभवना स्मरणमात्रथीज इच्छा थाय छे एम नथी, पण अननुभूत स्थितिनी कल्पनामांथी पण थाय छे. बीजां माणसोना अनुभव सांभळतां, वाचतां, शक्य एवा भावि अनुभवोनां कल्पनाचित्र योजतां, इत्यादि प्रसंगोमां तेवी इच्छा थाय छे. छेवट इच्छा केवळ सामान्योने अंगे अथवा भावरूप विचारोने अंगे पण उद्भवे छे. सत्य, सद्वृत्ति, न्याय, इत्यादि माटेनी इच्छा आ वातनुं उदाहरण छे.

(२) **वृत्तिनुं तत्त्व**:—इच्छानुं वधारे सूक्ष्म विलोकन करतां जणाय छे के जेटली भावनाओ थाय छे तेटली बधीज इच्छा प्रेरती नथी. घणीक भावना अने घणांक चित्र मनमां कांई पण इच्छा ऊपजाव्या विना चाल्यां जाय छे. वस्तुओने आनंदकारक के आनंद ऊपजावनाररूपे भावनामां आणवाथकी इच्छारूपी मनोविक्षोभ संभवे छे. मीठाईनी इच्छा करवामां बाळक तेने खावानी मझानी भावना करे छे; सारी प्रतिष्ठा के नोकरी मेळववानी इच्छामां पण माणस ते स्थितिना आनुषंगिक आनंदोनी भावना करे छे.

वस्तुतः सुखकारक एवी भावनामां वृत्तिनुं तत्त्व रहेलुंज छे. सौंदर्यवाळो विश्वलीलाप्रदेश, के मधुरराग, तेनी भावना करवामां मनने तज्जन्य आनंदनो प्रत्यक्ष अनुभव थतो होय एवुं लागे छे. परंतु साधारण प्रसंगोमां आवी जे भावना ते प्रत्यक्ष अनुभव करतां बहु निकृष्ट होय छे, अने निकृष्ट छे एम समजाय पण छे. अने आ निकृष्टत्वना भान साथेज इच्छाने साक्षात् संबंध छे. इच्छा एटले अमुक न्यूनतानुं भान, अमुक नथी एम लागवुं; अने एवुं जे इच्छानुं स्वरूप ते आनंदकारक भावनानी प्रत्यक्ष करतां जे निकृष्टता, ते समजावामांथीज उद्भवे छे. ज्यारे भावना अने प्रत्यक्ष वच्चेनो आ तफावत जतो रहे छे, त्यारे इच्छा पण जती रहे छे. अति तीव्र आशामां, अप्राप्य एवा आनंदोनी तादृश कल्पनामां, एटले के कल्पित कथाओ वाचतां, समाधितुल्य धार्मिक भावनाओमां, इत्यादिमां तो इच्छा विरत थई जाय छे, एक क्षणभर प्रत्यक्ष आनंद थयाना भानमां डुबी जाय छे.

निकृष्ट छे एवुं जेनुं भान रहे छे ते आनंदनी पूर्णरूपे भावना थाय एम कहेवुं विरोध जेवुं जणाय छे; जेटले अंशे पूर्णपणाथी दृष्ट वस्तुनी भावना थाय तेटले अंशे तेनो प्रत्यक्ष अनुभवज थयो एम मानी लेवानी वात जेवुं जणाय छे. परंतु इच्छानी

आवी अपर्याप्तिनो आ एकज दाखलो छे एम नथी. स्मृतिमांज भूतप्रत्यक्ष करतां वर्तमान स्मरण–भावना–निकृष्ट छे एम तो आपणने भान होयज छे.

इच्छानो वृत्ति साथे संबंधः—इच्छा अने वृत्तिनो संबंध बहु निकट छे ए लक्षमां लेवा जेवुं छे. शुद्ध वृत्तिमात्रने आपणे अमुक स्थितिमात्रज मानीए छीए. एकाद सुंदर पुष्पना उपभोगने जुदे जुदी निराळी मानसिक स्थिति मानीए तो, तेमां कोई कारकव्यापार जणातो नथी. एनीज साथे आगळ आपणे कही आव्या तेम याद राखवुं के वृत्तिनो निर्गम कोईने कोई व्यापारद्वाराज थाय छे, ने तेटले अंशे तेमां कारकव्यापारनुं तत्त्व रहे छे. वळी साक्षात् के भावनामय गमे तेवी पण वृत्तिमात्र इच्छाने प्रोत्साहित करे छे. अमुक सुखनी भावनाथी इच्छाने प्रोत्साहन मळे छे एटलुंज नहीं, पण सुखना साक्षात् अनुभवमां पण ते वधारे समय चाले अने वधारे विपुल थाय एवी इच्छा विद्यमान रहे छे. एज रीते साक्षात् तेम भावनामय उभये प्रकारनां दुःख ए निर्वेदनां पूर्वगामी स्वरूप छे.

साक्षात् सुखथी इच्छाने प्रोत्साहन मळवाना व्यापार, घणुं करीने, सुखनी भावनाथी थता इच्छाना प्रोत्साहनना सरखेज छे, साक्षात् सुखोपभोग, जेटले अंशे पूर्ण होय तेटले अंशे, पोते स्वतःज इच्छाने ऊपजावतो नथी. पण उलटो कांईक शान्ति पेदा करे छे. अमुक उपभोग आपणे करतां होईए ते समये तो, ए उपभोगनी विद्यमानताथीज, आपणी इच्छा शान्त छे. परंतु कोई पण उपभोग विपुलतानी एकनी एक स्थितिमां चिरकाळ रहेतो नथी, आगळ जोई आव्या तेम सुखकारक प्रोत्साहनना वितानथी तेनी असर कांइक क्षीण थवा मांडे छे; एटले आवी स्थितिमां जे पुनःपुनः जागी ऊठती इच्छानो आपणने अनुभव थाय छे ते आ क्षीणतामूलक होवानो वधारे संभव छे.

आ प्रकारे जेम वृत्ति, इच्छानुं पूर्वगामी अंग अने इच्छानी मुख्य सामग्री छे, तेम इच्छा पण वृत्तिनां नवां नवां तत्त्व ऊपजावती चाले छे. आगळ बताव्युं छे तेम अभाव, न्यूनता, तेमांथीज घणांक दुःखोनो उद्भव छे. साक्षात् छे ते भावना करतां न्यून छे एवुं भान, जे इच्छानुं खरे खरुं तत्त्व छे, ते स्पष्ट रीते दुःखकारकज छे, अने ज्यारे इच्छा पूर्ण विकास पामे छे, एटले के अव्यवहित क्षणेज ते परितुष्ट थती नथी, त्यारे दुःखनुं तत्त्व बहु विपुल थई पडे छे. आटला उपरथी एम जणाय छे के इच्छानी समग्र स्थिति एक मिश्रस्थितिरूप छे, एमां सुखकारक (भावनाथी ऊपजतुं) तत्त्व अने दुःखकारक (न्यूनत्वभानजन्य तत्त्वो)नुं संघट्टन चाल्यांज करे छे.

(३) **सव्यापारतानुं तत्त्वः**—इच्छा वस्तुतः सव्यापारताज छे. आ विशेषतार्थकीज ते ज्ञान तेम वृत्ति उभयथी भिन्न पडे छे; एने लीधेज ज्ञान अने वृत्तिनो तेम ज्ञान अने इच्छाव्यापारनो संबंध तेना द्वारा थई शके छे. इच्छाव्यापार करती वखते मन, सव्यापार प्रतानता पामे छे, अथवा ते क्षणे मात्र भावनागम्य एवी वृत्तिने प्रत्यक्ष अनुभववा तरफ वेगपूर्वक व्यापारमां पडे छे. इच्छानुं जे आ आंतरतत्त्व तेने मननो व्यापार, अथवा इष्टफलप्राप्ति माटे प्रयास, इत्यादि नाम आपवामां आवे छे.

इच्छामां जे आ सव्यापारतानुं तत्त्व छे ते बे दिशा ले छे; (१) प्रथमे ते मानसिक व्यापारमात्ररूपे, एटले के इष्ट फळनी भावना उपर एकाग्रतारूपे जणाय छे. कोई पण सुखने तीव्र वेगपूर्वक इच्छवामां मन तेना "भावथीज भराई गयुं छे" एम साधारण रीते कहेवाय छे. ए भावना स्थिर थवानो यत्न करे छे, अने ए अवधानने यंत्रित करी लेवा मथे छे.

आ रीते अवधान यंत्रित थवाथी भावना वधारे स्पष्ट अने विपुल थाय छे; अने ज्ञात के अज्ञात रीते पण मन वधारे परिपूर्ण साक्षात्दर्शन माटे आतुर थाय छे. आ प्रकारनो जे आयासक्रम छे तेना स्वरूपनो यथार्थ निर्णय हाथ आव्यो नथी.

(२) ए सव्यापारता बीजी दिशा ए ले छे के इच्छामात्र स्वाभा-

विक रीतेज जे कायिक अथवा स्नायुसंबद्ध सव्यापारतानी जोडे संबद्ध छे ते रूपे प्रदर्शित थाय छे. आपणे जोई आव्या छीये तेम वृत्तिमात्रना परिणामे उद्वाहक अवयवोनुं कांईक पण प्रोत्साहन तो अर्थात् थवुंज जोईए. इच्छामां आ उद्वाहक तत्त्व वधारे प्रसिद्धि पामे छे. घणा अनुभवथी मनने ज्यां एम परिचय थयो होय छे के उद्वाहक अवयवोना अमुक व्यापारथी अमुक इच्छा तृप्त थशे त्यां आ वात वधारे स्पष्ट रीते समजाय छे. परन्तु आ संबंध वास्तविक रीते जोतां फलभूत होय एम लागे छे; अनुभव थता पूर्वे पण इच्छा अमुक प्रकारना उद्वाहक व्यापारप्रति प्रेरणा करती समजाय छे. इच्छानी सव्यापारतानो आ फलभूत प्रकार तेनेज वेग कहेवामां आवे छे.

इच्छामां जे स्नायुव्यापारप्रवणता रहे छे तेमां अवधानने अनुषंगे जे तंतुव्यापार थाय छे ते करतां, उद्वाहक प्रदेशोमां अधिक प्रोत्साहननो पण समास छे. अने आ उद्वाहक प्रदेशोमां जे व्यापार थाय छे तेने अनुषंगे जे चैतन्यभान थाय छे, एटले के तंतुव्यापारनुं तथा स्नायुआकुंचननुं जे प्रत्यक्ष थाय छे, ते उपरथी इच्छानी स्थितिनुं स्वरूप बंधातुं हशे, आतुरता अने कार्यसाधकतत्परता दीठामां आवे छे ते उद्भवती हशे, एम समजाय छे.

आवेग ए शब्द सव्यापारतानी जे साहजिक प्रेरणाओ जेमां सुखनी स्पष्टभावनानुं तत्त्व होतुं नथी अने तेथी इच्छा पण होती नथी तेनो वाचक छे. एमां बुद्धिना तत्त्व करतां सव्यापारतानुं तत्त्व बहु होय छे, जो के इच्छामात्रमां उद्वाहक सव्यापारता अने तेथी, सव्यापार आवेग ए बे तत्त्व थोडां घणां पण होयज छे.

इच्छानुं आटले सुधी जे पृथक्करण कर्युं तेमां " जेथी सुख संभवे तेनी भावना " साथे इच्छाने संबंध छे एवो जे प्राकृत जनोनो विचार छे तेज स्वीकारवामां आव्यो छे. आ वात घणे प्रसंगे सत्य पण जणाय छे; ऐंद्रियपरितोष शोधतां, मांडलिक संसर्गनुं सुख इच्छतां, कोई उत्तम कलाकार्यने विलोकतां, ए वात समजवामां आवे छे. बीजा प्रसंगो, जेवा के ज्ञान प्राप्त करवानी के विशेषे करी सद्गुणो ग्रहवानी जे इच्छा छे, तेमां सुखावहत्वनो भाग स्पष्ट जणातो नथी. चारित्रनी विशुद्धिने आपणे तेनी प्राप्तिथी उद्भवता सुखोपभोगनो विचार कर्या विनाज चा'ईये छीए; अथवा कांई

नहीं तो एटलुं तो समजायज छे के सुखावहत्वनी जे भावना ते इच्छाना बळना प्रमाणमां होवी जोईए ते करतां घणीज न्यून होय छे. आवा जे देखीता अपवादो छे तेनो खुलासो अत्र बतावामां आवे छे तेवा कोई तर्कथी करवानो छे. (१) अमुक प्रत्यक्षोने अनुषंगे, अव्यवहित क्षणेज सुखनो अनुभव होय छे, एटले आपणने ते सुखनी भावना, उक्त प्रत्यक्षोने स्मरी तेमनी भावना उपर लक्ष ठराव्या विना थई शकती नथी. आम होवाथी इच्छामां जे पदार्थ के स्थिति आदिथी साक्षात् रीते सुखावहत्वने उपकार थतो होय ते पदार्थादिनी कल्पनानुं भान घणुं तीव्र थई आवे छे. (२) बधी परंपरित इच्छाओमां एटले के घणा विदूर एवा सुखावह पदार्थोनी इच्छामां, अमुक साध्यने अर्थे साधन योजवानी इच्छामां, सुखनी भावनानुं भान घणुंज अस्पष्ट होय छे. अने आपणे धीमे धीमे जोईशुं तेम इच्छासहित अवधाननुं स्वरूपज एवुं छे के अव्यवहित साध्य, यद्यपि ते मात्र कोई अन्य साध्यनुं साधनज होय तथापि पण, ते उपर अवधानने एकत्रित करवुं. (३) हवणांज बतावामां आवशे तेम केवळ एक एवुं शीळ बंधाई जवाथीज आपणे पदार्थादिनी इच्छा कर्या करीए, एमां प्रथम पहेलां ते इच्छा थवाने समये जे सुखावहत्वनी भावनानुं भान होय ते अतिन्यून, नहीं जेवुं पण होय. (४) अने छेवट बतावामां आवशे तेम, एवुं पण होय छे के जे प्रबल इच्छानुंज बळ जणाय छे ते, घणी वखत कोई अभावेच्छा, अर्थात् अमुकना अभावथी थता दुःखना परिहारनी इच्छामांथीज ऊपजे छे.

अत्र लक्षमां आणवा योग्य इच्छाना बुद्धितत्त्वसंबंधे एक बीजी वात ए छे के इच्छानो श्रद्धा साथे शो संबंध छे ते जोवुं. इच्छानी साथेज इष्ट फळ प्राप्य छे एवी श्रद्धा होय छे?— आ प्रश्न छे. घणेक प्रसंगे आ तत्त्व स्पष्ट रीते विद्यमान होतुं नथी. आपणने घणीक एवी वातोनी इच्छा थाय छे के जेमनी शक्यता के प्राप्यतानो आपणे विचार पण करता नथी, कोईए कहेली वातनी इच्छा थाय छे त्यां आ नियम स्पष्ट जणाय छे. ए पण लक्षमां राखवा जेवुं छे के अमुक सुखावहत्व प्राप्त थवानुंज छे एवी विश्वासयुक्त आशाथी पण इच्छा निर्बळ पडे छे. भविष्यत् साक्षात्कारने वर्तमान साक्षात्कार तुल्य गणी लेवामां आवे छे. आनी विरुद्ध ए पण जोवानुं छे के इच्छा एटले भावनाने पर्याप्त करवानी प्रवणता ए स्वरूपे इच्छाने समजतां, इच्छामां विश्वासनुं कोईक बीज रहे छेज. कोई पण सुखना अप्राप्यत्वनुं स्पष्ट भान होय तो तेथी इच्छानो विनाश थाय छे.

४. **इच्छा अने निर्वेद**:—अनुकूळ अने प्रतिकूळ वृत्तिनो जे विरोध

छे तेना जेवोज विरोध इच्छाना प्रदेशमां पण जणाय छे. अनुकूळनी भावनाथी जेम इच्छा जाग्रत् थाय छे; तेम प्रतिकूळनी भावनाथी निर्वेद पेदा थाय छे. जे सुखकारक होय तेनाप्रति आपणुं वळण थाय छे, ने तद्विरुद्ध तेथी आपणे दूर रहीए छीए. दुःख जो तादृश विद्यमानज होय तो निर्वेद तीव्र इच्छारूपे परिणमी दुःखनिर्मोचननी आकांक्षानुं रूप लेछे; केवळ भावनामात्र होय तो सामान्यतः निर्वेद ऊपजावे छे.

अत्र लक्षमां लेवानुं ए छे के ज्यारे इच्छा आवेद्यमान अने अननुभूत विषये प्रवर्ते छे त्यारे निर्वेद तो विद्यमान अने अनुभूतने विषये पण प्रवर्ती शके छे. दुःखनो अनुभव पामतुं मन तेमांथी मुक्त थवानी अर्थात् वर्तमान स्थिति बदलवानी अभिलाषा करे छे. भावि दुःखना परिहारनी इच्छामां पण तेनी प्रत्यक्ष भावना करीने तेवी इच्छा थाय छे; अने एम छे माटे निर्वेदने विद्यमान साथे अने इच्छाने अविद्यमान साथे संबंध छे, एम केटलाकनुं कहेवुं छे ते योग्य लागे छे. इच्छानुं फळ कांइक भावरूप सुख, आनंद, रूप छे, निर्वेदनुं फळ अभावरूप—दुःखप्रहाण, दुःखनिर्मोचनरूप छे, अर्थात् यद्यपि उभयथी क्रिया ऊपजी आवे छे तथापि ते क्रिया ऊपजाववानो प्रत्येकनो प्रकार भिन्न भिन्न छे. यद्यपि दुःख इच्छाने उत्तेजित करवामां अति बलवान् छे तथापि तेना सामर्थ्यने अमुक मर्यादा छे; दुःखाभाव सिद्ध थतां तेनो सिद्धि समाप्त थाय छे. पण इच्छाने तेम नथी. जे सुखाभिलाष इच्छामां होय छे ते सिद्ध थतां पण तदुत्तर अधिक सुखाभिलाष थाय छे, अथवा तेनी ते स्थिति चालू रहे एवी वांछना पण थाय छे. आवा भेदने लीधे इच्छानी केळवणीना स्वरूपमां घणाक अगत्यना बिचारो पेदा थई आवे छे ते आपणे आगळ जोईशुं. आ प्रकारे यद्यपि इच्छा अने निर्वेदनो विरोध छे तथापि तेमने घणो निकट संबंध पण छे ए लक्षमां राखवुं. सुगंधनो आनंद दुर्गंधना क्लेशथी विरुद्ध छे; सुरोनो बराबर आलाप बेसुर आलापथी विरुद्ध छे; एटले भावरूप आनंद इच्छतां मन, थोडे के घणे दरज्जे निर्वेदना विरोधी भावनो आश्रय करे छे. ज्यां इष्ट आनंद, के परिहरवा जेवु दुःख, स्वविरुद्ध वृत्ति उपर आधार राखतुं होय छे त्यां आ संबंध वधारे स्पष्ट रीते देखाई आवे छे. जेमके कोई उत्तम मित्र अथवा एवा कोई सारा पदार्थनो अभाव थई जवाना दुःखनुं भय होय त्यां आपणे, थोडे के घणे दरज्जे, जेथी सुख थाय छे ते स्थिति चालू रहे एमज इच्छीए छीए. आथी उलटी रीते स्वातंत्र्य, अनामयत्व, के ज्ञाननी इच्छा करवामां आपणे पारतंत्र्य, आमय, के अज्ञानना दुःखथी दूर रहेवा इच्छीए छीए, लोकनिंदा अने आत्मानो पश्चात्ताप ए बे दुःखना परिहारनी इच्छामांथीज सन्मार्ग उपर रुचि करवानी अने लोकप्रीति संपादन करवानी इच्छा घणे भागे उद्भवे छे.

पूर्ण उद्बोध पामेली इच्छामात्रमां दुःखनुं कांइक पण तत्त्व रहे छे, एटले भावरूप कोई पण पदार्थ के सुखनी अभिलाषा पण लांबो समय चालू रहे तो तेमां दुःखप्रति निर्वेदनो अंश पण विद्यमान रहे छे—कोई सुख आवतां बहु वार थाय त्यारे ते माटेनी जे इच्छा ते, ए इच्छा कर्यानी पीडामांथी मुक्त थवानी इच्छानुं रूप ग्रहे छे. परंतु आवुं थवुं ते इच्छाना द्वितीय क्रममां थाय छे; प्रथम क्रमे तो सुखावह एवा कोईक भावमांथीज इच्छा ऊपजे छे.*

५. इच्छाना बळनो आधारः—इच्छा अने तज्जन्य क्रियासाधक वेग ए उभयना बळमां तारतम्य रहे छे. इच्छा एक क्षणिक अभिलाषमात्रथी ते अति तीव्र अने दृढ आतुरता पर्यंत होई शके छे; अने एवा एना भेद अनेक प्रकारे देखाई आवे छे. प्रबल इच्छाथी सतत प्रयास थाय छे, निर्बल इच्छाथी तेम थतुं नथी. वळी इच्छाना बळनुं माप ए उपरथी पण करी शकाय के इच्छानी पर्याप्ति न थतां दुःख केटलुं उद्भवे छे.

जे सुखनी भावना करवामां आवी होय तेनी विपुलता उपर इच्छाना बळनो अर्थात् तेना वेगनो मुख्य आधार रहे छे. एकंदरे एम कही शकाय के सुखभावना जेम वधारे विपुल तेम इच्छा वधारे प्रबल, अने क्रियासाधक वेग पण वधारे बलवान्. आखा दिवसनी रजा मळवानी आशाथी, नित्य करतां अर्धो कलाक वे'ला घेर जवा देवानी आशा करतां, निशाळिआओने वधारे आनंद थाय छे ए सुविदित छे. एम कही शकाय के

* इच्छामात्र स्वरूपे जोतां निर्वेदरूपज छे, अर्थात् विद्यमान एवा कोई दुःख क्लेशादिना परिहारनी अभिलाषा रूप छे, एम निवृत्तिमार्गवाळा जे माने छे तेमां जे कांई सत्य छे तेनुं बीज इच्छाना आ स्वरूपमांथी ज उद्भवे छे.

इष्टार्थभावनानी विपुलताना प्रमाणमां इच्छाना बळमां फेरफारो थाय छे. परंतु एटलुं सविशेष जोवुं के जे भावना करवामां आवी छे तेमां फलित थनार सुखनुं यथार्थ निरूपण छे के नहीं. अति विदूर एवा भविष्यत् काळमां "इनाम" मळवाना आनंदनी भावना भविष्यकल्पना करवामां निर्बळ बाळकने यथार्थ स्वरूपे थती नथी. जे समीप होय तेनाथी, आकर्षण के प्रतिकर्षण उभय परत्वे, जे दूर होय तेना करतां, वधारे असर थाय छे. त्यारे स्पष्टज छे के जे प्रकारे भावि सुखनी भावना थाय ते प्रकारे इच्छाना बळनुं तारतम्य थई आवे छे.

अत्र जे कहेवामां आव्युं ते उपरथी एम फलित थाय छे के यथार्थभावना करवानो अर्थ भावि सुखनी पर्याप्ति थतां जे अनुभव थाय तत्सदृश भावना करवी एवो नथी. कोई पण आनंदनी, मो'टा आनंद रूपे आपणे तेनुं यथार्थ स्वरूप जाण्या विना पण, भावना करी शकीए. जेम के कोई नवा देशमां जवाना आनंदनी, इत्यादि. आटले सुधी जे कहेवामां आव्युं ते सर्व उपर लक्ष करतां एम जणाय छे के प्रबळ इच्छामां प्रथने भावनानी सापेक्ष विपुलता जोईए, एटले के ज्यारे प्रत्यक्ष अनुभव थशे त्यारे भावना करतां कांइक अधिक आनंद आवशे एवी भावना जोईए; अने बीजे दरज्जे निरपेक्ष विपुलता पण जोईए, एटले के बीजा बधा आनंद करतां ए अनुभवना आनंदनी महत्तानी भावना जोईए.

आवो जे सामान्य नियम कर्यो ते एक बे अपवादवाळो छे. सर्व काळे मन सरखी रीते व्यापार करवाने अनुकूळ स्थितिमां होतुं नथी. कार्यपरायण होईए त्यारे जे प्रोत्साहक जोईए ते करतां आलस्य अने शिथिलतानी दशामां वधारे प्रबळ प्रोत्साहकनी अपेक्षा रहे छेज. मननी आवी नानाप्रकारनी दशानो आधार उद्वाहक स्नायुओमां क्रियासाधक शक्तिना ओछा वधता जमाव उपर रहे छे एम लागे छे. एवी शक्ति जो संपूर्ण रीते मळ्यां करती होय तो अनामय शरीरवाळुं बाळक नानामां नानी सुखभावनाथी पण अतुल प्रयास करवा अने इच्छापरायण थई सव्यापार थवा उश्केराय छे.

उद्वाहक तंतुस्थानोनी कर्मोन्मुख स्थिति साथे उद्वाहक स्नायुना आ व्यापारने घणो संबंध छे एम जणाय छे. स्नायुनी सशक्त दशाथीज कार्यपरायणता आवे छे एम नथी, जेम उद्वाहक स्नायु वधारे सशक्त अने वधारे कार्योन्मुख तेम भोगववाना आनंदो पण वधारे; आथी उलटी जे आलस्यनी स्थिति तेमां आनंदो घणा थोडा प्रकारना भोगवी शकाय छे ए पण सुप्रसिद्ध छे. आ उपरथीज जणाशे के कार्यसाधक व्यापारने अनुषंगे ते व्यापारथी सिद्ध करवाना इष्टार्थ करतां भिन्न एवी ते व्यापारनाज आनंदनी भावना रहे छे; अने आलस्यमां आयासमां न पडवारूपी दुःखपरिहारनी भावना रहे छे.

छेवटे ए पण जोवुं जोईए के क्रियासाधक वेगने शीळना नियमनी पण असर थाय छे—मनमां ज्यारे पुनः पुनः अभ्यासथी अमुक अमुक भावनाओने इष्टार्थरूपे स्थापी राखवामां आवे छे, अने तेमने सिद्ध करवा उपर प्रयत्न चालू राखवामां आवे छे, त्यारे तेज दिशामां इच्छा अने प्रयास करवा शीळ बंधाई जाय छे, ए रीते शीलरूप इच्छाओ ने वळणो घडाय छे.

इच्छाने अमुक दिशामां नियत करवा परत्वे शीळनी जे आवी असर छे ते, जे पदार्थो प्रथमना जेवाज सुखावह रह्या न होय तेना तरफ, अने क्वचित् तो जे पदार्थो सुखावह मटीज गया होय तेमना तरफ पण अस्खलित वेगपूर्वक प्रवृत्ति थयां करे छे, एमांथी स्पष्ट जणाई आवे छे. ज्ञान प्राप्त करवानो जे आनंद आरंभे अनुभवातो होय ते अविद्यमान सते पण अभ्यासनुं जेने शीळ थई गयुं छे एवा अभ्यासीने अस्खलित वेगपूर्वक अभ्यासनी प्रवृत्ति रह्यांज करे छे. पोताने हानिकारक अने दुःखकर्ता छे एम जाणेला मद्यपानादि प्रति ते पीनारने पुनः पुनः प्रवृत्ति थाय छे ए आ नियमनुं सुप्रसिद्ध उदाहरण छे.

आ स्थाने कहेवुं जोईए के इच्छानी जे क्रियासाधक शक्ति तेज, आम थवामां, शीलथी करीने वधारे दृढ थयली होय छे. कोई वातमां आपणने आनंद न पडे तो पछी आपणे तेनी इच्छा करतां नथी; परंतु आ नियम अनुभवमां सिद्ध थतो जणातो नथी.

इष्ट एवा नित्य परिचयना पदार्थो पण ज्यारे अविद्यमान होय छे त्यारे अति उत्कट इच्छा जणाय छे. पूर्वनी सुखावह भावनाओ मनने लोभावी भ्रममां पाडी इच्छा उत्पन्न करे छे एम आ स्थाने धारवुं नहीं; जोके घणी वखत इच्छाने चालू राखवामां एवुं पण कारण नथी होतुं एम नथी. परिपूर्ण खुलासो एवो छे के आपणे आगळ जोई आव्या तेम शीलथी करीने इच्छानी तीव्रतानी पीडा अधिक लागवा मांडे छे. कोई पण वातनो अभ्यास थतां ते वात आपणने आवश्यक थई पडे छे, एटले ते वस्तुनो अभाव थतां आपणो पोतानो कोइ आवश्यक अंशज जतो रह्यो होय एम आपणने लागे छे. आम छे एटले शीलरूप इच्छामात्रमां जे वेग रहे छे ते आवा दुःखानुभवने परिहरवाना आयासरूपे रहे छे. जेने आपणे प्रेरणा कहीए छीए ते पण इच्छाना आवा भावरूप अने अभावरूप स्वरूप वच्चे जे संबंध छे तेनुंज दृष्टान्त छे. नियत समये एक स्थळथी बीजे स्थळ जनारां पक्षिविशेषमां जे "अंध प्रेरणा" जणाय छे तेमां कोई भावरूप सुख के आनंदनी भावनाथी थयली इच्छानां स्पष्ट तत्त्वो जणातां नथी, पण पोताने जे सुखाभावरूप दुःख के निर्वेद थाय तेनो परिहार करवानो यत्नमात्र होय एम लागे छे.

६. इच्छानो व्यक्ति व्यक्तिमां भेद; क्रियासाधक (चंचळ) प्रकृति:—अत्र जे विचारो दर्शाववामां आव्या तेना आधारथी, चंचलता अथवा जेने सामान्यतः इच्छानुं उपादान कहे छे तेनुं व्यक्तिव्यक्तिपरत्वे जे तारतम्य होय छे तेनो विचार हवे आपणे करी शकीशुं. प्रबल इच्छाशक्तिमां प्रथमे तीव्र इच्छा जोईए. इच्छाने वृत्ति साथे निकट संबंध छे एटले तीव्र इच्छानी साथे, सहज रीतेज, वृत्तिनी तादृशता अथवा विपुलता रहेवी जोईए. प्रबल ऊर्मिविक्षोभनी योग्यता ए, सबल चंचलतानुं पूर्वरूप छे. परंतु वृत्तिमात्रज आटला माटे पूर्ण नथी. घणां बाळकोनामां सबल वृत्ति होय छे, पण तदनुरूप इच्छाशक्ति होती नथी. वृत्ति उपरांत जेनी अपेक्षा छे ते सबल क्रियासाधकत्व अथवा जेने चंचळ प्रकृति कहे छे ते छे. सबल इच्छानो आधार उत्तम प्रबल वृत्ति अने तत्संबद्ध प्रबल वेग तेना संयोग उपर रहे छे. शान्त सबुद्धिक इच्छाव्यापारमां जे क्रियासाधकता दर्शन दे छे तेनो विचार आगळ थशे.

७. इच्छा अने इच्छाव्यापार:—आटले सुधी तो आपणे इच्छाना मूलभूत स्वरूपनो विचार कर्यो. आपणे हवे तेनुं परिपूर्ण स्वरूप जोवानुं छे. इच्छाव्यापार एटले के इच्छापूर्वक कार्यसाधक प्रवृत्ति ते तेनुं परिपूर्ण स्वरूप छे. कोई वस्तु माटेनो अभिलाष, अने ते वस्तु प्राप्त करवा माटेनी प्रवृत्ति, ए बे यद्यपि इच्छाव्यापारमां अंतर्भूत छे तथापि तेटलाथीज इच्छाव्यापारनुं स्वरूप सिद्ध थतुं नथी. वारंवार आपणे अमुक वस्त्वादिनी अभिलाषा करीए छीए, अने अंतरनी प्रवृत्ति ते वस्त्वादि प्रति थती जाणीए छीए, तथापि तेटलाथी इच्छाव्यापारनी स्थिति सिद्ध थई गणाय नहीं. इच्छाव्यापारनुं स्वरूप सिद्ध थवा माटे हजी पण बीजा अंशनी अपेक्षा छे.

आ अंशमां इष्टार्थनी भावनानोज नहीं पण ते इष्टार्थ सिद्ध करवामां सहाय एवी कोई क्रियानी भावनानो पण समास जाणवो. कोई पदार्थ माटेनी इच्छा उत्पन्न थतां तेने सिद्ध करवा योग्य क्रियानी भावना पण साथेज ऊपजे त्यारेज आपणे ते अर्थनी इच्छा करी इच्छाव्यापार करवानी स्थितिमां छीए एम कहेवाय. अत्र एटलुं तो स्पष्टज छे के आ जे आवश्यक अंश ते अनुभव अने साहचर्यमांथी ऊपजावी लेवानो छे. एक सादुं उदाहरण लईए. उष्णतानी इच्छाथी अग्नि पासे जवानो व्यापार थाय छे, तेनुं कारण एज छे के आपणा अनुभवथी आपणा मनमां ए व्यापार अने उष्णतालाभ ए बेनी वच्चे साहचर्य बंधाई गयलुं छे.

सादामां सादा इच्छाव्यापारमां जे क्रम रहेलो छे ते आ प्रकारे बतावी शकाय, आरंभे तो मनमां कोई एक इच्छा स्फुरे छे. आ इच्छानी साथेज इष्टार्थने सिद्ध करवा समर्थ एवी कोई एक क्रियानी भावना पण मनमां थाय छे. क्रिया सफल थशे, अथवा इच्छा सिद्ध थाय एवी छे, एवी श्रद्धा उक्त क्रिया अने इष्टार्थनो कारणकार्यभाव मान-

वामां रहेली छे ए तो स्पष्टज छे. पछी जे क्रियानी भावना थई होय छे ते रूप व्यापार थाय छे. इच्छामां जे क्रियासाधक वेग हतो ते, सूचित एवा अमुक व्यापारने मार्गे वळ्यो एम आ आखा क्रमनुं वर्णन करीए तो यथार्थ छे. छेवटनो जे व्यापार तेने कर्म कहे छे. कर्मनी पूर्वे जे इच्छा होय छे, ने जे कर्मना स्वरूपनो निश्चय करे छे, तेने तत्प्रेरक शक्ति अथवा हेतु कहे छे. हेतुमां पण इष्टार्थसिद्धिनी प्रथमतःज भावना होय छे एटले जे इष्टार्थ तेने फळ, साध्य अथवा कार्य कहे छे, अने व्यापारने पोताने साधन कहे छे.

स्पष्टज छे के अत्र प्रत्यक्ष अने भावना उभय श्रेणिनी अपेक्षा रहे छे. कर्म करवामां ते कर्मानंतर आनंद उद्भवे छे, कर्मना अंत अथवा साध्य रूपे ए पण फळज छे; पण तेनी भावना करवामां क्रम उलटो थई जाय छे. फळनी भावना, कर्मनी भावना अने क्रिया करतां पूर्वे थाय छे. आम एक पासाथी कर्म ते आनंदनुं कारण छे, तेम बीजी पासाथी ते आनंदनी पूर्वभावना, ते कर्मनुं कारण छे. आम होवाथीज हेतु अने फळ ए बे शब्दोने पर्यायरूपे वापरवानो प्रचार पड्यो छे.

कर्मनुं फळ इष्टार्थ साथे एकरूप छे, परंतु परिणामे थनार आनंदनी भावनाने अनुषंगे तेनी अनेक उपाधिनी पण भावना थाय छे एटले ए उपाधिने घणीवार "फळ" ना स्वरूपमां गणी लेवामां आवे छे, जो के मूळथी आपणो उद्देश तो ते आनंदमात्र उपरज होय छे. कर्मने ते आनंदजनक मानवामां आनंदने पोताने आपणे गौण रीतेज इच्छीए छीए एम गणाय; माटे कर्म माटेनी इच्छाथी आनंद माटेनी इच्छाने मुख्य रीते आपणे जुदी पाडी लेवी जोईए.

८. इच्छा अने अवधान:—इच्छानां बे अंग मानवामां आवे छे; एक बाह्य के जे स्नायुव्यापारमां पर्याप्त छे; बीजुं आंतर जेनी पर्याप्ति एकाग्रता अथवा अवधानमां छे. आ बे अंग जुदां मान्यां छे ते वास्तविक छे; केम के इच्छाविकासना जे बे जुदा जुदा परिणाम—विचारशील मनुष्य अने कार्यसाधक मनुष्य—एवा थाय छे तेने ते विभाग मळता आवे छे.

परंतु ए बे विभागमां जे व्यापारो थाय छे ते परस्परथी स्वतंत्र छे एम नथी. अवधानमां पण अमुक प्रकारनो स्नायुव्यापार रहे छेज; इच्छाव्यापारमात्रमां अवधान पण होय छेज. कोई फळ सिद्ध करवा माटे कांइक करवामां मन मुख्य रीते इष्ट फळ उपर स्थिर रहे छे, अने गौण रीते तत्साधक कर्म उपर स्थिरता करे छे. इच्छाना वधारे गुंफित व्यापारो (परामर्श, तुलना, इत्यादि) मां तो अवधाननो आथी पण वधारे उपयोग छे एम स्पष्ट जणाशे.

९. इच्छाविकास:—इच्छाव्यापारना क्रमनुं आ प्रकारे कांइक विलोकन कर्या पछी आपणे इच्छाविकासनो विचार करीए. अत्र जे प्रथम जोवानुं छे ते इच्छानो बाह्यकर्ममां आविर्भाव थाय छे ते छे. इच्छायुक्त अवधानमां इच्छानो जे आविर्भाव छे तेनो आगळ विचार थशे.

बुद्धि अने वृत्ति अथवा ज्ञान अने लागणीना विकासनी पेठे इच्छानो विकास पण शुद्ध (सादा) स्वरूपमांथी मिश्र अथवा वधारे गुंफित स्वरूपमां जवा रूपे, साक्षात्त्वमांथी भावनामां जवारूपे थतो चाले छे. नानुं बाळक पोताना मोढामां कांइक मूकतुं होय तेना व्यापार घणाज सादा अर्थात् अव्यवहित एवा फळने अनुलक्षीने थयला होय छे. कोइ पुख्त उंमरनो माणस एक कागळ लखतो होय, परीक्षा माटे तैयारी करतो होय, तेमां तेना व्यापार वधारे गुंफित छे, अने भावनाशक्तिनुं एमां वधारे मिश्रण छे, अर्थात् अति विदूरनां फळनी भावना एमां वधारे भळेली रहे छे.

वळी, आरंभे कर्म साक्षात् रूपज होय छे; एटले के बाह्यथकी तेनो आरंभ थाय छे, इंद्रियार्थसन्निकर्षथी ते उद्भवे छे (जेमके उक्तदृष्टान्तमां आहारदर्शनथी, इत्यादि); आगळ जतां ते भावनारूप बने छे, एटले के अंतःस्थ केन्द्रथी तेनो आरंभ थाय छे, अंतरमां थती भावना (कल्पना) थी ते उद्भवे छे, इंद्रियार्थसन्निकर्षथी नहीं.

उंचा प्रकारनां कर्ममां गुंफन तेम भावना उभयनी वृद्धि थयली जणाय छे, केमके दृश्यमान कर्मनी पूर्वे जे चेतनव्यापार थाय छे ते वधारे गुंफित होय छे. अमुक फळ अने तत्साधक अमुक क्रिया तेटलानी त्वरित भावना करीनेज कर्म करवा उपर आववा करतां, आवा उंचा प्रकारना कर्ममां तो, विचार जेमां प्रधान छे एवी उत्तम प्रकारनी भावना, पछी तुलना करी अमुकनी उपर रुचि करवी, अने पछी अमुक मार्गनो निश्चय करवो, एवी घणी प्राक्रिया बनी जाय छे. छेवट जे उत्तमोत्तम कर्मप्रकार छे तेमां अत्यंत आंतर एवाज इच्छाव्यापारो थाय छे. गति, वृत्ति, अने विचारना व्यापारोनुं जेनाथी नियमन थाय छे ते व्यापार आ प्रकारना छे.

बुद्धि अने ऊर्मिना विकासनी पेठे इच्छाना विकासने अर्थे पण अमुक प्रकारनी साहजिक शक्ति अने प्रकृतिनी अपेक्षा छे. आना विषे कहेवामां आवेलुंज छे, छतां हवणां अधिक कहेवाशे; परंतु आ उपरांत अभ्यास, अनुभव, इत्यादिनी असर पण लेखामां लेवी अवश्यनी छे. प्रत्येक व्यापार अभ्यासथी वधारे संपूर्ण स्वरूपे थतो चाले छे. उतरता प्रकारना कायिक व्यायामथी पण चढता प्रकारना अभ्यास माटेनी योग्यता ऊपजी आवे छे. हवणांज वधारे सारी रीते समजवामां आवशे तेम विकासना समग्र क्रममां अनुभव अने साहचर्यनी असरो प्रत्यक्ष जणाय छे. इच्छाना प्राथमिक वेगने अमुक मार्गमां दोरवो पडे छे, अमुक दिशाए नियत करवो पडे छे; अने ए वात अनुभव विना सिद्ध थती नथी.

आ प्रकरणमां आपणे इच्छाविकासना प्रथम क्रममात्रनोज—एटले के साक्षात्त्वजन्य कर्म अथवा शरीरव्यापारनोज—विचार करीशुं. पोताना इष्टार्थ सिद्ध करवा माटे बाळक पोताना स्नायु अने शरीरावयवने जे गति आपी शके छे ते कीया क्रमथी उद्भवे छे एनो आपणे विचार करी जोईशुं.

१०. इच्छायुक्त गति शी रीते उद्भवे छे:—आपणे जोई आव्या तेम इच्छासहित गतिमात्रमां अमुक फळनी, तत्साधक व्यापारनी स्पष्ट भावना अपेक्षित छे. ए तो स्पष्टज छे के आवा फळनुं अने तत्साधन समर्थ व्यापारनुं ज्ञान अनुभवथीज थयलुं होवुं जोईए. आम छे एटले एम मानवाने कारण छे के ज्यारे पण ते व्यापार प्रथम पे'लो थयो हशे त्यारे तत्साध्य फळ के ते फलसाधक ए व्यापार पोते एनी भावना थया विनाज ते थयो हशे. त्यारे आपणे एज करवानुं छे के गतिना प्राथमिक स्वरूपनुं विलोकन करवुं, अने आवी स्पष्ट पूर्वभावनारहित व्यापार, तत्सहित व्यापार, एटले के इच्छायुक्त व्यापाररूपे शी रीते थई आवे छे ते समजवुं. आ विलोकनने अर्थे प्राथमिक गतिना विविध प्रकारना विवेचनथी आरंभ थवो जोईए.

प्राथमिक गतिना वर्गो आ प्रकारे थइ शके छे.—

(१) **सहज अथवा अहैतुक गति:**—इच्छाव्यापारो पूर्वे जे गतिओ संभवे छे तेमां इच्छारहीत, अथवा अहैतुक गतिओ ए प्रथमे छे. उद्भावहक तंतुस्थानोना प्रोत्साहनमात्रथीज जे जे गति उद्भवे छे ते सर्वनो आमां समास छे. तेमनी पूर्वे कोई प्रकारनुं इच्छा के भानयुक्त तत्त्व, होतुं नथी, कोई प्रकारनी वृत्ति होती नथी, अने प्रोत्साहनजन्य व्यापारमात्र सिद्ध थतां जे भान थाय ते उपरांत तेने अनुषंगे बीजो कोई चेतनव्यापार होतो नथी. एवी गतिमात्रमां कशो उद्देश जणातोज नथी; एथीज एने अहैतुक कहेवाय छे. केन्द्रस्थ उद्भावक तंतुओमां भराई रहेली शक्ति, शरीरनी युवावस्था अने अनामय स्थितिने समये, वेग पामी बहार व्यापारवती थवा वळे छे तेनुं आ परिणाम छे एम जणाय छे. जन्म्या पछी तुरतज मनुष्य अने पशुआदिनामां जे आवा अहेतुक व्यापार दीठामां आवे छे ते आज वर्गना व्यापार छे; जेवा के चक्षु, पग,

हाथ इत्यादिना; कोई पण बाह्य प्रोत्साहन के आंतर वृत्तिना अभावेपण ते व्यापार थयां करे छे. आ गतिने यंत्रवत् गति पण कहे छे.

(२) **परावर्तित गतिः**—आगळ जे गति कही तेनाथी आमां एटलो फेर छे के संवाहक तंतुस्थानोने बाह्यथी कांइक धक्को लागतां आ गति पेदा थाय छे; अर्थात् एमां बेवडुं प्रोत्साहन रहे छे, बाह्य संघट्टथी थतुं संवाहक तंतुनुं प्रोत्साहन, अने तज्जन्य उद्वाहक तंतुनुं प्रोत्साहन. सहज गति साथे एटले अंशे आनुं पण मळतापणुं छे के आमां ए कोई प्रकारनो स्पष्ट चेतनव्यापार पूर्वरूपे रहेलो होतो नथी. बहारथी अंदर आवती असरथी थतो तंतुव्यापार क्षणिक अने अर्धविज्ञात जेवो थाय छे, केमके ते थतानी साथे तुरतज उद्वाहक व्यापारनो आरंभ थई बाह्य गति सिद्ध थाय छे. आ गतिनुं स्वरूप नियत होय छे, केमके ते ते गतियोग्य जे संवाहक तंतु तेनी साथेनो निकट संबंध ते तजती नथी. परावर्तित गति, सहज गति करतां कांईक भागे सहेतुक व्यापार जेवी देखाय छे, जोके एवो देखाव पण घणे भागे अति अस्पष्ट अने क्षीण जेवोज होय छे, परंतु एमां स्पष्ट इच्छानुं तत्त्व तो होतुंज नथी. आंख आगळ कांइक पदार्थ आवतां आंख मीचाई जाय छे, बाळकना हाथमां कांईक पदार्थ मूकतां तुरतज तेनी आंगळीओनी मूठी वळी जाय छे, ए बधी आ प्रकारनी गतिओ छे. श्वासप्रश्वास, आहारग्लपन, इत्यादि गति तो स्वभावासिद्धज होय छे, चक्षुर्निमीलनादि धीमे धीमे प्राप्त थाय छे, आपणे हवणां जोईशुं तेम इच्छायुक्त व्यापारो पण बहु अभ्यासथी परावर्तित गति जेवा थई रहे छे.

(३) **प्रेरणाजन्य गतिः**—परावर्तित गतिथी आने जुदी पाडी शकवी बहु कठिन छे. परावर्तित गतिनी पेठे आ पण प्रोत्साहनजन्य प्रतिघातरूप छे. परंतु परावर्तित गतिथी आनो भेद बे कारणोथी पडेलो छे.

एक तो आ गति वधारे गुंफित स्वरूपवाळी छे, अने बीजे भागे एमां कोई प्रकारनो पण स्पष्ट चेतनव्यापार—अमुक प्रकारनी वृत्ति—होय छे. वळी आ गतिने स्पष्ट जणाई आवे तेवुं कांइक सहेतुकतानुं स्वरूप पण होय छे. एम मानवाने पण कारण छे के यद्यपि फलाभिसंधि घणो अस्पष्ट होय छे तथापि पण अमुक इष्टार्थप्रति प्रयत्नरूप इच्छानुं तत्त्व आ प्रकारनी गतिमां थोडुं घणुं पण होय छे. अमुक एकजातना व्यापारो जे समग्र जाति अनेक काळथी करती आवे छे तेना तेज परंपरित शीलरूपे व्यक्ति व्यक्तिमां दर्शन दे छे, अने आ प्रकारनी गति ऊपजावे छे, एम जणाय छे. हलकी प्रतिनां प्राणिओनां प्रेरणाजन्य कर्ममात्र, जेवांके पक्षिजातिनी मादानुं इंडांने सेववुं, मधमाखीओनुं पोताना मधुछत्रना छिद्रनुं रचवुं, बीवर नामना जनावरोए पोतानी वसति माटे रचनादि करवां, ते सर्व आ प्रकारनी गतिनांज फळ छे. माणसमां रहेली परिपूर्ण प्रेरणाओ घणी थोडी छे, परंतु तेमां धाववुं ए सर्वथी सुस्पष्ट छे. ज्यारे क्षुधा पेदा थाय छे, अने उपयोगयोग्य वस्तु विद्यमान होय छे, त्यारे ते व्यापार थाय छे. आपणे हवणांज जोईशुं तेम बाळपणमां प्राप्त करेलां घणांक कर्म जेवांके पदार्थोने हाथथी झालवा, सीधा बेसवुं, ऊभा चालवुं, ए बधां केटलेक भागे प्रेरणाजन्यज छे, केमके एमां परंपरित एवां स्पष्ट वळणोनुं संमिश्रण देखाय छे.

परावर्तित गतिना स्वरूप विषे जेटला मतमतांतर अने विवाद तेटलां प्रेरणाजन्य गतिने माटे घणा विवाद थया छे ने थाय छे. शीलरूप कर्म अने प्रेरणाजन्य कर्म वच्चेना सादृश्य विषे तो कहेवाई गयुं छे. हलकी प्रतिनां प्राणिओनां प्रेरणाजन्य कर्मोनुं स्पष्ट जणातुं सहेतुक स्वरूप, अने तेमने अनुभवनो जे अभाव, ते बेनो साथे विचार

करतां एकप्रकारनी विश्वदृष्टिनी कल्पना उद्भवी छे*. हेतु स्पष्ट न छतां पण अस्खलित रीते प्रेरणाजन्य कर्मो सिद्ध थयां जाय छे त्यां एम जणाय छे के स्पष्ट भावनानुं तत्त्व एवा व्यापारमां विद्यमान नथी. परावर्तित कर्मोने अने प्रेरणाजन्य कर्मोने शो संबंध छे ए विषये हजी निश्चय थयो नथी. हर्बर्ट स्पेन्सर वगेरे केटलाक प्रेरणाजन्य कर्मोने परावर्तित कर्मोना गुंफित स्वरूपरूपेज माने छे, अने जी. एच. स्नाईडरे पण हवणां ते मतने पुष्टि आपी छे. पण एवा व्यापारने अनुषंगे चेतनानो जे भास रहे छे– वृत्ति, प्रयत्न आदि तेमां जे रहे छे– तेटलाथीज ते व्यापारो परावर्तित व्यापार करतां जुदा पडवा जोईए.

प्राथमिक गतिना अन्य प्रकारः– प्राथमिक गति विषेनी आ चर्चाने पूर्ण करवा सारुं तेना एक बे बीजा विभाग पण जोवा जोईए. एमां प्रथमे अभिनयरूप गति (जेवीके रोदन, चुंबनार्थे ओष्ठमीलन, इत्यादि) नो समास थाय छे. प्रेरणाजन्य गति साथे आ गतिओने घणो निकट संबंध छे, केमके ए सर्वमां वृत्तिनुं कांईक तत्त्व रहे छे, अने घणे भागे एवी गतिप्रवणता परंपरित होय छे. एमां सहेतुकतानो अभाव होवाथी एमने इच्छाजन्य व्यापारना पेटामांथी बाद करवामां आवे छे. परंतु इच्छाव्यापारना शुद्ध अने प्राथमिक स्वरूप साथे आ प्रकारनी गतिने घणो निकट संबंध छे एम हवणांज समजाशे.

छेवटे एक बीजा प्रकारनी गतिओनो पण विचार करवो प्राप्त थाय छे. ते विभाग अनुकरणात्मक गतिओनो छे. आमां पण इच्छा अने सहेतुता ए बे तत्त्व घणे भागे न्यून होय छे, जो के एमां ए गतिनी

* ए कल्पनाज छे के नहीं तेनो निर्णय आटलाज खुलासाथी थतो नथी. केमके माणसने अनुभव छतां, अनेक प्रकारना सहेतुक व्यापार छतां, पण ए स्थिति थई आवे छे एम हालमां वहार आवतुं जाय छे.

पोतानी स्पष्ट भावना होय छे खरी. छेक हवणांना समयमां थयली शोधो प्रमाणे एम जणायुं छे के आ प्रकारना व्यापारो छेक नानी वयमांथी दर्शन दे छे, अने इच्छाविकासने घणा सहायरूप थई पडेछे. एमना विषे पण आगळ जतां वधारे विचार करवो प्राप्त थशे.

प्रेरणामां इच्छाव्यापारनुं बीजः— इच्छाव्यापारना विकासक्रमनो आरंभ आ बधा गतिप्रकारमां क्यांथी करी शकाय एम छे ते तपाशीए. प्रथमे अहैतुक गतिने जोईए. सहज रीते पोताना अवयवोने गति आपवाथी बाळकने पोताना अवयवो हलाववा चलाववानो अनुभव थाय छे, अने केटलीक वखत ए प्रकारे कर्या पछी, ए गतिनी भावना पण ते करी शके छे. एटलुंज नहीं पण आवा व्यापारमांथी अमुक आनंद मळे छे एम पण तेने लागतुं जाय छे. उदाहरण. बाळकना आगळ कोई चकचकतो पदार्थ धरवामां आवे तो बाळक तुरत तेना भणी पोताना हाथ लांबा करे छे, अने ते पदार्थनो स्पर्श करवा इच्छे छे; ने तेने प्राप्त करी खुशी थाय छे. एक बे वखत आवी आकस्मिक गति थया पछी, बाळक एम समजे छे के ज्यारे तेना आगळ कोई पदार्थ धरवामां आवे त्यारे हाथ लंबाववाथी ते पदार्थनो स्पर्श करवानी खुशी अनुभवाशे. केटलाकनुं (प्रो. बेन वगेरेनुं) एम मानवुं छे के बाळको आज प्रकारे बुद्धिपूर्वक अने हेतुसहित कार्य करवुं शीखतां जाय छे.

आवी मान्यतामां कांईक सत्य छे एम स्वीकारवुं जोईए. अप्रेरित व्यापारोमांथी आ प्रकारे इच्छायुक्त व्यापार उद्भवे छे. वळी अनामय अने सशक्त उद्वाहक स्नायु स्वगत वेगने लीधे कांईने कांई व्यापार कर्याज करे छे ए नियम, आ मान्यताथी, आपणा लक्ष उपर वधारे ठसतो जाय छे, अने इच्छाविकासना क्रमनो विचार करवामां एनाज

उपर मुख्य लक्ष राखवुं जोईए एम जणावे छे. त्यारे अनामय अने सशक्त एवी उद्ग्राहक स्नायुव्यवस्था सर्वदा व्यापार करवाने एटले के वेगवाळा व्यापार करवाने तत्पर होय तो तेथी इच्छाविकास सत्वर अने सारो थाय छे एम स्पष्ट जणाय छे. तथापि इच्छायुक्त गति अथवा व्यापार जे प्रकारे उद्भवे छे ते विषे कोई योग्य खुलासो आटलाथी मळतो नथी. प्रथमे एज समजावुं कठिन छे के वास्तविक रीते जेने अप्रेरित, अहैतुक, व्यापार कही शकाय तेवा कोई छे के नहीं; कारण के जे घणाक व्यापारो बाळकोनी सहज गति आदिमां तेवा देखाय छे ते संवाहक तंतुस्थानोने बाह्य के आंतर एवां अस्पष्ट प्रोत्साहननांज फळ छे एम मानवाने कारण छे. खरेखरी अहैतुक गति अति विरल, अने क्वचित्ज थाय छे ए वात लक्षमां राखतां इच्छायुक्त व्यापारनी उत्पत्तिनो खुलासो करवा माटे जेवा अने जेटला अकस्मात् मानवा जोईए ते बधा एज रीते पेदा थाय छे एम कहेवुं ठीक लागतुं नथी; वळी नानां बाळकोनुं अवलोकन करवामांथी पण आ मतने पुष्टि मळती नथी.

वळी, केटलाएक परावर्तित गतिनेज इच्छायुक्त व्यापारना आरंभक बीजरूपे माने छे. आपणे हवणांज जोई आव्या तेम अप्रेरित गतिमां घणी एक बाह्य प्रोत्साहनना प्रत्याघातरूप होवाथी परावर्तित गतिज छे. एकाएक अवाज थतां चमकी ऊठवानो जे व्यापार थाय छे तेज एम बतावे छे के तंतुचक्रना स्वभावनोज एवो नियम छे के संवाहक तंतुस्थानना प्रोत्साहनमात्रथी, प्रोत्साहनना बळना प्रमाणमां, अनेक प्रकारना व्यापार पेदा थई आवे छे. आ वात जो यथार्थ होय तो बाळकना शरीर उपर थतां अनेक संवाहक तंतुस्थाननां प्रोत्साहनोथी केवा केवा अहैतुक व्यापार ऊपजी आवे, ने ते आगळ

जतां केवी रीते इच्छायुक्त व्यापारमां गणाय ए समजवुं कठिन नथी. आपणे चळकता पदार्थनुं जे दृष्टान्त आगळ आप्युं तेनेज तपासीए तो ते पदार्थना दर्शनथी अनेक व्यापार थाय छे, मुख्य करी हाथ लंबावानो व्यापार थाय छे, अने एम करते करते एवा व्यापार अने तत्साध्य फळ वच्चेनो संबंध समजातां, ते व्यापार इच्छापूर्वक पण थवा लागे छे.

आ मतमां पण कांइक सत्यता रहेली लागे छे. चमकी ऊठवामां थाय छे तेवा परावर्तित व्यापारना अमुक प्रकारथी इष्ट एवा सुखावह फळनी प्राप्ति थाय एमां संशय नथी. पण ए व्यापार अने ए फळ वच्चेनो नियत संबंध समजवा माटे जेटला अने जेवा अकस्मात् थवा जोईए तेटला अने तेवा थशेज एम मानवामां आ मत योग्य करतां कांईक अधिक माने छे एम लागे छे. अने वळी उक्त दृष्टान्तमां चळकता पदार्थना दर्शनथीज जे आनंदोद्बोध थाय छे ते वात तो आ विचारमां लक्षमां पण लेवामां आवी नथी. आवां कारणोने लीधे आपणे हवे बीजा प्रकारनी एटले के प्रेरणाजन्य गतिनेज तपासवी जोईए.

परावर्तित गति एज इच्छापूर्वक गतिनुं बीज छे ए विचार तंतुचक्रना स्वभाव अने स्वाभाविक व्यापारप्रकार उपरथी सहजे ऊपजी शके तेवो छे. वळी माणसपरत्वे आ प्रकारनी गति ते तेने शक्य एवी सर्व गतिमां ऊतरतामां ऊरता प्रकारनी छे, अने एम आखाए प्राणिवर्गने सामान्य छे. आम होवाथी मनुष्यना इच्छाविकासनो आरंभ ए गतिथी थाय छे एम मि. हर्बर्ट स्पेन्सर आदि घणाके मान्युं छे. बे तंतुव्यापार– संवाहक अने उद्ग्राहक– नुं मिश्रण एज परावर्तित गति एम मानवामां आवे त्यां सुधी तो उक्त मान्यता ठीक छे. पण "परावर्तित गति" ए शब्दोनो संकुचितार्थज लक्षमां राखवानो होय, प्रेरणाजन्य व्यापारो तेमांथी बाद करवाना होय, तो बाळकना प्राथमिक व्यापारो पण वृत्तिना जे सद्भावने लीधे परावर्तित गति करतां जुदा पडे छे ते उपर आपणे ध्यान आपवुं जोईए.

संवाहक तंतुस्थानने प्रोत्साहन मळवाथी थयली अशिक्षित गति ते प्रेरणाजन्य गति छे, पण तेनी पूर्वे वृत्तिनो उद्भास एटले के इच्छानुं कांईक तत्त्व होय छे. जेमांथी इच्छाव्यापार पेदा थाय छे ते व्यापारोनुं मूळ स्वरूप आवाज कोईक प्रकारनुं होय छे. बाळकने क्षुधानुं प्रत्यक्ष थाय छे ते वखते ते जे व्यापारो करे छे तेमांथी आ वातनुं सारुं दृष्टान्त मळे एम छे. ते समये प्रथमथीज अमुक इच्छानुं तत्त्व विद्यमान होय छे, जो के ते अति अस्पष्ट रूपे होय छे. ए (क्षुधाजन्य) वृत्तिनुं दबाण ज्यां सुधी चालु रहे छे त्यांसुधी तज्जन्य व्यापार चालता रहे छे; अने दुःखावह एवा एक आ प्रत्यक्षथी उद्भवेला अनियत व्यापारोमांथीज जे इष्ट व्यापार (जेवा के माथाने स्तन आगळ लेई जवुं इत्यादि) ते ऊपजी आवे छे. आ प्रकारना व्यापारोने क्षुद्व्यापार कहीए.

बाळकना आरंभक व्यापारोमांना घणाकनी पूर्वे वृत्ति विद्यमान होय छे, अने ते वृत्तिथीज तेमनुं स्वरूप बंधाय छे. एवुं संभवे छे के जेने अनुबंधे सुख अथवा दुःखनी स्पष्ट वृत्ति अनुभवाय तेवां प्रत्यक्षमात्रनी पछी अव्यवहित क्षणेज कोईने कोई प्रकारनो वेग पेदा थाय छे. आनुं सादामां सादुं स्वरूप एटलुंज छे के प्रत्येक चेतन उद्ग्राहक वेगना व्यापार उपर लक्ष आपे छे, ऊर्मिप्रतिभास के जे प्रेरणाजन्य व्यापारज छे तेमां आवा व्यापारनुं आ स्वरूप सारी रीते जणाई आवे छे. वृत्तिमात्र कोईने कोई प्रकारना व्यापार रूपे बहार पडे छे; अने आपणे हवणांज जोयुं तेम वृत्तिमात्रने इच्छाव्यापार साथे घणो निकट संबंध छे; तेम जीवनने आरंभे क्षुद्व्यापार अने ऊर्मिप्रतिभास रूप अभिनयव्यापार वच्चे झाझो तफावत पाडी शकातो पण नथी.

बाळकने गमे तेटलुं अस्पष्ट पण भविष्य काळनुं भान थवा मांडे छे.

एटले आ बे व्यापारोने परस्परथी जुदे जुदा ओळखी शकाय छे. ए समयथी सुखावह वृत्ति, ते वृत्ति विद्यमान रहे एटलाज माटे, तदनुकूल कर्म करावी शके छे. कोई पण फळ सिद्ध करवाने प्रवृत्त थवानो आ सादो व्यापार घणी नानी वयथी दीठामां आवे छे. जे सुखावह होय ते उपर अवधान आपवानो जे व्यापार तेने आ व्यापार मळतो आवे छे; आमां जे इच्छारहित अवधान हतुं ते इच्छासहित थतुं चाले छे.

आथी उलटी रीते दुःखथी करीने, दुःखथी मुक्त थवानी अस्पष्ट इच्छा जेने अनुषंगे रहेली होय एवा व्यापारो उद्भवे छे. आ स्थाने इच्छानुं इच्छासहित व्यापार ए रूप पूर्वोक्त करतां वधारे स्पष्ट रीते देखाय छे. आरंभे थई आवता आवा क्षुद्व्यापारो, जे प्रेरणाजन्य व्यापारोने ते मळता आवे छे, तेनुं (प्रेरणाजन्य व्यापारोनुं) स्वरूप, भाविसुखनी भावनाथी नहीं, पण दुःखावह एवां जे बाह्य प्रत्यक्षो थाय छे तेनाथी नियत थाय छे; अने क्षुद्व्यापार तो स्पष्ट रीते दुःखपरिहारना प्रयत्नरूपज छे.

कोई पण बाळकमां आवा क्षुद्व्यापारो जे मार्ग ले तेनो निश्चय घणे भागे परंपरित एवा तंतुसंयोगोमांथी थई आवे छे. आम ए व्यापारो यथार्थ रीते प्रेरणाजन्य व्यापारो छे. आ वात, माथुं घसवुं अथवा खंजवाळवुं, पदार्थोने मोढामां मूकवा, पदार्थग्रहणार्थे हाथ लंबाववा, शरीरने आगळ धपाववुं, ऊभा रही चालवुं, एवा घणाक व्यापारोने लागू थाय छे. आरंभथीज एवो स्वभाव होय छे के अमुक संस्कारोना प्रतिघातरूपे अमुक व्यापारो करवा, अने व्यापारोना अमुक प्रकारे समूह बांधवा, परंतु एम करते करते जे इष्ट व्यापार ते घणाक यत्न कर्या पछीज सिद्ध थाय छे, बीजी तरफ जोईए तो कोई एक वृत्ति अने थोडीक अस्पष्ट इच्छाथी थयला घणाक विसदृश व्यापारोमांथी केटलाक एवा शोधी लेवाय के जे दुःखाभाव अथवा सुखोदयज साधनारा होय. उदाहरण— अ-

स्वस्थ एवी स्थितिमां पडी रहेलुं बाळक अनेक गतिओ करतुं जणाशे; एमांनी घणीकने सिद्ध करवाना फळ साथे संबंध नहीं पण होय, परंतु धीमे धीमे, एम करते करतेज स्वस्थ स्थिति प्राप्त थाय तेवा व्यापार हाथ आवी जाय छे.

त्यारे इच्छा (सहित) व्यापारना बीजनुं पृथक्करण करतां आटलां तत्त्व नीकळे छे. आरंभथीज वृत्ति कर्मप्रेरक वेग ऊपजावे छे. चेतना विकास पामती जाय छे, अने वर्तमानना जेवी अथवा तत्सदृश पण भविष्यनी भावना करतां आवडे छे; एटले आवेग, अस्पष्ट पण कोईक फळ सिद्ध करनार क्षुद्व्यापारनुं रूप ग्रहण करे छे. अहैतुक गतिमांथी पण उपयोग लागे तेवुं केटलुंक नथी मळतुं एम नथी; परंतु ए वात गमे तेम हो तथापि कार्यसाधक अवयवोनी सशक्तता अने तेमनी कार्यतत्परता ए, आवा प्राथमिक विकासनी मुख्य सामग्री छे. वळी चमकवानो व्यापार ए जेनी आकृति छे एवा परावर्तित व्यापारो पण यत्किंचित् सहकारिभाव भजे छे; अने स्पष्ट रीते नियत एवा केटलाक परावर्तित व्यापारोनो पदार्थग्रहणादि व्यापारमां उपयोग थाय पण छे. छेवटे, अमुक वृत्तिना दबाणथी, अमुक प्रसंगे, अमुक व्यापारो थाय एवुं प्रेरणानुं स्पष्ट तत्त्व, इच्छाव्यापारमां, गमे तेवा रूपान्तरथी पण, प्रवेश पामे छे; अने प्रारंभे जे मात्र अस्पष्ट पुनरुक्तिवत् व्यापार थयां जाय छे तेमने स्पष्ट इच्छासहित व्यापारना रूप उपर त्वराथी ताणी जाय छे.

११. अनुभवनी असरः—आटले सुधी तो इच्छाना मूलभूत बीजनो आपणे विचार करता आव्या; व्यापारना सादा प्रयोगोमां जे साहजिक वळणो रहेलां छे तेनो विवेक करता आव्या. हवे अनुभवनी शी असर थाय छे, बाल्य काळनां सादां फळ सिद्ध करवामां थता कार्यसाधक अवयवोना व्यापारोना पुनःपुनरभ्यासथी शी असर नीपजे छे, ते आपणे जोवानुं छे.

(१) अमुक दुःखपरिहार के सुखाप्तिने अर्थे सामान्य वेगमात्रथी प्रवृत्ति करतुं बाळक, पोताने जोईए तेवो व्यापार करवा समर्थ थाय छे त्यारे तेनामां इच्छानुं प्रेरकत्व कांइक स्पष्टता ग्रहवा मांडे छे. अमुक प्रकारना आनंदनी प्राप्तिनो एने अनुभव थतां, तेना संस्कार तेना मनमां रहे छे अने तेमनी साहाय्यथी आगळ जतां तेना वेगनुं स्वरूप अमुक प्रकारे नियत थाय छे. वारंवार हाथ लंबावी पदार्थने स्पर्श कर्या पछी पदार्थस्पर्शनना आनंदनी स्पष्ट भावना तेना मनमां बंधाय छे, अने ते उपरथी प्रसंग पडतां, तेनुं ते फळ सिद्ध करवा सारुं तेने अमुक इच्छा उत्पन्न थाय छे.

(२) बीजी वात ए छे के प्राथमिक एवी आ अस्पष्ट इच्छाथी थयला व्यापारोना अनुभवथी प्रकृत एवो जे इष्ट व्यापार तेमां स्पष्टता थवारूपे घणी मदद मळे छे—हवणांज आपणे जोयुं तेम प्राथमिक व्यापारो अस्पष्ट अने अनियत होय छे, अमुक फळ माटे अमुक व्यापार योग्य छे ए वात बाळकने अनुभवथीज समजाय छे—उद्ग्राहक तंतुव्यापारना संस्कारो रहे छे अने तेमांथी उद्ग्राहक व्यापारनी स्पष्ट भावना बंधाय छे. उदाहरण. माथुं आम तेम फेरववाना अनेक अनुभव थया पछी बाळकथी ते व्यापारनी भावना थई शके छे.

आम थवाथी वळी, प्रयत्ननी न्यूनता अने सरलतानो वधारो पण थशेज. व्यापारसाधक अवयवना विकासथीज आ वात घणे भागे तो सिद्ध थई जशे; तेमज ते ते प्रकारना व्यापारोना अभ्यासथी पण एम थवामां मदद थशे. उद्ग्राहक व्यापारना संस्कारोनो वधारो थवाथी, तेम उद्ग्राहक व्यापारनी भावनाओनो समूह वधवाथी, व्यापार सरल थशे, एटले के अवधाननी एकाग्रता ओछी जोईशुं. भावनानी स्पष्टतानो अर्थज ए छे के तद्[illegible]द्भावी कर्म सरलताथी याने सहज रीतेज थई शके.

(३) त्रीजी वात ए छे के अनुभवनी आवी असर थवामां साहचर्य पण घणे भागे सहाय थाय छे. प्रथमे एम थाय छे के जे इष्ट फळ तेनुं अमुक व्यापार साथे साहचर्य बंधाय छे. अमुक व्यापारथी अमुक सुखावह फळ सिद्ध थाय छे ए वातना पुनःपुनरभ्यासथी ते फळ अने व्यापारनुं साहचर्य बंधाइ जाय छे; एटले ए फळना सुखनी भावना अने इच्छा मनमां आवतां तत्साधक व्यापारनी भावना पण तुरतज थई आवे छे— थोडोकज अनुभव थया पछी क्षुधानुं प्रत्यक्ष थतां आहारनी इच्छा थाय के तुरतज योग्य व्यापारो थवा लागे छे, अने हाथ हाले छे, मो ऊघडे छे, इत्यादि गति थाय छे.

साहचर्यनी असर आ करतां पण सारी रीते ए उपरथी जणाशे के फळ अने तत्साधक व्यापारनी भावना ए उभयनुं सूचन फलसंबद्ध एवा कोई अन्य पदार्थ प्रसंगादिथी पण थई आवे छे. आवो जे प्राथमिक इच्छाव्यापार ते, आपणे जोई आव्या तेम, बाह्य प्रोत्साहनोना प्रत्याघात रूप छे. आहार, स्नानजल, प्रिय रमकडां, इत्यादि जोवाथी इच्छा ऊपजी आवे छे अने उद्वाहक वेग पेदा थाय छे. एटले सुधी आव्या पछी सुखावह के दुःखावह एवा साक्षात् प्रत्यक्षनी विद्यमानता उपर इच्छानो आधार रहेतो नथी; इच्छानी पूर्वे हवे प्रत्यक्ष नथी पण दृष्टि छे. इष्ट-फलसंबद्ध एवुं कांइक जोतां ते पेदा थई आवे छे.

इच्छाव्यापारानुगत जे आ साहचर्यो तेमना विकासना क्रममां स्मृतिशक्ति, रसनी असर, एकाग्रता, अभ्यास, इत्यादिना नियमोनां दृष्टान्त मळी आवे छे. कर्म अने तेमनां फळनी भावना बांधवानी जे खास शक्ति तेनो आधार, वृत्ति माटेनी सारी स्मरणशक्ति अने उद्वाहक व्यापारानुभवनुं विवेकपुरस्सर स्मरण, ए बे उपर आधार राखे छे.

१२. व्यापारमर्यादानो विस्तार—इच्छाव्यापारना अमुक

अमुक प्रकारो जेवा आ प्रकारे पूर्णताए पहोंचता जाय छे तेवामांज नवा नवा प्रकारनो पण प्रादुर्भाव अने विकास थतो चाले छे. बाळकने पोताना हाथ एक प्रकारे वापरतां आवड्या एटले, बीजे प्रकारे तेमने वापरवुं बहु से'लुं थई जाय छे. अनुभूत करतां नवो प्रसंग उत्पन्न थाय छे: रमकडुं खोळामांथी बाजु उपर गबडी पडे छे;—अत्र पण हाथ लंबाववानो जे व्यापार अधिगत छे तेज काम आवे छे, पोताने शुं करवुं योग्य छे तेनुं बाळकने कांईक भान होय छे तेथी आ नवा प्रसंगमां पण ते यथोचित व्यापार साधी ले छे. आ बधामांथी एटलुं जणाय छे के अवयवो उपर अधिकार प्राप्त करवानो क्रम अनेक प्रयोग अने अनुभवनी श्रेणिरूप छे, ए श्रेणिरूप प्रयत्नोथी अस्पष्ट प्रेरणाओ स्पष्टता ग्रहण करती चाले छे.

पूर्वाधिगत व्यापारोनो नवीन प्रसंगोमां उपयोग करवाना क्रममांज बाळकने अनेक व्यापारोनुं संयोजन करवानुं पण आवडे छे. बन्ने हाथथी साथेज व्यापार करतां ते शीखे छे, जेम के एक हाथे सीताफळने पकडी बीजे हाथे तेना कळीआ काढी नाखवा, इत्यादि. एज रीते व्यापार-श्रेणि पण ते विस्तारी शके छे. पदार्थप्रति हाथ लंबावी, तेने पकडी, अने मोढामां मूके छे. पदार्थने पकडवो, अने पदार्थने मोमां मूकवो ए बे व्यापार, जुदे जुदाज, बाळकना समजवामां आव्या हशे तो योग्य प्रसंग आवतां तेनुं संयोजन ते अवश्य करशे. वास्तविक रीते कहीए तो बाळकना व्यापारमांना घणाक तो आवा संयुक्त अने श्रेणिरूप व्यापारज छे. उद्वाहक अवयवो उपर कांई पण अधिकार आवतानी साथेज बाळक नवा नवा व्यापार ऊपजावे छे.

आपणे साधारण रीते एम कहीए छीए के नवा व्यापारो जूना व्यापारना संयोजनथी उद्भवे छे, परंतु एम पण कहेवुं आवश्यक छे के आ प्रकारे व्यापारनी मर्यादानो जे विस्तार थाय छे ते संयोजनथी तेम वियोजन-

थी पण थाय छे. आरंभे उद्ग्राहक स्थाननुं प्रोत्साहन घणा भाग उपर विस्तरी जाय छे, अने अनेक स्नायुने असर करे छे. लखवाना प्रथम प्रयत्नोमां जीभ इत्यादि हाले छे तेमांथीज आ वात सहज स्पष्ट थाय छे, व्यापारना अमुक अमुक समूह जेवा के बे हाथना व्यापार, एक हाथनी बधी आंगळीओना व्यापार, ए सर्व प्रथमथीज संयुक्त व्यापाररूप छे, एटले आगळ जतां तेमनुं वियोजन करवानी जरूर पडे छे.

अनुकरणः— बीजानी वृत्ति, गति, के विचारनी पण कोई सविशेषताने ग्रहण करवी तेने अनुकरण कहे छे. चेतनशास्त्रमां ते व्यापारमात्रज बोधे छे. 'अनुकृतव्यापार'नो अर्थ एटलोज छे के बीजाए करेलो अमुक व्यापार जोतां तेवो जे व्यापार कराय ते. कोईक माणस चुंबन लेवा माटे होठ लांबा करे ते जोई बाळक पण तेम करे ए अनुकृत व्यापार छे.

अमुक व्यापारनुं दर्शन अने तेनुं स्नायुव्यापारद्वारा साधवुं ए वच्चेना संबंधनुं ज्ञान अनुकरणमां होवुं जोईए. घणे भागे तो आ ज्ञान प्रेरणारूप अने परंपरित होय छे. प्रीअर कहे छे के मारुं चार मासनुं बाळक चुंबनाकार ओष्ठ सामे तेवा ओष्ठ करतुं हतुं. एवुं मानवुं तो अशक्य छे के बाळकने दृश्यमान अन्यकृत व्यापार अने तेनो तेज स्वसाध्य सिद्धरूप व्यापार ए बे वच्चेनो संबंध तेना पोताना अनुभवथी विज्ञात होय. तंतुतंत्रमां एवा दर्शनानुकूल व्यापार साधवानी कोईक प्रकारनी प्रवणता परंपराथी चाली आवे छे एमज कहेवुं पडे. अनुकरणमां यद्यपि प्रेरणानुं कोईक तत्त्व रहे छे, तथापि दोढ बे वर्षनुं वय थता सुधी, एटले के आगळ कह्या ते प्रकारना घणा व्यापार बाळकने साध्य थता सुधी प्रेरणानो स्पष्ट अधिकार जणावा मांडतो नथी.

प्रेरणाजन्य अनुकरणना विचारने दूर राखतां पण एम कही शकाय के अनुकरण पूर्वे अमुक व्यापारोनो अमुक प्रकारनो अनुभव अने उद्ग्राहक स्नायुनी गतिओनो अमुक अनुभव होवो जोईए. आम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के जे प्रसंगोथी अमुक व्यापार थयो होय ते प्रसंगोना अभावे, ते प्रसंगोथी जुदे जुदो पण ते व्यापार भावनामां आवी शकवो जोईए. आवी शक्ति होय ते पूर्वे तेवो व्यापार ज्यारे थयो होय त्यारे तेना उपर अवधान आप्युं होवुं जोईए, माटे अवधान शक्ति पण होवी जोईए. सर्व करतां अनुकरणमां एटलुं तो होवुंज जोईए के देखीता व्यापारना चाक्षुषज्ञान साथे, तत्साधक उद्ग्राहक व्यापारनुं साहचर्य बंधाई रहेलुं होवुं जोईए.

ए पण कहेवुं जोईए के बीजाने अनुकरण करवाना वेगनो अर्थ एवो पण थाय छे के अमुक व्यापार साधवानी सरलता छे एटलुंज नहीं पण ते व्यापारने पुनः करवानी पण तैयारी छे. आपणे कही गया तेम कोई पण व्यापार अभ्यासथी सुसाध्य थाय छे, एमां करवो पडतो प्रयास ओछो ओछो थतो जाय छे. आम होवाथी अनुकरणथी व्यापार करवाने वधारे उद्ग्राहक बळनी अपेक्षा रहेती नथी.

स्मरणमां लाववुं जोईए के कार्यसाधक अवयवोनो व्यायाम अमुक मर्यादामां होय तो, सुखावह लागे छे, एटले बाळक जेम जेम पोताना उद्ग्राहक अवयवो उपर कांईक अधिकार प्राप्त करतुं चाले छे तेम तेम तेने ते अवयवोना व्यापारोमां आनंद लागतो आवे छे. एम करवाथी आनंद आवे छे माटेज बाळक केटलीक वातो करे छे. आम होवाथी, अमुक चाक्षुषज्ञान अने अमुक व्यापार वच्चेनुं साहचर्य ज्यां सारी रीते बंधायुं होय छे त्यां कोइकने अमुक व्यापार करतां देखवानी साथेज बाळक तेवो व्यापार करी शके छे. आवुं कर्म पूर्ण रीते इच्छासहित नथी.

बाळकना मनमां कोई स्पष्ट फळनी कल्पनाज नथी, अर्थात् इच्छा नथी. व्यापारनी व्यापारमात्रने अर्थेज इच्छा होय तो होय, परंतु ते पण सर्वदा स्पष्ट जणाती नथी. अन्यकृत व्यापारनुं दर्शन थतांज पोतानामां तेवो व्यापार थवा लागे छे, वचमां अमुक फलाप्तिनो विचार थईने व्यापार थाय एम बनतुं नथी.

कोई पण क्षणे अति तादृश रीते सूचित एवा व्यापारने करी बतावानी जे प्रवणता विषे आगळ कहेवामां आव्युं छे तेनुं अनुकरण ए सारामां सारुं उदाहरण छे. उद्गाहक व्यापारनी भावनामां तंतुव्यापारनी कोई गुप्त प्रक्रिया चालती रहे छे एटले तेज साक्षात् व्यापाररूपे परिणमे छे. सामा माणसना व्यापारोनुं लक्षपूर्वक विलोकन करतां, लोट्झे कहे छे तेम, आपणे पण तेना जेवाज व्यापारो सहज रीते, अने घणीज न जणाय तेवी पद्धतिथी, करीए छीए. कोईकने बिलीअर्ड रमतां देखीने आम थाय छे. एमज "उतावळे बोलीने विचार करनार"ना इच्छारहित उच्चार पण आज प्रकारना छे. मनमां कोई पण कारणथी असाधारण रीते भराई गयला व्यापारोनी भावनाओने साक्षात् करी जोवामां आ शक्तिनां घणां सारां उदाहरण मळी आवे छे. आमां ऊर्मिनी घणी प्रबलता होय छे. रीबानिझ कहे छे के घणां बुद्धिमान् जनावरोमां, जंगली मनुष्योमां, गांडा माणसोमां, अने बाळपणमां छेक ना'नी वये, जे अनुकरणप्रवणता जणाय छे, ते चेतनविकासना अमुक प्रदेशनुं स्पष्ट लिंग छे.

आगळ जतां आ अज्ञात अने यंत्रवत् अनुकरण वधारे सुविज्ञात अने स्पष्ट इच्छायुक्त व्यापाररूप थवा जाय छे. छ अथवा आठ वर्षनुं बाळक, बीजाओ जे करे छे ते करवानी स्पष्ट इच्छाथीज अनुकरण करे छे. आम करवामां प्रतिस्पर्धारूपे अथवा बीजा करतां अधिक थवानी इच्छा रूपे, पोतानी शक्ति बतावानी इच्छा प्रदर्शित थाय छे, तेज हेतु छे. बीजां छोकरां करे छे ते हुं पण करी शकुं छुं एम बतावाने माटेज बाळकने पोतानी शक्ति बतावानी इच्छा थाय छे. बीजी पासा जोईए तो आ हेतुने मांडलिक वृत्तिओ जेवीके बीजाने माटे भक्ति अने मान, तेनी साथे पण घणो निकट संबंध छे. पोताना बाप अथवा मो'टा भाईनुं अनुकरण करवुं बाळकने वधारे पसंद पडे छे. ज्यां मातापिता अथवा शिक्षक उपर दृढभक्तिभाव होय छे त्यां तेमनुं अनुकरण घणी सरलताथी थई आवे छे. आ प्रकारे आपणे जोई शकीए छीए के स्वरूपथी तेम सामग्रीथी अनुकरणने अनुकम्पा साथे निकट संबंध छे.

आटले सुधीना परिष्कारमां आपणे एम मान्युं छे के अनुकृत व्यापारो, पूर्वे कोई विशिष्ट इच्छावशात् प्राप्त करेला व्यापारानुभवनुं पुनर्दर्शनमात्रज छे; ने एम वारंवार थाय पण छे. बीजाना तेवा तेवा व्यापार जोई बाळको मो'डुं ऊघाडे छे, बूम पाडे छे, इत्यादि व्यापार करे छे. परंतु अनुकरणमां ए करतां बीजी घणी वधारे वातनो समास छे. नवा व्यापारोनुं पण बाळक अनुकरण करे छे. माताना व्यापारानुसार बाळक पोताना हाथ हलावतां शीखे छे, परंतु अत्र पण तेनी तेज पूर्वसामग्री अपेक्षित छे; आवुं अनुकरण थता पूर्वे नवा व्यापार साथे संबंध राखनार एवो अमुक प्रकारना उद्गाहक व्यापारनो अनुभव होवो जोईए. स्वरानुकरणना संबंधमां आ वात स्पष्ट रीते देखाय छे, केमके स्वरोत्पत्ति पूर्वे अमुक स्नायुव्यापारो, वृत्ति अनुसार, थवाज जोईए.

आपणी आसपासनां मनुष्यादिनुं अनुकरण करवानी प्रवणता ए इच्छाविकासने बहु सहायरूप छे. बाळकना मनमां पोतानी मेळेज जे इच्छाओ उद्भवे छे तेने अनुकरणशीलता साथे रही एटली बधी मदद करे छे के आगळ जतां अन्य रीते प्राप्त थता उपयोगी व्यापारो करवामां जे अनुभवनी अपेक्षा रहे छे ते बहु टुंकी थई जाय छे. घणा बाळक भेगुं मूकेलुं बाळक, एकला राखेला बाळक करतां, वधारे सहज रीते अने थोडी वारमां ऊभुं चालतां शीखे छे. वळी दृष्टान्तथी करीने अनेक प्रकारना नवा व्यापारोनुं सूचन थाय छे, अने कर्मनी मर्यादा विस्तार पामे छे. अभिनय, स्वरसंधान, इत्यादिनुं आशरे त्रणेक वर्षनी उंमर थतां बाळको जे

अनुकरण करी शके छे तेमां आ वातनुं स्पष्ट उदाहरण जणाई आवे छे.

अनुकरणशक्तिना बलपरत्वे बालकोमां घणो भेद रहे छे. कार्यसाधक अवयवोमां जे बळ होय तेनी न्यूनाधिकता साथे पण आ वातने संबंध छे; सशक्त अने चंचल बाळक अशक्त अने मंद बाळकना करतां बीजाना व्यापारोनुं जलदीथी अनुकरण करी लेशे. बीजा करे अने पोते करे ते व्यापारोनी जे दृश्य असरो थाय तेना उपर अवधान आपवानी ओछी वधती टेवमांथी पण आवुं तारतम्य संभवे छे. एमज ऊर्मिप्रधान प्रकृति प्रमाणे पण अनुकरणशक्तिनी न्यूनाधिकता जणाय छे. बीजाने मार्गे जवाने तत्पर, बीजाना कहेवा उपर आधार राखनार, अने तेमने अनुसरनार एवां जे बाळको होय छे ते विशिष्ट अनुकरण शक्तिवाळां हाय छे. ए करतां बीजां जे बाळको स्वाभिमानी अने स्वतंत्र प्रकृतिनां होय छे ते पोतेज पोतानो मार्ग करी ले छे. एवाने दृष्टान्त के अनुकरणनी झाझी असर थती नथी.

१३. व्यापार अने सूचक शब्द, आदेशवचनः—केवळ संकेतमात्र एवी कोई संज्ञाथी अने सविशेषे शब्दरूप संज्ञाथी जे व्यापार उद्भवे छे ते अनुकृत व्यापार साथे अतिनिकट संबंध राखे छे. आदेशवचनानुसार जे व्यापारो थाय छे ते आनुं उदाहरण छे. अमुक प्रसंगे जे विशिष्ट फळ ऊपजे तेनी इच्छानी अपेक्षा विनाज, कोई एक व्यापारनी कल्पना अथवा भावना करवानी उत्तम शक्ति आवा व्यापारो करवामां होवी जोईए. एवा व्यापार करवानुं सामर्थ्य आवता पे'लां बाळकने तेना आनुषंगिक प्रसंगोथी तें व्यापारने जुदो पाडी अवधानविषय करतां आवडवो जोईए. वळी शब्दरूप संज्ञा अने अमुक व्यापारनुं साहचर्य पण जाणेलुं होवुं जोईए.

आवो जे साहचर्यसंबंध ते, व्यापार अने तेनी दृश्यमान असर ए बेना संबंधनी पेठे साहजिक नहीं पण कृत्रिम छे, एटले शिक्षणक्रमथी शीखवो पडे छे. "जा" "आव" "सुई जा" इत्यादि अर्थवाळी शब्दसंज्ञाओने अनुसरी वर्तन करवामां कूतराने प्रथमथी शिक्षण आपवुं पडे छे. आदेशवचन अनेक वार उच्चारवा साथे तेटलींज वार तेनो अर्थ पण समजाववाथी जे अपेक्षित साहचर्य ते सिद्ध थाय छे. पण ए साहचर्य दृढ थया पछी आदेशवचननो ध्वनि संभळाता बराबरज, इच्छानी कोई पण स्पष्ट असर विनाज, यथायोग्य व्यापार सिद्ध थई आवे छे. कवायत पामेला बाळकनुं पण एमज छे. आदेशवचनना सूचनमात्रथीज यथायोग्य व्यापार उद्भवे छे, कवायत लेता वर्गना अभ्यास वखते के किंडरगार्टन शीखता वर्गना अभ्यास वखते आ वात स्पष्ट जणाई आवे छे. आ ठेकाणे पण एम जणाय छे के सारी रीते अभ्यस्त एवो व्यापार ज्यारे स्पष्ट रीते सूचवाय छे त्यारे, तेना परिणामनो विचार कर्या विनाज आपणे ते व्यापार करी दईए छीए.

भाषाना व्यवधानथी बाळकना व्यापारो घणे भागे पारकाने आधीन थई शके छे. शरीरना जुदा जुदा अवयव अने तेना जुदा जुदा व्यापारो दर्शावनारा जे अनेक शब्दो आपणी भाषामां छे तेनाथी माता अथवा शिक्षक बाळकोने व्यापारो संबंधे सारी रीते आदेश करी शके छे. सशक्त शरीर अने सामाने राजी करवानी थोडी पण इच्छा ए बे वात जो होय तो व्यापारनुं सूचनमात्रज ते व्यापार करावववाने पूर्ण छे. माता बाळकने सूचवे छे के बागमां थोडी वार रमीने आवो एटले तुरत बाळक ते प्रमाणे करे छे.

शब्दो साथे आवां साहचर्यो बंधावामांथीज नवा नवा व्यापारो ऊपजाववानी सामग्री शिक्षण आपनारने मळी आवे छे. "अदब वाळो" "माथुं उंचुं करो," "बेशी जाओ" इत्यादि संज्ञाओनो अर्थ

समज्या पछी कवायतमास्तर ए व्यापारोनां मिश्रणवाळा व्यापार पण उपजावी शके छे. मावाप, शिक्षक, सोबती, आदिना शब्दप्रेरित सूचनमांथी बाळको अनेक नवा व्यापार नित्य शीखतां जाय छे.

१४. व्यापारनुं आंतरनियामकः— आटले सुधी व्यापारना जे जे प्रकार विचार्या तेमां बाह्य प्रोत्साहनना प्रत्यावातरूपे व्यापार थाय छे. प्रत्यक्ष अथवा दर्शनने प्रसंगे व्यापार उद्भवे छे, परंतु बाह्य प्रोत्साहनोथी स्वतंत्र थई जई आंतरकल्पनामात्रने अनुसारे पण ज्यारे व्यापार थवा लागे त्यारे प्रथम करतां कोइ उंची पंक्तिए जवायुं एम जाणवुं. ए प्रकारे व्यापार आंतरप्रोत्साहनथी प्रवर्तवा लागे छे. उदाहरण—सूचनक्रमना फलरूपे बाळकना मनमां कहींक मूकेला कोई एक रमकडानी कल्पना आवे छे, अने तेने लावनी इच्छा थतांज तदनुकूल व्यापार उद्भवे छे.

ज्यारे ज्यारे अमुक फळनी इच्छा थाय त्यारे त्यारे अमुक गमे ते व्यापार करी शकाय एवी शक्ति आव्या पछी, फळनी इच्छा विना पण केवळ ते व्यापार करवो होय तो बाळक करी शके छे. उद्वाहक व्यापारनी भावना करवानी आ शक्ति, ते ते व्यापार साधवानी सरलता अने तदनुकूल तत्परता बतावे छे. आम छे माटेज ज्यारे ज्यारे उद्वाहक व्यापारनी भावना मनमां आवे छे त्यारे त्यारे, कांई फळ साध्य न होय तथापि, ते व्यापार करवानी रुचि उद्भवे छे. व्यापारमात्रनीज इच्छाथी व्यापार करवानी आवी शक्ति एज व्यापारोनी आंतरनियामक छे, अर्थात् एथीज व्यापारो बाह्य फलादिथी मुक्त थई आंतरभावनामात्रने अधीन थाय छे.

कार्यसाधक अवयवोना आवा आंतरनियमनथीज, अनुभूत एवा उद्वाहक व्यापारोमांथी अननुभूत एवा नूतन व्यापारान्तर ऊपजाववानी

शक्ति परिपाकने पामे छे. बाळक पोताना बधा अवयवोने, अने खास करी हाथ, पग, आंगळां, इत्यादिने ज्यारे इच्छा थाय त्यारे, स्थिर रीते अने सरलताथी हलावी शकवानी शक्ति प्राप्त करे त्यारपछीज वधारे गुंफित एवा उद्वाहक व्यापार करवानी शक्ति प्राप्त करवाने ते योग्य थाय छे.

शरीरावयवोना उपर आवो वशीकार प्राप्त थवामां एक करतां वधारे रीते इच्छाविकास थाय छेज. आगळ कहेवामां आव्युं छे तेम बाह्य कर्ममात्र, नीतियुक्त चारित्रना अति गुंफित व्यापारो समेत पण, विविध प्रकारना व्यापारथी सिद्ध थाय छे. उच्च प्रकारना व्यापार पूर्वे उद्वाहक अवयवो उपर वशीकार प्राप्त थवो जोईए एटलुं तो स्पष्टज छे. आटलुंज नथी पण व्यापार उपर आवो वशीकार प्राप्त करवाना क्रममांज इच्छाना उच्च प्रकारना व्यापारो थया विना रहेता नथी, प्रयत्न अने प्रयोगनो आग्रह, विघ्नो पराजय करवानो निश्चय, अने घणी वातोमांथी पोताने अनुकूळ एवी कोई एक वातने तुलना करी स्वीकारवा जेटली व्यावहारिक बुद्धि, ए बधानो उपयोग थया विना रहेतो नथी. सहजे आम तेम फेरवी न शकाय तेवा कोई पदार्थने फेरववामां बाळक पोताना हाथना जे जुदा जुदा व्यापारोनुं संयोजन करे छे ते जेणे लक्षपूर्वक जोयुं हशे तेने खबर हशे के कर्मना आवा मूलभूत स्वरूपमां पण इच्छाव्यापारनां केटलां बीज रहेलां होय छे.

१५. व्यापार अने शीलः—पुनः पुनः थई आवती मनोव्यापारपद्धतिने शील एवुं नाम आपवामां आवे छे, जेम के "विचारशील" इत्यादि. वधारे सूक्ष्म रीते जोतां इच्छाना प्रदेशने नियत एवा जे मनोव्यापार तेनेज ए शब्द लगाडवामां आवे छे. ए प्रदेशमां अभ्यास अने साहचर्यनी शील उपर जे असर ते संपूर्णपणे जोई शकाय छे. कोई पण वात

करवानुं आपणने शील पड्युं छे एम त्यारेज कहेवाय के ज्यारे ते करवामां थोडामां थोडा अवधाननी अपेक्षा रहेती होय, अने इच्छानो एटले के कोई स्पष्ट फळनो भाव तेमां लेश पण होय नहीं. एवा शीलरूप व्यापार घणे भागे यंत्रवत् थई गया होय छे, अने ते उपरथी, परावर्तित तेमज प्रेरणाजन्य व्यापारने मळता आवे छे. आम होवाथी शीलरूप कर्मो अथवा व्यापारो प्रेरणाथीज के यंत्रवत् गतिथीज थाय छे एम घणी वार कहेवामां आवे छे.

आपणे आगळ जोई आव्या छीए तेम प्रत्येक व्यापार पुनः पुनः अभ्यासथी सरल थतो जाय छे. ज्यारे ज्यारे तेनुं सूचन थाय छे त्यारे त्यारे ते करवा उपर मन जाय छे, अने ते इच्छारूप स्पष्ट प्रोत्साहनना अभावे पण जाय छे. आवी व्यापारप्रवणतामां तो अमुक व्यापार करवानी सारी तत्परतारूप चेतनधर्ममात्रज प्रकट थाय छे एम नथी पण ते व्यापारानुबद्ध तंतुचक्रनी अमुक प्रवणतारूप शारीर धर्म पण जणाई आवे छे. थोडामां थोडा प्रोत्साहनना पण प्रत्याघातरूपे अमुक प्रकारे व्यापार करवानी आवी जे प्रवणता अभ्यास अने अनुभवथी प्राप्त थाय छे, ते आपणे जेने शील कहीए छीए तेनुं एक मूळ तत्त्व छे.

शीलनुं बीजुं मूळ तत्त्व अमुक व्यापार, अने इच्छा के उद्वाहक भावनानी साहाय्य विना ते व्यापार साधनारां बाह्य प्रोत्साहन ए बे वच्चेनुं जे साहचर्य बंधायुं होय ते छे. ज्यां कोई माणस पोताना घर पासे आवतां, शीलवशात्, कुंचीने का'डे छे त्यां खुलासो ए छे के बारणाने देखतांज जे व्यापार करवानो ते पोतानी मेळेज सूचवाई जाय छे. आ व्यापार साधवामां जे तंतुस्थानो काम आवे छे तेमनी तदनुकूल परस्पर व्यवस्था थई रहेली ए आ व्यापारनुं शारीरिक तत्त्व छे.

अभ्यासथी करीने सरल अने विचार विना सहजे साधी शकाय एवी स्थिति थया पछी आदेशवचनानुसार जे व्यापार थाय छे, ते पण शीलनुंज उदाहरण छे. सारी कवायत पामेला लश्करी सीपाईना अथवा तारनुं काम करनारना अमुक आदेशानुसार व्यापार, आवा यंत्रवत् व्यापाररूपज छे. आपणा नित्यपरिचित व्यापारोमां पण तुरत न समजी शकाय तेवी रीते शीलनी घणी असर रहे छे.

ज्यारे घणाक मिश्र व्यापारो एक साथे करवानो महावरो थई जाय छे त्यारे बधा व्यापारोनो परस्पर संबंध साहचर्यरूपे एवो दृढ थई जाय छे के एक व्यापार थया पछी, वचमां विचार इच्छा के स्पष्ट भाव थया विनाज, ते पछीना व्यापारो सहज रीते थता आवे छे. चालवामां, तरवामां, नृत्य करवामां, स्मृति उपरथीज कोई गीतने वगाडवामां, परिचित काव्यने मो'डे बोलवामां, इत्यादि अनेक व्यापारमां आ प्रमाणे थाय छे.

श्वासोच्छ्वासादि जे व्यापारोमां प्रथमथीज भाननो घणो थोडो भास रहे छे तेने आवी व्यापारश्रेणिओ घणे भागे मळती आवे छे. आवी व्यापारश्रेणिनो अर्थ ए छे के एमां काळ आवतां तंतुस्थानो एवां परस्परानुकूल थई रह्यां होय छे के एकने गति मळतां सर्वे जाग्रत् थई गति करवा लागे छे. मात्र आरंभे इच्छाव्यापारनुं कांईक तत्त्व रहे छे. आरंभ कर्या पछी तो मन बीजी वातमां लागे तो पण विक्षेप थतो नथी. चालते चालते विचार करी शकाय छे, कोई गीतने वगाडते वगाडते पण वातचीत चलावी शकाय छे.

व्यापारश्रेणिमां स्पष्ट इच्छानो अभाव होय छे एटलुंज नहीं पण उद्वाहक व्यापारनी भावना पण होती नथी. संवाहक तंतुद्वारा आघात थतां उद्वाहक तंतुद्वारा प्रत्याघात थाय ए रूपे व्यापारश्रेणि बने छे ए तो आपणे आगळ जोई आव्या छीए. आवी व्यापारश्रेणिनो सारी रीते अभ्यास थाय छे त्यारे एक व्यापार पछवाडे तुरतज बीजो व्यापार, ते व्यापारनी भावना वचमां आण्या विनाज, थई आवे छे. उलटुं

अवधानरूपे इच्छानुं कोई पण तत्त्व वचमां आववाथी आवी श्रेणिमां भंगाण पडे छे ए उपरथीज एम समजाय छे के उतरती पंक्तिना तंतुओना यंत्रवत् व्यापार उपरज एनो आधार छे, अने इच्छाना उत्तम व्यापारोथी एमां विघ्न पडे छे.

शील अने नित्यक्रमनो पण एवोज संबंध छे. नित्यपरिचित व्यापारश्रेणिमात्रमां शीलनुंज तत्त्व रहें छे. एक व्यापार अथवा व्यापारश्रेणि कर्या पछी, तेना पछी तुरतज थनार व्यापारनुं सूचन थया विना रहेतुं नथी. आ प्रकारेज आपणा नित्य क्रममांना घणाक व्यापारो शीलवत् थई रहे छे. नित्यक्रमरूपे परिचित व्यापारो करतां एकथी बीजा उपर जवामां इच्छानुं कोई स्पष्ट तत्त्व जणातुं नथी. एवा परिचयवाळा माणस खाईने चालवा मांडे छे, चालवामांथी नित्यना कामने ले छे, एम अनेक व्यापारांतर साध्यां जाय छे. शीलना आ प्रकारमां शारीर व्यापारनुं पण कांईक तत्त्व रहेलुं छे ए एटला उपरथी जणाय छे के यथायोग्य क्रम चाली जवाथी मनने संतोष थाय छे, क्रमभंग थवाथी, कोई स्वाभाविक प्रेरणानो प्रतिरोध थतां जे खेद लागे छे, तेवुं लागी आवे छे.

शीलना प्रभावमां एक व्यापार पछी व्यापारान्तर उद्भव्यां जाय एवी श्रेणिरूप क्रियानो समास छे, पण ते उपरांत अमुक वृत्तिओ अने इच्छाओनुं जे अमुक कालनियतत्व तेनो पण एमांज समास थाय छे. नित्यक्रमानुसार काम करवानी पद्धतिने टेवायलो माणस पोतानो एश आराम पण ते क्रमानुसारज भोगवे छे.

शीलनुं बळ पण सर्वत्र अने सर्वमां एकनुं एक होतुं नथी, प्रोत्साहन थतां प्रत्याघातरूपे दृश्यमान थवामां तत्परता, अने ते दर्शननी सर्वदा एकरूपता, ए बे उपरथी शीलना बळनुं अनुमान थई आवे छे,—लश्करी सीपाई आदेशवचनना प्रत्याघातरूपे जे कार्य करे छे ते संपूर्ण क्यारे कहेवाय के ज्यारे वचन पछी अव्यवहित क्षणेज ते थई आवे, अने प्रत्येक वखत तेमने तेम थई आवे. शीलना बळनो निर्णय करवाना बीजा

पण प्रकारो छे. शीलवशात् थता व्यापारनी प्रक्रिया जे आपणे जोई ते उपरथी जणाय छे के, स्पष्ट भानयुक्त एवा जे व्यापार ते करतां अमुक प्रकारना व्यापारो साधवानी आ प्रवणता शरीरसंबंधे वधारे सारी रीते सुव्यवस्थित छे. एटले संकल्पयुक्त इच्छाथी पण शीलबलनो प्रतिरोध थवो घणो कठिन छे एम जणायछे. अने खरेखर नित्य क्रमानुसार जे क्रम तेनो भंग करवामां जेटलो विजय मळे ते प्रमाणमां शीलनुं बळ न्यूनाधिक कही शकाय.

शीलबलनो आधार जे सामग्री उपर रहे छे ते आ प्रकारनी छे. (१) व्यापारने पूर्णरूपे करवा सारुं आरंभेज जे हेतुबल अने अवधान तेना उपर लगाडवामां आवे ते प्रथम वात छे. कोई पण व्यापार शीलरूप थाय ते पूर्वे ते इच्छाप्रेरितरूपे पूर्ण होवो जोईए ए तो स्पष्टज छे. कोई पण व्यापार इच्छा पोताना दासरूप शीलने सांपी शके ते पूर्वे ते तेना पोताना कबजामां आवेलो होवो जोईएज. (२) ते व्यापारनी पुनःपुनरभ्यस्तता ए बीजी वात छे. व्यापारने शीलमार्गे नियत करवामां अभ्यास ए घणुं सारुं साधन छे. (३) एक वार होय तेवा ने तेवा प्रसंगमां तेना ते व्यापारनुं थवापणुं ए त्रीजी वात छे. कोई पण व्यापारमां तूट न पडवा देवी ए वात तो प्रत्येक माता पिता तेम शिक्षकने सुविज्ञात होवी जोईए. रमी रह्या पछी बाळक अनेक वखत पोतानां रमकडांने समेटी ठेकाणे करे, पण जो कोई वार तेम करे, कोई वार न करे तो तेनामां तेम करवानुं शील बंधावानुं नहीं. संपूर्ण शील बंधावा पूर्वे अस्खलित अनुभव अने अभ्यास होवोज जोईए.

एटलुं कहेवुं जोईए के जीवितने आरंभे कुमळी वयमां शील बंधावुं घणुं सरल पडे छे. पाकी उमर थया पछी शील प्राप्त करवाने घणा अभ्यासनी जरूर पडे छे. ना'नपणमां शीलरूपे प्राप्त करेला व्यापारो बाळ-

कने जीवता सुधी काम आवे छे. चालवानी अने एकंदर शरीरस्थापन-प्रकारनी पद्धति; बोलवानी रीति, अने बधां साधारण कामोमां माणस माणसनी जे ढब तेमां ना'नपणमां प्राप्त करेलां शीलनी असर प्रत्यक्ष जणाय छे.

वय वधती जाय तेम शील प्राप्त करवुं कठिन पडे छे तेनुं बीजुं पण कारण छे. मो'टी वये नवुं शील प्राप्त करवानो अर्थ घणुं करीने ए होय छे के जूना शीलने तजवुं. आम होवाथी ए वात घणी कठिन थई पडे छे. जे बाळकने बेसवानी के बेसवामां अंगविन्यास अमुक प्रकारे राखवानी कोई खराब टेव पडी होय छे ते बाळकने सारी टेव पाडतां बहु मुश्केली नडे छे. नवी टेव पाडवा माटे जूनी भूलाववानी महेनत करवी पडे छे. स्वाभाविक रीतेज जूने मार्गे व्यापार वळी जाय छे. अने ते अटकावतां बहु महेनत पडे छे.

१६. **व्यापारनी जडता अने सरलता**:— नित्य थता घणाक व्यापारोमां शीलना नियमनुं दृष्टान्त जणाई आवे छे. एकने एक प्रकारना प्रसंगो अने एकने एक प्रकारनी गरजो आखा जीवितमां पुनः पुनः एटली बधी वार आवे छे के आपणा व्यापार केटलेक भागे शीलरूप थई जाय ए बहु सारुं छे. एम थवाथी तंतुगत बळनो ओछो व्यय थाय छे. अने मन बीजा व्यापार साधवा छूटुं रहे छे. तेना ते प्रसंग ज्यारे ज्यारे उद्भवे त्यारे त्यारे शीलनी साहाय्यथी स्पष्ट रीते लाभज थाय छे.

बीजी पासा ए वात पण भुलवा जेवी नथी के साधारण प्राणिवर्गना जीवित करतां मनुष्यप्राणीनुं जीवन वधारे गुंफित अने विचित्र छे. प्राणीओने केटलीक तैयार प्रेरणाशक्तिओ जन्मसिद्ध होय छे तेम माणसने नथी. ए उपरथीज एम जणाय छे के व्यापारोनां रूपान्तर

ऊपजाववामां अने नवा नवा प्रसंगोने अनुरूप तेमने बनाववामां आपणा जीवितनो घणो भाग जवो जोईए एवुंज निर्माण छे. आम जोतां इच्छाविकासमां बे वातनी अपेक्षा रहे छे: (१) पुनः पुनः अभ्यासना व्यापार अथवा कर्मनी प्रवणता अमुकाकारे अने अमुकमार्गे स्थिर थवी जोईए; (२) जूना व्यापारोनां रूपान्तरज ऊपजावी ऊपजावी, नवां नवां मिश्रण करी करी, प्रसंगवशात्, नवी नवी योजना रची रची, ते व्यापारनी मर्यादाने विस्तारता जवी जोईए.

१७. **इच्छानी केळवणी**:— जेने "शरीरनी केळवणी" एवुं नाम आपवामां आवे छे तेमां स्नायुओनी केळवणीनो समास थाय छे. घणे भागे तो शरीरनी सुखाकारीने अर्थे तेवी केळवणी लेवामां आवे छे. "शरीरे सुखी तो सुखी सर्व वाते" ए नियम उपर लक्ष राखीने नीशाळमां कवायत, कीन्डरगार्टन, इत्यादि क्रम चालेलो छे. मजबुत शरीर, पहेलवान जेवा भुजदंड, इत्यादि प्राप्त करवाना हेतुथी पण केळवणी लेवामां आवे छे.

बीजी पासा जोईए तो कार्यसाधक स्नायुओनी केळवणीने बुद्धिनी केळवणी साथे घणो निकट संबंध छे. आ वात हाथ अने ध्वनिने सविशेष रीते लागु थाय छे. बाळकोने स्पष्ट बोलतां, वाचतां, अने लखतां शीखववुं ए बुद्धिनी केळवणीना, अंगरूपे गणाय छे—ए तो स्पष्टज छे के आ व्यापारो ज्ञानने घणा उपकारक छे, अने ज्ञान लेवा तथा आपवामां ते अति आवश्यक छे.

कार्यसाधक अवयवोनी अमुक अमुक प्रकारनी जे विशिष्ट केळवणी ते आ प्रकारे शरीर अथवा बुद्धिनी केळवणीना पेटामां समाई जाय छे, पण ए सर्वनी सामान्य केळवणीनो समास नीतिनी केळवणीना पेटामां थाय छे. गतिसाधक अवयवो उपर वशीकारनी शक्ति आवतां

ज इच्छानी प्रवृत्तिनो आरंभ थाय छे. गति अथवा व्यापार संबंधेज इच्छानुं प्रथम दर्शन थाय छे. स्पष्ट हेतु अने फळ व्यापारमांज जणाई आवे छे. वळी जीवितनां उत्तमोत्तम कार्यमात्रनो आधार पण शरीरना अवयवो उपर योग्य वशीकार प्राप्त करवामांज रहे छे. आम छे एटले आ शक्तिओनी केळवणीने अंगे इच्छानी केळवणीनो विचार प्रथमथी प्राप्त थाय छे. काम करवानो अभ्यासमात्र, तेनो मूळ हेतु गमे ते होय तो पण, थोडे के घणे दरज्जे इच्छाने सबल करवाना आरंभरूपज छे.

आरंभे याद राखवुं जोईए के बाळकोने स्वाभाविक रीतेज कार्यपरायण रहेवानी चंचलता होय छे; अने तेमणे पोते पसंद करेलां पोतानी रमतो वगेरे कामोमां तेमने माबाप के शिक्षकना नियमननी अपेक्षा रहेती नथी. ना'ना बाळकने पोताना अवयवोने कसरत आपवाना प्रसंगो प्रथमथीज सारी रीते मळवा जोईए. मानसिक तेम कायिक व्यापार जेनाथी प्रदीप्त थाय एवां वस्तु पदार्थादि बाळकने ऊछेरवाना स्थानमां तेम तेने रमवानी भूमि उपर राखवां जोईए. अनुकरणथी इच्छाव्यापारना विकासमां जे उपकार थई शके छे ते उपर विचार करतां आवा व्यापारमात्रमां तेनी साथे कोई सोबती होवाथी घणो लाभ छे एम जणाय छे.

शरीरव्यापारो साधवामां इच्छाने केळववानी वातपरत्वे शिक्षके बाळकने अमुक व्यापार केवी रीते थाय ते करी बतावबाथी आरंभ करवो– एम करवामां विचारनी अपेक्षा रहे छे. जेम कोई सत्य अथवा ज्ञान बाळक पोतानी मेळे प्राप्त करे ते सारुं छे, तेम बनी शके त्यां सुधी बाळक पोतानी मेळेज आवी बाबतमां पण रस्तो काढी ले तो बहु सारी वात छे. जे आलस्यने लीधे प्रयत्न अने प्रयोग करतां बाळक पाछुं हटे छे, अने माबाप के शिक्षक पासे "हवे शुं करवुं?" "मने आटलुं करी आपो" एम कहेतुं आवे छे, एना करतां इच्छानी केळवणीने वधारे हानिकारक बीजुं कांई नथी. एवी पण घणी वातो छे के गमे तेटली इच्छा छतां पण बाळकथी नज बनी शके, परंतु तेवे प्रसंगे कोई कोई वार नवी नवी सूचनामात्र वचमां वचमां करवाथी घणुं सारुं परिणाम आवेछे.

बाळकने प्रथमथी आज्ञाकारी करवुं जोईए, जे कहेवामां आवे ते कर्यां जाय एवुं राखवुं जोईए. आम करवानुं शिक्षण आपनार बाळकनी इच्छाने नवेज प्रकारे केळवे छे. आपणे जोई आव्या तेम आदेशवचनानुसार व्यापार ए इच्छाविकासना क्रममांनो एक अति उपयोगी क्रम छे. ना'नपणमां आवी योग्य कवायत करतां इच्छाविकासने बीजुं कांई वधारे उपकारक नथी माटेज आदेशवचन अने तदनुसार व्यापार वच्चेनो संबंध जेटलो थाय तेटलो निकट करी आपीने बाळकना मनमां ठसाववो ए घणुं उपयोगनुं छे. योग्य अधिकारवाळानी बुद्धि अने युक्ति उपर लक्ष राखवानी तेमज बाळकनी शक्ति उपर पण लक्ष राखवानी आ बाबतमां घणी जरूर छे. बाळकना गजा उपरांत तेनी पासे मागवुं नहीं, तेम प्रसंगे प्रसंगे तेनी कार्यपरायणताना फेरफार उपर पण लक्ष राखवुं. बाळकना व्यापार उपर माबाप अथवा शिक्षक सारो वशीकार प्राप्त करी शके त्यार पछी तेनी इच्छाने केळववानुं बहु सरल थई पडे छे.

निशाळना विषयानुक्रमवार प्रत्येक प्रकारना शिक्षणमां थोडे के घणे दरज्जे पण बाळकनी कार्यसाधक शक्तिओनो उपयोग थाय छे. मुखपाठ लेवामां पण बाळके अमुक रीते बेसवुं, अमुक दिशा भणी मुख अने दृष्टि राखवां, इत्यादि कवायत पाळवी पडे छे. वाचनमां, लेखनमां, कवायत करवामां, तेमनां तेमनां सविशेष स्वरूपानुसार जुदी जुदी पद्धति साचववी पडे छे. आटले सुधी तो आदेशवचन, अने कांईक भागे 'आम करवुं'

एवुं बतावबाथी अनुकरण ए उभयनी असर बाळक उपर प्रवर्ते छे.

एटली वात भुली जवी न जोईए के कार्यसाधक शक्तिओनो विकास पण, मनोविकासनी पेठे, धीमे धीमेज थाय छे. कार्यसाधक अवयवो तुरत तुरत स्वकार्य साधे एवुं घणा अनुभव पछी थाय छे. पोते जे करे ते उपर योग्य रीते अवधाननी एकाग्रता न करे तो बाळक इष्ट व्यापार सिद्ध करी शकतुं नथी. ते समये शिक्षके तेने उपालंभ आपवो योग्य छे. परंतु जेम वारंवार बने छे तेम, अमुक व्यापार साधवामां जे अवयवनो उपयोग होय ते अवयवनी प्रथमथी जोईए तेवी तैयारी न होवाने लीधे बाळकनी चूक थती होय तो, शक्तिउपरांत बोजो बाळक उपर नाखवा माटे शिक्षकने उपालंभ घटे छे. शक्ति अनुसार क्रमे क्रमे शिक्षण आपवानी पद्धतिनुं सारामां सारुं दृष्टान्त जन्मथी बहेरां अने बोबडांने अनुकरण मात्रथी जे शिक्षण अपाय छे तेमां जणाई आवे छे. शिक्षक प्रथमे एवा शरीरव्यापारोथी आरंभ करे छे के जे शिष्य पोते करे त्यारे पण ते पोते स्पष्ट रीते जोई शके एवा होय. आवा व्यापार सरल रीते सिद्ध थया पछीज स्पर्शादिद्वारा वधारे सूक्ष्म संस्थाओ शीखववानो आरंभ थाय छे.

शीलना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान शिक्षकमात्रने घणुं उपयोगनुं छे. व्यावहारिक केळवणीमात्रमां, सारी रीतभातथी मांडीने, ते उत्तमोत्तम मानसिक तेम कायिक व्यापार सुधीमां पण, जे जे व्यापारादिनी अपेक्षा छे तेमां शीलनोज मुख्य उपयोग छे. बाळकने वात करतां, लखतां, सारी रीतभात राखतां इत्यादि शीखववामां शिक्षके सरल, तात्कालिक, अने यंत्रवत् व्यापारपद्धति शीखववा उपर लक्ष राखवुं. शील बंधावा माटे जे सामग्रीनी अपेक्षा छे ते उपर लक्ष आपवुं जोईए—मानसिक आलस्य, अथवा बाळकनी कोई

स्वाभाविक विरोधवृत्ति, तेनो पराजय करवा माटे शिक्षके प्रथमे कांईक लालच बतावबी जोईए, अने ज्यारे ज्यारे तेना ते प्रसंग पुनः उद्भवे त्यारे त्यारे तेनो ते व्यापार थाय एवी योजना राखवाने काळजी करवी जोईए. संपूर्ण शील बंधाता पूर्वे अनेक वार अभ्यास थयलो होवो जोईए ए वात याद राखवाथी शिक्षकने वधारे धीरज अने आशा आव्या विना रहेशे नहीं.

प्रकरण १४.

संयुक्तकर्म-वर्तन.

१. बुद्धिशक्तिनो अने इच्छाशक्तिनो विकासः— आगळना प्रकरणमां व्यापारसाधक अवयवोने बाळक शी रीते पोताना अख्त्यारमां लावे छे ते बताव्युं छे. ज्यां सुधी आ व्यापारो साधतांज बाळक प्रथमे इच्छाव्यापार करवा मांडे छे, ज्यां सुधी बाळकने नानाप्रकारना व्यापारो करवानो परिचय थयो नथी, ज्यां सुधी जुदा जुदा व्यापारोनां इच्छानुसार संयोजन करतां आवड्यां नथी, त्यां सुधी जेमां पूर्ण रीते विकास पामेली इच्छा प्रदर्शित थाय एवां संयुक्त कर्म तेने करतां आवडतां नथी. संयुक्त व्यापारोमां कोईने कोई प्रकारनो स्नायुव्यापार रहे छे. संयुक्त कर्मोने सादी गति थकी जुदां पाडनार कारण व्यापारनी संयुक्तता नथी, पण जे वृत्ति अथवा हेतुनी अने बुद्धिपूर्वक विचारनी तेमां जरूर पडे छे, ते छे. प्रथम वयना व्यापार वेगपूर्वक होय छे, उत्तर के पक्व वयना व्यापार विचारपूर्वक होय छे.

भाषामां चालता सामान्य शब्दप्रयोगमांथी पण आ वात स्पष्ट थाय तेवी छे. जे कर्ममां भावनानुं तत्त्व थोडुं होय छे अने अमुक व्यापारज जेनुं फळ होय छे तेने आपणे गति अथवा व्यापार कहीए छीए. बीजी पासा ज्यारे. ते व्यापारना फळनी भावना मुख्य रूपे होय त्यारे तेने आपणे कर्म एवुं नाम आपीए छीए-बीजानुं जोईने हाथ लांबो करवो ते एक व्यापार छे, पण तेनो तेज व्यापार बीजाने कांईक आपवाना हेतुथी कर्यो होय तो ते कर्म थाय छे. आ संबंध ए वातमांथी पण जणाई आवे छे के गमे तेवा जुदे जुदा व्यापार पण एकज फळ अने एकज हेतुने आधीन होय तो एकज जातना व्यापार रूपे गणाय छे.

सादा व्यापार ते संयुक्त कर्मनुं रूपान्तर, घणे भागे, अनुभवनी वृद्धि थवाथी अने भावनाशक्तिनो अधिक विकास थवाथी थई आवे छे.

दूरदर्शितामांथी आ वात स्पष्ट रीते सिद्ध थाय छे. अनुभव वृद्धि पामतो जाय छे, बुद्धिनी शक्ति आगळ वधती चाले छे तेम तेम बाळक भविष्य विषे वधारे विचार करतुं चाले छे. मारा व्यापारोथी दूरना तेम तुरतज, परंपरित तेम साक्षात् परिणाम उद्भवे छे एम तेने समजाय छे. गुस्से थईने ते पोतानुं रमकडुं भांगी नाखे छे ने पछी रमवानें कांई रहेतुं नथी; अथवा केवळ अनुकरणथीज ताजां आणेलां फूलनें पाणीना प्यालामां मूके छे अने सवारे पण तेमने ताजांने ताजां देखे छे. आवा अनुभव थतें थतें तेने "आगळ" जोवानी टेव पडे छे, पोताना व्यापारनां साक्षात् तेम परंपरित परिणाम उपर लक्ष करवानी इच्छा थाय छे. भावनानी शक्ति परिपूर्ण बळवाळी होय तो परंपरित अथवा दूरना परिणामोना विचारमांथीज आरंभक हेतु उद्भवी आवे छे. दूरना लाभ उपर दृष्टि राखी बाळक वर्ते छे. आवती काले खावा माटे आज मळेलां पक्वान्नने राखी मूकवां एवी बुद्धि तेने थाय छे; अथवा केटलाक महीना पछी फूलने जोवानी इच्छाथी बागमां बीज वाववानी तेने मरजी थाय छे.

बुद्धि अने भावनाशक्तिना विकासथी बाळकने कर्मसाध्य फळ विषे वधारे विशाल विचारो आवी शकशे एटलुंज नहीं, पण ते फळनां साधन विषे पण वधारें ज्ञान मळशे. अतिविदूर एवा कोई फळनो अमुक व्यापार उपर आधार छे एम जाणवाथी एने पोतानी शक्ति अने पोतानां साधननुं सविशेष ज्ञान थशेज ए तो स्पष्ट छे. वर्णांक साहचर्योने एक एकथी संयोजी तेमनी अमुक श्रेणि रचवानी शक्ति आववाथी पण इष्ट साध्यने योग्य एवां साधन विषेना तेना ज्ञानमां घणो वधारो थशे. आटलो बुद्धिविकास थतां, बाळकने घणा सादा व्यापारोने एकज फळ प्रति योजतां पण आवडशे. हवणां कह्यां तेमांनुंज एक उदाहरण तपासीए तो बीजने वावीने पुष्पनी आशा करतुं बाळ-

क, बीज वावबुं, पाणी पावुं, जमीनने नीदवी इत्यादि अनेक जुदा जुदा व्यापारो एक अमुक फळना संबंधथी कर्या जाय छे एम जणाशे. आ प्रमाणे सादा व्यापारो व्यापारश्रेणिरूपे संयोजातां संयुक्त कर्मनी रचना थती चालशे.

२. वृत्तिनो अने इच्छानो विकास:— इच्छाविकासने जेम बुद्धि अथवा ज्ञानना विस्तारथी लाभ थाय छे तेम वृत्तिविकासथी पण घणो लाभ थाय छे. वृत्तिथी करीने, इच्छाव्यापारमां इच्छारूपी साहाय्य मळी आवे छे एटले वृत्तिविकासनी वृद्धिथी इच्छाविकासनी पण वृद्धि थाय छे.

इच्छाना प्राथमिक विकासने विलोकतां आपणे जोयुं के तेमां मात्र केटलीक सादी वृत्तिओज काम लागे छे. शरीरना अवयवो उपर जे वशीकार प्राप्त थवो ते तो इंद्रियसंबद्ध वृत्तिओना प्रोत्साहनथी पण घणे भागे सिद्ध थई आवे छे. प्रथम पहेलांज जे इच्छा अने निर्वेदथी अवयवो जाग्रत् थई कार्यपरायण बने छे तेमने शरीर अने इंद्रियोनां सुख असुख साथेज संबंध होय छे. आ कारणो साथे प्रथमथीज, सहकारी रूपे, पोतानी शक्ति देखाडवानी अने कांईक करवानी अभिरुचि, वस्त्वादिविषे ज्ञान प्राप्त करवानी जिज्ञासा, ए आदि ऊर्मिओ भळेली रहे छे, मांडलिक वृत्तिना प्रथम स्फुरणथी अनुकरणमां अने आदेशवचनोने अनुसरवामां तात्कालिकतारूप असर थवा लागे छे, अने अनुकरण तथा आदेशवचनने अनुसरवानी तत्परताथी व्यापार करनार अवयवो उपरनो वशीकार सारी रीते सिद्ध थाय छे.

वृत्तिओनी संख्या वधती जायछे तेम तेम वधारे वधारे नाना प्रकारनी इच्छाओ कार्यसाधक शक्तिओने प्रोत्साहित करती जाय छे. स्तुति पामवा माटे, बीजाने खुशी करवा माटे, अथवा जे योग्य होय ते

करवा माटे, बाळक घणांक काम करवा लागे छे. ऊर्मिविकासना आवा प्रत्येक क्रमथी इच्छानी मर्यादा विस्तार पामे छे, अने एम कर्मसाधक हेतुओ वधता चाले छे. जेम जेम वय वधतुं जाय छे तेम तेम वधारे वधारे अभिलाषाओ इच्छाने उद्युक्त करती चाले छे.

आ स्थाने एटलुं जोवा जेवुं छे के वृत्ति अने अभिलाषाना आवा विकासथी कर्मनी भावनाना अंशमां पण वृद्धि थती जाय छे. आपणे हवणांज कही आव्या तेम संयुक्त कर्मो वधारे संयुक्तताने लीधे तेम वधारे भावनाने लीधे, सादां कर्मथी जुदां पडे छे. आम छे एटले जेम कर्म, आवी उत्तम वृत्तिओना अधिकारमां आवतुं जाय छे तेम विचारनां नवां नवां तत्त्वथी ते विपुल थतुं जाय छे. उदाहरण. पोतानां माबाप अथवा शिक्षकनी स्तुति प्राप्त करवाना हेतुथीज जे बाळक कर्म करतुं होय ते घणा दूरना फळनी भावना बांधीने प्रवर्ते छे, पोतानुं काम सामाने केवुं लागशे, तेनी अने मारी वच्चेना संबंधमां तेथी शो फेर पडशे, एवा विचारथी ते प्रवर्ते छे.

३. नित्यफलोद्देश:— ज्ञान अने ऊर्मिना आवा विकासनुं बीजुं फळ ए छे के कर्ममात्रनां जे फळ ते वधारे विपुलता अने विस्तार ग्रहे छे, बाळकने नित्य एवा फळनो विचार आवे छे, सुखना अंगरूप आनंदनी नित्य सामग्री उपर लक्ष थाय छे. अनामयत्व, ज्ञान, प्रतिष्ठा, इत्यादिने ते, आ प्रकारे, नित्य वस्तुरूपे गणे छे, आज काल सर्वदा चालनार वस्तु जेवां गणे छे. एज रीते तेने पोतानी जातना सुख करतां वधारे विशाल सुखनुं भान थाय छे, पोतानुं कुटुंब, पोतानी शाळा, पोतानो देश, अने मनुष्यमात्रना सुखनुं भान थाय छे.

बाळकनुं मन ज्यारे आवा विशाळ अने नित्य फळ उपर लक्ष करी शके छे त्यारे एनां कर्म, कोई नवेज प्रकारे, बुद्धियुक्त थाय छे. ए

पछीथी प्रत्येक कर्म करतां तेनुं लक्ष साक्षात् तात्कालिक फळ उपर तेमज आ नित्य फळ उपर एकंदरे शी असर थशे ते उपर पण रहे छे. उदाहरण, ज्ञान प्राप्त करवामां जे आनंद आवेछे तेटलाज माटे नहीं पण ज्ञाननो जे नित्यलाभ छे ते उपर नजर राखीने पण बाळक ज्ञान प्राप्त करवाना उद्यममां रहे छे. एमज पोताना शिक्षकने राजी राखवामां पण बाळक तुरतना लाभनी आशा राखे छे एटलुंज नहीं पण तेनी दृष्टिमां प्रतिष्ठा पामवाना नित्य लाभ उपर पण नजर राखे छे.

पोताना नित्य लाभ उपर पोताना प्रत्येक कर्मनी शी असर थशे ए वातनो वितर्क बाळक ज्यारथी करी शके छे त्यारथी तेनां कर्म एक एकथी संयुक्त थई तेनुं वर्तन अथवा चारित्र घडावा मांडेछे. आ के पेलुं फळ लेवा माटेनो जे वेगमात्र प्रथमे होय छे ते स्थिर एवा कोई फळने आधीन थई, बुद्धियुक्त हेतुने अनुसरेछे. अथवा बीजी रीते कहीए तो आटलेथी तेनां कर्ममात्र अमुक नियमानुसार चालेछे. जाणे के अजाणे पण बाळक केटलाक सामान्य नियमोने अनुलक्षीने कर्म करेछे. एम "अनामयत्व राखवुं," "ज्ञान प्राप्त करवुं," "सारो थवुं," इत्यादि धोरणो उपर तेनुं लक्ष रहेछे. भिन्न भिन्न कर्मो आ प्रमाणे एक फळनी साथे अनुसंधान पामी, परस्परने उपकार करतां थायछे. आ प्रकारे इच्छा पोतानी एकाकारता प्राप्त करेछे.

नित्य फळनुं स्वरूप, साधननी साध्यरूपे अभिलाषा.—नित्य फलप्राप्तिना प्रयत्नथी, अभिलाषामात्रमां इष्टार्थ सिद्ध करवानां साधन उपर अवधान केवी रीते केन्द्रित थायछे ते वात स्पष्ट जणाई आवेछे. आगळ बतावेलुं छे तेम कोई पण बातनी अभिलाषा थतां, ते प्राप्त थवाना साधननी अभिलाषा थाय छे. व्यापारमात्रमां ते व्यापारना अव्यवहित फळ उपर अवधान राखवुं पडेछे, एटले आवा अवांतर फळनेज साध्यरूपे मानी लेवामां आवे छे. उदाहरण. बाळकने ताप लागतो होय अने ते

बारी बंध करवा ऊठे, तो बारी बंध करवी एज ते साध्य गणेछे. तेटली क्षण तापने भुलीने, बारी बंध करवा उपरज तेनुं लक्ष रहेछे. धन, अधिकार, अनामयत्व, इत्यादि प्राप्त करवानी प्रवृत्तिमां आवी रीते साधनो साध्य स्थाने उपस्थित थायछे ते वात स्पष्ट जणायछे.

साधनने साध्यरूपे मानवाना आवा बधा प्रसंगोमां अनुभवनी वृद्धि थतां, साधननेज स्वतंत्र लाभरूप मानवानी अभिलाषा पण सहाय थई आवे छे. हवणांज जे उदाहरण आप्युं तेमां बाळकने बारी अडकाववामां कांई अंतराय आवे तो तुरत पोतानुं बळ अजमाववानी इच्छा थई आवे छे. ज्ञानप्राप्ति संबंधे पण एमनुं एमज थाय छे. आरंभे बाळक, ज्ञानने कोई अन्य साध्यना साधनरूपेज प्राप्त करवा इच्छे छे; मात्र घणो समय जतां तेने ज्ञानमां पोतामां पण कांईक इष्टार्थ समजाय छे.

संयुक्त कर्म अथवा नित्य फलोद्देशथी करेला कर्मना विकासक्रममांथी एटलुं पण जणाय छे के चेतनना त्रणे अंगनो विकास उत्तरोत्तर सामान्यता ग्रहतो चाले छे. अनामयत्व, समृद्धि, द्रव्य, सद्गुण, सुख, इत्यादिनी अभिलाषामां जे वेग रहेलो होयछे ते कोई भावरूप विचारमात्रनेज वळगेलो होय छे एम जणाय छे—इष्टार्थ आ स्थाने भावनामय के भावनानी पण भावनामय होय छे. अमुक समृद्धि के ज्ञान प्राप्त करवानी अभिलाषा अनेक आनंदोनी एकत्रित भावनानी संज्ञानो आश्रय करे छे; अने एवा कोई पण फळ प्रति एक सामान्य अभिलाषामात्र होय तेमां, गमे ते काळे ने गमे ते प्रकारे ते फळ माटे प्रयत्न करवानी तत्परता रहेछे. कोई माणसने सामान्य रीते शास्त्रीय ज्ञाननी अभिलाषा छे एम ज्यारे ते माणस पोतानी शक्ति अनुसार तेवा ज्ञानने उत्तेजन आपेछे त्यारे कहेवायछे. आवी मनोवृत्तिमां सामान्य फळनी भावना उपरांत एक प्रकारनी शान्त अभिलाषानुं पण तत्त्व रहेलुं छे.

आपणे जोयुं के व्यापारकर्तानुं मन जेम जेम दूर दूरना फळ उपर विचार करतुं जाय छे तेम तेम कर्ममात्रमां रहेलुं भावनानुं तत्त्व वृद्धि पामतुं जाय छे. भावनानी वृद्धि तेज संयुक्ततानी वृद्धि जाणवी. अमुक अव्यवहित फलप्राप्ति माटेना एकाद वेगनुं परिणाम नहीं, पण घणाक वेग, घणीक फलभावना, अने तेथी भावनाना अंतर व्यापारनुं घणुं विपुल संयोजन, ए बधुं जेमां होय, ते संयुक्त कर्म कहेवाय.

कर्मगत भावनांशनी आवी वृद्धि परस्पर विसदृश एवां बेमांथी एक

रूप धारण करेछे. एवी वखते जाग्रत् थयलां अभिलाषा अथवा वेग परस्परानुकूल अने परस्परोपकारक होय, अने सर्व मळीने एक फळ साधतां होय; अथवा ते सर्वे परस्परथी विसदृश होई जुदे जुदां फळ साधतां होय.

(१) **अभिलाषानुं परस्परोपकारकत्व**:— एकज फळ प्रति प्रवर्ततीं घणी अभिलाषाओनुं एकत्र थवुं ए कांई असाधारण वात नथी. जे घणांक कर्मोमां प्रेरक हेतु एकाद वेग जणायछे. तेने सूक्ष्म रीते विलोकतां तेमां घणाक वेगनुं संयोजन समजाशे. बाळकने तेनी माता कांईक करवानुं कहे ने बाळक ते कार्य करवा मांडे तेमां माताने खुशी करवानी अभिलाषा उपरांत पोताने कांईक लाभ थवानी अभिलाषा पण होयछे—आ स्थाने बन्ने अभिलाषानुं इष्ट फळ एकनुं एकज छे एटले ते जलदीथी सिद्ध थायछे.

कर्मथी उत्पन्न थनार सुख अथवा आनंदनी साथे संबद्ध जे अभिलाषा ते उपरांत, ते कर्मगत व्यापारमात्र साथे संबद्ध एवी बीजी अभिलाषा ज्यां ऊमेरायछे त्यां अभिलाषाओना परस्परोपकारनुं कार्य सारी रीते दीठामां आवे छे. आगळ आपणे जोई आव्या तेम इच्छायुक्त व्यापारमात्रमां व्यापारने तो आपणे एक साधनरूपे गौण रीतेज इष्ट गणीए छीए. परंतु केटलेक प्रसंगे ते कर्म अथवा व्यापार पोताने पण स्वतः सुखावह रूपे आपणे मानीए छीए. आवा बधा प्रसंगोमां घणीक अभिलाषाना एकत्रित थवाथी कर्म संयुक्त थई जायछे. कोई फळ साधवानी आरंभक अभिलाषामां, अनुकूळ मार्ग लेवानी अभिलाषा पण ऊमेराय छे. घणी वार एवा अनुकूळ मार्गनी भावनाथीज आपणे व्यापारपरायण थवा प्रेराईए छीए. रमत गंमत जेवा व्यापारमात्रमां अनुकूळ मार्गरूप प्रवृत्ति एज घणी वार मुख्य फळरूप थई पडेछे.

व्यापारमात्रथी उद्भवता आनंदनी अभिलाषाने यद्यपि गौण कही तथापि कार्य सिद्ध करवामां ते कोई रीते अनुपयोगी छे एम जाणवुं नहीं. साध्य फळ माटेनी अभिलाषा अने तत्साधक साधन माटेनी अभिलाषा वच्चे न्यूनाधिक प्रमाण रही शके खरूं; कोई वार एक कोई वार बीजी वधती ओछी थाय खरी; पण ते कोई वार अनुपयोगी नथी. कोई कोई वार तो साधनना आनंदनी अभिलाषाज आरंभक हेतु थई पडे छे; अनुकरणरूप व्यापारमात्रमां तेम थायछे, परंतु घणे खरे प्रसंगे तो करवानी खातरज अमुक व्यापार करवानी जे अभिलाषा ते कोई पण प्रकारना सुखावह परिणामनो भाव लईने प्रवर्ते छे.

(२) **अभिलाषानो विरोध**:— संयुक्त कर्मनो बीजो प्रकार जेमां बे अथवा वधारे अभिलाषानो परस्पर विरोध होयछे ते उपकारक अभिलाषा वाळा प्रकार करतां वधारे अगत्यनो छे. एकत्र चालती अभिलाषाओमां होयछे ते करतां भावनानो अथवा विचारनो क्रम वधारे लांबो अने गुंचवायलो रहेछे. चेतनाविषयक विचार करतां आ प्रकारना कर्मविभागनी नीति संबंधे पण घणी जोवा जेवी प्रकृति नीवडे छे,—केम के नीतियुक्त चारित्र ए आ प्रकारना संयुक्त कर्मनुंज परिणाम छे.

आ प्रकारना कर्ममां एक नवुंज तत्त्व प्रदर्शित थाय छे; व्यापारनो प्रतिरोध करनार तत्त्व एमां विद्यमान होयछे. जुदी जुदी दिशा भणी बळ करनारी बे अभिलाषाओ एकज समये, अथवा अव्यवहित पूर्वोत्तर क्षणे, उद्भवेछे त्यारे उभयनो एक एकथी प्रतिरोध थाय छे—आ प्रतिरोध क्वचित् क्षणिक होय छे अने कार्यने थवामां विलंब मात्र ऊपजावेछे, अथवा नित्य थई जई कार्यने एकातन्तः अटकावीज देछे. अभिलाषाओना विरोधथी कार्यप्रतिरोधनी आ असर एक पदार्थ उपरथी अन्य पदार्थ अवधानने आकर्षी ले तेना जेवी छे. जेम एक समये मन एकज वात ऊपर लक्ष आपी शके छे, अने अवधान एक पासा जतुं होय त्यारे बीजी पासा जई शकतुं नथी, तेम कोई एक समये कार्यसाधक एवो एकज वेग प्रवृत्ति ऊपजावी शके छे, अने बीजी पासा ताणनारो बीजो वेग उद्भवतां प्रथमना वेगनुं बळ क्षीण के स्तब्ध थई जाय छे.

कार्यप्रतिरोधने अनुषंगे जे तंतुपरिवर्तादि थाय छे ते विषे घणी चर्चा थयली छे. अमुक मार्गे तंतुबल केन्द्रित थवाथी तथा अन्य मार्गे न जवाथी प्रत्यग्भान थाय छे तेमज एम मानवाने पण कारण छे के उद्वाहक तंतुस्थानोमांना एकना प्रोत्साहनथी अन्यना प्रोत्साहनमां कांइक पण न्यूनता थया विना रहेती नथी. विचार थकी वेग स्तब्ध थायछे त्यां, आ तर्कानुसार जोतां, उच्च प्रकारनां उद्वाहक स्थानोमांथी एवो प्रवाह नीकळे छे के जे, प्रकृत वेगथी प्रोत्साहित थयलां नीच स्थानोने मंद पाडी देछे के स्तब्ध करी नाखे छे–आम होवुं ए यथास्थित छे एम एटला उपरथी मानी शकाय छे के कोई अमुक व्यापार (जेमके कोई आवेशथी करवामां आवतो व्यापार) करवामां बीजा स्नायुओनुं घणुंज संकोचन थायछे अने प्रकृत व्यापारने साहाय्य मळेछे. तंतु–व्यापारो परस्परने उपकार प्रत्युपकार केवे प्रकारे करेछे तेनुं यथार्थ स्वरूप संपूर्ण रीते समजायुं नथी; प्रकाश अने शब्दना तरंगना मिश्रण जेवो ए व्यापार होय एम धारी शकाय छे.

शंकाथी कार्यप्रतिरोधः— प्रतिरुद्ध कार्यनुं सादामां सादुं दृष्टान्त ए छे के ज्यां अमुक अभिलाषानुसार कार्य करवामां जोईए तेटली श्रद्धा न होवाथी कार्य अटकी पडेलुं होय. बाळको एकंदरे घणां श्रद्धालु होयछे, जे तेमनी श्रद्धालुता तेमनी व्यापारपरायणतामां जणाय छे. साधारण गतिना प्रथम प्रयोगो सफल थवाथी परिपूर्ण श्रद्धापूर्वकज ते करेछे; प्रथम पे'लोज ज्यारे तेमने निष्फलतानो अनुभव थायछे त्यारे तेमना वदन उपर वैलक्ष्यनी छाया जणाय छे. निष्फलता थवाथी अनिश्चितताने भास थायछे, ने अनिश्चितता अथवा शंकाथी करीने कार्य अटकी पडेछे. कोई भारे पदार्थ ऊपाडवामां जे बाळकने निष्फलतानो अनुभव थयो होय छे, ते पुनः बीजा भारे जणाता पदार्थोने वळगतां विचार करेछे.

आवो जे प्रतिरोध ते क्षणिक के नित्यरूपे थवामां नियामक ते ते प्रसंगे अभिलाषानुं बळ अने कार्य करवानी तत्परता ए बे उपर रहेछे. प्रकृतिना तारतम्यथी पण फळमां भेद पडशे. सशक्त स्नायुस्थिति जेथी

सारी रीते कार्यसाधक व्यापारो करी शकाय ते शंकाने प्रतिकूळ छे— शंकाशील प्रकृतिने कार्यसाधक वेगनी मंदता साथे कांईक संबंध जणाय छे. प्रकृतिना आवा फेरफारो साथे अनुभूत वृत्तिओना स्मरणनी शक्तिमां पण तारतम्य होयछे. सुखस्मरणनी शक्ति दुःखस्मरणनी शक्ति जेटली अनियत रहेती नथी; आशा भेर रहेती प्रकृतिवाळाने सुखस्मरणनी सारी शक्ति होयछे, शंकाशील भयभीत प्रकृतिवाळाने दुःखस्मरणनी सारी शक्ति होयछे.

इच्छानुं परापतनः—अमुक आनंद उद्भवशे एवी अभिलाषाने वश थई मन अमुक कार्य करवा वळतुं होय तेज समये ते आनंदमांथी अमुक दुःख ऊपजशे एवी भावना मनमां आवे त्यारे जे प्रतिरोध थायछे ते उक्त करतां बीजा प्रकारनो छे. आनंद माटेनी इच्छाथी कार्य करवानी जे वृत्ति तेनी सामे दुःखभावनाथी तेज कार्यथी निवृत्त थवानी वृत्ति प्रादुर्भाव पामेली होयछे. अने जेटले अंशे दुःखभावनाथी सुखेच्छा पराभव पामेछे तेटले अंशे कार्यप्रतिरोध थायछे. प्रतिरोधक बळनो उद्भव ते कार्य पोतेज भावनामां प्रतिकूलरूपे जणाय, अथवा प्रतिकूळ फळ ऊपजावनारुं जणाय, तेमांथी थायछे.

प्रथम प्रकारनुं (एटले कार्यनी पोतानीज प्रतिकूळ भावना थवाथी प्रतिरोध थवानुं) उदाहरण ए छे के आलस्यनी स्थितिमां कार्य करवानी इच्छा थती नथी. एवी स्थितिमां कार्य करवाना आनंदनी अभिलाषारूप सहायकारक बळ होतुं नथी एटलुंज नहीं, पण स्पष्ट रीते विरुद्ध एवुं, ते कार्यनेज प्रतिकूळ रूपे माननारुं अने कार्यथी विदूर राखनारुं, आलस्यनुं बळ विद्यमान होयछे. कोईना कहेवाथी के पोताना विचारथी कोई कार्यनी बाळकने अभिलाषा थायछे, पण तेनी प्रकृति आळसु होवाथी तेने ते कार्य करवाना आयासनो कंटाळो आवेछे, एटले ते कार्य करतुंज नथी.

परस्परविरुद्ध एवी बे अथवा वधारे अभिलाषाना बलाबल उपर परिणामनो आधार रहेछे. सुखनी इच्छा करतां आयास प्रति जे निर्वेद थायछे तेनो परिहार करवानी इच्छा बलवती हशे तो सुखेच्छा कांई करी शकशे नहीं. आपणे जोई आव्या छीए के कार्य साधवानी इच्छानी विपुलतानो आधार तेज समये कार्य साधवानी तत्परताना प्रमाण उपर रहेछे. एटले ज्यां घणुं आलस्य होय त्यां इच्छा निर्बल थई जवानो संभव छे.

हवे बीजो प्रकार (कार्यना परिणामनी प्रतिकूलतानी भावना) जोईए. बाळकने ताव आव्यो छे, श्लेष्म थयुं छे, ने खाटलामां सुई रह्युं छे; बारी बहार डोकुं काढीने जुवेछे अने पोताना नाना भाईने फळीआमां रमतो देखेछे; अने पोताने पण बहार जई रमवानुं मन थायछे, पण एम करवाथी माता ठपको देशे तेनुं, अथवा पोताना व्याधिमां वधारो थशे तेनुं, तेने भय लागेछे. आ प्रसंगे पण कार्यसाधक वेग पूर्णपणे के अपूर्णपणे एम बे रीते अटकी शके एवो संभव छे, ने तेनो आधार सुखेच्छा के भावनाथी प्रतिकूळ जाणेला परिणामना परिहारनी इच्छा, तेना बलाबल उपर छे. कार्यसाधक वेगनो प्रतिरोध करनार दुःखभावनानुं बलाबल, साधकबाधक अभिलाषानुं बलाबल, कार्य साधनारनी तत्काल कांईक करवानी प्रकृति, इत्यादि अनेक बातो उपरथी नक्की थायछे. अत्र पण शंकाशील, अथवा त्वरित कार्यकारक, प्रकृतिना तारतम्यानुसार फळमां तारतम्य जणाया विना रहेतुं नथी.

त्रीजो प्रकार एवो छे के कार्यसाधक एवा घणा वेगना एकत्र व्यापारनुं फळ प्रतिरोध रूपे नीपजे. आम कहेवानुं तात्पर्य ए छे के एकी वखत मन अनेक सुखेच्छाथी आम तेम आकर्षाय छे. उदाहरण. बाळक एक रसिक वार्ता वाचतुं बेठुं छे, तेनो भाई आवीने तेने रमवा बोलावे

छे. बाळकने रमवा जवानी, पोताना भाईनी इच्छाने अनुसरवानी, अने वात वाचवानी, बधी इच्छाओ छे. एवे प्रसंगे पोताना बलाबलानुसार प्रत्येक इच्छा प्रत्येकनो प्रतिरोध करेछे.

इच्छाओनी आवी प्रतिस्पर्धामां जुदा जुदा मार्ग तरफ एक वखते अनेक इच्छाओ आकर्षण करे एज तत्व छे. प्रसंगे प्रसंगे ए स्थिति अनेक रूपान्तरे जणायछे. केटलेक प्रसंगे साधनोने संकुचित करी नाखवाथी कार्यनो प्रतिरोध थायछे (जेमके एकज समये बे स्थाने होई शकवानी अशक्यता, एकज समये बे काम करवानी अशक्यता इत्यादि); केटलेक प्रसंगे इष्ट पदार्थोना परस्पर विरोधमांथीज प्रतिरोध उद्भवेछे (जेमके अति सबल अने अनामय शरीर, महाविद्वत्ता, इत्यादिनी आशा वगेरेमां)

ए पण लक्षमां लेवा जेवुं छे के इच्छानुं परापतन अने इच्छानी प्रतिस्पर्धा एवी बे वात जे अत्र भिन्न मानी ते सर्वथा भिन्नज छे एम नथी. आगळ आपणे जोई आव्या तेम इच्छा अने निर्वेदने परस्पर साथे निकट संबंध छे, अने उभये एक बीजानुं रूप सहजे धारण करी लेछे. इच्छाना परापतननां उदाहरणमांज बाळकनी पोतानी माताने नाखुशी न करवानी इच्छा, तेने खुशी करवानी इच्छानुं रूप लेई शकेछे, ने तेम थायछे त्यां इच्छाना परापतननो प्रसंग बदलाईने इच्छानी प्रतिस्पर्धानो प्रसंग थई जाय छे. बीजी पासा जोईए तो ज्यां इच्छानी प्रतिस्पर्धा होयछे त्यां प्रत्येक कार्यनी इच्छा तदन्य कार्यप्रति निर्वेद रूपे परिणमे छे, अने ते इच्छानो प्रतिरोध करेछे.

अभिलाषा, इच्छा, अथवा वेगनी प्रतिस्पर्धानां अनेक रूपान्तरो होई शके छे. साक्षात् अनुभूत एवी बे वृत्तिओ बे जुदी जुदी दिशाए आकर्षे छे. बाळक बहार फरीने थाकी जई गरम थईने घरमां आवेछे. आराम लेवानी अने तेनी साथेज तृषा मटाडवानी तेने इच्छा थायछे. अथवा भावनारूप बे वृत्ति के बे फळ परस्परनी सामे आवी पडेछे, जेमके हवणांज उदाहरण आप्युं तेमां क्वचित् बे नित्य फळ परस्परनी सामे आवेछे—जेमके उत्तम अभ्यास करवानी साथे अनामयत्व राखवानी इच्छा. क्वचित् एक प्रकारनी अभिलाषा पोता करतां उत्तम के अधम प्रकारनी अभिलाषानी सामे आवेछे. उदाहरण. भावनारूप वृत्ति साक्षात् वृत्तिनी सामे आवे, जेमके आलस्यना सुखनी सामे अमुक फळने अर्थे काम

करवानी इच्छा. क्वचित् कोई नित्य फळ कोई हलकी अभिलाषानी सामे आवेछे, जेमके क्षुधा अने शरीर साचववानी योग्य काळजी, रमतमां पडवानी अने अभ्यास करवानी इच्छा इत्यादि.

आ प्रकारे, मन ज्यारे एकना एक कार्य प्रति आकर्षाय छे अने तेनाथी विदूर पण खेंचाय छे त्यारे, अथवा बे भिन्न भिन्न दिशा भणी एकी वखते आकर्षाय छे त्यारे कार्य करवानी बात बंध पडेछे अने मन आम तेम आम, वारा फरती नम्यां करेछे. आगळ आपेला उदाहरणनेज जोईए. रसिक वार्ता वांचता बाळकने रमवा बोलाववामां आवेछे त्यारे ते बहार फरवाना आनंदनी कल्पना करेछे, वृक्ष वन पुष्प आदि शोभानुं चित्र मनमां ऊपजावे छे; अने एवी बधी भावनाओ मन आगळ ताजी होय छे तेवामां रमवा तेडवा आवनारनी इच्छाने अनुसरवानी वृत्ति थाय छे. परंतु आ भावनाथी कार्य पर्यंत फळ थई जता पूर्वे, घरमां टाढकमां बेशी रहेवुं, वार्तानो रस भोगववो, ए आदि भावनाथी उक्त वृत्तिनी विरुद्ध वृत्ति उद्भवे छे, अने तेमज करवानो अभिलाषा प्रेरेछे. आ प्रकारे उद्भवती बे विरुद्ध अभिलाषाथी पीडाकारक एवो कोई क्लेष मनमां पेदा थाय छे.

आवो जे विरोधक्रम तेनो छेडो एनी मेळेज आवेछे. ए बेमांनी एक अभिलाषा वारंवार बीजी करतां वधारे बलवती अने दृढ नीवडे छे, अने पोतानाथी विरुद्ध अभिलाषाने परिपूर्ण रीते विदूर करी, पोताने मार्गेज कार्यने ऊतरे छे. अथवा आवा क्लेशनो भारज एवो दुःसह थई पडेछे के आम के आम, जे ते एक मार्गे, कार्य थई आवेछे; एवा क्लेशमां पडी रहेवा करतां मन गमे ते एक मार्ग पकडे छे. गमे ते पण एक मार्ग ते समये लई लेवानी तीव्र इच्छाथी आ क्लेशनो आवो नीकाल करवामां घणी साहाय्य मळे छे. कार्यसाधक आवेग जेमनामां

अति तीव्र अने परिणामोनी भावना करवानी शक्ति कांईक क्षीण बळवाळी एवां बाळको भावना अने इच्छानो आवो विरोध लांबो वखत चलावी शकतां नथी.

आ प्रकारे विरुद्ध अभिलाषाना क्लेशनो नीकाल करवानी बात, एक पदार्थ उपर घणाज यांत्रिक बळ लागवाथी जे परिणाम ऊपजे छे तेना जेवी छे. जेम ते पदार्थो सर्वोपरि बळने आधीन थई तदनुसार गति ग्रहण करे छे, तेम कार्य पण सर्वोपरि बळवाळी अभिलाषाने अनुसारे ऊपजे छे. जेम समान शक्तिवाळां बे विरुद्ध बळ परस्परनो पराभव करी स्थितिमात्रज ऊपजावे छे तेम विरुद्ध अभिलाषाओ पण परस्परनो पराभव करी कार्यभाव ऊपजावे छे. परन्तु जुवान अने कार्यसाधक वेगथी प्रपूर्ण एवां माणसोपरत्वे आवुं क्वचित्ज बने छे. तुरत कांईक पण करवुं एवुं वळण तेमने थई आवे छे, अने विरुद्ध अभिलाषानो क्लेश न सहन थई शकवाथी ते वळगने टेको मळे छे, एटले गमे तेवुं पण कार्य थया विना रहेतुं नथी. कोई अभिलाषाने अनुसारे कार्य नीपजशे एनो आधार केवळ अकस्मात् उपरज रहे छे. जे वखते जे वेग सहजे बलवान् थई जाय ते आखा कार्यने दोरी जाय छे.

आटले सुधी आपणे कार्यप्रतिरोधनो जे विवेक कर्यो तेमां एम मान्युं छे के अभिलाषानो विरोध, अने तेनो नीकाल, ए एक स्वतंत्र व्यापार छे, अभिलाषा पोतपोताना बलाबलानुसार कार्य ऊपजावे छे, कोई त्रीजुं नियामक छे नहीं. आवुं मानवुं ए नानी वयमां इच्छाशक्ति घणी जुज होय छे तेने माटे योग्य पण छे.

पण इच्छाविकास थतां आवी अन्यनिरपेक्ष स्थिति बदलाई जाय छे, इच्छायुक्त प्रयत्नथी आ के पेली अभिलाषाने नियमवानो प्रयास जणावा मांडेछे. आ नवा तत्त्वने लीधे अभिलाषाओनो विरोध कोईक नियमित स्वरूप पकडे छे, अमुक आवेगने ताबे न थवुं एवा यत्ननुं रूप धारण करे छे अने विचारणानो व्यापार प्रवृत्त थाय छे. एमां इच्छा नवा अने अति दुष्कर रूपे दर्शन देछे, केमके कांईक करवाने बदले कार्यने बंध राखी बधा विचारोनी तुलना करवा सारुं थोभवानो यत्न करे छे.

अमुक समये कार्य न करवानो यत्न करवारूपी जे इच्छाव्यापार ते सविशेषे दुष्कर छे. एम थवामां, वेगमात्रने आधीन थई करेला कार्यनो परिणाम रखेने खोटो आवे एवी भावनारूपे एक नवाज हेतुनुं अस्तित्व रहेलुं होय छे. आवो हेतु बहु धीमे धीमे बंधाय छे; घणाक अनुभव, कार्यना अस्पष्ट पण अव्यवहित परिणामोनुं लक्षपूर्वक अवलोकन, तुलना, भावाधिगम, इत्यादि थते थते तेवा हेतुओना विचार उपर अवाय छे. इच्छाथीज कार्यप्रतिरोध करवानुं आ प्रकारे घणुं कठिन छे तेम ए प्रतिरोध जाते पण घणो दुष्कर छे. अभिलाषानो वेग जे समये कार्यप्रति दोरे छे ते समये कार्य नथी करवुं एवो संयम राखवामां अवधाननी घणी सारी शक्ति होवी जोईए, वेग जेनो पराभव करवा मथे छे एवी कोई एक भावना स्पष्ट रीते दृढताथी मनमां टकाववी जोईए. आम करवा माटे मस्तिष्कमांनां जे उत्तम स्थानो छे ते सबल थयलां होवां जोईए, सविशेषे जे उद्ग्राहक स्थानोने इच्छायुक्त अवधान साथे संबंध छे ते सबल थयलां होवां जोईए. आम होवाथीज जुवान माणसोने आवा यत्न करवा अतिदुःसाध्य छे; ने वळी तेमनामां तो स्वाभाविक रीतेज कार्यसाधक वेग घणो प्रबल होय छे.

आ प्रकारे कार्यनो प्रतिरोध साधीने इच्छा, अभिलाषाजन्य वेगमात्रना स्वरूप अने आकर्षण उपर लक्ष करे छे. एटले के जे जे पदार्थो इष्ट मानवामां आव्या होय ते सर्व उपर इच्छासहित अवधान लगाडवामां आवे छे, के ते सर्वनी योग्य तुलना थई परस्परथी मुकाबलो करतां कोनी योग्यता उत्तमोत्तम छे ए निर्णय उपर आवता सुधी ते बधा दृष्टि आगळ रह्यां करे छे. जो कांईक करवुं के न करवुं एटलोज प्रश्न होय तो मन लाभालाभनी गणना करी जुए छे, अने तेमने सरखावी जुए छे. अथवा जो बे विरुद्ध वातनो निर्णय करवानो होय तो,

मन, ते बेना फळनी तुलना करीने एक मार्गे आवे छे. आनुंज नाम विचार अथवा विचारणा.

फळ माटेनी आवी विचारणा भेगी साधन माटेनी पण विचारणा चाले छेज. आ स्थाने इच्छा साथे बुद्धिनुं सहकारित्व घणी स्पष्ट रीते जणाय छे. आ फळ सारुं के पेलुं सारुं ए निर्णयमां यद्यपि तुलना अने साधर्म्यवैधर्म्यपरीक्षा आवे छे तथापि एकंदरे ए निर्णय अभिलाषा अने वृत्तिने आधीन रहे छे. विचारणाना व्यापारमां माणसनी अभिलाषाओनो परिपूर्ण विकास विद्यमान रहे छे. परन्तु साधनोनी विचारणामां तो बधो ए व्यापार आनुभविक व्यावहारिक ज्ञान अने निश्चय करवानी शक्ति तेना उपर रहे छे. शानाथी इष्ट फळ सारामां सारी रीते थशे ए नक्की करवामां, ते ते साधनथी जुदे जुदे समये ते ते कार्य केवे प्रकारे थयलां छे ते वात लक्षमां आणवी जोईए. तेमज तेनां ते साधन पुनः केटले अंशे सफल थशे ते जाणवुं जोईए. आटलुं थवा माटे बुद्धिशक्ति घणी सारी रीते विकसित थयली होवी जोईए.

विचारणाना छेवटना क्रममां निश्चय अथवा बे त्रणमांनी एक वातनी पसंदगी थई आवे छे. सुख के दुःख, लाभ के अलाभ, ए सर्वनी बराबर तुलना करी जोया पछी अमुक कार्यमां अमुकनुं प्राधान्य छे ए वात जणाई आवे छे. एम थया पछी मन जाणी जोईने अमुक करवुं के न करवुं एवा निश्चय उपर आवे छे. बाळकने मालुम पडे छे के बागमां दोडी जवाथी लाभ करतां हानि वधारे छे, एटले न जवानोज निश्चय करी, तेने अनुसरे छे. आम करवामां जे थयुं ते करतां विरुद्ध करावाने जे वेग विद्यमान हतो तेने खसेडी नाख्यो छे ए तो स्पष्टज छे. प्रतिस्पर्धी फळना संबंधमां पण तेमनुं तेमज जाणवुं. बाळकने जणाय छे के घरमां रहेवानो आनंद वधारे सारो छे एटले ते तेमज करे छे. एज प्रकारे बे

साधनोमांना एकने मन पसंद करे छे त्यां पण कीयाथी इष्ट फळ सारी रीते सिद्ध थशे तेनो विचार करीने निश्चय थाय छे.

एटलुं कहेवुं जोईए के आ प्रकारे जे निश्चय थाय छे ते अत्र कह्या प्रमाणे क्रमवार अने परिपूर्णरूपे क्वचित्ज थाय छे. कांईक करवानुं व-ळण, अने विरोधना क्लेशमांथी मुक्त थवानी अभिलाषा, ए उभयथी करीने, साधन तेम फळ उभये परत्वेनो नीकाल, सहज रीतेज थई आवे छे. बाल्यवयमां सविशेषे एमज थाय छे.

पसंदगी विषे जे अत्र कह्युं तेमांथी एटलुं स्पष्ट जणाय छे के एवा निश्चयने वैधर्म्यग्रह साथे घणो संबंध छे. बुद्धिना विषयमां वैधर्म्यग्रहनो जे उपयोग छे तेज उपयोग पसंदगी अथवा निश्चयनो इच्छाना विषयमां छे. जेम सरखाववानी उभये वात विद्यमान होईने प्रसिद्ध, के एक विद्यमान ने बीजी अविद्यमान होईने निगूढ, वैधर्म्यग्रह थाय छे तेम इच्छामां पण प्रसिद्ध तेम निगूढ उभय प्रकारे निश्चय थाय छे. पोताने पोषण आपवा योग्य पदार्थोनुंज ग्रहण करवामां जनावरो आवी पसंदगीनुं कांईक निगूढ तत्त्व दर्शावे छे; साधन अने फळनी तुळना करी प्रसिद्ध निश्चय करवानुं कार्य तो इच्छाविकासना उत्तरक्रममांज जणाय छे.

४. शान्त अने सबल इच्छा:—आवेगनुं संयमन करवुं, कार्यने अटकावी राखवुं, अने वचमां विचारणा करी निश्चय करवो, ए शान्त, सुप्रकाश, अने सुव्यवस्थित इच्छानुं लक्षण छे. एवे रूपे इच्छानो विकास थवो ए घणो धीमे धीमे थाय छे, अने छेक ना'नी वयथीज आरंभाय छे. ना'ना बाळकने कार्य कर्या विना चालतुं नथी. विरुद्ध आवेगोने प्रसंगे जे क्लेश थाय छे, तेना भारथी, अने क्लेशमात्रना सद्भावथी, बाळक थाकी जाय छे, अने विरुद्ध बळोने कबजे राखी व्यवस्था करवा-ने ते असमर्थ बनी रहे छे. वळी तुलना करी निश्चय करवा जेटली तेने बुद्धि पण होती नथी.

इच्छानी आवा उत्तम प्रकारनी शक्तिना बंधारणमां घणुं अगत्यनुं

तत्त्व, वृत्तिओनुं अने सविशेषे दुःखावह वृत्तिओनुं स्मरण राखवानी अमुक शक्ति होवी जोईए ए छे. आगळ कह्युं तेम बाळकोने सुखावह के दुःखावहनी सारी स्मृति होती नथी; अने कार्य करवा प्रति घणुं दृढ वळण होवाथी अमुक कार्यथी विदूर राखनार कारणोने बदले तेना प्रति आकर्षनारां कारणो उपर वधारे लक्ष जाय छे. आ विषये बाळकोनी प्रकृतिमां घणुं तारतम्य जणाय छे, कोई साहसिक होय छे, कोई सावधान होय छे, कोई शान्त होय छे. सावधानतानुं बीज होय त्यां व्यावहारिक बुद्धिनुं पण कांईक तत्त्व होवुं जोईए. सारा निश्चय कर-नारने आवेगनो संयम आवडवो जोईए एटलुंज नहीं, पण तोल करी सरखावट करवानी पण शक्ति जोईए. आम जोतां समजायछे के सबल चंचलता एज दृढ इच्छानुं एक कारण नथी. सुव्यवस्थित इच्छाबलनो आधार चंचलता, अभिलाष अने आवेगनुं बळ, अने तेनी साथेज सावधानता, एटला उपर रहे छे. एक पासा साहसपर्यवसायी चंचलता अने आलस्यपर्यवसायी सावधानता ते बेनी वचमां सबल इच्छानुं निदान छे.

विचारणायुक्त उच्च इच्छाप्रकारनुं एक बीजुं तत्त्व अर्थात् आग्रह तेना विषे कहेवानुं रही गयुं छे. इष्टार्थने साधे तेवा कार्यमां मंड्या रहेवानो स्पष्ट संकल्प करवो ते आग्रह. अमुक कार्य विषे निश्चय करवा करतां, अने ते कार्य साधवानां अमुक साधनने सारा रूपे मानवा करतां, आमां कांईक विशेष रहेलो छे. जे एवा निश्चय तुरतज कार्यरूपे परिणमे छे, तेमां आग्रहनो पूर्ण विकास होतो नथी. तुरतज जे कार्य थनारुं नथी तेनी साथे आग्रहने संबंध छे. बाळक कांईक भांगी नाखे छे, अने एम निश्चय करे छे के माताने ते वात कहेवी ए उचित छे, अने ज्यारे तेने मळे छे त्यारे

कही पण दे छे. संपूर्ण इच्छासहित कार्यने अनुषंगे आग्रह उत्पन्न थाय छे; तात्कालिक प्रसंगोने लईने तेनुं फळ तात्कालिक कार्य रूपे जणातुं नथी. अमुक प्रसंगो उत्पन्न थशे एवी आशा, अने ते प्रसंगो ज्यारे उद्भवशे त्यारे अमुक प्रकारे कराशे एवो निश्चय, ए तेमां रहेलां होय छे. इच्छारूप चेतनव्यापारनुं आज परिपूर्ण स्वरूप छे, अने एनेज इच्छाव्यापाररूपे सामान्य रीते सर्व ओळखेछे. इच्छा करवी एनो मुख्यार्थ एज प्रसिद्ध छे के अमुक करवानो आग्रहपूर्वक निश्चय करवो.

लांबा समय सुधी चालनारां कार्य अथवा कार्यश्रेणिमां आग्रहनुं तत्त्व विद्यमान होय छे एटलुं तो आ उपरथी स्पष्ट जणाशेज. केमके एवा बधा प्रसंगोमां प्रत्येक कार्य ज्यारे करवानुं आवे त्यारेज निश्चय करवा बेसवुं ए चालतुं नथी; पण आखाए कार्यना अंगभूत कार्य मात्र प्रथमथी नक्की थयलां होय छे.

साधारण कार्यमात्रमां पण आग्रहनुं बीज होय छे केमके तेमां पण घणाक व्यापारनी श्रेणि बंधायली होय छे. आगळना उदाहरण उपरज लक्ष करीए तो बाळक बहार जई रमवानुंज पसंद करे छे तो तेणे पोतानो निश्चय पार पाडवा सुधी ते आग्रह मनमां राखवोज जोईए. परंतु जेमांथी स्पष्ट फळनो संभव होय एवां लांबां कार्यमांज आग्रहनुं स्पष्ट दर्शन थई शके छे. अमुक फळ उपर दृष्टि राखीने आरंभेलां कार्यमात्रमां, तरतां शीखवामां, अमुक ईनाम मेळववा तैयारी करवामां, मन निरंतर एक उद्देश उपर रम्यां करे छे अने तेने अनुसारे घणो समय चाले तेवो क्रम सिद्ध करतुं चाले छे.

इच्छाबल, अत्र, आग्रहनां बळ अने दृढता रूपे दर्शन दे छे. इच्छाबलवाळुं बाळक विघ्न छतां पण विरमतुं नथी, सफलतामां विलंब थवाने

लीधे प्रयत्न मंद पाडतुं नथी. बीजा फळथी के बीजांना कहेवाथी के दृष्टान्तथी ते पाछुं फरतुं नथी. आग्रहमां आवी दृढता राखवानो जे गुण तेनो आधार अमुक फळने सतत दृष्टि आगळ राखवानी अने तेनाथी उन्मार्गे दोरनार विचारमात्रने विदूर राखवानी शक्ति उपर छे. अर्थात् एमां रसनो अमुक निर्वाह, अने अमुक दिशाए अवधाननी चोट सर्वदा रहेवी जोईए. बुद्धिना विषयमां एकाग्रतानी जे आवश्यकता छे तेज इच्छाना विषयमां आग्रहनी छे.

आग्रहना विधिरूपनुं (अमुक करवुं) आपणे अवलोकन कर्युं तेज प्रकारे तेना निषेधरूपनुं (अमुक न करवुं) पण अवलोकन करीए. अमुक नथी करवुं एवो आग्रह राखवामां अमुक प्रसंगनी पूर्वभावना, अमुक कार्य प्रति ते प्रसंगे आकर्षण, अने मननी ते आकर्षण अथवा आवेगने दबाववानी तैयारी, एटली बातोनो समास थाय छे. अत्र यद्यपि आग्रहने निश्चयानुसार प्रवर्ततो बताव्यो छे तथापि जुदां जुदां कार्यनी तुलना विना पण तेनुं घणी वार दर्शन थाय छे. एनी योग्य सामग्रीमां भविष्यमां सिद्ध थई शके एवा अमुक कार्यने सूचवती इच्छा एज मुख्य छे. भविष्य प्रसंगोनी भावना उपर आग्रहनो आधार रहे छे एटले तेनी पूर्वभावना थयां करे छे त्यां सुधी ते चाले छे. आम होवाथी घणाक आग्रह केवळ क्षणिक पण होय छे. वळी योग्य प्रसंगना अभावे आग्रह उत्पन्न थई आवे छे एटले ते दृढ अने सबळ होय त्यारे पण सर्वथा कार्यरूपे फलित थशे एवो कांई निश्चय नथी. भविष्यमां ए आग्रह काम आवशे एनो आधार बधा भविष्य प्रसंगोनी भावना करी शकाया उपर छे. घणाक सारा आग्रहो व्यावहारिक प्रसंगोनी समक्ष आवतां भांगी पडे छे तेनो खुलासो आटलाथी थई शकशे. एम पण कहेवुं जोईए के कार्यनी पूर्वभावना करी दूरदर्शित्व वापरवानी शक्तिमां वधारो थाय छे तेम आग्रह पण वधारे वधारे वातो विषे थतो चाले छे. आपणां नित्यकर्म पण अमुक पद्धति अनुसार जेटलां सुव्यवस्थित थाय छे तेना प्रमाणमां तेमनी पूर्वे अमुक आग्रह होय छेज.

इच्छानी दृढता:—आग्रहनो आ गुण नीतिपरत्वे घणो अगत्यनो छे. दृढ इच्छा अथवा स्थिर इच्छानो ए विशेषगुण छे. तुलना करी निश्चय उपर आववा करतां ए भिन्न छे, केमके घणाक माणसो जे तुलना

करी निश्चय करवामां भेद होय छे ते निश्चय थया पछी तेने तजता नथी. आ गुण हद पार वधी जाय त्यारे ते दुराग्रहनुं रूप धारण करे छे; अने प्रयत्ननी निष्फलता, नवा अनुभवथी समजण लेवी, के बीजा-नी शीखामण सांभळवी, ते बधी वात उपर दुर्लक्ष करे छे; दूरना भाविनी स्पष्ट भावना करवाने अशक्त होवाथी, दूरना फळने प्राप्त करवाने आवश्यक एवी दृढतावाळो होतो नथी. बीजी पासा तेवां माणसने कार्य करवानो जे सबल आवेग होय छे, विचार करवा माटे कार्यने अटकाव-वानी तेमनामां जे अरुचि होय छे, तेथी बीजां तेमने समजावी अमुक मार्गे दोरे ते वात ते सहन करतां नथी. आम होवाथी तेमनामां दुराग्रहनो एवो कोई आभास दीठामां आवे छे के आपणे बाल्यस्वभावनी ते प्रकृतिज छे एम मानीए छीए. पण आ वातपरत्वे पण बाळकोमां घणो फेरफार होय छे.

६. स्वसंयमः व्यापारसंचयः—स्वसंयम शब्दनो अर्थ एवो छे के विकसित इच्छा अमुक समये स्वविरुद्ध एवा वेगमात्रनो पराभव करी तेमने योग्य मर्यादामां राखी शके एवी शक्ति. जेने आपणे कार्य-प्रतिरोध ए नाम आपता आव्या तेज तेनुं मुख्य तत्त्व होय एम जणाय छे. परन्तु प्रतिरोधमात्र संयमज छे एम जाणवुं नहीं. प्रतिरोधने संयमनुं नाम मळता पूर्वे, प्रतिरोधे कार्यसाधक (अमुक न करवुं एवुं) रूप धारण करवुं जोईए, इच्छासहित अवधानरूपे उत्तमोत्तम इच्छा-व्यापार करवो जोईए, अने बुद्धियुक्त एवा कोई भावनास्थ हेतुना उपर लक्ष करी तात्कालिक आवेगनो पराभव करवो जोईए. आम जोतां विकासक्रम साथे आ शब्दने संबंध जणाय छे. संयम एटले प्रथम थयलाने पछीथी थताथी वश करवुं. बाळकथी स्वाभाविक रीते ए थई शकतो नथी, पण घणा यत्नथी थाय छे. वळी ए शब्दना अर्थमां

नीतिमत्तानो पण अर्थ समाय छे केमके उत्तम फळनी अपेक्षाथी कनिष्ठ फळनी अपेक्षाने पराभव पमाडवो ए पण ए शब्दनो एक अर्थ छे.

स्वसंयमनो प्रथम प्रकार, कार्यसाधक व्यापार अथवा कार्यप्रेरक आवेगनो संयम करवो ते छे. वेगानुसारे कोई पण व्यापार करवानी जे प्रवणता तेने अटकाववी एटलुं आम कहेवामां तात्पर्य छे. तात्कालिक आनंदने अर्थे व्यापार करवानी अभिलाषानो प्रतिरोध करवानी शक्तिनोज आमां समास छे एम नथी पण चांचल्यजन्य व्यापार-प्रवणता, संवाहक तंतुना प्रोत्साहनथी थतो व्यापारयोग अने व्यापा-रोनुं संमिश्रण करवानी इच्छा, ते सर्वनो प्रतिरोध करवानी शक्तिनो पण एमां समास छे.

यद्यपि संयम, व्यापारप्रेरक आवेगना प्रतिरोधरूपे निषेधमय प्रवृत्तिरूप छे तथापि तेमां विधिरूप प्रवृत्तिनो पण कांईक अंश रहे छे. ज्यारे कार्य पोते अथवा तेमनां परिणाम प्रतिकूळ होय त्यारे कार्य करवानी जे शक्ति अने तत्परता ते आ प्रवृत्तिनुं रूप छे. कार्य-साधक अवयवो उपर पूर्ण संयम होवानुं फळज ए छे के ज्यारे अमुक प्रसंगवशात् कार्यप्रतिरोधज इष्ट होय त्यारे तेमने तुरत उपयोगमां लई शकाय.

इच्छाविकासनुं जे टुंकुं वर्णन आपणे करी गया तेमांथी एटलुं तो नीकळे छे के संयम पण क्रमे क्रमे वृद्धि पामे छे. साक्षात् जणाती कोई वृत्तिने, अन्य वृत्तिनी आशामात्रथीज, अटकावी परास्त करवामां आवे ते संयमनुं सादामां सादुं रूप छे. बाळक ज्यां पोतानुं आलस्य ऊराडी नाखी, मास्तर मारे नहीं तेवी इच्छाथी, पोतानो पाठ बराबर भणी जवा बेसे छे, त्यां ते स्वसंयमने वश रहीनेज वर्ते छे. ज्यां साक्षात् उप-भोगनो भावि उपभोगने अर्थे त्याग करवामां आवे छे, जेमके

बाळक आज खावानी बरफीने काले खावा माटे राखी मूके छे, त्यारे स्वसंयमज विद्यमान छे.

ज्यारे बुद्धि कांईक विकास पामे छे, अने बाळक अनामयत्व, ज्ञान, प्रतिष्ठा, एवां नित्य फळोनो विचार करी शके छे, त्यारे संयमनो उक्त करतां वधारे चढतो प्रकार दीठामां आवे छे. विशिष्ट अने क्षणिक फळने आवां नित्य फळ करतां गौण मानवामां आवे ए पण संयमनोज प्रकार छे. बाळक पोताना अनामयत्वने सर्वोपरि गणी बीजी बधी वातने तेनाथी गौण गणे छे त्यां ते संयमज वापरे छे. आ प्रकारेज ते प्रमितता शीखे छे.

व्यक्तिना पोताना लाभ साथे जेटले अंशे संयमने संबंध छे तेटले अंशे जोतां स्वसंयमनो उत्तमोत्तम प्रकार दीर्घदर्शितामां जणाय छे. एटले के जीवितमां जे जे कर्तव्य अने लाभ छे ते बधानो एकत्रित विचार करी एवी व्यवस्था करवामां आवे छे के तेथी व्यक्तिने घणामां घणो सुखोदय प्राप्त थाय. ज्ञान, प्रतिष्ठा, अनामयत्वादि जे नित्य फळो ते पण कोई एक अन्य फळनी दृष्टिथी तदधीन थवानां. आवुं अधीनत्व साधवामां पण निकृष्ट बळने उत्कृष्ट बळथी वश करवारूपे संयमनी प्रवृत्ति जणाय छे.

छेवट व्यक्तिनुं सुख, केटलेक अंशे, समष्टिना सुखने अधीन थाय छे. समष्टिनां लाभ अथवा सुख, जेमां व्यष्टिनां लाभसुखादिनो पण समास छेज, ते उपर दृष्टि राखीने व्यवहार करवानुं धोरण स्वसुखना धोरण करतां वधारे विशाल छे, अने ए धोरणथी विरुद्ध पण छे. बाळकोने पोतानाज सुखनी इच्छा होय छे, पारकानी तेमने दरकार पण होती नथी. स्वार्थनी प्रेरणाने दबाववी, बीजाने शुं गमशे ने शुं तेमनी आशाने तृप्त करशे एवो विचार राखवो, एमां सविशेषे कठिन एवा स्वसंयमनी जरूर छे. अन्यसाधारण कार्यो, जेवां के ज्ञानप्राप्ति, कला-विज्ञान इत्यादि, तेमां प्रवृत्त थवाथी, माणस स्वसुखना विचार करतां वधारे उन्नत स्थाने पहोंचे छे अने सर्वसाधारण एवा कोई सुखनी प्राप्ति माटे प्रयत्नवान् थाय छे एटले, स्वार्थवृत्तिनी प्रेरणाओ उपर अंकुश रहे छे. पण जे हेतुओ सारामां सारी रीते स्वार्थवृत्तिने दबावी वश राखे छे ते तो स्वकर्तव्य, परमार्थबुद्धि, अने सामान्यतः जेने आत्मभाव कहीए छीए, ते छे. स्वार्थ अने स्वकर्तव्य, अहंभाव अने सर्वभाव, एमना विरोधमांथीज स्वसंयमनी कळाना रहस्योपदेश अधिगत थाय छे.

अन्यनां सुख साधवानी प्रवृत्तिनो प्रेरक जे परमार्थरूप हेतु रहे छे तेने, अने स्वार्थ साधवानी प्रवृत्तिनो प्रेरक जे स्वार्थरूप हेतु छे तेने, शो संबंध छे तेनो निश्चय करवो ए चेतनशास्त्रमां घणी कठिन वात थई पडेली छे. ए तो कहेवामां आवी गयलुं ज छे के अन्यनुं दुःख निवारण करवामां के तेना सुखनी वृद्धि करवामां, आपणे एक रीते, तेना स्वार्थने आपणो स्वार्थ करी लईए छीए. आवा कार्यमां जे विशिष्टता छे ते सामान्य व्यवहारमां स्वार्थ अने परमार्थनां कृत्यो वच्चे जे तफावत मनाय छे तेमां स्पष्ट जणाई आवे छे; अने ते विषे नीतिशास्त्रमां घणो विवाद छे. यद्यपि अनुकम्पामय प्रकृतिवाळा पुरुषने अन्यनुं सुख साधतां पोताने सुख थाय छे तथापि परमार्थ कृत्यमां आवाज फळनी भावना प्रेरकरूपे रहे छे एम सिद्ध थतुं नथी. आम होवाथी केटलाके आ प्रकारनां कार्योने इच्छासहित कार्योना वर्गमांथी दूर करेलां छे. दा. बेनज आ कार्योने दृढविचारसंस्कारजन्य सहज कार्यना वर्गमां गणे छे.

स्वसयमना आ व्यापार ज्यारे बुद्धिपूर्वक थाय छे त्यारे स्वनियुक्त आदेशने वश रहेवानी पद्धतिनुं रूप ग्रहे छे. माणस पोते पोतानी जात उपर "प्रमित था" "सत्य बोल" एवा आदेश काढे छे. आम होवाथी, बाळक बाह्य आदेशोने अधीन रहेवानी टेवमांथी धीमे धीमे, पोताना आंतरादेशोने वश रहेतां, अने बुद्धिनी आज्ञाने अनुसरतां शीखे छे.

(२) वृत्तिसंयमः—निकृष्ट हेतु अथवा आवेगने दबावी परास्त करवामां, अने सामान्यतः व्यापारने वश राखी नियमवामां, इच्छा-विकासनुं आ प्रकारे दर्शन थाय छे. परंतु स्वसंयमनो आ एकज प्रकार नथी. कार्यना प्रदेशनी बहारनां पण बीजां बळ उपर इच्छाने वशीकार राखवो पडे छे. आवां बहारनां बळमां प्रथमे वृत्ति, ऊर्मि, अथवा आ-वेग छे. आपणे जोई आव्या तेम वृत्ति व्यापाररूपे परिणाम पामे छे. आम होवाथी वृत्तिनो वशीकार वेगना वशीकार सरखो छे. आवेगना बळने (जेमके क्रोध इत्यादिनाने) वश करवा माटे बाळके प्रथमे बाह्यव्यापार जेवाके रोवुं, हाथ लांबा टुंका करवा इत्यादि व्यापार तेनो प्रतिरोध करवो जोईए. वेगजन्य व्यापारनो प्रतिरोध करवामां थाय छे तेम अत्र पण उद्वाहक केन्द्रो उपर केटलीक असर थई आवे छे. वळी वृत्ति अने तेनो शरीर उपर आविर्भाव अर्थात् अनुभाव तेनो अति निकट संबंध छे एटले बाह्यव्यापार (अनुभाव) ना प्रतिरोधथी अवश्य आंतरवृत्तिनी पण कांईक शान्ति थवा मांडशे. शोकनां लक्ष-णोंने शमाववानो यत्न करवाथी शोक पोते कांईक शान्त थाय छे. केवळ वृत्तिनिरोधरूप एवो आपणां शास्त्रमां प्रसिद्ध जे योग ते सिद्ध करवामां, आवाज हेतुथी, आसनप्राणायामादि बाह्यसाधनो योजेलां छे.

बाह्यव्यापारना प्रतिरोधथी अमुक प्रसंगे केवी असर थशे तेनो आधार, केटलेक भागे, वृत्तिना बळ उपर रहे छे. कोईक ऊर्मि जेवी के क्रोधनी, ते जो बहुज सबल अने प्रगाढ होय, तो तेना अनुभावने दबाववाथी ते पोते दबाशे नहीं. मन अंदरने अंदर तेना उपर लीन रही तेने तृप्त करवाना विचारमां निमग्न रहेशे. वळी बाह्यव्यापारना प्रतिरोधना फळमां माणसनी प्रकृतिने अनुसारे पण फेर पडशे. प्रकृति

कोई पण वृत्तिने सहजे भुली न जाय तेवी होय तो, अनुभावनो प्रति-रोध थया पछी पण, वृत्ति मनमां बळ्यांज जाय अने मनने सुखे रहेवा दे नहीं. आम होवाथी वृत्तिनो निरोध करवामां कोई अन्य साधनोनी पण अपेक्षा जणाय छे. ते विषे कहीशुं.

कार्यसाधक वेगने वश करवा करतां वृत्तिने वश करवी ए वधारे कठिन काम छे. बाळकनी वृत्तिओ प्रोद्धत अने स्वकाले सर्वकश होयछे, अने इच्छानुं काम थई आवता भभुकाने अटकाववो एटलामांज आवी रहेछे. कार्यसाधक वेगने वश राखवानी शक्तिनो अमुक अंशपर्यंत अनुभव थया पछीज स्वसंयमना प्रथम प्रयत्नोनो आरंभ थाय छे. आ अनुभवथी कार्यप्रतिरोधनी शक्ति आवेछे. आ उपरांत वळी ए पण लक्षमां राखवुं के वृत्तिने वश राखवाना जे हेतु तेनो विकास घणो मोडो थाय छे. वृत्तिदर्शन करावावामां बाळको बहुज स्पष्ट रीतिवाळां होय छे ए तो लोकप्रसिद्ध वात छे. असंयत आवेगनुं दर्शन करा-ववाथी पोताना सुख उपर शी असर थशे तेनुं भान, तथा पोतानी अन्य जनो माटे कांईक मानबुद्धि, एटलुं आववाने माटे आवश्यक जे अनुभव अने ज्ञान ते प्राप्त थया विना बाळकने आ प्रकारनो स्वसंयम आवडी शकतो नथी.

अत्र पण लक्षमां राखवा जेवुं छे के इच्छासहित संयम ते यद्यपि निषेधरूप व्यापार छे तथापि तेमां विधिरूप व्यापारनुं तत्त्व रहेलुं छे. वृत्तिओ उपर इच्छानो वशीकार थयो छे एटलामांज इष्ट ऊर्मिओ ऊपजावी लेवानी शक्ति अने तदनुकूल प्रकृति बंधाई छे एवुं समजाय छे. आनुं उदाहरण शिष्टाचारमां सारी रीते मळी आवेछे; शिष्टाचारमां बुद्धिपूर्वक आर्द्रवृत्ति राखवी पडेछे. ए करतां पण वधारे स्पष्ट रीते एनुं उदाहरण धार्मिक अने नीतिमय वृत्तिनी वृद्धि करवाना स्वीकृत कार्यमां मळी आवेछे.

(१) **विचारसंयमः**—पोताने साधवाना फळ करतां गौण राखवाना हेतुनी, जेनी साथे इच्छानें विग्रह करवो पडेछे ते त्रीजी वात बुद्धिबलनी अर्थात् विचारबलनी छे. विचारबलनो अर्थ ए छे के प्रत्यक्ष के भावना ज्यारे ज्यारे थई आवेछे त्यारे अवधाननो विक्षेप करे छे, अने मनमां रहे छे त्यां सुधी साहचर्य नियमानुसार तत्संबद्ध अन्य विचारोनुं पण अनुकर्षण करी लावे छे. आ बळने अटकाववामां इच्छानो जे प्रतिरोधव्यापार ते, आगळ बताव्या प्रमाणे, कोईक विधिरूप कार्य साथे संबंध राखे छे. संपूर्ण स्पष्टता सिद्ध थाय ते अर्थे अमुक प्रत्यक्ष अथवा भावनाने मननी दृष्टि आगळ स्थिर करी टकावी राखवां पडे छे, तेमज मनने ते समये जेनी अपेक्षा होय एवी भावनाओने ताणी लाववामां साहाय्य करवी पडे छे.

आपणे जोई आव्या तेम बुद्धिविकास अने बुद्धिनी कवायतना क्रमे क्रममां, आ बधां बळो उपर इच्छानो वशीकार अनेक प्रकारे रहेलो होय छे. ज्ञानप्राप्तिने आरंभेज अमुक बाह्यपदार्थ उपर मनने स्थिर अवधान राखवुं पडे छे, अने बीजां विक्षेपकारणमात्र उपरथी लक्ष खेंची राखवुं जोईए छीए. अवलोकननो पण अर्थ एज छे के अमुक पदार्थ के वात उपर मनने अमुक वखत सुधी टकावी राखवुं, अने मननी जे आम तेम भटकवानी प्रकृति तेने तेटली वार अटकाववी. वळी भणवामां अथवा कोईक वात गोखीने मोढे करवामां, अभ्यासविषय उपर पूर्ण अवधान आपवा रूपे मनोव्यापार विद्यमानज होय छे. एमां पण चित्त स्थिर रहे तेटला माटे बधा बाह्यसंस्कारोथी चित्तनी व्यावृत्ति थवी जोईए एटलुंज नहीं पण जे शब्दो के विचारोनो अभ्यास के स्मरणप्रयास चालतो होय तेनी साथेना साहचर्यवाळा बीजा शब्दो के विचारो पण मनमां आववा न देवा जोईए.

आ प्रकारे सूचनना बळ उपर संयम राखवानो प्रकार कोई वातनुं स्मरण करवाना प्रयत्नमां जणाय छे. छेवट प्रतिभा अथवा कांईक जेमां रचवानुं होय तेवी कल्पना तेना व्यापारमां, भावाधिगम तथा परामर्शव्यापारमां, पण प्रकृत विषयबाह्य एवुं जे कांई सूचित थाय तेनाथी मनने व्यावृत्त राखवानी आवी संयमशक्ति वधारे स्पष्ट रीते जणाय छे. शान्त अने सुव्यवस्थित विचारव्यापारमां पण एनुं एज जणाय छेः अन्य वातोथी मनने दूर राखवुं जोईए, अर्थात् सामान्य रीते जेने भावाधिगम कहेवाय छे ते थवो जोइये; विचारश्रेणिओ उपर अमुक वशीकार होवो जोईए. एटले के चालती श्रेणिने वचमांथी तोडी नाखी जे अपेक्षित होय तेटलाज विचारने राखी अनुपयोगीने दूर करवानी शक्ति होवी जोईए.

७. विचार, वृत्ति, अने वेगना संयमनो संबंधः— आ त्रण प्रकारना संयमनो आपणे आवो विषयविभाग बताव्यो, पण एटलुं तो स्पष्ट जणाय एवुंज छे के ए त्रणेने परस्पर साथे घणो निकट संबंध छे. प्रथमे एमज छे के वृत्ति, विचार अने व्यापार ए केटलेक भागे परस्पर व्यावृत्त मनोदशा छे; अने एम छे एटले ए तो स्पष्टज छे के इच्छाना बळथी एमांना एकनी पण बहु सबलता थतां बीजांनो प्रतिरोध थवानो. आ वात स्पष्ट करवा माटे जे आटले सुधी कहेवामां आव्युं छे तेमां बहु थोडुंज ऊमेरवुं पडे एम छे.

वृत्तिनी असरोनेज जोईए. सर्व प्रकारना प्रबल ऊर्मिविक्षोभमात्रथी मन क्षुब्ध थई जाय छे, अवधाननो यंत्र अव्यवस्थित बनी जाय छे, अने बुद्धियुक्त विचारक्रमने स्थाने ऊर्मिप्रयुक्त विचारक्रम प्रवर्ते छे, एटले बुद्धिव्यापारनो पूर्ण वशीकार राखवो होय तो वृत्तिने वश राखवानी शक्ति तेना पहेलां आवेली होवीज जोईए. अने वळी ऊर्मि स्नायुवेगनो

रोध करेछे माटे स्वतंत्र व्यापार थई शकवा पूर्वे वृत्तिनिरोध थयो होवोज जोइये. एमज बाह्यव्यापार अने आंतरविचार ए बे स्थिति परस्परविरुद्ध छे माटे बुद्धिव्यापार उपर पूर्ण वशीकार होवा पूर्वे व्यापारनिरोध होवो जोईए. आगळ बताव्युं छे तेम बाह्य वस्तु उपर लागेला पण अवधाननी स्थितिज एवी छे के शरीर सारी पेठे स्थिर रहे, अर्थात् व्यापारनो प्रतिरोध थाय; अने मनमां चालता विचार उपर अवधान अंदरथीज चोंटेछे ते उपरथी पण बुद्धिव्यापारमां थता आ व्यापारप्रतिरोधनी वधारे खातरी थाय छे.*

हवे आपणे वृत्ति, विचार, व्यापार एमना संयम वच्चे, एमना विरोधथी नहीं पण आनुकूल्यथी, केवो संबंध छे ते जोईए. आ विचार करवामां आपणे बे वात उपर लक्ष करवानुं छेः (१) बुद्धिव्यापार उपर वृत्तिनो आधार; (२) अने बुद्धि अने वृत्ति उभयना उपर व्यापारनो आधार.

(१) आगळ कहेवामां आव्युं छे तेम ऊर्मिमात्रनो उद्भव कोई पण प्रकारना बुद्धिव्यापारने अंगेज थाय छे. मनमां कोई वृत्ति विद्यमान होवी तेनो आधार बुद्धिव्यापार उपरज छे. उदाहरण. बाळकने थयलो क्रोध त्यां सुधीज रहे छे के ज्यां सुधी तेने निराश करनार कारण उपर तेनो विचार वळगेलो रहे छे. आम छे माटेज विचारनो संयम एज वृत्तिप्रतिरोधनुं साधन छे. हवणांज बतावामां आव्युं हतुं तेम वृत्तिने अनुषंगे थता बाह्यव्यापारनो प्रतिरोध करवाथी वृत्तिनो परिपूर्ण प्रतिरोध थतो नथी. वृत्तिनो यथार्थ अने परिपूर्ण प्रतिरोध करवानो एक मार्ग एज छे के एने अंगे थता बुद्धिव्यापारनो प्रतिरोध करवो, वृत्तिने ऊपजावनार कारण उपरथी मनने इच्छाव्यापारे करीने वाळी लेवुं अने कोई बीजीज, प्रकृत साथे संबंध विनानी, वात उपर लगाडवुं. बाळक, थयलो क्रोध घणो विपुल अने प्रगाढ न होय तो, इच्छाव्यापार विना पण, सहज रीते अवधानने अन्यत्र दोरवाथी तेने मटाडी शके छे. पण ज्यारे गाढ अने विपुल होय त्यारे तो तेनी पोतानी इच्छाना बळथी अन्य विचार उपर ते जाय नहीं तो वृत्ति निवृत्त थती नथी.

(२) वळी कार्यमां पण वृत्ति अने विचार उभयनो अवश्य उपयोग थाय छे. साक्षात् अथवा भावनारूप पण विद्यमान एवी कोईक ऊर्मिज कार्यप्रेरक वेगरूपे काम आवे छे. त्यारे वेगनो संयम करवा सारुं वृत्तिनो संयम करवो जोईए, अनें वृत्तिने ऊपजावनार विचारनो पण, तेटले अंशे, संयम थवो जोईये. कोईनें अपकार करवानो वेग, जे क्रोधवृत्तिमांथी ते उद्भवे छे तेनो संयम थाय त्यारेज अटके छे, अने क्रोधवृत्तिनो पूर्ण संयम जे हानिथी ए वृत्ति उद्भवी होय ते हानिना विचारने मनमांथी काढी नाखवामां आवे त्यारेज थाय छे. आम होवाथीज नीतिमार्गमात्रमां वृद्धिंगत अभिलाषा अनें विचारोनो संयम करवानी आवश्यकता मानेली छे. विचारणाना व्यापारमां विचार उपर अने तदनुषंगे थती वृत्तिओ उपर संयम राखवानी शक्ति होवीज जोईए. कार्यने अटकावी राखी अमुक मार्गना लाभालाभनी शक्तिथी तुलना करी जोवी, ते माटे इच्छाए अवधानने सारी रीते वश राखवुं जोईए.

* दा. फेरीअर एम कहेछे के तंतुगत शक्तिनुं विचारमां जे आंतराविशरण थाय छे अने व्यापारमां जे बाह्यविशरण थाय छे तेने व्यस्त प्रमाणनो संबंध छे. एकना वधवाथी बीजुं घटे छे.

व्यापार, वृत्ति, विचार एमना संयमनो परस्पर संबंध विचारवामां आपणे घणुं करीने संयमना प्रतिरोधक अर्थात् निषेधमय रूप उपर वधारे लक्ष आप्युं छे. परंतु संयमना विधिरूपे पण आ बधा संयमोने संबंध रहे छे ज. जेटले अंशे वृत्ति, विचार,

व्यापार एमने परस्पर संबंध छे तेटले अंशे गमे ते एकनो इच्छाए साधेलो संयम बीजांना उपर पण अमुक संयम ऊपजावे छेज. उदाहरण. वृत्तिमां भावना रहेछे, त्यारे इच्छापूर्वक वृत्तिने केळववानो आधार घणे भागे तदनुकूल विचार अने भाव उपर अवधानने इच्छापूर्वक टकाववा उपरज रहेछे. आथी उलटी रीते बुद्धिव्यापारने उत्तेजित करवामां इच्छानो प्रयत्न, ज्ञान प्राप्त करवा योग्य छे एवी वात उपर इच्छापूर्वक विचार वाळवाथी अनुकूल वृत्तिरूप हेतुने ऊपजाववामां मदद थतां, वधारे सबल थाय छे. क्वचित् एम पण बने छे, के अमुक वृत्तिनो अनुभाव धारण करवाथी ते वृत्तिना उद्भवने उपकार थाय छे. छेवट वृत्ति अने अभिलाषा ऊपजावे तेवा पदार्थ के भाव उपर स्थिर एकाग्रता राखवाथीज दीर्घ काळ चालतो अविरत स्नायुव्यापार सिद्ध थई शके छे.

संयमनी मर्यादाः— इच्छायुक्त स्वसंयमने अमुक मर्यादा छे. एवुं पण वेगनुं बळ थाय छे के जेने कोई पण हेतु अटकाववा समर्थ थतो नथी. जेनुं गळुं तृषाथी सुकाई गयुं छे एवा माणसने मोढे पाणीनो प्यालो लगाड्या पछी गमे तेवा भयथी पण ते पाणी पीधा विना रहेवानो नहीं. एमज आवेगनुं पण कोइ एक एवुं बळ छे के जेने इच्छानुं गमे तेवुं बळ अटकाववा समर्थ थतुं नथी. एमज विचारनां जे घणां सबल वळणो छे (जेवां के अयुतसिद्ध साहचर्य, आवश्यक सत्य इत्यादि) ते पण इच्छाथी नियंत्रित थतां नथी. संयमनुं अमुक माणसमां केटलुं बळ छे तेनुं प्रमाण जे बळने ते परास्त करी शके ते उपरथी नीकळे छे. एमज संयमबल केटला अंशनुं छे तेनो निर्णय केटलो प्रयत्न थाय छे ते उपरथी थई शके छे. एक पासा तेज इच्छा बलवती कहेवाय के जे महान् अने सतत यत्न चलावी शके; तेम बीजी पासा प्रयत्नाभावथी पण इच्छाना बळनुं माप थाय छे. आ बीजा प्रकारनो अर्थ ए छे के थोडा यत्नथी घणुं साधी शकवानी शक्ति आवे छे. इच्छामां ए प्रकारथी जे आवो लाभ थाय छे ते पुनःपुनरनुभव अने ते उपरथी बंधायला शीलने लीधे संयमव्यापार सरल थयलो तेनुं फळ छे.

आ ठेकाणे एम स्वीकारी लीधुं छे के जेनी तुलना करवामां आवी छे ते प्रसंगोमां जे बळनो वशीकार इच्छाथी साधवानो छे ते सर्वत्र समानज छे; पण सर्वदा एम होतुं नथी. बे माणसनी इच्छाशक्ति सरखी होय, पण एकना आवेग बीजाना करतां वधारे प्रबल होय तो, जेना आवेग वधारे प्रबल छे तेनी वृत्तिओनो वशीकार सारो थवानो नहीं. परमवैराग्यवाळो सर्वत्यागी तेज सारो थाय छे के जेनी इच्छा अतिबलवती होवा उपरांत जेना आवेग पण निर्बल होय छे. आ उपरथी ए वात पण सहजे समजाय छे के स्वसंयमनो अभाव, वश करवाना बळनी अधिकताथी के वश करनार इच्छबलनी न्यूनताथीज थई आवे छे.

स्वसंयमने अनुषंगे चालतो शारीरव्यापार.—स्वसंयममात्रमां मस्तिष्कनां केटलांक उच्च केन्द्रोनो, अने सविशेषे इच्छासहित अवधानने उपकारक जे उद्वाहक केन्द्रो तेनो, व्यापार थाय छे. आ केन्द्रोने उच्च कहेवामां ए तात्पर्य छे के सविशेष अवधाननी जेमां अपेक्षा रहे छे तेवां उच्चकार्यमात्र करवामां तेमनी जरूर पडेछे, तेमज तेमनो विकास पण सर्वथी छेलो थाय छे. तेमनी रचना अति सूक्ष्म अने मृदु होय छे तेथी ते स्थिर रही शकती नथी, तेमनो सहजे विक्षेप थई जाय छे. अतिशय काम करवाथी मस्तिष्क शक्ति क्षीण पडतां, अथवा दारु, अफीण, इत्यादि मादक पदार्थनो उपयोग करतां, अथवा मानसिक व्याधिना पूर्वरूपनुं सूचन थतां, स्वसंयमनी शक्तिमां जे क्षीणता जणाय छे तेमांथी उक्त वातनुं सारुं समर्थन थाय छे.

स्वसंयममां सर्वत्र तेना तेज शरीरव्यापार थाय छे के केम ए वात विवादित छे. व्यापार अने वृत्तिनो संयम करवामां उच्च उद्वाहक केन्द्रोथी तंतुबल अधःस्थ उद्वाहक केन्द्रो तरफ ऊतरे छे, अने त्यांथी, ऊर्मि अथवा व्यापारने उपकारक जे तंतुबल तेनो आरंभ थाय छे. पण विचारना संयम परत्वे पण आनी आज सामग्री पूर्ण छे के नहीं ते वात विवादित छे. दा. बेन कहे छे के पूर्ण छे. बंट वगेरे एथी उलटो विचार धरावे छे.

९. शील अने वर्तनः—इच्छाना अपर प्रकाररूप जे बाह्यव्यापार ते उपर शीलना नियमनी जे असर छे ते आपणे जोई आव्या छीए; उत्तम प्रकारना वर्तनमां पण शीलनी असर तेवीने तेवीज छे. विचारणा अने संयमना जे व्यापारो हवणां वर्णवी बताव्या ते शीलने आधीन थाय

छे. आपणे तेमना विषे नित्य वात करीए छीए तेमां पण ए वात स्पष्ट जणाय छे; आपणे विचार अथवा विचारणानुं शील, स्वसंयमनुं शील, एम बोलीए छीए.

शील शब्दना अर्थथी जे वात उपर मुख्य लक्ष आपवानो उद्देश छे ते ए छे के कोई पण कार्य अभ्यासथी वधारे परिपूर्ण थाय छे. अभ्यासथी पूर्णता आवे छे. जेम प्रथमे प्रयोगरूप, अनिश्चित, अने यत्नसाध्य शरीरव्यापार, अभ्यासथी सिद्ध, स्थिर, अने सरल थाय छे तेज रीते, वेग अने विचारणानो संयम पण याथार्थ्य, स्थिरता, अने सरलता प्राप्त करे छे.

खोटां परिणामना भयथी बाळकनुं कार्य प्रथम पे'लुं प्रतिरुद्ध थाय छे त्यारे ते शंकामां पडे छे. विरुद्ध विरुद्ध वेगनी तेना मनमां ताणाताण थाय छे, अने शुं करवुं तेनी तेने समजण पडती नथी. पण आवो क्लेश दूर करवानो यत्न करी बुद्धि अनुसारे वर्तवानो निश्चय करवाथी ते घणुं अगत्यनुं पगलुं भरे छे. ज्यारे पुनः एवो विरोध अने क्लेश थई आवे छे त्यारे विचार अने निश्चय वधारे सरलताथी बनी आवे छे. वेगनुं सर्वकश बळ घणे भागे संयत थयुं होय छे; एटले आवी शक्तिना प्रत्येक नवा अनुभवथी प्रतिरोध, विचार, अने निश्चय, ओछां कठिन थतां जाय छे. छेवटे विचारणानुं शील बंधाई जाय छे. वेग अने हलका प्रकारना हेतुनां आकर्षणो स्पष्ट आयास विना अटकावी शकाय छे. थोडीक वार कार्यनो प्रतिरोध करी विचारणा अने बुद्धिपूर्वक निश्चयनो व्यापार करवो, ए सर्व केटलेक अंशे स्वाभाविक थई जाय छे. अविचारित कार्य हवे थतुंज नथी. आवा शीलनो परिपूर्ण विकास थतां क्षुद्रवृत्ति अने इंद्रियाकर्षणना प्रलोभनमांथी, बुद्धि अने विचारे जेने मुक्त करी परम स्वातंत्र्ये पहोचाड्यो छे तेवो मनुष्य उद्भवे छे.

१०. **नीतिमत्ता**:–शीलना नियमथी वर्तनपरत्वे आ करतां बीजी पण असरो थाय छे. विचारणा पछी छेवटनो जे निश्चय ते सारो अने बुद्धियुक्त होय तो फरी फरी करवो पडतो नथी. एक वखत तेवा प्रसंगो उपस्थित थतां विचारणापूर्वक स्वसंयम ऊपजी आवतां, पछीथी तेवा सर्व प्रसंगोमां विचारणा विना पण स्वसंयम ऊपजी आवशे. निशाळे न जवुं, अथवा वर्गमां पाठ चालतो होय त्यारे पण कोई वार्तानी चोपडी वाचवामां मझा मानवी, एवा अयोग्य कार्यमां प्रवृत्त थवुं के नहीं ते विषे विचार करी एम न करवुं एवा निश्चय उपर जे बाळक एक वार आव्युं ते पुनः तेवा प्रलोभनथी एकदमज पाछुं हठशे.

आ उपरथी एम जणाय छे के स्वसंयमनो व्यापार कोई नवे प्रकारे शीलरूपता धारण करे छे. अमुक अमुक हेतुओ नियामक बलरूपे मनमां स्थिर चोटता जाय छे, अने एथी निकृष्ट बलमात्र मनमांथी भ्रष्ट थतां जायछे. एवा उच्च हेतुवाळां वर्तनमात्रना अभ्यासथी वर्तन ते दिशाएज नियत थतुं जाय छे. वात्सल्य, मान, इत्यादि वृत्तिओ हवे अमुक वृत्तिरूपेज विकसे छे एटलुंज नहीं पण स्थिर प्रकृति (आज्ञाकारित्व, हलकी वातथी दूर रहेवुं इत्यादि) रूपे परिणाम पामे छे. अथवा एनी ए वात बीजी रीते कहीए तो वर्तन हवे पछीथी अमुक नियमने वश वर्तेछे. आवुं जे फळ तेनेज नीतिमत्ता, नीतिशीलता कहे छे. वेगने, कोई उत्तम हेतुथी वश राखवानो आ अभ्यास जेम जेम वधारे थतो जाय छे, तेम तेम ते वधारे सरल अने यंत्रवत् थतो जाय छे. वेग पोतानुं बळ बतावी शकतोज नथी, नियामक हेतुज तुरत पोतानो अधिकार चलावी कार्य साधे छे. उच्च हेतुओना साम्राज्यथी वेगनो संयम परिपूर्ण रीते थई गयलो होय छे, अने ते हेतुओना निरंतर जाग्रत् रहेवाथी कोई पण नीच अभिलाषा प्रवेश पामी शकती नथी.

नीतिमत्ताना आटला वर्णनमांथी एटलुं स्पष्ट थाय छे के साहचर्यना बळ उपर शील-मात्रनो आधार छे. सत्यशीलता जेमां सत्यज कहेवानी निश्चित प्रकृति पडेली होय छे तेनो अर्थ ए छे के एवी प्रकृति अथवा एवो हेतु तेनुं स्मरण, प्रसंग आवतां (कोईने कांई कहेवानो वगेरे) तुरतज थई आवे छे. नीतिमत्तानी पूर्णता एटला-मांज रहेली छे के हलका प्रकारनो कोई वेग उच्च हेतुना स्मरणने अटकावे ते पूर्वे तो हेतुनुं भान थई जवुं जोईए.

११. **चारित्र एटले शुं?**—बुद्धिना के नीतिमत्ताना अमुक गुणो परत्वे माणस माणस वच्चेना तफावतने बतावबा चारित्र ए शब्द साधारण रीते वपराय छे. विशिष्ट बुद्धि, खास रस, इत्यादि अमुक अमुकना चारित्रनां अंग छे एम आपणे वारंवार कहीए छीए. परंतु मनना विधिरूप अंगने उद्देशवानो कांईक हेतु ए शब्दना प्रयोगमां सर्वदा रहेलो जणाय छे. एकत्र चेतन(मन)व्यापारनुं अंत्य अने सर्वोपरि परिणाम इच्छा-व्यापार अने वर्तन ए होवाथी, चारित्र ए शब्दना अर्थमां कार्यसाधक अर्थात् विधिरूप गुणोनो समास थाय छे; तेमां मुख्यरूपे नियामक बळनो अने इच्छाबलना अंशनो तथा गौणरूपे अर्थात् तेमने उपकारक होय तेटले अंशे, ऊर्मि अने बुद्धिना विशेषोनो समास थाय छे.

प्रत्येक व्यक्तिने पोतपोतानुं चारित्र होय छे. केटलेक अंशे आनुं स्वरूप व्यक्तिनी मानसिक तेम शारीरिक प्रकृतिथी नियत थाय छे. हठीलाई जेवो एकाद गुण, साधारण रीते, घणी ना'नी वयथी जणाई आवे छे, अने वास्तविक रीते ते व्यक्तिनी नैसर्गिक प्रकृति साथे संबंध राखे छे. आ उपरांत, बाह्यसंसर्गोना प्रकारमात्रथी, कुटुंबनी असरोथी, शालाना व्यवहारथी, धंधानी व्यग्रताथी, अनेक कारणोथी, चारित्रने अनेक संस्कार लागे छे, अने नवा नवा रंग तेने बेसता जाय छे. आ प्रकारे स्वाभाविक तारतम्यो कांईक आगळ पडे छे, कांईक पाछां हठे छे, कांईक गूढ थई जाय छे.

नीतिमय चारित्र:—आवा साधारण अर्थ उपरांत चारित्र शब्द-मां नीतिमत्तानो पण कांईक भाग ऊमेरायलो छे. व्यक्तिव्यक्तिनी विकार पामती एटले के नित्य न रहे तेवी प्रकृतिओनो तेना अर्थथी आ-क्षेप थतो नथी, पण सर्व जनमां सामान्य रीते जे साधारण नीतिगुणो केळववानो शिक्षणनो उद्देश छे तेनो समास करवामां आवे छे. बीजी रीते कहीए तो चारित्र शब्दनो अर्थ "सारुं चारित्र" एवो थई गयो छे–सारा चारित्रनो अर्थ ए छे के मननी स्थिति नीतिप्रवण अने सद्गुण-प्राय छे. इच्छा अने तत्संबंधे वृत्ति अने विचारनी एवी दशा छे के नीतिस्वरूपथी ते व्यभिचार पामतां नथी. आम जोतां जणाय छे के सारो अथवा नीतिमान् एवो प्रत्येक माणस बे प्रकारे चारित्रवान् छे. एना मनने जेनाथी विशिष्ट रंग चढेलोछे तेवी हेतु अने वृत्ति इत्या-दिनी कोई सविशेषता एनामां छे; आ तेनुं पोतानुं चारित्र छे. आ उपरांत एनामां केटलीक सद्गुणप्रवणता एवी रहेली छे के तेथी एनुं नीतिमय चारित्र बंधाय छे अने एने बीजा नीतिमान् पुरुषोना वर्गमां मूका शके छे. नीतिमय चारित्र पोताना विचार उपरांत प्रसंग अने शिक्षणनी असरोथी एकंदरे घडातुं चाले छे.*

नीतिमय चारित्रनुं जे सामान्य स्वरूप उपलब्ध थाय छे ते उपरज दृष्टि राखीए तो आपणे तुरत जोई शकीशुं के एवा चारित्रनो सार,

* चारित्रमां व्यक्तिनी प्रकृतिनो अने तेणे शिक्षणादिथी प्राप्त करेला अंशोनो भेद बहु मान्य करवा जेवो नथी. नीतिमय चारित्रमांज जुदी जुदी व्यक्तिना सविशेष गुणोनो समास थई शके छे. एकंदरे जोतां चारित्रने नीतिमय चारित्र ए अर्थवाळुं मानवानी आवश्यकता नथी, एटले चारित्र ए शब्दमांज सारा खोटा सर्वनो समास थतां पोत पोतानी प्रकृतिथी थता फेरफारोनो पण समास थशेज. गमे ते करवा वखते अमुक सिद्धान्त उपर दृष्टि जई ते कार्य थाय एज चारित्रनुं सामान्य स्वरूप जाणवुं.

प्राप्त करेलां स्वोपयोगी तेम परोपयोगी वळणो जेने आपणे सद्गुण कहीए छीए ते होवामां रहेलो छे. आवां स्वोपयोगी एटले प्रमितता दूरदर्शिता आदि अने परोपयोगी एटले न्याय परमार्थवृत्ति आदि वळणोना बळ उपरथी चारित्र्यबलनो निश्चय थई शके छे. ज्यां कोई क्षुद्र वेग उत्तम हेतुथी विरुद्ध थई पड्यो होय तेवा सादा अने पुनःपुनः थई आवता प्रसंगोमां नीतिमत्तानुं माप संयमनी पूर्णता उपरथी अने योग्य कार्य करवानी तत्परता उपरथी थई शके छे. जेम क्षुद्र अने अयोग्य हेतुने आधीन थवानी मननी ओछी प्रवणता तेम चारित्र वधारे बलवान्. प्रमित रीते रहेनार माणस वधारे करवा कचित्ज ललचाय. पूर्ण रीते सत्यनिष्ठ मनुष्य असत्य भाषण करवानी वातने सांभळी पण न शके. कोई अमुक माणसनुं नीतिमय चारित्र केवुं अने केवडुं छे तेनो विचार सद्गुणी वळणोना बळ अने स्थिरत्व उपरथी, तेमनो आवेग तथा अयोग्य वेग उपर केटलो वशीकार छे ते उपरथी, करी शकाय छे. स्थिरत्वमां आग्रहनो अंश, आगळ बताव्या प्रमाणे, समाय छे ए तो स्पष्टज छे. चारित्र्यवाळो तेज माणस कहेवाय के जे बुद्धियुक्त, न्याययुक्त, अने सद्गुणयुक्त वातने आग्रहथी वळगी रहे.

सद्गुणी प्रकृतिनो आवो सादे सादो उपयोग व्यवहारमां सर्वत्र सर्वदा थई शके एम बनतुं नथी. एवा प्रसंगो ऊपजी आवे छे के जेमां दीर्घदृष्टि अथवा न्यायथी जे उचित होय ते सर्वदा स्पष्ट होतुं नथी. उदाहरण. अभ्यासीने पोताने एवो निश्चय करवाना प्रसंगो घणा आवे छे के जेमां भारे इनाम खोवुं के अनामयत्व खोवुं एनो तेने विचार थई पडे छे. त्यारे एटलुं जणाय छे के बुद्धियुक्त अने सद्गुणी हेतुओ सर्वोपरि छे अने तेथी बधा सादे सादा प्रसंगोमां तदनुसार वर्तन थाय छे, एवो नीतिमय चारित्रनो अर्थ छे खरो तथापि घणा गुंचवायला

अने शंका भरेला प्रसंगोमां विचारणाथी निश्चय करवानी शक्तिनो पण ए शब्दोना अर्थमां समास छे. विचारणा अने निश्चयरूप जे इच्छाधर्म ते आमां पण छूटतो नथी. इच्छानी ए उत्तमोत्तम व्यापृति छे. आ उपरथी एम स्पष्ट नीकळे छे के सारा चारित्रनी भावनामां, योग्य मार्ग स्पष्ट होय त्यारे ते लेवानी तत्परता अने प्रथम दृष्टिए योग्य मार्ग स्पष्ट न होय त्यारे पण विचारणापूर्वक निश्चय उपर आववा जेटली सावधान प्रकृति, ए बेनो समास थाय छे.

१२. उत्तम प्रकारना इच्छाव्यापारनुं स्वरूपः— केटलाकनुं मानवुं एवुं छे के जे इच्छाव्यापारोनुं स्वसंयमना पेटामां आपणे वर्णन कर्युं ते, प्रथम वयमां जे वृत्तिप्रेरित कार्य थाय छे तेना करतां स्वरूपथीज भिन्न छे. आ उत्तरवयभावी विकासमांज इच्छा स्वस्वरूपे दर्शन दे छे; रागद्वेषनी पण उपर रही शकनार, अने उक्त जे प्राथमिक व्यापार तेना मार्गे मार्ग करनार, बलरूपे ते जणाय छे. कार्यना आ नवा नियामक तत्त्वने अनियतेच्छा, अनियति, अथवा स्वस्वरूप नियतात्मता कहे छे. परन्तु इच्छाव्यापारना आटले सुधी आपणे करेला पृथक्करणमां एवो स्वीकार करवामां आव्यो छे के कार्यनुं स्वरूप तो आदिथी अंत लगी एकाकारज छे. प्राथमिक अने उत्तरकालीन जे भेद मान्यो ते तो कार्यनी वधती जती गुंफितता अने भावनाधीनताने लीधे थई आवे छे. आ स्वीकृत पक्षने वधारे स्पष्ट करी, जे बनावो विशिष्ट प्रकारे अभिलाषा अने वृत्तिथी स्वतंत्र एवी कोई इच्छाना बळने अधीन मनाय छे तेना स्वरूपना पर्यालोचनामांथी ए पक्षनुं याथार्थ्य सुघटित छे एम बतावबुं एज हवे बाकी छे. इच्छाप्रयत्न अने विचारणायुक्त निश्चय एवा बे अति निकट इच्छाव्यापार तेज आ विचारमां प्रधान छे.

इच्छानो प्रयत्नः— आपणे आगळ जोयुं तेम इच्छामात्रमां पोताना बळ अथवा वैपुल्यना प्रमाणमां प्रयत्नप्रवणता होय छेज परंतु ज्यारे साध्य कार्य कठिन होय, कोई विघ्न अथवा अंतराय विद्यमान होय, त्यारे प्रयत्न भानपूर्वक थाय छे. एवे प्रसंगे इच्छा जो विघ्ननो पराभव करे तेवी समर्थ होय छे तो प्रयत्ननो अनुभव थाय छे.

ए अनुभव जुदे जुदे प्रकारे थाय छे. घणो साधारण अनुभव स्नायुव्यापारना प्रयत्ननो छे. जे कार्य अभिलषित होय ते तत्कार्यनियुक्त अवयवथी वधारे

दुःसाध्य अने तेथी निर्वेद ऊपजावे तेवुं होय, त्यारे एवो प्रयत्न अनुभवाय छे. भारे वजन ऊपाडवामां जे ताण पडे छे, थाकी गया छतां चालवामां जे कष्ट लागे छे, ए आदि स्नायुप्रयत्ननां उदाहरण छे.

स्नायुप्रयत्न पछी मानसिक प्रयत्न अथवा अवधानप्रयत्न आवे छे. अत्र पण कोई अभिलाषाने अधीन थई, साध्यकार्यानियुक्त अवयवना स्वाभाविक सामर्थ्य करतां अधिक एवा बळनो प्रयोग करवो पडे, अने तेथी ताण लागवानी प्रतिकूळ वृत्ति अनुभवाय एज तत्त्व छे. आ प्रयत्न पण विधिनिषेध उभयरूप छे, कोई वात उपर मनने लगाडवुं, अने कोई वात मनमांथी दूर करवा ते वातथी मनने खसेडवुं. परंतु कोई वात उपरथी मनने खसेडवानो अर्थ तेने बीजी वात उपर लगाडवुं एटलोज थाय छे. तेथी एम नीकळे छे के मनोव्यापारना आ बे प्रकार घणा निकट संबंधवाळा छे.

आवा बधा प्रसंगोमां जे कार्य थाय तेना प्रतिकूळ अने निर्वेदप्राय स्वरूपथीज वेगनो प्रतिरोध थाय छे. छतां पण अभिलाषाना बळथी कार्य चाले छे, केमके, आगळ बताव्या प्रमाणे, विघ्ननी अने निर्वेदनी वृद्धि थवानी साथे अभिलाषा पण बलवती थाय छे. प्रतिरोधक बळना प्रमाणमां वेग अथवा प्रोत्साहन बलवान् होय छे त्यारे, कार्य आरंभता पूर्वे ते करवाना दुःखनी भावना थती नथी, अने तेथी कार्य-प्रतिरोध पण थतो नथी. आवे प्रसंगे कार्यमांथीज उत्पन्न थती प्रयत्ननी वृत्ति अनुभवाय छे, पण यथार्थस्वरूपे इच्छायुक्त प्रयत्न नथी.

इच्छायुक्त प्रयत्न तो त्यारे थाय छे के ज्यारे दुःखकारक विघ्ननी स्पष्ट भावना थाय छे, अने मन आग्रहपूर्वक तेना सामुं थाय छे. थाकी गयलो मजूर महेनत कर्या करे छे तेमां पण ते इच्छायुक्त प्रयत्न करे छे. अत्र पण कोई वातने करवाने संबंधे प्रयत्ननुं भान थतुं नथी, पण प्रथमे जे भावना थाय छे तेमां ते भान थाय छे. वास्तविक रीते जोतां ए प्रयत्न विचारणायुक्त निश्चयनो प्रयत्न छे. नीतिप्रयत्नोमां ते सारी रीते जणाय छे, जेम के सर्वने अप्रिय लागता कोई छोकरा उपर कोई छोकरो, बीजानी हासिनी दरकार विना पण, स्नेह राखे छे तेमां, इत्यादि.

इच्छाप्रयत्नना आवा विधिरूप उपरांत तेनुं बीजुं निषेधरूप पण छे. विघ्न छते कार्यमां मंड्या रहेवुं ए तेनो प्रकार नथी, पण प्रलोभक एवा कोई पदार्थफलादिथी विदूर रही कार्यने अटकाववुं ए तेनो प्रकार छे. कार्य करता पूर्वे विचार करी वेगनुं बळ छतां ते न करवुं एवा जे निश्चय थाय छे ते आ प्रकारनां उदाहरण छे.

हेतुना बळनी न्यूनता साथे इच्छाना प्रयत्नने संबंध होय एम आ बधी चर्चा उपरथी, लागे छे. प्रथमथी व्याप्त जे वेग तेथी भिन्न एवा कोई बळने ऊठाववाने अंगे प्रयत्ननी वृत्ति उद्भवे छे. प्रयत्न करवामां इच्छा पोतानुं बळ जे निर्बलपक्ष छे तेने आपतो जणाय छे; अने निर्बल वेगने सबल करे छे अथवा निर्बल द्वेषने प्रबल बनावे छे.

कार्यमात्र तत्काल उद्भवेला रागद्वेषरूप अभिलाषनुं फळ छे एवा सामान्य नियमना अपवाद जेवा आ इच्छाव्यापारनो खुलासो कांईक आ प्रकारनो छे. तत्काले ज्यां प्रोत्साहननी न्यूनता होय त्यां इच्छानो जे आ प्रयत्न जणाय छे ते, साध्य कार्यनी भावना उपर कोई आगले समये अवधानने लगाडेलुं तेमांथी उद्भवे छे. आवा कार्यने विचारित कार्य कहीए तो ते यथार्थ छे. कार्य करावे तेवी भावना उपर अथवा कार्य अटकावे तेवी भावना उपर अवधाननी एकाग्रता थईने आ परिणाम आवे छे. सर्वथा भावना वधारे स्पष्ट, दृढ, अने तेजित थाय छे, जेथी हेतुना बळमां वृद्धि थाय छे. नीतिप्रयत्न आ प्रकारे बुद्धिप्रयत्नरूपे परिणमे छे; एटले के अतिविक्षेप ऊपजावे तेवी स्थितिमां पण अवधानने एकाग्र राखवाना इच्छायुक्त व्यापारथी जे ताण अनुभवाय छे तेज नीतिप्रयत्न छे एम समजाय छे.

एटलुं कहेवुं बाकी रहे छे के अवधाननो जे आ व्यापार ते पण पोताना विशिष्ट हेतुथीज थई आवे छे. ए हेतुने विचारहेतु कहीए तो चाले. आ हेतु घणो गुंफित अथवा भावनामय छे, केमके एना पे'लां घणा विशाल अनुभव अने अनेक तुलनाव्यापार थया होवा जोईए. ए हेतुरूप अभिलाष विधिरूप करतां निषेधरूप छे, अर्थात् एक पासा ऊतावळे काम करवाथी थती हानिथी दूर रहेवानी तेम बीजी पासा अकारणे ते काम मूकी देई हानि वेठवानी भीतिथी दूर रहेवानी वृत्तिरूप ते अभिलाष छे. आ हेतुमां घणा उच्च प्रकारनी बुद्धि पण होवी जोईए; केमके एनो अर्थज एवो थाय छे के मने पोतानां व्यापार अने कार्य उपर वारंवार पुनरवलोकन करी जोयुं छे, अने तुलना करी करी एम निश्चय कर्यो छे के क्षणिक वेगने आधीन थवाथी माठां फळ नीपजे छे, तत्कालना लाभथी भाविनो लाभ जणातो नथी, अने भावना साथे तुलना करवामां प्रत्यक्ष बधारे लाभ लेई जाय छे. दूरना लाभ उपर के दूरनी हानि उपर अवधानने एकत्रित करवानो यत्न करवामां आपणे आपणा खरा सुखप्रति यत्नवान् छीए एम मानीए छीए. तात्कालिक फळनी भावना सबल होय अने भावी फळनी भावना निर्बल होय त्यारे पण, आपणने अस्पष्ट पण एटलुं भान होय छे के अभिलाषनुं सबल बळण आपणा सुखनी पासा छे. अने ए भाननी दिशाए अवधानने आग्रहपूर्वक दोरवुं तेनो हेतु एज छे के योग्य भावनाप्रकारथी घणामां घणो लाभ साधवो.

आ हेतु विचारणामां पोताना परमोत्कर्षथी जणाय छे. आ स्थले आपणने खबर पण होती नथी के जे सारामां सारुं छे ते तो सर्वोपरि जे अभिलाषा विद्यमान छे तेथी विदूर छे. पण अनुभवथी आपणे जाण्युं होय छे के वारंवार एमज बने छे, एटले कार्यनो प्रतिरोध, वेगने वश थई त्वराथी वर्तता जे हानि थाय तेना विचारथी थई आवे छे. आ स्थले विचारहेतु समग्र स्वरूपनी पूर्ण भावना करवाना अभिलाषरूपे जणाय छे, एटले के प्रकृत वातपरत्वे व्यक्तिना पोतानां स्वार्थ, लाभ, अने संबंध, वळण, इत्यादि जे जे होय ते सर्वनी भावना करवाना अभिलाषरूपे जणाय छे.

अनियतिः—अनियतेच्छानो प्राकृत भाव एवो छे के मनुष्यकृत नियंत्रणमात्रथी विमुक्त एवी इच्छा. गुलामने पोतानुं काम करवा हाकीने लई जवो ए नियंत्रणा, हेतुहेतुनी प्रतिस्पर्धामांथी निश्चय करी एकने अवलंबाय एवा प्रसंगनो अत्यंत असंभव जेथी सधाय तेवा एक अति उग्र हेतुना व्यापारनो प्रकार छे. ज्यारे कोई बलवत्तम प्रोत्साहन इच्छा उपर वशीकार पामे छे अने विचारणा तथा निश्चयनो संभव अत्यंत बंध पाडी दे छे, त्यारे जे कार्य थाय छे ते नियत अथवा नियंत्रित कार्य जेवुंज जणाय छे. मार्गमां चोर सामो थई तरवार खेंची गळु कापवा तैयार थाय त्यां वटेमार्गु तेने गोळीथी मारी नाखे ए मारवुं नियत कार्य जेवुं छे. गांडां थई गयलां मनुष्य तेमनी प्रकृतिथी नियत छे एम मनाय छे. त्यारे अनियतत्वनो भाव एकंदरे विचारणा करी निश्चय करवा जेटली शक्तिनी असंकुचित विद्यमानता ए अर्थ साथे संबंध राखतो जणाय छे.

अनियंत्रणाना आवा प्राकृत विचारमांथी एथी भिन्न एवो बीजो एक तत्त्वशास्त्रानुमत विचार उद्भव्यो छे; निश्चयपूर्वक करेला कार्यमां ते कार्यरूप फळ ते रागद्वेषनां भिन्न भिन्न तत्त्वना संघटनमांथी फलित थयुं होवुं जोईए एम नथी, पण एवा हेतुथी ते अनियत पण होय. आ स्थले इच्छा पोतेज पोतानी नियामक छे, स्वनियत छे, हेतुथी नियत नथी. विचारणा अने निश्चय करवामां हेतुना बळने मन नियमे छे, अने बलवत्तम अभिलाषाना अधिकारमांथी कार्यने खसेडी ले छे. आवुं जे मत ते तत्त्वशास्त्रानुसारी छे, केमके चेतना, मन, अथवा आत्माना कार्यसाधक स्वरूप विषेनो, तथा शक्ति अने कारणताना स्वरूप विषेनो, अमुक पक्ष एमां स्वीकारवामां आवेलो छे. इच्छाव्यापारना अमुक स्वरूप उपर तेनो जेटले अंशे आधार छे तेटले अंशे ते चेतनशास्त्रनो पण विभाग छे. वळी ए मतने नीतिशास्त्र साथे पण संबंध छे केमके माणसमात्रनी पोतानां कार्य माटेनी जवाबदारी ए मतने अंगेज जोडायली छे.

इच्छाप्रयत्न एवुं जेने आपणे नाम आप्युं छे ते व्यापारना अवलोकनमांथी आ मतमां रहेलो सत्यांश सहजे समजाय छे. विचारव्यापारना सहकारित्वथी हेतुनी असर कांईक अंशे विकृत थाय छे ए तो निर्विवाद छे. एकज वेग समग्र चेतनने रोकी शके ए वातनो एनाथी भंग थाय छे. वळी विचारणा अने निश्चयपूर्वक करेलां कार्यमात्र पूर्ण स्वात्मभावनाथी नीपजे छे. एटले तेवां कार्य कोई सविशेष रीते आपणां पोतानां कार्य लागे छे. ऊतावळथी वगर विचारे करेलां कार्य करतां आवां कार्यमां अकस्मात् ओछो होय छे, आत्मभावना वधारे होय छे, पण आ वात जेवी स्पष्ट छे, तेवी ए वात पण स्पष्ट छे के विचारणा अने निश्चययुक्त कार्यो पण अनियत छे एम नथी. विचारणाव्यापार पण सहेतुक छे, अने ते हेतु ने बळना प्रमाणमां ए व्यापारना बळमां फेरफार पडे छे. अने ते पण जुदां जुदां माणसोमां तेम जुदे जुदे वखते एकना एक माणसमां विचारणा व्यापार जे करी शके छे ते एटलुंज के अभिलाषारूप कोई गुप्त बळने बहार लाववुं के विकसाववुं. वेगने ए कांई ऊपजावतो नथी. तेने बहार लाववामां मात्र सहाय थाय छे. प्रत्येक प्रसंगे कार्यमात्र छेवटमां छेवट पण लागु थयला अमुक हेतुओनुंज फळ होवुं जोईए.

ज्यां इच्छाप्रयत्ननी पण साहाय्य नथी होती त्यां अमुक कार्यने ऊपजावनार हेतुमात्रनुं ग्रहण करवामां जे अडचण नडे छे ते उपरथी रागद्वेषरूप हेतुथी कार्य अनियत होई शके छे ए वादने कांईक टेको मळे छे; जो के एनो प्रबलमां प्रबल आधार तो स्वसंयमव्यापारगत जे उच्च प्रकारना इच्छाव्यापार तेमांज जणाय छे. कोई वार जे खरो हेतु होय छे ते अस्पष्ट होवाथी ग्रहण थतो नथी; कोई वार कार्यसाधक बळो आत्मचेतनाना प्रदेश बहार होय छे; एटले के अमुक मार्गे वर्तवाना शीलना परिणामरूप होय छे. आवां बधां बळणोनो सरवाळो जेने चारित्र एवुं नाम आपवामां आवे छे ते एक एवा संयोजनव्यापारनुं परिणाम छे के जेनो आरंभ व्यक्तिना जीवननी पार जई तेना पूर्वजोना जीवनमां खोळवो पडे. आ उपरांत वळी एम कहेवुं जोईए के आपणां कार्यमात्रमां एक क्षणिक अंश पण होय छे, ते ऊर्मिप्रवणताना अने कार्यतत्परताना बळना तारतम्यरूपे जणाय छे, अने तेथी कार्यने अकस्मात्नो कांईक भास लागी जाय छे. सुखनी तेनी तेज आशा ते ते समयनी आपणी ऊर्मिप्रवणताना प्रमाणमां हेतुरूपे जुदी जुदी असर करे छे. आम होवाथी आंतर अवलोकनथी एटले आपणा पोताना अंतरमां जोतां पण इच्छाव्यापारकृत कार्यने अकस्मात्नो कांईक भास लागेलो जणाय छे. अने ज्यारे

आपणे तेवा कार्यने अन्यजनोमां जोईए छीए त्यारे तो आवो अनियतत्वनो भास घणो वधारे देवाय छे. छतां पण कार्यमात्रमां थता व्यापारोनुं यथार्थ अवलोकन करवाथी एम तो स्पष्ट जणावुं जोईए के ते ते समये जे बळो व्यापृत होय तेना परिणामरूपेज कार्यमात्र नीपजे छे.*

* आ वादने नीतिशास्त्र अने तत्त्वशास्त्र साथे वधारे संबंध छे ए खरी वात छे अने चेतना अथवा आत्मा अथवा इच्छानुं जे स्वरूप मानवामां आवे ते उपर आ वादनो मुख्य आधार छे. शोपन हौअर आदि जे इच्छामात्रनेज सर्वसमर्थ चेतना माने छे तेमना मतानुसार इच्छा अनियत छे; केन्ट, हेगल, आदि पण ज्ञानने स्वतंत्र माने छे अने आनियतिवादने मान्य करे छे. दा. बेने पोताना "मेंटल एन्ड मोरल सायन्स" नामना लेखमां अनियति के नियति ए पक्षनो आखो ए विवाद साररूपे तपास्यो छे, अने तेणे एम निश्चय कर्यो छे के अनियति ए शब्दनो अर्थ विपरीत समजायाथी तेने नियतिना सामो आणी आ बधो झगडो ऊठावेलो छे. "अनियत इच्छा" ए शब्दोज अर्थशून्य छे. अनियत मनुष्य, अनियत व्यापार, अनियत छापखानुं, ए बधां वचनो स्पष्टार्थ छे; अने स्वथी अन्य एवी बाह्य नियंत्रणानो अभाव मात्र सूचवे छे. अनियत इच्छामां पण स्वान्य एवी बाह्यनियंत्रणा कहेवानो हेतु होय तो अनियति अने नियतिनी तकरारमां कांई अर्थ नथी केमके बाह्य नियंत्रणाना अभावे इच्छामात्र अनियत छे, अने पोताना आंतर हेतु आदिथी नियतज छे. आंतर के बाह्य गमे ते हेतुथी अमुक कार्य साधती इच्छाने नियत कहे छे अने ते विनानी इच्छाने अनियत कहे छे, पण बाह्य नियंत्रणाभाव एटलो अनियतनो अर्थ लेतां आ भेद मानवो नकामो छे, अने बाह्यनियंत्रणाभाव विना अनियतनो बीजो अर्थ करवाथी कोई प्रकारनी स्पष्टता थती नथी. अर्थात् हेतुथी इच्छा सर्वदा नियतज छे एम तेनुं मत छे. आपणां शास्त्रोमां प्रारब्ध पुरुषार्थनी जे तकरार छे ते पण नियति अने अनियतिनी तकरारना सरखीज छे. कार्यकारणनो जे नियम भौतिक विश्वमां प्रवर्ते छे ते चैतन्यना विश्वमां पण प्रवर्तवो जोईए, एम मानीने इच्छानुं स्वातंत्र्य मानवामां आवतुं नथी, बधुं कोई पण हेतुथी नियत छे एम कही प्रारब्ध वाद मानवामां आवे छे. पण कार्यकारणनो नियम पोतेज जेनाथी अस्तित्व पामे छे (केन्ट, हेगल, आदि पण ए नियमने स्वतंत्र स्वरूप न अर्पतां दिक् तथा कालनी पेठे तेने, चेतनानो ज्ञान पामवानो मार्ग मात्रज गणे छे) ते चेतनने ते नियम शी रीते बांधी शके? अर्थात् आपणां शास्त्रोमां एम निष्कर्ष छे के इच्छा जे चेतनानुंज प्रथम स्वरूप छे ते विचार संकल्पादिरूपे सर्वदा स्वतंत्र, अ-

इच्छानी केळवणी:— "इच्छानी केळवणी" ए शब्दोनो अर्थ एवो छे के आज्ञा, प्रोत्साहन अने शिक्षण आदि साधनथी इच्छाव्यापारनो अभ्यास थतां इच्छाने सबल करवी. आवी जे केळवणीनी असर तेनो प्रथम उद्देश सारा वर्तन माटेना हेतु पूर्ण पाडवा एवो छे. शिक्षक अने शिष्यना संबंधमांथीज हेतुबलनो आवो विस्तार सहजे थई शके एम छे. माबाप अथवा शिक्षक पारितोषिक अने दंडनी आशा बतावी कार्यनी दिशाने बदली शके छे. पण इच्छानी केळवणीमां आ करतां कांईक वधारे समाय छे. बाळकने पोताना कार्यनां परिणाम उपर विचार करवा दोरवानी कळानो पण तेमां समास थाय छे, तेमज जे निर्बळ अने क्षणिक वृत्तिओ वधारे बलवान् वळणोथी स्तब्ध थई जाय एवी होय तेमने सबल अने दृढ करवानो पण एमां समास थाय छे. आ प्रकारे, इच्छानी केळवणीमां, बुद्धिशक्तिनो, अभ्यास अने ऊर्मिओनी केळवणीनो पण समास थाय छे.

कवायतनी आवश्यकता:— शरीरना अवयवोनो विकास थवाथी बाळकनी कार्यमर्यादा विस्तार पामे छे, अने तेनी बुद्धिना खीलवाथी ते शब्दार्थ समजवा समर्थ थाय छे, एटले अधिकार, आज्ञा तेनी अथवा विशिष्ट रीते कवायत ए शब्दनो जे अर्थ छे तेनी, अपेक्षा उत्पन्न थाय छे. बाळकने चांचल्यने लीधे, कौतुकवृत्तिथी अथवा कोई पण वेगथी गमे तेवां काम करवानी जे इच्छा थाय छे तेनो प्रतिरोध करवामां न आवे तो ते पोतानी जाते घणी विषम हानि वेठशे अने बीजांने अप्रिय थई पडशे. अविचारित के अयोग्य कार्यनां स्वाभाविक

नियत छे, तेमां पुरुषप्रयत्ननो अवकाश छे; अने कार्यकारणना नियमरूप जे प्रारब्ध ते भौतिक विश्वने लागु होई तेमां प्रयत्ननो अवकाश नथी. अत्र आटलुंज सूचवतुं पूर्ण छे केमके आ विषयनुं पूर्ण विवेचन नीतिशास्त्र के तत्त्वशास्त्रमां लेई जाय एम छे

परिणामनो बाळकने साक्षात् अनुभव करवा देवो ए सर्वदा ठीक नहीं पडे. अग्नि, जल, आदि साथे एवो अनुभव करवो अत्यंत विषम थई पडशे. केटलेक स्थळे कार्य अने तेना फळनो संबंध समजवा जेटली बाळकनामां अक्कलज नहीं होय. वधारे खावानो अने शरीर बगडवानो संबंध ते समजी शकशे नहीं. अन्यप्रति तेमना वर्तनमां पण, तेमनी स्वाभाविक प्रकृति अनुसार, अन्यने पजववा अने दुःख देवानी स्वतंत्रता तेमने आपवामां आवे तो, कोई पण तेमनी पासे आवशे नहीं.

आम होवाथी कृत्रिम संयमो, जेवाके अधिकार इत्यादि, तेनी अपेक्षा छे. अमुक आज्ञाओ स्पष्ट करी आपी, ते विरुद्ध गया माटे अमुक दंड ठरावबाज जोईए. कवायतनी आवी पद्धति चारित्रना प्राथमिक विकासने माटे आवश्यक छे. आपणे जोई आव्या तेम नीतिभावना माटे कोई पण प्रकारनो बाह्य संयम जोईए—चारित्रना विकासनुं प्रथम पगथीयुं आज्ञाकारित्वथी मंडाय छे. एटलाज माटे चारित्रना बंधावामां प्रथम वात अधिकार, आज्ञा, अथवा नियमनी कोई पद्धति होवी जोईए.

कवायतनी सामग्रीः— अमुक प्रकारनां कार्यने अंगे अमुक प्रकारना अने सविशेषे प्रतिकूळ परिणामो उद्भवे छे ए वात उपर कवायतनी असरनो मुख्य आधार छे. ज्यां आवुं साहचर्य होतुं नथी त्यां जोईए तेटलुं नीतिबल होतुं नथी. कोई अबीरी माता पोताना बाळकने एक वखत कांईक कर्या माटे धमकावे छे अने मारे छे, कोईक वखत तेज करवा माटे कांई करती नथी, त्यारे बाळकनी इच्छाने, ते कार्य करवा न करवा संबंधे कोई पण बलवान् हेतु हाथ आवतो नथी. कवायतनो आरंभज अमुक प्रकारनां कार्यने लागु थतो सामान्य प्रकारनो अमुक नियम अथवा आदेश ठरावी, ते तोडवा माटे अमुक शिक्षा ठरावबाथी थाय छे. एटला माटे सारी कवायतनां तत्त्व आ प्रमाणे छे. (१) जे

नियम बांधवामां आवे ते समजी शकाय एवो स्पष्ट, अने बाळकनी बुद्धिमां तेनुं स्वरूप ऊतरी शके तेवो, जोईए. जे कार्योनो निषेध करवामां आवे ते सादा प्रकारनां कार्य होवां जोईए. जेवां के जे बीजानुं होय ते लेवुं नहीं, जूठुं कहेवुं नहीं, इत्यादि. (२) बांधेला नियमने अस्खलित रीते पाळवो जोईए के कार्य अने तेना परिणामनुं साहचर्य दृढ थाय. जेने आपणे कवायत कहीए छीए तेनां आज मुख्य तत्त्व छे. हवे आपणे शिक्षानां प्रमाण अने मर्यादा विषे विचार करीए.

शिक्षानी मर्यादाः— शिक्षामात्र दुःखरूप छे ने तेथी हेय छे. ए उपरांत वळी एनाथी शिक्षक अने शिष्य वच्चे सारो भाव बंधावाने बदले अभाव बंधाय छे. छेवट ते कार्यसाधक शक्तिने ऊपजावी उत्तेजित करवाने बदले अटकावनार, निस्तेज करनार, अने दबावी देनार छे. आटला माटे गुनो करनारना लाभने अर्थे के बीजाने दृष्टान्तरूपे समजण आपवाने अर्थे होय तोज शिक्षा करवी. वेर वाळवा माटेनी शिक्षा, क्रोध करीने बे आवेश शमाववा माटे लापटझापट मारवी अने गाळो वरसाववी एथी तो इच्छा केळवावाने बदले उलटी बूठी थई जाय छे. अमुक अयोग्य कार्यथी अटकाववानुं काम करवाने अर्थे उपयोगी ते विनानी शिक्षामात्र अनिष्ट अने अयोग्य छे. खमनारनी इच्छानी निर्बलताने लीधे ज्यां शिक्षा व्यर्थप्राय थवानो संभव छे त्यां ते करवी नकामी छे. परिणामो विषे प्रथमथी विचार बांधवानी अने स्वसंयमनी बाळकने बहु थोडी शक्ति होय छे. एटले तेमना अरूत्यार बहारनां कार्य जेवां के रोवुं इत्यादि ते माटे तेमने शिक्षा करवी ए क्रूरतामात्रज छे. वास्तविक रीते जोतां कोई प्रकारे खोटां न ठरावी शकाय एवां कार्य माटे बाळकने शिक्षा करवी ते पण निर्दयताज छे. चंचळ छोकरांमां ज्यां त्यां बाजवा जेवा नजीवा जे दोष तेने माटे शिक्षा करवी ए योग्य

नथी. बाळकने कोई कार्य माटे शिक्षा करता पूर्वे ते करवामां तेनो खोटो इरादो हतो ए वातनो निश्चय करवानी बहु काळजी राखवी. बाळकने जे काचना प्यालानी कीमत खबर नथी ते भांगी नाखवा माटे तेने सख्त सजा करवी ए अन्याय छे. हेतु पण लक्षमां लेवो जोईए. पोताना मांदा भाईने सुख थशे एम धारी बागमांथी बे फूल चुंटी लेनार बाळकने शिक्षा न करवी जोईए. एमज ज्यां स्वाभाविक रीतेज शिक्षा थनार छे त्यां कृत्रिम शिक्षानुं प्रयोजन नथी. मि. स्पेन्सर कहे छे तेम बाळकने गंदा रहेवानी शिक्षा एनी मेळेज थायछे, अने एवी टेव मटी जाय छे.

शिक्षानुं दोषसाथे प्रमाणः— शिक्षाने योग्य कीया कीया दोष छे एनो निश्चय करवो कठिन छे एटलुंज नहीं पण प्रत्येक प्रसंगे शिक्षा केवी अने केटली करवी ए निश्चय करवो पण घणो कठिन छे. आ ठेकाणे विचारवानी मुख्य वातज ए छे के जे शिक्षा करवानी छे ते प्रतिरोधक हेतुरूपे छे; जो जोईए तेटलुं बळ ऊपजे नहीं तो शिक्षा निरुपयोगी छे. निर्बल अने लाडघेलां मावाप बाळकोने सख्त शिक्षा करवा मन करतां नथी अने खरावमां खराब रीते बाळक उपर अप्रीति दर्शावे छे. केमके बाळकने कोई पण लाभ न करे तेवी क्षुद्र शिक्षा करवाथीज सर्वदा संतोष माने छे. बीजी पासा कार्यसाधक वेगने अटकाववा करतां वधारे शिक्षा करवामां आवे तो ते पण क्रूरतामात्रज गणाय. प्रत्येक प्रसंगे यथायोग्य शिक्षानो निश्चय करवा माटे बाळकनी वृत्ति अने बळणनुं ज्ञान होवुं जोईए एटलुंज नहीं, पण अमुक जे बाळकने शिक्षा करवी छे तेनी सविशेष प्रकृति अने वृत्तिनुं पण ज्ञान होवुं जोईए. आवो निश्चय करवाने घणा ज्ञाननी अपेक्षा छे, माटे सहज शिक्षाथी आरंभ करी जरूर पडे तेम तेम भारे शिक्षा करवा उपर जवुं ए वधारे सारुं छे.

अमुक दोषने कीया प्रकारनी शिक्षा योग्य थशे तेनो निश्चय करवामां पण विचारनी अपेक्षा छे. केवा प्रकारनी शिक्षा उचित छे ए विचारवुं घणुं कठिन छे. व्यक्ति व्यक्तिनी प्रकृतिअनुसार जेनी सख्ताईमां फेर पडे नहीं, अने जे धीमे धीमे वधारी शकाय, एवी कोई शिक्षानी पद्धतिनी अपेक्षा छे. आ उपरांत वळी जे प्रकारनो दोष होय ते प्रकारानुसार शिक्षा थाय ए पण जोवानुं छे. अमुक दोष अने अमुक शिक्षानुं घणी वार सारुं आनुकूल्य होय छे. रमतमां जीव घालीने जे बाळके पोतानो अभ्यास न कर्यो होय तेने रमवाना वखतमां रोकी राखी पडेली खोट पूरी करावी ए योग्य शिक्षा छे.

व्यक्ति व्यक्तिनुं ज्ञान, सारी वृत्ति, अने कळानी कोई पण कवायतनी पद्धतिनो अमल करवामां केटली अपेक्षा छे ते समजाववा माटे जेकहे वामां आव्युं छे ते पूर्ण छे. एम कहेवामां कांईज अतिशयोक्ति होवानो संभव नथी के जे जे मावाप अथवा शिक्षक कवायतनी पद्धतिथी चाले छे ते पोतपोतानीज पद्धतिथी चाले छे. अने तेनां नीतिमत्तापरत्वे परिणाम, सख्ताईना प्रमाणमां, तेमां वापरवामां आवेला नीतिविवेकना प्रमाणमां, जुदां जुदां आवे छे.

पारितोषिक, प्रोत्साहनः—कार्यसाधक शक्ति ऊपजाववाने बदले, शिक्षाथी कार्यनो प्रतिरोध थाय छे, अथवा कार्यसाधक वेगनो प्रतिरोध थाय छे, एटले शिक्षानी असर निषेधरूप छे. पोतानो पाठ तैयार न करी लाव्या माटे करेली शिक्षा यद्यपि कार्योत्तेजक जेवी छे तथापि त्यांए एनुं निषेधरूप छेक अविद्यमान नथी. बाळकने बलात्कारे उद्योगपरायण थवुं पडे छे, एटले जे कार्य ते करे छे ते मन राख्या विना अने कंटाळो खाईने करे छे. वळी, दुःखना एक प्रकाररूपे, शिक्षाना भयनी मर्यादा अति न्यून छे. आपेलुं कार्य थोडुंक पण थाय एटले हेतुनुं बळ बंध पडी जाय छे. आगळ बतावववामां आवेलुं छे तेम दुःखनो द्वेष ए, कार्यसाधक सबल हेतु छतां पण एनी मर्यादा अति संकुचित छे.

कवायतमां, प्रतिरोधकोथी वेगने अटकाववो एनोज नहीं पण विधिरूप प्रोत्साहनथी कार्यसाधक शक्तिने जाग्रत् करवी एनो पण समास थाय छे. एटले के बाळकने दुःखनो जे द्वेष छे तेनोज नहीं पण ए करतां वधारे असरवाळो तेने जे सुखनो राग छे तेनो पण कवायतमां उपयोग थाय छे. आवां कृत्रिम प्रोत्साहनो केटले सुधी योग्य अथवा इष्ट छे ते विचारवानी वात छे. पोताना कार्यना स्वाभाविक परिणाम (बीजांनो सारो अभिप्राय इत्यादि) उपरज लक्ष राखीने उद्योगी तथा सारा थवा माटे बाळके यत्नवान् थवुं ए सारामां सारी वात छे. पण बाळकोमां मांडलिक वृत्ति निर्बल होवाने लीधे कांईक कृत्रिम प्रोत्साहननी अपेक्षा थाय छे. अने शिक्षा तथा पारितोषिक, उपालंभ अने स्तुति, तेनी वच्चे कांईक संबंध पण जणाय छे.

आ स्थले पण विवेकपूर्वक, नीतिमत्ताथी, निश्चय करवानी जरूर छे के पारितोषिक आपवानो योग्य प्रसंग अने प्रकार केवो छे, अने केटलुं पारितोषिक उचित छे. जेम शिक्षामां अतिकठिनता, अने नरमाश बे अंत छे, तेम अत्र पण, अति उदार अने अति अल्प एवा पारितोषिकना बे अंत छे. योग्यताना कारणरूपे जे वात मनाय तेना उपर पारितोषिकथी थवाना लाभनो आधार छे. सापेक्ष योग्यता करतां निरपेक्ष योग्यताने पारितोषिक आपवाथी घणी थोडी असर थाय छे. ज्यां हेतुबलनी जरूर नथी त्यां ते प्रयोजाय छे. वळी ए पण कहेवुं जोईए के प्रयत्न अने उद्योग माटे पण, बुद्धिशक्तिथी जुदे जुदुं, पारितोषिक आपवाथी बाळकना विकास पामता चारित्र उपर सारी असर थाय छे. बधा बुद्धिव्यापारोमां रहेलुं जे नीतितत्त्व-इच्छाव्यापार ते, एम थवाथी, बहार तरी आवी प्रतिष्ठा पामे छे.

कवायत नरम पाडवानो समयः—विधिरूपे के निषेधरूपे पण

कवायत कांई कायमनी व्यवस्था नथी. नीतिनो सादो प्रासाद ऊभो करवा जेटली जरूरनी पालखनुं काम कवायत करे छे. जेम जेम शील दृढ थतां जाय छे तेम तेम शिक्षा घणी थोडी जोईए छीए. शरमावानी फजेती, खानगी उपालंभ, इत्यादि प्रकारो हवे शरीरकष्ट, स्वातंत्र्यहानि, इत्यादिने स्थाने वापरी शकाय छे. एक दृष्टिपात, अथवा अमुक प्रकारनो स्वर, एटलुंज सारी कवायतवाळा बाळकने खोटा कामथी अटकाववाने पूर्ण छे. एज प्रकारे जेम जेम सारां शील दृढ थतां जाय छे तेम तेम पारितोषिकनी अपेक्षा ओछी थाय छे. सारा वर्तन माटे दृश्य पारितोषिक आपवानी अपेक्षा रहेती नथी, स्तुतिसूचक शब्द अने दृष्टि एज संपूर्ण छे. आ रीतेज सारां शील–उद्योग, समय साचववानी टेव, सभ्यता, इत्यादि स्वतंत्र रीतेज स्वयंप्रतिष्ठित थई जाय छे.

विचार अने निश्चयनी शक्ति वापरवाना प्रसंग बतावीने तेमज, उत्तम प्रकारनी ऊर्मिओने सबल करीने, शिक्षक आ प्रकारना उत्कृष्ट नीतिविकासमां सहाय थई शके छे. कवायतना क्रममांज आ प्रमाणे केटलुंक तो थई शके छे. जे नियम बांधी आपवामां आवे छे तेनां कारण जाण्याविनाज प्रथमे तो आंखो मीचीने बाळक ते पाळे छे. पण नीतिनी केळवणीमां तो आवा अंध अनुकार करतां वधारे कांईक जोईए. सत्यपरायणता जेवी नीतिमय टेव बाळकने सारी रीते त्यारेज पडी कहेवाय के ज्यारे ते तेना विषे विचार करी तेनो स्वेच्छाथी स्वीकार करे. कोई कार्यने सत्यरूपे समजी, ते न करवाथी शिक्षा के करवाथी पारितोषिक प्राप्त थवानो संभव लक्षमां आण्या विनाज, बाळक ते कार्य करे छे, त्यारे वास्तविक रीते ते तेनुं पोतानुं करेलुं कार्य कहेवाय छे. शिक्षक अथवा मावापे आ परिणाम लक्षमां राखी बाळकनी वृत्तिओने एवा प्रकारनी नीतिमत्ता उपर वाळवा यत्न कर्या करवो.

अनियतेच्छानो अभ्यास:—आ उपरांत, कवायतमां काम आवे छे ते करतां बीजी वृत्तिओ जेमां हेतुरूपे काम करती होय, अने विचारणा तथा निश्चयनो व्यापार पूर्ण रीते चलावी शकाय एम होय, तेवो, अधिकारादिथी अनियंत्रित कोई कार्यप्रदेश शिक्षके बाळकने काढी आपवानी योजना करवी जोईए. बाळकना संसर्गमात्रमां कवायतज दाखल करी देवी एना जेवुं अनियतेच्छाना विकासने हानिकारक बीजुं कांई नथी. प्राकृत लोक स्वतंत्रता अथवा अनियतिनो जे अर्थ करे छे ते प्रमाणे, एटले के शुं करवुं तेनो निश्चय पोतानी मेळे करवो ए अर्थ प्रमाणे, अनियंत्रितता अर्थात् स्वतंत्रता इच्छाविकासने माटे आवश्यक छे. नियंत्रणा, समजुत, सूचना, प्रणेतृभाव, उपेक्षा, यदृच्छा, इत्यादिना प्रदेशनो विभाग बांधवामां शिक्षकने घणी सूक्ष्म विवेकबुद्धि वापरवानो प्रसंग स्पष्टज छे. रमतथी आवी अनियंत्रित चंचलता वापरवानो प्रसंग मळे छे एमांथीज तेनी नीतिपरत्वे उपयुक्तता गणाई छे.

गृह अने शालानी केळवणी:—नीतिमय चारित्र बंधावानुं मूळ स्थान तो गृह छे. इच्छा अने चारित्र जो ते स्थाने पुष्ट अने बलिष्ठ थयां नहीं तो शाला जेवा कृत्रिम संसर्गोमां तेमने बहु लाभ थतो नथी. गृहमां बाळकनुं आखुं चारित्र शिक्षकना लक्षमां रहे छे, एटलुंज नहीं पण बाळक अने मातापिता वच्चे जे प्रेम होय छे तेथी गृहशिक्षण एक विलक्षण प्रकारनुंज शिक्षण थाय छे. एक पासा माता शिक्षक न करी शके तेटली काळजी पोताना शिष्य माटे करे छे अने तेनी नीतिप्रकृति समजवाने वधारे आतुर तेम वधारे समर्थ होय छे; बीजी पासा बाळकनुं माबाप उपर आधार राखवापणुं अने तेनो तेमना उपर प्रेम तेथी तेनामां आज्ञाकारित्वनो गुण प्रथमथीज आवे छे. जो चारित्रनो पायो नाखवानी इच्छा होय तो ते आ ठेकाणेथीज नाखवो जोईए. आज्ञाकारित्व, सत्यपरायणता, न्यायबुद्धि, इत्यादि सामान्य गुणोज नहीं पण अनुकम्पा, आर्द्रता, स्वार्पण, इत्यादि सूक्ष्म गुणो पण, अर्थात् बधी नीतिप्रकृति, गृहसंसर्गोमां खीली नीकळे छे.

आनी साथे तुलना करी जोतां, शालानी केळवणीथी नीति उपर घणी ओछी असर थाय छे. शालाना शिक्षणनो अव्यवहित हेतु नीतिशिक्षण छेज नहीं, पण ज्ञान आपवुं एटलोज छे. आनुषंगिक रीते, शालानी व्यवस्थामांथी, नीतिशिक्षणने पण उपकार थाय छे, केमके आज्ञाकारित्व, व्यवस्था, उद्योग, मानबुद्धि, इत्यादि विना त्यां चालतुं नथी. वळी शिक्षक पोताना शिष्यना चारित्रने घडवाना अने तेनी इच्छाने केळववाना बधा प्रसंगोनो योग्य उपयोग करशे एम आशा राखवामां आवे छे, पण एमां जे अंतराय छे ते तो स्पष्टज छे. प्रथम अंतराय एज छे के बाळकना जीवीतव्यवहारनो एक अल्पभागज शिक्षकनी दृष्टि आगळ आवे छे. शालानो व्यवहार ए बाळकना स्वाभाविक जीवनव्यवहारमां एक कृत्रिम ऊमेरा जेवो छे, एटले पोतानी प्रकृति अने पोतानां वळणने अनुकूळ जे स्वाद होय ते प्रमाणे करवानो त्यां अवकाश मळतो नथी. वळी शिक्षकने घणाक शिष्यो उपर काम करवानुं छे एटले व्यक्ति व्यक्ति साथे जे निकट अनुकंपाभाव अने सबल प्रेम गृहशिक्षणमां प्रबल वर्तें छे ते स्वाभाविक रीतेज होई शके नहीं.

आवी जे खामीओ छे ते, शालामां, प्रतिष्ठा अथवा लोकमतना नवा कारणने लीधे, कांईक अंशे दूर थई शके छे. व्यक्तिना विकसता नीतिभावने आ कारणथी केवी सारी असर थाय छे ते आपणे जोई आव्या छीए. ए उपरांत हवे कहेवुं जोईए के सुव्यवस्थितपणुं अने शुभवर्तन ते प्रतिष्ठापात्र छे एवुं लोकमतनुं विद्यमान बळ सारा वर्तनने ऊपजाववामां बहु साहाय्य करे छे. आवुं लोकमत वर्तमान समयमां तो,

शिक्षकना अधिकारनो एक आवश्यक आश्रय छे. राज्य चलावनारने लोकमतनो जेटलो उपयोग छे तेटलोज शिक्षकने तेनो उपयोग छे. शालाना अनुभवथी बाळकना समजवामां आवे छे के हुं समग्र मंडळमांनुं एक छुं, अने शौर्यवान् के सत्यपरायण थवानी आज्ञा अमुक व्यक्ति तरफथी थई छे एम नथी, पण आखी समष्टिनी ते आज्ञा छे. आ प्रकारे मांडलिक नियम अने वर्तननना सर्वमान्य धोरण प्रमाणे, पोताना कार्यने बाळक नियमतां शीखे छे.

शिक्षक, शिष्योना मनमां पोताना उपर भक्तिभाव रहे तेटले मान भरेले छेटे रहे, अने शालानां छोकरां पोताना अधिकारने मान आपी पोते ठरावेली कवायतने, यथार्थ रीते, पोतानी गेरहाजरीमां रमतां होय त्यां पण, पाळे, एवी जे उत्कृष्ट शालानी भावना तेनाथी एक एवा प्रकारनी नीतिप्रकृति खीली ऊठे छे के जे गृहसंसर्गोथी विशिष्टरूपे बंधायली नीतिप्रकृतिने घणी उपकारक थई पडे छे. मन खरा पौरुषयुक्त स्वाश्रयवाळुं थवा लागे छे, अने नियमने आधीन रहेवुं तथा तेने मान आपवुं एवी वृत्तिओ, तेमज धीरता, उत्तमाभिलाषा, न्याय अने प्रामाणिकतानी बुद्धि, ए आदि पण, सारी पुष्टि पामे छे. ज्यां शालानी आवी भावनाने तेना उपरिना जातना चारित्रथी, तथा शिष्योना उन्नत भावथी, तादृश पुष्टि मळती होय त्यां स्थिर अने सुश्लिष्ट चारित्र घडावामां घणी सारी अनुकूलता थई आवे छे, ए सर्वना जाणवामांज छे.

परिभाषाकोश.

अजातिवाद = Absolute Idealism.
अज्ञात = Passive.
अज्ञातमनोव्यापार = Unconscious cerebration.
अज्ञातानुभव = Unconscious experience.
अतिप्रसंग = Irrelevancy.
अतिव्याप्ति = Too wide.
अदुष्ट = Valid.
अधरांश = See मगज.
अधिकरण = Substratum.
अनाकारित = Ill-defined.
अनियति = Free-will.
अनुकम्पा = Sympathy.
अनुकरण = Imitation.
अनुकर्षण = Reference.
अनुकूल = Agreeable.
अनुकूल थवुं = Adaptation.
अनुकूलवृत्ति = Pleasurable feelings.
अनुग्रह = Adjustment.
अनुद्भूत = Nascent.
अनुभव = Experience.
अनुभाव = Expression.
अनुमति = Approval.
अनुमान = Reasoning.
अनुमिति = Inference.
एकदेशिनिर्देशनिबंधनानुमिति= Inference from particulars.
अनुरूप = Proportionate—correlative.
अनुविधायकत्व Correspondence.
अंतराय = Obstacle.
अंतःकरण = Conscience.
अंत्य = Maximum.
अन्नमार्ग = Digestive cavity.
अपौरुषता = Cowardice.
अप्रतिरुद्ध = Continuous.
अप्रासंगिक = Irrelevant.
अभावेच्छा = Negative desire.
अभिधान = Naming.
अभिधानवाद = Nominalism.
अभिनयव्यापार = Expressive movements.
अभ्यास = Exercise.

अमांडलिक = Anti-social.
अंश = Degree; Numerator.
अवधान = Attention.
अवयव = Organ; premises.
उद्वाहकअव० = Motor; organs.
अवलोकन = Observation.
अविज्ञात = Unconscious.
अव्यवहित = Immediate.
अव्यवहितपूर्वगामी = Proximate.
अव्याप्ति = Too narrow.
असाधारण (धर्म) = Essential.
अस्ति = Positive.
अहंता = Self-esteem.
अहंभाव = Egoism.
अहमहमिका = Struggle for existence.
आकर्षण = Attraction.
आकाश = Ether.
आकुंचन = Contraction.
आग्रह = Resolution.
आघात = Action.
आचार = Manners.
आज्ञाकारित्व = Obedience.
आत्मगुणानुवाद = Self-appreciation.
आत्मनिरीक्षण = Subjective method.
आत्मप्रपोषण = Self-conservation.
आत्मप्रियता = Self-love.
आत्मभाव = Humanity.
आत्मभावना = Personal identity.
आत्मविडंबना = Self-condemnation.
आत्मविचार = Idea of self.
आत्मसंस्पर्श = Personal reference.
आत्मा = Self.
आदेशवचन = Word of command.
आनुकूल्य = Adaptation.
आनुपूर्वी = Succession.
आनुषंगिक = Corroborative.
आंतर = Subjective.
आंतरदर्शन = Reflection.
आंतरप्रतीति = Consciousness.
आंतररूप = Subjective side.
आविष्करण = Application.
आवेग = Passion.
आश्चर्य = Wonder.
इंगित = Gesture.

इच्छा = Will.
इच्छाधीन = Subject to will.
इच्छारहित = Involuntary.
इच्छाव्यापार = Volition.
इच्छासहित = Voluntary.
इन्द्रिय = Senses.
विशिष्ट इ० = Special sense-organs.
इन्द्रियसन्निकर्ष = Objective contact.
इन्द्रियस्थान = Sense-organ.
उत्कट = Marked.
उत्कर्ष = Exaltation.
मानसोत्कर्ष = Mental exaltation.
उत्तमांश = See मगज.
उत्साह = Energy.
उत्साहभंग = Dejection.
उदर = Digestive cavity.
उदासीन = Indifferent.
उद्गार = Exclamation.
उद्देश = Subject of a proposition.
उद्बोध = Revival.
उद्वाहक = See तंतु.
उपचयशक्ति = Construction.
उपचित्र = Secondary images.
उपहितधर्म = Secondary qualities.
उलटे प्रमाण = Inverse ratio.
उष्मावाहक = Conductor of heat.
ऊर्मि Emotion.
आत्मसंबद्धऊर्मि = Personal or individual emotions.
आत्मेतरऊर्मि = Non-personal emotions.
ऊर्मिप्रकृति = Emotional temperament.
ऊर्मिप्रतिभास = Emotional expression.
ऊर्मिप्रधर्ष = Emotional shock
ऊर्मियोग्यता = Emotional sensibility.
ऊह = Hypothesis.
ऋक्षता = Roughness.
ऋजुता = Smoothness.
एकता = Invariability.
एकदर्शन = Single vision.
एकदर्शनतर्क = Problem of vision.

एकरूपता = Consistency.
एकीकरण = Integration.
ऐन्द्रियपरितोष = Sensual gratification.
औचित्यभावना = Sense of fitness.
औत्सुक्य = Uneasiness; distress of mind.
औपाधिक = Accidental.
कर्म = Action.
कर्मधारक = Passive.
कला = Art.
अनुकरणक० = Imitative arts.
अननुकरणक० = Non-imitative arts.
दृश्यक० = Visual arts.
श्रव्यक० = Auditory arts.
साहित्यक० = Fine arts.
कलोपकारकवलन = Æsthetic tendencies.
कल्पना = Imagination.
उपचायकक० = Constructive imagination.
ज्ञानकल्पना० स्वरूपक० = Cognitive imagination.
व्यावहारिकक० = Practical imagination.
संग्रह अने उपचय करनार क० = Receptive and constructive imagination.
संस्कारोद्बोधरूपक० = Reproductive imagination.
सौन्दर्यक० = Æsthetic imagination.
कल्पनाप्रवण = Imaginative.
कारण = Cause.
प्रोत्साहकका० = Exciting cause.
योग्यतारूपका० = Predisposing cause.
कारणता = Causation.
कार्यरूप = See कर्मधारक.
कार्यसाधक = Active.
कार्योत्साह = Energy.
कालव्यापकत्व = See व्यापकत्व.
क्रियाशक्ति = Activity.
कृत्रिम = Artificial.
कौतुक = Curiosity.
क्रम = Order.
क्लेश = Perplexity.

क्षुद्व्यापार = Appetitive movements.
गणित Mathematics.
शुद्ध ग० = Pure mathematics.
व्यावहारिक ग० = Applied mathematics.
गणितश्रेणि = Arithmetical progression.
गुण = Quality.
गुणानुराग = Love of virtue.
गुंफित = Complex.
गुरुमतानुरोध = Deference to authority.
ग्रहण = Apprehension.
घनता = Solidity.
घनत्व = Depth.
चंचलता = Vigour.
सचलचं० = Active vigour.
चतुराई = Tact.
व्यवहारचतुर = Man of practical judgment.
चारित्र = Character.
चारित्रविशुद्धि = Moral goodness.
चिकित्साशास्त्र = Pathology.
चिन्ह = Mark.
चित्र = Image.
मूलचि० = Primary image.
उपचि० = See उपचि०
चेतन = Consciousness.
चेतनशास्त्र = Psychology.
चेतनस्थान = Seat of consciousness.
छाया = Shade.
छेद = Denominator.
जनताप्रेम = Humanity.
जाड्य = Coarseness.
जाति = Class.
जातिवाद = Realism.
जातिविशिष्टत्व = Connotation.
जिज्ञासा = Love of knowledge.
जीवन = Life.
सचेतजी० = Conscious life.
जीवननिर्वाहकअवयव = Vital organs.
जीवनप्रकार = Mode of life.
जीवनबल = Vital energy.
जीवनशास्त्र = Biology.
जीवारोपण = Personification.
ज्ञात = Active.
ज्ञानतंतु = See तंतु.

ज्ञानवाद = Theory of knowledge.
ज्ञानान्वेषण = Pursuit of knowledge.
तत्त्वशास्त्र = Philosophy.
तंतु = Nerve.
उद्वाहक तं० = Motor nerve.
संवाहक तं० = Sensitive nerve.
तंतुग्रन्थि = Ganglion.
तंतुचक्र = Nervous system.
तंतुप्रतान = Nerve stimulation.
तंतुमार्ग = Nervous-connections.
तंतुरस = Nerve substance.
तंतुव्यापार = Innervation.
तरंग = Vibration.
तरंगी = Speculative.
तर्क = Reasoning.
तर्कव्यापार = Thinking.
ताण = Strain.
तारतम्य = Variation.
तुलना = Comparison.
स्मरणसहकृत तु० = Comparison which involves reproduction.
दर्शन = Perception.
आंतरद० = Internal perception.
बाह्यद० = External perception.
रेखाद० = Linear perception.
दर्शनकोण = Visual angle.
दिग्व्यापकत्व = See व्यापकत्व.
दीक्षापद्धति = See शिक्षणपद्धति.
दीर्घदर्शिता = Prudence.
दुःखवृत्ति = Feeling of dislike.
दुष्ट = Invalid.
दूरदर्शिता = Foresight.
दृश्य = Object.
दृष्टि = Percept; sight.
दृष्टिपरिणाम = After percept.
दृष्टिवाद = Theory of vision or perception; philosophy of perception.
द्रष्टा = Subject.
द्वेष = Dislike.
द्व्यर्थत्व = Ambiguity.
धर्म = Property, quality.
धारणाशक्ति = Retentiveness.
ध्यान = Concentration.
ध्वनि = Voice.

ध्वनिसंयमन = Modulation of voice.
नयशास्त्र = Legislation.
नाटक = Drama.
नाट्य = Pantomime.
नानात्व = Variety.
नाममात्र = Empty.
नास्ति = Negation.
निकृष्टत्व = Inferiority.
निगमन = Conclusion.
नित्यकर्म = Routine.
नियति = Necessity.
निरपेक्ष = Absolute.
निरोध = Repression.
निर्देश = Judgment; proposition.
व्यक्तिनि० = Singular proposition.
जातिनि० / सर्वदेशिनि० = Universal proposition.
वस्तुनि० = Real proposition.
शब्दनि० = Verbal proposition.
संकल्पनि० = Synthetic judgment.
विकल्पनि० = Analytic judgment.
निर्देशव्यापार = Judging.
निवृत्तिमार्ग = Pessimism.
निश्चय = Decision.
निषेध = Negation.
निषेधमुख (निषे० रूप) = Negative.
नीति = Ethics.
नीतिकर्तव्य = Moral obligations.
नीतिजन्यनिर्वेद = Moral repugnance.
नीतिनिर्देश = Moral judgment.
नीतिनियम = Moral control.
नीतिप्रयत्न = Moral effort.
नीतिबल = Moral force.
नीतिभावना = Moral sentiment.
नीतिमत्ता = Morality; moral habitudes.
नीतिमार्ग = Ethical system
नीतिवृत्ति = Moral feeling.
नीतिवेत्ता = Moralist.
नीतिशीलता = Moral habitude.

नैयायिक = Logician.
नैसर्गिक = Innate, connate, instinctive.
न्याय = Syllogism.
न्यायशास्त्र = Logic.
न्यायनिष्णातबुद्धि = Logical mind.
पक्षपात = Bias.
पदार्थदर्शन = Object-lesson.
पदार्थविज्ञान = Physics.
पदार्थविज्ञानवेत्ता = Physicist.
पद्धति = System.
लिंगप०=System of signs.
परमार्थ = Real.
परमार्थशास्त्र = Metaphysics.
परमार्थता = Disinterestedness.
परमोत्कर्ष = Idealisation.
परंपरा = Heredity.
परंपरित = Inherited.
परंपरितसंक्रम = Hereditary transmission.
परविचार = Our notion of others.
परस्परोपकारक = Reacting on each other.
परस्पराश्रितत्व = Reciprocity.
पराक्चेतन = Objective consciousness.
परापतन = Recoil.
परामर्श = Deduction; reasoning.
परार्थानुमान = Explicit inference.
परावर्तित = Reflex.
परिणामवाद = Evolution.
परिमाण = Dimension.
त्रिप०=Three dimensions.
समस्तप०= Continuous quantity.
व्यस्तप०= Disintegrating quantity.
रेखाप०=Linear magnitude.
आभासतुं प०= Apparent dimension.
पर्याय = Synonym.
पुरावा = Evidence.
पूर्णदृष्टिनो प्रदेश= Area of perfect vision.
पूर्वगामी = Antecedent.
पूर्वनिपात = Prejudice.

पूर्वसिद्ध (अवधान)= Expectant; pre-adjusted.
पूर्वोत्तरभावी = Successive.
पृथक्करण = Analysis.
पृथुता = Breadth.
प्रकंप = Vibration.
प्रतिकर्षण = Repulsion.
प्रतिकूल = Disagreeable.
प्रचय = Quantity.
प्रतिच्छंद = Shadow.
प्रतिबंध = Obstacle.
प्रतिभा = Genius; see कल्पना.
कविप्र०=Poetic genius.
प्रतिरोध = Resistance.
प्रतिस्पर्धा = Rivalry.
प्रतीकार = Retaliation.
प्रतीति = Consciousness.
प्रतीतिस्थान = Seat of consciousness.
प्रत्यक्चेतन = Subjective consciousness.
प्रत्यक्ष = Sensation; presentation.
अनुगतप्र०= After sensation.
जीवनव्यापारनां प्र०= Organic sensation.
मिश्रप्र०=Mixed sensation.
शुद्धप्र०=Simple sensation.
स्नायुप्र० = Muscular sensation.
प्रत्यक्षप्रमाण = Axiom.
प्रत्यक्षविकास = Presentative development.
प्रत्यक्षयोग्यता = Sensibility.
अलौकिक सामान्य प्र०= General sensibility.
लौकिक सामान्य प्र० = Particular sensibility.
प्रत्यभिज्ञा = Identification.
प्रत्यभिज्ञान = Recognition.
प्रत्याघात = Reaction.
प्रमाणता = Validity.
प्रमितता = Temperance.
प्रभा = Light.
प्रयत्नसाध्य = Constrained.
प्रयोग = Experiment.
प्रवृत्तिमार्ग = Optimism.
प्राकृतिक = Physical.
प्राड्विवाक = Judge.
प्रातिभासिक = Phenomenal.
प्रामाण्यनिर्णय = Weighing testimony.

प्रेरणाशक्ति = Instinct.
प्रोत्साहक = Stimulus.
प्रोद्धत = Violent.
फलरूप = Passive.
बहुश्रुतपणुं = Versatility.
बाह्य = Objective.
बाह्यअंत = Perepheral end.
बाह्यकरणनो नियम = Law of eccentricity.
बाह्यरूप = Objective side.
बाह्यार्थवाद = Realism.
बाह्यार्थविज्ञानवाद = Objective idealism.
बाह्यावलोकन = Objective method.
बीजरूप = Rudimentary.
बुद्धि = Intellect.
बुद्धिचमत्कृति = Wit.
बुद्धिना आकृतिक नियम = Forms of thought.
बुद्धिशैथिल्य = Intellectual indolence.
भव्य = Sublime.
भान = Consciousness.
भाव = Idea; sentiment.
भावगम्य = Theoretical.
भावना = Representation; abstraction.
भावनाज्ञान = Abstract knowledge.
भावनाधिगम = Abstract thinking; abstraction.
भावनामय = Ideal.
भावनामिश्र = Representative.
भाववाचक = Abstract.
भावविकास = Representative development.
भाषा = Language.
भास = Shade.
रंगना भा०=Shades of colour.
भूमितिधर्म = Geometrical properties.
भूमितिश्रेणि = Geometical progression.
मगज = Brain.
अधरांश = Cerebellum.
उत्तमांश = Cerebrum.
मगजनुं स्थान = Brain centres.
मनोविभ्रम = Mental disease.
मर्यादा = Range.

मस्तिष्कविद्या = Phrenology.
मांडलिक = Social.
मानसक्षोभ = Mental agitation.
मार्गदर्शन = Guidance.
मिश्रता = Complexity.
मूलधर्म = Primary qualities.
मूलभूत = Crude.
यंत्रवत् = Automatic.
यंत्रित करीलेवुं = To monopolise.
यांत्रिकधर्म = Mechanical properties.
रस = Interest.
रसवृत्ति = Taste.
अनामयरसवृ०=Refined taste.
रसनिर्वाह = Continuity of interest.
रसावह = Interesting.
राग = Passion.
राजनीति = Politics.
राजसत्ता = Monarchy.
अनियमितरा०स०=Unlimited monarchy.
नियमितरा०स० = Limited monarchy.
[illegible]यनिकविक्रिया = Chemical [illegible]nges.
रेखाचित्र = Sketch.
रेखानिरूपण = Drawing.
लक्षण = Definition.
लक्षणनिर्देश=The act of defining
लालित्य = Grace.
लिंग = Marks.
लोकोक्ति = Public opinion.
वदतोव्याघात = Contradiction in terms.
वर्ग = Class.
वर्गविभाग = Classifying.
वर्तन = Conduct.
वस्तुस्थिति = Reality.
वाक्पाटव = Rhetoric.
वाक्यप्ररूपण = Statement.
वाग्माधुरी = Oratory.
वाणी = Speech.
वास्तविक = Normal.
विकल्प = See पृथक्करण.
विकास = Development.
विकीर्ण = Diffused.
विक्षोभ = Agitation.
विचार = See तर्क; Reflection.
विचारपद्धति = Comprehension of the forms of thought.

विचारणा = Deliberation.
विचारसंस्कारजन्यकर्म = Ideo-motor actions.
विज्ञानवाद = Subjective idealism.
वितान = Prolongation.
विधि = Affirmation.
विधिरूप-विधिमुख = Affirmative.
विधेय = Predicate.
विपुलता (वैपुल्य) = Intensity.
विपुलत्व = Quantity.
विप्लावक = Absorbing.
विभज् = To divide.
विभाजकधर्म = Fundamentum divisionis.
विमति = Disapproval.
वियोग = Disjunction.
विरुद्ध = Opposite.
विवेचकशक्ति = Discrimination.
विशरण = Diffusion.
विशिष्ट = Specific.
विशिष्टता = Peculiarity.
विशेष = Differentia.
विशेषधर्म = Difference.
विश्व = Nature.
विश्वदृष्टि = Clairvoyance.
विश्ववर्णन = Physical Geography.
विश्वविद्याना अभ्यासी = Physical enquirers.
विश्वविवेचनशास्त्र = Physical Sciences.
विषय / विषयी } See दृश्य-द्रष्टा.
विस्तार = Extension; Range; Length.
विस्मय = Surprise.
विस्मरण = Forgetfulness; oblivion.
वृत्ति = Feelings.
अधिकृतवृ० = Ruling feelings.
ऐन्द्रियवृ० = Sense feelings.
नीतिवृ० = Moral feelings.
भावनारूपवृ० = Ideal feeling.
शारीरवृ० = Organic sense feeling.
स्थानान्तरितवृ० = Transferred feeling.
वृद्धि = Growth.
वेग = Impulse.

वैधर्म्य = Difference.
वैधर्म्यग्रह / वैधर्म्यपरीक्षा } = Discrimination.
वैपुल्य = See विपुलता
आरंभकवै० = Leminal intensity.
वैलक्ष्य = Perplexity.
व्यक्ति = Individual.
व्यक्तिज्ञान = Concrete knowledge; particular knowledge.
व्यक्तिप्राधान्यता = Personal equation.
व्यक्तिवाचक = Concrete.
व्यक्तिविशिष्टत्व = Denotation.
व्यक्तिविहीन = Empty.
व्यग्रतोत्पादक = Distracting.
व्यवधान = Medium.
व्यवहार = Life; experience.
व्यवहित = Remote.
व्यष्टि = Individual.
व्यष्टिबुद्धि = Individual intelligence.
व्यापकत्व = Extension.
कालव्या० = Temporal extension.
दिग्व्या० = Spatial extension.
व्यापार = Movement.
कार्यसाधकव्या० = Active action.
व्यापारनी सरलता = Plasticity of movement.
व्यापारनी जडता = Fixity of movement.
व्याप्ति = Induction.
व्याप्तिग्रह = Inductive reasoning.
व्याप्तिनिर्देश = Generalising.
व्याप्तिव्यापार = Process of Induction.
व्यावहारिक = Practical.
व्याहत = Contradictory.
व्यूह = System.
शक्ति = Energy.
शक्यता = Probability.
शंकाशील = Cautious.
शब्द = Articulate sound; terms.
शब्दयंत्र = Vocal apparatus.
शरीर = Organism.
शरीरांतर्गतव्यापार = Organic process.

172

शारीरशास्त्र = Physiology.
शारीरिक चेतनशास्त्र = Physiological psychology.
शास्त्र = Science.
शास्त्रीय = Scientific.
शिक्षणपद्धति = Science of education.
शिक्षणशास्त्र = Education.
शिल्प = Sculpture.
शिष्टआचार = Good manners.
शील = Habit.
शुद्ध = Simple.
श्रद्धा = Belief.
श्वासमार्ग = Respiratory cavity.
संकल्प = Representative imagination; See एकीकरण.
संख्या = Number.
संघर्ष = Excitation.
संज्ञा = Sign; mark.
संज्ञी = Significate.
संनिकर्ष = Contact.
सप्रकाश = Enlightened.
सम; समता = Harmony.
समकालीन = Contemporaneous.
समय = Duration.
समर्थन = Proof.
समवाय = Intimate relation.
समवायसंबंधे होवुं = To inhere.
समष्टि = Organic unity; whole race.
समष्टिबुद्धि = Intelligence of the whole society.
समांतर = Parallel.
संभव = Events.
संभ्रम = Impulsiveness; rashness.
संयमन = Control.
संयोग = Conjunction.
संयोजन = Combination.
संरंभ = Excitement.
संवाहक = See तंतु.
संवेग = Velocity.
संसर्ग = Surroundings; circumstances.
संस्कार = Impression.
सहभूतसं० = Impression co-existent in space.
संस्कारप्रेरकत्व = Impressiveness.
संस्कारयोग्यता = Plasticity.
संस्कारहीन = Unrefined.

सर्वंकश = All-subduing.
सर्वग्राही = All-engrossing.
सर्वग्राहीपणुं = Catholicity.
सर्वदेशी = Elastic.
सर्वभाव = Altruism.
सव्यापार = Active.
सहकारित्व = Co-operation.
सहचारी = Accompaniment.
सहजबुद्धि = Instinct.
सहजोपलब्धि = Intuition.
सहसा = Automatically.
सहानुभाव = Fellow-feeling.
सहृदयत्व = Taste.
सातत्य = Persistence.
सादृश्य = Similarity; analogy.
सादृश्यवाद = Conceptualism.
सादृश्यसंधि = Lines of similarity.
साधर्म्य = Similarity; agreement.
साधर्म्यग्रह; सा०परीक्षा = Assimilation.
साधारणबुद्धि = Common sense.
साध्य = End; the thing to be proved.
सापेक्ष = Relative.
सामग्री = Condition.
सामयिक = Periodic.
सामानाधिकरण्यवाळुं = Co-existent.
सामान्य = Concept; Conception.
अपरसा० = Species.
परसा० = Genus.
सामान्यकल्पना = Conception.
सामान्यविन्यास = System of notions.
सामान्याधिगम = Generalisations
सावधानस्पर्श = Active touch.
साश्चर्यभक्ति = Admiration.
साहचर्य = Association.
प्रतिरोधकसा० = Obstructive association.
विरोधनिबंधनसा० = Association of contrast.
सामीप्यनिबंधनसा० = Association by contiguity.
साहजिक = Nascent; natural.
सिद्धान्त = Principle.
सुखवृत्ति = See अनुकूलवृत्ति.

सुरेख = Definite.
सुरेखता = Accuracy.
सौंदर्यचर्चा = Æsthetics.
सौष्ठव = Symmetry.
स्तुतिप्रियता = Love of approbation.
स्थपत्य = Architecture.
स्थाननिर्णय = Localisation.
स्थानस्वरूप = Local character.
स्थूलता = Bulk.
स्नायु = Muscle.
स्नायुआकुंचन = Muscular contraction.
स्नायुप्रताप = Tension of muscle.
स्पर्श = Touch.
स्पर्शजन्य = Tactual.
स्मरण = R
स्मृति = M
यांत्रिकस्मृ = memory.
सयुक्तिकस्मृ० = Ingeneous memory.
सविमर्शस्मृ० = Judicious memory.
स्मृतिकार्य = Recollection.
स्थिरस्मृ०का० = Passive recollection.
व्यापारवत्स्मृ०का० = Active recollection.
स्मृतिसामर्थ्य = Tenacity of memory.
स्वकर्तव्य = Duty.
स्वतस्त्व = Peculiarity; individuality.
स्वपरभावरूप = Altruistic.
स्वयम्प्रतिष्ठित = Self-supporting.
स्वरूप = Tone.
स्वसंयम = Self-control.
स्वसिद्ध = Self-evident.
स्वाभाविक = Normal.
स्वार्थानुमान = Implicit infer-
= Impressive.
otive; means; middle term.
हेतुबल = Motive force.
हेत्वाभास = Fallacy.

SHML
6296
Name of book
Author
Date of purchase
No.
COLLEGE LIBRARY.
ODA.
ARTMENT.
NOT TO BE ISSUED
BF
138
.G8D9
6296